

॥ श्रीगौतमसाम् नमः ॥

दिगम्बर जैन

THE DIGAMBAR JAIN

नाना कलाभिविविधश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्तुगवेषणाभिः ॥

संशोधयत्प्रथमिदं प्रवर्तताम्, दिगम्बर जैन समाज-मात्रम् ॥

प्री. धीर संवत् २४४६, वैशाख, विक्रम सं० १९७६.

अंक

“नमः कृष्ण”

नाथ दयालय । धन्य धन्य है करुणा तेरी,
प्रेम, हर्ष, ज्ञान-जुन्य है करुणा तेरी ।
तेरी करुणा कीर ज्योति, रवि, शशि, तारों में,
बन उपवन में फैल रही है वह सारी में ।
वही मधुर करुणा-मरी कृपा प्रभो ! हम पर रहे,
पत्र ‘दिगम्बर जैन’ जो पथपर नित दृढ़तर रहे ॥ ३ ॥

नव चत्सर सगवान् हमारा, सुखमय होवे,
पारपरिक विद्वेष भाव भुत्तलमे खोवे ।
डटा रहे कर्तव्य भावों पर अविचल होकर,
गिर न पड़े यह कभी लाख भी साकर ठोकर ।

बन निर्गमिक सदैव यह पथ दिखलाता ही रहे,
कभी सीख सुखदा सदा यह सिसलाता ही रहे ॥ २ ॥

जैसा यह गत वैप समुक्त पत्र रहा है,

जिस प्रकृति दृष्ट बने दुःख सुख समी सदा है ।

वैसा ही अशुद्धित अचल यह रहे सदा ही,

जो कुछ भी आपड़े दर्पण में सदा सदा ही ।

ऐसप स्नेह समतादिका करता रहे प्रचार यह,

स्वार्थ-रहित रह कर सदा करे स्वपर उपकार यह ॥ १ ॥

जैन जाति नग नाथ ज्योति में, ज्ञानार्णवी,

जोक फटे छल, कपट, स्वार्थ हिरा, वृण्णकी ।

पांच वर्षकी विना न्यायकी नज

सेठीजी ।

अर्जुनलालजी पंदीसे पं लेश भी क्लेश नहीं हो,
ए० तीन चार डी की तक असत्यावेश नहीं हो ।
मुक्त हुए हैं और हुए हैं वयं इसको शुभ सन्देश दे,
अजमेरमें निवास कर रहे हैं और आप से प्रेम-दान प्रेमेश दे

॥ ४ ॥

आंदोलनमें योग देने लगे हैं वर्ष हर्ष उत्कर्ष पूर्ण हो,
और विना कारण बताये १०००) का वृन्दका हृदय चूर्ण हो ।

मांगने लगी उपको अस्वीकार से यह करे सुसेवा,
आपने जयपुर रहना छोड़ दिया आलता-फलका मेवा ।
स्वास्थ्य अब ठीक है और सार्व यदि सुधा-सिञ्चित रहे ।

॥ ५ ॥

कि साथ २ आपको जैनसमाज ग्रंथोंका निश्चित रहे
य भी करना चाहिये । आप बड़े ज्येष्ठ सुदी ही मिलेगा ?
हैं और आपकी निःस्वार्थ सेवाका भंडार खोल में मिलेगा ?

ल पाठकोंके हृदयमें अहर्निश रहे इसीलिये जिनको गते मिलेगा ?
आपका चित्र जो इस अंकके साथ ७ माहका यदि ग्रन्थोंकी में मिलेगा ?

जैन तिथि दर्पण भेजा गया है उसमें प्रकट कर लीजिये और फलें फलें,
दिया है । आगामी कार्तिक मासमें वीर सं० शास्त्रोंको विराज

॥ ६ ॥

२४४७ का तिथि दर्पण प्रकट होगा ही इसी- स्तंभ विधा-न-कस्तुरा ।
लिये दिवाली तकका ही प्रकट किया है जिससे नोंको एक-वि-न-क-ज-
नवीन वर्ष फिर कार्तिकसे ही प्रारंभ होसके । जोर शास्त्र को अपने मंदिरमें न हो वे

आगामी ज्येष्ठ सुदी ९ को हमारा महान

पर्व " श्री श्रुतपंच-

श्रुतपंचमी । श्री पर्व " आता है ।

कोई १९ वर्ष हुए जैन-

समान सेदक बाल ब्रह्मचारी पं० पन्नालालजी

बाकलीवालने इस पर्वको माननेकी चर्चा प्रारम्भ

की थी तबसे इस पर्वको माननेकी परिपाटी

पुनः चालू हुई है । श्रुतस्तंभ विधान (शास्त्र-

पूजा) करनेका यह वार्षिक पर्व है । इसी निमि-

प्रबंध उसी प्रकार कीजिये । शामको या

एक सभा में दोष करके सब भाई और वा

श्रुतपंचमी का और हमारे कर्तव्यपर व्या

करके सब ध्यान पाचीन ग्रन्थ जीर्णो

तरफ खींच चाहिये । अब बहुतसे ग्रन्थ

चुके हैं इन्हे छपे हुए ग्रन्थकी एकर

हर एक में होनी चाहिये क्योंकि छपे

ग्रन्थको भी पढ़ लेते हैं और आज

मुनि भके अभावमें हम जो बहुत कुछ परिचय पा सकेंगे ।

हम जो बहुत कुछ परिचय पा सकेंगे ।

મારે સ્વર્ગીય દાનવીર જૈનકુલભૂષણ સેઠ
માણિકચંદજીકે સ્મરણમે
માણિકચંદ ગ્રન્થ-વર્ણનમે એક 'માણિકચંદ
માલા' ગ્રન્થમાલા' નામક સંસ્કૃત
ગ્રન્થમાલા ચાર પાંચ વર્ષમે
સ્થાપિત કરી ગઈ છે જેસકી ઓરસે આજતક
૧૪ ગ્રન્થ પ્રકટ થો ચુકે છે ઓર લગતકે
મૂલ્ય પર સ્વકો દિયે જાતે છે । ઇસને ફંડકી
કમી હોનેસે ગત વર્ષમે શ્રીમાન્ બ્ર૦ શીતલપ્ર
સાદનીને વહુત કુછ પરિશ્રમ કરકે ઇસમે
૧૦૦૦૦) ઓર ભરવા દિયે છે જેસમે અત્ર
ઇસકા કાર્ય લગાતાર ચાલુ રહેવા । હરબુક
મેદિરમે ઇસ ગ્રન્થમાલાકે ગ્રન્થ સંગ્રહ કરને
ચાહિયે તથા સંસ્કૃતકે વિદ્યાર્થીઓકો નંગાકર
બાંટને ચાહિયે । વર્ણનમે ઓર હમારે પુસ્તકાલયસે
મી ઇમ ગ્રન્થમાલાકે મગી ગ્રન્થ મિલ સકને છે ।

યોડો લામ મજે તો તેથી સતોપ માનગેજ એમ
આશા છે હવે પછીના બધા અકા દર મહિને
નિર્ધારિત બદાર પાડવામા આવશેજ દિવાળી
સુધીનુ લવાજમ માર ચેત આના દરેક આહરે
માનગેઈતથી મોહલી આવવા નહિ તો આવતો
અક પદર આતાની વી. પી. થી મોહવામા
આવશે

x x x
આપણી ગુણાત્રિ દિગંધર જૈન પ્રતિષ્ઠા
૨૫ (સભા) ની વાર્ષિક બેઠક
પાવાગઢના મન માહ માસમા મિલશેજ શ્રી
કરવેલા પાવાગઢમા બેઠક તરજ સખાગમ
દોઢી મોવાપુર નિવાસીના પ્રમુખ-
પર મગી હતી જે સમયે વિશેષ આદરવનતા
અભાવે તથા 'દિગંધર જૈન' બધ હોવાથી બેઠક
વિશેષ સમ્પ્રદાની હાજરી નહોતી તોપણ તેમા
પસાર થયેલા ઘણા દરજે અતિ મહત્વના હોવાથી
તેનો હુક માર નીચે આપીએ છીએ-

(૧) આવતા શિયાળામા નામદાર પ્રિન્સ
ગોદા પેલસ હિંદુસ્તાન આનંદાર છે ત્યારે તેમને
દિગંધર જૈનો તરફથી માનપત્ર આપણુ આ
પાંગત આપણી મહામગાએ અત્તરથી-૧ પ્રવાસ
કરશે જેહજો અમે પ્રેમધામમા આપણા તરફના
માનપત્રનો મમય નક્કી કરી લેવો જેહજો. (૨)
બધા બધા ન હોય ત્યાં દરેક મજે જૈન પાસાગા
અને કન્યા પાસાગા સ્થાપરી જેહજો ગુજરાતમા
આગળીના વેદા પર પણ ગણાય એટલી પાસાગાઓ
તથી રહે નવો તો ચાલુ પાસાગાઓ ૧૫૫
પડી છે તો બધ થયવી પાસાગાઓ ચાલુ કરી
જેહજો તથા ન હોય ત્યાં સ્થાપરી જેહજો. ઉપ-
રના અસાદ માન મેળવતાં હિતમ રવાય
પાસાગાજ છે મારે એ તરફ ગુજરાતના બાલકોનુ
અમે લક્ષ્ય જે આએ છીએ (૩) ગુજરાતમા ગુજરાતી
ભાષા ભણવાનું એક પણ પંડિત નથી નથી
ગુજરાતી પંડિતો ઉત્પન્ન કરવા મારે ગુજરાતમા
એક મંચન વિશાલ્ય પુસ્તકાલય સ્થાપિત કરવું છે
જે પાસાગા કે અમદાવાદ જેવે સ્થળે સ્થાપન તો
મજે લામ ત્યાં (૪) સગાઈ દિવાળી જૈન



धर्मशाश बनानेके लिये दिगम्बर जैन सज्जनोंसे अपील करते हैं ।

देहलीकी—जैन एंग्लो संस्कृत हाईस्कूलको करीब एक लाख रुपये स्व० सोहनलालजीकी ओरसे दिये गये और स्कूलका नाम अब हीरालाल जैन ए० सं० हाईस्कूल पड़ा है । लाल जग्गीमलजीका प्रयास अतीव पशंसनीय है ।

खंडेलवाल—दि० जैन महासभाकी स्थापना हो चुकी है और प्रारम्भिक अधिवेशन इन्दौर या बम्बईमें होनेकी कोशिश हो रही है । महामंत्री पं० घनालालजी चंदावाडी गिरगाम बम्बई है ।

गोपाल विद्यालय—स्वर्गीय पं० गोपालदासजी बरैया द्वारा स्थापित मुरेनाके जैन सिद्धांत विद्यालयको एक लाख रु. का स्थायी फंड हो गया और अब विद्यालयके साथ पंडितजीका नाम जोड़ा गया है ।

अकलतरा—और जबलपुरके मेलेमें परवार महासभाकी बैठकें हुई थीं जिसमें औद्योगिक विद्यालय खोलनेके लिये १०००) का चंदा हुआ था ।

सागवाड़ा—(डुंगरपुर) में विद्यालय और बोर्डिंगकी स्थापना हो गई है ।

महासभा—मगसर मासमें अजमेरमें भारत दि० जैन महासभाका अधिवेशन रा० व० शेठ टीकमचंदजी सोनीके सभापतित्वमें सफलतासे हुआ था । सभापतिजीने ११०१) सभाको दिये थे तथा राजपूताना दि० जैन प्रांतिक सभा स्थापित हुई थी ।

फीरोजपुर—में एनीमलस फ्रेंड सोसकट स्थापित हुई है जिसका उद्देश प्राणियों हो । मैत्रीभाव और सुवर्ताव बढ़ानेका है । सबका इसका सभासद बनना चाहिये । मंत्री भगतरामजी फीरोजपुर हैं ।

आसाममें धर्म प्रभावना—खास आमंत्रण होनेसे श्रीमान व० शीतलप्रसादजी और पं० कस्तूरचन्दजी गत मासमें आसाम प्रांतमें करीब एक माह तक स्थान २ पर घूमे थे और हरएक स्थानपर आम सभाएं करके उसमें अंग्रेजी तथा हिन्दी भाषामें जैन धर्मके सिद्धांत पर व्याख्यान दिये थे जिसमें बड़े २ ओफिसर तथा अनेक प्रतिष्ठित अज्ञेनोंने हजारोंकी संख्यामें योग दिया था । प्रथम डिब्रुगढ़की सभामें जाति-सुधारके प्रस्ताव पास हुए थे तथा आसाम दि० जैन प्रां० सभा स्थापित हुई थी । ब्रह्मचारीजीके प्रयाससे दानकी वर्षा भी इस प्रान्तमें अच्छी हुई है यानि करीब ४०००) काशी, हस्तिनापुरकी संस्था, मालवा सभाना औपचालय और महासभा इन चार संस्थाओंको पलासवाड़ी, डिल्ली, मनीपुर, कोहीमा और डिब्रुगढ़से मिले थे तथा हिलीमें चेत्यालयके लिये १७०१), कोहीमामें चेत्यालय बनानेको ४७१९), डीमापुरमें मंदिरके लिये २१९४, का चंदा हुआ था । इस भ्रमणसे आसाममें जैन धर्मकी अच्छी प्रभावना हुई है और वहाँके जैनियोंमें धर्म नागृत्तिका बीज बोया गया है ।

आध्यात्मिक-वैतकी निमगावर्मा वैशाख सुद १३ ने दिने भेदा भाषिध्यांद रावळना नामथी जैन आध्यात्मकी स्थापना यहाँ छे जेने १४०००) नी २३म श्रीमती लडगाई भाषिध्यांद आपालि.

जैन समाजकी आवश्यकताएँ ।

(लेखक—श्री सत्यभक्त)

यह किसीसे छुपा नहीं है कि वर्तमान समयमें जैनसमाज घोर अनवृत्ति पूर्ण दशामें पड़ा हुआ है । सामाजिक दृष्टिसे, राजनैतिक दृष्टिसे, धार्मिक दृष्टिसे सभी प्रकार वह हीन हो गया है और दिन पर दिन गिरता जाता है । यद्यपि आज कल संसारमें युगान्तरकारी परिवर्तन हो रहे हैं, जगतकी अवस्था क्षण क्षणमें बदल रही है, पराधीन लोग स्वाधीन होनेका उद्योग कर रहे हैं, दुर्बल सत्त्व होनेकी चेष्टामें, नीचे गिरे हुये ऊपर चढ़नेका प्रयत्न कर रहे हैं, सोते हुये आँखें खोल कर सावधान हो रहे हैं; पर जहाँ तक मालूम पड़ता है जैन समाज पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा, उसमें कोई खास परिवर्तन, बदलाव, उन्नतिके लिये उद्योग, सुधारकी चेष्टा देखनेमें नहीं आती ।

कारण है कि जब समस्त जगत अवन-
पतिसे छुटकारा पानेकी व्याकुल है, आगे
लिये हाथ पैर मार रहा है, अपनी
शुश्रूषाको उन्नति, सुधारके लिये खर्च
करता है, तब जैन जाति अपनी दशाकी
प्रकार बेखबर है, लापरवा और
नहीं, अथवा उसे अपने भले बुरेका
नहीं; या उसमें ऊपर उठने सुधार कर-
की शक्ति नहीं ? क्यों इस युग परिवर्तन-

कारी कालमें भी वह इस प्रकार आँखें बंद करके पड़ी है; नाना प्रकारकी प्राचीन थोथी, हानिकारिणी प्रथाओंका पट्टा पकड़े हुये है, नाशकारिणी कुरीतियों पर मोहित है ?

जहाँ तक जाना जा सकता है इस समस्त अवाञ्छनीय, अनुचित, असामायिक, नाशक व्यवस्थाका प्रधान कारण जैनियोंमें फैला हुआ अज्ञानान्धकार है । कोई भी समाज, जाति, देश, राष्ट्र उस समय तक उन्नति पथपर अग्रसर नहीं हो सकता जब तक उसमें फैला हुआ अज्ञान दूर करके ज्ञानका प्रचार नहीं किया जाता । ज्ञान, विद्या आदिके द्वारा ही मनुष्य अपनी दशा, संसारकी गति, कालकी चल, उन्नतिके उपाय, सुधारका मार्ग आदि बातोंको जान सकता है । जब तक मनुष्यकी आँखोंके सामने अज्ञानका पर्दा पड़ा रहता है तब तक उससे अपने भले बुरे समझ सकनेकी आशा करना एकदम बेकार है । अतएव जिस जाति, समाजको अपनी उन्नति, सुधार, तरक्कीकी अभिलाषा-आकांक्षा हो उसका कर्तव्य है कि, सबसे प्रथम अपनेमें फैले हुए अज्ञानको दूरकर ज्ञान फैलानेका उद्योग करे । जब ज्ञानका सूर्य प्रकाशित होगा तो स्व अपने आप हृदयमेंसे अज्ञानान्धकार निकल भागेगा और लोग अपनी भलाई बुराईको समझने हुये ठीक



ठीक संसार देव सकनेमें समर्थ हो सकेंगे । तैसी दीजे ।” संसारके विरुद्ध चल कर

यद्यपि संसार, जातिमेंसे अज्ञानको दूर करके न आज तक कोई सफलता प्राप्त कर सका

उसे उन्नति पथ पर अग्रसर हो सकने योग्य है न आगे प्राप्त कर सकना संभव है ।

इस प्रकार विचार करनेसे पता चलता है कि, इस क्रांतिकारी कालमें जैनियोंको इन पुराने

दर्रेकी नौ दिनमें ढाई कोस कर मार्ग तय करनेवाली, दूषित नियमों—प्रणालियोंसे भरी हुई

पाठशालाओं आदिके द्वारा अज्ञानको दूर करके

ज्ञान फैलानेकी उम्मेद रखना बुद्धिमत्ताके विरुद्ध है।

क्या इन तोतूकी तरह बालकों इधर उधरके श्लोक

रटा देनेवाली पाठशालाओंकी शिक्षासे जैन नव

युवकोंके मस्तिष्क बुद्धिका विकास हो सकता है ?

क्या इनमें पढ़कर वे प्रकृत बुद्धिमान बन सकते हैं ?

क्या इन पाठशालाओंसे निकले हुये विद्यार्थी

वर्तमान समयके कंटका कीर्ण दुरुह जीवन-संग्राममें सफलता प्राप्त कर सकते हैं ?

यदि जैनियोंको वास्तवमें उन्नति सुधारकी

अभिलाषा है, यदि वे अवन्ति अन्धकारके

गहरे गढेमेंसे निकल कर उन्नति, ज्ञानकी चोटी

पर चढ़ना चाहते हैं; यदि उनकी इच्छा है कि

संसारकी जातियोंकी दौड़में हम दूसरोंके बराबर

रहें; यदि वे चाहते हैं कि, हम कुछ समय तक

संसारमें स्थित कायम रहें, तो सबसे पहली

बात यह करनी आवश्यक है कि, अपने बाल-

कोंको आधुनिक ढंगकी, लाभजनक, जीवन

संग्रामके योग्य बनानेवाली उत्कृष्ट शिक्षा

लानेका उपाय करें । खेदकी बात है कि,

जैनियोंका ध्यान इस ओर बिल्कुल नहीं है ।

नव हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, आर्यसमाजी,

धियोसफिस्ट तथा अन्यान्य सभी छोटी बड़ी

अज्ञानको दूर करनेका मुख्य उपाय विद्याका प्रचार है । जिस जातिमें विद्याके प्रति प्रेम होता है, जिसके बच्चोंको आरम्भ ही से बुद्धिमान सच्चारित्र सुशील बनानेकी चेष्टा की जाती है उसमें अज्ञानका स्थिर रह सकना संभव नहीं । यद्यपि आजकल जैनी लोग विद्याके प्रति कुछ प्रेम प्रगट कर रहे हैं और सैकड़ो हजारों जगह पाठशाला विद्यालय आदि भी खोले जा रहे हैं पर वास्तवमें इनसे कोई विशेष लाभदायक फल प्राप्त कर सकनेकी आशा नहीं की जा सकती । संसारमें सदा समयानुकूल बातोंका अवलम्बन करनेसे ही सफलता प्राप्त होती है । संसारकी गतिके विरुद्ध किसी बातको प्राचीनता अथवा अन्य किसी दृष्टि महत्व दे कर ग्रहण करनेसे विटम्बनाके सिवाय और कुछ नहीं मिलता । इसीमें कचिने कहा है कि “जसी चले बयार, पीठ तय

जातिवाले अपने अपने बच्चों, युवकोंकी शिक्षाके लिये स्कूल, कालिग खोल रहे हैं वहाँ जैनी लोग इस ओर दृष्टिपात भी नहीं करते । ऐसी दशामें अज्ञानके दूर होने तथा उन्नति और सुधार होनेकी आशा किस प्रकार की जा सकती है ।

हमारे कदनेका आशय यह नहीं कि, आधुनिक स्कूल और कालिनोंकी शिक्षा प्रणाली सर्वथा निर्दोष, लाभदायक और उत्तम है । वरन् हम यह भली भाँति जानते हैं कि, कमसे कम भारतवर्षके कालिग और स्कूलोंमें जिन प्रकारकी शिक्षा दी जाती है उसमें बड़े बड़े दोष मौजूद हैं और जहाँ उसे विद्यार्थियोंको कुल लाभ पहुंचता है वहाँ हानि भी कम नहीं होती । यह कौनसी जरूरी बात है कि आधुनिक स्कूल, कालिनोंकी बिरकुल नकल की जाय । बुद्धिमान मनुष्य सदा गुणको ग्रहण और औगुणको त्याग करते हैं । हमको भी वर्तमान शिक्षा-प्रणालीमेंसे अच्छी अच्छी बातें लेकर तथा अन्य आवश्यकीय बातें उसमें सम्मिलित करके अपने बच्चोंकी शिक्षाका प्रबन्ध करना चाहिये । यदि ऐसा किया जाय तो जैनसमाजके सुवर्क निस्तन्द्वेह प्रवृत्त शिक्षा प्राप्त करके वास्तविक मनुष्य बन सकते हैं और फिर जैनियोंके उत्थानमें भी विशेष विटम्बन न लगेगा ।

यदि जैनीलोग इन कार्यकी उपयोगिताको समझ कर इसे पूरा करना चाहें तो इसका हो सकना भी कुछ कठिन नहीं है । क्योंकि जैनियोंकी घनावस्थाकी बात सारे देशमें प्रसिद्ध है और यदि चाहें तो एक एक सेठ एक एक कालिग चला सकते हैं । पर हमारा निवेदन

है कि अब वह जमाना गया जब कि लोग प्रत्येक छोटे बड़े कार्यके लिये सेठों, बड़े लोगोंके मुँहकी ओर ताका करते थे । यह युग सर्व साधारण श्रमजीवियोंकी प्रधानताका युग है । अब धनी लोगोंका पतन, अवनति और गरीबोंका उत्थान, उन्नति सर्वथा निश्चित है । अतएव साधारण लोगोंका कर्तव्य है कि स्वयं चन्दे द्वारा एक दो नहीं अनेकों आधुनिक ढंगके कालिग खोल कर अपने बालकोंको सच्चा मनुष्य बनानेवाली, जीवनसंश्राममें विजयी बननेका मंत्र सिखलानेवाली शिक्षा देनेका प्रयत्न करें ।

दूमरी आवश्यकता सुस्पष्टादित निर्भीक समाचारपत्रोंकी है । यद्यपि इस समय भी जैनियोंके पत्रोंकी संख्या कम नहीं है तथापि वे विचारे शायद ही कभी धर्म और समाजके दायरेसे बाहर निकलते हों । उनको नहीं गालूम कि संसारमें क्या हो रहा है और दुनियां किस तरफकी जा रही है, न वे इसका ज्ञान रखते हैं कि हमारी जातिमें संसारकी अन्य उन्नत जातियोंके मुकाबलेमें कौन कौनसी त्रुटियाँ हैं और उनको दूर करके किस प्रकार वह अन्य जातियोंके साथ साथ कदम रख कर चल सकती है । इस लिये आवश्यक है कि जैनियोंमें इस प्रकारके दो चार पत्र निकलें जो इधर उधरकी थोड़ी निष्कम्भी बातोंको छोड़कर लोगोंको कुछ कामकी बातें बतलायें जो प्राचीन रुढ़ियोंका भय न करके समाज-सुधारके सम्बन्धमें उचित संश्रमति दें सकें और आन्दोलन करें सकें जो बिना तनिक भी डरे, हिचके राजनैतिक समस्याओं तथा घटनाओंकी स्पष्ट आलोचना कर सकें ।



જો આધુનિક જગતકે નૂતન માવપૂર્ણ, યુગ પરિવર્તનકારી, ક્રાંતિજનક સંદેશોંકો જૈન જાતિકે કાનોં તક પહુંચા સકે । જો જાતિમેં હોનેવાલે અન્યાયોં, અત્યાચારોંકો બિના કિસી વડે છોટે, સેઠ સાહુકાર અમીર ગરીબકા ધ્યાન કિયે નિર્ભયતાપૂર્વક તીવ્ર વિરોધ પ્રતિવાદ કર સર્કે । જિનકે સમ્પાદકોંકો આધુનિક સંસારકા જ્ઞાન હો તથા જિનકે હૃદય કિસી પ્રકારસે દબનેવાલે, મયમીત હોનેવાલે પક્ષપાતી ઔર સંકીર્ણ ન હોં । યદિ હસપ્રકારકે દો-ચાર પત્ર મી પ્રકાશિત હોકર સોયે હુયે જૈનિયોંકી આંલોંકો ધોલ કર સંસારકી ગતિકી ઔર આકર્ષિત કરને લગે, ઁનકે મુરજાયે હુયે હૃદયોંમેં નવે યુગકી વાણી પહુંચાવે, ઁનકો વાસ્તવિક ધર્મ અર્ધમર્મકી પહિચાને વત્તલયે; ઁનકો કુરીતિયોં, કુપ્રથાઓં તથા સામાજિક ઔર ધાર્મિક અન્ધ વિશ્વાસકે ફત્તેસે છુડા કર સ્વાધીનચેતા, આત્મનિર્ભર, પ્રકૃત, ધાર્મિક તથા સચ્ચે ધર્મે નિયમોં પર ચલનેવાલા બનાયે, ઁનકો સંસારમેં હોનેવાલે પરિવર્તનોં, સુધારોંકી સૂચના દેકર કર્તવ્ય માર્ગ દિલ્લયે; ફૂટ, કલહ, અનૈક્યકો નટ કર જાતિમેં દેવ્ય, પ્રેમ ફેલાયે, તથા લોગોંકો ઁન્નતિ પથપર અગ્રસર હોનેકો ઁત્તેજિત કરે ઔર દેસા વત્તલયે તો થોડે હી સમયમેં વહુત કુલ્લ કાર્ય હો સકતા હૈ ઔર દિન પર દિન ગિરતી હુઈ નટપ્રાયઃ જૈન જાતિ પુનઃ ઁન્નતિપથકી પથિક બન સકતી હૈ । પરમાત્માસે પ્રાર્થના હૈ કિ વહ જાતિકે નેતા, વિદ્વાનોં, હિતચિંતકોંકો સુબુદ્ધિ પ્રદાન કરે જિસસે વે જાતિકી ઁન્નતિકે સચ્ચે માર્ગકો દેલ્ સર્કે । ઔર હસ વિપયમેં પૂર્ણ રૂપસે પ્રયત્ન કર સર્કે ।



(લેખક-નાનથંદ પુર્ણભાઈ ખી. એ. વડોદરા)

વડોદરાની કલાદૌશાય અને હુનર શીખવતી કલામવન નામની સંસ્થા લગભગ ત્રીસ વર્ષથી ચાલે છે. પણ તેની વીરાતવાર માહિતી ઘણા યોજાનેજ હોય એમ લાગે છે. ખુદ વડોદરાના કેટલાક વતનીઓને નામ સિવાય વિશેષ માહિતી હોય એમ જણાવું નથી. આવી હુનરશાળાઓમાં શું અભ્યાસ થાય છે તે દરેકે જણવાની જરૂર છે. હાલ કેટલાક પાંચ છ ધોરણ ધરેજની કરી કારકુની કરે છે, કેટલાક સાત ધોરણ (મેટ્રિક) પાસ કરી સરકારી નોકરી રૂ. ૨૦ વીસની કમુલ કરે છે, તેઓની અંગ્રી માસિક રૂ. ૧૫૦૦ થી ૨૦૦૦ સુધી પુરી થઈ જાય છે. કેટલાક માખાને માહિતી નથી હોતી કે અમારા દીકરાને માટે કયો રસ્તો સારો છે. ત્રણ ચાર ધરેજ ચોપડી બણી બીજી જાય છે, રમણતા કરે છે, ખરાબ સોજતે ચડે છે અને પછી દશ ખારની શુભાસ્તીમાં અંગ્રી ગણે છે. આવા હોકરાઓ માટે અને જેઓને થોડા ખર્ચમાં આટાપણું હોય તેમને, માટે પણ આવી કલામવન જેવી સંસ્થા ઉત્તમ છે.

આ બવનમાં શિક્ષણની છ શાખાઓ છે.

(૧) શિક્ષણશાળા, આમાં સીવીલ એન્જનીયરીંગની અભ્યાસ થાય છે. આ અભ્યાસ ત્રણ વર્ષનો છે. તેમાં મુથારીકામ, ફરનિયર બનાવવાનું કામ અને લાકડાનું કોતરકામ શીખવવામાં આવે છે. શિક્ષક શાસ્ત્ર, મકાનનું બાંધકામ, સર્વેઈંગ, લેવલીંગ, પબ્લિક વર્કસ, રસ્તા અને માટીકામ વગેરેમાં પણ આ શાખામાં સમાવેશ થાય છે. આ શાખામાંથી પસાર થયેલા વિદ્યાર્થીઓ સર્વેઈંગ, ડ્રાફ્ટિંગ, મેન, સપ્લાયશીઅર અને મકાન બાંધના માટે



મીઝી અને કૅન્ડ્રાક્ટરના ધંધા માટે લાયક થાય છે.

(૨) યંત્રશાળા. Mechanical engineering-આ શાખામાં જુદા જુદા સાધના દાખની સમજ ને તેના ઉપયોગ શીખવવામાં આવે છે. અભ્યાસક્રમ ત્રણ વર્ષનો છે. ત્રણ વર્ષનો અભ્યાસ પૂરો થયે થઈ કલાસ એન્જીનીયર (મુ'અઈ)ની પરીક્ષામાં ખેસી સફાય છે. એવે વર્ષે જેઓની ધુચ્છા હોય તેઓને ઇલેક્ટ્રીકલ એન્જીનિયરીંગ, ઇલેક્ટ્રીકલ ડ્રૉઈંગ, મોટોરકાંગ, એન્જીનીયરીંગ વીગેરેનું કામ બતાવવામાં આવે છે.

(૩) રંગશાળા Chemical technology-આ શાખામાં મુતર, ઉંન, રેશમ વીગેરે ઉપર નતબનના કાસા અને પાકા રંગ ચડાવનારું, ઝાપવાનું તથા રંગ કાઢવાનું શીખવવામાં આવે છે. આ અભ્યાસ બે વર્ષનો છે. આ શાખામાં શીખતા વિદ્યાર્થી કોઈ પણ પ્રકારના રંગવા ઝાપવાના કારખાનામાં મેનેજર અથવા ડાઈમ માનર તરીકે પણ સારા પગાર મેળવી શકે છે. કોઈ પણ રસાયનિક ઉદ્યોગ સ્વતંત્ર રીતે ખીલવી શકે છે.

(૪) ઔદ્યોગિક રસાયણ Industrial Chemistry-આ શાખામાં સોડા, ગંધકો તેમજ બનાવવાનું, તેલો, ચરબીઓ, સાયુ બનાવવાનું, મિલ્કમત્તી, ગીલીટ કામ વીગેરે શીખવાય છે.

(૫) વણતરશાળા Textile Manufacture-આ શાખાનો અભ્યાસક્રમ ત્રણ વર્ષનો છે. વણતરનો હુનર, વણતરની જુદી જુદી ભાત, ચોખ્ખતા, ડીઝાઈન વીગેરે શીખવાય છે. આ શાખાના ત્રણ વર્ષના અભ્યાસ પછી વીરીંગ માસ્તર તરીકે મીલોમાં કામ કરી સફાય છે અથવા પોતે સ્વતંત્ર કારખાનું પણ ઉઘાડી શકે છે.

(૬) ચિત્રશાળા Art School આ શાખામાં ચિત્રકળા, આર્કિટેક્ચર, મોડેલીંગ, રીપ્રેસેન્ટેશન, પ્રોપર્સ વર્ક શીખવાય છે. આ પાઠ્યભાગો કોઈ પણ વિભાગ શીખતા પહેલાં પ્રેક્ટીસનું કામ એ વરસ શીખવું પડે છે. પછી આ દરેક કામ ચાર વરસ સુધી શીખવાડવામાં આવે છે.

(૭) વ્યાપારશાળા Commerce-

શાખાનો અભ્યાસક્રમ ત્રણ વર્ષનો છે. ઇંગ્રેજી છઠું ધોરણ પાસ કરેલાનેજ દાખલ કરવામાં આવે છે. આ વ્યાપારી શિક્ષણ આપનારો વખત ૭-૧૦ અને સાબના ૪-૬ રાખવામાં આવ્યો છે. કે જેથી કોઈ પણ હાઈસ્કૂલમાં બહુતો વિદ્યાર્થી અથવા નોકરી કરતો લાભ લઈ શકે. હાઈસ્કૂલના વિદ્યાર્થીઓ માટે દરેક ટર્મની શી રૂ. ૬ રાખી છે બ્યારે ખીલઓ માટે રૂ. ૧૦ છે. આ શાળામાં પાસ થયેલાઓ, એકાઉન્ટન્ટ, સેક્રટરી, ટાઈ પીસ્ટ, શોર્ટહેન્ડ રાઈટર તર્ગિ જગ્યા મેળવી શકે છે.

યંત્રશાળામાં દાખલ થવા માટે મેટ્રીક પસાર થયેલાને પ્રવેશક પરીક્ષા વગર અને મેટ્રીક સુધી અભ્યાસ કરેલાને પ્રવેશક પરીક્ષા લઈને દાખલ કરવામાં આવે છે. મિથ્યશાળા, ડોસર્મ અને આર્કિટેક્ચર માટે ઇંગ્રેજી છઠું ધોરણ પાસ કરેલું હોય તેવાઓને પ્રવેશક પરીક્ષા સિવાય અને નાપાસ થયેલાઓને પ્રવેશક પરીક્ષા લઈને દાખલ કરવામાં આવે છે. રંગ, વણતર અને રસાયન શાળામાં ઇંગ્રેજી પાઠ્યસૂત્ર ધોરણ પાસ થયેલાને દાખલ કરવામાં આવે છે. વધુ માહિતી માટે કલામંત્રનના પ્રિન્સિપાલને લખવું. કેટલાક વિદ્યાર્થી માશીમાં પણ રાખવામાં આવે છે. વળી કલામંત્રનમાં કેટલીક સ્ટોવર્શિપી પણ છે. આજ દગરો રૂપીઆ ખરચી માડમાડ ખી. એ. થઈ ચાલીમ પચામ રૂપીઆની નોકરી કરવા છતાં આવા કોઈ હુનરમાં નિપુણતા મેળવવી વધારે લાભદાયક છે.

દો અમૂલ્ય રત્ન—

પવિત્ર દશાંગ ધૂપ ૨૥) રત્ન

અગરકી અગરવત્તી ૨) „

વૈદ્ય પોસ્ટે તમૂના મુક્ત મેતા જાતા હૈ ।

સરૈયા વ્રધર્સ જૈની—હરત ।



(लेखक- जैन कवि ज्योतिप्रसादजी, देवबन्द)

प्रातःकाल उठ कर ईश्वर परमात्मासे यह प्रार्थना की जाती है कि हे परमात्मन् ! हमारी नाककी रक्षा करना क्योंकि नाक बड़ी ही कोमल वस्तु है। सरदी लग जाय तो जुकाम हो जाय और गरमी लग जाय तो नज़ल। और जो कहीं सरदी गरमी दोनों एक साथ लग गईं तो बेचारी नाककी और भी मुसीबत आगई। वैसे तो नाक एक जरासी मांसकी इली है। और वह भी पतली दुबली और खोखली, परन्तु जीवनका सहारा है। जिस दमको आदमका दम बतलाया जाता है वह नाकके ही द्वारा लिया जाता है। आँखें तो केवल सांसारिक वस्तुओंके रंग और रूपको ही देखती हैं, लेकिन नाक उनके सत्य स्वभाव अर्थात् सुगन्ध दुर्गन्ध आदि बातोंका पता देती है। स्वास्थ्यके लिये नाक एक माना हुआ यंत्र है। जिस वस्तुसे स्वास्थ्यके विगड़नेका भय होता है उसके सेवनसे नाक तत्काल रोक देती है। वैसे तो इस नाक जैसी कोमल और हावभाव बनाने-वाली चीजमें प्रत्येक समय एक दुर्गन्धित मेल भरा रहता है जिसके कारण भले मनुष्योंका तो नाकमें ही दम आ जाता है, लेकिन अपने घरकी दुर्गन्धिका विचार न करके नाक दूसरोंकी दुर्गन्धियों पर सदैव नाक मौं सिकोड़ती है।

कन्नौज और जौनपुर अदिकके इत्र और रूझोंके कारखाने केवल इस नाकके ही लिये खोले गये हैं। बड़े बड़े बहुमूल्य रूमाल यद्यपि फेशनमें गिने जाने लगे हैं, पर सच पूछो तो उनको भी नाककी सेवाके ही वास्ते अपना अमूल्य जीवन अर्पण करना पड़ा है। बाग बगीचोंके सुन्दर और सुगन्धित फूलोंको देख कर सम्भव है कि आँखें दूरसे ही अपना कठेन उण्डा कर लेतीं, परन्तु नाक कब माननेवाली थी। उसने उन बेचार फूलोंको पुष्पवाटिकासे जुदा कराकर ही छोड़ा। इसकी इस कार्रवाईसे वे बेचारे अपने अमूल्य जीवनसे बहुत ही शीघ्र हाथ धो बैठे। और खाकमें मिल गये। आपने तो बहुत बार देखा होगा कि किसी व्यक्तिने ज्योंही नाक चढ़ाया और त्योंही गन्ध हो गया अर्थात् नाकका चढ़ना कमानके चढ़नेसे भी अधिक हानिकर है। जिस प्रकार नाक बहुतसी बातोंके लिये लाभदायक है उस ही प्रकार मुखकी शोभाके लिये भी शरीरका एक आवश्यक अंग है। यदि किसीके मुखपर नाक हो तो वह अपने मुखको घिसे हुये पैसेकी मांति लिये फिर जाय-कोई भी पसन्द न करेगा, परन्तु नाकवाला और वह भी सुडौल नाकवाला चेहरा सचमुच ऐसा प्यारा होता है कि जैसे मुकट सहित शिश। नाक लम्बी भी होती है और गोल भी। उमरी हुई भी होती है और चपटी भी, लेकिन लम्बी और उमरी हुई नाक अच्छी मादम होती है। लोग कह दिया करते हैं कि अमुक पुरुषकी नाक विघाताने स्वयं अपने ही हाथोंसे बनाई

है। बाह बाह ! क्या ही सुन्दर है अर्थात् जादू भर दिया है। जो देखता है उस ही-की महिमा गाता है, परन्तु किसी २ की नाक बहुत ही बड़ी और बुरी मालूम हुआ करती है। उस पर दृष्टि तो कोई क्या डालेगा? वहां तो दृष्टिका पहुंचना तक भी कठिन होता है। जिम्माके अपराधका फल जिस प्रकार सरकी गरीब खोपरीको चखना पड़ता है अर्थात् बुरे भले शब्द तो जिम्मा कह बैठती है और चांदमारी बेचारी खोपरीकी होती है। इस ही प्रकार मनुष्योंके कुर्मोका फल बेचारी नाकको भोगना पड़ता है क्योंकि दुखी मनुष्यका हाथ दुःख देनेवालेके नाक पर पड़ता है। दुःखी मनुष्य कह उठता है कि बच्चा नाककी खैर न मानना। मेरा हाथ होगा और तेरा नाक। ऐसी अनोखी बात है! अपराध तो फेरें मनुष्याका मारा शरीर और पड़े गरीब नाकके। यह भी एक प्राकृतिक नियम ही समझो अर्थात् मुसीबतके मुलमें मरदा निर्बलोंको ही पड़ना पड़ता है। जैसे देवताओंकी भेंट बकरीका बच्चा ही दिया जाता है—बेहरीसिंह कहीं भी नहीं, इस बेचारी नाकको वर्तमान समयके मनुष्योंकी ही बुरी भलीसे अपनी रक्षा करनी पड़ती हो ऐसा नहीं है किन्तु इन पर तो प्राचीन समयके ऋषि मुनि भी बलाश कर गये हैं और दृष्टांत दे दे कर इसके विरुद्ध आन्दोलन (एजी-देशन) फैला गये हैं—वे कह गये हैं कि नाक भी एक इंद्रि है जो मनुष्यके प्राणोंको मृत्युके मुलमें डाल देती है। जैसे गरीब जलि (भौरे) की नाक अम्बुन (कमल)की सुगन्ध लेनेके लिये

बेचारे भौरेकी जीवन लीला समाप्त करा देती है, बात असत्य नहीं है परन्तु भौरेकी रस्ती भर नाकसे मनुष्यकी तीन चार तोले वाली नाककी क्या समानता? बड़े आदमी फिर भी बड़े होते हैं। मला सामर्थ्यवान भी कभी दोषी माने गये हैं। यह तो एक साधारणसी बात है अर्थात् समर्थको नहि दोष सुनाई। यह तो कोई कह नहीं सकता कि ऋषि मुनियोंमें नाककी निन्दा करके कुछ भूल की हो या नाकसे द्वेष किया हो क्योंकि वे तो वीतगामी थे और ज्ञानवान थे परन्तु यही क्या ठीक बात है कि एक नियम सब ही जगह काप देजाय। यदि अनेकान्त नयसे देखा जाय तो एक बात जो एक समयमें अनुकूल होती है वही बात किसी दूसरे समयमें प्रतिकूल भी हो जाती है। खैर, जाने दो। अब यह देखो कि मनुष्य देवता नाकका कितना सन्म न करते हैं और जो करते हैं वह बनावटी होता है या सत्यताको लिये हुये। हम तो और हम ही क्यों सारा संसार यह देख रहा है कि गरीब नाकको गरमी सरदीसे बचनेके लिये एक अङ्गलका चूँथड़ा भी नहीं जड़ता। चाहिये तो यह था कि ऐसी लाभदायक और काम आनेवाली कोमल चीजको बहुमूल्य मोतियोंकी तरहसे किसी सोने चान्दीकी डिब्बामें रेशमी रूमालोंकी तरह लगाकर बड़े भारी प्रयत्नके साथ रखा जाता, परन्तु इसके विरुद्ध जो कुछ किया जा रहा है उसे मालूम करके आप आश्चर्य मानेंगे अर्थात् उपकारके बदले अपकार किया जा रहा है। मला कितने आश्चर्यकी बात है कि जो नाक जरासी गरमी



सरदी तकको न उठा सकी हो उसको लोहेकी सुइयोंसे बांधा जाता है और विधे हुये सुराखमें नथ, लटकन, बुलाक आदिक लटकाये जाते हैं अर्थात् नाकका भी नाकमें दम किया जाता है । कमलके फूलकी डण्डीसे हाथी बांधना यही तो कहलाता है, लेकिन नाक ऐसी निर्लज्जतासे जीवित है कि जिसका कुछ भी ठिकाना नहीं । अन्यथा ऐसे जीवित रहनेसे तो मर जाना ही लाख दरजे अच्छा है ।

आप कहेंगे कि जनाव नाकको यह कष्ट तो अनपढ़ स्त्रियों या मूर्ख मनुष्य दे रहे हैं अन्यथा शिक्षित समान तो नाककी हर तरहसे प्रतिष्ठा ही करती है । भारत देशके इत्र फुलेल ही नहीं किन्तु इसके वास्ते इङ्ग्लैंड तकसे तेल और तबैण्डर मंगा रही है । पुराने फटे कपड़ोंके टुकड़ोंको काममें न लाकर इसके वास्ते मुलायम और उन्हा रूमाल काममें ला रही है अर्थात् बहुतसा रूपिया खर्च कर रही है ।

बात वास्तवमें सही है और यह हम ही क्या सब कोई देख भी रहे हैं, परन्तु भाई नाककी कोमल और नन्हीसी नोक पर चश्मों और ऐनकोंकी कमानियोंका बोझ रखते हैं तब बेचारी नाककी चीं चोल जाती है और वह बहुत ही बेचैन हो जाती है । यदि नाकके ऊपर इतनी कठोरता सीधे साधे मनुष्य करते तो इन भले आदमी नाकका पस लेकर उनको बुझा मचा भी कह डालते परन्तु पश्चिमी शिक्षाके पण्डितोंको कौन कुछ कहे ? यहां तो नाक भी मौन धारण किये हुए कान विंधवा रही है ।

“ रानीसे कौन कहे कि तू परदा कर ” सब

जानते हैं कि हम पश्चिमी शिक्षाके पंडितोंसे पहिले ही फटकार खाये बैठे हैं । यदि नाकका पक्ष लेकर जरा भी जवान खोली तो न हमारी खैर है और न नाककी, दोनोंका वायकाट जरासी देरमें हुआ रखा है । अब बेचारी नाक अपनी जगह पर खड़ी हुई बोझ ही तो उठा रही है और यदि कहीं सब आन्दोलनके अपराधमें देश निकालेकी सजा पागई तो फिर क्या होगा इस वास्ते सब मौन साधे हुये हैं और कष्टको सहन कर रहे हैं ।

बाबा नाक बनी रही । घर रहे या जाय । विरादरीमें नाक रखनेके वास्ते क्या कुछ करना पड़ता है । क्या इससे आप परिचित नहीं हैं । मुरारीलालने छोटे बेटेके विवाहमें रहनेवाला मकान बन्धक करके विरादरीकी ज्योंगार केवल नाक रहनेके लिये की है । चान्दनगयणने बापके मर जाने पर अपनी कुल आमदनीका मार्ग बन्द करके विरादरीका नुकता नाककी ही रक्षाके लिये किया है और मन्गूलालने बेटेके होनेकी खुशीमें लाल कोठीके दाम उठाकर रण्डियोंका नाच नाकके ही बचे रहनेकी कराया है । यदि यह लोग ऐसा न करते तो फिर इनकी नाक कहां थी और यह इन्होंने ही थोड़ा किया है । यह तो विरादरीके सब ही मनुष्य करते हैं और कहा करते हैं कि साहब क्या करें । आखीर विरादरीमें नाक भी तो रखनी ही है । यदि नाक कट गई तो फिर जीना ही निष्फल है अर्थात् नाकका ख्याल यहां तक है कि चाहे दाल और रोटी भी मांग कर खाना पड़े परन्तु नाक बच जाय—भाई नाक ! कहो



कोई लाख, लेकिन पुण्य तूने खूब किया है । क्या हुआ जो त एक दो तोले मांसकी डली है परन्तु भाग्य तो तेरा बहुत ही ऊँचा है । शरीरके अन्दर और जितने भी अङ्गोपाङ्ग हैं वे बड़े हैं या छोटे, हल्के, या भारी, बुरे हैं या भले, लाभदायक हैं या हानिकार परन्तु उन सबसे तेरा ही दरजा ऊँचा है । तेरे ऊपर संसारके मनुष्य तन-मन-धन सब न्यौछावर किये बैठे हैं और कक्षा करते हैं कि जाँय लाख और रहे नाक-यह सब तेरे सौभाग्यकी ही बात है । वस यही तो कारण है कि यह अमरदेव भी सदैव तेरी ही खैर मनाता रहता है-

शैर ।

परमं ऐ यार मेरे धूल रहै-खाक रहै ।

पर यह ख्वाहिश है मेरी मुंह पे मेरे नाक रहै ॥

नवीन ग्रंथ-

हमारे यहांके उत्तम ग्रंथ ।

आदि पुराण	१६)
उत्तर पुराण	१०)
दोनों एक साथ	२५)
पञ्चाध्यायी टीका	५॥)
धर्म-प्रश्नोत्तर	२)
जिनशतक	॥)
दिवाली पूजन	३)

मिलनेका पता—

लालाराम जैन,

महारागंज इंदौर ।



आत्म निधि ।

ले०-५० लोकमणि जैन, मोटेगाव ।

समस्त संसारकी बाहरी भीतरी आस्थाओंको अश्लोकन करनेवाले हम ही तो हैं क्योंकि वह हमारी आत्मनिधि है । सांसारिक अथवा आत्मभिन्न पदार्थोंमें हमारी सत्ता नहीं है और न वह आत्मनिधि ही है । जिन २ पदार्थोंमें हमारी सत्ता है वे सब हमारे हैं । इसी लिए वे हमारी निधि स्वरूप हैं । जिन २ पदार्थोंको हम उत्पन्न और नाश होते देखते हैं उनका अस्तित्व हमारी आत्मामें नहीं है । हमारी अंतर अमर आत्मा क्षणिक (नाशमान) पदार्थोंसे प्रीति नहीं करती क्योंकि वे आत्माके अस्तित्वसे भिन्न और अल्प समय साथ देनेवाले हैं । इसी लिए सदा आत्मामें रहनेवाली अनित्य, अविनाशी गुणवाली ही सच्ची आत्मनिधि है ।

कभी नर्कमें, कभी स्वर्गमें, कभी तिर्यचोंमें और कभी देवोंमें आत्मदेव, क्रीडार्थ जाते हैं पर तत्रस्थ पदार्थोंको निजनिधि नहीं मानते, यह एक बड़ी विलक्षणता है । आत्मदेव हमारे इतने पवित्र और अकथनीय गुणोंके भण्डार हैं, निरन्तर अनेक पर पदार्थोंके साथ रहने पर भी अपनी उज्ज्वलता पदार्थोंमें नहीं पहुँचने देने, और न उनसे कुछ लेकर आत्मनिधि



बनाते हैं। हमारे आत्मदेव कभी क्रोधाग्निमें घंसे जाते हैं। कभी मानगिरिकी सैर करने चले जाते हैं, कभी मायाकी संगतिसे अपने कहने विचारने और करनेमें भेद कर लिया करते हैं और कभी लोभकी जुगलमें फंस बाह्य धनको अपना समझने लगते हैं, इतने पर भी जब निज निधिका अवलोकन करते हैं तब क्रोध, मान, माया और लोभ इनमेंसे एकको भी आत्मनिधिमैं नहीं पाते हैं। क्यों न हो, आत्मदेव ही तो ठहरे। सबमें रह कर भी सबसे प्रथम अपनेको रखना यही तो आत्मदेवकी आत्मनिधि है।

आत्मदेवकी संपत्ति छीननेके लिए इस जगत्में कर्मने अनेकानेक ठगिया भेज दिए। आत्मदेवके साथ उन डाकुओंका मेल मिलाप भी रहने लगा है। आत्मदेव इनकी करामात देखनेके लिए अपनी निधिका ताला बंद कर इनहीकी हामें हा मिल ने लगे। कर्म दूतोंने अपनी सफलता समझ आत्मदेवकी निधि छूटनेका प्रयत्न किया। आत्मदेवने निधिको न बतलाया। आत्मदेव बोले, भाई मैं तो गरीब हूँ। तुम्हारे दिए ही पशार्थोंसे लग निकालता हूँ। तुमने यह शरीर रहनेको दिया, यह जीभ चादके लिए दी। यह नाक सूंघनेको दी। नेत्र देखनेको और कान सुननेके लिए दिए। हम जब घर नदलनेको कहते हो शीघ्र दूसरे घरकी तलाशी कर लिया करता हूँ। कभी तुम अकेला शरीर ही देते हो तो सादर ग्रहण कर लिया करता हूँ। यदि साथमें कुछ २

इंद्रिया दे देते हो तो मैं ले लिया करता हूँ। मेरे पास तुम्हारे देने लायक है ही क्या जो तुम्हें समर्पण करूं। कर्मोंके दूतोंने समझा कि सचमुचसे आत्म देव गरीब हैं, इनके पास कुछ नहीं है, यदि कुछ होता तो ए रखते कहां? आत्मदेव इतने गरीब हैं तो हमें इनकी निधि छूटनेको क्यों भेजा? कर्म दूत घबड़ाए और अपने राजा “मोह” के पास आत्मदेवकी शिकायत मनमानी करने लगे।

मोहराज भी आत्मदेवके पास अनेक सेवकोंको साथ लेकर आए, बोले—आत्मदेव, तुम अपना स्वरूप छिपाते हो। तुम्हारे पास अगणित रत्न हैं, तुम शीघ्र ही दे दो नहीं तो हम तुमको तीव्र यातनाओं देंगे। यह सुन कर आत्मदेव किंचित हसे पर बोले कुछ नहीं। आत्मदेवकी मंद मुस्कान मोहराजके लिए तीरका काम कर गई। उन्हें भारी क्रोध आया। सेवकोंसे बोले—इसी वक्त इसको कैद कर तीव्र दुःख दो। बिना टिढ़ाईके यह अपनी आत्मनिधि न बतायेगा। मोहराजका हुक्म हुवा कि आत्मदेव कैद हो गए। कोई आत्मदेवको मारने लगा, कोई घसीटने और कोई उलटा टांगने लगा। आत्मदेवको कोई चक्की पिसाने लगा, कोई स्त्रियोंको उनके पास रख गया, कोईने उनको झड़टके लिए बच्चे लाकर दिए, कोईने तान तैल ऊपर सिंचन किया, इतने पर भी आत्मदेव कुछ न बोले। जब सतानेसे आत्मदेवसे कुछ न पाया तब स्वयं मोहराज आए। आत्मदेवको अचेत कर दिया, फिर मेम



किया, कभी भोगनेको स्त्री दी, कभी धन दिया, कभी शरीर सुख दिया और कभी २ पुत्र छीनकर रखाया, कभी धन विहीन कर भीख मंगवाई, कभी कुछ और कभी कुछ उपसर्ग आत्मदेवके किये पर आत्मदेव किंचित भी न बोले । आत्मदेव जब कर्मोंकी सब कगमात देख चुके-जलमें उलझ कमलकी तरह अपने ऊपर कुछ भी कर्मोंकी सत्ता न देख बोले—कर्मों, तुम टार गए अनतानंत काठ साथ रहने पर भी तुम मेरे स्वरूपको न जान सके । तुम्हारा पराक्रम भी मैं समझ गया । तुम समझते होगे आत्मदेवको हम सत्ता रहे हैं, लुभा रहें-खिन्ना रहें हैं, आत्मदेव हमारे होगए, हमारे राज्यमें ए निवास करने लग गए, इनका खनाना हमें मिल गया, हमने इन्हें मटियामेंट कर चक्का चूर कर दिया, पर यह सब जानना तुम्हारी भूठ है, तुम्हारे सेवक मेरेको स्पर्श भी नहीं कर सके । तुम्हारे द्वारा दिए गए दुःख मेरे पास तरु आ ही नहीं सके । जो तुम प्रहार करते थे वे सब तुम्हारे दी हुई वस्तुओं पर ही आकर चोट पहुँचाने थे । तुमने रागद्वेष वशने वाली चीजें जो मेरे पास भेजी थीं उनको मैंने स्पर्श भी नहीं किया । तुम समझते होगे आत्मदेवको हमने दरिद्र कर दिया, समस्त निधि छीन ली पर यह सब कुछ भी हुआ । मेरी निधि तुम्हें नजर भी नहीं आई । मेरी निधि अक्षय-अनंत-और तुम्हारे अगोचर हैं ही और रहेगी ।

कर्मों, तुमने मेरे प्रति अनेक उपसर्ग किए तथा मेरे साथ बहुत समय तरु रहे । तुमने अपणित अपराध किए । अच्छा, लो मैं अपनी

निधिमैका एक अमौलिक रत्न निकाल क्षमा नामक तुम्हें वितरण करता हूँ । इस रत्नके माहात्म्यसे संसार वशमें हो जाता है, वैरी वैर छोड़ देता और विपत्तियाँ पास नहीं आती । इस रत्नके प्रकाशमें सूर्य चन्द्रकी रोशनी छिप जाती है । इसका गुण अपार है । सप्तसारी जीव यदि तुम्हारी नगरीसे पृथक् होना चाहें तो इसके प्रभावमें अलग हो सकें हैं । यह तो मेरा एक रत्न है । ऐसे २ अनन्त रत्न मेरे पास हैं । मैं कभी किसीको मारता नहीं । किसीसे मैं मत्ता नहीं । मैं सनपर समदृष्टि रखता हूँ । मैं क्षमा, मार्दव, आर्गव, सत्य, शौचादि दश धर्मोंका स्वामी हूँ । सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र्य इनका प्रभुजी मैं हूँ । मैं सद्गुणोंका भंडार हूँ, और यही मेरी आत्मनिधि है ।

जितने भी सद्गुण हैं, जिससे प्राणी समस्त पाप क्रियाओंसे रहित हो सकते हैं, जिनसे सुख और शान्ति का अनुभूत प्राणियोंको होता है, वे सब रत्न आत्मनिधि स्वरूप हैं । जो प्रयोग प्राणियोंकी रखा करते हैं, जिन उपायोंसे कर्मबधन टूटने हैं वे सब आत्मनिधिके सुमन (पुष्प) हैं । आत्मदेव स्वच्छी आत्मनिधिसे विभूषित हो स्वपर कल्याण करें । यही आत्मदेवकी भावना है ।

सुखसागर भजनावली ।

नैवर्ममूषण द्र० शतिलप्रसादजीने ज्ञाते हुये इस नवीन भजन संग्रहमें कोई २९० उपदेशात्मक भजनोंका संग्रह है । मूल्य ॥२०॥
मैनेजर-दि० जैन पुस्तकालय-सुरत ।

दक्षिण भारतमें-

जैन पुरातन शिल्प ।

(लेखक-एम. एम. पेरिस)

पाठकों ! आपको यह बता देना आवश्यक है कि इस लेखमें जैन धर्मके प्राचीनता विषयक इतिहासका कुछ संबंध नहीं है । इस लेख-द्वारा केवल दक्षिण कनाराके जैन स्तूप आदिका वर्णन ही किया जायगा । इस प्रांतकी विशेष डीलडौलकी पत्थरकी चट्टानोंकी मूर्तियां मिश्र देशके "पैरामिड" (Pyramids) के समान ही हैं । सुतरां इस प्रकारकी मूर्तियोंमें सबसे बड़ी हैं । दर्शनीय वस्तुओंमें इनकी गणना होनेके कारण अनेकों पथिक, दर्शक यूरोप, अमेरिका आदि दूरस्थ देशोंसे आते हैं ।

पाठक ! इन अनोखी मूर्तियोंके निर्मापित कर्ताओंके विषयमें लिखना नितान्त योग्य और मनोरंजनदायक होगा । कनारा, जहां दक्षिण भारतमें भी जैनधर्म कालके प्रभासे हास अस्थायी प्राप्त है, जनवरी सन् १९११ की मनुष्य गणनाके अनुसार केवल ९००० जैन जन संख्या मंगलोर, उप्पिननगढ़ी, और उदीपी तालुकोंमें हैं । इस पर भी इस संख्याका कुछ विशेष कारणोंवश हास होता जाता है । और यदि इसी वेगसे हासका पहिया दुलकता रहा तो जैनियोंकी भी अस्तित्वका अन्त इस शताब्दिके अन्तके साथ हो जायगा ।

जातिकी अपेक्षा दक्षिण कनाराके जैन मुख्यतः दो दलोंमें विभक्त हैं । अर्थात् 'इन्द्र'

पुजारी, जो अपने अन्तराधिकारमें साधारण रीतिको व्यवहारमें लाते हैं और 'श्रावक' जो 'अलिया-सन्तान'की रीति व्यवहारमें लाते हैं । जैनियों और बूटों-जो सदैवके निवासी हैं-के सामाजिक रीतियोंमें, रिवाजोंमें, और जीवनकी क्रियाओंमें विशेष सदृशता है । ब्राह्मणोंकी तरह जैनी भी यज्ञोपवीत धारण करते हैं । और इसीसे वे बूटोंसे भिन्न प्रतिभासित होते हैं । जैनी मांमभोजन और मादक वस्तुओंका भी व्यवहार नहीं करते हैं । जैनियोंकी मृत्यु-पातक विषयक रीतियां १६ दिवस पश्चात् मंदिरजीमें 'अभिषेक' करनेसे पूर्ण हो जाती हैं ।

* * *

वास्तविकतामें बौद्धधर्मका दक्षिण भारत पर आक्रमण विदित नहीं होता है । ऐसी ही उपलब्ध ऐतिहासिक व्याख्याओंसे, यही विदित होता है कि सबसे प्राचीन अवस्थामें कनाराके राजा नास्तिक धर्मी थे । मैसोरके हिन्दूबह्माल राजाओंने और उनके पड़ोसी जैन कारकलके बैरास बोडियर राजाओंने भी अपनी स्वतंत्रता प्राप्तार्थ प्रयत्न किए थे । और अन्तमें जैनराजाओंकी विजय हुई । जैन मेमारीके कर्ता राज मैसोरमेंसे उठ कर कनारामें अपना कार्य करने लगे । समस्त प्रांत मंदिरों, मूर्तियों, स्तूपों द्वारा परिपूर्ण हो गया । इनमें वरकुर सन् १६०८में मैसोरके लिंगायत राजाओं द्वारा विध्वंस कर दिये गए थे । मैसोरके उपयुक्त मेमारोंने एक हिन्दु और जैन भावोंसे मिश्रित रीतिसे उपयुक्त मंदिर आदि बनाए थे ।



कारण कि एक समय दोनो जातियोंमें पूर्ण प्रेम था। बरकूरके खंडहर अनुमानतः दो वर्गमीलोंमें फैले हुए हैं। और उनमें समय समय पर अच्छे २ निकासीके कामके नमूने निकले हैं। उनमें गढ़ा हुआ खनाना भी अनुमान किया जाता है। कारण वहांसे ग्रामवासियों द्वारा कुछ निकाला भी गया था। दक्षिण कनारामें जैन राज्यवंश इस प्रकार थे कि मूड़वद्रीमें चौतार नन्दावरमें बनगर अलदनगद्दीमें अजालर, वदनगद्दीमें मौज्यर और मुल्कीमें सावन्त, जो अन्तमें टीपु सुल्तान द्वारा विध्वंस कर दिए गए थे। वर्तमान समयमें भी बहुतेरे घराने उपर्युक्त राज्योंके वंशज मिलेंगे और उन्हें उनके पूर्वजोंकी जमीनके कुछ भाग पर अधिकार मिला हुआ है।

* * *

कनारामें पुरातन जैन शिल्पके मुख्य चार स्थान हैं। अर्थात् (१) कारकल (२) चेन्नूर (३) मूड़वद्री (४) और गुरुचंकेरी। प्रथम दो स्थानोंमें मंदिरोंके अतिरिक्त दो विशाल मूर्तियां भी हैं। समस्त संसारमें विशाल मूर्ति श्रवणबेलगोलकी है। यह मूर्तियां साधारणतया “बद” के नामसे इस कारण प्रसिद्ध हैं कि वे एक पत्थरकी दिवाल द्वारा वेष्टित हैं। “बस्ती” अथवा मंदिर और स्तंभ शेष दो स्थानोंमें हैं। तीनों ही विशाल मूर्तियां प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेवके पुत्र बाहुबलिकी मूर्तियां हैं। कनाराकी मूर्तियोंमें कारकलकी जो ४१ फीट ५ इंच ऊंची है, सबसे

बड़ी है। यह सन् १४३२ ई०में बनी थी। बेलगोलाकी मूर्तिके निकट यह छोटी है। बेलगोलाकी मूर्ति ५७ फीट ऊंची है और राजा चागुण्डरायद्वारा सन् ९७७ से ९८४में बनवाई गई थी।

कारकल—की मूर्ति एक विल्लोरी पत्थरके चट्टानके ऊपर उपस्थित है। और कोत्तों दूरसे दृष्टिगोचर होती है। कारकलकी मूर्तिको मुद्रा देखनेसे शांतिका अनुभव होता है। और जैसा ही दर्शक उसके निकट पहुँचता जाता है वैसे ही उसकी विशालता बढ़ती जाती है। वह चट्टान भी एक तालाबके निकट खड़ा है। यह तालाब अथाढ़ है, और पुराने मच्छोंसे पूर्ण है, ऐसा कहा जाता है। और यह भी प्रसिद्ध है कि यह मूर्ति चंद्रवंशीय भैरवेन्द्रके पुत्र वीरपाण्ड्या द्वारा श्री बाहुबली स्वामीके रूपमें बनवाई गई थी।

निम्नलिखित मूर्तिको वर्णन ‘फ्रेजरस मैगज़िन’ (Fraser's Magazine) के मई सन् १८७५ के अंकसे दिया जाता है। वर्णन चाहे बौद्धके चीन और लंकाकी मूर्तियोंका हो यथार्थ है। कारण कि गौमटेश्वरका भी यथार्थ वर्णन है। कारकलके ही निकट एक पथरीली, विशेषतया गोलाकार पहाड़ी है। पहाड़ीकी जड़ तो पत्थरों और झाड़ियोंसे भरी पड़ी है। परन्तु ऊपरकी चढ़ाई चिकनी और सीधी है। कुछ दूरीसे पहाड़ीकी चोटीकी ओर देखनेसे बड़ी बहानियोंके किले आदि दृष्टिके सम्मुख नाचने लगते हैं कारण कि चोटी पर एक दुर्गके समान



दिवाल है - जिसमें महारावदार दरवाना है । और उन दिवालोंने ऊँचा एक मूर्तिका धड़ इतना शरीर निकला दिखाई पड़ता है । यह मूर्ति इस प्रान्तकी अन्य मूर्तियोंके समान हैं । विशालता मिश्रदेशीय है । और भारतवर्षमें केवल येही मूर्तियाँ ऐसी हैं । पहाड़ीकी चोटी पर चौतरफा दिवालसे वेष्टित चबूतरा ५ फीट ऊँचा है उसी परसे यह मूर्ति ४५ फीट ऊँची बनी हुई है । नम्र विलोरी पत्थरकी एक ही सावित चट्टानसे उभरी हुई, शताब्दियोंके पानी हवासे काली पड़ी हुई, विशाल मूर्ति बिल्कुल सीधी सुयोग्य रीतिमें दोनों बगलोंमें हाथ लटकाए हुए खड़ी है । हैं ! उनकी आकृति कुछ वक्रता लिए हुए है परन्तु एकसादे गौरव-प्रभावकी छटाको दर्शा रही है । स्वरूप और आकृति वैसे ही हैं जैसे कि लंकासे चीन तक अधिकतर तातारी जातिके रूपमें गौतमबुद्धकी हैं । और यह भी एक अद्भुत बात है कि मूर्तिका ढंग-रूप हिन्दुओंकी मूर्तियोंसे कुछ भी भिन्न नहीं है । वाल घुंघरवाले और घने हैं । बड़े भरे हुए कपालोंसे मुखकी आकृति भारी हो जाती यदि उनके शांतिपूर्ण और सम्मुख-दृष्टि-आरोपित नेत्र और लम्बी, नुकीली नाकसे उनकी सुखाकृति प्रभावशाली और गौरवान्वित न होती । मस्तक आकृतिके योग्य ही है । ओंठ भरे हुए और मोटे हैं । ऊपरका ओंठ कुछ लम्बा है जिससे अच्छी, निकली हुई डुब्डी आच्छादित हो जाती है । रोगों तक नीची मुगाएँ कुछ लम्बी हैं । और

सुयोग्य हाथ और उंगलियाँ घुटनों पर ही रखी हैं । मूर्तिकी स्थितिके कारण कंधे बहुत चौड़े हैं । प्रत्येक चरण ४ फीट ९ इंच लम्बे हैं । और उसी चट्टानमेंसे उभरे हुए चबूतरे पर स्थिति हैं । और यह चबूतरा मूर्तिकी विशाल आकृति और बोझ ८० टनके अयोग्य है । एक कमलकी डंडी, प्रत्येक चरणसे निकलती हुई टांगों और भूनाओंमें लिपटी हुई है । तिस पर भी मूर्ति, जोखम सहित है । सात वर्षमें एक दके सर्वत्रके जैनी मूर्तिका नारियलके क्षीरसे अभिषेक करने अर्थ एकत्रित होते हैं । जैनियोंने अपने ही खर्चसे दर्शकों और यात्रियोंके लाभार्थ सीड़ियाँ उकरवा दी हैं जिससे चढ़ाईमें सरलता हो गई है । गोमट स्वामीके अतिरिक्त कारकलमें दो वस्तियाँ व एक स्तम्भ है । हिलंगगद्दी बस्ती ग्रामसे अनुमानतः २ मीलकी दूरी पर है । और एक ऊँची पहाड़ीकी तट्टहीमें बना हुआ है । इस पहाड़ी परसे समुद्र जो १५ मील है, का पूर्ण दृश्य दिखलाई पड़ता है । वस्तीमें मुख्य दर्शनीय वस्तु एक ९० फीट ऊँचा पत्थरका स्तम्भ है । जो कि उसके दरवाजे पर बना हुआ है । और अच्छी चांदी और धातुकी प्रतिमाएं भीतर विराजमान हैं । स्तंभ समस्त कनागामेंसे सुन्दर माना जाता है । डीलडौलकी अपेक्षा वह अवश्य सबसे बड़ा है परन्तु कारीगरीमें वह मूड़वद्दीके और-खास कर वेनूरके एक स्तंभसे अच्छा नहीं है । कारकलमें सर्वोत्तम मंदिर 'चतुर्मुख' नामक है । जो गोमट



स्वामीसे कुछ दूरी पर है। वह मंडपके रूपमें बनाया गया है। और उसके बीचमें एक बड़ा द्वार है। और उसके चारों तरफ एक वरान्डा है। छत वेलोरी पत्थरके चौकोसे पटी हुई है। किसी समयमें वह मठके तौर पर समझा जाता होगा। बाहरी दीवाल और स्तंभों पर सुन्दर नकाशीका काम है। नकाशीमें देवताओंकी मूर्तियां चंद्र सूर्यादि बहुत ही महीन और मनोज्ञ हैं। जैसे कि चीनी हथीदांतका काम होता है स्तंभोंके आसपास बैसी ही नकाशीके कामके झाड आदि हैं। और विशेषतया दोवालके पत्थर पर सैकड़ों नाग एकत्रित लिपटे हुए अथवा एक हास्यजनक स्तिर फलपत्तोंसे शोभित उकरे हुए हैं और भीतर बाहर धातुकी चल्हासन जैन मूर्तियां विराजमान हैं।

वेनूर-वेनूरके गोमटस्वामी ३५ फीट ऊंचे हैं। और एक इंटोंके चबूतरे पर खड़े हुए हैं। यह मूर्ति भी कारकलकी मूर्तिके समान उत्तरकी ओर मुख किए हुए हैं। इस कारण सूर्यका प्रकाश इनके धुंधले मुखकी आकृतिको नहीं चमका सकता। वह मूर्ति गुरपुर नदीके बाएं तट पर उपस्थित हैं। मूर्ति पर एक बिगडा हुआ लेख है। जहां तक वह पढ़ा गया है उसका सारांश यही है कि चामुण्ड वंशीय थिम्भरा-माने बेलगोलके भट्टारक चारुकीर्तिके कहनेपर यह मूर्ति बनवाई थी। चारुकीर्ति थिम्भरा-आके धर्माचार्य थे। मूर्ति सन् १९०४ ई०में निर्मापित की गई थी।

वेनूरमें एक जातिश्वर नामक जैन मंदिर और है उसमें भी एक मानस्तंभ है। यह स्तंभ भी

कनारामें सर्वोत्तम समझा जाता है। उसीके निकट एक वेदी है जिसके द्वारकी चौखट नकाशीका एक अद्भुत नमूना है। यह चौखट एक प्रकारके पत्थरमें उकेरी हुई है। अनुमानतः मैसूरसे लाई गई होगी। वेदीमें काले पापा-णकी २ फीट ऊंची एक ही पंक्तिमें २४ तीर्थ-करोंकी प्रतिमाएं विराजमान हैं। प्रत्येक प्रतिमा एक गोलाकार महिरावमें विराजमान हैं।

मुड़बद्री-मुड़बद्री विशेषतया जैन मेमारीके कामका चन्द्रनाथके मंदिरके कारण सर्वोत्तम नमूना है। यह मंदिर कारकलको आनेवाली मुख्य सड़ककी एक शाखा पर प्रायः १० मीलकी दूरीपर है। भीतर जानेके द्वार पर एक अति सुंदर नकाशीका काम है। उसके पीछे मानस्तंभ हैं। उन पर भी नकाशीका काम अच्छा है। मंदिरकी आकृति चीनाइयों (chinese) की तरह तीन खंडी है। छत एक दूसरेके ऊपर एक अद्भुत रीतिमें बनी हुई है। और पत्थरके चौकोसे लदी हुई है, परन्तु सबसे ऊपरी खंडमें पत्थरके चौकोकी जगह तांबेके चौके हैं। मंदिर एक सहस्र स्तंभोंके नामसे प्रसिद्ध है। कारण कितने ही स्तंभ अनेकों प्रकारकी सुंदरताको लिए हुए बने हैं। भीतर जानेकी मनाई है। परन्तु दर्शकोंके लिए द्वार खोल दिया जाता है। एक बत्ती अंधेरेमें टिमटिमाती हुई और तब तीर्थंकर श्री चंद्रनाथकी धातुकी प्रतिमा दृष्टिगोचर होती है।

मृतक स्थानोंपर-स्मृतिमें बनाए हुए चबूतरे अंग्रेजी मृतकस्थानके सदृश दशक वहीं निकटमें दूसरे स्थान पर देखेना। स्मृति-चिन्ह प्रदर्शक।



ત્વરે-જો જીર્ણ હો રહે હૈં-જૈન મુનિયોંકે
ત્વરે સ્થાન પર એક પ્રકારકે પથર ઓર ચિલોરી
પથરકે બનાવે ગણે હૈં । આવતાકાર રૂપમે
ચિત્રિત હિન્દુઓંકે કઠાકે મંદિરકે સદશ હૈં ।
મૂઝવદી મેંગલોરકે ઉત્તર પૂર્વમે એક મૈદાનકી
લઠદીમે ૨૨ મીલ પર હૈ ।

ગુરુચંકેરી-વેલ્તનગદીસે દો મીલ ગુરુ-
કેરીકે સંહર અધિક પ્રશંસનીય નહીં હૈ ।
ફવલ દો મંદિર શાંતેશ્વર ઓર ચંદ્રનાથકે હૈ ।
ઓર એક સુંદર મંડપ ઊંચે ૨ સ્તંભોંકા હૈ ।
ત્રીનોં ઈમારતે એક દુસરેકે નિકટ હૈ । ઉંકે
બાહર માનસ્તંભ હૈ । ઈસકી નકાશીકા કામ
જિલે મરમે અતિ સુંદર હૈ ।

ઇસ પ્રકાર કનારામે જૈનિયોંકે સ્તૂપ હૈ ।*

અનુવાદક-“મારત” અલીગંજ (ઇટા)

* અંગ્રેજી જૈન ગઝટકે લેક્સે અનુવાદિત ।

જૈન સમાજ સુધાર ।

હરિગીત છંદ.

જાગ્યો વ્હાણ ? જાગ્યો પ્યાર ? તિમિર અધ દૂર ભાગવા,
તમ સ્થિતિને સુધારીને, નિજ ગાતિને ઉદ્ધારવા.
પૂર્વ દિશાને સરજ આવી, એમ કહે છે ? બાપજો ? વળી વિર વાક્ય સાચવ્યાનું, પુણ્ય તમને લાગશે;
પણ પક્ષી બી સજ ઉઠે સાથે, શમન કરે કેમ જૈનીઓ ? મિત્ર વર્ગનું શ્રેય દેખી, સુખ મોહન જાણશે.
તમ બંધુઓ પીણ છે, સંકટ તણા પરતાપથી,
સુસ્તીને વળગી રહી, નિર્ધન બન્યા તે ખંતથી.
વળી જાન વિશુ દલદા થયાં, તે જૈન શબ્દ ત્યજવતા,
નિજ દરજ ત્યજ ખંતથી, નિજ માત તાત લગવતા.
તેજ જનને બોધ દેવા, ખંત રાખી આવળે,
એમ દંધ તે આતમે, હમંગ થશે સુધારળે.
તમ કુળમાં ક્ષત્રે કુડાં, બાળ લગ સમાન ને,
નાની વયની બાળા સાથે, જદ પરણી જાય તે.
વળી યોગ્ય અવિયોગ્ય જોડાં, જાતિમાં જોડાય ને,
નિજ કન્યાનું દ્રવ્ય લઇ, સુખમાં સમાવે તાત તે;
વળી કુળનું અભિમાન રાખી સુત શત્રુ થાય ને,
નાની વયમાં મોટી કન્યા, લારી ખુબ પરતાપ તે.
એ અને મિત્ર પશુ ક્યાલ, ને છે ગાતિમાં,
કમ્મર ઈસીને દુર ભગાવે, સુખ થાયે જાતિમાં;
તોજ જનની વિક્રતા, આવી ખરા પ્રભાશુની,

જો જાતિ બંધુ યોગ્ય રસ્તે, સાથે પુરણ પ્યારથી.
હું અને તમે બધાએ, પુત્ર વિરના છે ખરે,
પછી ભિન્નતા શી રાખવી, છે ધિક્ક તેથી આજરે;
શ્વેત વસ્ત્ર ધારણ કરે-ધેતાંખરે પેખાય છે,
નગ્ન મુદ્રા ધારવે, દિગંબરે દેખાય છે.
મેદ બાવ છે કલ્પનાએ, શાસ્ત્ર બન્ને એક છે,
નામ રાખ્યાં દુસરાં એ, ગુરુને નિજ ૨૬ છે;
જાનવિશુ જન્મ છંદગી, હતી તમારા લોકની,
ત્યાહરે જુદા પડ્યા તમ, જૈન એ શુભ સંપત્તી.
જાન પામ્યા આજ કળે, લાગીયા કંઈ જાણવા,
તો ભિન્નતા સો છોડી દો, રૂપિ ધર્મ ઉદ્ધારવા.
તમ ગાતિલા સેવે, ધણા, મિથ્યાત્વ જેવા દેવતા;
ઉપદેશ આપો તેમને, તે થાય જેથી દેખતા.
પાશ્ચાત્ય વિદ્યા પામેલા, યુવાન વર્ગે માનજો,
નિજ ગાતિલાને સ્થાય આપી, પ્રેમ ધરી ઉદ્ધારજો;
આ સમય કલ્પવાને નથી, પણ કરી બતાવા કારણે,
કરી બતાવે કામ ઉડાં, આવી ધરથી બારણે.
તોજ આ જૈનો તણો, ઉદય થશે આવેશથી,
તમ બંધુઓ ધર્મે રહી, ધન ધાન્ય ધાન્ય પામે પ્રેમથી;
વળી વંશની વૃદ્ધિ થઇ, બળવાન પુત્રો પાકશે;
નિજ આતમજળથી, સ્થાય આપી જૈનને ઉદ્ધારશે.
ગાતિની ચકતી થઇ, સંસારમાં સુખ પામશે,
જદ જન આનંદથી, આશીરવાદો આપશે.
કાવ્ય પ્રમાણે ચાલજો, સુત-સુખ અવધાર,
મોટી ઉમરમાં કરો, હરત ગ્રંથજુ નિજ બાળે.
૧
૨
૩
૪
૫

જૈની જન આ ધારજો, પત્રરૂપી ઉપદેશ.
અક્ષર પણ મનમાં ધરો, વર્તો સુણી આદેશ.
કાવ્ય પ્રમાણે ચાલજો, સુત-સુખ અવધાર,
મોટી ઉમરમાં કરો, હરત ગ્રંથજુ નિજ બાળે.
૧
૨
૩
૪
૫
સંબંધ એવા નવ કરો, જેથી થાયે કુળ,
લાલક જોડાં મેળવો, મોહન પામે સુખ.
કાળીસા મિત્ર મંડળી.



कीर करस्तुफल !

" Lives of great men all remind us,
We can make our lives sublime ! "
hence:—

" Live to some purpose; catch time as it flies "

For time is a taper that burns,

A gem of great value, a rich floating prize,

Once departed it never returns "

यह बात निर्विवाद है कि जिस मार्गको प्रतिष्ठित—उदार आत्माओंने ग्रहण किया हो उस ही मार्गके अनुयायी अन्यान्य श्रेणीके महत्त्व हो जाते हैं। हम अपने पूर्वके महान पुरुषोंके जीवनसे अपने जीवनसंग्रामको सुदृढ़ बना सकते हैं। इस व्याख्याकी सत्यतामें इतिहास तो है ही परन्तु यह स्वतः प्रमाण है। आपके समक्ष उदाहरण उपस्थित है कि आन कर्मवीर म० गांधीके प्रखर—प्रचुर चरित्रने हजारों हृदयोंको अपनी ओर आकर्षित ही नहीं कर लिए है सुतरां बहुतेरे तद्वरूप आचरण भी करने लगे हैं। भारतवर्षमें सदैवसे ऐसे ही रत्न पैदा होते आए हैं जिनसे भारत—सन्तानका गौरव बढ़ता रहा है परन्तु खेद है कि हमारी लापरवाहीसे पूर्वकी कितनीक महान आत्माएँ लुप्त हो गई हैं। जैनियोंमें अनेको भारत रत्नोंने जन्म ले इसके अब तकके कलंक—अकर्मण्यताके कलंकको धो दिया है। परन्तु आश्चर्य कि हमारी समाजने इन महात्माओंके जीवनचरित्ररूपी शक्तिसे अपने सन्तानके हृदय चञ्चल नहीं किए हैं। आवश्यकता है शीघ्र ही दिगंबर जैन रत्नोंसे हमदमामने हुए एक रत्न-कारकी ! धेतावर सगानमें मि० उमरावसिंह

टांकाने रानपूतानेके प्रसिद्ध जैन महान् आत्माओंका चरित्र अंग्रेजी भाषामें प्रकाशित किया है। उसीके अनुसार आन हम एक प्रसिद्ध महात्माका जीवन आपके समक्ष उपस्थित करते हैं। जैन संन्यासियों, सेनापतियोंमें हमारे चरित्रनायककी जीवनी विशेष मनोरंजन कारक है। वस्तुपाल सर्वगुणसम्पन्न थे—वे निपुण राननीतिज्ञ, वीर योद्धा, अध्यात्मिक कविताके प्रेमी थे। आपके दानशीलताकी सीमा नहीं थी और उदारता भेदभाव जानती ही न थी। आप जैन धर्मानुयायी थे परन्तु आप सर्व संप्रदायों पर कृपा रखते थे। आपने मुसलमानोंके लिए मसजिदें बनवाई और आपसी प्रेमको बढ़ा किया। ऐसे ही वीरोंके चरित्र हिंदू मुसलमानोंमें समभाव पैदा करनेको कार्यकारी हैं और इसीसे आशा है कि:—

हिंदू, मुसलमान जैन ईसाई, परस्पर चखेंगे प्रेम मिठाई !

'मेरु विजय'के अनुसार वस्तुपाल और उनके भ्राता तेजपालका जन्म सन् १२०९ ई० (वि० सं० १२६२)में उनकी माता कुमारदेवीसे और उनके द्वितीय पति षषेलोंके सेनापति असराज द्वारा हुआ था। कुमारदेवी अति रूपवान और अत्रहिलवद पट्टनकी निवासिनी थी। इनकी अल्प अवस्थामें ही इनके पतिका देहांत हो गया। एक दिवस यह हरिभद्र सूरिका व्याख्यान सुनने गई थी और वहां असराज इस परम सुंदरीके लावण्यमयि रूपके प्रेमवाणों द्वारा वीधे गए। कुमारदेवी पूर्ण सती साध्वी थी, परन्तु असराज अति कामातुर हो रहे थे, परन्तु सतीका शील डिगाना देदी स्वीर थी।



अन्तमें वह बलात्कार उस सुंदरीको वहासे लेकर रातों रात असापल्ली (अहमदाबाद) पहुंच गया। अब इधर असराजका तीव्र अनुरोध और उधर कुमारदेवीकी चढ़ती अवस्था ! अंतमें दोनोंकी लग्न शुभ मईतमें हो गई। और कुछ दिनोंमें उसके चार पुत्र रत्न उत्पन्न हुए—लुनिगा, मछुदेव, वस्तुपाल, और तेजपाल। ई० १२१७ में वस्तुपाल ललितादेवीसे प्रेम—विवाह बंधनमें बंध गए। और थोड़े समय पश्चात् तेजपालने अनुपमा देवीसे विवाह संस्कार कर लिया। चालुक्य साम्राज्यके अधिपतन—खंडहरों पर ही बघेलोंका वंश खड़ा हुआ था। द्वितीय भीम (ई० ११७८—१२४१) एक अयोग्य सम्राट इस चालुक्य वंशमें हुए। इन्हींके राज्यकालमें चालुक्य साम्राज्य जो पहिले ही एकता रक्षित नष्ट कर चुका था अधःपतनकी ओर अग्रसर हुआ। जब भीम अपने अधिकारमें उत्तर भाग लानेका प्रयत्न कर रहे थे उस समय दक्षिणमें लघनप्रसाद धोलकामें एक स्वतंत्र राज्याधिकारी बन बैठा। और अपने साम्राज्यको खूब फैलाया—इतने पर भी वे अनिहल्लबड़के सम्राटके आधिपत्य रहे। वस्तुपाल और तेजपाल वीरधवल महाराजके विख्यात मंत्री रहे थे। वीरधवल महाराजके सुयोग्य—सोनेके विचारोंको शीघ्र ही इन भाइयोंने अपना लिया। और महाराजने उनके महत्वको जान उन्हेंके सुपुर्दे राज्यकार्य कर दिया। वास्तवमें विद्वान ही विद्वानोंकी परीक्षा और मान कर सका है। गुणी ही सर्व ठीक मान्य है। वे भी उधर पूर्ण मुचाल राज्य प्रबन्धक और रणनीतिनिपुण

सेनापति निकले—जिससे महाराजके और भी विश्वासपात्र हो गए। उन्होंने स्वतंत्रतासे विचारपूर्वक न्याययुक्त वर्ताव किया और संम-यानुसार महाराजके अयोग्य कार्योंके करनेसे वर्जित रखनेमें संकोच न किया। एक समय दिल्लीके सुल्तानके मुल्ला—धर्माचार्य मक्का शरीफकी ज्वायतको ज ते हुए धोलकामेंसे निकले इस समय महाराज वीरधवल इनको पकड़कर अपना बंधी बनाना चाहता था, परन्तु इन भ्राताओंने महाराजको उसके शरीर तकको न छूने दिया। इतनाही नहीं बल्कि उन्होंने—इस यात्रीका न्योताकर राज्य नियमानुसार अतिथि सत्कार किया। इस कृतज्ञ यात्रीने लौटने पर सुल्तानसे इन भ्राताओंकी विशेष तारीफ की और इन्हीं द्वारा सुल्तान और धोलका नरेशमें मैत्रीपूर्ण संधि हो गई। उस समय एक निवासी आंखो देखी तौर पर वस्तुपालका राज्य प्रबंध इस प्रकार वर्णन करता है:—

‘वस्तुपालके राज्य प्रबंधमें नीच मनुष्योंने—शत्रुोंने घृणित कार्यों द्वारा जननोपार्जन करना छोड़ दिया था। बदमाश पीले पड़ जाते थे और सुचरित्री दिनदूनी उन्नति करते थे। वस्तुपालने समुद्रकी लकड़ीका अन्त कर दिया और दूधकी दुकानों (Diary)में चतूरे बनवा हर एक जातिकी छुआछुतसे बचा दिया। इन्होंने पुरानी इमारतोंकी मरम्मत की, वृक्ष लगवाए, कुए खुदवाए, बगीचे लगवाए और शहरको फिरसे बनवाया।” इन भ्राताओंके सुयोग्य कार्योंका अंत यहीं न समाप्ति है। उन्होंने अपने सम्राटके साथ रणस्थलोंके दुःखोंको भी सह कर

महाराजको विजयलक्ष्मीसे शोभित किया । उनके वीरतापूर्ण कार्य रूपी कमलों पर कवि भ्रमर मुग्ध हो उस समय भजते-कविता कते रहे थे । कैम्बे (Cambay) के बलवान सरदारको परास्त करना दिल्लीके मुहम्मद घोरी सुल्तान मुरुजुद्दीन बहरामशाह ऊपर उनकी विनय, और उनके द्वारा गोधाके अधिकारी घुघुलका कैद होना-यही इन भ्राताओंके वीरतापूर्ण कार्य उनकी भारतमाताके महान् योद्धाओंकी श्रेणीमें रखनेको बाध्य करते हैं । ए जैन भ्राता-ओं ! वीर पराक्रमी नर महावीर संतानके अतिरिक्त कोई अन्य व्यक्ति नहीं हैं । परन्तु वर्तमानकी हम सदृश संतानके समान भीरु-कायर नहीं हैं । इन्हींमें वास्तविक "जैनत्व" था । सन् १२२०में वस्तुपालने श्री शेजुंनयजी व गिरनारजीका पवित्र संघ चला 'संघपति'की पदवीसे अपनेको विभूषित किया था । सन् १२२८में सुधारक नगचवंदने तप-गच्छको अवतीर्ण किया । इन भाइयोंने इस कार्यको अपनाया । पुन्यवात् जीव अपनी लक्ष्मीको भी सुफल करनेके हेतु उसको उत्तम कार्योंमें लगानेसे नहीं चुकते । इन दोनों भाइयोंने भी मन्दिर धर्मशालादि बनवा अपनी लक्ष्मीको सार्थक बनाया । सुप्रसिद्ध मेमार सोमदेवने उनके आबूके मन्दिर बनाए थे । यह मन्दिर विमलशाह द्वारा निर्मापित मन्दिरके निकट है और सन् १२३० में बनकर तैयार हुआ था । जैसे निम्न श्लोकसे विदित होता है:-

"वेकमे वसुवस्वाशा १०८८ मितेव्दे भूरि-
द्वयपाशे । सत्पासादं सविमलवसत्याह्वं व्यपा-

पयत् ॥ ४० ॥ वेकमे वसुवस्वर्क १२८८
मितेऽव्दे नेमिमंदिरम् । निर्ममे छणिगवसत्याह्वयं
सचिवेंदुना ॥ ४३ ॥ कपोपलमयं धिवं श्रीतेजः
पाल मंत्रिराद् । तत्र न्यास्थत्संतमतीर्थ निष्पन्नं
द्वक्सुधाजनम् ॥ ४४ ॥ मूर्त्तिः स्वपूर्ववंश्यानां
हस्तिशालं च तत्र सः । न्यवीविशद्विशांपत्युः
श्रीसोमस्य निदेशतः ॥ ४५ ॥ अहो शोभनदेवस्य
सूत्रधार शिरोमणे । तच्चैत्यरचनाशिल्पाजाम
लेभे यथार्थताम् ॥ ४६ ॥ तीर्थ द्वेयेऽपि भग्नेऽस्मिन्
दैवान्लेच्छे प्रचक्रतु । अस्पोद्धारं द्वीशकाव्दे
वह्निवेदार्कसंमिते १२४१ ॥ ४८ ॥ तत्रादयतीर्थं
स्योद्धर्त्ता रेल्लो महणसिहभूः । पीथडीस्त्वतरस्याम्
द्वयवहृच्छंड सिंहजः ॥ ४९ ॥ कुमारपालभूपाल-
श्रोलुभ्य कुल चन्द्रमाः । श्रीवीर चैत्यमस्योचैः
शिखरे निरमीमपत् ॥ ५० ॥

श्री अर्जुनकल्पः समाप्तः ।

यह मंदिर अति सुर और मेमारीके कामका नमूना है । और मि० फरग्युसनके वाक्योंमें इसकी उकारनेकी तरतीव और हवाला देनेकी ग्यूसुरती अक्सर इस मुल्कमें भी लासानी है । इसी वर्ष वस्तुपालने १ मंदिर गिरनार पर और शेजुंनय गिरि पर बनाये । वस्तुपालकी कवित्वशक्ति भी कुछ ऐसी वैसी न थी । आपका कवि नाम वसंतपाल था । सोमेश्वरने इनकी विधानिपुणता पर मुग्ध हो इन्हें "सरस्वती-पुत्र" कह कर लिखा है । मेरुतुनामें इनकी कवित्वशक्तिके उपलक्षमें इन्हें एक महान कवि कह कर पुकारा है । 'नरनारायणावंद' नामक इनकी पुस्तकोंमें जिसमें इन्होंने महाराजा कृष्ण और अर्जुनके गिरनार पर्वतपर विचरन और अर्जुन



द्वारा सुपद्रा हरणका वर्णन है। अत्युत्तम है। इन्होंने अनुमान तीनके अति विशाल पुस्तकालय स्थापित किए थे। वीरधवल सन् १२३८ में स्वर्गवासी हो गए। इनकी प्रजाकी इनसे इतनी भक्ति थी कि ११० मनुष्योंने उन्हींकी चिता-पर स्वप्राण विसर्जन कर दिए। इससे बढ़ कर राज्यभक्ति शायद ही और कहीं उपलब्ध होगी। मातवासी सदैवसे न्याय, राजा और धर्मके लिए अपना 'सर्वस्व' अर्पण करनेको तैयार रहे हैं। दोनों भ्राता इस समय भी स्थिरचित्त थे। उन्हींने अंतमें चिताके और पास एक सरल पहिरा खड़ा कर दिया जिससे कोई अन्य मनुष्य अपने अमूल्य जीवनका अंत न कर दे। वीरधवलकी मृत्युसे उनके दो पुत्रों वीरम् और विसलमें झगड़ा हुआ, परन्तु वस्तुपालकी कृपासे विसलको ही गद्दी मिली। और विसलदेवके ही राज्यकालमें दोनों भ्राताओंके मंत्रीकालका अन्त हुआ। एक दन्तकथासे यह इस प्रकार है कि राजाके मामासे वस्तुपालने कुछ झगड़ा कर लिया था अर्थात् एक समय राजाके मामा सिंहने एक निर्दोषी मुनिको विशेष दुःख पहुँचाया था। जब वस्तुपालको यह मालूम हुआ तो उन्हींने सिंहकी उंगलियां काट लीं। सिंहने राजासे शिकायत कर इन्हें माणदेड आज्ञा दिलाई परन्तु सोमेश्वरके बीचमें पड़नेसे राजाने क्षमा कर दिया। वस्तुपालको इस अकारण अपमानसे हृदयमें अति दुःख हुआ। कुछ ही समय पश्चात् इनका शरीर अस्वस्थ हुआ और इन्हें उबरने आ घेरा। कारणवश एक स्थान परिवर्तनकी राय ठहरी। धृतः वस्तुपाल शत्रुंमयकी यात्रार्थ रवाना हुए

परन्तु रास्तेमें इनकी हालत विशेष खराब होनेसे इन्हें साधु अकेवलयकी कुटियामें ले गए। वहाँ इन्हें एक ग्रामीण चौपारमें ठहरा दिया। इनके पुत्र जित्रेपाल और भ्राता तेजपाल इनकी सेवामें उपस्थित थे, परन्तु इनकी स्थिति चिन्ताजनक होती गई। अंतमें एक साधुने इन्हें सम्बोधा और अन्त समय श्री ऋषभदेवका नाम लेते हुए यह निम्न श्लोक पढ़ा थाः—जिसका अर्थ होता है कि मैंने कोई साधुजनोंकी प्रशंसाजनक कार्य नहीं किए हैं, इसी प्रकार मेरा जीवन पूर्ण होता है। थोड़े समयके खामोशीके पश्चात् मृत्युसूत्र्या पर पड़े हुए मंत्रीने अरहंतोंको नमस्कार कर प्राण त्याग दिये। यह समय सन् १२४१ में था। प्रत्येक मनुष्यको इस असाधारणिक मृत्युसे असीम दुःख हुआ। अंतमें इनके पुत्रादिने अन्त समयकी क्रिया की थीं। और जहां पर इनकी दग्ध क्रिया हुई थी वहां पर इनके पुत्रने श्री ऋषभदेव मूलनायकका मंदिर निर्मापित कराया था। पाठको! समयकी महिमा विचित्र है। उसहीकी महिमासे हम भी आपसे विदा होते हैं जिसने वीर-वस्तुपालके तेजमय-ओजपूर्ण जीवन लीलाको क्षणमें नष्ट कर दिया। रोजान्गी इधरकी सावित है, यहाँसे दिल उठा अपना। किसीके घरमें शादी है कहीं हंगामा मग है॥ परन्तु मित्रो! इससे दुनिया सारपूर्ण है यही समझिए क्योंकि वस्तुपालने इसी दुनियामें ही रहकर अपनी जीवनलीला ओजपूर्ण बनाई थी। इस लिये कुछ वास्तविक कार्य करके दिखाए। इति शुभम्। विनीतः—कामताप्रसाद जैन, अलीगंज (फा.)

❖ “વિદ્યાર્થીગૃહ” યાને વોટિંગ હાઉસ । ❖

—(લેખક—નાગરદાસ ન. સંઘવી, કેરવાડા)

‘વોટિંગ હાઉસ’ આપણામાં પૂર્વજાળતા શુદ્ધ-કૃતિ રૂપાન્તર છે. શુદ્ધિઓમાં સંચલાતી આર્થ-પવિત્રતા અને સાદા રંગે પોતાનું રૂપ એ રૂપાન્તર સાથે, પ્રાચાત્ય સ્વચ્છતા અને આત્મ એક-ત્વાર્થ)માં દેખી નાખ્યું છે. કેટલાક ઇંગ્લીશ ભાષા શિક્ષક સંગ્રહો એમ માને છે કે આ તે ઉચ્ચતિશ્ચમનો પરિવર્તન કાળ છે. કેટલાક જુના વિચારના વિદ્વાન પુરો એને અધોગતિની સીડી કહે છે. આ વિવાદ મુજબ પ્રશ્નનું નિર્ણયન રહેલું નથી. સ્વાય તેમ હોય, પરંતુ જે રિયલિટી આપણે છીએ, તે રિયલિટીને સુધારી દેવા કાળને અનુસરતા જે, જે, સાધનો આપણી પાસે નાવ હોય તેમના સદુપયોગ કરવા સગાંધી વિચાર કરવો ખામ જરૂરી છે.

આપણી વોટિંગ યોગે એવા ધોરણ ઉપર મુક્તી જોઈએ કે, પોતાની મેળે પોતાનો નિશાન કદી શકે. આ કાળ જે રીતે ચલે શકે એમ ને-એક તે જાહેર મદદથી અને બીજું એમા સહેતા વિદ્યાર્થીઓની મદદથી. પહેલાંના સમયમા માવતા શુદ્ધ, પુરાણુદ્ધિ ઉપરથી માનુષ પડે છે કે, તે રૂપ રાખતી વિદ્યાર્થીઓની પગપર સદાચરીત આશનાં હતાં કાલમાં નવો જાણ કરવામાં આવેલી

યોગમાં આવતું અંધ યજ્ઞ હોય તો પણ કાંઈક વખત આપણા ઉપયોગમાં આવવાનું છે, અને એવીજ રીતે હમેશ આપણું જ ગહેવાનું છે. આ સ્વતઃસિદ્ધ સત્તા આપણે જાણીએ છીએ તેપણુ અમલમાં મુકતા આપણું હૃદય આનાકાની કરે છે અને પાશુ દરી જાય છે. આવી ભાવનાઓ વિદ્યાર્થી સમાજમા દાખલ થાય તો અનેક રીતે આ દાર્થ સાધી શકાય છે.

અમેરિકામાં વિદ્યાર્થીસ કરવા જતા ટેટલા-એક આયત્રી દિહી વિદ્યાર્થીઓ સ્કુલમાંથી રજા વગેરેના અવકાશના વખતે જોઈના સાધન પેશ કરીને ત્યાનુ આતિ ખર્ચાળ છાત્રન ચલાવે છે; અને વિદ્યાર્થીસ કરે છે. આમાં કેટલેક અંશે એ દેશનું સાત્ત્વ અધારણુ અને સામાજિક અધારણુ મઃ કર્તા વગુ દરો ખર અને તે દેશના લોકોએ પોતાના સ્વસોય સોંપના કિતને માટે એની અનુ-કૂળતાઓ કરી આપી દશે અને તેના લાભ પરં-ત્રીય વિદ્યાર્થીઓને પણ મળતો દશે. આ કાંઈ બેસાક ત્યના વિદ્યાર્થી સમાજની કુળજતા બતાવે છે.

આપણી વર્તમાન રિયલિટ, ધીમે ધીમે પુરોપ અમેરિકા દેશના જેવી ખર્ચાળ થતી જાય છે. એક આખા કુટુંબના ભરણ પેટનુને મીટ થતા ખર્ચ જેટલી રકમનો જમ એકજ વિદ્યાર્થીને ઉચુ વિશ્વલ આપવાના કાર્યમા કરેલો પડે છે. હવે જે આપણે તેમની રિયલિટુ એક રીતે અનુકરણ કર્યું છે, તે કવે ખીટ રીતે પણ ખાન જરૂરીઆતવાળી રિયલિટ, એમની રસાત્રી પદ્ધતિનુ અનુકરણ હિં-ચાનને (આપણને) કરું પડશે, નહિ તો આપ-જેજ આપણું બધું જાણે કરીને ખગાડનાર નીતીયુ એ નિઃસંશય છે.



એટલું જ નહિ પરંતુ એક શુભામ પ્રજ્ઞને અમેરિકાના શહેરીઓની સમાનતામાં લાવી મુકી.

એજ મહાશયે રચાવત કરેલી ટસ્ટેજ સંસ્થામાં હાલ કેવી શિક્ષણ પ્રણાલિકા ચાલુ છે, તે નીચેના હિંદી લેખ ઉપરથી લીધેલી હકીકત ઉપરથી માલુમ પડે એમ છે એ લેખ 'અમેરિકાના એક યાત્રી' લેખકે 'સરસ્વતિ' માસિકના જુન માસના અંકમાં લખી મોકલ્યો છે. ત્યાં જે શિક્ષણ આપવાના આવે છે તેમાંથી, વિદ્યાર્થીને ઔદ્યોગિક શિક્ષણ મળે છે અને તેની સાથે સંસ્થાનું કાર્ય ચલાવવાને અને વિદ્યાર્થીને પોતાને પોતાનું બચણ પોષણ કરવાનું સાધન પેદા થાય છે. " ટસ્ટેજ સંસ્થાના કાયદાને માટે જે વર્તમાન પત્ર અને ચાર માસિક પત્ર ત્યાંથી છાપીને પ્રગટ કરવામાં આવે છે. આ વિના ખીજું પણ કેટલું કુટકર કાર્ય પાસેના નગરો તથા પાકશાલાને માટે કરવામાં આવે છે. આ વિભાગમાં ચતા કાર્યનું મૂલ્ય શને ૧૯૧૧ માં ૧૬૨૧૭ ડોલરનું અનુમાન કરવામાં આવે છે.

પાકશાલાનું મુખ્ય મકાન શને ૧૮૮૬ માં બનાવવામાં આવ્યું હતું એ વખતે પાકશાલાની સમીપમાં બહુ મોટી જાડી હતી. એ જાડીને કાપીને લાકડાં વેચવામાં આવે તો બહુ મોટો ફાયદો થાય એમ માલુમ પડવાથી તે જાડીને કાપી શને ૧૯૧૦માં મકાન વગેરેના ખર્ચમાં લાગે એવાં કુટ ૭૮૦૦૦ લાકડાને વહેરીને તૈયાર કરવામાં આવ્યાં, કુટ ૧૫૩૪૦૦ લાકડાનાં પીડ પાટીયાં વગેરે બનાવવામાં આવ્યાં અને ૧૦૫૦૦૦૦ કુટ ઘડીને તૈયાર કરવામાં આવ્યાં અને બીજા ઘણા લાકડાં બહુતણના ઉપયોગમાં આવ્યાં.

પાકશાલામાં કામ કરનાર એક મજૂર બહારની ટેટલોક વસ્તુઓની મદદથી એક સામાન્ય જાડી બનાવી. અને ત્યાર પછી શન ૧૮૮૮માં જાડી અને પેડાં બનાવવાનું કારખાનું એ સંસ્થાને અંગ્રેજ ખોલવામાં આવ્યું. એવીજ રીતે ખેતીના કામમાં વડર પડતાં યંત્રો અને સડકો બનાવવા

વગેરેનું કામ પણ એ સંસ્થામાં રહેતા વિદ્યાર્થીઓ કરતા હતા.

સંસ્થાને માટે ધાતુનાં વાસણનું ખર્ચ ઘણું પડતું હતું. એ ધાતુના વાસણો બનાવવાનું કારખાનું સંસ્થાને અંગે ખોલવામાં આવે તો ઘણું ફાયદો થાય એમ જણાવવાથી લુધરા આદમ નામના એક સીધીને નોકર તરીકે રાખવામાં આવ્યો. આ માણસ મોચીનું કામ પણ જાણતો હતો. એની મારફતે વિદ્યાર્થીઓને એ કામ શીખવાડવામાં આવ્યું.

હાલમાં એ વિભાગમાંથી ઘણું લાભે જુનાં નવાં મળીને ૩૦૦૦ વાસણ તૈયાર થાય છે. મોટી મોટી ઇમારતોને માટે અહિંયાં ઢોળ ચડાવેલાં પતરા છત વગેરે જડવામાં કામ લાગે તેવાં તૈયાર કરવામાં આવે છે. કોર જેટલ પતરાં (છાપરાં ઉપર જડી ચકાય એવાં) પણ ત્યાં તૈયાર કરવામાં આવે છે.

મોચીઓના કારખાનામાં જુના જોડાઓને ચીંગડાં મારવાનું કામ તથા નવા જોડા બનાવવાનું કામ કરાવવામાં આવે છે. તે સાથે ઘોડાના સર-સામાન, ગાડીઓની ગાડી વગેરેનું કામ પણ કરાવવામાં આવે છે. આ કામથી એ સંસ્થાએ શને ૧૯૧૧મા ડોલર ૩૯૬૪ પેદા કર્યા હતા.

હોટું ગાળવાનું યંત્ર પણ ત્યાં રાખવામાં આવ્યું છે. તેમા દર્બાજ, ખાટલા તથા બીજા જુદા જુદા પ્રકારનાં યંત્ર વગેરે પણ બનાવવામાં આવે છે.

આ સંસ્થા તરફથી ૯૫૪૫ કુટ વ્યાજના તથા ૩૦૯૩૭ કુટ પાણીના નળ નાખવામાં આવ્યા છે. આ વિભાગમા શને ૧૯૧૧માં ડોલર ૬૧૭૫ નું કામ કરવામાં આવ્યું હતું. આ સંસ્થામાં રહેતા ૧૬૦૦ માણસોના તમામ કપડાં ધોવાનું કામ એ સંસ્થામાં અવ્યાસ કરતી વિદ્યાર્થીનીઓજ કરે છે. દર વર્ષ ૧૪૩૨૮૨૩ કપડા તેમને ધોખીખાનામાં ધોવાં પડે છે.

લેખન વાંચનનું શિક્ષણ.

પાકશાલામાં સામાન્ય શિક્ષણ આપવાની શાળા 'કાલીસ પી. હનટીંગ્ટન મેસોરીઅલ બીકીંગ' ના નામ

૧ અડવાઝીક કે દૈનિક તે મૂળ લેખમાં લખ્યું

નથી.



થી એજાખાઈ છે. આ મકાન મહાશય હનરીંગટની પત્નિએ પોતાની પત્નીની ગાદીથી જળવવા બંધાવી આપ્યું છે. એક બાજુએ સાધારણ શિક્ષાતું કામ આયોગીક શિક્ષાને અનુસરીને આપવામા આવે છે. અને લીધે આયોગીક શિક્ષણુ બાર ૩૫ માસુમ નદિ પડતા હિસાબની સાથે ખાસ ઉપદેશ સચવાય છે. ખીજ બાજુએ મિદ્દાતોતુ શિક્ષણુ આપવામા આવે છે. આમા મેળવેલા જ્ઞાનનો વાસ્તવીક ઉપયોગ આયોગિક વિભાગમા થઈ જાય છે.

સાધારણ શિક્ષા વિભાગમા, દીવસની શાળા અને રાત્રીશાળા છે બે ભાગના હોકરા દિવસે શિક્ષણુ લે છે, અને એક ભાગના રાત્રીએ શિક્ષણુ લે છે. દર અઠવાડીઆમાં ચાર દીવસ રાત્રે ૬ાા થી ૮ાા વાગ્યા સુધી અને એક દીવસ રાત્રે ૬ાા થી ૮ વાગ્યા સુધી શાળામા જવાતું હોય છે.

દીવસમાં અભ્યાસ કરનારા વિદ્યાર્થીઓને અઠવાડીઆમા ૩ દીવસ ૬ા થી ૧૨ વાગ્યા સુધી અને ૧૧ થી ૪ વાગ્યા સુધી શાળામા રહેવું પડે છે. રાત્રીશાળા એટલા માટે રાખવામા આવે છે કે જે યોદી ફી દીવસની શાળામા અભ્યાસ કરનાગ પામેથી લેવામાં આવે છે, તેટલી પણ ફી જેઓ આપી ન શકે તેમને માટે છે. આ તો રાત્રીશાળામા મહત્ત શિક્ષણુ આપવામા આવે છે.

સાધારણ વિભાગને માટે શિક્ષકો તૈયાર કરવાને ગર્ભની રજામા દર વર્ષે શિક્ષણુ આપવાની ગોઠવણુ કરવામા આવે છે. આ પાયાવા ચાર અઠવાડીઆ આવે છે.

ધર્મ શિક્ષણુ આપવાને માટે 'ફોર્સ બાલ-બચ' પાઠશાળા છે. તેમા શને ૧૮૯૨ થી આજ સુધી પુરૂષ ૬૧૧, સ્ત્રી ૬ એ આ શિક્ષણુ લીધું છે તેમથી પુરૂષ ૮૪ ને અને સ્ત્રી ૬ ને ઉપાધિક્ષિત મળી છે.

ધર રંગવાતું, ખુરશીઓ પોતીત કરવાનું, સાઇનબોર્ડ બનાવવા વિગેરેનું કામ કરવામા આવે છે. હાલ ખાતામા વિદ્યાર્થીઓના પેશાક બનાવવામા આવે છે. આ વિભાગમા ૬૫ વિદ્યાર્થી દર્શ કરે છે. બેનીવાડીને માટેના યંત્રોના નકશા

બનાવવા, મકાનોના નકશા બનાવવા વગેરેનું કામ કરવાથી એ વિષયમાં વિદ્યાર્થીઓની ખાસ નિપુણતા વધતી જાય છે.

સ્ત્રીને માટે કામ કરવાની સંત્યા અલગ રાખવામા આવે છે. રાત્રે ૧૯૦૮મા 'ડોરોથીલાલ' નામનું અલાયદુ મકાન તેમને માટે બાંધવામાં આવ્યું હતું. તેમા એક ધોખીખાનું, એક પાકશાળા (રોટીઠું), દરજખાનું અને ટોપીઓ બનાવવાનું કારખાનું છે. એ ઉપરાંત અહીંઆં સાદીઓ, સાવરણીઓ અને શાયુ વગેરે પણ બનાવવામા આવે છે.

પહેલા વિદ્યાર્થીનીઓ પોતાનો ખોરાક જાતે બનાવતી હતી પણ હવે શિક્ષણુ લીધા પછી શક્ત પીરસવાનું કામ કરવું પડે છે. ખીજા હાંચી જાતની પાક તથા ગુડ-બ્યવસ્થાની શિક્ષા જુદા રચાનમા આપવામા આવે છે. શિક્ષણુ લીધા પછી શક્ત એક માસ તેમને સરચાના રકાકોમા કામ કરવું પડે છે. ત્યાં પછી એ રોટાડાની પામે નાનું એક ઘર છે તેમા જાંચા ધોરણની છોકરીઓ પોતાની મેળે પોતાનું ઘર ચલાવે છે. આ ગૃહ બ્યવસ્થાના કામને માટે એમને યોગ્ય ધનની મદદ પાકશાળામાંથી મળે છે તેમથી કર કસર કરીને ઘર ચલાવવું પડે છે.

પેશાક તથા ટેપી વગેરે બનાવવાનું કારખાનું હમથામ ખોલવામા આવ્યું છે. એનો હેતુ વિદ્યાર્થીઓને માટે ધધાદારોની ગોઠવણુ કરવાનો છે. પહેલુ જે કારખાનું હતું તેમા શક્ત સાધારણ કામ કરવામા આવતું હતું. અને ૧૯૧૦મા સ્ત્રી વિભાગમા નીચે મુજબ માસ તૈયાર કરવામા આવ્યો હતો.

- સખ્યા વસ્તુઓનું નામ .
- ૧૮૪૬ ઝાક (સાવરણીઓ)
- ૧૨૫ ગાંધા
- ૧૦ માદીઓ
- ૪૮૪ પડદા
- ૧૪૩ ટેમલ કસોય
- ૨૬૩ ખીજાનાના ખોળાયા
- ૨૦૧૧ તટીયાનાં
- ૧૨૩ ખાગેના પડદા
- ૮૯ જુદી જુદી જાતના પડદા

અધા મળીને ડાહર ૨૫૭૫ તું કામ કરવામાં આવ્યું હતું.

સાન્યદારી શિક્ષણ આપવાને એક શાસન-ભૂતન પણ એ સંસ્થાના વહીવટ સલાવવામાં ઉપ-યોગી થાય એવું સ્થાપવામાં આવ્યું છે. આપધા-લય પણ એ સંસ્થાનું પોતાનું આગરું છે તેમાં ડાહરો અને નર્સો તૈયાર કરવામાં આવે છે.

આખા સમાજના વિચાર કેળવવાને દર વર્ગે નીચે કોન્ટ્રસ્ટ બોલાવવામાં આવે છે. ખાસ કરીને ટૂંકી વિદ્યા ઉપર પ્રીતી ઉપજે એવા આદ-યધી એ કોન્ટ્રસ્ટ કામ કરે છે અને પ્રદર્શનો વગેરેથી એ શાળાને કોન્ટ્રસ્ટ આવે છે આ સિવાય આખા સમાજની રીતિ સુધારવાને જુદા જુદા રૂપમાં અનેક મહાન કાર્યો થાય છે. અને એ જગ્યામાં આ સંસ્થા (મોટું બોર્ડિંગ હાઉસ)ના વિદ્યાર્થીઓ વગેરે પ્રધાન ભાગ લે છે

સૈનીક શિક્ષણ પણ સંસ્થાના વિદ્યાર્થીઓને આપવામાં આવે છે. તેમાં શિક્ષણ લઈ તૈયાર થયેલા વિદ્યાર્થીઓ પોલીસ તથા મોટીદારનું કામ સંસ્થાને અંગે કરે છે.

મહાશય કારનેજની ડાહર ૨૦૦૦૦ની મદદથી રાત્રે ૧૯૦૨ માં એક પુસ્તકાલય ખોલવામાં આવ્યું છે. તેમાં હાલ પુસ્તક ૧૪૦૦૦ છે.

આ બધી વિગતો ઉપરથી જણાય છે કે વિદ્યાર્થીઓ પોતાને માટે કેટલું કરી શકે છે ?

મહાશય વોશીંગ્ટન આયોજનના મહાન ઉત્સા-હ દતા; પરંતુ કાર્ય નો એ સંસ્થાના વિદ્યાર્થી-ઓએ કર્યું છે. થીને થીમે ગુલામગીરીમાંજ ઉછ-રેલી પ્રજાએ પોતાનું કાર્યક્ષેત્ર ખુલ્લું કર્યું તેવીજ રીતે આપજને અનુકૂળ કાર્ય કરવાનાં ક્ષેત્ર પણ આપજેજ ઉત્પન્ન કરવાં પડશે. સ્વામી સત્યાનંદે એમના અમેરિકાના પ્રવાસમાં વિદ્યાભ્યાસ કરવાના ખર્ચ માટે મ્યુનિશીપાલિટીના મંત્રુરો સાથે કામ કરવાની, ખેતરોમાં મંત્રુરોની સાથે ખેડવાની અને એવાં એવાં અનેક પ્રકારનાં મંત્રુરીનાં કામ કર-વાની વાતો લખી છે. એક કોમેન્ટમાં અભ્યાસ કરનાર વિદ્યાર્થીઓને મંત્રુરો સાથે કામ કરવામાં

હલકાઈ ન જણાય તો, આપણા સામાન્ય હાઉસ-લોમાં બહુતા વિદ્યાર્થીઓને એથી યુ. લીજીપદ લાગવું જોઈએ?

આપણે જો એકદમ એટલે સુધી જઈ ન શકીએ તો કેટલાક શુદ્ધ દિવાંગોથી પણ કાંઈક પેટા કરી શકાન. આપણે ત્યાંની અંગ્રેજ મુકેશ વર્ષમાં આઠ મહીના કામ કરે છે બાકીના ચાર મહીના વિદ્યાર્થીઓ રમકડામાં ગુમાવી નાખે છે. આ ચાર મહીના દરમ્યાન આપણી હાલની બોર્ડિંગોને અંગે વણાટકામને અનુસરતાં, છાપવા કામને અનુ-સરતાં, ખેતીના કામને અનુસરતાં કામ કેળવવાની યોજના કરવામાં આવે, અને વિદ્યાર્થી બંધુઓ દત્તાદયી એવાં કાર્ય કરી સ્વતંત્ર કમાણી કરતાં શીખે તો, દેશ તેમજ આપણી કેળવણીની પ્રગ-તીમાં ઘણા મોટા લાભ થવાનો સંભવ છે.

મહાત્મા ગાંધીએ અમદામાં મુકેલી રાષ્ટ્રિય-ગુજરાતી શિક્ષણની યોજના ફતેહમંદ નીવડે તો આ દેશમાં ઘણું અન્યાયનું પડે એમ છે. એમાં વિદ્યાભ્યાસના કામમાંજ વણાટકામ અને ખેતીનું કામ શીખવવાનું દાખલ કરેલું છે. કેટલાંએકનું એમ માનવું થાય કે વિદ્યાભ્યાસના અમ પછી, કેવા જોઈતા આરામના વખતમાં કામ કરવાથી સરીર નળનું સડી જાય. આ માન્યતા અનુભવ થવા પછી ભુલ ભરેલી માત્રુમ પડશે. દત્તાદયી નિષ્કર્મીત કામ કરનારની તંદુરસ્તિ વધે છે. ઉલટા જોએ તદન નીરવધી રહીને રમના વખતમાં ઉંચ-વામાં અને રેલ ટપ્પા મારવામાં વખત પુરો કરે છે, તેમની તંદુરસ્તી બગડે છે.

આપણા હાલના, વર્ષમાં ચાર મહીનાના આરામ લેનારા અંગ્રેજ બહુતા વિદ્યાર્થી બંધુઓની શારીરિક રીતિ એમાં ખાસ દાખલા રૂપ છે. બપો-રના ચાર પાંચ કલાક કલાશમાં કામ કર્યા પછી જે જે બાઈઓ, ચિત્તજાનો અથવા કસરત વગે-રેના વધારાને અભ્યાસ કરવાનો કલાક ભરતા દરો, તેમને અનુભવ થયો હશે કે, ચિત્ત કાટવાનું શીખવવામાં બપોરના એકલા મગજના કામથી કંટાળેલા મગજનો અમ એક કલાકમાં તદન નાશ

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

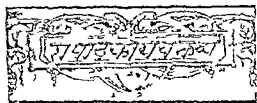
नाना कलाभिर्विविधैः तत्त्वैः सत्योपदेशैस्तु भवेत्पणामि ।

मंत्रोपधत्तत्रयिदं प्रवर्तताम्, दैगम्बर जैन समाज माधम् ॥

वर्ष १३ बों.

वीर सधत् २४४६ अष्ट. विमस स० १९७६.

अंक २.



इसी मासमें अमरके रात्र सेठ टीकमचदजी के पुत्र भागचदजीका बड़ोंकी शादी। विवाह इंदौरमें रात्र सर सेठ हुक्मचदजीकी पुत्रीके साथ अतीव धूमधामके साथ हो गया जिसमें कमसे कम तीन लाख रुपये खर्च हुए होंगे। वारंतिथीही सख्या लगभग १२०० थी। सेठ टीकमचदजीकी ओरसे इस मौकेपर वैश्य नृत्य लेश मात्र भी नहीं कराय गया और करीब (१००००) धर्माज निकाले गये हैं। आपको पक्षी बहेमान ज्ञान प्र. मगारो ओरसे मानपत्र भी दिया गया था उस नृत्य भी आपने इंदौर की 'ग्याओकी १९०१ का दान किया था।

सेठ टीकमचदजी हमारी महासभाके सभापति इस वर्ष हुए थे और आपके कथनानुसार आपने इस मौके पर वैश्या नृत्य पैसी निषेध कुंति नहीं की परंतु यह लिखने हमें दुःख और रोद होता है कि कन्या पक्षपाते सर सेठ हुक्मचद-

जी जो कि हमारी महासभाके स्थयी सभापति है और दि. जैन समाजके अग्रगण्य नेता है तथा आपने ही शिरारजी तथा पालीवानाके अधेशनमें वैश्या नृत्यका निषेध किया था तभी पुत्र हीरालालजीकी शादीके समय वैश्या नृत्य कराया था जब समाजमें कई टीका टिप्पणी होने लगी थी तब सेठजीने इन्दौरमें एक मसामे खास प्रतिज्ञा ली थी कि मे अगले वैश्या नृत्य नहीं करूंगा, क्या सेठजी इस प्रतिज्ञाको भी भूल गये ? या नानुस कर ही प्रतिज्ञा पर दब न रह सके ? इस शादीमें यह बात चली माँकेकी हुई थी कि जब वारात नहीं आई थी वह तब तो वैश्या नृत्य हाता रहा था परंतु वारात आते ही वह रुक करना पड़ा था क्योंकि वर पक्षके सेठ 'टीकमचदजी इसमें मामिल भी नहीं होनेवाले थे क्योंकि आपको वैश्या नृत्य न देखनेकी भी प्रतिज्ञा थी इससे आप ही न आवे तो सेठजीको बुरा लगे इसमें ही बंद रक्खना पड़ा था ! सेठ हुक्मचदजीने भी इस शादीकी खुशालीमें बड़ी भारी रकम दानकी निशानी है ऐसा सुना है वह खर मिलनेसे प्रकट करेंगे, परंतु यह तो कहना पड़ेगा कि समाज जगुपके पीछे २



चलती है इसलिये अगुओंको तो समाजके सु-
धारनेका प्रयत्न करते रहना चाहिये और अपनी
प्रतिज्ञापर दृढ़ रहना चाहिये । अन्यथा ऐसे
समापतियोंके व्याख्यानका असर कभी भी न
पड़ सकेगा । हर्ष है कि इस मौकेपर इंदौरमें
१२ वर्ष हुए खंडेलवालोंमें झंझड़ा था वह मिट
कर एका हो गया ।

*

*

*

बम्बईमें सेठ माणिकचंदजीकी एक 'हीराबाग',
धर्मशाला तो है और एक
यम्बईमें धर्म- दूसरी आलीशान धर्म
शाला और शालाके लिये सेठ गुरु-
सरस्वति भवन । सुखराय सुखानंदजीने
तीन लाख रुपयेका मकान

खरीद किया है जिसकी उद्घाटन क्रिया दिवाली
तक होनेवाली है । इसमें सेठजी पुस्तकालय भी
खोलनेवाले हैं । अभी श्रीमान् त्यागी ऐलक
पन्नालालजी महाराज तथा ब्र० शीतलप्रसादजी
बम्बई पधारे थे तब सच्चा विचार हुआ कि
झालरापाटनमें बड़ा भारी परिश्रम करके त्यागी
जीने सरस्वति भवन स्थापित कराया है जिसमें
करब २००० ग्रंथ हैं और इसके लिये करीब
रु. २५०००) का चंदा भी त्यागीजीने एकत्र
करवाया है परंतु इसके लिये झालरापाटन स्थान
योग्य नहीं है इस लिये बम्बईमें ही यह भवन
लाया जाय और बड़े भारी रूपमें इस धर्मशाला
में यह सरस्वति भवन स्थापित हो तो अतीव
उपयोगी और दृढ़ हो सके । त्यागीजीने इस
बातकी स्वीकारता की और सेठ सुखानंदजीने
भी भवनके लिये दो बड़े २ कपड़े देना स्वीकार
किया है और कार्तिकमें बहुत करके इतका

मुहूर्त होनेवाला है । यह बड़ी भारी खुशीके
समाचार है और साथमें हम एक सूचना सेठ
सुखानंदजीसे यह भी करते हैं कि भवनके साथ
इस धर्मशालामें एक बड़ा भारी वाचनालय
भी खोलना चाहिये और उसमें अंग्रेजी, हिंदी,
मराठी आदि भाषाके जैन और अजैन अच्छे २
समाचारपत्र और मासिक आदि मगाने चाहिये ।
इस वाचनालयको भी बड़े भारी रूपमें खोलना
चाहिये क्योंकि इससे जैनोके साथ २ अजैनोको
भी बड़ा भारी लाभ पहुंच सकेगा क्योंकि
अजैनो भी अन्य पत्रोंके साथ २ जैन पत्र भी
वांचेंगे और जैन पुस्तकें आदि भी वांचनेका
उन्हें मौका मिलेगा । इस भवनके लिये योग्य
मंजरीकी बड़ी भारी आवश्यकता है तब ही अच्छे
ढंगपर भवन और वाचनालय उत्तरोत्तर उन्नतिपर
चल सकेगा । आशा है सेठ सुखानंदजी साहब
हमारे इस निवेदन पर अवश्य ध्यान देंगे ।

कलकत्ता-में जैन हाईस्कूल, बोर्डिंग,
संस्कृत विद्यालय और एक बड़ी धर्मशाला बना-
नेके लिये ब्र० शीतलप्रसादजीके परिश्रम और
उपदेशसे ४ लक्ष रुपयेका फंड बनना निश्चित
हुआ है और उसके लिये कमेटी भी बन गई
है । इसमें रामचंद बलदेवदासने (१९००१)
और किशोरीलालजी पाटनी मंत्रीने (१९००१)
भरे हैं और विशेष रकम भरी जा रही हैं ।
आशा है कि कलकत्तेके भाई इस कार्यकी शीघ्र
ही पूर्ति करेंगे । कलकत्ता बड़ा भारी केन्द्र है ।
और वहां धनिकोंकी कमी नहीं है । यदि धनिक
लोग इस बातपर लक्ष देवे तो ४ पचा १८
लाखका चंदा सहजमें हो सकता है ।

हर्षकीर्तिकी लीला ।

हमारे प्रायः सर्व पाठकगण दाहौदवाले हर्षकीर्तिसे परिचित हैं ही । तो भी ऐसे बहुतसे भोले भाई हैं जो कि हर्षकीर्तिकी मीठी और ठगनेवाली बातोंमें आकर फँस जाते हैं और भ्रोखा पाते हैं । समाचारपत्रोंमें अनेक बार लिखा गया है, तो भी उसकी नवीन धूर्नता पुनः अकाशन कर सर्व भाईयोंको सावधान रहनेके लिये प्रार्थना है ।

यह हर्षकीर्ति कौन है ? बहुतसे भाई हर्षकीर्तिकी दिगम्बर जैन धर्मका अनुयायी मुनि समझते हैं, परन्तु वास्तविक वह मुनि नहीं है । शाल्वकारोंने मुनिका लक्षण इस प्रकार कहा है—

- विषयाशब्दज्ञातीतो निराशो परेग्रहः ।

शब्दध्यानतपोरक्त स्तारस्थो सः प्रवक्ष्यते ॥

अर्थात्—जो विषय-आशा-आरम्भ और परिग्रह रहित हो । जब तक उसने समस्त परिग्रहसे मूछी नहीं त्याग की हो, और बाह्य मुद्रा यथावत् नग्न दिगम्बर न धारण की हो, तब तक वह मुनि नहीं हो सकता ।

मुनिकी खाम पहिचान ही यही है कि जिसकी बाह्य मुद्रा (नग्न दिगम्बरपना) यथावत् हो फिर मुनियोंके मूलगुण पालन करे । सैद्धांतिक ग्रंथोंमें मुनिका लक्षण बाह्य यथावत् मुद्रा कही है । वह मुद्रा नियमित यावज्जीवन पर्यन्त पालनी चाहिये । उस मुद्रामें किसी भी प्रकार अतिचार व अनाचार नहीं होना चाहिये । न वह मुद्रा कभी कथंचित् भी भंग करनी

चाहिये । जिस समय वह मुद्रा (नग्न दिगम्बरपना) भंग हुई कि, उसका मुनिपना भी सर्वदा लोप हो गया ।

दिगम्बर जैन इस शब्दकी व्याख्यासे भी यही अर्थ प्रतीत होता है कि जिसका मूल नग्न दिगम्बरपना ही उस धर्मका चिन्ह है । वह धर्म कभी भी त्याज्य नहीं हो सकता । इसलिये सर्व भाईको ध्यानसे विचारना चाहिये कि, दिगम्बर जैन धर्म जिसका मुख्य उद्देश्य वीतराग अवस्था प्राप्त करनेका है और वह वीतराग अवस्था जब तक हम वीतराग (वीरः दूरीकृतः रागो मोहो यस्मान् स वीतरागः) अर्थात् मोहको नश करनेवाले कारणोंको नहीं प्राप्त होंगे तब तक उसका मिलना असंभव है । मोह पर पदार्थोंसे होता है, और उसका मुख्य कारण परिग्रह है । जब तक परिग्रहका पूर्ण त्याग नहीं होगा तब तक वीतराग अवस्थाका प्रत्यक्ष कारण-मुनिपना कभी भी, किसी भी प्रकार, कैसे भी नहीं हो सकता । इसलिये मुनि होनेके लिये परिग्रह (वस्त्र लंगोटी आदि सर्वका सर्वदा त्याग करना चाहिये ।

यह बात आम तौरसे सर्वत्र प्रसिद्ध भी है कि दिगम्बर जैन साधु नग्न ही होते हैं । सर्व मत मतान्तरोंमें भी यही बात प्रसिद्ध है । तो फिर हर्षकीर्ति जिसके मर्यादा रहित परिग्रह है, वाग है, शीघ्र है, महल है, खेती होती है, फल फूलोंकी विक्री होती है, सर्व प्रकारका आरम्भ और परिग्रह अपरिमित है, जिन भाईयोंको संदेह हो दाहौद जिला पंचमहलमें जाकर स्टेशनके पास स्वयं देखलें । वह



मुनि कैसे हो सकता है ? जहां पर वह जाता है वस्त्र पहन कर जाता है, यज्ञ वस्त्रादिकोंका भी तो त्याग नहीं, बाह्य मुद्रा नहीं, नग्न दिगंबरपना नहीं, विषयकषायोंका त्याग नहीं, पापाचरणका त्याग नहीं, ऐसेको मुनि कंदना कैसे मजेकी बात है ! क्यों साहब ! क्या मुनि चेली रख सकते हैं ? मुनि बाग बगीचा रख सकते हैं ? तो क्या हर्षकीर्ति भट्टारक है ? हर्षकीर्ति भट्टारक भी नहीं है और न भट्टारकोंके ऐसे बुरे आचरण हो सकते हैं। भट्टारकोंको चेली चाउंटीसे क्या म लभ ? बाग बगीचासे क्या लाभ ? भट्टारकका पद भी महान है। भट्टारक लोग जितेन्द्रिय-धर्म रक्षक, व्रती धर्माचार्य होते हैं। और वे किसी पदके अधिकारी होते हैं। हर्षकीर्ति भट्टारक है तो किस पदका अधिकारी है ? क्या उसके पास इसका प्रमाण (सबूत) है ? यदि है तो समाजके सम्मुख पेश करे ? क्यों नहीं करता है ? गुप्तचुप बगलोंके समान क्यों समाजको ठगता है ? परन्तु यह बात नहीं है। वह भट्टारक भी नहीं है, और न उसके पास किसी प्रकारका प्रमाणपत्र है। न वेद किसी पद (गादी)का अधिकारी है। और भट्टारकोंकेसे पवित्र आचरण भी उसके नहीं है। इसलिये भट्टारक सर्वथा नहीं है। तो क्या हर्षकीर्ति झुछक है ? नहीं नहीं सर्वथा नहीं। वह झुछक भी नहीं है। झुछकके परिग्रह कहाँसे होय ? झुछकका ऐसा निध स्वयं नहीं हो सकता ? तो क्या हर्षकीर्ति ब्रह्मचारी है ? नहीं, नहीं, ब्रह्मचारीके चेली चाउंटीसे क्या मतलब ? ब्रह्मचारी तो सर्व प्रकारकी

स्त्रियोंका त्याग करता है। इसके तो एक भी प्रतिमा नहीं है। फिर ब्रह्मचारी कैसे होसक्ता ? तो हर्षकीर्ति है कन ? ये ठगोरा है, भेष धारण कर ठगता है। कभी झुछक बनता है, कभी मुनि बन जाता है। किसीके यहांसे पैसा लाता है, तो किसीके यहांसे आभूषण, किसीके यहांसे जो हाथ पड़ा सो। सुना है देहली (दिल्ली)से स्फटिक प्रतिमा चुराई थी। यह दिगम्बरी जैनी भी नहीं है। ठगनेके लिये दिगंबर जैन बन रहा है, समाजको धोखा देता है, भेष बदल कर छलता है। दिगंबर जैन नहीं है।

जब दिगंबर जैन श्रावक ही नहीं है तो दिगंबर जैनियोंके पूज्य मुनि ऐसे ढोंगी-धुतारा-ठगी पुरुषको कहना और उसकी बातोंमें फसकर पैसा, रुपया, आभूषण, और सामान देना जैन धर्मकी हँसी करना है। भला मुनि तो इसका त्याग करचुके हैं तो फिर मुनि बन कर द्रव्यका क्या प्रयोजन ? और क्यों ले ? इनको लेनेकी क्या जरूरत ? बहुतसे भाइयोंको यह कह पैसा और द्रव्य लेता है कि मुझे मेरे मंदिरका जीर्णोद्धार करना है ? परन्तु यह सब ठगनेकी बदमासी है। दाहोदके पंच (जहांपर यह रहता है) इसके साथ बिल्कुल बर्ताव नहीं करते हैं, और उनके इसके साथ किसी भी प्रकारका सरोकार नहीं रखा है। इसके पास घर चैत्यालय हैं उसके वहानेसे ठगता है। अस्तु। भाइयोंको चादिये इसको एक पाई भी न देकर धोखेसे बनें और अधिक ढोंग करें तो पुलिसके आधिन करें। हर्षकीर्ति है कौन ? जब यह दिगंबर भेष धर्मका अनुयायी नहीं तो है कौन ? यह है

श्वेतांबर । प्रथम इसने श्वेतांबर सघमें टीक्षा ली थी, परंतु मन और इन्द्रिय अपने कानूमें न रहा, समय न पाल सके, श्वेतांबर साधुओंक विरुद्ध अनेक भले पुरे आचारण किये इस लिये वहासे निकाल दिये गये। श्वेतांबर सघको भी ऐसे आचरणवाला साधु पसंद नहीं आया और श्वेतांबर सघने त्याग कर दिया। श्वेतांबर सघसे आश्रय टूट जानेसे उसने फिर अपनी यह कृष्ट माया दिगंबर जैनमें फेलायी । और भावनगरमें ज्येष्ठ सुदी १० स. १९५१ गुरुवारके दिनगसे अपनेको दिगंबर धर्मका मुनि प्रकट करने लगा । भावनगरके भाइयोंसे सर्व भाई खुशीसे पूछ सकते हैं। वे भी एक बार इस की मायामें फंस कर पछताये थे। अब वहाके पंच इसको क्या समझते वह उनसे दरियाफ्त कर निर्णय कर लें ।

जबसे हर्षकीर्ति अपनेको दिगंबरी जाहिर करने लगा तबसे उसने क्या-काम किये इस विषयकी सूची बहुत बड़ी होगी, वह हम सर्वथा पूर्ण रूपसे गहापर देनेमें असमर्थ हैं और वे भी नहीं सकते, उसके लिये एक स्वतंत्र ग्रन्थ बनाना पड़े तब पूर्ण रूपसे आपके कर्बोंकी सूची बन सके तोभी थोड़े बहुतसे इनके कार्य ये हैं जो जन दिगंबर धर्मसे सर्वथा विरुद्ध और शास्त्र विरुद्ध हैं । लश्करमें आपने अटेके मुर्गा-बकरो पाडा और जीव बनाकर हवन किये । आपने सुना है कि यशोधरके जीवने एक मुर्गा ओंका चढ़ाने पर कितना दुःख उठाया था । जैन धर्मका मुख्य तत्व अहिंसा है और जो

कोई मनुष्य इत्रिम अथवा अरुत्रिम जीवकी हिंसाकर हवन करे वह जैन नहीं हो सका । वैदिक अनुयायीमें अहिंसाकी आप पाडनेवाला जैन धर्म ही है ऐसा महात्मा तिलकका मत है । इसी प्रकार अनेक जगह आटे आदि-के जीव बनाकर होम करनेवाले हर्षकीर्ति महा राज है क्या ये जैन हैं ? धुलियासे को किस प्रकार जुगलमे फसाई ? मदसोर प्रताप गढमें क्या किया ? वडनगरमें कितना मात्र फलाया, मारवाडा (चापलपुर)में प्रतिदिन माटी के जलभरे १०० घडोंसे स्नान करना और सब चीज खाकर मस्त रहना यह मुनि धर्म है क्या ? विचारे भोले भाइयोंको मंत्र तंत्रके वहानेसे ठगना अच्छा नहीं ? हम हरएक बातको लिखना पसंद नहीं करते । क्या वह देवी आर्यका बनकर द्रव्य नहीं ठगती है ? और वह द्रव्य नोकर चाकर ऐसीवाडीमें नहीं लगता है ? क्या यही मुनिव्रत है ? अस्तु ।

आप वहापर विहार करते हैं महापर वीस पथ और तेरह पथका झगडा हो ? वहा एक दूसरेको लडाकर अपना काम बना लेते हैं इस तरहके मीठे २ जादू फेंके जाते हैं । एक भाई अपने दूसरे भाईसे विरुद्ध करे बस आपकी झगडेमें बनआती है और मतझब गाठकर पौनार हुऐ ।

वीमपथी भाइयोमें हैवन, फूड चढाना, व शर चढाना आदि विषयोंसे उश्नेरणी करते हैं । यत्र तत्र टोना टपकाका लोभ दिया जाता है बस काम हुआ ? शास्त्रकारोंने यह विषय खुली

रीतिसे स्पष्ट वर्णन किया है उसको कोन नहीं मानता है ? शास्त्रकी आज्ञा सबको प्रमाण हैं । परंतु वीसपंथी भाई वस्त्रधारीको मुनि नहीं कहते । स्वयं भट्टारकोंसे मुनिका लक्षण पूछा जाय तो वे विचारे स्पष्ट कहते हैं कि मुनि निर्ग्रन्थ होते हैं, परिग्रह धारी मुनि नहीं हैं ।

मैंने सुना है और उदयपुरके भाई साहबान् (जहांसे वह हाठमें पांचसे रुपया ले आया) उसको पुलाक जातिका मुनि बतलाते हैं ।

पुलक मुनिका लक्षण शास्त्रकारोंने यह लिखा है—

अपरिपूर्णव्रता उत्तरगुणहीनाः

पुलाकाः उत्तरगुणेष्वनापेतमनसो व्रतेश्वपि कश्चित्कचित् परिपूर्णतामपरि प्राप्नुवतः अविशुद्धे पुलाक सादृश्यात्पुलाक व्यवपेशमर्हति निर्ग्रन्थरूपं भूषावेशायुधविरहितं तत्सामान्य योगात् सर्वेषु हि पुलाकादिषु निर्ग्रन्थ शब्दो युक्तः । ननु भग्नव्रते वृतावति प्रसंग इति चेन्न रूपाभावात् यदि भग्नव्रतेपि निर्ग्रन्थ शब्दो वर्तते श्रावकेऽपि स्यादिति चेन्न रूपाभावात् निर्ग्रन्थ रूपमत्र नः प्रमाणं न च श्रावके तदस्तीति" (रोजवार्तिके भट्टाकलंक देवाः)

जिसके उत्तर गुण नहीं परंतु व्रतमें कभी क्षेत्र और कालकी अपूर्णतासे अपरिपूर्णता हो वह पुलाक है । और उसका वाह्य निर्ग्रन्थ रूप (नग्न दिगंबरपना) ही प्रमाण है । बिना निर्ग्रन्थताके मुनि नहीं कहला सकता है । उदयपुरके भाइयो! सीचो, मला परिग्रहधारीको कहो मुनि

कहा है ? आप भी राजवार्तिकका प्रमाण चाहते थे । उपरोक्त वाक्य राजवार्तिकके ही हैं, देख लें और ब्राह्मण पंडितजीसे अर्थ करावें । इसका खुलासा श्लोकवार्तिकमें इस प्रकार हैः—

"पुलाकाया मताः पञ्च निर्ग्रन्था व्यवहारेतः निश्चयाच्चापि नैर्ग्रन्थ सामान्यस्याविरोधतः ये वस्त्रादि ग्रहेष्वहर्निर्ग्रन्थत्वं यथोदितं मूर्छावुद्भूतितस्तेषां कथाशदानेपि किं न तत् वस्त्रदि ग्रन्थ संपन्नस्ततोऽन्येति गम्यते यद्य ग्रन्थस्य सद्भावे ह्यन्तर्ग्रन्थो न नश्यति विषयग्रहणं कार्यं मूर्छा स्वातन्त्र्यस्य कारणं न च कारण विधत्ते जातु कार्यस्य सम्भवः विषय कारण मूर्छा तत्कार्यमिति यो वदेत् तस्य मूर्छाद्वयेऽप्येवं विषयस्य न सिद्ध्यति तस्मान्मौहोदयान्मूर्छा स्वार्थे तस्य ग्रहस्ततः स यस्यास्ति स्वयं तस्य न नैर्ग्रन्थं कदाचन ॥

अर्थात्—पुलाकादि मुनि सर्वथा निर्ग्रन्थ दिगंबर हैं । पुलाकादि मुनिके वस्त्रादि परिग्रह रहनेसे अंतरंग परिग्रहका भी नाश नहीं होता है । जो लोग वस्त्रादि परिग्रह रखकर पुलाकादिकोंको निर्ग्रन्थ मुनि कहे तो खी आदि कुटुंब रखकर मुनि होनेमें क्या हानि है ? और घरमें केवलज्ञान प्राप्त करनेमें क्या कठिनता है ? क्यों दीक्षा ली जाय ? जब तक विषयोंमें मूर्छा है, मोह है, तब तक मुनिपना किसी भी प्रकार नहीं हो सकता है । और दिगंबर मुनिका यह चिन्ह है ।

पाठकगण, समझे, हर्षकीर्ति श्वेतांबरी है इस लिये वस्त्रादि परिग्रह धारण करनेपर भी मुनि कहे जाते हैं, दिगंबर जैन नहीं हैं, ठगनेकी दिगंबर जैन बने हो । दिगंबर मुनि तो मूर्छा रहित हो निर्ग्रन्थ होगा । विचारो भाइयो,



સહાયતા મળી—એરાણી દિ. જૈન પાઠશાળાને લગનની ખુશાલીમાં ગાંધી બહેચર પુંછરામ સોનાસજુવાળા તરફથી (૨૫), સોમચંદ કરપુરચંદ ધનીયોળ (૨૧), મગનલાલ બહેચર (૨૧) તથા મણીલાલ છગનલાલ તરફથી (૨૧) સહાયતા મળી છે.

સોશિયલ—માં આ વર્ષે વૈશાખ માસમાં લગભગ ૫૦ લગ્નો વીસા મેવાડા બાઘથોમાં થયા હતા જેમાં માત્ર બેજ લગ્ન જૈન વિધિથી થયા હતા. અબજ જેવું છે કે એ લોકોમાં બેજ ભરાઈ ગયો છે કે જૈન વિધિથી લગ્ન કરીએ તો “વર દન્યા મુખી થતાં નથી!” ગુજરાતના ભોળા બાઘથો, ગણપતિ વગેરેની પૂજા કોઈ દિવસે તો તમે કરો નહિ ને લગ્ન જેવે શુભ પ્રસંગે તમે હાથે કરીને મિથ્યાત્વી દેવોને પૂજો અને તે કદિને આપ દાહના વારસાની માફક ન હોડો તથા જૈન શાસ્ત્રાનુસાર પૂજન હોમ વગેરે કરવામાં બેજ માતો એ કેટલું હાંસીને પાત્ર છે ?

સુરત—માં નરસિંહપુરા ચાતિના આં ખીમચંદ સવધ્યંદે આમોદમાં સમાન ગોધમાં લગ્ન કર્યા છે એમ તેમની ન્યાતને માલમ પડવાથી એ લગ્ન ધર્મે વિરૂદ્ધ ગણી એ ન્યાતે એ બાહ્ય બેવાર બંધ કર્યો છે અને તેની રહેમાં તણાઈ જાને પાંગોડે (દિ. જૈન મથે) પણ એમનો બેવાર બંધ કર્યો છે. !

સુત પંચમી ઉત્સવ—આ વર્ષે ગાલરા-પારત, લલિતપુર, મોર્સી, સોલપુર, મિંડ, કલ-કતા, રોડતક, સંગવી, સુભારી, સાદુમલ વગેરે રથને ઉજવાવાના સમાચાર આવ્યા છે પણ એક છે કે ગુજરાતમાં એકે પણ રથને આ પર્વ ઉજવા-

વાના સમાચાર મળ્યા નથી. ગુજરાતના બાઘથો વેાર નિગ્રમાંથી હજુ ક્યારે જાગત થશે ? મોટા મોટા શાસ્ત્ર બંધારોની સાર સંભાળ ને ઉદ્ધાર હજુ પશુ નહીં કરશે તો પછી સડીને ઉધાઈ ખાઈને નાથ થઈ જશે ત્યારે જાગશે !

શ્રાવિકાશ્રમ—મુંબાઈ ગરમીની રમ પછી તા. ૭ જૂનથી પ્રારંભ છે.

લલિતપુર—કે સેઠ મથરાદાસની દુકાનો દેહાન્ત હો ગયા । આપકે પીછે પાઠશાળા, ઔ-પથાલય તથા પુરાને મંદિરોંકી મરમતકે લિયે ૧૧૦૦૦) નિકાલે ગયે હૈં ।

સ્વર્ગવાસ—આદિસાગરજી નામક દક્ષિણકે એક નિગ્રંથ મુનિ મહારાજકા પૂનામેં જ્યેષ્ઠ વડી રકો સ્વર્ગવાસ હો ગયા ।

મટારક વિદ્યાર્થી—લાતુરકી ગાદી પર વિશાલકીર્તિ નામક ૧૦ વર્ષકે અપદ્ બાલકકો મટારક કરકે બેઠા દિયા હૈં ઔર જિસકો વહુ-તસે સેતવાલ માઈ નહીં માનતે હૈં ઁનકે અનુ-યાયી મિત્રોંને મિલકર ૧૦ આદમીકો કમેટી નિયત કરકે ઁનકો પઢાનેકા પ્રવંધ કિયા હૈં ઔર વે ઔરંગાબાદ પાઠશાળામેં પઢ રહે હૈં । પહેલે સો બાલકકો મટારકની વના દિયે ઔર અવ વિદ્યાર્થી વનાયે ગયે યહ કૈસી ઁલ્લી વાત હૈં ?

બઢૌત (મેઠ)—મેં તા. ૩૦-૪-૨૦કો વ્ર. શીતલપ્રસાદનીકે હસ્તસે જૈન હાઈસ્કૂલકે દારોહાટનકા ઉત્તવ હુઆ થા જિસ સમય વ્રહ્મચારીનીકો એક અભિનંદન વ્ર દિયા ગયા થા જિસમેં વ્રહ્મચારીનીકી અપાર જાતિ સેવાકા વર્ણન કિયા ગયા હૈં । યહાં દો આમ વ્યાખ્યાન-મેં વ્રહ્મચારીનીકે જૈન ધર્મકા મહત્વ ઔર અર્હિસા ધર્મે પર અચ્છા પ્રકાશ પાડા થા ।



समाज नेताओंसे प्रार्थना ।

(लेखक-प. नंदनलाल जैन, इंदौर ।)

इस वर्ष श्रीमती दिगंबर जैन प्रांतिक समा मुंबईने अपने पाचागढके वार्षिकोत्सवमें एक बड़े ही महत्त्वका प्रस्ताव पास किया है वह यह है कि "गुजरात देशमें एक दिगंबर जैन संस्कृत महाविद्यालय स्थापित करना चाहिये । गुजरातमें दिगंबर जैन भाईयोंकी संख्या ठीक है, परंतु अज्ञान इस देशमें सबसे अधिक है। इस देशकी स्थिति सुधारनेके लिये सबसे प्रथम दानवीर नररत्न सेठ माणक-चंदजीकी दृष्टि इस तरफ हुई थी । और आपने रतलाम तथा अहमदाबादमें इसी उद्देश्यसे वेडिंगकी स्थापना की, किन्तु खेद है कि उक्त बोर्डिंगसे आज तक एक भी विद्वान पंतिन निष्पन्न नहीं हुआ और न धार्मिक कार्योकी जाग्रति करानेवाला एक धर्मात्मा समाज-नेता उत्पन्न हुआ । अस्तु, यहां पर इस ऊहापोहकी आवश्यकता नहीं है कि बोर्डिंगसे लाभ होगा या नहीं ?

भारतवर्षके प्रत्येक प्रान्तमें प्रायः संस्कृत विद्यालय होना चाहिये जिससे समग्र भारत-वर्षमें धार्मिक जाग्रति नियमित बनी रहे । भारतवर्षमें अनेक भाषायें हैं । एक प्रान्तसे दूसरे प्रान्तकी भाषा भिन्न होनेसे शिक्षामें बड़ा व्याघात पहुंचता है । बालकोंके हृदयमें जितनी सरलता और सुगमताके साथ अपनी अपनी मातृ भाषामें जो ज्ञान हो सक्ता है वह बहुत व्यय करने पर और धीरे परिश्रम करने पर भी

उतने समयमें अन्य भाषासे नहीं होता है । यह एक सिद्धान्त बात है कि ज्ञानकी श्रेणी मातृ भाषा है । शिशु वर्गकी शिक्षा हृदयमें व्याघात पहुंचानेवाली न होनी चाहिये किन्तु जिस प्रकार बन सके उस प्रकार आनंद और शुशीमें हसते खेलते हुए धार्मिक अंशों (आतों) की शिक्षा बालकोंके कोमल हृदयमें देनी चाहिये । वही शिक्षा आजर्पण करनेवाली जीवन पर्यन्त स्थिर रहनेवाली होती है उसका उपाय यही कि मातृ भाषामें धार्मिक शिक्षा उत्तम होनी चाहिये जिससे धीरे २ बालकोंको इतना मना आता है कि वे उच्च धार्मिक ज्ञानके अध्ययन में लीन होजाने हैं । साथमें यह भी कहना पड़ेगा कि सिद्धान्तोंका असली मर्म (ज्ञान) बिना संस्कृत पढ़े आ ही नहीं सक्ता । कारण न्याय-शास्त्रका आप किसी भाषामें ट्रांसलेशन (अनुवाद) कीजिये, नहीं होता है । एक तो संस्कृत सिवाय-अन्य भाषाओंमें वे शब्द ही नहीं हैं जिनसे न्याय शास्त्रोंके अमली भावोंका अनुवाद कर सकें । दूसरे जितने दार्शनिक ग्रंथ हैं वे प्रायः संस्कृतमें ही हैं । संस्कृत भाषामें वह खूबी है कि एक २ शब्दके प्रसंगोपात अनेक अर्थ स्वयमेव प्रतिभास होते हैं वे इतर भाषासे नहीं हो सके । जिन धार्मिक गूढ़ सिद्धान्तोंका रहस्य संस्कृत पढ़नेसे निकलता है वह अनुवाद किये हुए भाषाके ग्रन्थसे कल्पितकाल पर्यन्त नहीं निकलता है । इस लिये बिना संस्कृत पढ़े धार्मिक तत्वोंकी खोज व सच्चा ज्ञान न हो कर यह भी कभी २ होता है कि भाषामें जितने ही शब्दोंके न होनेसे विपरीत ज्ञान हो



जाता है । अनुमान-अनुमानाभास-हेतु-हेत्वा भास आदिका ज्ञान भाषामें होना असंभव है । और जब तक इनका ज्ञान न हो तब तक पदार्थोंका सच्चा ज्ञान नहीं हो सका है । इस लिये धार्मिक तत्वोंके जाननेके लिये संस्कृत भाषाका ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है ।

गुर्जरदेशमें- एक भी संस्कृतका ज्ञाता विद्वान नहीं है । हर समय सर्वत्र यही जोर शोरसे पुकार मची रहती है कि हमें पंडित चाहिये । हमारी पाठशाला बंद है । क्या करें पंडित नहीं मिलता है । अभी थोड़े दिन पहले नवागांवमें एक लुहारको धर्मशिक्षा देनेके लिये नियत किया था वह विचारा धर्मशिक्षाको क्या समझे ? जैन धर्म क्या है ? इस नाम तकको नहीं जानता है फिर जैन धर्मके तत्वोंकी शिक्षा किस प्रकार दे सका है ? यह आप ही निर्धारित कीजिये परन्तु किया क्या जाय ? जैन पंडित मिलते कहां हैं ? और मिलते भी हैं वे हिन्दी भाषाके ज्ञाता जिससे लाभ कम होता है । ग्राम २ में उपदेशकोंकी अतिशय आवश्यकता है परन्तु उपदेशकोंकी भाषा हिन्दी होती है इसलिये उपदेशकोंका असर उतना नहीं होता है और खर्च बहुत ही अधिक पड़ता है । सिवाय उपदेशक बड़े २ शहरमें जहां पर रेलगा साधन हैं भ्रमण करते हैं किंतु छोटे २ ग्रामोंमें नहीं जाते हैं । समाजकी आवश्यकता है ग्रामीण भाषाओंके सुधार करनेकी । कारण नागरिक (शहरी) जनतामें संसर्गसे भी बहुत कुछ शिक्षा मिलती है परन्तु जिनको जनोक्त मंत्र तक नहीं आता ऐसे भाषाओंका सुधारना

ही परम आवश्यक है । थोड़ेसे नागरिक लोग सुधारनेसे राष्ट्र और धर्म उन्नत नहीं हो सके हैं । धर्मकी व्यापकताके लिये ग्रामीण जनताका सुधार करना सबसे अधिक जरूरी है । इस लिये भिन्न २ प्रांतोंके लिये तद्देशीय उपदेशकोंकी जरूरत है जो कि वे अपने प्रांतकी भाषा जानते हों, साथमें संस्कृत भाषाके भी जानकार हों तो ग्रामीण जनता उन उपदेशकोंके हृदयंगम भावोंको समझकर अपना कल्याण कर सकती है और समाजका द्रव्य भी व्यर्थ व्यय नहीं होगा । गुजरातमें न तो कोई पंडित ही है और न उपदेशकका काम करनेवाला गुजराती भाई है । बोर्डिंगोंसे पढ़े लिखे मनुष्य इस तरफ ध्यान ही नहीं देते हैं या बोर्डिंगोंमें ऐसे विद्वान पैदा करनेकी शक्ति ही नहीं है । समाजसेवी मनुष्योंकी आवश्यकता है वह अंगरेजी पढ़े लिखे मनुष्य करते नहीं हैं । कदाचित् कोई करनेको तैयार भी होता है तो उसके विचार जैन धर्मसे कम मिलते हैं । ऐसा करनेसे परिणाम यह निश्चला है कि कोई ऐसा वक्ता (उपदेशक) एक ग्राममें जाकर विधवा विवाह करनेका उपदेश देने लगा । उसको सुनकर ग्राममें परस्पर विरोध फैल गया । धर्म कार्यकी उन्नति एक तरफ रही । अवगतिके बीज पैदा हो गये । यहां पर मेरा ऐसा अभिप्राय नहीं है कि अंगरेजी विद्या पढ़ना ही नहीं चाहिये । किन्तु हमें समाजसेवी मनुष्योंकी जरूरत है । यदि ये लोग (अंगरेजी पढ़े लिखे) इस कार्यको करें तो अधिक लाभ दें परंतु धर्म



सिद्धान्तको अच्छी तरह समझकर ही इन लोगोंको इस तरफ अपना कर्तव्य करना चाहिये नहीं तो हानि विशेष होनेकी संभावना है ।

गुर्जर देशमें अधिक अज्ञान है, शहरोंको छोड़कर (गुजरातमें शहरोंमें प्रायः दिगंबर जैनी भाईयोंकी बस्ती बहुत ही कम है) ग्रामोंमें दिगंबर जैनी भाईयोंकी स्थिति अतिशय खराब है ! शिक्षा प्राप्त करनेके साधन ग्रामोंमें प्रायः होते नहीं । गुजरात, वागट, मेवाड़ प्रांत (जिनमें दिगम्बर जैन भाईयोंकी संख्या विपुल है) देशी रियासतमें अधिक भाग होनेसे शिक्षा नाम मात्रको भी नहीं मिलती है । न तो स्कूली ही हैं, और न चटशालाएँ हैं । ऐसे बहुतसे ग्राम हैं जहाँ पर शिक्षाका साधन कुछ भी नहीं है । जहाँ पर शिक्षा ही नहीं है, ऐसे देशमें धर्म ज्ञान कहाँसे हो सकता है ? प्रजाकीय जाग्रतिका तो कोई नाम तक नहीं जानता है । इस प्रांतके निवासी अपना लेनदेन व्यापार आदि भीतोंके साथ करते हैं, रात्रि दिवस इनकी ही संगति मिलती है जिससे यह फल निकलता है कि बाह्यवृत्ति भी बुरी संगतिसे खराब हो रही है, और अंतरंगवृत्ति भी ज्ञान विना मलिन है फिर धर्म कर्मका ज्ञान कहाँसे रहे ? इन लोगोंके आचरण भी ऐसे मलिन हो रहे हैं कि शुद्धता बहुत ही कम मिलती है, उच्छिष्टताका ज्ञान ही नहीं है । दर्शन पूजन किसी कोईको आता हो, नहीं तो भगवानको चरणारविंद पर केसर चड़ाई कि पूजनकी इतिश्री समाप्त हुई । शुद्ध णमोकार मंत्रका उच्चारण करना नहीं आता है । हे समान नेताओ ।

जरा तो चेतिये । आपके भाईयोंकी इस शोचनीय अवस्थाको देखिये । ये अपने गुर्जर देश निवासी भाई (खास कर वागड़ प्रांतवासी) कितने अज्ञ हैं । इनका जीवन किम प्रकार निरर्थक नाश होता है यह भी एक बार सोचिये । जैन धर्म क्या है ? इस छोटीसी बातका भी उत्तर विचारे नहीं दे सके हैं । यह कितने खेदकी बात है ? सुधरी हुई नागरिक जनताकी तरफ हमारे समाज नेताओंका ध्यान आकर्षित रहता है परंतु जिनको सुधारनेकी खास जरूरत है उस तरफ किसी नेताने लक्ष नहीं लिया ।

जैनधर्ममूषण श्रीमान् पुज्य ब्रह्मचारी शीलप्रसादजीका कुछ समयसे इस तरफ ध्यान आकर्षित हुआ है । आपके परिश्रमसे वांतवाडामें एक विद्यालय स्थापित हुआ है जिसके लिये समाज चिर आभारी है ।

गुर्जरदेश अतिशय भोला है, उदार है, धर्म मीर है, परन्तु अज्ञ है इसका कारण यह है कि गुजरात देशमें बहुत समयसे भट्टारकोंका प्रबल साम्राज्य रहा है । पूर्व समयके भट्टारक सदगुणी-सदाचारी-ज्ञानी और धर्मरक्षक होते थे । इनका जीवन धर्मरक्षार्थ ही व्यतीत होता था । पूर्व समयके भट्टारकोंका समय अपने कर्तव्योंको पूर्ण करनेमें, धर्म रक्षा करनेमें और सामाजिक व्यवस्था रखनेमें ही व्यतीत होता था । भट्टारक सुरेन्द्रकीर्तिने अपने जीवनमें तीन हजार ग्रामोंमें भ्रमण किया था । असंख्य ब्राह्मण और क्षत्रियोंको जैन बनाया था तथा शिथिल हुए जैनियोंको पुनः जैन धर्ममें लट्ठ किया था जिसके दस्तावेज मिलते हैं । एक एक भट्टार



कोकि पास कमसे कम १०-१५ पंडित और ८-१० ब्रह्मचारी रहते थे । ये सब मिल कर धर्मकी जाग्रति करते थे, ग्रंथ रचना करते थे, सामाजिक व्यवस्थाका सुधार करते थे परन्तु कुछ समयसे ऐसे भट्टारक होने लगे जो कि समाजको सुधारनेके बदले समाजके बिगाड़नेमें ही अपना हित समझने लगे कारण वे विचारते हैं कि समाज यदि पढ़ी लिखी ज्ञानवान होगी तो हमें कोई भी नहीं पूछेगा इसलिये इन लोगोंने समाजमें शिक्षा और सदाचारके ऊपर पूरा २ अंकुश रखा है । एक भट्टारकने अपने चौड़ा (वही) में भक्तामरका पाठ सुनानेके ४५ रुपया जमा किये हैं । वर्तमानमें इस बागड प्रांतमें ४ भट्टारक मौजूद हैं । (ईडर, डुंगरपुर, सूरत और नरसिंहपुरा भाइयोंके भट्टारक इस प्रकार ४ भट्टारक) जिनमें एक एकका मासिक खर्च १०० रुपयासे अधिक है। ये खर्च गाडी घोड़े और पालकीको उठानेवाले भोई सिपाई आदिमें व्यर्थ खर्च होता है । वर्तमान भट्टारकोंकी दशासे समाज परिचित है । मोनक्षीख और मगसमें समाजका द्रव्य खर्च होता है । धर्म सेवनके बदले ये लोग मोन मजाके लिये समाजको छूट रहे हैं । क्या इनकी तरफ आपका ध्यान कभी गया है ? ये लोग स्वयं नहीं पढ़ते और न समाजको ही पढ़ने दते हैं । इन भट्टारकोंका यही विचार है कि अधिक पढ़नेसे क्या फायदा ? हिसाब और व्यापारी आना चाहिये । इसका अर्थ यही है कि यदि समाज सुधर गई तो हमें कीन मानेगा ?

समाज रुढ़ियोंकी, गुलाम्नी हुई है ।

इस गुजरात प्रांतके भोले भाइयोंका पुगना ख्याल अभी तक वैसा ही बना है । गुरु बिना ज्ञान नहीं है । चाहे गुरु पाखंडी-ढोंगी-छटेरा और पापी ही क्यों न हो ! बिना गुरुके रहना ठीक नहीं है । समाजका जितना द्रव्य इन पाखंडी गुरुओंके मोन मजामें खर्च होता है उतना द्रव्य यदि समाज सुधारनेके काम लगाया जाय तो कितना लाभ होगा, परन्तु इस प्रांतकी समाज बहुत ही भोले हैं, धर्म भीरु हैं, सरल हैं, अपने भले बुरेक नहीं जानती हैं । धर्मके बहानेसे धूर्तोंकी इ देशमें बड़ी मजा है । गुर्जर देशमें एक भी विद्यालय नहीं है जिससे गुजराती भाई शिक्ष लें और देश तथा समाज सुधारें । धर्मके बहानेसे होनेवाले अत्याचारोंको जाने । अपनी रक्ष अपने आप कर सकें । धर्मकी हंसी न हो ऐसे कार्योंका त्याग करे । ऐसे धूर्तोंसे बच आने जो विषयोंके लिये समाजको छूट रहे हो ।

इन धर्मके बहानेसे होनेवाले अत्याचारोंक व (जिनसे धर्मकी हंसी होती है) दूर करनेके लिये जनतामें ज्ञानके प्रसारकी अतिशय आवश्यकता है । जब तक जनतामें ज्ञान नहीं होगा ये अत्याचार कभी भी दूर नहीं हो सके हैं । इस प्रांतमें हरएक ग्रामके दिगंबर जैन मंदिरोंमें प्रतिमाओंपर आंगी (तोनेचांदीके वस्त्र आभूषण विगैरः) चढ़ाई जाती है, समझने पर भी इस प्रांतके भाई अपनी अज्ञानता नहीं छोड़ते हैं । कारण यही है कि इन भाइयोंमें देव शास्त्र और गुरुका ज्ञान नहीं है । धर्तांवर इस देशमें अधिक बस्ती होनेसे उनकी



रिवाजकी प्रवृत्तियां अपनी दिगंबर समाजमें विशेषतासे हो रही हैं। इसका परिणाम यह होता है कि अनेक मंदिर श्वेतांबर भाइयोंके अधीन हो जाते हैं। देशकी अज्ञानता बिना ज्ञानके प्रसारके सिवाय और किसी प्रकार दूर नहीं हो सकेगी।

गुर्जर दर्शमें दिगंबर जैनोंका साहित्य प्रचुर भरा हुआ है। म्यान २ पर भंडार हैं। इंडर सागवाडा सोमित्रा कर्मसद-डुंगरपुर प्रभृति ग्रामोंमें भंडार हैं परंतु कोई भी जिसकी मातृभाषा गुजराती हो और संस्कृतका ज्ञाता हो ऐसा दिगंबर जैनी विद्वान इस साहित्यका विकास कर जैन धर्मको उन्नत बनाये नहीं हैं। गुजरातीके साथ २ संस्कृत जाननेवाले विद्वान पंडितकी इतनी कमी है कि जिसके कारण जैन समाजकी बड़ी मारी हानि होनेके सिवाय अनेक कार्य अव्यवस्थित हो रहे हैं। इसलिये गुजरातमें संस्कृत विद्यालयकी कितनी जरूरत है यह पाठकगण ही स्वयं अनुभव कर सकते हैं। गुजराती भाइयोंको पग २ पर पंडितके लिये पराधीन होना पड़ता है। विवाहादि संस्कार मिथ्यापद्धतिसे होते हैं कारण जैन विधिसे करानेवाला पंडित नहीं मिलता है। समाजोंके प्रस्ताव हमेशा यही होते हैं कि संस्कारोंका प्रचार होना चाहिये परंतु अमली कारवाई नहीं होती है। अमली कारवाई हो कैसे? करानेवाले पंडित नहीं मिलते हैं? विदेशसे बुलानेमें खर्च अधिक होता है इससे प्रत्येक गरीब और साधारण स्थितिवाले मनुष्य इतना खर्च कर

विधि करवा नहीं सके। श्रीमानोंको इतना लक्ष नहीं है। मभा अपने प्रस्ताव पास कर एक वर्षकी रात्रि मानकर निश्चिन्त गाढ़ निद्रागत होती है। जबतक प्रत्येक प्रान्तमें अपनी अपनी रीति रिवाजके जाननेवाले समानसेवी निःस्वार्थ विद्वान न उत्पन्न होंगे तब तक समाजका अभ्युत्थान होना असंभव है। समाजमें विद्वान बनानेके लिये प्रत्येक प्रांतमें एक २ संस्कृत महा विद्यालयकी जरूरत है। इन संस्कृत महाविद्यालयोंमें राजकीय भाषा भी नियमित पढ़ाई जाय। साथमें देशोन्नतिके लिये चाण्डिय शिक्षाका प्रचार किया जाय तो समाजका अभ्युत्थान अल्प कालमें हो सकेगा। वर्तमान कालमें संस्कृत विद्यालयोंकी अतिशय आवश्यकता है। समाज नेताओंको इस तरफ पूर्ण ध्यान देना चाहिये।

गुजरातमें "संस्कृत दिगंबर जैन विद्यालयों"की जरूरत ऐसा प्रस्ताव मुंबई दिगंबर जैन प्रांतिक सभाने पास किया है। सुनते हैं कि प्रथम प्रांतिक सभाका विद्यालय संवेधी ध्रुवफंड भी है। यदि है तो उसका उपयोग अवश्य करना चाहिये। दानवीर नररत्न सेठ माणिकचंदजीके फंड (२३ लाख) मेंसे जो कुछ भाग २३ टका प्रमाण निकाला है उसका उपयोग इस विद्यालयमें सेठ साहबके उद्देश्योंको पूर्ण करनेके लिये होना चाहिये। अवशेष खर्च जन्तासे लिया जाय। मुझे आशा है कि श्रीमान सेठ ठाकुरभाई भगवानदासजी-जोहरी, सेठ ताराचन्द नवलचन्द, सेठ लक्ष्मीचन्द प्रभृति गणमान्य सज्जन इस तरफ



लक्ष लेंगे । यह विद्यालय बागड़ और गुजरातकी सीमापर स्थापित किया जाय । मेरी रायसे निम्न लिखित स्थानोंमेंसे एक स्थानमें होना चाहिये । अमदावाद, पावागढ, ईडर, डुंगरपुर, सागवाडा, उदेपुर या दाहोद । आशा है आप इस विज्ञप्ति पर ध्यान देंगे ।



भाषा और भाव ।

(लेखक:-पं. दीपचंदजी परवार नरसिंहपुर)

संसारके सभी देश जो उन्नत हुये दृष्टिगोचर होते हैं सब हीने सर्व प्रथम अपने देशमें साहित्यका प्रचार किया और उसके द्वारा प्राचीन (भूत) और वर्तमान स्थितिको देख कर भावी दुःखोंका आदर्श निश्चिन करके अपने सम्मुख रखता । तत्पश्चात् जिसे उन्होंने आदर्श बनाया उसे प्राप्ति करनेको जो जो साधन आवश्यक समझे गये उन पर गंभीरतासे विचार करके आरुढ़ हो साधनेमें दत्तचित्त हो गये और 'श्रेयांसि बहु विघ्नानि' की कहावतको विचार करके विघ्नोंसे न डर कर उन्हें अपने प्रारंभित कार्यमें जो यत्किंचित् सफलता दृष्टिगोचर हुई उससे अधिकाधिक उत्साहित होकर कार्यमें अग्रसर होठे गये । उसीका फलस्वरूप यह बात देखी जाती है कि वे देश जो कि किसी समय अपनेको मनुष्य जातिकी गणनामें गिना-नेकी योग्यता नहीं रखते थे आज सम्य संसारके सम्मुख अपनेको आदर्श बता रहे हैं ।

ठीक ही है "दिन दूदा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ" अर्थात् जिन्होंने खोज की उन्होंने सफलता भी पाई इसमें आश्चर्य ही क्या है ? उद्यम करनेसे क्या नहीं हो सकता है ? पुरुषार्थी पुरुषोंको संसारमें कुछ भी अशक्य नहीं है, कुछ भी दूर नहीं है, कुछ भी दुर्लभ नहीं है "वास्तवमें दैवेन देयमिति का पुरुषा वदन्ति" अर्थात् दैव (कर्म) में होगा तो मिलेगा ऐसा कथन कायर मनुष्योंका ही है क्योंकि "नहीं सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः" अर्थात् सोते हुये सिंहके मुखमें अपने आप कोई भी पशु (शिकार) नहीं पड़ जाता है किंतु उसे अपने भोजनकी चिन्ता करना पड़ती है और ज्यों ही वह पुरुषार्थको आगे करके निकलता है कि बातकी बातमें अपना भोजन कहींसे प्राप्त करके सुखपूर्वक अपने स्थान पर जा कर सो जाता है । क्या सिंहको भोजनके लिये कोई स्थान नियत है ? जहांसे वह ले आता है परन्तु उसमें पुरुषार्थही उसका नियत है । जिस समय वह अपनी गुफासे निकल कर दहाड मारता है कि सारा वन कांप जाता है, फिर वह स्वेच्छा पूर्वक जिस दिशामें चला जाता है वही उसका अभीष्ट सिद्ध हो जाता है । पुरुषार्थके संसार सर्वत्र संपत्ति ही संपत्ति दिखाई देती है, सब संसार आनन्ददायक प्रतीत होता है । भय क्लेश उनके हृदय तक पहुंच ही नहीं सकता है । हम क्या करें ? यह प्रश्न उनके कोप (डिपसनरी) में ही नहीं मिलता है । वे छफीरके फकीर नहीं होते हैं, वे अपना मार्ग अपने आप बना लेते हैं । एक भाषा कविने क्या ही अच्छा कहा है ?



“लीक लीक गाड़ी चले लीक हि चले कपूत,
लीक छोड़ तीनों चले, शायर सिंह सपूत”
अर्थात् लीक (रूढ़ि पर गाड़ी और कुपूत चलते
हैं परंतु पुरुषार्थी पुरुष अपना मार्ग स्वयम्
बनाते हैं। सिंह, कवि और सुपुत्र ये तीनों
उच्छिष्ट नहीं खाते हैं किसीके मुँहका भोजन
नहीं छीनते हैं, उनके मस्तिष्कमें नवीन २
विचार उत्पन्न होते रहते हैं। वे अनेकोंको मार्ग
सूचना देते हैं। हमारे इस भारत देशमें इतिहास
और पुराणोंके देखनेसे पूर्व कालकी स्थितिका
पता लगता है कि किसी समय यह देश घन
धान्यादि संपत्तिसे परिपूर्ण था। यहाकी सभ्यता
जगद्विख्यात थी। बल वीर्यादिके दृष्टान्तमें
रामचन्द्र लक्ष्मण रावण कौरव पांडवादिके पुराण
प्रसिद्ध हैं। शिल्पशालाओं में भी किसी प्रकार यह
देश पीछे नहीं था। इसके नमूने आधू आदिके
मन्दिर, ताजमहल आदि भी जीते जागते
दृष्टान्त हैं। अध्यात्मिक विषयका तो यह म
हासागर था। जहा बड़े २ योगीश्वर आदि वि
चरते थे, जिनके बनाये हुये ग्रन्थ आज भी
इस भारतमें अचल कीर्तिको हरीभरी कर रहे
हैं इत्यादि सब कुछ होते हुये भी जन भारत-
की वर्तमान स्थितिकी ओर दृष्टिपात करते हैं
तो हमको सिवाय उदासीके और कुछ नहीं
दौरता है। घन धान्यादिकी तो बात यों हो
गई है कि बड़े बड़े गृहस्थोंके घरोंमें प्राय
नित्यकी भोजन सामग्री बाजारसे अती हो। यदि
भोजनके समय कोई आगन्तुक आजावे, तो
बाजारके हलवाईयोंकी दुकानें देखना पड़ती हैं।
साधु व नती श्रावक उदासीन तपागी महात्मा

तो उनका चौका देव ही नहीं सके क्योंकि वे
लोग बाजारका सामान खानेवाले और ब्रती
जन घरका बना हुवा शुद्ध भोजन ग्रहण कर
नेव ले, तो उनको तो इन श्रीमानोंके यहा तक
ज्ञान भोजन करनेका ऋण ही नहीं दिया जाता
है और दीन दुखी दरिद्रीको भी जब कुछ मिल
सके कि जन चौकेमें कुछ बचे। यहा तो
जीमते २ ही दूसरी वार आटा मुदना पड़ता
है। ग्यामा उपरका लिफाफा देखा जाता है। अच्छे
धोबीके धुले हुये कलफदा कपड़े, लुगदार बूट,
चिरुछेदार पंगड़ी या फेल्ड केप हेट आदि, जरीका
दुपट्टा या कफर्टर कंधे पर, हाथमें कोई कम्प-
नीका सुचीपत्र, बैठकमें कुर्सी टेबिल या गादी
आदि, सिंगरेटका शब्बा या लम्बा हुका और
घरके भीतरका हाल तो चूहे जाने जो घरको
खोद २ कर भूखके मारे मर जाते हैं और
लोगोंको प्लेगकी आशंका पैदा कर देते हैं
इत्यादि कहनेका तात्पर्य यह है कि लोगोंकी
आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है, शारीरिक बल
हो ही कहासे? प्रथम निर्धन माता पितावोंसे
उत्पत्ति सो जड़ ही पत्थर पर जमी है फिर
बाल्यावस्थामें व्याह करके सत्तान उत्पन्न करना,
फिर धी दूध आदि पौष्टिक पदार्थोंकी तो बात
क्या, भरपेट भोजन भी न मिलना, तिस पर
भी चिंतावोंकी चिंतामें निरंतर जलते रहना।
अब बल कहासे आवे? उन्हे तो जीवनके शेष
दिन भी मार रूप हो रहे हैं। अन साहसका
हल यह है कि रातकी सोते हुये यदि बाहरसे
पत्तेकी सी खरराटा सुनी जावे तो और भी
चुपकी मार कर सो जावे, चाहे यों ही शकाके



कारण नींद न आवे परन्तु इतना साहस कहाँ कि वे क्वाड खोल कर देख लें और निःशंक होकर सोवें, शिल्प विद्याकी बात तो यहां तक गई कि विदेशी वस्तुओंके आगे हमारी वस्तुएं लोगोंको पसंद ही नहीं आती। यहां तक कि भोजन बनाने तककी क्रियायें लोग भूल गये हैं और अब बाजारके तैयार माल पर ही जिन्हाका स्वाद रह गया है। व्यापारमें सदा ही का बाजार गर्म दिखता है। योगी और साधुओंका हाल तो ग्रन्थोंमें लिखा होनेसे जाना जाता है, क्योंकि जबतक तत्त्वज्ञान होकर अध्यात्म दृष्टि न होवे और विषय भोगोंसे विरक्ति न उत्पन्न होवे कोई साधू नहीं हो सक्ता है और यदि किसी समय किसीको कुछ विरक्ति हुई और वह इस मार्गमें लग गया तो फिर उसके भोजन पानका भी सुभीता नहीं लगता है। इसीसे ऐसे उच्चारणके आदर्श परम दिगम्बर साधु दृष्टिगोचर नहीं होते हैं, अध्यात्म चर्चके बदले चक्रीलोंकी बहसें और देवगुरु व तीर्थोंकी प्रदक्षिणाके बदले कोर्टस् (अदालतों)के इर्दगिर्द चक्कर लगाये जाते हैं इत्यादि अवनति अवस्था देखी जाती है जिसकी पूर्व और वर्तमान कालकी तुलना करना मेरी शक्तिसे बाहर है। जो कुछ भी हो, जिस पर जो कुछ बीतती है वह अवश्य ही जानता है। मुझे इसमें विवाद नहीं है, परन्तु मुझे यहां यह विचारना है कि यह अवस्था क्यों हुई और कैसे दूर होकर पुनः पूर्ववत् इस भारत देशमें सुख और शांतिका साम्राज्य हो सक्ता है? मैं अपने इस लेखके प्रारम्भमें ही बता चुका हूँ

कि आज तक जितने देश उन्नत हुये हैं वे सब साहित्यकी शरणमें प्राप्त हो कर ही हुये हैं। हमारे देशमें भी साहित्यका भंडार कुछ कम नहीं था और न अब भी कम है परन्तु हमारा साहित्य भंडार बहुत अग्नि देवने भक्षण कर लिया, बहुतसा जल देवताके अर्पण हो गया, बहुतसा दीप्क आदि जन्तुओंकी क्षुधा तृप्तिके काम आया, वह मनुष्योंके काम नहीं आया, और अब एक भी प्रायः उसी अवस्थामें बहुतसा प्राचिन साहित्य पंडितों व पंचोंके जेलखानों (कारागृहोंमें) बंद है। और जो कुछ थोड़ा बहुत प्रसिद्ध हुआ है सो बहुत अल्प संख्यामें और भिन्न २ भाषामें। ऐसी अवस्थामें उसका लाभ सर्व साधारण व समस्त देशवासियोंको नहीं मिल सक्ता है। और उसका किंचित् लाभ उसी प्रांत व भाषा जाननेवाले ही उठा सकते हैं कि जिस प्रांतीय भाषामें वह छपा हो। इस लिये इन बातको बड़ी भारी आवश्यकता है कि सम्पूर्ण देशमें अनेकों भाषाओंके रहते हुये भी राज्य भाषाके समान एक राष्ट्र भाषा हो। और ग्रन्थोंका प्रकाशन उसी राष्ट्रभाषामें सर्व प्रथम किया जाय, ताकि उसका लाभ समस्त देशवासियोंको प्राप्त हो सके। देशके बड़े २ नेतावोंने बहुत सोच विचार कर यह निश्चित किया है कि भारत देशकी भाषा (राष्ट्रभाषा) हिन्दी और लिपि नागरी (हिन्दी ही जिस भाषा व लिपिमें यह लेख है) हो सकती है। इसलिये देशके समस्त प्रांतवासियोंका यह परम कर्तव्य है कि वे हिन्दी भाषाको उत्तेजन दें। और नवीन २

साहित्यसे तथा प्राचिन साहित्यसे हिन्दीके भंडारको भरपूर कर दें। जिस समय देशकी एक सर्वमान्य भाषा होजावेगी तो एक सिरेसे दूसरे सिरे तक किसी भी प्रातवासीको व्यापारार्थ अथवा तीर्थयात्रादि काममें चिट्ठी पत्री आदि व्यवहार करनेमें कष्ट न होगा। इससे केवल लौकिक उन्नति ही नहीं होगी किन्तु धार्मिक पारमार्थिक उन्नतिमें भी बहुत प्रकाश पड़ेगा। क्योंकि प्रायः जितनी प्राचीन ग्रन्थोंकी टीकाएँ मिलती हैं वे सब नागरी लिपि और हिन्दी भाषामें ही मिलती हैं और उन्हें हिन्दीमें ही प्रकाशित करनेमें विशेष सुभीता होता है। हिन्दी भाषा भाषी प्रजा भी बहुत है और हिन्दी भाषा सब भाषाओंसे सरल भी है। किसी भी भाषा भाषी इस सरल हिन्दी भाषाको बहुत शीघ्र सीख सकता है। इसलिये एक ही भाषामें पुस्तक प्रकाशित होनेसे सब लोग उपकार लाभ उठा सकते हैं। भाषा उसे कहते हैं जिसके द्वारा बोल कर मनुष्य अपने मनके भावोंको दूसरों पर व्यक्त कर सकता है। यह भाषाकी परिभाषा बहुत विस्तृत है यह किसी भी प्रातः य भाषा पर नहीं घटती है किन्तु केवल एक हिन्दी (राष्ट्र भाषा) पर ही घट सकती है। अन्य भाषाएँ एक एक प्रातीय हैं और उस प्रातःके मनुष्य अपने विचार व भाव अन्य प्रातवालेको कदापि ही बता सकते हैं जब तक कि वे अपने सामूहिकवालेके प्रातीय भाषा या हिन्दी भाषाका प्रयोग न करें। और जब तक वे अपने विचार और भावोंको न बता सकें तो विस प्रकार लाभ उठा सकते हैं। एक महाराष्ट्र (मराठी भाषी)

विद्वान् गुजरातमें जाकर मराठीमें कथा कहे तो कौन सुनेगा और समझेगा। परन्तु वह हिन्दीमें कहता है तो सब समझ जाते हैं इत्यादि, इस लिये हम सबको उचित है कि यदि हम लौकिक और पारमार्थिक दोनों प्रकारकी उन्नति चाहते हैं तो हिन्दी भाषाको उत्तेजन दें, हिन्दीमें साहित्य प्रचार करें, व्याख्यान दें, समाचार पत्र निकालें, बातचीत चिट्ठीपत्री व्यवहार करें, बालकों व स्त्रियोंको पढ़ावें, हिन्दीकी पुस्तकें बाँचे, हिन्दी भाषामें ही विचार करें। वस फिर हमारी उन्नतिमें देर न लगेगी और इस प्रकार सत्सारमें सुख और शांति फैलेगी।

सुखसागर भजनावली ।

जैनधर्मभूषण ब्र० शीलप्रसादजीके रचनेवाले हुये इस नवीन मननसंग्रहमें कोई २५० उपदेशात्मक मननोंका संग्रह है। मूल्य ॥२॥

मैनेजर-दि० जैन पुस्तकालय-मुरत ।

नवीन ग्रंथ-

हमारे यहांके उत्तम ग्रंथ ।

आदि पुराण	१६)
उत्तर पुराण	१०)
दोनों एक साथ	२५)
पंचाध्यायी टीका	५॥)
धर्म-प्रश्नोत्तर	२)
जिनशतक	॥)
दिवाली पूजन	३)

मिलनेका पता—

लालाराम जैन,
महाराजगढ़ इंदौर ।

સ્વાદ્વાદની સિદ્ધિ ।

(લિખક-મણીલાલ નરુવાઈ દોરી, ખી. એ. અમદાવાદ)

કુમારપાલને જૈન ધર્મનો પ્રતિભોધ આપી મધ્યકાળમાં જૈન ધર્મનો ચુલરતમાં પ્રચાર કરવામાં અગ્રણ્ય ગણાતા સાદા તથા કરોડ શ્લોકના લેખક શ્રી હેમચંદ્રાચાર્યે પોતાના પ્રસિદ્ધ હેમ વ્યાકરણમાં લખ્યું છે કે સિદ્ધિઃ સ્વાદ્વાદત્ત । અર્થાત્ સ્વાદ્વાદથી સર્વ આખતની સિદ્ધિ થઈ શકે છે. સ્વાદ્વાદ અથવા અનિર્કાંતવાદમાં સર્વ વસ્તુઓની સિદ્ધિ કરવાનું સામર્થ્ય રહેલું છે. પણ અત્યારે એનો સમય આવ્યો છે કે જ્યાં સ્વાદ્વાદની સિદ્ધિ કરવાની જરૂર પડે છે. સ્વાદ્વાદના ઘણા જોડા અર્થ દસ્તાવેજોમાં આવે છે. આપણે કહીએ છીએ કે પરધર્મીઓ આ સ્વાદ્વાદના અપૂર્વ સિદ્ધાંતને સમજતા નથી. માટે તેનો જોડો અર્થ કરે છે, પણ જૈનો પોતે પણ ધણે થોડે અંશે તેનો અર્થ સમજતા માલુમ પડે છે; અને કદાચ કોઈ સમજતા હશે પણ જ્યાં તેને વ્યવહારમાં મૂકવાની જીવનમાં ઉતારવાની વાત આવે છે, ત્યાં તો મોટે ભાગે જન્યતા નજરે પડે છે.

સ્વાદ્વાદને કેટલાંક દોષો અનિશ્ચિતવાદ, અથવા તો ગાંધ મનુષ્યનો પ્રલાપ કહી નિરૂદ્ધ છે. તેઓ કહે છે કે આ એ ખરૂં અને પેલું એ ખરૂં, આવું કહેનારા સ્વાદ્વાદીઓ કોઈ પણ નિશ્ચય ઉપર આવી શકતા નથી. તેઓ જ્યાં અંધાધન્ય ત્યાં છૂટવાની બારી તરીકે આ સ્વાદ્વાદમતની પ્રશંસા કરે છે. આ આલેખ નતદન અગાન મૂળક છે.

સ્વાદ્વાદ એ અપેક્ષાવાદ છે, એ અનિર્કાંત વાદ છે. તે અમુક અપેક્ષાએ અમુક વસ્તુને પ્રતિપાદન કરે છે, અને બીજી અપેક્ષાએ બીજી વસ્તુ પ્રતિપાદન કરે છે. આમાં કોઈ પણ સંઘર્ષ પડતો નથી છે નહિ. જનનનો ખર્ચો વ્યવહારજ આ રીતે આવે છે. એટલી એક

વસ્તુ સ્થળ બેઠે જુદી જણાય છે. વહી તેજ વસ્તુ કાળ બેઠે જુદી લાગે છે. માટે કદ અપેક્ષાએ કહેવામાં આવ્યું છે, તે ધ્યાનમાં રાખી આપણે અમુક આખત સત્ય કે અસત્ય કહી શકીએ.

આપણે કેટલાક દૃષ્ટાંતો આપી આ નિયમને સિદ્ધ કરીશું. દાખલા તરીકે 'રેત' લઈએ. રેત બારે કે હલકી. રેત 'બારે' કે 'હલકી' કદો શકાય નહીં કદ અપેક્ષાએ કદ વસ્તુને આશ્રયી તલે રેતને 'બારે' કે 'હલકી' પૂછો છો ? ને તમારા એક હાથમાં સીસું રાખો અને બીજા હાથમાં રેત રાખો અને પૂછો કે રેત બારે કે હલકી તો તરતજ સ્વાદ્વાદી જવાબ આપશે કે રેત હલકી છે. વળી એક હાથમાં ઘડનો લોટ રાખો, અને બીજા હાથમાં રેત રાખો અને ઉપર પ્રમાણે પ્રશ્ન પૂછો તો તરતજ જવાબ મળશે કે રેત બારે માટે રેતનું બારેપણું અથવા હલકાપણું બીજી વસ્તુને આશ્રયી રહેલું છે. જેનો એવા મૂર્ખ નથી કે રેતને એક અવાજમાં બારે તેમજ હલકી કહે.

આપણે એક બીજો દૃષ્ટાંત લેઈએ. કાળિદાસ મોતીલાલનો બાપ થાય, પણ તેજ કાળિદાસ મોતીલાલનો પુત્ર થાય. માટે કાળિદાસ બાપ કે દીકરા એ પ્રશ્નનો જવાબ કોઈ આપી શકે નહિ. દોની અપેક્ષાએ તે પ્રશ્ન પૂછવામાં આવ્યો છે, તેનાપર તેના પ્રત્યુત્તરનો આધાર છે.

કાલીદાસ મોતીલાલની અપેક્ષાએ પિતા છે, તેજ કાલીદાસ મોતીલાલની અપેક્ષાએ પુત્ર છે, વળી તેનો તે કાલીદાસ ત્રીજાનો મામો થાય, ચોથાનો બાજોજ થાય, પાંચમાંનો દાકો થાય; છઠ્ઠાનો બત્રીજો થાય એ રીતે એક મનુષ્ય ઘણા સંબંધો રહી શકે છે. માટે સંબંધ વિચારી વાત કહેવામાં આવે તે સત્ય, અને સંબંધ કે અપેક્ષા વિના જે કહેવામાં આવે તે અસત્ય.

બીજો એક દાખલો લઈએ. એક ગાય ધોળા છે તેના શરીર પર કેટલાક લાલ ઘાંટા છે. હવે સામાન્ય દીને આપણે તેને ધોળા ધાય કહીએ છીએ પણ આ ગાય 'ધોળીજ' છે, એમ કહેવું એ સ્વાદ્વાદની દૃષ્ટિએ નવામાં છે, કારણ કે



‘ ધોખીજ ’ છે એમ કહેવામાં તેનાં બીજા ગુ-
ણોના આપણે અપલાપ કરીએ છીએ. જ્યાં મુખ્ય
ગુણ કહેવામાં આવે, પણ બીજા ગુણોના અનાદર
કરવામાં ન આવે ત્યાં આપણે સત્યની સમીપ-
આવીએ છીએ.

સત્ય એટલું વિશાળ છે કે તેને સર્વ અપ્રે-
ક્ષાએ સર્વ બાબતોએથી, સર્વ નિશાએથી કોઈ
જોઈ શકે નહિ. કેટલેક અંશે આપણે તે જોઈ
શકીએ. જેટલે અંશે આપણે જોઈ શકીએ, તેટલે
અંશે આપણે તે જાણીએ છીએ. તેમાં આપણે
સત્ય કહીએ છીએ, પણ તે ‘ આમજ છે ’ અ-
થવા ‘ આમ નથીજ ’ એમ કહેવામાં ભૂલ
કરીએ છીએ. કારણકે બધી અપેક્ષાઓ દરેક
મનુષ્ય સમજી ન પણ શકે.

હાલ અમેરિકામાં એની એક માન્યતા ચલી
રહેલી છે કે બધા સાંકેતિક રોગોનું મૂળ કારણ
મનના વિચારો છે. મનુષ્યના વિચારો રોગોરૂપે
જાહેર પડે છે. ‘ મનુષ્યની ચિંતાઓ, દુઃખ, દ્રવ્ય,
ઉદ્વેગ, ક્રોધ, અશુભ ભાવનાઓથી લોકો ઝેરો
બને છે, અને તે ઝેરી લોકોથી અનેક પ્રકારના
રોગો ઉદ્ભવે છે આ વાત સત્ય છે, પણ રોગોનું
મૂળ વિચારોજ છે અને વિચારો સિવાય બીજું
કંઈ નથી એમ કહેવું તે સ્વાધ્યાત્મી દ્રષ્ટિએ અર્થ-
સત્ત છે અથવા નવામાંસ છે. કારણકે હા
ખદાર ખાતાપીવામાં આવે, ઉત્તમગરા કરવામાં
આવે, મગમગતો નિરોધ કરવામાં આવે તો શુભ
ભાવનાવાળાને પણ રોગો પેદા થાય એમ નવાઈ
નથી. મારે અશુભ વિચારો એ રોગોનું કારણ
મોરે બાજે છે; એમ કહેવું એ બ્યાગબી છે, પણ
અશુભ વિચારોજ રોગનું કારણ છે એમ કહેવામાં
ભૂલ થાય છે.

વગરના જેટલા કહ્યું આ કક્ષાને થયા છે,
હાલમાં કલ્પ છે, અને ભવિષ્યમાં થશે, તે બધું
કરણ એ છે કે મનુષ્યો સામાન્ય દ્રષ્ટિમિત્ત
જોઈ શકતા નથી. પોતાની વસ્તુ સ્થાપન કરવામાં
તેઓ એકલા ખપા આનુર હોય છે કે સામે કંઈ
અપેક્ષાએ અધરા કેવલ આગ્રહથી કહે છે, તે

વિચારવાનો શ્રમ લેતા નથી, અને તેથીજ બંને
ખરા હોવા છતાં લડી મરે છે. દાલની એક બાજુ
સોનાથી મઢેલી હોય, અને બીજી બાજુ રૂપાથી
મઢેલી હોય સામસામા ઉભા રહી જોનારા બંને
પોતાનો પક્ષ ખરો છે, એમ દ્રઢતાથી પ્રતિપાદન
કરે તો તેમાં આશ્ચર્ય શું ? પણ જે તટસ્થ
મનુષ્ય બંને બાજુઓ જોઈ શકે છે તે બંનેને
સમજી શકે કે “ભાઈ તમારી બાબત સાચી છે,
પણ બીજી બાજુ પણ એટલીજ સાચી છે, અને
બંને બાજુઓ ભેગી કરી કહેવામાં આવે તો
આપણે સત્યની સમીપ આવીએ છીએ. કાલ એક
બાજુએથી રૂપો છે, અને બીજી બાજુએથી
સોનેરી છે. માટે તેને કેવળ રૂપો કે કેવળ
સોનેરી કહેવામાં ભૂલ થાય છે.

નીતિના સિદ્ધાંતોના સંબંધમાં પણ સ્વાધ્યા-
ત્મી પ્રકાર નામે છે. એક સમય એવો હતો કે
જ્યારે લડાઈમાં પકડાયેલા કેદીઓને એક મોટા
જરાન વારને રાખી મૂકવામાં આવતા હતા. તે
દિવસે તેમને મારીને તેમનું માસ રૂઢી થીજ-
વાની આપવામાં આવતી હતી. હવે એક દયાળુ
પુરો સ્વચ્છં કે આવી રીતે આવા કેદીઓને
મારી નાખવા કરતા તેમને જો શુધ્ધાત્મ બના-
વવામાં આવે, તો આખી જીંદગી સુધી તેઓ
આપણને કામ લાગે. કોઈ પણ પ્રકારનું મહેન-
તાઈ આપ્યા સિવાય આપણે તેમની પરોક્ષ
નોકરી લઈ રહીએ. હવે આ ગુણમગીરીએ
આપણી હાલની સ્વતંત્રતાની બાબત પ્રમાણે
હલકું પગથિયું છે, પણ ઉપર જણાવેલો સ્થિતિ
કે જ્યાં કેદીઓને મારી નાખવામાં આવતા હતા,
તે સ્થિતિની અપેક્ષાએ આગળનું પગથિયું ગણી
ચકાવ માટે સ્વાધ્યાત્મ ગુણમગીરીને તદ્દન હલકું
પગથિયું કહેતા અટકો કારણકે કંઈ અપેક્ષાએ
એ પ્રસ પૂરવામાં આવે છે તેમના પ્રત્યક્ષ
મો આધાર છે.

સ્વાધ્યાત્મી સામા મનુષ્યને રોગોનું દર્શનિન્દુ
દેખાવું કહેતા નથી. તે દર્શનિન્દુમાં રહેલું
સત્ય પોતે સમજે છે, અને સમય સત્યમાં તે

સ્વાદ્વાદની સિદ્ધિ ।

(લેખક-મણીલાલ નમ્પુભાઈ દોશી, ખી. એ. અમદાવાદ)

કુમારપાલને જૈન ધર્મનો પ્રતિબોધ આપી મધ્યકાળમાં જૈન ધર્મનો શુભરાતમાં પ્રચાર કરવામાં અંગ્રેગણ ગણાતા સાડા ત્રણ કરોડ શ્લોકના લેખક શ્રી હેમચંદ્રાચાર્યે પોતાના પ્રસિદ્ધ હૈમ વ્યાકરણમાં લખ્યું છે કે સિદ્ધિઃ સ્વાદ્વાદતઃ । અર્થાત્ સ્વાદ્વાદથી સર્વ આખતની સિદ્ધિ થઈ શકે છે. સ્વાદ્વાદ અથવા અનેકાંતવાદમાં સર્વ વસ્તુઓની સિદ્ધિ કરવાનું સામર્થ્ય રહેલું છે. પણ અત્યારે એવો સમય આવ્યો છે કે જ્યાં સ્વાદ્વાદની સિદ્ધિ કરવાની જરૂર પડે છે. સ્વાદ્વાદના ઘણા ખોટા અર્થ કરવામાં આવે છે. આપણે કહીએ છીએ કે પાંચમીએ આ સ્વાદ્વાદના અપૂર્વ સિદ્ધાંતને સમજતા નથી. માટે તેનો ખોટો અર્થ કરે છે, પણ જૈનો પોતે પણ ઘણે થોડે અંશે તેનો અર્થ સમજતા માન્ય પડે છે; અને કદાચ કોઇ સમજતા હશે પણ જ્યાં તેને વ્યવહારમાં મૂકવાની-જીવનમાં ઉતારવાની વાત આવે છે, ત્યાં તો માટે બાળે શયંતા નજરે પડે છે.

સ્વાદ્વાદને કેટલાંક દોકો અનિશ્ચિતવાદ, અથવા તો ગાંડા મનુષ્યનો પ્રલાપ કહી નિંદે છે. તેઓ કહે છે કે આ એ ખડું અને પેલું એ ખડું, આનું કહેનારું સ્વાદ્વાદીઓ કોઈ પણ નિશ્ચય ઉપર આવી શક્તા નથી. તેઓ જ્યાં જમાઈ નવય ત્યાં છૂટવાની બારી તરીકે આ સ્વાદ્વાદમતની પ્રશંસા કરે છે. આ આલેખ ન્તદનઃ અગ્નિઃ મૂળક છે.

સ્વાદ્વાદ એ અપેક્ષાનાદ છે, એ અનેકાંત વાદ છે. તે અમુક અપેક્ષાએ અમુક વસ્તુને પ્રતિપાદન કરે છે, અને બીજી અપેક્ષાએ બીજી વસ્તુ પ્રતિપાદન કરે છે. આમાં કોઈ પણ સમય પ.મ.જા જેવું છે નહિ. જગતનો બધો વ્યવહાર આ રીતે ચાલે છે. એકની એક

વસ્તુ સ્થળ બેઠે જુદી જણાય છે. વલી તેજ વસ્તુ કાળ બેઠે જુદી લાગે છે. માટે કઇ અપેક્ષાએ કહેવામાં આવ્યું છે, તે ધ્યાનમાં રાખી આપણે અમુક આખત સત્ય કે અસત્ય કહી શકીએ.

આપણે કેટલાક દૃષ્ટાંતો આપી આ નિમિષને સિદ્ધ કરીશું. દાખલા તરીકે 'રેત' લઈએ. 'રેત' બારે કે હલકી. રેત 'બારે' કે 'હલકી' કહી શકાય નહીં કઇ અપેક્ષાએ કઇ વસ્તુને આશ્રયી તમે રેતને 'બારે' કે 'હલકી' પૂછો છો ? જો તમારા એક હાથમાં સીસું રાખો અને બીજા હાથમાં રેત રાખો અને પૂછો કે રેત બારે કે હલકી તો તરતજ સ્વાદ્વાદી જવાબ આવશે કે રેત હલકી છે. વળી એક હાથમાં ઘડનો લોટ રાખો, અને બીજા હાથમાં રેત રાખો અને ઉપર પ્રમાણે પ્રશ્ન પૂછો તો તરતજ જવાબ મળશે કે રેત બારે. માટે રેતનું બારેપણ અથવા હલકાપણ બીજી વસ્તુને આશ્રયી રહેલું છે. જેનો એવા-અર્થ નથી કે રેતને એક અવાજમાં બારે તેમજ હલકી કહે.

આપણે એક બીજો દૃષ્ટાંત લેઈએ. કાળિદાસ મોતીલાલનો બાપ થાય, પણ તેજ કાળિદાસ ભોગીલાલનો પુત્ર થાય. માટે કાળિદાસ બાપ કે દીકરો એ પ્રશ્નનો જવાબ કોઇ આપી શકે નહિ. દોની અપેક્ષાએ તે પ્રશ્ન પૂછવામાં આવ્યો છે, તેનાપર તેના પ્રત્યુત્તરનો આધાર છે.

કાલીદાસ મોતીલાલની અપેક્ષાએ પિતા છે, તેજ કાલીદાસ ભોગીલાલની અપેક્ષાએ પુત્ર છે, વળી તેનો તે કાલીદાસ ત્રીજાનો મામો થાય, ચોથાનો બાજુજ થાય, પાંચમાંના કાકો થાય, છઠ્ઠાનો ભત્રીજો થાય એ રીતે એક મનુષ્ય ઘણા સંબંધો રચી શકે છે માટે સંબંધ વિચારી વાત કહેવામાં આવે તે સત્ય, અને સંબંધ કે અપેક્ષા વિના જે કહેવામાં આવે તે અસત્ય.

બીજાને એક દાખલો લઈએ. એક ગાય મોળી છે તેના ઘરોર પર કેટલાક લાલ છાંટા છે. હવે સામાન્ય રીતે આપણે તેને ધોળી ગાય/કહીએ છીએ પણ આ ગાય 'મોળીજ' છે, એમ કહેવું એ સ્વાદ્વાદની દૃષ્ટિએ નવામાં છે. એ કે



‘ ધોખીજ ’ છે એમ કહેવામાં તેનાં બીજા શુ-
ભોના આપણે અપલાપ કરીએ છીએ. જ્યાં મુખ્ય
શુભ કહેવામાં આવે, પણ બીજા શુભોને અનાદર
કરવામાં ન આવે ત્યાં આપણે સત્યની સમીપ-
આરીએ છીએ.

સત્ય એટલું વિશાળ છે કે તેને સર્વ અપે-
ક્ષાએ સર્વ બાબુએથી, સર્વ નિરાએથી કોઈ
નેઈ શકે નહિ. કેટલેક અંશે આપણે તે નેઈ
શકીએ. જેટલે અંશે આપણે જોઈ શકીએ, તેટલે
અંશે આપણે તે જાણીએ તો નેમા આપણે
સત્ય કહીએ છીએ, પણ તે ‘ આમજ છે ’ અ-
થવા ‘ આમ નથીજ ’ એમ કહેવામાં બૂલ
કરીએ છીએ. દોરણુકે બધી અપેક્ષાઓ દરેક
મનુષ્ય સમજી ન પણ શકે.

હાલ અમેરિકામાં એવી એક માન્યતા ચલી
રહેલી છે કે બધા સારીરિક રોગોનું મૂળ કાચુ
મનના વિચારો છે. મનુષ્યના વિચારો રોગોરૂપે
બહાર પડે છે. મનુષ્યની ચિંતાઓ, ઇર્ષ્યા, દ્વેષ,
ઉદ્વેગ, ક્રોધ, અશુભ ભાવનાઓથી લોહી ઝેરો
બને છે, અને તે ઝેરી લોહીથી અતેક પ્રકારના
રોગો ઉદ્ભવે છે આ વાત સત્ય છે, પણ રોગોનું
મૂળ વિચારોજ છે અને વિચારો સિવાય બીજું
કંઈ નથી એમ કહેવું તે સ્વાદ્વાદની દ્રષ્ટિએ અર્થ-
સંસાર છે અથવા નવાભામ છે. કાચુકે હદ
બહાર ખાવાપીવામાં આવે, ઉભંગરા કરવામાં
આવે, મગમગનો નિરોધ કરવામાં આવે તો શુભ
ભાવનાવાળાને પણ રોગો પેદા થાય એમ નવાજ
નથી માટે અશુભ વિચારો એ રોગોનું કારણ
મોટે ભાગે છે; એમ કહેવું એ વ્યાજબી છે, પણ
અશુભ વિચારોજ રોગનું કારણ છે એમ કહેવામાં
બૂલ થાય છે.

વગતમાં જેટલા કચ્છા કકામો થયા છે,
હાલમાં થાય છે, અને બાલિષ્ઠમાં થશે, તે બધું
કારણ એ છે કે મનુષ્યો સામાનું દ્રષ્ટિબિન્દુ
નેઈ ચકતા નથી. પોતાની વસ્તુ સ્થાપન કરવામાં
તેઓ એટલા બધા આગર હોય છે કે સાગો કંઈ
અપેક્ષાએ અથવા કેવા આશયથી કરે છે, તે

વિચારવાનો શ્રમ લેતા નથી, અને તેથીજ બંને
ખરા હોવા છતાં લડી મરે છે. દાલની એક બાબુ
સોતાથી મટેલી હોય, અને બીજી બાબુ રૂપાથી
મટેલી હોય સામસામા ઉભા રહી બેનારા બંને
પોતાનો પક્ષ ખરો છે, એમ દ્રઢતાથી પ્રતિપાદન
કરે તો તેમાં આશ્ચર્ય શું ? પણ જે તટસ્થ
મનુષ્ય બંને બાબુઓ નેઈ શકે છે તે બંનેને
સમજાવી શકે કે “ભાઈ તમારી બાબત સાચી છે,
પણ બીજી બાબુ પણ એટલીજ સાચી છે, અને
બંને બાબુઓ ભેગી કરી કહેવામાં આવે તો
આપણે સત્યની સમીપ આવીએ છીએ દાવ એક
બાબુએથી રૂપેરો છે, અને બીજી બાબુએથી
સોતેરી છે. માટે તેને કેવળ રૂપેરી કે કેવળ
સોતેરી કહેવામાં બૂલ થાય છે.

નીતિના સિદ્ધાંતોના સંબંધમાં પણ સ્વાદ્વાદ
દોષો પ્રકાશ નામે છે. એક સમય એવો હતો કે
વ્યારે લડાઈમાં પકડાયેલા કેદીઓને એક મોટા
જશન વારતે રાખી મૃત્વામાં આવતા હતા. તે
દિવસે તેમને મારીને તેમનું માસ સુધી ગીજ-
બાની આપવામાં આવતી હતી. હવે એક દવાજી
પુરૂષે સ્વચ્છ કે આરી રીતે આવા કેદીઓને
મારી નાખવા કરતા તેમને જે શુભામ બના-
વવામાં આવે, તો આખી જીંદગી સુધી તેઓ
આપણને દામ લાગે. કોઈ પણ પ્રકારનું મહેન-
તાણું આપ્યા શિવાય આપણે તેમની પાસેથી
નોકરી લઈ શકીએ. હવે આ શુભામગીરીએ
આપણી હાલની સ્વતંત્રતાની ભાનના પ્રમાણે
હલકું પગથિયું છે, પણ ઉપર જણાવેલી સ્થિતિ
કે વ્યા કેદીઓને મારી નાખવામાં આવતા હતા,
તે સ્થિતિની અપેક્ષાએ આગળનું પગથિયું ગણી
રાકાય માટે સ્વાદ્વાદ શુભામગીરીને તદ્દન હવકું
પગથિયું કહેતાં અટકશે કારણકે કંઈ અપેક્ષાએ
એ પ્રથમ પૂછવામાં આવ્યો છે તેવર તેના પ્રત્યુત-
ત્તરો આધાર છે.

સ્વાદ્વાદી સામા મનુષ્યને પોતાનું દૃઢિબિન્દુ
છેડવાનું કહેવો નથી. તે દૃષ્ટિબિન્દુમાં રહેલું
સત્ય પોતે સમજે છે, અને સમય સત્યમાં તે



દૃષ્ટિગિન્દુનું ક્યું સ્થાન છે, તે પણ તે સમજે છે, અને તેથી સામા મનુષ્યને બીજાં દૃષ્ટિગિન્દુઓ સમજાવી તેના સત્યને સંપૂર્ણ બનાવવાનું શીખવે છે. આથી સામા મનુષ્યના સ્વાભિમાનને હાનિ પહોંચતી નથી, અને તે ત્વરાથી બીજાં દૃષ્ટિગિન્દુ અથવા બીજાં દૃષ્ટિગિન્દુ સ્વીકારે છે.

મહાવીર સ્વામીએ અગીઆર ગણધરો પ્રતિ આવીજ રીત અંગકાર કરી હતી. તેમણે તેમના મનનો તિરસ્કાર કર્યો ન હતો. તેમણે દરેક ગણધરને કહ્યું કે “ ભાઈ ! તારા દૃષ્ટિગિન્દુથી આ વાત આમ લાગે છે, પણ તેની સાથે જો આ નવું દ્રષ્ટિ ગિન્દુ ઉમેરવામાં આવે તો તને પડતી થકા ફર થઇ જશે, અને તું સંપૂર્ણ સત્ય સમજી શકીશ ” આ રીતે ખરા સ્વાદ્વાદીનું અનુપમ દૃષ્ટાંત તેમણે પોતાના જીવનથી પૂરું પાડ્યું છે.

એમ કહેવામાં આવે છે કે મહાવીર પ્રજાની પરિપક્વતા પહેલાં જુદા જુદા મતના અનુયાયીઓ હતા. તેમણે તેમને કદાપિ આનાદર કર્યો નથી. તે બધા એકાંતવાદી હતા. જેટલે અંશે તેઓ પોતાના પક્ષ સમર્થન કરતા હતા, તેટલે અંશે તેઓ સત્યથી વિમુખ થતા હતા. મહાવીર પ્રજા તેમના પક્ષનું સમર્થન કરતા હતા, પણ સાથે બીજા પક્ષો પણ ખરા છે, એમ કહેતા હતા, અને બધાં પક્ષોનો સમન્વય કરી સંપૂર્ણ સત્ય પોતાવતાં હતા.

સ્વાદ્વાદી નિરંતર ઉદાર દીક્ષીનો હોય છે— હોવો જોઈએ. કારણ કે તે સત્યને અનેક બાજુએ જોઈ શકે છે.

આત્મારે જેનો મોટે ભાગે સંકુચિત વિચારના થઇ ગયા છે, તેમનામાંથી ઉદારતા આવી ગઇ છે, કારણકે સ્વાદ્વાદ દૃષ્ટિ પણ આવી ગઇ છે. તેઓ પોતે પણ અનેકાંતવાદી મઠી મોટે ભાગે એકાંતવાદી બન્યા છે. એટલે અમુક બાબતોજ સત્ય, અને તે સિવાયની બીજી બધી અસત્ય, એમ તેઓ એકદમ જણાવે છે. આથી તેઓ સત્યને તેના નવા

અને વિશાળ સ્વરૂપમાં ગ્રહણ કરી શકે, એવી સ્થિતિ રહી નથી. જે સ્વાદ્વાદ દૃષ્ટિથી તેઓ અન્ય પથવાળાઓને સત્યની વિવિધ અપેક્ષાઓ સમજાવી સત્ય માર્ગ તરફ વાગતા હતા, તેજ દૃષ્ટિનો આજે વિલોપ થવાથી તે સ્વાદ્વાદ મતના ઉપાસકો પોતાની સંકુચિત અને અનુદાર દૃષ્ટિથી પોતાનાજ સ્વધર્મો બધુંઓને જૈન ધર્મથી વિમુખ બનાવવાનાં અનેક કારણો ઉભાં કરે છે, એ અતિશય શોચની વાત છે.

ખરા સ્વાદ્વાદી જેટલે જેટલે અંશે અન્ય પંથ, અન્ય ધર્મ, કે અન્ય સંપ્રદાયમાં સત્યના અંશો મળે તેને ગ્રહણ કરી પોતાના સત્યને પ્રમણ બનાવે છે, અને તે તે અંશો માટે તે ધર્મની સ્તુતિ કે પ્રશંસા કરતાં જરાપણ આચકો ખાતો નથી. આથી સત્યને ટેકો મળે છે, અને ધર્મોના ગણકાઓનો અત આવે છે. આ સંબંધમાં ગિરનારપર આવેલા અશોકના ૧૨ માં શિલાલેખમાં જણાવેલું છે કે—

“ નજાં કારણોસર બીજા ધર્મની નિંદા કરીને પોતાના ધર્મનું મહત્વ કાઢીને વધારતું નહિ; કારણકે એક અથવા બીજા કારણસર દરેક ધર્મ માનને પાત્ર છે. આ પ્રમાણે વર્તવાથી મનુષ્ય પોતાનું મહત્વ વધારી શકે છે, તેમજ બીજા પંથ ઉપર ઉપકાર કરે છે. આથી વિરુદ્ધ વર્તવાથી મનુષ્ય પોતાના પંથને નુકસાન કરે છે; અને બીજા પંથને અપકાર કરે છે. હું મારા ધર્મની કીર્તિ વધારું છું, એવું સમજીને, પોતાના ધર્મ ઉપરના અતિશય રાગને લીધે બીજા ધર્મની નિંદા કરીને પોતાના ધર્મને માન આપે છે, તે પોતાના આવા વર્તનથી પોતાનાજ ધર્મને બારે હાનિ પહોંચાડે છે. ”

જે મનુષ્ય તત્વજ્ઞાનની એક વિચાર શ્રેણીને વળગી રહીને જણાવે છે કે આ ઉત્તમોત્તમ છે, અને તેને સૌથી શ્રેષ્ઠ ગણી તેનાથી ભિન્ન એવી દરેક વિચાર પદ્ધતિને હલકી ગણે છે, તે મનુષ્યે હજી વાંદ વિવાદની ઘટિ ઉપર જઈ મેળવ્યો નથી.



देश धान, पान, द्रव्य वगैरे लेदही हउं
 १२तुनी स्थिति नदताय छे ताना मागो लभोगीओ
 ३० भे छे, तेभा तेभने आनंद पडे छे ते तेभने
 भन सत् चरुओ छे आपणे तनी पेदीपार
 गया छीओ आपणुने तेभा गस परतो नथी-
 आपणे भन ते लभोगीओ अमत् छे आपणे
 हाल इपीआभा आनंद पाणीओ छीओ, ते भन्ने
 सुभी वधुओ छीओ, ते गय दु भी मनीओ छीओ
 तेही इपीआ आपणे भन सत् १२तु छे, पथु
 न्ने उपीआनी नति भान गूडा नथी तेभा
 योगीने भन आ इपीआ असत् छे, यणीओ
 साइ लडी भगता आणाने ज्येध आपणे जेम
 निगारीओ के आ आगडे केम लडता दशे ?
 योगी पथु इपीआने साइ आपणुने लडता
 ज्येध, ज्येधो विचार इरे ओ रसागाई छे
 तीर्थ इरे अने अ पत् राउपर गथुता भूयो
 अने आगोओ जेम लथुवे छे के पर सत्य
 ज्येध ज्येध, ज्येध विचार, अने ज्येध नथी
 ज्येधसाया छे के तीर्थ इरे पथु ते वाणीभा
 पुरी रीने दशावी शके नहि, तो पओ तेने सभ-
 न्ने लभनाराओ अन्धोभा ते पूरु रीने शी
 रीने भूकी शके ? धजा अन्धो निन्दे गया छे
 भाटे हाय जे अन्धो भगी आने छे, ते अन्धोभा
 भगी आनता गान शिराय पीणु सत्य होध
 शके नहि, जेम कोथु कडी शके ? शु सत्यता
 तेओओ धनगे राधो छे ? जे जेम हाय तो
 आ गगतभा निगानगारभा प्रयोगोथी जे ननी
 नरी शोधि थाय छे ते विरे शु कडेगा ? भाटे
 योगी अन्निभान तट्टो, हदयता हार धुना
 राओ सत्यता उपासक अनो अने हदयभा रयाहा
 टनि गणी सत्यनी गूनी गूनी अनेगाओ सभने
 पथु ते ग्याहाउरतिना अनार इरी ज्येधतवादी
 जनवादी जन कदापि कशो नहि भत्य आठनुन,
 अने आगवाथी वधारे होध नहि, जेवु कोरु कडी
 शके नहि भाटे भाइ ज्येधुन साइ जेम भानवाने
 जन्मे साइ-सभ जे १ भाउ जेम भानवादी
 भुद्धि राओ तो तमे सत्यनी सगीयभा आगो,
 अने जैन धर्मभा दरेका सत्यने तमे वधारे
 दीपानी शकेरी।

जैन धर्मकी प्राचीनता और उसकी उत्पत्ति ।

(लेखक-बाबू सुपार्थदास गुप्त बी ए आरा।)

जैन धर्मकी उत्पत्ति कालके सन्धमें विद्वानोंके अनेक मत हैं। कुछ लोगोका ख्याल है कि यह धर्म ईसाकी छठी सदीमें आविर्भूत हुआ। इस सिद्धांतके प्रचारकोंमें मुख्यतया लेखत्रिज और एल्फिन्स्टन महाशय हैं। यद्यपि आप लोगोके विचार अब विद्वान् मंडलीमें नहीं माने जाते तो भी अब भी ऐसी पुस्तकोंका अभाव नहीं है जिनमें उन्हींके सिद्धांत प्रतिपादित किये गये हैं। वास्तवमें उनका जैन साहित्य सबधी ज्ञान बहुत ही कम था और जिस समय वे हुए उस समय जैन साहित्य कम प्रकाशित हुआ था।

उसके बाद कुछ यूरोपियन विद्वान ऐसे हुए जिन्होंने जैन धर्मकी प्राचीनता ईसासे पूर्वकी मानी, पर बौद्ध धर्मको इसका उद्भव स्थान समझनेकी भूल की। दोनों धर्मोंकी कई अगोकी समानताने उनके ज्ञान चक्षुओं पर अज्ञानका पर्दा डाल दिया और वे इस मोह जालमें फसे रहे कि बौद्ध धर्मसे जैन धर्म निकला है। इस मतके प्रचारक विलसन, लैसन तथा वेबर जैसे विद्वान थे।

कुछ वर्षों तक इनके इस मतका ऐतिहासिक सारांशमें इनका आदर हुआ, कि उनके सामने जैनियोंकी कुछ भी टाल न गल सकी। पर जैसे जैसे जैन साहित्यका प्रकाश फैलने लगा और उसके आलोकमें वस्तुओंका वास्तविक



स्वरूप प्रकट होने लगा, लोग समझने लगे कि दूसरा मत भी भूलसे भरा हुआ है। वास्तवमें दोनों धर्मों के मत एक दूसरेसे विभिन्न हैं; इतना ही नहीं बल्कि जैन धर्म बौद्ध धर्मसे प्राचीन है। इस मतका प्रतिपादन पहले परल डाक्टर हरमन जैकोबीने अपने कल्पसूत्र की टीका में ऐसे अकाट्य प्रमाणों द्वारा किया, कि आपका सिक्का साहित्य जगत् में देखते देखते ऐसा जमा, कि सभी प्राच्य विद्वान अपने-अपने मुरीद होगये। आपका कहना है, कि जैन और बौद्ध धर्म, दोनों हिंसके परम विरोधी हैं। अतएव इनका जन्म उन लोगों के द्वारा हुआ, जो वैदिक हिंसा को घृणा की दृष्टिसे देखते थे। दूसरे शब्दोंमें यह कि ये दोनों धर्म वैदिक धर्मसे निकले हैं। पर जैकोबी महाशयका यह मत भी ठीक नहीं समझा जाता और न यही ठीक समझा जाता है कि महावीर जैन धर्म के संस्थापक थे। अब इस बातका पता तो पूर्ण रूपसे ऐतिहासिक सामग्रियोंसे लगता है, कि पार्श्वनाथ नामके भी कोई धर्म प्रचारक थे और उनका धर्म भी ठीक महावीर के धर्म की तरह था। प्रो० जैकोबी के मतका खंडन कई प्रकारोंसे हो जाता है। संसारमें अभी किसी भी ऐसी पुस्तकका पता नहीं लगा है जो ऋग्वेदसे पुराने हो। इसलिये यदि ऋग्वेदमें ही जैनियों का जिक्र हो अथवा उनके सिद्धांतों की ओर इशारा हो तो मानना होगा, कि उस वेदसे भी पुराना जैन धर्म है। एक स्थलमें यमनाम कहता है कि हमलोग नम्र देवताओं की उपासना करते हैं, जो स्वयं पवित्र हैं और दूसरों को भी पवित्र

करते हैं। यजुर्वेदमें ऋषभदेव, अजितनाथ और अरिष्टनेमि इन तीन तीर्थंकरों के नाम आये हैं। ऋग्वेदमें लिखा है कि मगधदेशमें एक ऐसा संप्रदाय था जो यज्ञ को घृणा की दृष्टिसे देखता था। भागवतमें साफ ही लिखा है कि ऋषभदेव जैन धर्म के प्रचारक थे। बाराह और अग्नि पुराणोंमें भी श्री ऋषभदेव का नाम है जिससे उनकी ऐतिहासिकता मालूम होती है। उनकी माताका नाम मरुदेवी और पुत्रका भरत दिया है। इन्हीं भरत के नामसे इस देशका नाम भारतवर्ष पड़ा। भागवत पुराण के अनुसार ऋषभदेव विष्णु के नवें अवतार समझे जाते हैं और उनका अवतार वामन, राम, कृष्ण और बुद्धदेव के अवतारों के पहले हुआ था। वामन अवतार पंद्रहवां अवतार है और इसका जिक्र ऋग्वेदमें आया है। इससे मालूम होता है कि ऋग्वेद के बनने के पहले यह अवतार हुआ था। इसलिये ऋषभदेव का अवतार जो नवां था, ऋग्वेद के बनने के और भी बहुत पहले हुआ होगा।

इससे साफ मालूम होता है कि जैन धर्म वेदों के बनने के पहले भी वर्तमान था। इसलिये यह कहना कि जैन धर्म वैदिक धर्मसे निकला है, जो उसके पीछे हुआ, अंगरेजी क्रांति के अनुसार घोड़े में गाड़ी जोतना है।

अब बड़ा गंभीर प्रश्न यह उपस्थित होता है कि वैदिक धर्म कहाँसे आया और इसका जैन धर्मसे कुछ संबंध है या नहीं।

वैदिक धर्म की उत्पत्तिका पता लगाने के पहले में यह देखना चाहता हूँ कि ऋग्वेदमें



हैं क्या? उनमें कौन कौनसी बातें लिखी हैं। यूरोपियन विद्वानोंने उसकी समालोचना करते हुए लिखा है कि वह ग्रंथ उस समयका मालूम होता है, जिन समय संसारकी सम्प्रदाय बाल्या वस्थामें थी। उनके अनुसार ऋग्वेद उस समय बना, जम, लोग सूर्य, चन्द्रमा, बिजली, वर्षा आदि प्राकृतिक दृश्योंको देखकर आश्चर्य और भयमें पड़ जाते थे और उनकी शान्तिके निमित्त उनकी उपासना करते थे। ऋग्वेदकी उपासना बड़ी ही सख्त और साधारण है। आधुनिक वैदिक धर्मावलम्बियों अथवा जैनोंने पूनादि विधिको जितना जटिल बना दिया है, उतना वैदिक कालीन उपासनामें न थी। इससे पाश्चात्य विद्वान् यह सिद्धान्त निकारते हैं कि वैदिक धर्म सबसे प्राचीन धर्म है, क्योंकि जो धर्म जितना सरल होता है, उतना ही पुराना होता है। पर यह उनकी भूल है। पहली बात तो यह है कि वैदिक कालिन भारतवासी न इतने कम असम्पन्न थे जितना उन लोगोंने समझ रखा है, और न जैन धर्म उतना जटिल था, जितना वह इस समय नगर आता है। वैदिक कालकी हिन्दू सम्प्रदायका वर्णन करते हुए डॉक्टर मिलर लिखते हैं कि वैदिक-कालके आर्य अपने जीवन निर्वाहके लिए भिक्षा घूमा फिरा ही नहीं करते थे, बल्कि उन्होंने नगर और ग्राम भी बसाए थे जिनके मुखिया हुआ करने थे। वे नाना प्रकारके हथियारों और गंत्रोंका व्यवहार जानते थे और भोगवि-लासकी सामग्रियां काममें लाते थे। वे घागा कातना और कपड़ा बुनना जानते थे, जिससे

उनके शरीरकी रक्षा होती थी। वे लोहेकी लाभलायकतासे अपरिचित न थे और न वे लोहारी, सोनारी, ठेठरी, बढई अथवा अन्य कारीगरोंके व्यवसायसे अनभिज्ञ थे। वे लड़ाईके सभी हथियार, जैसे तलवार, घनुष, तीर, बछे तथा चक्कर आदि बनाते थे और गहरी लड़ाईयां लड़ा करते थे। वे घरके सभी वासन बर्तन बनानेमें प्रकट थे।

वे सोने चांदी आदि धातुओंके गहने भी बनाने जानते थे। क्योंकि वे कर्मोंमें बालियां और गलेमें जवाहिरातोंके नेकलेस भी पहारते थे। वे गाय, बैल, घोड़े आदिको लड़ाईमें काममें लाते थे और छोटे बड़े सभी तरहकी नौकाएं बना कर द्वीपोंकी सर करते थे जिनसे देशके व्यापारकी वृद्धि होती थी। कभी कभी तो वे नौकासेनाएं लेकर विदेशी राज्यों पर अक्रमण भी किया करते थे। वे गान विद्यामें भी दक्ष थे और नाना प्रकारके बाजाओंका प्रयोग करते थे।

वैदिक कालीन आर्योंकी यही सम्प्रदाय थी। मला जिस जातिकी इतनी उच्च कोटिकी सम्प्रदाय हो, उन्हें अग्नि वर्षादिसे भयभीत हुआ मताना और वे उनकी उपासना करते थे ऐसा कहना कहां तक न्यायसंगत हो सकता है? जो जाति अग्निकी स्वयं पैदा कर सकती और अपने दबावमें रख सकती हो, वह भयके कारण उपासना करती थी ऐसा कहना आसोंमें धूल डालना अथवा बिल्कुल नासमझकी तरह बात करना है। वे इन्द्र और अग्निको प्राकृतिक शक्ति नहीं समझते थे बल्कि उनसे उनका तात्पर्य आत्माकी अनेक शक्तियोंसे था।



वैदिक ऋषियोंने अग्नि आदिकी प्रशंसामें जो इतने गीत बनाये, उसका प्रधान कारण यह था कि उससे आत्मामें जागृति पैदा होती थी और उसका महत्व सदा हृदयपट पर अंकित रहता है। इससे यह भी मालूम होता है कि जिस आत्माकी अनेक शक्तियोंको वे अग्नि तथा इन्द्रादिके रूपमें पूजते थे, उसके तत्वको भी वे जरूर जानते थे। वेदमें सूर्य, अग्नि और इन्द्र ये ही तीन देवता प्रधान माने गये हैं। वे आत्माके तीन प्रधान स्वरूपोंके द्योतक हैं। आत्माकी केवल ज्ञानावस्थाका स्वरूप सूर्य है—उसकी भोगावस्थाका स्वरूप इन्द्र है और उसकी निजरा यानी तप द्वारा कर्मके बंधनोंसे छुटकारा पानेकी अवस्थाका नाम अग्नि है।

जिन ऋषियोंने आत्माके भिन्न स्वरूपोंको इस तरह पहचाना, उन्हें जरूर आत्मा संबंध गूढ़ ज्ञान था और जहांसे उन्हें यह गूढ़ ज्ञान प्राप्त हुआ उन लोगोंका आत्मज्ञान गूढ़ ही नहीं बल्कि वैज्ञानिक रहा होगा। अब प्रश्न उपस्थित होता है कि यह वैज्ञानिक ज्ञान किस धर्ममें उस समय पाया जा सकता था। वेदमें तो था ही नहीं क्योंकि वेदके सिवा गीतोंके और कुछ महत्वपूर्ण वस्तु देखनेमें नहीं आती। तब यही कहना पड़ता है कि यह ज्ञान जैन धर्मसे ही उन्हें प्राप्त हुआ जि का निजक ऋग-देवमें भी पाया जाता है। हिन्दू धर्मके अंदर तो किसी समयमें सर्वांग पूर्ण आत्मिक ज्ञानका प्रतिपादन नहीं किया गया। सांख्य योज, यथा वैशेषिक आदि छ दर्शन परस्पर लड़ते कटते हैं। वह हिंदू धर्म है जिसमें प्रत्येक कालमें

कुछ न कुछ नई बात जोड़ी गयी जिसमें उसका स्वरूप-हर तरहसे संपूर्ण नजर आवे।

प्रत्येक दर्शन वेदको प्रमाण मानता है और उसे अपने मतका आधार समझता है। फिर भी प्रत्येकके सिद्धान्त वाकी दर्शनोंके सिद्धान्तोंसे भिन्न हैं। जिस धर्ममें बराबर नई बातें जोड़ी गयीं और जोड़ी जाती हैं और ऐसी बातें जो परस्पर विरोधी हैं, वह ईश्वरीय धर्म कहा नहीं जा सकता। ईश्वरके मुखसे निकला हुआ धर्म कभी अपूर्ण नहीं हो सकता और न ऐसा ही होसकता है कि उसके अनेक अर्थ लग सकें। ईश्वरको क्या गर्भ है कि वह अपना ज्ञान ऐसे शब्दोंमें प्रकट करे, जिसके अनेक अर्थ हो सकें और जिनसे लोग संशयमें पड़े। इस लिये वेदको ईश्वर प्रणीत मानना बिल्कुल गलत है। सभी जानते हैं कि ईश्वर जड़ वस्तु नहीं है। वह एक शक्ति है। पर शब्द जड़ वस्तु है। मनमें जब कोई बात प्रकट करनेकी इच्छा उत्पन्न होती है, तब उसका सम्बन्ध आत्माके भीतरी दो शरीरोंसे होता है और उससे सूक्ष्म गति पैदा होती है, जो वायु वायुके द्वारा श्रोताओंके कान तक पहुंचती है। यदि कोई मनुष्य अपनेको एक ऐसे स्थानमें बन्द करे, जिसमें मूढमसे भी सूक्ष्म जड़ वस्तु प्रवेश नहीं कर सकती तो वह बाहरी आवाज-को नहीं सुन सकता। इससे मान्य होता है कि शब्द (Soul) जड़ वस्तु है और जड़ वस्तु शुद्ध परमात्मासे जिसका सम्बन्ध नइसे छेद मात्रका भी नहीं है, पैदा नहीं हो सकती इस लिये वेदके वाक्य किसी परमात्माके बचन



नहीं हो सकते । इससे यही सिद्धान्त निकलता है कि वेद ईश्वर प्रणीत नहीं हैं । वे ऋषि महर्षियोंके ज्ञानका फल हैं । उनकी धर्म और आत्मा संवन्धी बातें जैन धर्मसे ली गयी थीं । उस समयके लोग असम्यक् न थे । वेदोंमें यज्ञ-दिमें पशु और नर वधकी जो बातें हैं वे पीछे किसी कारणवश जोड़ दी गयी हैं । क्योंकि उसीमें एक स्थानमें यह लिखा है कि " मांस भक्षक सन्तान ही न हों " वेदोंमें राक्षसोंकी बड़ी निन्दा है । इसका ही नहीं बल्कि पीछे हिन्दु-ओंने वैदिक हिंसा घोटक वाक्योंका दूसरी प्रकारका अर्थ लगानेकी जो चेष्टा की या यह कहा कि वैदिक हिंसा हिंसा न भवति, उससे स्पष्ट मालूम होता है कि हिंसा उनके धर्मका अङ्ग नहीं है और वेदमें समयके बुरे प्रभावसे या वैदिक शत्रुओंके कारण परिक्षिप्त हुआ है ।

प्रोत्साहन ।

दशाको निहारो हुई क्या हमारी,
नहीं तेज हैगा नसोंमें हमारी ।
विद्या औ कलसे हुए हाथ रीते,
जगो जैन भाई गया काल बीते ॥
जगो नींदको शीघ्र हीसे मगावो,
पड़े भाइयोंको उठो तो जगावो ।
करो जाति सेवा डरो नाहि ध्यारे,
हृदयको झुरीतें हिये प्रीति धारे ॥
तमो स्वार्थको औ चलो मेम मेवा,
विद्याको ब्रह्मको यही मुख देवा ।
उठावो गिरी जातिको शीघ्र यारो,
हटो नाहि पीछे उठाको सुझावो ॥
करो जैन जातीयका पार खेवा,
हिये धारी प्रीनी करो जाति सेवा,
करो आपना भी जरा काम यारो,
उठो क्यों पड़े हो हमारे दुलारो ॥

सुलजन्म जैन, दमोद ।

नेता कहाँ ?

(लेखक:- गोपीचंद पाड़ीवाल बकील)

जैन जाति उन जातियोंमेंसे है जिनको हम नेता हीन जाति कहें । जो यहां नेतृत्वका दम भरनेको हरगृह छोटा मोटा तैयार होता है पर उसका नेतृत्व स्वीकार नहीं किया जाता है । इसका कारण नेतृत्वके गुणोंका अभाव है । अनुभव, स्वार्थत्याग, विशाल हृदय, परोपकार बुद्धि, सहनशीलता, निष्कपटता, उत्साह और संगठनशक्ति (Cooperative Spirit) का अभाव हमारे नेतृत्वका दम भरनेवालोंका प्रभाव जन साधारण पर नहीं गिरने देता और इन गुणोंके अभावसे जातिमें स्वार्थ, संकीर्णता और कपट बहुत बढ़ गया है और बढ़ता जाता है । हमारे उच्च महात्माओंके जीवन उनके उपदेश, उनकी पूजा, हमारा उत्तम श्रेणिका साहित्य, वैराग्य पूर्ण स्तवन, कथाएं इत्यादि मनोहर मंदिर, तीर्थ इत्यादि प्रभावहीन होते जाते हैं ।

संकीर्णताका पर्दा हमको हमारे साहित्यकी सुन्दरता, सिद्धान्तकी अटलता, वैराग्यकी उच्चता, और हमारे पूज्य महात्माओंके जीवन और उपदेशके रहस्यसे अपरिचित ही रहता है । अगर कोई मंदिरोंमें नित्य पूजा पाठ करनेवाला, आधुनिक तथा सोसाइटियोंमें उच्च पद पर बैठनेवाला, कुंवारी कन्या पर एक पवित्र स्थानमें ही बलात्कार करता न हिचकिचावे, तो क्या हम कह सकते हैं कि शास्त्रोंका या मंदिरोंका उसके चरित्र पर कुछ असर पड़ा ?



चालीस वर्षकी आयुमें एक स्त्री होते हुये एक १२-१३ वर्षकी कन्यासे विवाह करलेना क्या यह सावित नहीं करता कि वह व्यक्ति धर्मिक प्रभावसे बाहिर है । हमारे सैंकड़ो धर्म-कार्यमें पैसा खर्चनेमें आगे रहनेवाले अगर घरमें उपपत्नियां रख छोड़ें तो क्या हम कह सकते हैं कि उन पर धर्मका कुछ असर पड़ा । अपनी ख्यातिके लिये या उदर पूर्तिके अनुचित साधनके लिये यदि कोई लोग श्वेतांबर और दिगम्बरोंमें झगडा पैदा करते रहें तथा उसे नित्य सींचते रहें जिससे द्वेषाग्नि भभकती रहे क्या हम कह सकते हैं कि उन व्यक्तियोंमें तीर्थ, भक्ति है ? सिवाय कहीं कहीं रातको अन्न न खानेके हमारी जातिमें कौनसी ऐसी बात है जिससे हम यह कह सकें कि हम पर हमारे आचार्योंका या शास्त्रोंका प्रभाव पड़ा । इसका कारण क्या ? यह मंदिर व तीर्थ वे ही हैं जिनके सहारेसे अनंत जीव मोक्ष गये और यह सिद्धांत भी वही है जो अनंत जीवोंको निर्वाण पद प्राप्त करानेमें फलीभूत हुए है । हमारी सम्प्रतिमें कारण यह है कि जानिमें कोई नेता नहीं । महात्माओंका वचन है कि “धर्म पांगला है” जब तक धर्मको चलानेवाला अर्थात् नेता न हो तब तक वह धर्म कुछ प्रभाव नहीं डल सकता या यों कहिये कि उसका अभाव ही है । महात्मा गांधीकी आज्ञा पर लाखों पढ़े और अनपढ़ अपने प्राण न्योछावर करने तैयार हो जाते हैं । हमारे नेतृत्वका दम भरनेवाले बतलावें उनकी आज्ञा माननेवाले बिन्ने हैं ? कर्बईमें बैठे महात्मा

गांधी आज्ञा दें कि सभाएं करो और कलकत्तेमें एक एक लाख मनुष्योंकी सभाएं एकत्रित हो जावें ।

हमारे नेता गले फाड़ फाड़ कर मरजावें तो भी उस जगहके लोग भी एकत्रित न हों । गांधी गिरफ्तार किये जावें और देश भरमें हड़ताल हो जावे । हमारे नेता जेलमें सड़ा करों पर हमारे जीसे उफ भी न निकले । महात्माको वर्षगांठ पर हजारोंकी शैलियां भेजी जावें, हमारे नेता कालिजों, स्कूलों इत्यादिके लिये वर्षों चिछावें मगर पैसा न मिले । यह क्यों ? हमारे नेताओंमें नेतृत्व नहीं, उनके हृदय कपटसे, पालीसीसे, संकीर्णतासे शुक्त नहीं । जन साधारणके लिये उनके हृदयमें हिंजारत, खुदके चमकनेकी भूख, कष्ट सहनेको तय्यार नहीं, उनका चारित्र निर्दोष नहीं । ऐसे पुरुषोंका प्रभाव जाति पर कब पड़ सकता है ? श्वेतांबर समाजमें धर्मगुरु साधु व जती हैं । जतियोंके चारित्र पत्नके साथ उनका प्रभाव भी उठ गया । साधुओंकी भक्ति उनके गुणोंके अनुसार मौजूद है । जिस अंशमें उनमें त्याग इत्यादि गुण मौजूद हैं उसी अंशमें उनका प्रभाव भी मौजूद है । पर उनमें संसार त्यागकी वजहसे जितने नेतृत्वके गुण होने चाहिये उतने न होनेके कारण उनका प्रभाव भी जितना होना चाहिये उतना नहीं है । हमारे उत्तम साधु भी कभी कभी उस कमजोरीका परिचय दे देते हैं जिसके कारण उनके होते हुये भी हमें कहना पड़ता है कि जैन जातिमें नेता नहीं । दिगम्बर समाजमें भगिण्डर प्रायः पंडित लोग ही हैं । भट्टारकोंका

प्रभाव जतियोंकी तरह उठ हीसा गया । पड़ि तोंका प्रभाव जातिपर नैसा चाहिये तेसा नहीं है । क्योंकि इनमें प्राय सनसे बड़ा अंगुण धनिकोंका सटारा दूढ़ना, उनमेंसे स्वाधीनताका गुण नष्ट करके चापलूसी पैदा कर देना है। धनिक प्राय धनसे मश्राव होते हैं । उच्च शिक्षाका वहा नाम नहीं होता जिससे उनमें उच्च विचार पैदा हो सकें । उनमें नेतृत्व दृढ़ना व्यर्थ है । अक्सर उनमें औरोंसे अवगुणोंहीकी मात्रा अधिक मिलेगी । जातिमें परस्पर झगड़ोंका कारण यदि खोजा जाय तो प्राय यही धनिक मिलेंगे । उन्नतिके बाधक, कुरीतिके प्रचारक, सुधारके मार्गमें कटक प्राय यही श्रीमत् मिलेंगे क्योंकि जन साधारण धनके कारण इनके दोषोंका प्रतिरोध नहीं करते और जो कुछ थोड़ेसे कार्यकर्ता हैं तो वे मानो इन श्रीमत्तों के चिह्न ही गये हैं ।

जो थोड़ी बहुत संस्थाएँ जातिमें हैं उनमें इन्हींका पैसा अधिक होनेके कारण उनका काम आदर्श श्रेणी पर नहीं पहुँचता । कार्यकर्ता जोंको सदा इनकी खुशामद करनी पड़ती है और इनको प्रसन्न रखनेके लिये इन्हींकी मर्जीके मुवाफिक कार्य करना पड़ता है, जनसाधारणकी सम्मतिकी कुछ कदर नहीं होती । इसी कारणसे हमारी सत्स्थाओंसे वास्तविक लाभ नहीं पहुँचता । यदि हमारी संस्थाएँ धनिकों पर निर्भर न रहकर जन साधारणके स्वार्थ त्यागसे दिये हुये और पसीनेसे कमाये हुये धन पर आधार रखने लग जावें तो नि स-
वेद वे बहुत कंभी न होने हुये भी लाभ बहुत

पहुँचा सक्ती है । तात्पर्य यह है कि धनिक लोगोंके नेतृत्वमें हमारी उन्नति नहीं होसक्ती क्योंकि वे नेतृत्व गुण विहीन हैं ।

एक श्रेणी और है जो कि नेतृत्वना दम भरती है वह है । अंग्रेजी पढ़े लिखोंकी श्रेणी जो कि दिगम्बर समाजमें बाबू पार्टीके नामसे नामांकित है । इनमें बैरिस्टर, वकील, डाक्टर, प्रेज्युएटसे लेकर स्कूलके छात्रों तक शामिल हैं । यह लोग भी अपनेकी नेता समझते हैं । इन लोगोंमें विद्या है, वनतृत्व शक्ति है, पर नेताके लिये यह काफी नहीं है । इनमें कुछ दोष ऐसे हैं कि जिनके कारण इनके यह गुण भी छिप जाते हैं । उदाहरणार्थ यह लोग फिजूलखर्चोंपर भाषण देने रक्ड़े होते हैं, विवाहोंपर विरादरीको जिनानेमें, मन्दिरोंके आडम्बरोंमें, स्त्रियोंके जेवरोंमें फिजूल खर्चके विरुद्ध बड़े युक्तिपूर्ण भाषण देते हैं, पर जन साधारण पर इसका बिलकुल असर नहीं पड़ता । कारण क्या ? यह कि इनके भाषण (Sincero) नहीं, हृदयसे नहीं निकलते, वे स्वयं बढिया कोट पतलून और अंग्रेजी जूते पहने फिरते हैं जो कि देशी पोशाकसे बढापि सस्ते नहीं । वे अपनी स्त्रियोंको बिलायती दुकानोंमें घनी हुई सोनेकी चूडिया तथा गहनोंसे, बढिया फैसनेधल तेल इत्यादिसे सुसज्जित करते हैं जोकि भारतीय गहनोंस बढापि सस्ते नहीं पड़े सकते । अपने मित्रों तथा अफसरोंको गाईन पार्टी देते हैं जो कि विरानरीके भोजनसे कम फिजूल या कम खर्चके या अधिक उपयोगी नहीं कहावै ना सक्ने ।



इसी कारण इस पार्टीका प्रभाव जन साधारण पर नहीं पड़ सकता । इस श्रेणीके कई व्यक्ति जन साधारणसे एक विदेशीके भांति अलग ही रहते हैं और उनकी हरएक बातको नीची निगाहसे देखते हैं । इसलिये भी यह नेता नहीं बन सकते ।

इस प्रकारसे नेता होनेका दम भरनेवाले लोगोंकी हम जांच करें तो हमको पता लगेगा कि हमारी जातिमें नेता कोई नहीं है । जो अपने आपको नेता समझता है वह स्वयं धोखा खाता है और दूसरोंको धोखा देता है । यह निस्संदेह खेदकी बात है । उचित है कि वे लोग धोखेसे बचे, अपने आपमें नेतृत्वके गुण उत्पन्न करनेकी कोशिश करें और पूजा सत्कारका ध्यान न दे । विशेष कर युवकोंको चाहिये कि अपना चरित्र दृढ़ करें जिससे वे वास्तविक नेता बन सकें ।

संसार स्वर्ग ।

स्नेह स्वर्ग संसारं, सकल शास्त्र नीधान,

स्नेह स्वर्गं सत्त्व छे, ते वीण व्यर्थ विधान.

गृहस्थी ! गृह-शालां—

शीताये स्नेहनां—सूत्रो,

प्रवाशी ! 'पूष्प-पुंजोमां—

शीखो निःस्वार्थनां—सूत्रो.

प्रवेशी 'स्नेह-शाला'मां—

शीख्या जो 'स्नेहनां—सूत्रो'.

तजी सौ मेद अंतरनां—

लहो, सौ स्नेह—स्नेहिनो.

"स्नेहयोगी"

पति पत्नि संवाद ।

विवाहका उद्देश्य ।

(लेखक:—अमृतलाल जैन, रोहतक)

पति—यह क्या पढ़ रहे हो । गुझे भी तो सुनाओ ।

पति—लो सुनो पढ़ता हूं ।

पति—चिछाकर न पढ़ना उधर दादाजी बैठे हैं ।

पति—क्या मैं ऐसा वेश्रम हूं जो तुम्हारे लिये इतना चिछाकर पढ़ूं कि घरके बड़े बूढ़े सुनलें ।

पति—नहीं, यह तो नहीं । तो भी आनकल कुछ लोग ऐसे ही हैं । रिसहे न होओ । कोई यह सुन पावेगा तो तुम्हारी निन्दा करेगा और वह मुझसे सही न जायगी इसीसे धीरे पढ़नेको कहती थी । अच्छा, पढ़ो ।

पति—पढ़ता हूँ—साहस करके कह सकते हैं कि हमारे देशके सदृश पति—पतिनकी ऐक्यता और मिश्रण कहीं भी देखनेमें नहीं आता । विवाहके समय हिन्दू स्त्री पुरुषकी पथकता दूर होकर दोनो एक हो जाते हैं । विवाह समाप्त होते ही दम्पति एक ही दृष्टिमें आते हैं । यह ऐक्यता ही हिन्दू विवाहका मुख्य उद्देश्य है ।—मेरी और क्यों ताक रही हो क्या कुछ समझमें नहीं आया ?

पति—कुछ भी नहीं समझ पड़ा । यह क्या कह गये ? यह किसकी कहानी है ?



पति-कहानी नहीं, यह एक लेख है ।

पतिन-लेख सही, पर बात क्या है ?

पति-विवाहकी बात है । स्वामी क्या है स्त्री क्या है उनका आपसमें क्या संबंध है यही सब कुछ इसमें बताया है ।

पतिन-भला यह क्या हुआ ? ऐसी बातके लिखनेसे लाभ ! मैं समझी कोई बड़ी अच्छी कहानी है जिसे इतने ध्यानसे पढ़ रहे हो । विवाहकी बात तो सभी जानते हैं ।

पति-अच्छा क्या जानते हैं ?

पतिन-यही कि स्त्री स्वामीकी अर्ध शरीरी है । और तो क्या यह तो आठ वर्षकी लड़की भी बता सकती है ।

पति-(सहर्ष) ठीक कहा परंतु इसका मतलब क्या ?

पतिन-मतलब मतलब तो मैं जानती नहीं । जैसे सब कहते हैं वैसे सुनती हूं, यही कहावत है कि स्त्री पुरुषका अर्द्धांग ही है ।

पति-ठीक है स्त्री-पुरुषका अर्द्धांग ही है इसी लिये अर्द्धांगिनी भी कहते हैं, परंतु यह बताओ कि इसका तात्पर्य क्या है, आधा शरीर तो किसीका भी नहीं होता । अपने दो हाथ दो पैर होते हैं तिसपर अर्द्धांग कहलानेका क्या अर्थ है ?

पतिन-इतना तो मैं समझती नहीं । क्या इस पोथीमें इसकी कुछ बात लिखी है ?

पति-हां लिखी है । और भी अनेक बात लिखी हैं । सुनेगी ?

पतिन-सुनू तो सही, परन्तु समझ न सकूंगी ।

पति-अच्छा, पुस्तक बन्द करके बैसे ही समझाता हूं । बताओ मनुष्य क्यों जन्म लेता है ।

पत्नी-पूर्व जन्ममें किये हुए पापोंके फल भोग करनेके लिये । जब तक ये पाप नहीं निवटेंगे योंही जन्म मरण होता रहेगा ?

पति-फिर तो हमें पापोंके क्षय करनेका उपाय अवश्य करना चाहिये ।

पतिन-हां, वर वार की गर्भयातना कुछ कम कष्ट और दुःखकी बात है ।

पति-कह सकती हो क्या करनेसे पाप क्षय होना संभव है ।

पतिन-यह मैं क्या जानूं ? इसके लिये अनेक दुःख उठाते हैं, कोई सन्यासी सनता है, कोई वनवास लेता है, कोई घर रह कर ज्ञान, ध्यान, जप, दान करता है और क्या ? बताऊं ?

पति-यह सब ही ठीक है परंतु इन सबमें अच्छा कौन है ?

पतिन-धन्य २, आप मुझसे यह बात पूछते हैं। हम तो बड़ी बूढ़ियोंसे ही केवल ऐसी चर्चा सुनती हैं विशेष क्या जाने ? सो दादीजी कहती थी कि कहनेको सन्यासी और ब्रह्मचारी सभी बड़े हैं, परन्तु गृहस्थके समान कोई भी नहीं है । बाल बच्चोंमें रहकर धर्म-पूर्वक रहनेके समान कोई भी धर्माचरण नहीं है ।

पति-दादीजीकी बात सच है पर तब भी गृहस्थ धर्म बड़ा कठिन है ।

पतिन-इतमें क्या झूठ ? गृहस्थकी लाज भगवान ही रखता है ।

पति-इस बातसे मेरा प्रयोजन नहीं है । इसको जाने दो । यह बताओ कि गृहस्थधर्मकी उत्पत्ति कहाँसे है ।



पत्नी-न जाने आप क्या पूछते हैं, कुछ समझ नहीं पड़ा ।

पति-समझी नहीं । अच्छा बताओ ' गृहस्थ किसे कहते हैं ।

पति-यही कि जिसके स्त्री पुत्र घर द्वार हो वह गृहस्थ है ।

पति-क्या पुरुष ही गृहस्थ होता है स्त्री नहीं ?

पति-क्यों नहीं ? यों सही कि जिसके स्वामी पुत्रादि हों वह गृहस्थ है ।

पति-अब समझो कि बवाहसे ही गृहस्थाश्रमकी उत्पत्ति है। पति पतिन पुत्रादि सब विवाह से ही होते हैं ।

पति-जान पड़ा इसी लिये स्त्री मरने पर लोग कहा करते हैं कि " उसका घर बिगड़ गया । "

पति-हां, इस लिये ही सब आश्रमोंकी अपेक्षा जो श्रेष्ठ गृहस्थ हैं वह विवाहसे ही बनता है, इस गृहस्थके धर्मोंके प्रतिपालन करने हीसे लोग पुण्य संचय और पाप क्षय कर सकते हैं ।

पति-गृहस्थ धर्मसे पाप धर्म कैसे होता है ?

पति-सो क्या तुम समझोगी ? गृहस्थके लिये आत्म संयम, परोपकार, अलियि सेवा, परिनमन प्रतिपालन इत्यादि कर्म बताये गये हैं । इनके करनेसे निष्ठुर वृत्ति दूर होकर उत्कृष्ट वृत्तियां उदय होती हैं । गृहस्थाश्रम अपने मुखके लिये नहीं है परंतु धर्म और परोपकारके लिये है ।

पति-यह तो बड़ा आनंद है कि गृहस्थीके कर्म धर्म रूप समझे जाते हैं, पर असल बात तो यह ही गई। स्त्री अपने पतिकी अर्धांगिनी क्यों है यह बात तो आई ही नहीं ।

पति-ठहरो, सब बताऊंगा, पहिले तुम ही बताओ कि स्त्री और स्वामीका परस्पर क्या कर्तव्य है ?

पत्नी-एक दूसरेको प्यार करे । जब जिसके मनमें जो बात हो वह दूसरेको बोले । एकके सुखसे दूसरा सुखी और दुःखसे दुःखी हो । परस्पर आनंद पूर्वक रहे ।

पति-वाह ! अच्छा कर्तव्य बताया । विवाहका उद्देश्य समझने पर भी स्त्री पुरुषका कर्तव्य न समझा गया । बस तुमसे वृथा सिर मारनेसे चुप ही अच्छी ।

पत्नी-क्यों इतने गुस्से क्यों होते हो ? मैं नहीं समझी तो आप ही बतादो ।

पति-अच्छा, मैं ही बताता हूं । थोड़ीसी बातमें समझनेके लिये सार यह है कि परस्पर एक दूसरेको गृहस्थ धर्म पालनेमें सहायक बनें, उत्सादिव और उत्तेजित करें, जिस कर्मसे एककी असद्वृत्ति दूर होकर सद्वृत्तियोंका विकास हो-दूसरेको वही करना चाहिये ।

पत्नी-और मैंने जो कुछ कहा वह कुछ बात ही नहीं हुई । एक दूसरेकी स्नेहन करें ?

पति-क्यों नहीं करें ?

पत्नी-क्यों नहीं करें ? स्नेह तो कुछ ठहरा ही नहीं, आज तुम्हें हुआ क्या है ?

पति-हुआ तो कुछ नहीं । तनक धीरज धरके सुनो तो सब बात हो । मैं जो कहता था उसमें स्नेहकी बात भी है ।

पत्नी-फिर मेरी बात पर ऐसे बिगड़े क्यों थे ?



पति-केवल स्नेहमे पूरा नहीं पड़ता । मैंने जो कहा है उस पर ध्यान देनेसे दम्पतिमें प्रेम व्याप ही उद्भूत होता है । जो स्त्री पुरुष विवाहके उद्देश्यको पूर्ण करनेकी चेष्टा करते हैं उनमें प्रेम तो भूतिमान् होकर आ विरामान्ता है । मैंने जो सद्वृत्तिका शब्द कहा था उसमें क्या समझी ?

पतिन-मैं तो कुछ भी नहीं समझी ।

पति-अच्छा, यह स्नेह भी एक वृत्तिका नाम है ।

पतिन-स्नेह वृत्ति कैसे हो सकती है ।

पति-जैसे खाना पीना आरिरिक वृत्ति है उसी भांति स्नेह एक मानसिक वृत्तिका नाम है । जैसे उचित रूपसे खानपान शरीरको पुष्ट करता है उक्त भांति धर्मानुसार स्नेहसे मन पुष्ट होता है । स्त्रीके लिये स्वामी और स्वामीके लिये स्त्री स्नेहपात्र है । जैसे वे परस्पर धर्मपालनमें सहायक हैं उसी भांति इस वृत्तिको भी पोषण करते हैं और यह धर्मरूप प्रेम जगत् पसिद्ध है इससे परस्पर सुख और धर्मचर्या दोनों बर्तें बन जाती हैं ।

पतिन-फिर तुम स्नेहको ऐसी तुच्छतासे क्यों देखाते थे ?

पति-इसकी चर्चा करनेसे कुछ भी लाभ नहीं है । स्त्री पुरुषको आपसमें स्नेह करना चाहिये ऐसी शिक्षा ही अनावश्यक है, परंतु इस स्नेहके सिवाय अन्य कर्मोंकी शिक्षा परमावश्यक है । केवल स्नेह १ सिखानेसे स्त्रियोंको और कुछ व्याप्त नहीं रहता । केवल यही दृष्ट्या रहती है कि रात दिन दोनों एक दूसरेके गुंडकी और देखते रहे और सर्व गृहस्थ धर्म चुल्लेमें पड़े । इनके अपने प्यारसे काम ।

पतिन-ठीक है, इस बातको मैं भी मानती हूं । आजकल बहुतेरी बहू इसी लिये न्यारी (एथक्) होनेका झगड़ा उठाती रहती हैं । उन्हें गृह कर्म भारी लगता है, केवल आरामतन्त्रकी को ही भी चाहता है ।

पति-बलो अब मेरा श्रम सफट हुआ । अब केवल यह कहना है कि स्त्री स्वामीकी अङ्गीगिनी क्यों है । पहिले यह सुका हूं कि गृहस्थ न अकेली स्त्री हो सकती है न पुरुष । दोनोंके मिलापसे ही गृहस्थ बनता है इसी भांति गृहस्थके समस्त धर्म कर्म जनक दोनों मिलकर न करें पूरे नहीं होते और इसीसे स्त्री पतिकी अङ्गीग कहलाती है अस्तु । पतिके सांसारिक कार्योंमें सहायता देना स्त्रीके लिये परमावश्यक है । गृहस्थीके लिये परिवार प्रतिपालन और आये गयेकी शुश्रूषा आदि अति गुरुतर कर्तव्य है । हिन्दू परिवारमें केवल 'मियां बीबी' ही नहीं बरन् माता पिता भग्न तथा अन्य सम्बन्धी भी परिगणित हैं, सबको प्रसन्न रखना पड़ता है, अपना सुख त्याग कर दूसरोंको सुख पहुंचानेकी चेष्टा करना परम वश्यक होता है, इन कामोंमें कितने ही स्वामीके करनेके हैं और कितने स्त्रीके-अर्थात् जीविका प्राप्ति करना पतिका काम और पतिके उपार्जनसे समस्त परिवारके खानपानका प्रबन्ध स्त्रीका काम है । पतिमें जब स्नेह है तो पतिके उचित धर्म कर्मोंमें सहायता न देना यह स्नेहवही स्त्रीके लिये कभी उचित नहीं हो सकता । हिन्दू पतिन सहधर्मिणी स्त्री इसीलिये कहलाती है कि वह पतिके सुख दुःखकी सदा साथिनी रहे ।

ग्यारा प्रतिमाकी लावनी ।

पाँच उदम्बर सात विसनको मन बच तनसे त्याग करो ।

शंकादिक दोषोंसे रहित गुण आठ निःशंकित आदि धरो ॥

पाल शुद्ध सम्यक्तत्व सार यह दर्शन प्रतिमा प्रथम खरो ।

पूर्ण व्रतोंका मूल यह इसका आदर किया करो ॥ १ ॥

मन बच तनसे त्रस जीवोंके प्राणोंकी रक्षा करना ।

वही अहिंसा अणुव्रत जानो भान सहित पालन करना ।

पर हितकारी पर सुखकारी मिष्ट वचन मुखसे कहना ।

मिथ्या वचको त्याग कर सत्याणुव्रतको गहना ॥ २ ॥

मूले पडे हुए परिधनको मन बच युत त्यागन करना ।

निज त्रियमें सन्तोष धारकर परत्रियको त्यागन करना ।

कर परिग्रह परमाण लोभको सब प्रकारसे क्षय करना ।

शुभ गति दाता जान ये पंच अणुव्रत आदरना ॥ ३ ॥

दिशा और विदशाओंमें जाने आनेका नियम करो ।

हृद्से बाहर न किंचित् आगे गमनागमन करो ॥

वध-उपदेश दान हिंसाको प्रमाद चर्च्यो नहीं करो ।

दुष्टशुभ अरु अपि ध्यान त्याग यह अनर्थदेह व्रत चित्त धरो ॥ ४ ॥

खाद्य स्वाद्य भोगादि पदार्थ अथवा वस्त्राभूषण वे ।

कर इनका परिणाम इन्द्रियोंको फिर बस कर पावे वे ॥

लिया पूवे द्वागव्रत उसमें दिग्गज आदिका नियम करो ।

ग्रामादिक घरकी सीमा रख उसके भीतर गमन करो ॥ ५ ॥

तीनो योग सङ्गार पियारे सामायक त्रेकाल करो ।

षट् प्रकार जीवनके ऊपर समता भाव प्रदान करो ॥

आरंभ सकल निवार पर्वमें प्रोषण धार पुवास करो ।

चौ प्रकारका त्याग आहार स्व-आत्म ध्यान धरो ॥ ६ ॥

परम पात्रको अशन दान दे पीछे स्वयं आहार करो ।

यही अथित संविभाग व्रत है इसका आदर किया करो ॥

ये चार व्रत पाल नियमसे कर्म कलंक बिनास करो ।

यह व्रत प्रतिमा दूसरी इसको अपने चित्त धरो ॥ ७ ॥

॥ भोवीतरागाय नमः ॥

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

नामा कलाभिरिविषय तत्त्वैः सत्योपदेशैस्तुगोपयणाभिः ।

संबोधयत्यत्रामिदं प्रवर्त्तताम्, दिगम्बरं जैन समाज-मानम् ॥

वर्ष १३ वॉ.

वॉर संवत् २४४६. भाद्रपद. विक्रम सं० १९७६.

अंक ५.

उत्तम क्षमा ।

(लावनी)

सज्जनो कहे कर जोर अरज एक तुमसे, अब करो मेरा अपराध क्षमा तन मनसे । १॥

यह आश्विन कृष्ण प्रतिपदा दिन आया, है धन्य दिना यह बार पुन्यसे पाया ।

इस दिनके समान न और कोई दिन है, सब करो परस्पर क्षमा लगाओ न छिन दे ।

दो राग छेप सर त्याग बहुत जरूरीसे, अब करो मेरा अपराध क्षमा तन मनसे ॥१॥ सज्जनो ।

* * * *

जिन धर्म करो प्रचार नगलमें सारे, जिन धर्म बिना नहीं कोई मविदवि तारे ।

जिन धर्म पाप अब क्षमा सर्व पर लाये, अब मनुष्य जनको पाप सुद्ध कर मइये ।

सब करो धर्म प्रचार एक हो जोसे, अब करो मेरा अपराध क्षमा तन मनसे ॥२॥ सज्जनो ।

* * * *

सब मिलो ऐक्यता करो भाई हर्षाई, जो वातसत्यका अंग कहा है जिनराई ।

जिपसे जगमें बड़े प्रीत बहु मेरी, सब कर लेउ समता माव सुनों नरनारी ।

पुनि माग जाय सब ही पाप क्षमके गुमसे, अब करो मेरा अपराध क्षमा तन मनसे ॥३॥ सज्जनो ।

* * * *

जो बिया मैने अपराध आका भाई, मैं हूं छदमस्थ अज्ञान ज्ञान मोहि नाहीं ।

जो कुछ हो गया अपराध देओ निरवेरी, अब करो लट्ठार पर क्षमा ल भो मत देरी ।

अब करता समता भवि सर्व जीवतसे, अब करो मेरा अपराध क्षमा तन मनसे ॥४॥ सज्जनो ।

सज्जनो, कहे कर जोर अरज एक तुमसे, अब करो मेरा अपराध क्षमा तन मनसे ॥

लट्ठरमल जैन, कोसी ।



हमारे महान धार्मिक दिन याने पशुपण पर्वके दिन अभी व्यतीत हो दशरक्षाक्षणी पर्व रहे हैं और शीघ्र ही मादों सुदी चतुर्दशी आते ही देवतेर पूर्ण भी हो जवेंगे। इस पर्वमें परापूर्वकी रीत्यनुसार मंदिरोंमें अभिषेक पूजा आदि होते हैं तथा अनेक त्य.नोंपर सुबह शम शास्त्र समा आदि भी होती हैं परन्तु जैसा कि व्याख्यान समाका विपुल प्रचार और उत्साह हमारे श्रेताम्बर माइयोंमें है वैसा हमारेमें नहीं है उसका कारण हमारेमें उपदेष्टाका अभाव ही है। हमारे रहे सहे त्यागी ब्रह्मचारी मठारककोंमें सिर्फ़ इनेगिने त्यागी ब्रह्मचारीगण जैसे कि श्री० त्यागी ऐटक पन्नालालजी, श्रीमान् जैनधर्मभू० ब० शीतलप्रसादजी, ब० ज्ञान नं०जी, ब० भगीरथजी वर्णी, ब० पार्श्वसागरजी आदि तो जहां पर भी होते हैं उपदेशाभ्यास सुनाते ही हैं परन्तु इतनेसे काम कैसे चले ? हां, हमारे पंडितगणने त्यागियोंका कार्य बहुत समाज लिखा है और अनेक स्थानपर अनेक पंडितगण इस पर्वमें तत्सार्थ सुत्रजीके अर्थ और दशरक्षाक्षणी धर्मका स्वरूप सुनाते हैं परन्तु समयानुसार इन मादों सुदी १४ के दिन हर एक ग्राम और शहरमें एक आम समा होनी चाहिये और उसमें दशरक्षाक्षणी पर्व और हमारा कर्तव्य पर अवश्य व्याख्यान होना चाहिये।

इस पर्वमें चतुर्दशीके दिन तो सब माइयों अपना-र कारोबार बंद करके बहुत करके उपवास करते हैं और समय धर्मव्याप्तमें बीताते हैं तो इसी दिन हमें क्या २ वत्तों करना आवश्यकीय है वह हम नीचे संक्षिप्तमें सूचित करते हैं—

(१) इस पर्वमें अनेक माइयों और बहनों १०-१-२ या १ उपवास करते हैं उसमें दस पांच उपवास करनेवाले बहुत प्रकारका खर्च करके उत्सव करते हैं परन्तु उसमें वास्तविक खर्चकी तरफ़ ध्यान नहीं दिया जाता, सिर्फ़ अपनी नामवरीके लिये ही खर्च करते हैं ऐसा न होकर हर एक व्रतकी खुशीमें पुस्तकोंकी प्रभावना करनी चाहिये और अपनी समा संस्थाओं जिसमें कि चारों प्रकारके दानका कार्य हो रहा है उसमें अच्छी रकम दानमें भेजनी चाहिये।

(२) अनेक स्थानों पर अब भी विदेशी भ्रष्ट स्वरूपके वतसे और विधायती अशुद्ध केशरका वर्तव्य करते हैं वह न करके पुस्तकों या तो बादाम, श्रफ़ल आदि प्रभावनामें वांटना चाहिये और मंदिरोंमें शुद्ध सादेशी केशर ही वर्तनी चाहिये।

(३) बिना निमित्त कोई भी कार्य नहीं होता इस लिये पशुपण पर्व दान करनेका बड़ा भारी निमित्त मार्ग है उसमें (४) पर्वमें एक बार तो) हर एक स्थान पर मंदिरोंमें सब माई एकत्रित होने हैं वहां एक स्वास आदमीको खटे हो जाना चाहिये और एक दानका चंदा लिखाना चाहिये और जो कुछ रक्कम हो वह नीचे लिखी हमारी संस्थाओंको भेजनी चाहिये—(१) श्री



ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम मेरठ यु० पी०, (२) स्या० महाविद्यालय, काशी । (३) महाविद्यालय मथुरा, (४) श्री कुलभूषण दि० जैन विद्यालय, कुंभज-गिरी पो० पिंपलगांव, सोलापूर, (५) आर्य समाज, तारदेव बम्बई, (६) सतर्क सुवा० पाठशाला सागर, (७) देहली अनायालय, (८) षडनगर औषधालय, (९) नडनगर नवीन अनायालय, (१०) जैन सिद्धांत विद्यालय मॉरेना आदि ।

(४) जहां भी देखो फूटका सप्तरूप अति प्रबल है इस लिये इसी उत्तमसमादि दश धर्मोंके दिनोंमें उत्तम क्षमाका माव हृदयसे छाना जाति या तो मंदिरमें किसी भी प्रकार का झगडा हो उसको निराकर मेल कर लेना चाहिये । सच्ची उत्तम समा तो यही है । पर्वों द्वारा 'उत्तम क्षमा' लिख देना तो मामूली बात है ।

(५) हमारे मंदिरोंमें द्रव्य और उपकरणकी कमी नहीं है परन्तु यदि कमी है तो वह व्य-वस्थाकी कमी है । प्रतिमानी, शास्त्र, उपकरण आदिकी सूची शापद ही होती है तथा हिसाब भी वर्षोंसे प्रकृतिगत नहीं होता, हिसाबमें क्या है सो लिखनेवाला ही जानता है ऐसा न होकर मंदिरकी प्रतिमाओंकी एक सूची संक्षिप्त लेख सहित बना कर रखनी चाहिये तथा भित्ति भी वर्तन उपकरण हो उनकी सूची बना कर इसको हर वर्ष मिलाते रहना चाहिये तथा भित्ति शाल मंदिरनीमें हो उनकी एक विगनवार (कर्मा, संज्ञा, विषय, भाषा आदिकी) सूची बना लेनी चाहिये । भित्ति शाल हों उनका छीस्ट बनाकर गैलरी पर बिठा कर रखना चाहिये और स्वा-

ध्याय करनेके लिये आ-इ। कनकनसर भाइयों और बहिनोंको मंदिरमें या घर पर लिखकर देना चाहिये ।

(६) हमारे बहुतसे शास्त्र उप चुके हैं और छपे शास्त्र पढ़नेमें सरलता होती है इनलिये मंदिरमें जो शास्त्र न होवे वे अवश्य मंगा लेनेका निश्चय करके ओर्डर लिख देना चाहिये । छपे शास्त्रोंको एक सूची भी इसी अंकके साथ बाँटी गई है । विशेष करके माणिकचंद ग्रंथमालाके संस्कृत ग्रन्थ, गोपटनारजी, आदिपूराणनी आदि ग्रन्थ तो मंदिर में अवश्य संग्रह करने चाहिये ।

(७) हमारी सत्य का दिनोंदिन हास होता ही चला जाता है उसकी जानकारीके लिये चतुर्दशीके दिन सबको आकाश रहता है तो उसी दिन दो चार स्वयं सेवाकोंको खड़े होकर अपने २ भाग और शहरकी मनुष्यगणना कर लेनी चाहिये उसमें जाति, आयु, पुरुष या स्त्री, विवाहित या अविवाहित, सधवा या विधवा, कुंभारिका, कुंभारे आदि सब हाल पाने करके लिख लेना चाहिये । परिवार और भैरवाल जैनोंने अपनी मनुष्य गण । करनेका कार्य हस्तगत किया है उसी प्रकार हा एक जातिको अपनी मनुष्य गणना करनी चाहिये ।

(८) अनेक स्थानों पर चतुर्दशी पुनम या तो प्रतिपदाके दिन जलयात्रा उत्सवकी जुलूस निकलता है उसमें बहुत अविनय होता है यहां तक कि बहुत मई जूतेतक नहीं निकालते हैं ऐसा न करके जहां तक हो विनयको प्राधान्य पद देकर स्थान २ पर जुलूसको उतरा कर जैनधर्मके



मंजन होने चाहिये और उसके साथ २ धर्मों पदेश भी होना चाहिये जिससे कि आम लोगों पर जैनधर्मका प्रभाव पड़ सके ।

(९) जहाँ सभा पाठशाला हो वहाँ उसका उत्तम होना चाहिये तथा जहाँ सभा पाठशाला न हो स्थापित करनेका प्रबंध करना चाहिये और बड़े पड़े तो उसको फिर बलु कर देना चाहिये ।

(१०) हर एक स्थान पर जैन लायब्रेरी (वाचनालय) की आवश्यकता है जिसमें जैन अजैन पत्र मगाये जाय तथा धार्मिक राजकीय आदि ग्रन्थों । संग्रह किया जाय । बिना फूस हो सबको वाचनेका प्रबंध होना चाहिये ।

(११) हमारे समानमें इने गिने ही पत्र हैं और सबकी आर्थिक दशा अच्छी नहीं है उसका स्वार्थ वारण उसकी ग्राहक संख्याका कम होना है और समानका जीवन तो समाचार पत्र ही है । दि० जैनकी सठेबारह छत्तकी वस्तीमें कमसे कम सवाछाछत्ती गृहसंख्या होगी तो भी उसमेंसे एक १ पत्रके दो २ हजार भी ग्राहक न हो फिर हमारी उन्नति कैसे होसके ! बड़े २ शहरोंमें १००-२०० गृहसंख्या होते हुए भी दस वीस ग्राहक शायद ही किसी पत्रके होते हैं इसी लिये आज हम समाजका ध्यान हम ओर आकर्षित करते हैं कि वे इस पुण्यपर्वके मौके पर 'जैनमित्र' (सुरत), 'जैनगज' (मधुग), ये दो साप्ताहिक पत्र तथा पञ्चायती पुरवाठ (कलकत्ता), दिगम्बर जैन, जैनपाठ जैन (आगरा), जैन मार्तण्ड (हापरत), गोलापूर्व जैन (सागर), खंडेडवाड जैन (गौतमपुरा), प्रगति-

मिनविजय सराठी (वेरगाव), जैन प्रचारक उर्दू (मेरठ), जैन प्रदीप उर्दू (देवबंद), अंग्रेजी जैन गेहेट (मदरास) अदिके अवश्य ग्रहण करनेके लिये पत्र लिख देवे ।

(१२) समयका प्रवाह हमें यह बता रहा है अब हमें परश्रयी न होकर स्वाश्रयी होना चाहिये । सर्कारी स्कूलोंमें हमें योग्य शिक्षा नहीं मिलती न वहाँ धर्म शिक्षा मिलती है इसलिए हमें हा एक स्थान पर निजी स्कूल स्थापन करना चाहिये जिसमें जैन अजैन सभीको सब शिक्षाके साथ २ जैन धर्मकी शिक्षा भी दी जाये । इन्दौर, देहली, मेरठ, सोलापुर, बांदा आदि स्थानों पर ऐसी स्कूल स्थापित हो चुकी हैं उनका सब स्थानों पर अनुकरण होना चाहिये । विशेषमें बम्बई, कलकत्ता, देहली अदि बड़े २ केन्द्रोंमें एक २ जैन वालेंज भी स्थापित करनेका विचार करना चाहिये । यदि रास्ता बतानेवाला हो और कार्य करनेवाले हो तो जैनोमें द्रव्य ही कमी नहीं है । हर्ष है कि अभी ही देहलीमें ब्र० शीतलप्रसादजीके प्रयत्नसे जैन संस्कृत व्यापारी विद्यालय खुलनेवाला है । ऐसा ही विद्यालय नागपुर प्रा० खंडेडवाड दि० जैन समाजी शिक्षा प्रचारक कमिटीको खोलनेके लिये हम आम्रह करते हैं । बिन्दावनमें "मैन महाविद्यालय" है उसीके दंग पर हमारे विद्यालय खुलने चाहिये तभी ही धार्मिक और व्यापारिक उन्नतिकी आशा रख सकते हैं ।

(१३) हमारे देशकी उन्नति हमारे देशमें ही बनी हुई वस्तुओंको व्यवहारमें लानेसे हो सकेगी । विदेशी बरतमें अनेक प्रकारकी



अशुद्धि रहती है तूपा चमड़े, हड्डो आदिको अनेक अशुद्ध चीजें वर्तनसे हथ हिंसाके व्यापा रको घुष्ट करते हैं इन्हिये हमें स्वदेशी वस्तुका ही व्यवहार करनेकी दृढ प्रतिज्ञा इन पर्युषण पर्वमें लेनी चाहिये तथा देशों भी अशुद्ध वस्तुओंको तो कभी भी नहीं वर्तना चाहिये ।

(१४) हमारे तीर्थों और मंदिरोंकी रक्षाके लिये हमारी “मागत० दि० जैन तीर्थ वमेटी” प्रयास कर रही है परन्तु दिन रातका सर्व चलानेकी द्रव्यकी आवश्यकता रही है इन्हिये हरएक गृह पीछे वापिक एक २ रुपया लेनेका जो प्रस्ताव वमेट ने किया है उसका अमल कीजिये और अपने ग्राम या शहरसे हरएक गृहका वमसे कम एक २ रुपया एकत्रिन करके तीर्थक्षेत्र वमेटी कार्यालय, हीराबाग बम्बईको भेज दीजिये ।

(१५) पर्युषण पर्वमें उपरोक्त सूचनाओंमेंसे भवने यहा क्या २ हुआ उसका हाल हमें आश्विन वरी ५ तक अवश्य लिख भेजिये ताकि यह आगामी अंशमें प्रकाश कर सकें ।

* * *

हमारे तीर्थोंकी रक्षा करना हमारा परम धर्म है । वर्षोंसे हमारे अनेक तीर्थ रक्षा । तीर्थ जेते-श्री सम्मदशि-गरजी, अंतरिक्षजो, म

क्षीजो, सोनागिरीजी, नारगानी आदिमें श्वेतावरी पाइयोंसे शवडे चढ़ रहे हैं और लाखों रुपये वकीठ बेरिन्दों और अशालनोंमें स्वाहा हो रहे हैं । हमारे कई प्रयत्न होने पर आपसमें निव टोरा नहीं होता तब हमें विवश हो अदाचली

कार्य करना पड़ता है । आजकल शिखरजी केममें आगर गर्च हो रहा है और द्रव्यकी कमी है यह बात अभीकी बम्बईकी तीर्थक्षेत्र कमेटीकी मीटिंगसे ज्ञात होती है जिसमें बीन लाख रुपये का फंड एकत्र करनेका प्रस्ताव पाम हुआ है जिस पर हम पाटकोंका ध्यान आकर्षित करते हैं । तीर्थक्षेत्र वमेट के महामंत्रीके स्थान पर धर्मिमा परोपकारी सेठ चुन्नीलाल हेमचंद नरी-वाले जो कि हमारे स्वर्गीय सेठ मणेरुचंदजीके मानजे होते हैं नियुक्त हुए हैं और आप यदि चाहें तो अपनी दूकानका कारे वार पुत्रोंको मौन कर सेठ मणेरुचंदजीकी तह हीराबागमें बैठ र वमेटीका कार्य बराबर करा सकते हैं और स्वर्चमें भी बहुत फायदा करा सकते हैं । आशा है कि सेठ चुन्नीलालजी हमारे इस निवेदन पर अवश्य खयाल करेंगे । सेठ मणेरुचंदजी कम ही जड़े हुए थे और बहुत ही कार्य कर गये तो क्या आप निवृत्त होकर नहीं कर सकेंगे ? आश्वय कर सकते हैं । शिखरजीके लिये चन्दा करनेके लिये भी हम धनिकोंसे इस पर्युषण पर्वके मौके पर आग्रह करते हैं ।

* * *

जो ३ अमरावती दिगंबर जैन भोर्डिंगभा
भास्कर छोटेबालछ पन्ना
अमरावती २० सुप्रिन्टेन्ड टाई
भोर्डिंग गान्धा छ त्पारथी धर्
शिक्षकनी व्यवस्था सानी
अथेजी छ पणु गद मुयध नि जैन पनीशालयनी
परीक्षाभा छे भोर्डिंगभाभी छेक पणु विधार्थी भेठेने
न्यायनी नथी तेना कारणा अना सेक्रेटरीअ
न्यायनरनी नर छे वण्णा छे भोर्डिंगभा
शुद्ध शुद्ध प्रधानी दिगम्बरा भाभापों तेमअ



વિદ્યાર્થીઓ તરફથી થતી સાંમળવામાં આવે છે તેનું ખાસ કારણ એને ચત્રાવવાના અંધારણી ખામી છે. વિજીટીંગ કમેટી નીમી હતી તે નામનીજ હતી ને તે પણ હવે દસ્તીમાં હોય એમ સંભવતું નથી તેમજ સુપ્રિન્ટેન્ડન્ટને તથા સ્થાયી સેક્રેટરીને જે જે સૂચનાઓ હોવી જોઈએ તે ન હોવાથીજ અનેક વાર ગુચવાડા ટપન થયા છે. વળી વર્ષો થયાં આ બોર્ડિંગનો વાર્ષિક મેળાવડો પણ થયો નથી જેથી એની આંતરિક સ્થિતિથી પણ પુરેપુરી રતે વાકફ થવાનું નથી. દરેક વર્ષે એ મેળાવડો થવાથી ગુજરાતના બાઇઓને અનેક લાભો થતા હતા એ જાણીતું છે. એના બાંહેધ સેક્રેટરી પરી. લક્ષ્મીભાઈના વિયોગ પછી તેમના કાર્યની કદર જુઝવાને વાર્ષિક મીટિંગ બરવાની ખાસ જરૂર છે તથા તે પ્રસંગે કંઈકમ ચલાવનારી પેટા કમેટી નીમવા ખાતર વિચાર કરવાની પણ જરૂર છે. આશા છે કે એના હાલના સેક્રેટરી બોઈ લક્ષ્મીભાઈ લખમીચંદ એ ખાતર કોશિશ કરી આવતા ખાસમાં અવશ્ય વાર્ષિક મેળાવડો કરવા બોંધવું કરશે.

તે બની શકે તેમ છે. અથવા તો અમારા સાંમળવા મુજબ શેઠ ડાહ્યાભાઈ પ્રેમચંદ ઝવેરી લાખ જે લાખની મોટી સખાવત કરવા કેટલાક સમયથી ક્ષત્રા રાખે છે અને વિચારમાં ને વિચારમાં વખત વહો જાય છે અને એમણે આજ સુધી દાનનું કોઈ બારી કાર્ય કયું નથી કે જે કરવા તેઓ પૂર્ણ શક્તિમાન છે તો તેમણે હવે વિલંબ ન કરતાં આ “ દિગંબર જૈન નિવાસ ” પોતાના નામે સ્થાપિત કરવાની પહેલ કરવાની જરૂર છે. આ સાથે મુઆઇમાં જૈન બ્યાપારી વિદ્યાર્થી જુલજીવી ખાસ જરૂર છે, તે વંદે પણ અમે શ્રીમાનેનું ધ્યાન ખેંચીએ છીએ.

મુંબઈમાં વસતા દિગંબર જૈનોની હાલમારી.

ચાલુ જમાનામાં જ્યારે મુંબઈની તમામ પ્રજા પોતાના રાતિ બંધુઓને રહેવાની તેમજ ધંધા વગેરેની સગવડતા માટે જોડાયું કરી આવે છે અને હજી કયાં જાય છે, તેમજ ચાલુ જમાનામાં જ્યારે દરેક આગળ વધતી રહે છે ત્યારે અમારી કોમમાં શ્રીમંતો-લક્ષાધિપતીઓ તેમજ કરોડાધિપતીઓ (જે આપણી કોમમાં હંધાત છે તેમને માટે અમારે અભિમાન રાખવું પડે છે.) મોજુદ છે, છતાં તેઓનું એ ખાતર તરફ લક્ષ ખેંચાઈ નથી એ શોચનીય છે. હાલના ચાલુ મોંઘવારીના જમાનામાં બહારગામ ધંધાની અંગૂડતાને લીધે આપણા દિગંબરી બાઇઓને ધંધાર્થે મુંબાઈ આવવું પડે છે. તેમને રહેવાની બીલકુલ સગવડતા નથી. હાલમાં આપણી કોમના ૫૦-૬૦ માણસો શેઠ માણેચંદ પાનાચંદની પેઢી જે આપણી કોમના દાનવીર શેઠ છે તેમની દુકાન પર સુઈ રહે છે અને તેઓ પોતાની અડચણો પેઢી લઈને તે બાઇઓને સુવા દે છે. વળી જણાવવાની જરૂર નથી કારણ કે કેટલાક વસંથી તેમને તેરીજ તરફ આપ્યા કરીએ છીએ. અને હવે રીપરોડીવસે સંખ્યામાં વધારો થતો જાય છે.

* * *
મુઆઇમાં કુડકે અને બૂરકે વરતી વધતી જાય છે ને લોકોને મકાન દિગંબર નિવાસની મેળવવાની અતિશય સુજરૂર રહી નડે છે જેથી ત્યાં નોકરી માટે આવીને રહેનારા સામાન્ય વર્ગના દિ. જૈન બાઇઓ માટે સરતા બાઇના મકાનોની ખાસ જરૂર છે. આ ખાતર આ અંકમાં એક લેખ પ્રગટ કરવામાં આવ્યો છે ને એવીજ ખાતરતા ખીજ એ લેખો અમને મળ્યા છે, જે પ્રાટ ન કરતાં એટલુંજ જાણીતું કે જેવી રીતે સ્વેતાંતરી બાઇઓમાં સરતા બાઇના મકાનની યોજના રાઈ છે, તેજ મુજબ આપણા દિગંબર બાઇઓએ એકત્ર બળ થી યા તો એકાદ શ્રીમાને આ કાર્ય કરી કોમની આશીય લેતી જોઈએ. શ્રીમાન શેઠ મુબાઈદાદ મોટે ખરમે ધર્મદાતા ખુશી મુબાર છે તેને ગદમે તેનીજ દિગંબર નિવાસનું, રૂપ આપે તો



એટલે અમે એવી આશા રાખીએ છીએ કે અમારા શ્રીમાન સખી ગ્રંથો (જે કામ તેમને મહેનમાં બની શકે તેમ છે.) સરતા બાકાત એક મકાન “દિગંબર નિવાસ” તરીકે ગોઠવણ કરી બંધાવી કોમને આભારી કરશે. વળી અમારે મગર થવા જેવું છે કે અમારો કોમના સખી ગ્રંથ દાનવીર શેઠ માણેકચંદ પાનાચંદ જેમણે મુખાધ જેવા કીમતી સ્થળમાં “ શેઠ હીંચું લેન બોર્ડિંગ મુલ તારદેવ ” સ્થાપી છે, જેનો વીસ વરસથી આપણી કોમના બુદ્ધાન વિદ્યાર્થીઓ લાભ લે છે, તેમજ એજ સખી શેઠ મુખાધના જેગ બહેર કીમતી લતામાં “હીરાભાગ” નામની ધર્મશાળા બંધાવી આપી સંવર્ણી હાંદુ કોમને આભારી કરી છે, તેમજ તેવી સખાવતો બહાર દેશવર ખાતે પણ ઘણી કરેલી જણાય છે.

અમારા સામગ્રવા મુનમ અમારી કોમના શ્રીમાન શેઠ ગુરુમુખરાય મુખાનંદજી જેઓ રૂના એક બાહોશ વેપારી તરીકે મશહૂર છે, તેઓએ પણ બુનેશ્વર જેવા કીમતી લતામાં ચાર લાખની કીમતનું મકાન લીધેલું છે અને આપણી કોમના વપરાસ માટે થોડા વખતમાં ખુલ્લું મુકનાર છે. ઉપરના ગોડીઆઓ સિવાય આપણી કોમમાં ૨. આ. સર શેઠ હુકમચંદજી, શેઠ ગુલામચંદ મુલચંદજી, શેઠ બિનેલીગમ બાલચંદ, શેઠ દિવતરામ કુંડનમલ, શેઠ કાશ્યાબાઈ પ્રેમચંદ, શેઠ મુનીલાલ હેમચંદ, શેઠ મુનીલાલ પ્રેમાનંદ એવે સખી ગ્રંથો ગ્રાંથીમાં હેવાત છે છતાં આપણી કોમનું હુંએ નિરાશ ન થાય તેના જેવું શોચનીય બીજું કું ગણાય ?



છિંદવાહા-મેં આગ મી આસોન મુદી
૧૨-૧૪-૧૫ કો નાગપૂર પ્રાં. દિ. જૈન
સંકેલવાજ સમાજ વર્ષિક અધિવેશન હોગા ।
સ્વાગત કમેટી મી થન ગઈ હૈ જિસકે સમાપત્તિ
સેઠ લાલચંદની પાટળી ઔર મંત્રી સેઠ ઉમેદ-
ચંદની પાટળી નિયુક્ત હુણ હૈં ।

**તીર્થક્ષેત્ર કમેટીની મીટિંગ-મારતવ-
ર્ષીય દિગંવર જૈન તીર્થક્ષેત્ર કમેટીનો છાસ મીટિંગ**
ગત તા. ૨૩સે ૨૬ આસ્ત તક બમ્બઈમેં
હીરાબ ગમેં સેઠ ચલ્લેવદાનજી મુશૂર સેઠ સેટમલ
દયાચંદ કલકત્તકે સમાપતિત્વમેં ઉત્સાહકે સાથ
હુઈ થી નિતમેં લાછા દેવીસહાયજી, લાછા જમ્બૂપ-
સાદજી, સેઠ હરન રાયળજી, સર સેઠ હુકમચંદનો
આદિ જ્વાસ પવારે થે । ઇતમેં કુલ ૨૧ પ્રસ્ત વ
પાપ હુણ હૈં જિમકા સારાંચ રૂપ પ્રકાર હૈં ।
(૧) સેઠ **ચુલીલાલ હેમચંદજી** મરીવાલે
બમ્બઈ નિવાસી મહામંત્રી નિયુક્ત હોન,
(૨) સેઠ ઠાકરસીદામ નિહાલચંદ તીસરે સં
મંત્રામંત્રી નિયુત હોના, (૩) સેઠ ચલ્લેવદાનજી
દયાચંદજી કલકત્તા ચૌથ સં મહામંત્રી નિયુક્ત
હોના, (૪) શ્રી સમ્મેદ શિલ્પરજી પર્વત રક્ષા
સંઘેથી મુકદ્દમોંકે લિયે પ્રચુર દ્રવ્યકી આવશ્યક્તા
હોનેસે વપસે કપ ૨૦૦૦૦૦૦૦) વીસ લાખ
ફંદ દુકાન ક્રિયા જય (૫). શિલ્પરજીની રક્ષાકે
લિયે પ્રત્યેક પાન્તમેં પાચર મુખ્ય મહ શાય નિયત



किये जाय जो कार्य पड़नेपर चिट्ठी पहुंचते ही निम्न स्थानपर पहुंच जावे, (६) गुलनार बागके मंदिरकी व्यवस्था ठीक न होनेसे वमेटीके आधीन ली जाय, (७) ईसरी स्टेशनपर प्लेटफार्म बनवाने तथा मेट्रो-ट्रेन टहरानेके लिये विशेष कोशिश की जावे (८) नियम वली संशोधनार्थ ५ मेम्बरोंकी वमेटी नियुक्त होना जो ३ माहमें रिपोर्ट तैयार करके महामंत्रीको भेज देवे (९) २३४४-४५का सिद्धांत जंचनेके लिये अमृतलाह घाटी और चांदमलजी अन्तर्गत नियत क्रिये जाय, (१०) गजपंजाजी तीर्थकी वमेटीके मंत्री सेठ जीवान गौ-मचंदजी नियत किये जाय, (११) मुक्तागिरी पर जूते पहिन कर न जानेके लिये सवारिको हुकम निकालनेकी प्रार्थना की जाय, (१२) लाला प्रभुसालजी पर करीब ६०००) लेना बकाया है वह पर्वत रक्षा खाते खर्चमें मंड दिया जाय ! (१३) बीस लाख रु० का फंड बनानेके प्रस्तावकी पूर्तिके लिये प्रत्येक प्रान्तसे एक र डेपुटेशन पार्टी नियत की जाय अदि । चौथा प्रस्ताव पास होते ही ५००००) लाला देवीप्रहायजी, ५००००) लाला जगप्रसादजी और ५००००) रु. कटकता पंचायत की तरफसे स्वीकारता मिली थी तथा और भी चंदा लिखा जाकर कुल २५००००)का चंदा लिखा गया था ।

देहलीमें सं० व्यापारी विद्यालय-श्रीमान् ब्र० शीतलप्रसादजीका चतुर्मास इस बार देहलीमें होनेसे वहां बहुत धर्म प्राप्ति हो रही है । कई मंदिरमें श्राव्य सभः होने लगी हैं तथा पटशाहके लिये चंदा हुआ है और एक

बड़ा मारी कार्य यह हो रहा है कि यहां पर एक दि० जैन संस्कृत व्यापारिक विद्यालय खोलनेके लिये करीब ५००) रु. सिद्धांत चंदी लिखा जा चुका है और इस विद्यालयकी स्थापना भी मई सुदी १२ शुक्लारको बड़े मरी सवारोहने होनेवाली थी ।

इन्दौर-की सेठ सर० हु० दि० जैन पारमार्थिक संस्थाओंकी वार्षिक मिटिंग ता० ११-८-२० को हुई थी जिसमें रिपोर्ट हिसाब आदि पास हो कर आगामी वर्षके लिये ३७५०१)का खर्चका बजट पास किया गया तथा संस्थाओंका ट्रस्ट करना निश्चित हुआ ।

काशी-में ब्र० ज्ञानानंदजीके संपादित्वमें पं० गणेशप्रसादजी वर्णीने 'पशुपाल', पर प्रमोदशाली व्याख्यान गत ता० २८-८-२० को दिया था और प्रतिज्ञा ली कि जब तक रतौनाका कसाईखाना बंद न होगा मैं रेड्ढे व अन्य गलीमें नहीं सफर करूंगा और आगम्य स्वदेशी ब्रा पलंगा । ता० २९ को १६ विद्यार्थियोंका यज्ञोपवित संस्कार पं० सत्येश व मागचंदजीने कराया था और संघाको रक्षाबंधन पर विवेचन होनेके बाद ब्र० ज्ञानानंदजीने प्रतिज्ञा ली की जब तक मैं १०० मनुष्योंको मांस मंशज तथा १०० मनुष्योंको चमड़ेका जुता पहनना न छुड़ा दूंगा तब तक मीठाई नहीं खेऊंगा और अहिंसा धर्म प्रचारार्थ "अहिंस" र मऊ साप्ताहिक पत्र प्रकाश करूंगा । इन पत्रका वार्षिक मूल्य २॥) रखा गया है । ग्राहक होनेवाले ब्र० ज्ञानानंदजी, स्या० महाविद्या । काशीको लिखे ।

लक्ष्मणन्या तिलकका

जीवन वृत्तान्त

लक्ष्मणन्या बाल गंगाधर तिलकका जन्म, रत्नागिरिमें २२ जुलाई १८६६ ई० में हुआ। आपके पिताका नाम गंगाधर रामचन्द्र तिलक था। आप बड़े विद्वान थे और कुछ दिन रत्नागिरिमें द्वितीय मास्टर होनेके पश्चात् थाना स्कूलके डिप्टी इन्स्पेक्टर हुए; पर बाल गंगाधर अधिक दिनतक पितृ सुखका स्वाद भोग न सकें, १६ वर्षकी उमरमें ही उनके पिताका स्वर्गवास हो गया। श्रीमान तिलकने रत्नागिरिसे इन्टर-प्रास कर डेकन कालेजसे सम्मान-पूर्वक बी० ए० की उपाधि प्राप्ति की और तीन वर्षके पश्चात् वर्षाईमें बकालतकी परीक्षा पास की; पर उनकी उद्देश्य बकालतकर केवल रुपया कमाना नहीं था। विद्यार्थी जीवनमें आपको एक दूसरे उत्तमहृदयसे जिनका नाम आगरकर था, जानपहचान तथा मित्रता हो गई थी। दोनोंने विचार किया, कि देशहितके लिये सरकारी नौकरीके फौर्में न पढ़ना ही बहुत अच्छा है। उन्होंने विद्या प्रचारको अपने जीवनका प्रधान कर्तव्य निश्चय किया और शिक्षा प्रदानके लिये कोई कमखर्च रास्ता ढीक करने लगे। तौमास्यवश इसी समय उन लोगों को जानपहचान एक दूसरे दे भक्तसे हुई, जिनका नाम विष्णु लक्ष्ण चपलनकर था। ये महाशयमें मराठीके बड़े भारी प्रसिद्ध लेखक हुए हैं। इन लोगोंके शिक्षा प्रचारमें दक्षिण होनेका परिणाम यह हुआ, कि २ जनवरी १८८० ईस्वीमें एक गंगेजी

स्कूल खोला गया, जिसमें म० तिलक, तौमसोसी और चपलनकर महाशयने शिक्षकका कार्य अदण किया। एक ही वर्षमें स्कूलके काममें बी० एम० आपटे और श्रीमान आगरकरने भी भागकर कार्यभार लिया; पर इन लोगोंकी देश सेवाका जोश केवल रहतने हीमें खतम न हो गया। इन लोगोंने मिलकर जो पत्र निकालना भी शुरू किया। जिनके प्रभाव आनु महाशयमें अद्वितीय हो रहे हैं, इनके नाम "महराठा" और "केशरी" हैं। केशरी देशी (मराठी) भाषामें और महराठा अंग्रेजी भाषामें निकलता है। पहले केशरीकी आदकसंख्या केवल १०० थी; पीछे बढ़कर २००० हो गई और आनुक्ति तो बढ़ रहतना जनप्रिय हो रहा है, कि २२००० से अधिक लोग इसके स्थायी आदक हो गये हैं। "केशरी" और "महराठा" की सुकियां अब टूटो होती हैं और उनके विचार अत्यन्त निडर और गम्भीर होते हैं। श्रीमान तिलक किमीसे डरनेवाले तो थे नहीं। उनसे नावांछित कोल्हापुरके महाराज सिवाजीरावके प्रति होने हुए अत्याचार न देखे गये और जसने प्रजोंमें उनकी उन्होंने मही ही कड़ो आलोचना निकाली। इस पर महाराजा तिलक और आगरकर महाशयपर मुकदमा चलाया गया और वे लोप ४ महीनेके लिये बिना परिश्रमके साथ कारागार भेजे गये। लोपान्तकी सत्य श्रद्धा निर्भयता तथा दशसेवाकी यह पहली नाज हुई थी; पर जस जांचमें वे बहुत ही उच्च अंग्रेजी उत्तीर्ण हुए और बिना हताश हुए श्रीमान



जोशीके साथ विद्या-प्रकारके कार्योंमें फिर लिप्त हुए ।

१८८४ ई०में उन्होंने Decan Educational Society याने डेकेनमें विद्याप्रचारिणी समिति कायम की । कुछ दिन बाद स्वनाम धन्य प्रो० बी० बी० वेलकर, प्रो० घटोप इत्यादि महानुभावोंने भी इनका इस कार्यमें हाथ बढ़ाया और १८८५में आजकलके प्रसिद्ध फागुसन कौलेजका स्थापन हुआ । पर महाराज तिलककी अपने सहयोगियोंके साथ उद्देश्यमें भिन्नता पड़नेकी वजहसे १८६० में फागुसन कौलेजसे अपना सम्बन्ध तोड़ देना पड़ा । १८८८में आगरकर महाशयने धार्मिक और सामाजिक विषयमें मतभेद होनेके कारण 'केशरी' पत्रसे सम्बन्ध तोड़ डाला । अब 'केशरी' और 'महठेका' संचालन महात्मा तिळक, वेलकर और गोल्ले महाशयके साथ करने लगे, पर कुछ दिनोंबाद इन लोगोंने भी किसी कारणवश 'केशरी'से सम्बन्ध तोड़ लिया और इसके बाद उन पत्रोंका संचालन भार स्वयं महाराजके हाथोंमें आया । महाराजकी लेखनी बहुत ही जोशीली और तर्क बढ़े अकाट्य होते थे । इसी समय Age of Consent बिलको सरकारने पास करना स्थिर किया । महात्मा तिलकने उसका धेर विरोध करना आरम्भ किया । उनका कहना था, कि हिन्दुसम्राजकी रीति और नियमोंमें हस्तक्षेप करनेका अधिकार सिवाय हिन्दुओंके किसी दूसरेको नहीं है, और खास कर एक विदेशी और विधर्मी जाति द्वारा, इसमें हस्तक्षेप होना

तो नितान्त ही अन्याय है । कुछ लोगोंको जो समाजमें सुधारके लिये बहुत ही अधिक उत्कण्ठित थे, उन्हें महाराज तिलकका यह विचार अच्छा न लगा; और पुनामें म० तिलकके विरुद्ध एक सनातनी, दूसरा नवीन दल खड़ा हो गया । महात्मा तिलकने एक स्कूल खोल रखा था, जिसमें लोगोंको कानूनकी शिक्षा दी जाती थी; पर वे इतने परिश्रमी थे, कि इतने कार्य होते हुए भी उन्होंने वेदके आदिकालपर एक अपूर्व महत्वशाली पुस्तक लिख डली । उसकी एक प्रति लन्दनमें होनेवाली अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेसमें भेजी गई । मेक्समूलर, और वेबर जैसे विद्वानोंको भी इस पुस्तकको पढ़कर मुग्ध होना पड़ा और सबने एक मुखसे उसकी प्रशंसा की ।

इसके बाद जब लो० तिलक १८९० ई०से राजनीति विषयोंमें प्रधानरूपसे भागलेने लगे, तब उन्हें कांग्रेसका भी कार्य करना पड़ा । उन्हींके यत्नसे बम्बई प्रादेशिक सभा पहले पहल बैठी थी । बम्बईमें जब हिन्दू मुसलमानोंमें बखेड़ा हुआ था, उस समय लोकमान्य अपना विचार स्पष्ट यह लिखा था, कि यह शगड़ा केवल सरकारकी कूटनीतिका फल है और सरकारकी इस नीतिपर कड़ी आलोचना की थी । वह आलोचना इतनी कड़ी थी कि सरकारकी इनपर तीव्र दृष्टि पड़ी; पर तौमी दो बार बम्बई लेजिस्लेटिव कौन्सिलके मेम्बर चुने गये और ये बम्बई युनिवर्सिटीके सदस्य तथा ग्युनिसिपल मेम्बर भी रहे । १८९१में ये पुना कांग्रेसके सेक्रेटरी चुने गये । कुछ लोगोंने



समस्त भारतवर्षीय सामाजिक सभाको कांग्रेस मण्डपमें ही करना निश्चय किया। म० तिलकको ये बातें पसन्द न थी, अतएव आपने कार्यकर्त्ताके पदसे इस्तीफा दे दिया, पर इस्तीफा देनेपर भी कांग्रेसके कार्यमें विशेषरूपसे सहायता दी।

१८९६ ई० में अकाल पड़ा। उस समय महात्मा लो० तिलकके कार्यमें लोगोंको मुन्धकार डाला। गरीब और दुखियोंके दुखको हटानेके लिये इस महात्माने कोई यत्न उठा न रखा। जगह २ पर सुलभ हुत्यार अन्न बेचनेवाली दूकानें खोलीं, उन्हें नि लोगोंके दुख देखने और उन्हें दूर करनेका उपाय सोचनेके लिये मोलापुर और नागपुर इत्यादि स्थानोंमें भ्रमण किया और लोगोंके दुखको हटानेका उपाय निश्चय किया। सरकारने उनके उपायोंको कार्यमें परिणत करनेकी अनिच्छा प्रगट की। जब पूनेमें पहले पड़ल प्लेगका आगमन हुआ तो सरकारकी कार्ये इ्योंसे लोगोंमें आतंक फैल गया। इस समय महात्मा तिलकने लोगोंको 'असीम सहायता' पहुँचाई। सरकारके कार्यकी निंदा होकर पूगी आलोचना की। जब कि सब लोग प्लेगसे भाग जा रहे थे, तब पूनेमें ही ठाप हटे रहे और अस्पताल खोल कर दसाए बटवाई।

छत्रपति शिवाजी महाराष्ट्रके बड़े प्रतापी वीर होगये हैं। हिन्दुस्थानके इतिहासमें उनका नाम सर्वदा श्रवणक्षरमें लिखा जायगा, पर लोगोंमें इस प्रकारकी अविद्या होगई है, कि बन्दी हिन्दुवीरोंका मन्दिर गिर रहा था और

कोई उसे मरम्मत करनेवाला भी नहीं। हमारे महाराष्ट्र वीर लो० तिलकसे मन्दिरकी बुरी अवस्था न देखी गई और मन्दिर मरम्मत करने और शिवाजीके नामको अनन्तक हृदयपर उचित स्थान दिलानेके लिये कटिबद्ध हो गये। उस समय महाराष्ट्रदेशमें प्लेगकी विशेष धूम थी; पर लो० तिलकके काममें प्लेग बाधा दे न सकता था, और शिवाजीकी जयन्ती १८९७ ई० में बहुत ही धूमधामके साथ मनाई गई, जोशीले व्याख्यान हुए। सारे देशमें अत्यन्त ही जोश फैल रहा था। इस जयन्तीकी कार्यवाही केशरीमें निकली थी।

ठीक इसी समय मि० रैन्ड और लेफ्टिनेन्ट ऐस्टकी हत्या हुई। एंग्लो इन्डियन पत्र तो पहलेसे ही लो० तिलकपर घात लगाये बैठे थे। और उन लोगोंको यह अच्छा मौका भी मिला। सबके सब कहने लगे, कि रैन्ड साहबकी हत्या 'केशरी'में निकले लेखोंके कारण हुई है। सरकारने भी इन एंग्लो इन्डियनोंकी बात मान ली और तिलक महाराजपर राजविद्रोहीका मुकद्दमा चलाया गया। वे ता० २७ जूनको पकड़े गये। प्रेसिडेन्सी मजिस्ट्रेटने हजार कोशिश होनेपर भी इनको जमानतपर छोड़ना मंजूर न किया। हार्डिगेर्टसे भी जमानतकी दरखास्त ना मंजूर हुई। २ अगस्तको हार्डिगेर्ट इनका मुकद्दमा पेश हुआ। फिर भी जजिस्ट्र तैयबजीके सामने जमानतके लिये दरखास्त दी गई। महाराजकी पेरवी उस समय मि० प्यू और दावर साहब जो पीछे हार्डिगेर्टके जन हुए-कर रहे थे। तैयबजीने जमानत मंजूर

कर ली। इस मुकद्दमेमें जो जुरी थे, उनमें ६ अंगारज और ३ हिन्दु-तानी थे। ३ हिन्दु-तानियोंमें से दो को निर्दोष बताया, पर ६ अंगारजोंने इनको दोषी बताया। जन-साहचरने अंगारज जुरियोंकी ही बात स्वीकार की और लोकमान्यको १८ महीनेके लिये जेल जानेका हुक्म दे दिया। प्रिंसी काउन्सिलमें आजकलके प्रसिद्ध मि० एस्कीथ, महाराज तिलकके वारिस्टर थे। बम्बईके इस मुकद्दमेमें महाराज तिलकने कानूनमें अपनी अपूर्व योग्यता दिखाई। कहा जाता है, कि जेम्स मि० एस्कीथ प्रिंसी काउन्सिलमें अपील करनेके लिये कागज लिखनेके लिये बैठे और महात्मा तिलक जेलसे भेजे हुए कागजात खोले, तो उसमें लो० की पेन्सिलसे लिखी हुई अपीलका एक मसौदा मिला। मसौदाकी पढ़कर सब कोई दंग रह गये। यद्यपि म० तिलकने बिना किसी फतुनकी पुस्तकका सहारा लिये हुए मसौदा बनाया था—तथापि वारिस्टर लोगोंकी रायमें इससे अच्छा मसौदा बनाना कठिन था। प्रिंसी काउन्सिलसे जब मुकद्दमा खराब हो गया तो मध्यमूलर साहब इस्यादिको न रहा गया। सबकी प्रशंसा के लिये महाराज तिलकके उपरोक्त 'योरियन' पुस्तकके कारण, उनपर बहुत श्रद्धा रखते थे; अतएव उनलोगोंने महाराजी विक्टोरियासे उनपर दया करनेके लिये प्रार्थना की। कुछ लिखा पढ़ोके बाद १ सप्टेंबर १८९८ ई० में महात्मा तिलक छोड़ दिये गये। १९-२० ई० में पेंडकी प्राचीनतापर इनकी एक पुस्तक निकली, जिसमें इन्होंने भूमि विद्या तथा अन्य

युक्तियोंसे सिद्ध किया था, कि वेदवादियोंका वास्तवस्थान पहले आकटिया प्रदेशमें याने एस्कीथके उत्तरी भागमें था। इस पुस्तककी भी अत्यंत प्रशंसा हुई। इस पुस्तकके निकलनेके थोड़े दिन बाद ही तिलकको एक बड़े ही अपमान जनक मुकद्दमेके जजकमें पड़ना पड़ा। यद्यपि इस मुकद्दमेके अन्तमें महाराजकी जीत हुई, और उनपर लगाई गई लांछनाएं सबकी सब झूठी साबित हुई; तथापि इस मुकद्दमेने तिलक महाराजको बहुत बड़े तारुदमे डाल दिया था। यह मुकद्दमा इस समय 'ताई महाराज-केस' के नामसे प्रख्यात है। श्री बाबा महाराज पूनाके एक सरदार थे और एक बड़े पुराने घाके थे। इनसे महाराज तिलककी गादी मित्रता थी। इनके राज्यमें बहुत कुराज हो गया था। जब ये मरने लगे तो एल विल लिख गये। उस विलके अनुसार उन्होंने महात्मा तिलक पर राज्यका कार्य-भार सौंपा और एक लड़का चुन कर अपनी रानीको गोद लेनेकी आज्ञा दी। महाराज तिलक राज्यका सुपबंध कर राज्यको बचानेकी जीनानसे कोशिश करने लगे, और उन्होंने रानीको खोसिस बहुत अधिक नहीं देनेका विचार किया। हर जगह लम्पट लोग होते हैं, अतः यहां भी बहुतोंने रानीका कानू मनेका यत्न किया। रानीको समझाया गया, कि यदि तुम अपने मनसे एक लड़का चुन कर अपने मन मुतानिक शर्तों पर गोद लो तो बहुत अच्छा होगा। अन्तमें १८ जून १९०३ में औरंगाबादमें एक लड़का चुन कर गोद लिया गया।

जब सब औरंगाबादसे लौटे तो उस रानीने दूसरीके फार्मे पड़ कर विलकी तोड़नेके लिये पूनाकी जमीनें नालिम दायर की । जब साहबने विलकी वे कानूनी और नाजायज समझा और विलकी रद्द कर दिया । पर उन्हें इतनेहीसे तमल्ली न हुई और जन महोदयने म० तिलक पर नालिमानीका मुकदमा चलावेका हुक्म दिया । इनका प्रथम लक्ष्य लोगोंकी श्रद्धा महाराज तिलककी ओरसे हटानेका था । महाराज पर सात प्रकारके दोष आरोपित हुए । हाईकोर्टसे विलका रद्द होना तो नाजायज समझा गया । पर फौजदरी न रुकी । फौजदारीसे महारामाजीको १८ महीनाकी सजा फिर हुई । अपील पर सप्तसत्त जन लक्ष्म साहिबने सजा घटा दी । जजका कहना था कि महाराज तिलकका व्यवहार और आचरण नितांत शुद्ध है और उन्होंने कुछ भी छल न किया था । हाईकोर्टने इस सजाको भी हटा दिया और खुले शब्दोंमें तिलकको पूर्ण रूपसे निर्दोष और शुद्ध आचरणका स्वीकार किया ।

इस दुलके फेरेसे निकल कर लोकमान्य तिलकने अपनेको एकदम देशप्रेममें लगा दिया और राजनीतिक सुधारकी ओर दत्तचित्त हुए ।

सन् १९०६ में बंगविद्रोह हुआ । बंगालवासीने लाख किल्लाहट मचाई । पर गवर्नमेंट दमसे मस त हुई । देशमें घोर अशांति फैल गई । इस मौके पर महारामा तिलकने लोगोंको अपनी गतिविधि सुधारनेके लिये कहा । उनको विश्वास हो गया था कि सिलमगीसे काय्य न

होगा । केवल सरकारकी कृपाके सहारे हमलोगोंकी माताकी वृत्ति न होगी, अतः यह नितांत आवश्यक है कि लोग अपना काय्य स्वयं देखें और दशा सुधारें, तब कहीं लोगोंकी भलाई होगी । इन सब विचारोंसे बनारसकी कांग्रेसमें जिसके सभापति गोखले महाशय थे, यह पास हुआ कि विदेशी माल न व्यवहार किया जाय । क्योंकि इसी कार्यसे हमलोगोंकी दशा सुधार सकती है । १९०६ में कलकत्ता नगरमें कांग्रेस बैठनेकी बात थी । श्री विपिनचन्द्र पालने सभापतिके लिये लोकमान्यका नाम लिया और उसके लिये यत्न करने लगे । लोकमान्यका विदेशी बायकाटो बड़े प्रशंसी थे । अतः विपिन बाबूको सभापतिके लिये लोकमान्य नाम लेते देख कर माडरेटोंके देवता काज कर गये । वे लोग लोकमान्यके कठिन तेजकी किसी प्रकार कांग्रेससे हटा कर अलग कर देनेका विचार करने लगे । अंतमें उन्होंने चालाकीसे बृद्ध दादाभाई नौरोजीको प्रेसिडेंट बनाना चाहा । जब यह बात लोगोंकी मालूम हो गई, तब लोकमान्यके लिये लोगोंने यत्न करना छोड़ा ; पर इतना होने पर भी कलकत्ता कांग्रेसमें बायकाटके ऊपर बहुत ही नोशीली व्यवृत्ता हुई और अंतमें फिर बायकाट करनेका कांग्रेसमें प्रस्ताव पास हो गया । दूसरे साल नागपुरमें कांग्रेस होनेवाली थी ; पर जब नर्मदालबालोंने दत्ता कि यहां पर महाराज तिलकका सभापत बहुत अधिक है, तब वे लोग चाल चढ़ कर कांग्रेसको सुस्त ले गये, जहां पर नर्मदालक प्रधान सर किरोनसाह मेहताका प्रभाव



अधिक था । वहां पर वे लोग सर रासबिहारी घोषको समापति बनाना चाहते थे, पर यह तिलक महाराजके दलको पसंद नहीं था । अन्तमें नतीजा यह हुआ, कि सभामण्डपमें ही कुरसियां तक चंभ गई और बहुत हल्लाके बाद कांग्रेस नहीं हुई । इसके बाद १९१६ तक कांग्रेससे तिलक महाराजका दल निसका दूसरा नाम राष्ट्रीय दल भी है, अलग रहा ।

इन सब बातोंके कारण महा० तिलक नरम दलवालोंकी आंखोंके कटि हो रहे थे । ये लोग किसी प्रकार इन्हें राजनीतिक क्षेत्रसे हटाने पर कटिबद्ध हो गये । जब नरम दलवालोंकी यह हालत थी, तो सरकारके विचारके विषयमें तो कुछ पूछना ही व्यर्थ है । उन लोगोंका मनोरथ भी तुरत सफल हुआ ।

१९०८ ई०के अप्रेलमें मुझफरपुरमें खुदी राम बोझने दो अंगरेजोंपर बम चलाया । उनपर मुकदमा चला और उन्हें फांसी दी गई । उस समय सरकारने अत्यन्त भीषण रूप धारण कर लिया था । कई पत्र बंद कर दिये गये, बहुतोंके पत्रोंके सम्पादक जेलोंमें डूब दिये गये । वर्षभरमें 'फाल' इत्यादि पत्रके सम्पादक पर मुकदमा चलाया गया । ऐसी हालतमें सम्पादक श्रेष्ठ जनताके हृदयसम्राट् म० तिलक क्या बन सकते थे ? ता० १२ जूनको यह निश्चय हुआ, कि उनपर भी मुकदमा चलाया जाय । ता० २४ जूनको ६ बजे सन्ध्याके समय बम्बईके सरदार गृहमें (वही गृहमें जहापर वे सर्वदलके लिये अखण्ड महा निद्रामें ता० १ फो सो गये) पकड़े गये । उसी दिन पूनामें उनके घर और

'केसरी' ऑफिसकी खानातलासी ली गई । ता० २८ को महात्मा तिलक प्रेसिडेन्सी मैजिस्ट्रेटके पास लाये गये । प्रेसिडेन्सी मैजिस्ट्रेटने जमानत पर छोड़ना कबूल नहीं किया और महाराजको जेलमें भेज दिया । पहले उनपर केसरीमें लिखे एक लेखके कारण मुकदमा चलानेका विचार किया गया था; पर जब यह देखा गया, कि इससे मुकदमा कमजोर पड़ता है तो 'केसरी' में पड़लेके प्रकाशित लेख हट्ट निकाले गये और मुकदमा चलानेके कारण वे लेख शामिल किये गये । १९ जूनको हाईकोर्टमें उनपर मुकदमा चलाया गया । हाईकोर्टने भी उनको जमानत पर छोड़ना नामंजूर किया और इसकी पुष्टि यह कारण दिखा कर की गई कि मि० तिलकको पहले मुकदमें जस्टिस दावरका जमानत पर छोड़नेका विचार जो था वह ठीक नहीं था । सरकारी वकीलने अब फिर पुरानी चाल चली और अपनी सम्मति दी कि मुकदमा जूरी द्वारा निर्णय किया जाय । तिलक महाराजके वकीलोंने लाख आपत्ति की; पर उनकी एक भी न सुनी गई । और मुकदमाकी जांचके लिये कुछ अंगरेज जूरी नियत किये गये । अंगरेज जूरी "केसरी" के उन लेखोंको जिनके कारण मुकदमा चला था, नहीं समझ सकते थे; क्योंकि वे लोग मराठी नहीं जानते थे; पर वहां तिलक महाराजको जेल देना ही प्रबान लक्ष्य था; वहां ऐसी ऐसी बात क्यों कर सुनी जाती ? खैर मुकदमा चला और १९ जुलाईको मुकदमा आरम्भ हुआ ।

अवश्य महाराज तिलकने किसी वकीलका



रखना व्यर्थ समझा और मुकुटमेकी पैरवी आप ही करने लगे । पहले ही कह अये हैं, कि जो लेख मुकुटमेकी जड़ थे, वे मराठीमें थे और मुकुटमेके लिये उसका उलथा अंगरेजीमें हुआ था । मुनासिब था, कि जिस सरकारी ओफिसर पर लेख उलथा करनेका भार था, वही गवाही देता जिससे लेखके उलथा करनेमें जो गलती हुई हो वह साबित की जाय, पर सरकारने ऐसा करना पसंद न किया और एक दूसरे आदमीको ही जिसका नाम "जोसी" था, जिरहके समय उपस्थित किया । जिरहमें यह बात साबित की गई, कि उलथा भ्रमपूर्ण और गलत है, इससे यथार्थ मतलब न निकल उल्टा ही मतलब निकलता था; पर इसकी परवाह किसीको न थी । पूनामें खानासलामीके बाद एक पोस्टकार्ड मिला था, जिसमें दो दम बनानेके नियम बतानेवाली पुस्तकोंके नाम थे । वह गवाहीमें शामिल किया गया और केवल यही पत्र इसके लिये काफी समझा गया कि म० तिलककी इच्छा सरकारसे विद्रोह करने या करानेकी थी । उनसे उत्तर देनेका हक छीन लिया गया । महात्मा तिलक लाख दिखाने रह गये, कि जिन जिन बातोंका समावेश उनके अखबारमें था, वही बातें और भी दूसरे देशी और अंगरेजीके अखबारोंमें भी थीं; पर कोई सुननेवाला न था । दो दिन मुकुटमा होता रहा । तिसरे दिन महाराज तिलक अपने ऊपर किये गये दोषारोपणका खण्डन स्वयम् करने लगे । ४ दिन तक आपने बहस कर, कई तर्क दे, यह साबित किया, कि हम निर्दोष हैं ।

कुल ११ घंटा तक उन्होंने बहस की; उन्होंने जूरीसे यह याद रखनेको कहा, कि आप लोगोंके राजनीतिक विचार मेरे एकदम प्रतिकूल हैं, वह जूरियोंसे दया नहीं चाहते थे; पर इन्साफ अवश्य चाहते थे । महात्माने जूरियोंसे कहा, कि इंग्लैन्डमें जूरी लोग बहुत ही उदारतासे काम लेते हैं । आप लोग भी उस उदारताको न भूलियेगा । उन्हींके ऐसा लेख और विचारकी स्वतन्त्रताको अपनाये रखियेगा; पर उनपर तिलकके कहनेका कुछ असर न पड़ा और अन्तमें ९ जूरियोंने जिनमें ७ अंगरेज और दो पारसी थे, तिलक महाराजको दोषी ठहराया । तिलक महाराजको ६ वर्ष कैद और १०००) हजार जुर्मानेकी सजा हुई । इसपर तिलक महाराज हताश न हुए; बल्कि कहा:—

" जूरी मुझे दोषी मंले कहें; पर मैं दावेके साथ कहता हूं, कि मैं निर्दोष हूं । संसारमें मुनुष्यके भाग्य विधातकी कोई दूसरी ही शक्ति है । शायद ईश्वरकी इच्छा है, कि हमारा जो उद्देश्य है, उसकी सिद्धि स्वयम् मेरे द्वारा होनेके बदले हमारे वह सहनसे ही अधिक होगी । "

यह वाक्य बीरोंके है, और तिलक महाराज की यह वीरतापूर्ण अभयवाणी चिरकाल तक भारत सन्तानकी कानोंमें गूंजती रहेगी । तिलक महाराज यथासाध्य शत्रु महाराष्ट्रसे बाहर हटाये गये और उनको सुदूर बर्मोके मंडाळे जेलमें स्थान मिला । इसी बीचमें सरकारने उनपर सत्परिश्रम कारागारके बदले अपरिश्रम कारागारमें रदनेकी आज्ञा निकाली । एक हजार-



रका, जुमाना भी माफ हो गया। प्रिबी कौन्सिलमें अपील हुई; पर अपीलके विषयमें सलाह करनेमें केवल पांच मिनट लगा और दस लाइनमें फासला लिख कर सुना दिया गया। अपील नामञ्जुरी हुई।

तिलक महाराज जेलमें थे; पर उनकी आत्मा भारतमें सदा धूमकर भारतको जागृत कर रही थी। लोग इस आशपर कि तिलक महाराज केवल ६ ही वर्षके लिये गये हैं, उनके उद्देश सिद्धिमें दत्तचित्त थे। ६ वर्षके बाद वे कारागारसे बाहर आये और साथ अपनी विद्वत्ताकी अपूर्व निसानी भी लेते आये। उनकी जेलमें लिखी हुई प्रस्तुत 'गीता रहस्य' उनके पाण्डित्यका एक श्रेष्ठ नमूना है। भारतसंतान इसको पढ़कर जन्मजन्मान्तर तक अपना लोकपरलोक बनावेगी। जेलसे निकलने पर उनका स्वास्थ्य बुरा तो अवश्य ही हो गया था; पर उनके जोश और आशामें तनिक भी कमी नहीं पहुंची थी।

उनके जेलसे अनेक पहले ही उनकी सह-धर्मिणी इस लोकसे, महाराजके लिये उस लोकमें स्थान बनानेके लिये, प्रस्थान कर गई थी। इसी समय मि० एनीबेसेन्ट कांग्रेसके फूटको हटानेके लिये नी मानसे यत्न कर रही थी; आप स्वराज्यके लिये तन मन दोनों न्योछावर कर चुकी थीं। महात्मा तिलक १९१४में यहां आये; एनीबेसेन्टकी सहायता, समयका जोश, महाराजके प्रभावका फल यह हुआ, कि १९१६में लखनऊमें होनेवाली कांग्रेसमें महाराजने अपने दल सहित कांग्रेस मन्टपकी सु-

शोभित किया। उस समयकी शोभा अपूर्व थी। लोगोंमें उत्साहकी नदियां उमड़ रही थीं, लोगोंमें अपने भूल हुए, छीने गये नेताको फिर सामने देख अपनेको धन्य माना; पर महाराजकी लोगोंकी तारीफ या निंदाकी कोई चिंता न थी। वे फिर अपने राजनीतिक सुधारके कार्यमें लगे।

जगह जगह घूम कर वे स्वराज्य संघके लिये चंदा इकट्ठा करने लगे और लोगोंमें स्वराज्यकी चंचल पूर्ण रूपसे फैला दी। पाठक जानते होंगे, कि इसी समय एनीबेसेन्ट भी मद्रासमें इसी धूनमें थी। सरकारको यह बात फिर असह्य हुई। उसने इधर तो एनीबेसेन्टको नजरबंद किया। उधर, तिलक महाराज पर ४००००) रुपयेकी जमानत, इस वास्ते देनेकी कहा, कि फिर वे जो शोले व्याख्यान न देने पावें। सहर्ष कहना पड़ता है, कि इस जमानतके मुकदमेमें बम्बई हाईकोर्टने अधिक उदारता दिखाई और महाराजको जमानत देनेसे बरी किया। महाराज तिलक पूर्ववत् कार्य करते रहे। १९१७ की कांग्रेसमें आपका स्वराज्य पर जोरदार भाषण हुआ। आजकल लोकमान्य तिलक जनताके हृदयके भूषण हो रहे थे, महाराज ही कांग्रेस हो रहे थे, उनका विचार ही कांग्रेसका विचार था। जनता उन पर किस प्रकार श्रद्धा रखती है, उसका अंदाज केवल इसी बातसे लग सकता है, जब होमरूलके डेपुटेशनके खर्चाके लिये उन्हें विलासत जाना पड़ा, तो एक महीनेसे कम समयमें ही दो लाख रुपये मिल गये। मार्च १९१८ ई०

में महात्मा तिलक होमरूल डेपुटेशनके समापति हो, मद्रास होते-इंग्लैंडके लिये रवाना हुए। यहाँ यह कह देना आवश्यक है, कि तिलक महाराज परानी रतिके शोषक थे और उन्हें समुद्र यात्रा मान्य नहीं ली थी वे इङ्ग्लैंड गये। जानेका कारण यह बताया, कि-यदि एक हमारे अतिच्युत होनेसे हिंदुस्तानका भाग्य फिरे तो हमें यह भाग्य है। यह डेपुटेशन भग्यवश इङ्ग्लैंड न जा सका। जब ये लोग कौलम्बोमें ही थे, तभी विलायत जानेकी मनाही वहाँकी सरकारसे आई और वे लोग आगे न जा सके।

१९१८ के अप्रैलमें जर्मनी बड़े वेगसे आगे बढ़ रहा था और सर्वत्र घोर आतंक छा गया था। इङ्ग्लैंडके मंत्रीने वायसरायके पास पत्र भेजा और उन्हें युद्धमें अधिक मदद देनेकी लिखा। देहलीमें देशी राजाओं, राननीति कोंकी एक सभा हुई; पर उपमें ऐनीबीट और तिलक न बुलाये गये। देशभरने इसपर आपत्तिकी, जब बम्बईके गवर्नर वेल्लिंगटनने बम्बईमें सभा की तो तिलक महाराजकी भी बुलाया। प्रथम भाषणमें गवर्नर पाहवने होमरूलपर कटाक्ष किया, और जब तिलक महाराज स्वयं बोलने लगे तो छेड़छाड़ शुरू हुई। इस पर तिलक महाराज अपने अनुगामियों सहित सभा छोड़ बाहर चले गये। मद्रास गान्धीजीके समापतिवर्षमें बम्बईमें गवर्नरके इस कुचारका घोर विरोध किया गया।

इसके बाद ही ना सुधारयोजनापर मोन्टेगू चेम्सफोर्ड रिपोर्ट निकली, तब तिलक महाराजने

इसको एकदम नापसंद किया। इसपर पुनर्कि मजिस्ट्रेटने इन-वेक्वृता देनेसे मना किया; पर यह मनाही बम्बईके स्पेशल-कांग्रेसके समय दृष्टा ली गई थी। १९१८के दिसम्बरमें लोकमान्य इंग्लैंड गये और वहाँपर सर-बेलेन्टाइनपर, उनकी लिखी हुई 'इन्डियन अन्वेस्ट' नामकी पुस्तकमें अपनेपर किये हुए आक्षेपोंके कारण मुकद्दमा दायर किया। मुकद्दमेमें जुरी लोंकी राय म० तिलकसे बरखलाफ हुई और मुकद्दमा खारिज किया गया। जिस समय महाराज इङ्ग्लैंडमें ही थे, उस समय हिन्दुस्थानमें देहलीकी १९१८की कांग्रेसके समापति एक मतसे आपही चुने गये; पर आरने इङ्ग्लैंडमें सुधार सम्मन्धी महत् कार्य छोड़ समापति का आसन ग्रहण करनेके लिये हिन्दुस्तान आने न चाहा। गान्धीजीने कांग्रेसमें महाराजका जो स्वागत और भाग्य हुआ उसे देखकर कहना पड़ता है कि मरतारपके एक ही प्रधान ने। आप मने जाते थे।

इङ्ग्लैंडमें रहकर आरने हिन्दुस्थानके प्रश्नोंकी ओर वहाँकी जनताका ध्यान आकृष्ट किया और वहाँके मजदूरदलकी, जो आजकल बहुत प्रभावशाली हो रहा है अपनी ओर सशानुभूति लीं। यह केवल-उन्हींके यत्नका फल है कि आज मजदूर दल हिन्दुस्थानके ठित चिन्तनमें इस प्रकार लग रहा है। इङ्ग्लैंडमें महाराजने लासो पेपलेट चढ़वाये। वहाँकी कांग्रेस कमीटिमें जीवप्रदान कर नई रीतिसे उसका सुधार किया। वहाँपर अपना गम्भीर विचार उवाच्यन्ट कमीटीके सामने पेश



किया। उन्होंने प्रेसिडेन्ट विलसन और पीस कौन्फरेन्सके पास हिन्दुस्तानकी सच्ची हालत लिखकर उनका ध्यान हिन्दुस्थानकी गिरी दशाकी ओर आकर्षित किया। लाला लाजपत-राय जो स्वराज्यका बल अमेरिकामें बढा रहे थे, महाराजसे बहुत सहायता पा चुके हैं।

महाराजके इस प्रकारका कार्य और जनतामें इस प्रकार आदर देख बहुतसे लोग उनसे कुद गये थे। मा० सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, मि० ऐनी वेसेन्ट, श्रीनिवास शास्त्रीने कांग्रेसपर श्रीमान् तिलकका इतना प्रभाव देख और यह देखकर कि वहांपर केवल तिलक महाराजके ही पटपोषण करने वाले हैं और इन लोगोंके विचार लोग हृदयङ्गम नहीं करते, कांग्रेसको इधर २ वर्षसे छोड़ कर एक नया दल कायम किया है; पर आज कांग्रेसमें महाराजके काण्ठ नवीन जोश आ गया है और कांग्रेस भारतीय जनताका एक सजीव दल हो गई है। सरकार भी कांग्रेसके विचारोंको अब अधिक महत्व देने लगी है। यह केवल महात्मा तिलकके प्रभावक फल है। उनके विचारमें भीख मांगनेसे कुछ नहीं मिलता, जो लेनेका बल रखता है, वही पा सकता है। जो बदला ले सकता है, इसीके साथ इन्साफ किया जाता है। महात्मा तिलकने भारतीय जनतामें जिस बलका संचार किया है, उसके सहारे आज हमलोग कुछ कुदने फांदने भी लगे हैं।

सोलापुरमें जब बम्बईकी प्रादेशिकसभा हुई थी, तब उस समय कुछ नरमाल वलोंने यह फइ कर कि महात्मा ममानसुधारके पक्ष-

पाती नहीं, उनका प्रभाव घटानेका यत्न किया। बहुत रुपया खर्च कर बहुतसे वोटर सभामें लाये गये थे, मि० ऐनी वेसेन्ट भी वहांपर अपनी ओजस्विनी भाषासे लोकमान्यके विचारका खंडन करनेके लिये पधारी थी; पर महाराजके ऊपर लोगोंकी श्रद्धा इतनी थी और उनके विचार इनने गम्भीर होते थे, कि जिस समय वे व्याख्यान देकर बैठे सभाभवन तालि योंकी गड़गड़ाहटसे गूंन उठा, और लोगोंकी कौन पूछे, जो लोग केवल लोकमान्यके विरुद्ध वोट देनेको कमर कस कर आये हुए थे, वे भी महात्माके विचारोंसे सहमत हुए।

लोकमान्य तिलककी अवस्था गत २३ जुलाईको ६९ वर्षकी थी। ६५ वीं जयन्ती मनानेके बाद वे जैसेही बम्बई पहुंचे उन्हे कालरूप रोगने आ घेरा और ता. १ ली अगस्तको उन्होंने भारत माताकी छोड़ परलोकमें हिन्दुस्तानकी फरियाद सुनानेके लिये महायात्रा की।

“पाटलिपुत्र”

हमारे उत्तमोत्तम ग्रन्थ।

आदि पुराण	१६)
उत्तर पुराण	१०)
दोनों एक साथ	५॥)
पंचाध्यायी टीका	५॥)
धर्म-प्रश्नोत्तर	२)
जिनशतक	॥)

मिलनेका पता—

लालाराम जैन,

महारागंज इंदौर।

जैन धर्म क्या है ?

हे० कामताप्रसाद

जैन, अजीवज ।

जैन धर्म एक स्वतंत्र वैज्ञानिक धर्म है । वह आज्ञाप्रधान धर्म नहीं है । और न जैन धर्म अपनेको ईश्वर प्रणीत धर्म प्रदर्शित करता है । सुतरां उसके तत्वादि वैज्ञानिक ढंग पर होते हुए उन महात्माओं द्वारा प्रतिपादित किए गए थे जिन्होंने केवलज्ञान अथवा सर्वज्ञता इन तत्वादिके ही मथन करनेसे प्राप्त की थी । ऐसे वैज्ञानिक ढंग पर न आज्ञाप्रधान ही की और न पुराण आदिकी ही पहुंच है । और यह कहना तो निरर्थक ही है कि विज्ञान अथवा वैज्ञानिक ढंगसे ही शीघ्र और निर्भ्रंति फल प्राप्त होते हैं ।

जैन धर्मके समझनेके लिए यह आवश्यक है कि पहिले हम 'धर्म'का अर्थ समझ लें । हम निशचिन धर्म २ कहा करते हैं परन्तु उसके पथार्थ भावको समझनेमें असमर्थ हैं । भला जब इतने वर्तमान प्रचलित मत ही विविध विविध प्रकारका बोधा धर्म निरूपण करें तो उपर्युक्त असमर्थतामें संशय ही क्या है ?

साधारणतया संसारमें चक्र कटते हुए हम सदृश जीवोंको सांसारिक दुःख और पीडाओंसे हटा मुक्तिके सच्चे मार्गमें लगानेको धर्म कह सके हैं । सर्व प्राणीसमुदाय भी-मनुष्य, पशु, पक्षी आदि-प्रत्येक वस्तु और कार्यमें सुखकी

वाञ्छा करते हैं । संसारमें ऐसा कोई जीव नहीं है जो अगाध नीचन और किसी न किसी रूपमें वास्तविक आनंदका अगिलापी न हो । धर्म ही एक ऐसा विज्ञान है जो इसकी दवा है । धर्मसे ही हमें वह सुख और आनंद मिल सक्ता है जिसके लिए प्राणीमात्र लालायित हो भटक रहे हैं । परन्तु विस्मय है कि किन्ने ही प्रचलित धर्म केवल आज्ञाओं और निरर्थक गुप्त समस्यायों पुराणादिकका निरूपण कर ही चुप हो रहे हैं जब कि इनके स्थानमें वैज्ञानिक ढंगकी आवश्यकता है । यह पहिले ही दर्शा दिया है कि विज्ञान (Science) ही एक ऐसा साधन है कि निससे शंकाएं शीघ्र और निर्भ्रंतिरूपमें दूर कर दी जा सकती हैं और इक्षित पदार्थकी सिद्धि हो सकती है । जैन धर्ममें अन्य धर्मोंसे यही विलक्षणता है कि वह एक शुद्ध निर्भ्रंति, और अपूर्व विज्ञान है और न उसमें निरर्थकरीतियोंका ही निरूपण है और न भयोत्पादक पूना आदिसे ही पूर्ण है । जैनधर्ममें अंधश्रद्धाका भी अभाव है । वह अपने अनुयायियोंको प्रत्येक तत्वों न्यायपूर्ण परीक्षाकी कसौटी पर कसकर और उनके यथार्थ भावको समझ कर ही श्रद्धान करनेकी अनुमति देता है ।

प्रारम्भमें जैनधर्ममें सर्व-प्राणी-समुदाय वृषित सुखके यथार्थ रूपका निरूपण है । यद्यपि कुछ कालके लिए विषय सुख इन्द्रियोंको साना सी पहुँचा देते हैं परंतु यह तो प्रत्यक्ष ही है कि इन्द्रियजनित विषय सुखोंसे जीवोंकी तृप्ता नहीं बुझती । इन्द्रियजनित सुख पूर्णतया क्षण-मंगुर हैं अन्य वस्तुओं और देहधारियोंके मेल



पर निर्भर है। इनकी प्राप्ति दुःख पूर्ण है और अंतु भी दुःखदायी । आपसमें वैमनस्योत्पादक है। और वृद्धावस्थामें अथवा इन्द्रिय-शिथिलता पर पूर्ण अशांतिके दाता है । निज व्यक्तिने अपनी आंतरिक इच्छाओं पर विचार किया होगा तो उसे विदित हुआ होगा कि वह विषयसुख उसे उसके इच्छित पदार्थ अथवा सुखकी पूर्ति कर शांति प्राप्त नहीं कराते । इनसे उसकी अशांति उत्तरोत्तर बढ़ती ही जाती है । यथार्थमें जिस सुखकी प्राणीमात्र रक्षा करता है वह सुख ईश्वरीय सुखके सदृश अक्षय, अपरिमित है तथैव आत्माको सुखदा उत्पादक है । वह इन्द्रियलुपताकी पूर्तिके सदृश नहीं है । वह अपूर्व आनंद अथवा सुख है ।

यह अपूर्व आनंद न क्षणभंगुर ही है और न इन्द्रियजनित सुखके सदृश दुःख अथवा पीड़ा उत्पादक । यह आनंद आत्माका ही निजी स्वभाव है । यद्यपि अज्ञानतमके कारण वह प्रकट नहीं है । इस वक्तव्यकी सत्यताका प्रमाण मनोवाञ्छाकी पूर्तिमें हमारी आत्माको सुखका अनुभूत स्वतः ही हृदयसे बाह्य इन्द्रिय साहाय्यके बिना ही अनुभूत होनेमें है । गंभीर विचार करनेसे ऐसा सुख पूर्ण स्वतंत्रतामें ही प्रदर्शित होता है । वस्तुतः जब कभी भी आत्मासे यह आच्छादित वण अथवा तमका अभाव ही जायगा तब ही स्वाभाविक आनंद झलक उठेगा । संसारी आत्मा स्वकृत्योंसे पूर्ण है अतः इन बाह्य बोधा चढ़ानेवाले कार्योंसे उसे भारस्वरूप दुःखपूर्ण प्रतीत होते हैं । इन पर पदार्थोंके क्षय होनेपर आत्माको यथार्थ सुख अर्थात्

स्वतंत्रता (मोक्ष) प्राप्त हो जाती है जिसकी कृपासे आत्मा वास्तविक आनन्दका रसास्वादन करती है । अन्ततः अत्र यह प्रत्यक्ष है कि इन बाह्य भारस्वरूप पदार्थोंमें ही आत्माका स्वाभाविक आनन्द प्रदर्शित होता है और यह सुख स्वाभाविक होनेके कारण अक्षय है ।

अज्ञान ही वह वस्तु है जिसके वश हो आत्मा स्वाभाविक आनन्दके उपभोगसे वंचित रहती है । कठिनातासे सहस्रां प्राणधारियोंमें कोई एक मिलेगा जो इस स्वाभाविक आनन्दके स्वरूपकी झलकसे भिन्न हो, नहीं तो सब ही मनुष्य अपने इन्द्रियोंकी बाह्य वस्तुओंसे इस स्वाभाविक आनन्दको प्राप्त करना चाहते हैं । परन्तु यह बाह्य वस्तुसमुदाय अपने स्वभावसे ही उसे देनेमें असमर्थ हैं । यदि मनुष्य अपने आन्तरिक भावोंपर ही विचार करे तो भी उसे विदित हो जाय कि जिस समय सच्चा आनन्द अनुभवगोचर होने लगे उसी समय उसकी पूर्ण मुक्ति हो जाय । आत्माके स्वाभाविक आनन्दके स्वरूपकी अनिभिन्नता अमानकारी ही आत्मा और सच्चे सुखके बीचमें रोड़ा है । अतः ज्ञान ही सच्चे सुखका मार्ग है । आनन्दके स्कूलों और कालिनेमें जो ज्ञान सिखाया जाता है उससे यह सच्चा ज्ञान विशेष समझने योग्य और पूर्ण है । इस सच्चे ज्ञानमें उन वस्तुओंका स्वभाव और प्रकृतिकी उन शक्तियोंका वर्णन है जिससे आत्माका स्वाभाविक आनन्द नष्ट हुआ है और पुनः प्राप्त हो सकता है । अन्य-चाहे कोई ज्ञान मनुष्यको हितकर भी हो परन्तु सच्चे सुखके अभिलाषीके लिए



यही ज्ञान अभीष्ट एव श्रेष्ठ है ।

इस ज्ञानके मुख्य सात ग्राह्य आवश्यक्रीय पदार्थ हैं, जिनको जैनागममें तत्त्व कहते हैं । ये इस प्रकार हैं (१) जीतव्य अथवा चेतन पदार्थ अर्थात् जीव तत्त्व (२) अचेतन अर्थात् अजीव तत्त्व (३) आश्रवतत्त्व अर्थात् आत्मा में पुद्गलका जाना (४) बध तत्त्व (५) सवर तत्त्व (६) निर्जरा और (७) मोक्ष तत्त्व । इनका विशेष वर्णन निम्न प्रकार है —

(१) जीव तत्त्व एव जीतव्य पदार्थ है और वह वातत्वमें परमोत्कृष्ट चेतना स्वरूप है । उसकी उत्पत्ति किसी दृष्टिसे भी पुद्गलसे नहीं है । स्वभावतः जीव तत्त्व सर्वदर्शी और सर्वानन्द पूर्ण है तथा अपरिमित अतुल और अक्षय बल-वीर्य सयुक्त है । जैसे अन्य सर्व पदार्थ अनादिनिधन है वैसे ही जीवतत्त्व है यह अमूर्तक है इसलिए इन्द्रियोंद्वारा जाना नही सक्ता है । परन्तु दूसरी तरफ पूर्णतया निराकार भी नहीं है क्योंकि जितने पदार्थोंकी सत्ता सिद्ध है उतने समस्त पदार्थोंकी साकार होना आवश्यक है । जीव सर्वत्रसे सत्तामें है । और सर्वत्रसे ही पुद्गलसे सम्बन्धित है । इस कारण अपने स्वाभाविक गुण अनन्त ज्ञान, अनन्त बल और अनन्त सुखके उपभोगसे वंचित है । सम्प्रति चारित्रिके अनुसार वर्तन करनेसे उन मलरूपी शक्तियोंका क्षय होजाता है जो आत्मा के चार अनन्त चतुष्टय—(१) अनन्तदर्शन (२) अनन्तज्ञान (३) अनन्तसुख (४) अनन्तबल—जानक गुणको प्रकट नहीं होने देते हैं ।

(१) अजीव तत्त्व चेतना रहित है और

पाच प्रकारका है (१) पुद्गल (२) धर्म (६) अधर्म (२) आकाश और (४) काल । जैन धर्मके अनुसार सृष्टिका कार्य अथवा विकास इन पाच अजीव पदार्थोंके एक या ज्यादाके और जीवोंके अभावमें नहीं हो सक्ता है । आकाश स्थान देनेके लिए आवश्यक है तो काल भी उतना ही चलाव-उड़ावके लिए आवश्यक है धर्म और अधर्म चलनेमें व आकाश ग्रहण करनेमें क्रमशः सहकारी हैं । पुद्गल शरीरोंकी सामग्रीका देनेवाला है और जीव जीतव्य ज्ञान और सुखोपभोग करने हेतु आवश्यक है । इन छ द्रव्योंका वर्णन जैनाचार्यों ने जैन ग्रन्थोंमें विशेष रूपसे किया है अतः यहाँ उनका वर्णन करना उचित नहीं है ।

(२) तत्सरा तत्त्व आश्रय है । आत्मा में कार्माण पुद्गल वर्णणाओका आश्रित होना अथवा बानेका नाम आश्रय है । आश्रयके उद्धाररूपमें आत्मा पुद्गल परमाणुओंको रत ही आकर्षित करने लगता है और इसके विविध कशायों वश ये परमाणु आत्मासे मिल जाते हैं । जिससे आत्माके निजगुण ढक जाते हैं और बध बध जाता है । जैनधर्म आत्माको अनादिसे ही इन कर्मोंके आश्रय और बधके कारण दूषित मानता है जिसके कारण जीवात्मा अनादिसे ही जन्ममरण धारण कर, भ्रमण करता फिर रहा है । यह कर्मबध आत्मा और पुद्गलके मेलसे होने है । और इन्हींसे जीव अपने स्वाभाविक पूर्णता और रतत्रासे हाथ धो बैठता है । इस प्रकार एक वषयुक्त-कर्म जमीरोंसे जकड़ी हुई आत्मा उन



चिड़ियाके सदृश है जिसके पंख सी दिए गए हों, जिसके कारण वह उड़ नहीं सकती है। आत्मा अथवा जीव, चिड़ियाके तरह वास्तवमें स्वतंत्र है। परंतु पुद्गलके सम्बन्धके कारण अपने पंख कटे हुए सा समझता है और अपने स्वाभाविक सुख व स्वतंत्रताका उपभोग नहीं कर सका है।

(४) बंध आत्मामें कर्म वर्गणाओंका आश्रयित होकर काल स्थितिके लिए मिल जाकर ठहर जाना ही है जैसा ऊपर वर्णन कर चुके हैं।

निर्वाण अथवा मोक्ष प्राप्त करनेके पड़िले इन कितने ही प्रकारके बंधनोंको तोड़ना ही पड़ता है।

(५) संवर तत्त्व आश्रयका प्रतिकारक है अर्थात् आत्मामें कर्ममलको एकत्रित होनेसे रोकता है। प्रत्यक्षतः जब तक आत्मसे कर्म बंधकी पुद्गल वर्गणाएँ दूर नहीं कर दी जायगी तब तक मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती है। अतः संवर अर्थात् हर समय आत्मामें आनेवाली कर्मवर्गणाओंको आश्रयित न होने देना मुक्ति प्राप्त करनेके मार्गमें प्रथम श्रेणी अथवा पादुकाके रूपमें है।

(६) भव अथ पुद्गल वर्गणाओंका आश्रय होना रुक जाता है तब दूसरी श्रेणीमें उन पूर्व संचित कर्मवर्गणाओंको एक एक कर निकालना रह जाता है। यही दूसरी श्रेणी निर्भर तत्त्व है। जब समस्त कर्मबंध तोड़ दिए जाते हैं और आत्माका पुद्गलसे किसी प्रकारका संबंध नहीं रहना तब आत्मा अपने स्वाभाविक गुण स्वतंत्रता, सुख और केवलज्ञानका अनुभव करती है।

(७) वां और अंतिम तत्त्व आत्मके वास्तविक उद्देश्यकी पूर्ति है। अर्थात् आत्मके निज स्वरूपका स्वतंत्रता, मोक्ष अथवा सुखका पा लेना ही है। इस मोक्ष तत्त्वको आत्मा अपने साथ लगे हुए समस्त पुद्गलोंके दूर करने पर प्राप्त करती है।

इस प्रकारको इन तत्त्वोंका स्वरूप है। थोड़े हीमें जैन धर्मकी शिक्षा इस प्रकार है कि पुद्गल और मूर्तोंक पदार्थोंसे घटित संसारके जीव चेतन पदार्थ हैं। इनमें पूर्णपने और सर्वदर्शिताकी शक्ति विद्यमान है। ये शक्तियां उनकी उन्हें अपने सम्यक् वर्तविसे प्राप्त होती हैं। इन जीवोंके अनन्तदर्शन और अनन्त सुख संयुक्त पूर्णपनेका अभाव स्वोपाहित कर्मोद्भयके कारण हुआ है। अर्थात् इन जीवोंने स्वतः ही पर पदार्थोंको अपनाया है जिसके कारण वे अपने ही कृत्यों वश इन कर्म रूपा पुद्गल वर्गणाओंसे बांधे गये हैं। और अपने यथार्थ स्वरूपको भूल रहे हैं। अतः अब केवल यही आवश्यक है कि जीव अगाड़ी अन्य पुद्गल वर्गणाओंका समावेश न होने दे और जो पूर्व संचित बंध स्वरूप सत्तामें है उनको विध्वंस कर दे। जिस समय यह किया जायगा उसी समय आत्माकी स्वाभाविक सर्वदर्शिता और पूर्णपना प्राप्त हो जायेंगे और स्वतंत्रता, अतेन्द्रियता और आनन्दका उपभोग होने लगेगा। इस मतमें किसीसे प्रार्थना अथवा याचना करनेकी आवश्यकता तो है नहीं। और धन देने योग्य विशेषता यह है कि कोई भी अन्य डार ऐसा नहीं है जो मोक्ष अथवा सुखमेंसे किसी



एकको भी दिला सके जिनके लिए जीवात्माएँ मारे मारे फिर रहे हैं। समुचित प्रणालीका ढंग कारण-कार्यके सिद्धान्तपर निर्भर है।

उपर्युक्त वर्णति कारणवश ही जैन धर्ममें किसी भी व्यक्तिसे मुख अथवा मोक्षकी याचना करनेका अथवा तदप्राप्ति हेतु उनकी पूजा करनेका निषेध है। ये मुख और मोक्ष आत्मा की निज वस्तुएँ हैं। इस कारण बाह्य प्रकरणोंसे प्राप्त नहीं हो सकती। अतः अन्य प्रचलित सैद्धान्तिक मतोंके सदृश जैन धर्म परमात्मपदका निरूपण नहीं करता है और उन सर्व पूर्ण सिद्धोंकी उपासना उसी ढंगसे करनेका उपदेश देता है जिस ढंगसे हम अपने गुरुओंकी विनय करते हैं। सर्वोच्चतम विद्वान् गुरुके लिए परमोत्कृष्ट विनयकी आवश्यकता यथेष्ट ही है। और सर्वज्ञ तीर्थंकरोंमें बढ़कर कोई अन्य गुरु हो ही नहीं सकता है। तीर्थंकर त्रिकालकी समस्त वस्तुओंके ज्ञाता हैं और उनका ज्ञान पूर्ण है जिसके फल स्वरूप उन्हें पूर्णपना अर्थात् सिद्धता प्राप्त है। इस प्रकारकी शिक्षा जैनधर्मकी है। और यह नितान्त ही सीधी साधी वैज्ञानिक ढंगकी है। गुप्त समस्याओं और भेदोंका तो नाम तक नहीं है जैसा कि अन्य मतोंमें पाया जाता है। जैनधर्मके अनुसार निर्वाणका मार्ग सम्यक् चारित्र्य कर संयुक्त है।

अब यह देखना शेष है कि जैन धर्मका आधुनिक सम्यतापर क्या प्रभाव पड़ता है? कोई २ 'सम्य' मनुष्य तो आनन्द धर्मके नामसे ही घबड़ाते हैं। उनका विश्वास है कि धर्मके पालनके साथ ही साथ निचारी-सम्यताका भी अन्त हो जायगा।

परन्तु: यह भ्रमपूर्ण विश्वास नितान्त प्रमाण रहित ही है और उन्हीं लोगोंका है जो आत्माएँ यथार्थ दृश्यसे अनभिज्ञ हैं और उनके निकट आत्मा इस जन्मके उपरांत फिर अगाड़ी जन्म धारण ही नहीं करेगी। सम्यताको इन्द्रिय लोलुपता मान कर उसका अनर्थ करना न्याय संगत नहीं है। यथार्थमें सम्यताके अर्थ आत्म-शिक्षासे ही सम्यन्ध रखते हैं कारण कि जीवात्माओं यहां भी निरन्तर विकाशको प्राप्त होती रहती हैं और दूसरे जन्मोंमें भी। इन्द्रियलोलुपता कितनी भी सुदृष्टि क्यों न हो परन्तु अन्ततः अनन्त आत्माके गुणोंकी घातक ही है कारण पहिले तो आत्माका अस्तित्व ज्ञान ही प्रगट नहीं होने देती और फिर इन पापाचारोंके कारण उसे नके अथवा तिर्यच्च गतिके दुःखोंमें ले पटकती है। प्राचीन कालके मनुष्य बुद्धि, विद्या अथवा उस वस्तुविज्ञानसे किसी प्रकार भी अनभिज्ञ अथवा अल्पज्ञानी नहीं थे जिस ज्ञानके आधारसे इस आधुनिक सम्यताका निर्माण हुआ है। सुतरा उनमें विशेषता और थी कि उनको विश्वास था कि इन्द्रियलोलुपता दुःखोत्पादक और आत्माको निवृष्ट बनानेवाली है। इसी कारण उन्होंने आवश्यक्रीय सीमाके अंतर्गतके उपरांत आत्म-गुणको नष्ट करनेवाली शारीरिक इन्द्रिय पुष्टि-कारक कला अथवा विज्ञानका निरूपण नहीं किया था। मनुष्य और पशुमें केवल ज्ञान शक्तिने बड़ा अंतर डाल दिया है कारण कि ज्ञानकी महिमासे मनुष्य तो अपने स्वाभाविक पूर्णपनेको प्राप्त कर सकता है परन्तु पशु ज्ञानके



अभावमें असमर्थ हैं । अतः पशु-गतिमें तो दशा सुधारनेका कोई कारण उपलब्ध नहीं है परन्तु इस मनुष्यावस्थामें जीवात्माओंको अपनी दशा सुचारु इस जीवन और अन्य जीवनकी पीड़ाओंसे छुटकारा पानेकी उपयुक्त अवस्था प्राप्त है । जो दुःखोंसे जल्दी छुटकारा दिला सुखका उपभोग कराए वही वास्तविक सम्यता है और यही न्यायकी तीव्रालोचनासे भी सिद्ध है न कि वह आधुनिक सम्यता जो इंद्रिय विषय वासनाओंमें फंसा हमें पशु-सदृश बनानेमें कुछ कसर नहीं रखती । आधुनिक सम्यतामें ध्यान देने योग्य विषय वर्तमानमें जीवन निर्वाह व्यय है । आनन्द-फल दिनोदिन यह जीवन-निर्वाह-व्यय अथवा गृहस्थीका खर्च बढ़ता जाता है । इस कारण इस सम्यताकी कृपा दृष्टिसे हर समय ही-दिन अथवा रात-में परिश्रम कर गृहस्थीका खर्च एकत्रित करनेमें और उन साधनोंके मिलनेकी च्येष्टामें जिनसे मनुष्य अपनी समान में “ कोई आदमी ” समझा जाता है मनुष्यका उपयोग लगा रहता है । इस प्रकार वर्तमान समयमें मनुष्य जीवनमें आत्मिक विकासके लिए कोई भी समय उपलब्ध नहीं होता है परन्तु वास्तविक सुख प्राप्ति हेतु अथवा मनुष्य जन्मकी सार्थकताके हेतु कर्म बंधनोंका क्षय कर अपनी अपूर्व निधीय प्राप्त करना आवश्यक है ।

प्राचीन सम्यतामें आधुनिककी नितान्त विपरीततामें मनुष्यको आत्मविकासकी ओर पूर्ण ध्यान था । इसी कारण उस समय जीवन

निर्वाह इतना सुगम था कि थोड़ेसे परिश्रममें ही मनुष्य स्वतंत्रता, पूर्वक आनन्दसे जीवन व्यतीत करता था और साथ ही साथ-शेष समयमें परमात्मोपामनानें अपना अपने आत्मविकाशमें व्यय करता था ।

जैनधर्मने मोक्षमिलायी जीवात्माओंके लिए दो तरहके चारित्रिका निरूपण किया है । (१) मुनि धर्म । (२) गृहस्थधर्म । मुनिधर्मकी विषमता और चारित्रिकी निमलता इसीसे विदित है कि उसमें उसी भवसे मोक्षप्राप्तिका प्रयत्न किया जाता है और गृहस्थ धर्म-उन आत्माओंके लिए है जो मुनि धर्म-धारण करनेमें असमर्थ हैं ।

अतः जैनधर्मका आधुनिक सम्यतासे संबंध होने पर किसी प्रकारकी भी क्षति उसके किसी अंगको प्राप्त नहीं हो सकती है सुतरां इससे उसको इस अपूर्णताका अभाव हो जायगा जिसकी कृपासे आधुनिक सम्य समान आत्माको कोई बन्तु नहीं समझती और मनमाने पापाचरण कर इस भव और दूसरे भवोंमें दुःख उठाती है ।

अन्तमें प्रिय पाठक ! आपसे जैनधर्मको वैज्ञानिक ढंगसे अध्ययन करनेका ही निवेदन है और यदि आप आत्माके वास्तविक उद्देश्यको ध्यानमें रखते रहोगे तो जैनधर्म ही उस उद्देश्यकी पूर्ति हेतु परमोत्कृष्ट मार्ग प्रदर्शित होगा । एवम् भवतु । *

ॐ शान्ति ! शान्ति ! शान्ति !

“चारु चंपतराय जैन चरित्रकी” What is Jainism नामक देखटका हिन्दी भवताक

स्वास्थ्य और स्वरोदय ।

स्वास्थ्यके साथ श्वास, प्रश्वासका घनिष्ठ सम्बन्ध है इस बातमें किसीको जरा भी सन्देह नहीं करना चाहिए । स्वरोदय नामक शास्त्रमें श्वास-प्रश्वासके सम्बन्धमें स्पष्टरूपसे आलोचना की गई है ।

श्वास लेनेके लिए और शरीरकी श्वासको बाहर निकालनेके लिए नाभके दो नथुने बराबर काम किया करते हैं । परन्तु, दोनों नथुने एक साथ काम नहीं करते हैं । कभी दहने नथुनेसे और कभी बायें नथुनेसे श्वास ग्रहण किया जाता है । जब जिस नथुनेसे श्वास ग्रहण किया जाता है तब उसी नथुने द्वारा श्वास बाहर भी किया जाता है । अर्थात् एक समयमें एक ही नथुना श्वास ग्रहण करने और त्याग के कामे किया करता है । साधारण रूपसे प्रत्येक नथुना ढाई दंड अर्थात् ढाई घड़ा तक चला करता है । श्वासके साधक लोग दिन भर बाया और रातको दाया स्वर चलाते हैं । दहने स्वरको सूर्य वागगा स्वर कहते हैं । बायें स्वरको चन्द्रमा व यमुना स्वर कहते हैं । दिनमें चन्द्रमा या यमुना स्वर चलनेसे शरीरमें सर्दी रहती है और रातमें सूर्य या गंगा स्वर चलनेसे शरीरमें गर्मी रहती है । ऐसा भी नहीं होता कि दोनों स्वर एक साथ कभी न चलें । साधक लोग जब दिन भर बायें और रात भर दायें स्वरको चला-नेके अभ्यासी हो जाते हैं तब कुछ दिनों बाद दोनों स्वर एक साथ चलने लगते हैं । योगी

लोग बायें स्वरको इडा दायें स्वरको पिंगला और दोनोंने सुषुम्णा कहते हैं ।

साधारण लोग यही जानते हैं कि दोनों नथुने एक साथ श्वास ग्रहण और त्याग किया करते हैं । परन्तु, यह बात साधनाके बिना प्राप्त नहीं होती है । एक ही नथुना श्वासको ग्रहण एवं विसर्जन किया करता है—ऐसा क्यों होता है ? इस बातकी किसी विज्ञानवेत्ताने आज तक खोज नहीं की और डाक्टरों अर्थोंमें व अन्यान्य किसी भाषाकी पुस्तकमें भी इस विषय पर कोई आलोचना नहीं की गई है । शारीरिक क्रियामें यह एक अतीव कौतूहलजनक और विशेष आवश्यक विषय है, इसमें सन्देह नहीं पान्नु इस विषयपर आधुनिक पड़ितोंने कुछ भी विचार नहीं किया है । इस विषयकी प्राचीन योगशास्त्र और स्वरोदय-शास्त्र ही व्याख्या करते हैं ।

शरीरमें गंगा प्रकारकी विचित्र आकृतिवाली सुविस्तृत नाडिया विद्यमान हैं । ये नाडिया नाभिसे नीचे मूलाधार नामक स्थानसे उत्पन्न होती हैं । शरीरमें चक्राकारकी समान प्रायः दो तीन हजार नाडिया जालकी तर्तु संवत्त्र छाई हुई हैं । इस नाडीजालमें तीन नाडिया विशेष प्रकारकी हैं । इन्हीं नाडियोंको इडा, पिंगला और सुषुम्णा कहते हैं । जब बाया स्वर चलता है तब इडा नामक नाडी काम करती है और जब दाया स्वर चलता है तब पिंगला नामक नाडी काम करती है एवं जब दोनों स्वर सुलभ जाते हैं तब वायुको सुषुम्णा नामक नाडी साधित करती है । जिन प्रकार इडाको चन्द्र



और पिंगलाको सूर्य कहते हैं, उसी प्रकार सुपुष्पाको अग्नि कहते हैं ।

स्वरोदय शास्त्रमें व्याधियोंके साथ स्वरोका सम्पर्क भलीभांति वर्णन किया गया है । इसके सिवाय उसमें नित्यके कार्योंकी सफलता और असफलताको जाननेकी भी विधि लिखी है । किंतु यहां पर केवल स्वास्थ्यके विषयमें कुछ लिखा जाता है ।

यह बात पूर्व लिखी जा चुकी है कि साधारण लोगोंके एक नथुनेसे ढाई वंड तक श्वास चलता है, उसके बाद दूसरे नथुनेसे श्वास चलने लगता है और ढाई दण्डके बाद फिर पहले नथुनेसे श्वास चलने लगता है । कभी ऐसा न हो तो जान लेना चाहिए कि रोगकी पहली अवस्था प्राप्त हो रही है । जो लोग अपने श्वासका ध्यान रखते हैं और नथुनेके चलनेका समय जानते हैं वे तुरन्त समझ जाते हैं कि समय पर नथुना नहीं बदला है और अब कोई विपत्ति आना चाहती है ।

योगशास्त्रमें लिखा है कि—'रोग उत्पन्न होते समय जो नथुना चल रहा हो अथवा जिस नथुनेके चलनेसे रोगका पूर्वाभास प्रकट हुआ हो, उस समय यदि उसको बंद कर दिया जाय और दूसरा नथुना खोल दिया जाय तो रोग तुरन्त दूर हो जावेगा !' बीमार अदमी जब आरोग्यता लाभ करता है तो उस समय भी स्वाभाविक स्वर चलने लगता है और विपरीत स्वर बंद हो जाता है । यदि इस विषयमें जानकारी हो तो रोगकी प्रथमावस्थाके आगम्य होनेमें विपरीत । वरको रोक कर रोगमें छुटकारा पाया जा सकता है ।

यद्यपि योगशास्त्रमें उन रोगोंकी तालिका प्रकाशत नहीं की गई है जो अनुकूल स्वर चलानेसे दूर हो जाते हैं । परन्तु हमारा विश्वास है कि अधिकांश रोग, श्वास-विज्ञानकी सहायतासे निवृत्त नहीं आ सकते हैं । हम नीचे उन रोगोंका वृत्तान्त लिखते हैं कि जो हमारे और हमारे मित्रोंके अनुभवमें आ चुके हैं । इसके बाद यह बात लिखी जायगी कि श्वास किस प्रकारसे बरूना जाता है और नियमित समय तक कैसे स्वर चलाया जा सकता है ।

हमने कई बार आजमाया है कि प्रचल मरतक पीड़ा, आघासीसीका दर्द, ह्रारत, सामान्य ज्वर, अनीर्ण और श्वास सम्बन्धी रोग इससे आश्चर्यके साथ पूर्णरूपसे आराम हो गये हैं । श्वास रोगके लिए तो यह प्रयोग रामबाण साबित हुआ है । प्रचल श्वास रोगके समय जब रोगी जलमग्न व्यक्तिकी तरह प्राणोंसे व्याकुल होता है, यदि उस समय नासिकाका स्वर बदल दिया जाय तो वह दस पन्द्रह मिनटमें ही भला बंगा हो जाता है ।

हमने रोगोंको दूर करनेमें तीन प्रकारकी क्रियायें व्यवहृत की हैं । नीचे क्रमशः उनका उल्लेख किया जाता है—

(१) नासिकाके जिस नथुनेसे श्वास चल रहा हो, यदि उसी पार्श्वसे लेटा जावे तो श्वास बदल जावेगा और दूसरा स्वर चलने लगेगा । यदि बायें नथुनेसे श्वास चल रहा हो और उसीके कारण कोई कष्ट उत्पन्न हुआ हो तो बायें कंधेसे लेट रहनेसे दायां स्वर खुल जाता है किन्तु किसी ३ अवसर पर ऐसा करनेसे



भी स्वर नहीं बदले तो उस अवस्थामें अन्य उपाय करना चाहिए । यथा—

(१) चलते हुए नथुनेको रुईसे बंद कर देना चाहिए । किन्तु मुखसे श्वास कदापि न लेना चाहिए । यदि रुईका व्यवहार न करके हाथकी अंगुलियोंसे नथुनेको बंद कर दिया जाय तब भी काम चल सकता है । ऐसा करनेसे दो तीन मिनट तक कष्ट होनेकी सम्भावना है । परन्तु दूसरा स्वर खुल जावेगा और क्रमशः रोग घटने लगेगा ।

(२) प्राणायामकी सहायतासे स्वर बदल जाता है । प्राणायामके संबंधमें लिखनेसे प्रबन्ध बहुत बढ़ जायगा । अतः यहां पर केवल प्राणायामकी सिर्फ वह क्रिया बतलाई जाती है कि जिससे स्वर बदला जा सकता है । जिस नथुनेसे स्वर चल रहा हो उसको बंद करके दूसरे नथुनेसे श्वास रींचना और छोड़ना चाहिए । अथवा इस प्रकार समझना चाहिए कि दायां स्तर बंद करना है तो दायाँको हाथसे बंद करके बायें नथुनेके द्वारा वायु रींचना और छोड़ना चाहिए । दायाँसे श्वास रींचकर बायेंके द्वारा निकालनेसे भी काम चल सकता है । फिर बायेंसे श्वास रींचकर दायाँके द्वारा बाहर करना चाहिए । इस प्रकार करनेसे भी अनुकूल स्वर चलने लगता है । यद्यपि श्वासके रोगियोंको नथुना बंद करते हुए बड़ा कष्ट होता है तथापि उनको उपरके प्राणायाम द्वारा दोनों नथुनोंकी सहायता लेते हुए अनुकूल स्वर चालित कराना चाहिए । यदि दायाँ स्वरके कारण मस्तक पीड़ा और मूत्र दुर्द हो तो बायें स्वरसे श्वास ग्रहण

करना चाहिए और दायाँ स्वरसे त्याग करना चाहिए ।

सूर्यस्वरमें भोजन करनेसे अजीर्ण उत्पन्न नहीं होता है । भोजन करनेके पश्चात् बाईं करवटसे लेटना चाहिए, जिससे सूर्यस्वर चलता रहे । अजीर्णके रोगियोंको सूर्यस्वर चलाकर वायुको तेजीके साथ ग्रहण और त्याग करना चाहिए ।

स्वरोदयकी सहायता हीसे योगी लोग रोगोंको अपने निकट नहीं आने देते हैं । स्वरोदयके विषयमें अधिक ज्ञान सम्पादन करनेके लिए शिवस्वरोदय नामक शास्त्र अवलोकन करना चाहिए । स्वर विज्ञानके आधिपत्यकी प्रोफेसर शिवजी हैं । लोगोंके लिए मृत्युका प्रश्न एक ऊटल प्रश्न है, परन्तु स्वरोदयसे मृत्युका सारा भेद खुल जाता है । अपनी मृत्युके विषयमें तो तुरन्त ज्ञान हो जाता है । मृत्युके पंजेसे बचनेका भी उसमें उल्लेख है ।

प्रातःकाल उठ कर देखना चाहिए कि कौनसा स्वर चल रहा है । यदि दहिना स्वर चलता हो तो शरीरमें गरमीकी अधिकता समझनी चाहिए । उसी समय शीतल आदि कोई शीतल पदार्थ पान करना चाहिए । प्रातः समय उठते ही बायाँ स्वर चलना चाहिए । यदि बायाँ स्वर न चलता हो तो उपर्युक्त क्रियासे स्वर बदल देना चाहिए ।

यदि पचनेमें भारी पदार्थ दायाँ स्वरमें और लघुपाकी पदार्थ बायें स्वरमें खाये जायें तो शीघ्र ही पाचन होता है । गुर्दे और मसानेके रोगोंमें बाया स्वर एवं निगर व आमालशयके रोगोंमें दायाँ स्वर चलाना चाहिए । जब



की अवस्थामें सदैव चन्द्र (बायां) स्वर चलाना चाहिए । किन्तु आमाशय शुद्ध होना चाहिए । यदि हृदयका कोई रोग न हो तो रातको सूर्य (दायां) स्वर चलाना चाहिए । सूर्य स्वर चलनेसे फेफड़ोंकी शक्ति प्राप्त होती है और बायां अर्थात् चन्द्रस्वर चलनेसे फुफ्फुसकी शक्ति पहुंचती है ।

यदि दिनभर बायां स्वर और रात भर दायां स्वर चले तो सदैव आरोग्यता रहती है । हमारी रायमें इसी बातका अभ्यास करना उचित है ।

योगी लोग गरमीके समय चन्द्रस्वर चलाकर और सर्दिके समय सूर्यस्वर चलाकर, यथायक पड़ने वाली गरमी और सर्दीसे अपने शरीरका बचाव किया करते हैं । 'चैद्य' से उद्धृत ।

❖ उपयोगी शिक्षाएं । ❖

(१) सदा ही सच्चे उठकर पंच परमेष्ठियोंके गुणोंका चिन्तन करो ।

(२) विना जिनेन्द्र देवके दर्शन कभी न रहा करो ।

(३) जिनेन्द्र देवका पूजन स्वर्ग मोक्षका साधक है इसलिये नित्य ही जिनेन्द्र देवका पूजन किया करो ।

(४) शास्त्र स्वाध्याय प्रतिदिन किया करो क्योंकि इससे ज्ञानकी वृद्धि और बुद्धि तीव्र होती है ।

(५) णमोकार मंत्रका जाप नित्य ही श्रद्धा-युक्त करना चाहिए ।

(६) अष्टमी चतुर्थी पर्वमें इकात (एकवार आहार) करना चाहिये वा उपवास (बिल्कुल न खाना) करना चाहिये ।

(७) हिंसा चोरी झूठ कुशील और परिग्रहकी वाञ्छा ये पांच पाप सर्वथा छोड़ देना चाहिये क्योंकि इनके द्वारा इस लोक और परलोक दोनोंमें दुःखी होना पड़ता है ऐसा शास्त्रका कथन है ।

(८) सात व्यसन याने जुवा, मांस, मदिरा वेष्ट्या, शिकार, चोरी और पर स्त्री रमण ये सात व्यसन हैं—और पांच उदम्बर याने बड़ पीपर पाकर कट्ठमर (अंजीर) और गूलर, ये पांच उदम्बर हैं । तीन मकार याने मद्य मांस मधु इन-आदिका त्याग करना ही उचित है क्योंकि कि इनके त्याग बिना जैनी नहीं कहला सके ।

(९) जीव मात्र पर दया रखना, धर्मकी रक्षा करना है ।

(१०) सबके प्यारे बनना, किसीकी दृष्टिसे बुरा नहीं होना चाहिये ।

(११) बड़ोंका आदर उठना चाहिये ।

(१२) समयकी व्यर्थ नहीं खोना चाहिये ।

(१३) सदा पापोंसे डरना चाहिये ।

(१४) किसीको भी धोका नहीं देना चाहिये ।

(१५) किसीको अपना दुष्मन नहीं बनाना चाहिये ।

(१६) धनको व्यर्थ नहीं लुटाना चाहिये ।

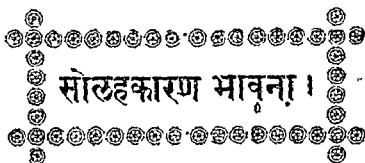
(१७) धर्म कार्यमें धन लगानेके लिये कृपणता धारण नहीं करना चाहिये ।

(१८) असत्यता कभी नहीं धारण करना चाहिये ।

(१९) तन मन धन लगाकर विद्याका प्रचार करना चाहिये ।

(२०) ज्ञानकी वृद्धि करना चाहिये और ज्ञान हीको अपना परम मित्र समझना चाहिये ।

विद्यार्थी टीकाराम, कटंगी ।



सोलहकारण भावना ।

(लेखक—प० गोरलाल जैन, रेपुरा, पन्ना)

दोहा—नमू पंच परमेष्टि पद. मन बच ध्यान लगाय ।

सोलहकारण भावना, रचू स्वपर हित दाय ।

(चौपाई)

प्रथम 'विशुद्ध' भावना सार । ताको रूप सुनो चित धार ।
 सप्त तत्व भाषे भगवान । तिनको कर निश्चय श्रद्धान ॥
 सत्य आप्त गुरु अथ पुनीत । इनसे कीजे मन बच प्रीति ।
 शंकादिक बसु दोष निवार । प्रथम भावना यानो सार ॥ १ ॥
 विनय सहित आदर सत्कार । करो सदा निज कपट निवार ।
 कही विनय निज पंच प्रकार । ताको कभी न मूलो यार ॥
 दर्शन ज्ञान चारित्र्य बखान । तप उपचार विनय सुख दान ।
 तिनकी विनय करो चितलाय । यही 'विनयसम्पन्नता' आय ॥ २ ॥
 अहिंसादि व्रत पांच गहीजे । दोष रहित व्रत शील लहीजे ।
 क्रोधादिक कषाय दुखदाई । इनको दमन करो मन लाई ॥
 निज त्रिषमै सन्तोष संहार । मन बच त्याग करो परनार ।
 शीलामूषण पहिरो अङ्ग । पाले शील व्रतेषु अभङ्ग ॥ ३ ॥
 जगमें सार वस्तु है ज्ञान । इसके सम नहि और सु आन ।
 ज्ञानन नाम तासको सार । ज्ञाननमें निज चिततो धार ॥
 यही परम—उपयोग महांन । तत्व अम्यास करो धर ध्यान ।
 यही चतुर्थि भावना सार । ज्ञानोपयोग अर्भाषण धार ॥ ४ ॥
 जगके विषय भोग दुखदाई । तिनको सेवत होय बुराई ।
 यह तन विनासीक है भाई । मिसको पोषत प्रीति लगाई ॥
 जगके कितने हैं सम्बन्ध । निजमे होय कर्मको बन्ध ।
 यामे धर्म विषे कर प्रीति । यह 'सम्बन्ध' भावना मीति ॥ ५ ॥



स्त्री०—लगा पाद वर्षातका आगमन । किलोलें पंछीगन मिल चमन ॥

विदेशी सज्जन भी सिधौरे सदन । रहें नारि वर साथ अदालिकन ।

पु०—करै वास क्या उच्च अदालिकन । छः खंडी नाहि चौरासी खन ॥

लगे काल व्यारी गिरै तरु चमन । धरम, देव, गुरु, शास्त्र बिनको 'शरण' ॥पि०॥१॥

स्त्री०—ए सावनकी यामिन सुहानी पवन । हिलोरें घट, मेघ लागे झरन ।

झुलाउं हिडोला तुम्हें अब सजन । मरुं राग तो संग यही आवे मन ॥

पु०—हिडोला जगत यह अनादी निघन । लगीं दोय डोरी जे 'आवागमन' ।

चलें झुका चहुंगति लगे विध पवन । मरुं राग 'सोह' स्वयं जा विपन ॥पि०॥३॥

स्त्री०—न भादोंमें पंछी भी छाड़े सदन । रहें नारी नर दोनों हिलनिल मगन ।

अंधेरी झुँकें घोर कर वरसे घन । हुए एक जल, थल करो किम गमने ॥

पु०—अफेला करे चारो गतिमें गमन । सके रोक अंधेरी न जल थल न घन ।

"अकेला" सहे दुख जन्मन मरन । चलें संग तन घन न पुरजन सुजन ॥पि०॥५॥

स्त्री०—चले सीत पावस ग्रीष्म पवन । जनावे सुखासौन तीनों रितन ।

जड़ी नारी बहु फूलें अद्भुत पवन । मिलें क्षीर जल सम तियामीत मन ॥

पु०—मिलें क्षीरजल, तेलतिल, रंग पतन । त्यों ही तनमे चेतन सुगंधी सुमन ।

सवै द्रव्य "न्यारी" निराले गुनन । धरें परजय न्यारी, लखो जिन श्रुतन ॥पि०॥६॥

स्त्री०—खिले चंद्र कातिक है निर्मल गगन । सुगंधे मलें सब सनावें सदन ।

मनावें दिवाली भरे मोद मन । करै मोद मन । करै घृत क्रीड़ा, रमावो रमन ॥

पु०—नसावें सुगुनघन, फसावें दुखन । मलिन द्यूत क्रीड़ा करै ना सुजन ।

सुगंधे करै सब, अपावन येतन । "अशुचि" जान साते न राखे रमन ॥पि०॥६॥

स्त्री०—लगा शीत अगहन, पवन जो गहन । खुले प्रेमके द्वार चारो लतन ।

घनी मीति धरें सब बसन । लगावें घनी त्यों घनासे लगन ॥

पु०—खुले दर सदाचार ऊपर वसन । मिथ्या त्यागे अवृत कषाया 'श्रवण' ।

करै कर्म इन द्वारसे आक्रमन । छुटै डोरी, ममता, छुटै जग भ्रमन ॥पि०॥७॥

स्त्री०—परै रूप पाला लौ तन गरन । रहें संग शाला, बसे सज मन ।

महा रैन हेमंतमें भोगी जन । रहें डारि परदा सवे निज वदन ॥

पु०—समित गुंति घृषाचार परिमा भवन । लगा डाह 'अंधार' जे आश्रव वदन ॥

रहै रैन हेमंतमें इस जतन । मिटै प्रीत भोगनको सब कडहरन ॥पि०॥८॥

स्त्री०—परै माह सर्दी पे दर्दी सजन । रहें दिख न गर्दी पे दर्दी दुखन ।

रंग रंग जर्दी नगावें मरन । फिरै सूर पीछे वर्षाता गमन ॥

पु०—करो ध्यान वृद्धी बसंती पवन । धैर्य भाव शुद्धी न व्योप मदन ।

जगै सर्व रिद्धी हँरे सत्र दु खन । जे अविपाक 'निर्जर' है सिद्धी करन ॥पि०॥९॥

स्त्री०—मिलैं फागमें शत्रु अरु मीत्रगन । यही लोक रीति उल्लेख कवन ।

तमो हठ विपन, धारो अनुराग मन । चलो फाग खेलन सजन रग भवन ॥

पु०—उतंग राज चौदा विज्योवत बलन । स्वयं सिद्ध कर्ता न हर्ता कवन ।

मेरी 'डेह मूरज' दिख खट रंगन । फिरे जीव हुरिहालो चौश भुवन ॥पि०॥१०॥

स्त्री०—तजो चेत चिंता मेरे मन हरन । मिलैं भोग-भागन विषय सुख करन ।

तजो गोदका क्यों उदर लालसन । कहाँ सुख नर सम सुरग त्रदशन ।

पु०—ये सच है मनुष भव मिलन अति कठन । सुकलथल कठन 'योध दुर्लभ' मिलन ।

करो आप तन मन वचन अनुभवन । यही ऊंचपन देवसे नरसुखन ॥पिया०॥११॥

स्त्री०—त्रपा रोग बाँधे लगे ताप तन । विकल होउ मम याद आवैं वचन ।

छ' दर्शनमें भावे सुकीजे ग्रहन । करो उग्रव्रत दान गृहाचरन ॥

पु०—जे वैशाख दर्शन छ. भावें नमन । विषय पोषक हिंसक परिग्रह धरन ।

दरव तत्व दर्शाय शिवमग करन । अहिंसामई एक 'जिनधर्म' गन ॥पि०॥१२॥

स्त्री०—करो लौदमें न्याय मेरा सजन । चले छोड़ किसपर हो करना धरन ।

पराधीन परजाय हम दुख भरन । करो आस किसकी, बतावो जतन ॥

पु०—शुभाशुभ सबै व्यापैं अपने-रसन । मिलैं सुख इनको करो जब दहन ।

धरम आसकर पालो सद् आचरन । यों समझाय मन सुख चले फिर बिपन ॥१३॥

सोरग

नारी करत विचार । परवस भव भव दुख भरे ।

निज बस कियो न काज । विकल्प तन व्रत आदरे ॥

कामताप्रसाद पी० जैन-अष्टांगन ।

“ जैनविजय ” प्रेस-सूक्त ।

हमारे इस प्रेसका डेक्लरेशन हमारे नाम पर होगया है और अब हम प्रेसके अकेले मालिक हैं । स्टाफ भी बढ़ाया है और समयपर काम तैयार कर देनेका नवीन प्रबंध किया है इसलिये अंग्रेजी, गुजराती, हिन्दी किसी भी टाईपमें कार्ड, कवर, नोट-पेपर, बिल बुक, रसीद बुक, हिसाब, रिपोर्ट, मासिक, पुस्तकें, चित्र आदि छपवाना हो तो हमसे अवश्य पत्र व्यवहार कीजिये । पुस्तकाकार ग्रन्थ भी हमारे यहां छपते हैं ।

निवेदक—मूलचन्द किसनदास कापड़िया

मालिक और मैनेजर 'जैनविजय' प्रेस-सूक्त ।

वांदा-से बुंदेलखंड जैन संस्थाओं को
स्कुल के मंत्री राजाराम लिखते हैं कि
इस स्कुल में जैन अनेन विद्यार्थी अंग्रेजी, संस्कृत,
धर्म-शिक्षा तथा हिन्दी का ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं परन्तु द्रष्टा की बहुत कमी है इस
लिये धनवानों को मैं अपील करता हूँ कि इस
स्कुल के लिये वषाशक्ति सहायता भेजे।

नागपुर प्रांतिय-खंडेलवाल समाज के शिक्षा
विभाग को ३९९७३ की सहायता मिल चुकी है।

सेठ पद्मराज रानीवाले-कटकता
नई कौंसिल के लिये उम्मेदवार थे परन्तु असहकार के
कारण आपने अपनी उम्मेदवारी वापिस ले ली।

वीर निर्वाण-साचित्र खास अंक।
इस वर्ष हम विशेषांक नहीं प्रकट कर सकें थे,
परन्तु आगामी नवीन वर्ष के प्रारंभ में साचित्र
खास अंक प्रकट करने का निश्चय किया है
इस लिये सुत लेखकों को हिन्दी, गुजराती, अंग्रेजी
तथा मराठी भाषा के लेख और कविताएँ १६
दिन के भीतर भेजने के लिये सादा आमंत्रण करते
हैं।
मैनेजर।

चित्रशाला।

साचित्र अक्ष/बोध पुस्तक मूल्य ॥) आने,
साचित्र जणपाल के रंगीन ताश ॥) आने; साचित्र
वर्णमाला का रंगीन नशा ॥) आने।

इन तीनों के द्वारा बच्चे झड़ीही सुगमता से अक्षर
पहचानने और खेते करते पढ़ने लग जाते हैं।

स्वर्णीय लोकपान्थ तिलक महाराज के रंगीन
चित्र-बड़ा साइन १५×२० मू० ॥) आने।
मझोठा साइन १०×१४ मूल्य डेढ़ आना।
छोटा साइन ९॥×६ मूल्य दो पैसे।

हिंदी "चित्रमय-जगत"

एक उच्च बोटिका साचित्र मासिक पत्र।
बढ़िया लेख-कविताएँ और मनोहर कहानियाँ।
वर्ष भर में १०० चित्रों का संग्रह। वार्षिक मूल्य
छैन कागज के ५॥), एक प्रति ॥-)। रफ-
कागज का १० मू० ३॥) एक प्रति ॥-)।
व्यापारियों को फमीशन के लिये पत्रव्यवहार
करना चाहिए।

आवृत्ति 'चित्रमय जगत'

१९६६ प्रेषित था।

१९६६, चित्रशाला प्रेस-पूना मिर्दी।

द्वितीयं जन

सपादन-मूलचद किसनदाम कापडिया-सुरत.

विषयानुक्रमणिका

विषय	लेखक	पृष्ठ.
१ दृष्टि निम्न (दीवानाके उपर्युक्त)		१
२ सम्पादकीय वक्तव्य	...	२
३ जैन समाचार संपाद		५
४ वृत्तसेवक गतिने पु वृत्त नालो छे ?	..	७
५ मित्र-संपाद (नस्टर दीपवद पत्राचार)		९
६ धनवानोमे विनय (प० गदिलाल जैन)	...	१७
७ हमेशो चादिये		१८
८ रघुशंकर पत्र और समाज सुधार (प० नदनलाल)		१९
९ जन भाषना (देवदत्त लाल वि० बर्बोदा)		२०
१० आचरक विवरण (छोटेला पत्राचार)		२१
११ मोड (१० नन्दनमज जैन)		२३
१२ दूत वापरे छालू वध (वेव)	..	२६
१३ अ गजारा (कायनाप्रसार जैन)		२७
१४ हमारा गति (दमोदरलाल जैन)	..	२९
१५ चरको छो दिक्षा (विश्ववीर दीकाराम जैन)		३२

मीरस २४४

आश्विन

वर्ष १३१०

अक्ष

ગુજરાત હિંદુ જૈન પ્રાંતિક સભા ની આરમ્ભી વાર્ષિક બેઠક જામનુડી (અમનગર) માં ગડીયા પ્રદેશર કાળીદાસ (આમણવાડ) ના પ્રમુખ-પણા નીચે કાર્તિક વદર પંચમી થનાર છે. વૉલંટિયર થનારે મંત્રી સુનીલાલ સાંકર્યાંદને પેથાપુર સ્થાપવું.

દિવાળીમાં શુ' કરશે—એ ખાતર બાધ-બંધ 'જૈન' (આમનગર) ની સૂચના સ્પષ્ટ છે. એ પત્ર લખે છે કે—(૧) ધનતેરસ (ધેતુતેરસ) ને દિને ગાયેના આદર કરી તેને ઉછેરવા અને પાંજરાપોશામાં તેની સુધારણા કરવા પ્રતિજ્ઞા લેશે ને અને તો ગાયેના પ્રદર્શન ભરી સારાં ઢોર ઉછેરનારને ઉત્તેજન આપશે. (૨) કાળીચૌદશને દિને કાળને પશુ ગળી ગયેલી કાળ રૂપ ચઢા અને હોટલના દરેક પાણીપાણાના બ્રહ્મચારથી બચી જવા નિશ્ચય કરશે અને દેયું બાળનાર તથા પૈસાનું પાણી કરનાર ખીડી, હુકા ચિરટ, સિગારેટનો પ્રતિજ્ઞાપૂર્વક ત્યાગ કરશે. (૩) શ્રાદ્ધકાને છઠ્ઠ-રામાં રહેલા બપોથી બચવા અને નિરર્થક જગતું તે માટેનું દ્રવ્ય બચાવવાને "ફટ" કરનારને છોડી દેશે ને આત્મ પ્રકાશની દીપમાળા પ્રકટાવશે. (૪) બેસતું વંર નિર્વાણ નવું વર્ષ સ્વદેશસેવા અને સ્વદેશીનાં વ્રત આદરી સ્વાસ્થ્ય થશે.

રાધ દેશની પંચે—દરાવ ક્યો છે કે વિવાદ દિઃ ૨૦) કપુર વગેરે માટે કાઢવા વિવાદમાં પંચ ન જાય ને નકામો ખર્ચ બંધ કરવો, જન ચાર દિવસ રહે અને થી ૧૫ મળુને બદલે ત્રણ મળુ વાપરવું વગેરે.

હડર—માં પર્વપચ પર્વમાં અઃ શાંતિસાગર રજાએ એક માસના ઉપવાસ શાંતિપૂર્વક થયાં હતાં.

શુ'બાધ—ની જુના મંદિરની પાડશાલાના ૧૨ વિદ્યાર્થીએને સેઃ જુલુકરમુજને હાથે દનામ વેચવાનો મેલાવો થયો હતો.

સેઠગ્રાની—પાઠશાલા અંધ પડી છે તે સાચુ થવાની જરૂર છે.

વડોદરા—ની વીસામેવાડા પંચે એવો દરાવ ક્યો છે કે ૨૦ વર્ષની ઉંમર સુધીનો મૃત્યુખરચ કરવો નહિ. તેમજ કેટલાકે ૩૦ તથા કેટલાકે ૪૦ વર્ષ સુધીનાનું મૃત્યુખરચ નહીં જમના નિયમ લીધા છે. ખરી રીતે જોતાં એ સિવાજ શરબ્યાત કાઠીજ નાંખવો જોઈએ ને ૫૦ વર્ષ સુધીનાનું તો નજ જમવું જોઈએ. ગુજરાતમાં દરેક પંચે શરબ્યાત મૃત્યુખરચ બંધ કરવાની તથા ૫૦ વર્ષ સુધીનાના ખરચમાં ન જમવાની પ્રતિજ્ઞા લેવી જોઈએ.

તિથિદર્પણ—નવીન તિથિદર્પણ ગ્રાહર્નોકો કુલ દેરસે પદ્મચેગા સ્મ લિયે દો માહકી તિથિકી વષવટ યદાં પ્રકટ કરતે હૈં—કાર્તિક સુદીમે ૭ દો બુધગુરુકો, તથા પુદી ૧૪ કાય હોનેસે બુધવારનો હૈ ! કાર્તિક વદી (મારવાહી મગસર વદી) મેં સવ તિથિ વાવર હૈં . મગસર સુદીમે મી સવ વરાવર હૈં પરન્તુ વદી (મારવાહી પૌષ વદી) મેં ૪ કા કાય હૈં ઔર ૧૬ દો હોનેસે ૧૪ શુક્રવારકો માનનેકી હૈં .

દોવાલી ઔર અષ્ટાનિકા પર્વ

કે લિયે	
અવશ્ય મગાડ્યે .	
દશાંગ ધૂપ	૨) રતલ
અગરકી અગરવત્તી	૨) ,,
સુગંધકાં	૧) ,,
સલાઈપર પતલી અગરવત્તી	૪) ,,
કાઝમીરી કેશર	૧) તોડા
હાફક પ્રધારકે તંઠ, ફવ, સોનેં વાંદીકે વાક	
અદિ મિત્રનેકા પત:-	

સરૈયા વ્રથમ જૈની-મરત .

दिगंबर जैन.

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिविधेष्वथ तत्तैः सत्योपदेशैस्तुगोपयणाभिः ।

सबोधयत्प्रामद प्रवर्त्तताम्, दैगम्बर जैन समाज मात्रम् ॥

वर्ष १३ वॉ. ||

वीर संवत् २४४६. आश्विन. विक्रम सं० १९७६.

अंक ६.

द्यूत-निन्दा

(दीपमालिकाके उपलक्ष्यमें)

देखो दीपमालिका शुभ दिन, पाठक ! आनेवाला है ।

महावीरका मोक्ष दिवस यह उत्तम तथा निगला है ॥

इस दिन सर्व धर्मके प्रेमी धर्म चिन्तवन करते हैं ।

निम्नके अतिशय उत्तम फलसे चिन प्राप्त मय तरते हैं ॥१॥

शोक ! शोक ॥ ॐति महाशोक ! अब विन्नु सोच यह होता है ॥

खेले इस दिन जुआ कि निम्नके हृदय ज्ञानका कोटा है ॥

धर्म समयमें इस अनर्मेसे जो वन सम्पत्ति खोने हैं—

वह पापी मन बिना सम्पत्तिके लेकर दुःखिन रोते हैं ॥२॥

निन्दनीय यह रोग जगतमें भ्रमणतासे फैल रहा ।

अनि सति कीर्ति इन्ने उसका हाल न हप पा न त कहा ॥

बड़े बड़े नृप सम्पत्ति खोकर इसके कारण नष्ट हुए—

देखो, जुआ खेलने कारण नलकी कैसे कष्ट हुए ? ॥३॥

जुआ खेलने कारण ही औ पण्डित भिक्षुक बने फिर—

इस पर कुछ भी ध्यान न देकर खेद ! अज्ञता महि धो ॥

निम्नके कारण जुआ खेल कर हा । हम मूढ़ कहते हैं—

निन्दनीय औ हमसे जाते अन नरकको जते हैं ॥४॥

क्योंकि—मूढ़ यह सत्य ध्यानक शस्त्र मध्य यह विद्वत्तिया

और धून—प्रिय जनको जिसमें सचने पापी बना दिया ॥

इसमें सिद्ध हुआ है यह अन धून शास्त्र प्रतिक्रुत सदा ।

क्योंकि—उमका घतक यह है और नाशका मूढ़ सद ॥५॥



इसी हेतु ही ज्वारी जनका अति आदर घट जाता है ।

पितृ अरु मातृ बन्धु सुन बनिना प्रियसे मित्रता नाता है ॥

अरु विश्वास न उसका रहता निर्धन दर दर फिर्ता है ।

विषिष क्वाधियों तथा शोकमें सदा सर्वदा पिरता है ॥६॥

इससे पठक ! तुम्हें उचित यह जुआ न खेचो भूछ कमी ।

“क्योंकि बुग है जुआ खेचना जानत हैं यह मनुज सभी ॥

जुआ दुर्न्यसन यह है ऐसा जैसे मदिग बुगी सुनो—

पंते पहिले थोड़ी थोड़ी फेर बहुत्तसी हिये गुनो ॥७॥

इन म्ही जुआ खेल्ते थोड़ा फिर पड़ जाती चूँट बड़ी—

इसकी ग्रन्थ फेर अन वैषनी नहीं छूँती होत कड़ी ॥

इससे तुम्हें उचित है नित ही इसका बिरहुल त्याग करो

धर्म दिवसमें प्रभु चिन्तन कर अपना उज्ज्वल भाग करो ॥८॥

निवेदक—वा० सुबालाल जैन शिक्षक, अमरा (शाँसी)



रह बात छिपी नहीं है कि हिन्दुमें लगातार

हिंसाके प्रचारसे मन को

अहिंसाके प्रचारसे मन को

रका प्रयत्न । और अहिंसा धर्म पर

बड़ा आघात पहुँच रहा

है क्योंकि मद्य, पाँच, चमड़ा, शिकार, बलिदान

आदिके व्यापारसे देश इतना घनहीन हो रहा

है कि मविष्टमें शायद दूध घो भी खानेको न

मिले । रघुपि रतौनामें बस ईशानकी कम्पनी

सरकारकी सहायसे खुलवायी थी उनका जो

विरोध होनेपर सरकारने रघुपि कम्पनीका पट्टा

रद्द करदिया है तौमी मध्य प्रांतमें ऐसे भी

चमड़ा और मांसके लिये अनेक स्थानोंपर बहुत

ही जीव दिसा होती है । अहिंसा प्रचारके

लिये उद्योग हो रहा है परन्तु वह जितना

चाहिये उतना नहीं है न ऐसा कोई समाचार

पत्र ही प्रगट होता है जिसमें लगातार अहिंसा-

का उपदेश सारे देशमें फैलता रहे । आनकठ

हिन्दी भाषा देश व्यापी हो रही है इसलिये

यदि हिन्दी भाषामें ऐसा कोई पत्र प्रगट हो तो

लाभ हो सके ऐसा विचार होनेपर अमान

प्रत्यक्षचारी ज्ञानानन्दजी (पं. उमास्वामिजी

न्यायतीर्थ, ने कटाले नागर प्रयत्नकिया जिनसे

तुर्न ही ‘अहिंसा प्रचारण’ समा’ स्थापित हो गई

है और वरिष्ठ ४०००)की सहमता भी मिली



है तथा सपाके स्पाई समाप्त १०१) लेकर और चालू समाप्त व र्षि १) लेकर वन न निश्चि। हुआ जिसमें बहुतसे स्पायी और चालू समाप्त हुए हैं और अब इस समाप्ती आगेसे 'अहिंसा' नामक समाहित पत्र काशीसे प्रकट करनेका निश्चय होनेपर उसकी कार्रवाई प्रारम्भ हो गई है और नवीन वर्षके प्रारम्भसे यह पत्र प्रकट होनेवाला है। इसके लिये ब्रह्मचारीजीने जो सच्चिन् विज्ञापन ज्ञाये हैं वे अवश्य देखने और मनन करने योग्य हैं। उसका एक छंद इस प्रकार है—

दयाधर्म धारक सन्नन जन, जगसे करदो
हिंसा दूर। धर्म धरावर रुवि धारक, सागर उमड
रहा मापूर ॥ रंग रुचिरमय लाड हाडमय, औपचि
जो चरबीसे दूर। जिन चीजोंमें धर्म लगा हो,
उन सबपर तुम डारो धूर ॥

इन कविताका भव क्या ही मनोहर है ? आशा है अहिंसा पत्र भी बहुत ही अ कर्षक होगा। इस पत्रका वार्षिक मूल्य ३॥) है। समाप्तदोंको बिना मूल्य मिलेगा। हम हमारे पठकोंको आग्रह करते हैं कि वे अवश्य इसको मगावे और विशेष वापियें मगाकर मुफ्त बटे। धनिकोंको १०१) देकर स्थयी और साधारणको १) देकर चालू समाप्त हो। चाहिये।

पता—ब्रह्मानन्दजी

स्याह्लाद महाविद्य उप—काशी ।

लग्न तो कन्याका होता है और जैन शास्त्रमें वन्यके लग्नकी विधि लग्न किसका है। कहींपर भी विधवाके होता है ? लग्नकी विधि है ही नहीं तो भी अभी बम्बईमें

दशहराके दिन जो विधवा लग्नकी कार्रवाई हुई है वह अतीव अश्रय जनक और वीरसर्वी शता- विद्रुका नया ही आविष्कार समझा जायगा। हमारे पाठक विचार करने लगेंगे क्या यह सत्य है ? हा असत्य है। हमारे एक खण्डेडवाल पंडित उदयलाल कासलीवालने कई महिनोसे एक बालविधवा ब्राह्मणीको पत्नी रूपसे रख ली थी !!! और उसके साथ आसोन सुनी दशर्मको जैन विधिवे विवाह किया है ! विवाहकी विधि पं० अर्जुनलालनीने की थी और वरके पिताका काम समाज सुधारक !!! बाडीलाल मोतीलाल शाह (स्थानकवासी जैन) ने किया था। हमने सुना है जहां कहीं ऐसा रिवाज है वहां विधवाका घरेना होता है न कि लग्न, ता पं० अर्जुनलालनी आदिने कहासे विधवा का जैन विधि निकाली ? दान तो कन्याका ही होता है न कि विधवा का। सेडोजी- से हमें जो आशा थी उसपर पानी फिर रहा है। और पं० उदयलालनीने पंडित होकर यह अतीव अनुचित और धर्म विरुद्ध कार्य करके जैन पंडितोंके नामपर नट्टा लगाया है।

* * * *

हमारे पं० मधुसूय अन्तिम तीर्थंकर श्री महावीर स्वामीका निर्वाण दिन- दीवाली और श्री दिवाली पर्व आ नूतन वर्ष। गया है। यह पर्व इतना



देहली अनाथाश्रम-का वार्षिकोत्सव ता० २३-२४ दिसम्बरको होगा ।

पद त्याग-बा० गोवलचन्दजी दमोहने असहकारके बाण अना रायगहवा पद छोड़ दिया । देहली निवासी रा० सा० लाला प्या-रेलालजी तथा पदमराजजी रानीवालेने वॉसिलकी मेम्बरी भी छोड़ दी ।

जवलपुर-में जैन कन्या पाठशाला तो है ही और अभी जैन महिला पाठशाला तथा जैन महिला बोर्डिंग भी स्थापित हो गया । बम्बई श्राविकाश्रमकी दो महिलाएँ वहाँकी किमेट ट्रेनिंगकालेनमें प्रवेश भी करई गई ।

रतनपुरी-अयोध्याजीके पास मुहाबल स्टेशन है वहाँसे एक मील पर नोराहीगांव है जिसको पहले रतनपुरी कहते थे जहाँ श्री धर्मनाथ स्वामीका गर्भ-जन्म कल्याणक हुआ था । यह स्थान प्रसिद्धमें नहीं है इस लिये अब मालू-पटने पर यात्रियोंको रतनपुरीकी यात्राका लाम भी लेना चाहिये ।

दुष्कालमें सहायता-पुरी (उडीसा)-में बड़ा भारी दुष्काळ है । वहाँ बाबू सतीचन्दजी दि० जैन सुप० पुलिसने उद्योग करके अनाया-लय और अन्नक्षेत्र खोला है जिससे अनाथोंको बहुत लाम मिट रहा है । वहाँ सहायताकी आवश्यकता है । द्रव्य भेजनेका पता—बाबू सतीचंदजी जैन-पुरी (उडीसा)

भोपाल-में पं० लक्ष्मीचंदजीके जीवदयाके उपदेशसे मुसलमानोंने इन्हीं प्रेम दर्शाया कि उन्होंने करीब ८००) खर्च करके हिन्दुओंको

पानी इत्रपान-दिये जिसमें दस हजार आदमी उपस्थित थे ।

प्राचीन स्तम्भ-देहलीमें सुगनचंदजीके मंदिरमें पत्थरकी मीनाकारीका एक सं० १५३ का प्राचीन स्तम्भ संगमुक्ताकाले पत्थरका है जिसमें मध्य भागमें दो तरफ तिन २ प्रतिमएँ खुदी हैं ।

मोलवीका दया प्रेम-देहलीमें एक मोलवीने गायकी कुर्तानी विरुद्ध "तर्क कुर्तानी गाओ" नामक १०००० पुस्तक छपवाई है जो अतीव उपयोगी है । इनको मगहर मुसलमानोंमें बाँटनी चाहिये । ला० पारसदास जैन खानांची देहलीके पतेसे मिल सकेगी ।

पावापुरीजी-श्री महावीर स्वामीकी निर्वाणभूमिमें है । वहाँ वार्षिक मेला दीवालीके दिन होगा ।

दाहोद-में पशुपुण पर्वमें १० ग्रहस्य और ६ विद्यार्थियोंने यज्ञोपवित संस्कार किया था । गृहस्थाचार्य मा० दीपचन्दजी थे ।

पद अस्वीकार-मिबानीके शास्त्रार्थमें आर्यप्रभाजीसे विनय पानेके उपरक्षमें पं० बन्ना-रसीदासजी अम्बालाको जो 'मिश्र्यात्व तिमिर मास्कर'की उगाधि दी गई थी वह पंडितजीने अस्वीकार की है ।

देहली-में जैन संस्कृत व्यापारिक विद्यालय स्थापित हो गया और करीब २६०००) का चेरा भी हो चुका है ।

पवनजय चौगुले-दीडकी तीन शर्तोंमें प्रथम नंबर आकर यहाँ आ पहुँचे । आपका बहुत स्वागत हुआ था ।



મૈસૂર રાજ્ય-મેં પશુ ચલિવાન વિચકુટ
ચંદ્ર હો ગયા ।

દેહલી-મેં શ્ર વિશાખ્રમ મી લુક રયા ।

કાનપુરમેં મહાસભા-કી વાર્ષિક બેઠક
આગમી તા. ૧-૨-૬ અષ્ટમ ચૈત્ર વદી ૯-
૧૦ કો હોના નિશ્ચિત હુઆ હૈ । ઇન મૌકેપર
કાનપુરમેં રમયાજાકા મેટ્રા તથા જૈન મારિત્ય
પ્રદર્શન મી હોગા ।

અન્તરીક્ષજીમેં પ્રાં. સભા-ચાર
મધ્ય પ્રાદેશિક દિ. જૈન પ્રાંતિક સમાજ વાર્ષિક
અધિવેશન આગમી વાર્ષિક સુદી ૧૫ કૌર
મગસર વદી ૧ કો સેઠ નિર્હલચંદ્રની મહાં-
વકે સમાપતિત્વમેં બહે સમારોહકે સથ અંતર્રક્ષ
પારસનાથ સિરપુરમેં હોગા । ચાર મધ્ય પ્રદેશકે
માઈયેકો નિવેશન હૈ કિ ઇસ સમય પદાર કર
અપને પ્રાન્તકી રક્ષતિકી ચેષ્ટા વરે તથા શ્રી
અંતરીક્ષજી વારસનાથકે દર્શન કર પુણ્યલાપ
હેવે । ઇસ તથકો અઠાસો સ્ટેશનસે જાધા મતા
। સરક પદ્કે હૈ । હેટ દિનકા માર્ગ હૈ ।

અજમેર-મેં અગ મેં તા. ૧ દિ મ્મ કો
વિચાલય મંડાકે સાત મં ટિન હેંગી ।

મૈસૂર જૈન ઓર્ડિંગ-રા વાર્ષિક મ્લસા
મત તા. ૨૨ કો સોઝાસુર નિવામી સેઠ હંરા
ચંદ્ર ને. પંડોશીમે સમાપતિત્વમેં બહે સમારોહસે
હુઆ થા । શાંતિરાત્રયયા જાગી, વ્ર. ૦ નેમ સ-
ગાજી રળી આદિકે મહત્વપૂર્ણ જગ લગાન હુપ
થે । કરોચ ૭૦૦૦) કા ચંદા હુઆ થા ।
દ. વગિરી માપદગ, અળાપા હેંગે, થ પાત્ર
ચંદપ, સ્ક્રાપિત જૈન, આળગિરી દેગઈ આદિ
૧૦૦૦ મૈં પધારે થે ।

ગુજરાતના નૃસિંહપુરા માઈઓને

શું કુસંપજ વહાલો છે ?

જે ગુજરાત નામદારો અમિ, આયલી,
ખીણ, સ્વાથે અથ દહેવાલી હતી તે ગુજરાતની
પ્રજા અત્યારે ભારતવર્ષને સ્વતંત્રતાનો મેગ પાક
બાણી તો સંપૂર્ણતા કેમ મળે તે માટે અથ
મધ્ય ખની ધર્મ પુલ કરી રહેલ છે, તે ગુજર
મેયા સંતાનો આપણે (નૃસિંહપુરા બાઈઓ) શું
કલકમા રચી પચી રહેશુ । અમદાવાદની અંદર
એક કુટુંબના વ્યાપારી કલકને લીધે જે દલાય
લગાડી ત્યા ચોરામાં તડો પડ્યા છે તે વાત
કાઠિયા આળખી નથી. બુહારીમાં કલ એક
પક્ષમા એકજ મનુષ્ય આંજો ફેરલા વર્ધી સત્યને
ખાતર મૈર્ષ જતાથી જુલ પડ્યા છે તે વાત
આપના ધાન મદાર ન હોય. મુરતમાં કાલ
વરતી વગરના મ્યાનમાં જંગી દેહેડ જંધારી
હતે પૈમે પૂજા પ્રકાશના દેકાણું નથી, દેહણ
દેવઓ ચુકવી ઉગલણી (ખેલી) ખેલાતી નથી,
પર્યુષણપર્વ જેવા પવિત્ર દિવસોમાં અધેરને
લીધે કાઈ બાજેજ દર્શન કરવા જવું હતું, હતી
પુલજો આ રડારો કાળ નથી બાળવું આવા
પવિત્ર પર્વમા નૃસિંહપુરમા જે નિયમથી
ઉગલણી ખેલાતી હતી તેવું ઉવંધન કરી
મનના દસ વાગે જલ માત્ર તો વન્ધેડો અભિ-
પેક ઈલાદી કરતા બળતી મસાસાથી નહી પર
જે મગતશઓ ભોગ થમ પડવા, અન્ય વળીએ
શરમના પોદારો કર્યા તે આપણે જાણીએ છીએ.
મુરતના વર અને આખોદની કલાના થયેતા એક
જોતના લગ્નથી મુગે તે બાઈ બુહારી કરવા
પચે તેડો મોકલ્યાં હતા કાજરજ ન થવાથી
ત્યાની પંચે એક મને જાનિ વહેવાર અંધ કર્યો તથા
અખાલ વર ૧ તે દિવસે જમની પાંચ જોતમા કાઈ
પરચેલો સામિત ન થાય ત્યા સુધી તેમાથી બહિષ્કૃત
ન કાલ્ય તેવું તે જમાનારને પંચે લખાણ કરી
આપુ છે છતાંમે પચે તેવું અંધારણ દકારી
ગાળા તે લખાણને ભંગ કરતાજ આખા છે,



તે મુજબ એ બાદ પાંચ ગોદામાંથી પણ બહિષ્કૃત થયા ! (પંચતે એટલી શક્તિ નથી મળી કે જૈન ધર્મમાંથી પણ કાઢી મુકે) ત્યારે આગેદમમાં પવિત્રતામાં પર્યાપ્ત આખા વર્ગની ગુલામીથી કપાયું-શુદ્ધ યોગ્યતાને મિશ્રામિ દુષ્કર્મથી કામાવવાની હતી ત્યાં એજ કારણથી એ તોડા પાડી બેઠા ! ધર્મનું અને સાક્ષતા આવેલા રીવાજનું કલ્પન કરી ગાંધીમાં એક વખત ન્યાયના છણનારાઓ પણ કંઈ તોડા ન લાગી શકે અને તેવા સાથે સામેલ થય અને થોડા સમુદાયના કુટકા કરવા એ શું શોખપ્રદ છે ? કોઈએ ગુંઠો કર્યો હોય તો તેના ગુણુ દોષોનું નીરીક્ષણ કરી તેનાપર મક્કમ રહી, તેની સાથે રહેવાવાળા બાહ્યોએ પણ સાથે રહી એ પક્ષે સામસામા બેસી જાતીના હિન્ના પ્રસંગોની નીકાલ શું ન કરી શકે ! વળી એક મુરતના (દાસ મુંબાઈમાં રહેતા) શેડીઆ અમદાવાદમાં એક દેહદંડ બંધાવવા ઉભા થાયછે, પણ ગુજરાતમાં ઉપદેશકો નથી, આપણામાં અને યુવકોમાં જૈન દર્શનનું જ્ઞાન હોય એવો એક પણ ગુજરાતી બોલ્યો જડે તેમ નથી, તો તેને વખતે ક્યા મંદિરોની જરૂર છે ? દેવમંદિરો કે વિદ્યા-શાળાઓની. આ લક્ષ્યાન્વિપતિ શેડને પોતાની પછાડી સંતતિ નથી, પારકાઓ તેના જોડના થશે અને પોતાનું નામ રાખનાર દનક દિકરાને પણ તિવાંગલી આપી છે તો તે પ્રાતાઃ સ્મરણીય ધર્માત્મ શેડ માણુક્યંદ હોરાવ્યંદને પગલે ચાલી મુંબઈ પ્રાતિક કોન્કરનેસે ગુજરાતમાં બોલવા થારેલા સંસ્કૃત વિદ્યાવ્યવસ્થાઓ, આ કાલી દુન્યાની દવા બ્યાસીથી ખાવા સર્જિત છે પોતાને માટે ત્યાંસુખીનું પૂરું નીચે તેટલું અને પછાડીના માળા ન કે તેટલું દ્રવ્ય કાઢી આક્રોશી પુંછનું આનું વિદ્યાવ્યવસ્થા બોલવા કુટ્ટર છે તો ન દિકરાનો દિકરો, જ્યે જ્યે ગુજરાતનું ગૌરવે વધાનાર એક નહિ પણ સંકેતો દિકરાઓ પાછો ને ગુજરાતની પર્વશ્રવ્ય પ્રજાને બોધ આપી જૈન દર્શનનું જ્ઞાન આપશે, તે બાહ્ય મોદાના અભિવાદી, થશે, અને સદરુદ્ધ શેડની કીર્તિ, એ જીવને તાણવાપર મુકી

બારીક અવગ્રહન કરી ગંભીરતાપૂર્વક વિચાર કરશે તો શ્રીમાન શેડ માણુક્યંદની કીર્તિ કરતા પણ ગુજરાતને ધર્મનું જ્ઞાન દાન આપવા પ્રેરે, પર અમર કીર્તિજ કરી જશે. આ નિર્ણયોત્તર થયો છે. આ શેડ યસિદપુરા ગાંધીના છે, એટલે મારા વિચારો મુકવા યોગ્ય ધાર્યા છે

જે ગુજરાત આજે એક્યતાનો મંત્ર બણ્યોરી રહ્યું છે, ગુજરાતના વીરપુત્ર મહાત્મા ગાંધીજીએ હિંદુ મુસલમાનની એક્યતાનો સ્તંભ ઉભો કર્યો છે, જે બેધાનો પૂત્ર ભારતની સંરક્ષાને, નગ્ન સત્ય જેવા શબ્દોમાં તેમના ધર્મનું પાલન કરાવવા સાથે સાર કહી રહ્યો છે, તેજ ગુજરાતના આરણ સંતાનો શું કુસંપમજ્ઞ સંક્યા કરીશું ? બાંધ્યો, હવે તો આપણે શરમાવનાર છે. વડોદરા અને પુરંદો એકત્ર-થઈ સત્યાગ્રહી બની અસત્યનું બધી દાન આપી અપણી સમાજમાં સુમંથ કરો પ્રેમ, પ્રેમ અને પ્રેમનું સામ્રાજ્ય સ્થાપો. એજ વિનંતી.

લીન ગાંધીહિતચિંતક

સંદેશ-મુરત.

ગ્રંથ ૨ ગ્રન્થ ।

મવિષ્ણદત્ત તિલ્કા મુન્દરી નાટક	૧૧)
જિનેન્દ્ર મજનમાલ	૧૨)
ચિદાન્દ શિવમુન્દરી નાટક	૧૩)
મૈનામુન્દરી નાટક (વડે અક્ષરોમે)	૧૪)
ધન્યકુળાર ચરિત્ર (કુન્દોવદ)	૧૫)
મવિષ્ણદત્ત ચરિત્ર (કુન્દોવદ)	૧૬)
કુન્દી નાટક	૧૭)
નવપ્રહ મરિષિ નિરાકર વિગ્ન	૧૮)
મહાવીરનાટક (અન્વવાર્થ)	૧૯)
ચર્ચાસમાવાન (વર્ધિત પ્રશ્નોત્તર)	૨૦)
પરમઅવ્યાત્મતરંગિણી	૨૧)
સુવાવિત રત્નસંદોહ માર્ગ	૨૨)
વૃક્ત દ્રવ્ય સંપદ	૨૩)

મૈનવા-દિન જૈન પુસ્તકાલય-મુરત ।

मित्र-संवाद ।

(ले० मास्टर दीपचंद पावार, नरसिद्धपुर ।)

श्रावण सुदी नवमीकी रात्रि है । पानी रिम जिम रिम जिम बरस रहा है । अंधकारका इक क्षत्र राज्य है । बड़ी २ शहरकी सड़कोंपर तो म्युनिसिपलकी लाउटेनें जगमेसे कुछ प्रकाश भी रहता है परंतु गल्लीकूनों अपवा, ग्रामोंकी अवस्था तो कुछ कहनेमें ही नहीं आ सकती, वहां जहा सांझ हुई कि फिर नरनारियोंको १२ घंटेकी तो क्या किन्तु १४ घंटेकी खरी जेठ [बंदीगृह] हो जाती है । आना जाना तो दूर ही रहे, शब्द भी नहीं सुनाई देता है । एक तो अंधेरा और दूसरे कीचड़ कांदा, अब कोई कहीं जावे तो कैसे ? परन्तु प्रकृतिकी विटक्षणताको भी न्य है । कार्यनिपन्न पुरषोंको दृढ प्रतिज्ञाओंकी अपनी अद्भुत शाक्तसे सहायता कारती हैं । थोर बाकी रात्रिमें भी पथप्रदर्शककी तरह १२ बिगडी चक्क जानी है जिससे मार्ग बलनेवाले अपना मार्ग निश्चित करके यथाप्यल पहुंच जाते हैं । यदि प्रकृति देवी इस प्रकार सहायता न कारती तो मनुष्योंके कार्योंमें बहुत अपूर्णता रहनी । आज ऐसे ही अमसरमें एक महाशय शाम होनेसे पहिंछे ही अष्टपट व्याल कांके और अपनी सहधर्मिणी तथा बच्चोंको लेकर ठांरीके भरोसे घामे निरुद्ध पड़े । साथमें छल्लुनाईकी भी लाउटेन देकर ले लिया । छल्लुने बहुत कुछ कहा,—मैयानी, गाड़ी कपना लेंगे परन्तु आतुरताका कारण योंही बड़ दिया । पर

नके साम्हने मला वह लाउटेन ठहरनेवाली थी ? आखिर कार प्रकृतिने ही सहायता दी और यह परिवार अपने इच्छित स्थानपर पहुंच गया । यद्यपि अभी सांझके सान ही बजे थे परन्तु सिसाय टोनपर पानीकी टप टप आवाजके और शब्द तो सुननेमें ही नहीं आता था । सजाटा छा गया था । मालूम होता था अर्द्धरात्रि हो चुकी और लोग शयनागारमें पहुंच गये हैं । जिस स्थानपर उक्त परिवार गया है वहां म्युनिसिपलकी लाउटेन जल रही थी कारण कि वह स्थान चम्बई रोड [आम रास्ते] पर है इमलिये झटसे उजेलेमें बच्चा ज़ोल उठा । दहा दहा, जयचंद कारुजीका मकान आ गया । देखो देखो, यह ५४ मील लगा है । हां है नई, बड़ो हम कैसे जान गये । आज तो असन यहीं रहेंगे क्यों दहा रहेंगे या नहि ?

इतनेमें ही बच्चेकी बोली सुनकर ऊपरसे जयचंदने देखा तो इन्के प्रिय और मत्तमित्र टेकचंदजी सपरिवार आये हैं । चटसे उतर कर किवाड़ खोल दिये । जयचंदने बच्चेको चटसे गोदमें उठा लिया और पारस्पर जुहार व्यवहार करते हुवे अन्दर गये । वहां पर एक सनका टाट बिज रहा था जिम पर दरी पड़ी हुई थी और कोई आढम्बर नहीं था । एक पीतलकी समाईमें एन्डोके तेलकी दो बत्तिया जल रही थीं । दुशहरसे लोहैफा फनून जिम पर पतला मलमलका लिहाफ लगा था दंड रहा था, चौकी पर थी नियममार ग्रन्थ विराजमान था, पास ही में खजुरकी चटाई टाले जयचंदकी स्त्री बैठी थी, छोटा पुत्र अमृतसागर जो अभी दो वर्षका है



स्वामाविक चंचलतासे खिलौने उठाता रखता पटकता बजाता हुआ खेळ रहा है ।

जयचंद—भाबो भैया पवारो, ओरे सुशील यहां तो आवो । बेटी, देखो वे टेकचंद दादा भाये हैं, दादानी और भैया मिट्टन भी आया है ।

सुशील—दादानी आता हूं, यह हिसाब कर लूं फिर आता हूं [ऊपर हीसे]

टेकचंद—भाबो तो बेटी, देखो यह हम क्या लाये हैं ?

सुशील—दादानी, क्षमा कीजिये । मैं अभी आया, १ ही हिसाब शेष है । यदि रह जायगा तो कठ मेरा नम्बर क्लासमें नीचा हो जावेगा और मार पिटेगी सो अच्छा । आप जो कुछ लाये हैं वह तो वहां जाता है ?

जयचंद—भैया टेकचन्दनी, कुछ मत पूछो । यह लड़का जहां सांझ हुई कि ऊपर जा बैठा है और बराबर १० बजे तक कुछ २ पढ़ता लिखता रहता है फिर सरेरे ९ बजे उठता है फिर भी कुछ पढ़ता रहता है उसे कितना ही कहो परन्तु नहीं मानता ।

टेकचंद—तो क्या इतना बहुतसा पाठ दिया जाता है ?

जय०—नहीं, परन्तु उसे किसीने कह किया है कि डबल प्रमोशन लेना चाहिये सो स्कूलके पाठसे आगे २ वर पढ़ता है । सबेरे पाठोंसे के बच्चे गोपालदासके पास जाता है सीखता है । वह कमजोर बहुत है इससे मैं उसे परिश्रम करनेसे रोकता हूं ।

टेक—तब उसे पाठ याद न होता होगा तभी तो इतना परिश्रम करता रहना है ।

जय०—भैयाजी, ऐसा नहीं है । वह जब अपना स्कूलका तथा आगेकी कक्षाका पाठ सीखलेता है, तब मेरे पास बैठ कर धर्म पुस्तकें पूजा पाठ आदि पढ़ता है । और इससे फुरसत पाई तो कहीं पद्मपुराण, कहीं “जैनमित्र” अथवा बड़े २ महात्माओंके जीवनचरित्र पढ़ता है और उनमेंसे बड़े २ प्रश्न करता है ।

टेकचंद—तब तो अच्छा है, बालक बुद्धिमान है, देखो मिट्टन सुशीलकी कैसी बड़ाई होती है ? तुम तो दिन भर खेळते ही रहते हो ।

मिट्टन—अच्छा, अब हम भी हुज्जीठके संग मड़लसा जावेंगे ।

सुशील—(नीचे आकर और टेकचंद तथा उनकी स्त्रीको प्रणाम करके बैठगया) और पश्चात्—दादानी बहुत दिनमें आये । माछती बहुत याद करती है, हमारे लिये क्या लाये ?

टेकचंद—यह मौना लाया हूं ।

सुशील—देखकर मुंह बनाता और चुप रह जाता है ।]

टेकचंद—क्यों बेटी, चुप क्यों रह गये ? अबकी बार और बड़ियां फेंसी लटूंगा । क्या करूं जरूरी जरूरीमें येही मित्र सके ।

सुशील—दादानी, हमको फेंसी नहीं चाहिये, हमको तो स्वदेशी चाहिये । चाहे वे मोटे मछे ही हों, चाहे देखनेमें मदे हों परन्तु हमको ये नहीं चाहिये । उस दिन महात्मा गांधीजी यहां (नासिंहपुर)के स्टेशनसे तिरुक् महारानके साथ निकले थे सो उनके शरीर पर मोटे सादीके कपड़े थे, तो भी उनका बड़ा सम्मान होता था, सो दादानी कुछ दिखावट ननावटसे ओढ़े ही

आदर होता है ? हमारे दहाने तो प्रतिज्ञा कर ली है कि स्वदेशी कपड़े ही पहिरना और स्वदेशी पदार्थ ही खाना ।

टेक—वेद्य, इसमें क्या रखा है। अपनेको तो खुब जो मिले सो खाना और पहिरना सुखसे रहना, नाहकके झंझटोंमें क्यों पडना ? अभी तुम बचे हो, तुम तो खुब खावो खेलो ।

मुशील—दादाजी, बच्चा ही तो बड़ा होता है सो जैसे बच्चा बड़ा होता है वैसे ही उसकी मली बुरी, आदतें (प्रकृतियें, अभ्यास) भी बदती हैं ऐसा परसों गुरुजी कहते थे, इसलिये अभीसे ही अच्छी बातोंका अभ्यास ढालना चाहिये । आप इन बातोंको झंगड कहते हैं, परन्तु अब अपने खानेको बैठें और कोई मूला साम्हने चिल्लावे तो क्या उसे न देकर खाते जाना चाहिये ? महात्मा गांधी कहते थे कि यदि हम लोक स्वदेशी वस्त्र और भोजनका व्यवहार रखें तो बहुतसे गरीबोंका पेट पालन हो सक्ता है, शरीर तो मोटे और सादे वस्त्रसे भी ढंक जाता है और शीत उष्णसे भी रक्षा हो सकती है फिर क्या व्यर्थ खर्च बढ़ाया जाय ? यदि हम लोग इस प्रकार अपने स्वर्धसे तकलीफ न उठाते हुवे कुछ बचावें और उसे देश व समाजके किसी कार्यमें लगाते रहें तो बहुत कुछ कार्य सहज २ हो सक्ता है, इसीसे दादाजीने कुर्सी देविठें सम उठा दो हैं और यह फर्श टाटका बिछाया है । दश कहते हैं कि यह २९ वर्षके पहिले न फटेगा, और कुर्सी तो हमेशा टूट जाती थी, एक बार अमृत कुर्मी परसे गिर पड़ा तो उसकी मूढ़ फूट गई । दूसरी बात यह भी

है कि कुर्सीपर बैठे हों और कोई आ गया तो उठना, फिर कुर्सी मंगाना । अब तो कोई भी आवे झमे बैठ जाते हैं इसमें किसीको मानापमान नहीं मालूम होता है (पिताजी धोर देखकर) हां तुम्हीं तो कहते थे, दादाजी इतने ही तो ऐसा कहा था, अब हंसते हैं ।

टेकचन्द—अच्छा वेद्य, यह ले जावो सज्जे खा लेना ।

मुशील—यह क्या है ?

टेक—सुरतकी बर्फी ।

मुशील—क्या बनारसी शकरकी है !

टेकचन्द—नहीं गुजरातमें प्रायः मोरिश ही खाई जाती है ।

मुशील—तब मैं तो नहीं म्याऊंगा ।

टेक—मालतीको देदेना ।

मुशील—हूँ ऊँ २ मो चीज बुरी समझ कर स्वयम् न खावें वह दूसरोंको भी क्यों देना चाहिये ? एक दिन माताजी आलोचना पढ़ती थी सो उसका अर्थ दहाने ऐसा बनाया था, कि 'कृन कारित मोदन करके' अर्थात् आप करो, दुसरेसे करावे और अन्य कानवालेको मला माने इन तीनोंमें समान पाप पुण्य लगना है । क्यों माताजी ठीक हैं नहीं !

टेक—यह लड़का तो बड़ा होशियार है बोलने ही नहीं देता है। अच्छा वेद्य खुश रहो, हम तुम्हारे लिये अब स्वदेशी वस्तुएं ही लाया करेंगे ।

मुशील—[खुश होकर] मणाम करते हुवे, कृम आपकी, सब आपहीका प्रसाद है ऐसा कह कर चला जाता है ।

जयचंद-भैयाजी, अबकी बार तो बहुत दिनमें मिले ।

टेक०-हां भाई क्या करें, कुछ ऐसी अड़चनें आड़ी पड़ गई, मैं तो दिसावरोंमें चला गया था, और जब कभी आता तो आप नहीं मिलते, यहां हमारे परम मित्र मूलचन्द्र किशनदासजी कापड़िया प्रथम तो बीमार हो गये बादमें कुछ बरू-संज्ञोटोंमें फंसे रहे । इत्यदि अनेक कारणोंसे मिटना नहीं हो सका ।

जय०-ठीक है और कहिये कुछ नवीन समाचार है क्या ?

टेक०-नवीन तो क्या ? सुना है पं० अर्जुनलाल रेडीने जो खंडेलवाल हैं हुंवाड़के साथ अपनी लड़की व्याह दी, और पं० उदयलाल काशलीवालने किसी विषया ब्रह्मगीको घरमें रख लिया है ।

जय०-फिर क्या हुआ ?

टेक०-होगा क्या ? वही कि जातिसे बंध कर दिया ।

जय०-और मंदिरसे ।

टेक०-उदयलालको तो बन्धुईमें मंदिर भी बंद है और होना भी चाहिये ऐसा २ काम करें फिर क्यों नहीं जाति और मंदिर बंद किया जाय ?

जय०-ज्यों भैया, जैसे जाति तो मानव समाजका एक भाग है, कदाचित् उसके संगठनके नियमानुसार मुझे ही चुन कर दिया जाय, परंतु मंदिर तो धर्मायतन है, वहां जाने पर ही तो मनुष्योंको अपनी अपनी भृष्टोंका पता लग सकता है । वहां ही से तो अपने पापोंका प्रायश्चित्त कर सकता है । बीतराग छवि और बीतराग

वाणीके निमित्तसे ही तो कषायोंकी मंदता हो कषायोंकी मंदता हो सक्ती है सो जब यह सुवारका मार्ग ही बंद हो गया तो फिर कैसे सुबरेगा ? दण्डका अमित्राय तो मेरी समझसे यही है कि जिससे पापी पापसे भयभीत होकर पुनः पाप न करे और पूर्व पापपर पश्चात्ताप करके उसका प्रायश्चित्त करे ।

टेक०-यदि मंदिर बंद न किया जायगा तो फिर पंथोंका दबाव ही कौन मानेगा ?

जय०-जातिके दण्डसे ।

टेक०-यदि कोई अकेला ही हो जैसे ब्रह्मचारी विधुग, विषया इत्यादि तो ?

जय०-तो उसे दण्ड देकर व्यर्थ दवानेसे क्या प्रयोजन है ?

टेक०-फिर तो सब स्वच्छंद हो जावेंगे और मनमाना करेंगे ।

जय०-सो तो अभी ही करते हैं उन्हें कौन रोकता है ? हजारों गर्भगत होते हैं, हजारों वैश्यावोंके दर्वाजों पर पिटते हैं । हजारों तीर्थोंमें जाकर अपने पापोंको छिपाते हैं कहांतक कहें ? क्या आप नहीं जानते हैं ?

टेक०-हां भाई, यह तो जानता हूं । पं० उदयलालसे भी एक पंडितजी महाराजने कहा था कि ऐसा मत करो, तुम मजे ही प्रांटरोडकी हवा खा लिया करो, परंतु उदयलालजीने इसे उचित न समझा, इसमें उन्होंने हानि ही समझी अर्थात् द्रव्य तो खर्च होता ही, समय बहुत नष्ट होता, दिनरात आतुरता और अनेकों प्रकारके मय रहते तितर-भी तकतीफें तो बैसी ही रहती किन्तु और भी बड़ भारी, खोरीसे गुप्त

पाप करना अच्छा नहीं। इसमें उन्हें विषयसुखकी खान दो कदाचित कुछ कम हुई ही होगी परंतु रोटीपानी आदिका भी सुभीता हो गया ! मंदिर जानेके सिवाय सुना है कि वे स्वाध्याय आदि अन्य धर्म साधन तो बराबर करते हैं !

जय०—गाई सा०, आजकल हमारी समाज और जातियोंके कर्णधारोंकी गति बहुत विचित्र है, जो इन कलिकालीन महारमाओंकी शक्ति में हाँ करे, और इनकी बात मानता जाय वही धर्म-ध्वजी और जहाँ कुछ शिर दिखाया कुछ पृष्ठ-पाँच की कि फिर उसे यदि इनके ही हाथ न्याय होता तो सत्वंकी तो क्या और भी एकाध नक़्क़ा देनेको ये तैयार होते। अच्छा, उदयशालजीने ब्राह्मणी और तिसपर विषवास सम्भव कर लिया उन्हें तो बंद किया तो ठीक ही है परंतु अर्जुनशालजीने कौनसा अन्याय किया जो एक दिगम्बरी जैनी हंसट [वैश्य] ही से पुत्रीका सम्भव किया ? -

टेक०—जाति विरुद्ध तो किया !

जय०—जातियोंके नियम स्वेच्छापूर्वक हैं या किसी मन्थाधारपर ?

टेक०—अन्य २ तो नहीं जानते हैं परंतु ऐसा ही चपन है कि जाति २ में ही बेटी व्यवहार होता ।

जय०—और रोटी ?

टेक०—यह भी बहुतसी जातियोंमें ऐसा ही नियम है कि वे स्वजातिके ही यहाँ खाते हैं जैसे पोड़वाड़, सैतवाल आदि अन्य जैन जातियोंके यहाँ नहीं जीमते हैं ।

जय०—इसका कोई कारण भी ज्ञात है ?

टेक०—नहीं, परन्तु प्रथा ऐसी ही है ।

जय०—मला जब कि धर्म एक है और क्रियायें समान हैं तब जीमनमें कौनसी अड़चन है ?

टेक०—अड़चन तो कुछ नहीं है परन्तु प्रथा बिगड़ती है ।

जय०—इससे कोई हानि तो नहीं होती ।

टेक०—हानि तो नहीं परन्तु लाभ भी तो नहीं है ?

जय०—लाभ तो है। इससे देश विदेशमें यात्रार्थ वा व्यापारार्थ जानेमें भोजनके निमित्तसे होने-वाला भ्रष्टाचर नहीं होता है, जहाँ जावो और वहाँ यदि कोई जैनी है तो उन्हें तो सावर्मी (अतिथि) लाभ और जनेवाछेको शुद्ध भोजनका लाभ होता है। यात्रादिमें कुछ कठिनाता नहीं मालूम होती है, परस्पर प्रेम बढ़ता है ।

टेक०—मला यह तो ठीक है और अब सिवाय दो एक जातियोंके अब यह तो हो गया है कि समस्त जैन जातियाँ परस्पर भोजन व्यवहार करने लगे हैं परन्तु

जय०—माई सा०, करने क्या लगे यों कहो समझने करा दिया और केवल जैनियोंमें ही परस्पर नहीं किंतु अजैनोंमें भी अर्थात् अब जैन धर्मसे सर्वथा अनमिश्र ब्राह्मणोंके हाथोंका बनाया भोजन भी प्रायः सभी जातियोंमें बढ़ा बढ़ उड़ता है और जैन अजैन बड़े जातियों साथ बैठ कर खाते हैं ।

टेक०—माई, यह तो कोई अंग्रेजी पढ़े करते होंगे ?

जय०—नहीं साहब, जिन्हें अंग्रेजीकी गन्ध



तक नहीं मिली वे मैंने स्वयम् मालवादि प्रांतोंमें साढ़े बारहके जीमन देखे हैं ?

टेक०—पक्का भोजन करते हैं ।

जय०—पक्का कह कर दोष थोड़े ही टलता है । आटेमें नमक पानी पड़ता है, अंगार पर सेका घीमें तल दिया, दाढ़ पतली न बना कर कुछ काढ़ी रखली इसमें दुबा ही क्या ? आपने क्या किसी जैन ग्रन्थमें पक्की कच्ची फलाहारो व अनाज आदिका भेद पाया है तो बतावो ।

टेक०—ना माई, परन्तु लोकमें तो योंही चढ़ता है ।

जय०—माई सा० यों तो कोई बातका निर्णय न होगा । या तो आप लोक व्यवहार पर चलो, या समर्थके परिवर्तन पर चलो, या युक्ति प्रमाणों पर चलो या धर्म ग्रन्थोंके आचार पर चलो तब निर्णय होगा ।

टेक०—धर्म अनेक नय है सो जहां जैसा लगे लगा लेना चाहिये ।

जय०—आप भूलते हैं । धर्म अनेक नयात्मक नहीं है किन्तु प्रदाथोंमें अनेक धर्म होते हैं और उनका ज्ञान उग्रस्थको अनेक नयोंसे होता है, नय पदार्थ नहीं हैं और न पदार्थ नय हैं । इनका स्वरूप समझे विना दुरुपयोग नहीं करना चाहिये, यह कोई जीवादि पदार्थोंका विचार नहीं है किन्तु यह है समानका लौकिक व्यवहार और उसका सम्बन्ध है श्रावकानाचारि ग्रन्थोंसे इसलिये इस परसे ही विचार करना चाहिये ।

मुनिये, यदि आप रुद्धियों पर चढ़ते हैं तो नौगोत्रे तामा किमी नियमका अर-

श्रंश होनेसे बन जाती हैं । और अपढ़ लोगों द्वारा चढ़ती रहती हैं सो आपको जिसके यहां जो भली बुरी रुद्धियां हैं सबको धर्म और सत्य ठहराना पड़ेगा फिर हमारा सोना १०० टांचका न रहेगा सबहीका मानना होगा । यदि सम-यानुसार मानते हैं तो फिर इस युगमें जो नये परिवर्तन हो रहे हैं, उनके अनुसार जातिकी बात क्या है धर्मका पता लगाना कठिन हो जायगा । यदि युक्ति प्रमाण लेते हैं तो धर्मसे बाधा नहीं आवेगी क्योंकि जैनधर्म युक्ति पूर्ण है परन्तु रुद्धियां हवा हो जायगी, परन्तु इसके लिये कुछ विशेष बुद्धिकी आवश्यकता है । अब रहा शास्त्र सो इसे माननेमें ही कल्याण दीखता है और कदाचित् कुछ लोगोंको छोड़कर प्रायः सभी मानेंगे ।

देखो आदिनाथपुराण, हरिवंशपुराण, पद्मपुराण, श्रेणिकपुराण, श्रीपादपुराण आदि तथा त्रिवर्णाचार, सागारधर्मावृत आदि, छह दाढा, रत्नकरण्ड आदि । इन ग्रन्थोंमें साफ तौरसे ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्योंके परस्पर रोटी बेटी व्यवहारकी आज्ञा और बड़े पुरुषोंके दृष्टांत दिये हैं । यहां तक कि चक्रवर्ती आदि राजाओंने स्लेच्छ राजाओंकी कन्याओंका सम्बन्ध किया और चिलाती पुत्र जो उससे हुआ, वही राज्यका उत्तराधिकारी हुआ इत्यादि कथन हैं । सो माई अनेकाने क्या बेना किया ! उनका कार्य शास्त्रानुसृत है, जो लोग उन्हें इस कार्य परसेही नातिष्ठ करते हैं वे धर्म शास्त्रोंके विरोधी हैं । उन्हें नाग सुरनमान तथा जुगल आदिके अनुयायी क्यों न कहें ? क्यों



वे बाचूगण तो केवल कागजी कार्यवाही करते हैं, वस्तु लिखते हैं, परन्तु ये उनके अनुयायी रूपे रुस्तम मुहसे बाचू लोगोंकी निंदा करते, पुराणोंका पक्ष लेते और कार्य वे ही करते जो शास्त्र विरुद्ध हों। यदि ये लोग शास्त्रानुयायी होते और पुराणोंके मक्त होते तो कदापि काष्ठ भी शास्त्र विरुद्ध झूठी रूढ़ियों पर आरुढ़ न रहते, उन्हें तोड़ मरोड़ कर शास्त्रानुसार अपना चरित्र व्यवहार करते ।

टेक०—भाई सा०, यह बात तो ठीक है। ग्रन्थोंमें तो ऐसाही लिखा है । इसके अनुसार सेठी अनुमलालने कोई अर्नासि वा कुरीति नहीं की है, परन्तु उदयलालजीकी बात तो आपको ठीक मानना पड़ेगी ।

जय०—जीहां, हाटमें उदयलालको चाहेसो वहे क्योंकि वे अभी इस कार्यमें अकेले ही है परन्तु जब उनकी संख्या बढ़ जावेगी तब यह कहना भी न बनेगा, देखोना प्रथम कुशलगढ (बागड़) में एक हंडड़ सदा मुखिया हुआ तब बहुत बुरा कहलाया, सूख चर्ना हुई, बहुत अंगर पाया गया, अब ५-७ वर्षमें वे ५० नरके लगभग हो गये । मागसड़का एक मन्दिर उनके बन्ने हं। गया, दिनों दिन बढ़ रहे हैं । पुरावारोंके चैत्रकृतकी प्रतिदिन कर्मवितिके व्यासके समान संख्या बढ़ रही है, उनके शिलारबन्द मंदिर और रथ प्रतिष्ठाएं घड़ा घड होती जाती हैं ।

टेक०—हानी, यह तो सत्य है, तब क्या उदयलालजी जैसे भी बहुत हो जायेंगे ।

जय०—इया छूट सन्देह है ?

टेक०—व्यों भाई कुछ उपाय भी है कि मवि-

ध्यमें ऐसा न होवे ?

जय०—उपाय तो बहुत बहुत हैं परन्तु उनका होना कष्टसाध्य ही नहीं किन्तु असाध्य (असंभव) ही है ।

टेक०—तो क्यों ? मनुष्योंके लिये क्या असाध्य है ?

जय०—मनुष्योंकी बात नहीं है यह तो है जैन समाजकी बात ।

टेक०—जैन समाजमें क्यों कठिन है ?

जय०—इस लिये कि जैनियोंमें न तो विद्या है न कोई सच्चा मार्गदर्शक नेता है, न कोई राजा ही है । इसीसे चन्द्रमाके अभावमें जुगनू (आगिया) ही चन्द्रमा बन बैठों, जातिके मुखिया (आगेवान Leader) वे लोग हैं जो धर्म शास्त्रका शब्द नहीं जानते, न्याय नीति जहां प्रवेश नहीं कर सकती है, विचार और तर्कको वहां स्थान नहीं दिया जाता है इस लिये मनमानी करते हैं और जिसमें उनका स्वार्थ साधन होता है वही सत्य है धर्म है नीति है सर्व मान्य है ।

टेक०—तब पंडित लोग क्यों नहीं कुछ कहते ?

जय०—ये बिचरे कह कर क्या अपनी आजीविका खोवें ? इन्हे तो वही कहना है जो उन मुखियोंका कहना है । इनके शास्त्रोंमें और कोषोंमें वही लिखा है या लिख जाता है जो इनके आश्रयदाताओंके मुखोंमें रहता है ।

टेक०—क्या सभी पंडित गण ऐसा करते हैं ?

जय०—उपाशूनर न कि सर्व ही ।

टेक०—तब वे क्यों नहीं इसका आन्दोलन करते ?

जय०—एक तो है थोड़े सो नगाइस्तानमें

तुतीकी आवाज कौन सुने? दूसरे वे बेचारे स्वयम् धनिक नहीं है, इन लोगोंने स्वया संस्थावोंमें देकर पड़ाया है सो ये लोग उन्हें कृतघ्नी आदि उपाधियोंसे भूषित करते हैं, हठी उमड्ड आदि कहकर बहिष्कार करते हैं और फिर संस्थावोंमें सहायता करना छोड़ बैठते हैं तात्पर्य द्रव्येषु सर्वे वशाः ।

टेक०—अच्छा, यह बात जाने दो उपाय तो बतावो ।

जय०—लेवो सुनो घबराना नहीं, २० वर्षसे नीचे बालक और १६ वर्षके नीचे बालिकावोंका व्याह न होवे जैसा ग्रन्थोंमें लिखा है । पुरुष ४९ वर्षके ऊपर व्याह न करें, स्त्रियोंके समान पुरुष भी अपना दूसरा व्याह न करें । १ पत्नि-व्रत रखते, समस्त जैन जातियां परस्पर व्याह सम्बन्ध करें, और यदि आवश्यकता पड़े तो अन्य त्रिवर्णोंसे जिनका आचार उत्तम होवे सम्बन्ध करें, जातिमें कुंवारोंकी संख्या न बढ़ने पावे, सुखिया लोग अपने २ थोकका ध्यान रखें और योग्य वरोंका यथायोग्य सम्बन्ध करा दिया करें, अशुचिन सम्बन्धोंकी रोक दें इत्यादि प्रबन्ध यदि हो सके हो विधवा व्याह रुक जावेगा क्या चलेगा ही नहीं, क्योंकि यह कार्य आदर्शकी गिरानेवाड़ा है ।

टेक०—इन कार्योंमें सहायता नहीं मिल सकती है क्या ?

जय०—हां, यदि प्रयत्न किया जाय तो बाल्य व्याह, गृहव्याह, वन्या विक्रय, दण्ड या दूसरा व्याह बंद हो सके हैं । इसके लिये यदि समान राप्ती होवे और सर्वांसे प्रार्थना करे तो कानून

(act) बन सका है परन्तु क्या कोई इस लिये तैयार होगा ? तुम्हे भरोसा है क्या ?

टेक०—याई सा० बात तो सत्य है स्वार्थ और पक्षपातके आगे किसकी चल्ती है। यह तो वही समय है कि जिसके हाथ लठो उसीकी भैंस है चाहे जहां हांक ले जाय। जाति व समाज कहीं जाय, हमारा तो हाल सितारा चैमक ही रहा है । जिसकी झोपड़ी जलती है वही विचारा रोता है और तो मूर्खों पर ताव दिये फिरते हैं । वास्तवमें उदयलाल आन ८ वर्षों जयपुर जोधपुर मारवाड़ मेवाड़ मालवा दक्षिण सब जगह चकर मार आये, दो तीन हजार तक चाहा भी कि सोदा बन जाय परं न बना आखिर तो मनुष्य है । सभी भीष्मपितामह तो नहीं हो सके हैं । जयचन्द्रभाई, किसीका क्या, बिगाड़ तो समानका है । इसकी जड़ें बट रही हैं । कुछ जाति च्युत होकर घंट, कुछ कुंवारे रह कर मरे, कुछ विधुर (रंडवे) और विधवाएं मरीं, कुछ गरीबीके कारण वर्मच्युत हुवे, कुछ धर्मसे अवभिज्ञ होनेसे विधर्मी बन गये, ईश्वरद्वि कारणोंसे दिनों दिन यह जाति घटनी ना रही है । धर्म तो धर्मोंके आश्रित रहता है सो धर्म ही नहीं रहेंगे तो धर्म किस आधार रहेगा ?

जय०—भाई, अभी तो विनैराज आदिको मंदिरमें आनेसे रोकना जाता है परन्तु भविष्यमें क्या होगा जब जेनी न रहेंगे, हाथ मगवान् ! विनाश काले विपरीत बुद्धिः । प्रभु हमारे मुखियोंको सुनुद्धि देवो (एग वदते २० जयचंद्रके आंग्र गिर पडते हैं)



टेक०—[दिलकर] माई जयचंद्र, धैर्य रखो,
शोकसे क्या होगा ? भविष्य प्रबल होती है ।
गत्रिके बाद दिन होता है, गिरने पर ही उठना
है, प्रयत्न तो करना चाहिये ।

जय०—(समूह कर) हां ठीक है, इसको
कौन मना करता है करो परन्तु छु लाकों कौन
पूँजा-मला है आने परिणामोंसे अपना तो मला
अपने परिणामोंसे अपना तो भला है किसीका
होवो वा न होवो, प्रयत्न करना ही चाहिये ।

टेकचंद्र—अच्छा माई, अब शयन करो । मैं
जाऊँगा । आपसे बहुत कुछ और भी बातें
करना था परन्तु समय बहुत होगया है फिर
कभी देखेंगे ।

जय०—मैया रात्रि अंधेरी है यहीं आराम
वरो । सनेरे स्वाध्याय करके जाना । नचा बच्ची
भी सो गये हैं । भाबीजी भी अलसा रही हैं, यह
भी तो घर है । वहाँ पर पुषानंद मुनीमजी
हैं ही, बिना क्या है ?

टेकचंद्र—जी तो मुझे नहीं होता परन्तु
छाचार हो जाना पड़ता है । फिर जैसी आप
कहे । अच्छा छल्लू तू जा, मुनीमजीको कह
देना मेघानी आज यहीं ठहरेंगे, तुम बंशोवस्त
काके सोवो । छल्लू जाता है और सब सो जाते
हैं, और हम भी अब सोते हैं, श्री पंच परमेशो
मगवानकी भय ।

स्वदेशी—

पवित्र काश्मारी केशर

मूल्य १॥) सोला

पता—मैनेजर दि. जैन पुस्तकालय—झरत.

धनवानोंसे विनय ।

हे धनवानोंसे विनय आज यह मेरी ।

धन पाकर देलो दान करो मत देरी ॥ टेक ॥

तुमने परमवर्मे पुन्य कमाया होगा ।

दुखियोंको लख कर दान दिलाया होगा ॥

भूखेको भोजन दिया दिलाया होगा ।

अरु त्रपावतको गीर पिलाया होगा ॥

जिसका फल सारा मिला तुम्हें इस बेरी ॥ धन० ॥

+ २ +

यह सत्य बात है झूठ न कोई बतावे ।

जब मृत्यु होय तब साथ नहीं धन जावे ॥

सब पड़ा रहे धन धर्म साथ ही जावे ।

खावे कुटुम्ब नहि हाथ तुम्हारे आवे ॥

इससे प्यारे यह बात मान लो मेरी ॥ धन० ॥

+ ३ +

वे निर्धन महा गरीब भूखे मोरे ।

करते हैं याचना तुममें दीन बिचारे ॥

हे दाता अब हम आये सरण तुम्हारे ।

सत्पुत्र हैं भूखसे देखो प्राण हमारे ॥

उनकी सहायता करो विनय यह मेरी ॥ धन० ॥

+ ४ +

जे खले लंगड़े नेत्र हीन फिरते हैं ।

अति दीन नहीं मनदूरी कर सके हैं ॥

अरु बस्त्र हीन जो हिम बाधा सहते हैं ।

वे सदा दीनता भार वहन करते हैं ॥

उनकी सहायता करो विनय यह मेरी ॥ धन० ॥



+ ९ +

“हमको चाहिये”

क्या इसी लिये यह धन तुमने पाया है ।

नित करो ऐश आराम जो मन भाया है ॥

कोमल तकियासे टिक पान खाते हो ।

नहि दीन-दुखियोंकी ओर दृष्टि लाते हो ॥

क्या यही आपका धर्म कहो इस बेरी ॥ धन० ॥

+ १ +

तुम सदा सरस मय भोजनको करते हो ।

दीनोंको रुख रोटी भी नहि देते हो ॥

वढ़ मूल्य रेशमी वस्त्र पहिनते तुम हो ।

दीनोंको एक चिधड़ा नहि देते तुम हो ॥

क्या इसी लिये तुम पाई द्रव्य धनेरी ॥ धन० ॥

+ ७ +

अब हो जाओ दुशियार मान लो कहना ।

जग बीच तुम्हारा दो दिनका है रहना ॥

कर प्रीत धर्म सों भवसागरसे तिरना ।

यह सीख सुगुरुकी सदा हृदयमें धरना ॥

तुम दया दान नित करो मिटे भव फेरी ॥ धन० ॥

+ ८ +

तन स्वारथ प्यारे परमार्थमें लगना ।

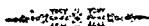
नित पराधीन दुखियोंका सहारा करना ॥

निज शक्ति सहित कर दान दीन दुख हरना ।

इस विषसे अपने धनको सफलित करना ॥

कहे 'गोरेलाल' स्वीकार विनय करो मेरी ॥ धन० ॥

पं० गोरेलाल जैन, रैपुरा ।



१-इस दुर्लभ मनुष्य जन्मको पाकर व्यर्थ न खोना क्योंकि यह आगमका उपदेश है कि मनुष्य जन्मका मिलना बार बार नहीं होता, इस लिये हमको चाहिये कि हम अपने मनुष्य जन्मको सफल करे ।

२-अपने आत्माको क्रोधादि कषायोंसे बचाना क्योंकि इनके द्वारा आत्माके ज्ञानादि गुण नष्ट होते हैं, इस लिये हमको चाहिये कि क्रोधादि कषायोंसे बचाकर अपने आत्माकी रक्षा करें ।

३-समस्त जीवोंपर करुणा भाव प्रदान करना, किसीको सताना नहीं, मित्रो ! जो जीव आपके द्वारा सताये जावेंगे और उनको जो दुःख होगा उस दुःखके भागी आप ही होवेंगे इससे जीवोंकी रक्षा जरूर ही करना चाहिये ।

४-संसारके सब जीव सुख चाहते हैं और दुःखसे डरते हैं, अगर आप उनके सुखमें किसी तरहकी बाधा डालेंगे तो याद रखो कि आप भी सुख नहीं भोग सकोगे ।

५-मूक पशुओंकी भूखा मत रखो । उनके लिये घासादिका पूरा बन्दोबस्त करो । भूखसे 'उनकी आत्मा' मत दुःखावो । मित्रो ! मूखकी वेदना किसीसे सहन नहीं होती । इस विषय पर आप स्वयं विचार करे ।

६-संसारमें आकर सबके प्यारे बनो, किसीकी दृष्टिसे बुरे मत होवो क्योंकि जो मनुष्य सबका प्यारा होता है वही संसारमें सराहनीय और आदरका पात्र है ।

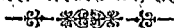
७-निज दुर्गुणोंके द्वारा आप सबके प्रति नुरे है उन दुर्गुणोंको निकालनेकी कोशिश करो



और सदगुणोंके ग्राहक बनो । जब आप दुगुणोंको त्याग सदगुणोंके पक्के ग्राहक बन जावेंगे उसी वक्त मनुष्य आपको प्रेमकी दृष्टिसे देखेंगे ।

८—जो आप सबके प्रेमी बनना चाहते हैं तो आप भी सब पर प्रेम करो ! क्या बालक, क्या बृद्ध, क्या गरीब, क्या अमीर, क्या ऊंच, क्या नीच, क्या मूर्ख, क्या पंडित, और क्या शत्रु, क्या मित्र, सब पर एकसा प्रेम प्रदान करो, फिर देखो आप भी सबके सच्चे प्रेमी बने जाते हो या नहीं ।

पूजारी गोरेलाल जैन, सहजपुर ।



रायदेशके पंच और समाजसुधार ।

(छे० पं० नंदनलाल जैन वैद्य, इंदूर)

मिलोडामें रायदेशके समस्त पंच एकत्रित हुए थे । पंचोंकी जानम आठ दिन रही थी । चोने फिजूल खर्चका अटकाव करनेके लिये केवने ही ठराव पास किये । यदि इन ठरावोंके अनुकूल समस्त पंच अपना अपना कार्य करें तो कुछ समयमें अवश्य लाभ हो सकेगा । इसमें किसी प्रकारका संदेह नहीं कि ये ठराव बड़े ही महत्वके और उपयोगी हैं, ठरावोंका पास होना सब कुछ सरल है और सब जने ऐसा करते ही हैं, परंतु ठरावोंको अमलमें लाना अच्छा है । मात्र ठरावोंके पास होनेसे विशेष लाभ नहीं ।

रायदेशके ये शुभ चिन्ह हैं । रायदेशकी यह प्रथम जाग्रति है । संसारमें रायदेशके समान

कोई भी प्रांत सबसे पीछे नहीं है । रायदेशमें धर्म जाग्रति नहीं, ज्ञानका लक्ष नहीं, कर्तव्यके चिन्ह नहीं, आत्मबोध नहीं आदि सब चावतमें रायदेश सबसे पीछे है । इतना नहीं किन्तु रायदेशको इतना ज्ञान नहीं कि हमारी मलाईके कारण कौनसे हैं । रायदेशकी संतान धर्म विहीन है, रायदेश दश वर्षसे बोडिंग खोलना चाहता है परंतु शक्तिहीन है, ड्रेप और अभिमानसे पूर्ण है, रायदेशके कितने ही आगेवान बोडिंगसे लाभ नहीं समझते, उनको उन्नतिकी बातें आखोंमें खटकती हैं । कुछ भी हो, रायदेश अभी गहरी नींदमें सोना चाहता है । उसे यह ज्ञान नहीं कि उसका सर्वत्व लुप्त रहा है, संतान हीन दीन दुःखी हो रहे हैं । ज्ञान मिलनेके विचारोंको कुछ साधन नहीं है । क्या रायदेशके पंच यह कभी सोचते हैं कि हमारी संतानको ज्ञान मिले, व्यापारका सुमीता हो, धार्मिक विद्याकी वृद्धि हो । नहीं, नहीं रायदेश अभी जुनी रूढ़ियोंमें दिन व्यतीत कर रहा है ।

रायदेशके समीप क्रांटा है । जब क्रांटाके पंच उत्तमोत्तम ठराव पास कर जग उठें हैं, उनकी पंचायत एक दो दिनमें अच्छे कार्य कर उठ जाती है तब रायदेशके पंच अब एकत्रित होते हैं और विचार करते हैं, यह भी अच्छी बात है । प्रारंभमें ऐसी ही जाग्रति होती है धीरे २ वह विशाल रूप धारण करती है । रायदेशके भी इस जाग्रतिसे शुभ परिणामकी आशा है ।

रायदेश समझ रहा है कि बिना पंचि भोगन पंच एकत्रित नहीं हो सके । इसलिये जब २ पंच एकत्रित होते हैं दो एक हजारका पानी



હો જાતા હૈ । યદિ વે જ્ઞાની પ્રીતિમેં વિશેષ દ્રવ્ય સર્વ ન કરકેં કોઈ ઉપયોગી સંસ્થા જ્ઞોલ દેં તો કિતના લાભ ?

પંચાયતકે નિયમ જેસે સુખીતેકે હોને જાહિયે કિ કિસીકો વઢ ન હો, અસુવિધા ન હો, સહજાઈસે કામ હો સકે । ગરીબ અમીર સર્વ કોઈ ભાગ લેસકે પરંતુ રાયદેશકે નિયમ હસસે મિલકુલ વિપરીત હેં । દશ દશ દિન તક એક-ત્રિત હોકર વેકાર પડે રહના વર્તમાન સમયકે વિરુદ્ધ હૈ । પંચોંકે એકત્રિત હોને પર જીમનોંકી ચાલ વહુત વુરી હૈ । કાંઠાકે પંચ દાલ રોટી જ્ઞાકર સાધારણ સર્વમેં કિતના કામ કરતે હેં, કાંઠા કિતના સુધર ગયા હૈ, સર્વ પંચ નિયમિત તારીખ પર એકત્રિત હો જાતે હેં તો રાયદેશકે નહીં ?

માઈયો, યહ જાત કોઈ ક્ષૂંઠ મૂંઠ નિંદાકે લિયે નહીં લિખી હૈ કિન્તુ આપ વિચારો કિ આપ કિતને પીછે હો । યે જાંતેં પંચોંકે જોમાકી નહીં હૈ । અજ હન નિયમોંમેં ફેરફાર કર દેના જાહિયે ઓર સરાવ રૂઢિયોંકો છોડ દેના જાહિયે ।

કાંઠાકે પંચોંને અપની સંતાનકો સુધારનેકે લિયે બોર્ડિંગ જ્ઞોલ દિયા હૈ ઓર એક અચ્છી રકમ એકત્રિત કરલી હૈ । કયા રાયદેશ કાંઠાસે મિલકુલ મિરા હુજા હૈ । કયા ઉસકો હસ જાતસે લાભ નહીં જાતી હૈ ? કયા રાયદેશમેં મિલકુલ શક્તિ નહીં ? રાયદેશકે માઈ કાંઠાકી અપેક્ષા અધિક ધનવાન હૈ, પરંતુ વે અમી વિધાકા મહત્વ નહીં સમજે દુષ્ટ હેં । વે વિધાકે કાર્યોમેં દ્રવ્ય સર્વ નહીં કરના જાહતે હેં ઉનકો સમી તક જ્ઞાત્મ મલાઈ નહીં હૈ । માઈયો, પેતો, વિચારો અપને કર્તવ્યોં પર જ્ઞારુદ્ધ હો ।

ઉચ્ચ માવના.

(લે. કેશવલાલ ત્રીભોવનદાસ, વડોદરા)

દરેક મનુષ્ય માત્રે હમેશાં ઉચ્ચ માવનાજો રાખવી જોઈએ. આ સંસારમાં દરેક જીવને સુખની અભિલાષા હોય છે અને કોઈને કુઃખ જોગવવાની ઇચ્છા હોતી નથી, તો પ્રથમ, દરેક મનુષ્યે સાચું સુખ શું છે, અને તે સુખ કેવી રીતે પ્રાપ્ત કરવું તેનું જ્ઞાન સંપાદન કરવાની ખાસ જરૂર છે. દાખલા તરીકે—આપણી દેહના તથા કુટુંબના પોષણ (ઉપજીવિકા) માટે અનેક ઉપમ કરી ધન પ્રાપ્ત કરવાની ઇચ્છા રાખીએ છીએ ને ધન પ્રાપ્ત કરી ઉપજીવિકાનું નાશવાન ઇન્દ્રિય સુખ મેલવીએ છીએ. તેમ સાચું સુખ પ્રાપ્ત કરવાને માટે દરેક મનુષ્યે દિગંબર જૈન આચાર્યોએ હહેલા તત્વોનું જોધન કરવું ને તે તત્વો મુજબ હમેશાં સંસારથી વિરક્ત રહી શ્રદ્ધા-સ્થાવિ-વેપપૂજા, યશની ઉપાસના, સ્વાધ્યાય સંયમ, તપ, અને દાન, એ કર્મો હમેશાં કરવાની જાવના-રાખવી, છતાં કોઈ શ્રદ્ધા અધુજોથી એ ક્રિયાઓ જની શકે. તેવી શક્તિ અને સંજોગો ન હોય તો પશુ તે જ કર્મો કરવા કપારે વખતે મજશે તેવી હમેશાં ઉચ્ચ જાવના (વિચાર)માં રહેવું જોઈ તે સમય પશુ આવી મજશે ને જ કર્મો યશે ને અન્તિમ સુખ પશુ પ્રાપ્ત થશે, તેનો વાજો દાખજો નીચે મુજબ છે—

સુરત નગરમાં ઇમેજ રાજ્ય હોવાથી ઇમેજ બજારવાની ચર્ચા થવા લાગી અને સાથે જોડામાં પુતક અને સમાચાર વાંચનારો જોખ વધ્યો. સંવત ૧૯૦૭ સ. ૧૮૫૦ માં જોડેસ લાયજેરી નામનું પુસ્તકાલય સ્થાપિત થયું. જોડે તે દ્વારા ગુજરાતી અને ઇમેજ વાંચનારો લાભ મેવા લાગ્યા. સંવત ૧૯૦૮ સ. ૧૮૫૧ માં ગણપત ગાપાલા જોને વેપુજ ધર્મથી ધજોજ પ્રેમ



હતો, જ્યારે આમણા ખડોખાની યાત્રા કરવા નીકળ્યા હતા ત્યારે સુરત થઈને ગયા હતા તે વખતે અગ્રે પ્રભજી એમનું બહુ સન્માન કર્યું હતું. ગાયકવાડે સુરતમાં એટલું ધર્મ અને દાન કર્યું કે એમની પ્રશંસા આખા શહેરમાં ફેલાઈ નેટલા દિવસ ત્યાં રહ્યા ત્યાં સુધી દાનનું રાજ્ય રહ્યું.

એ વખતે એક રાત્રે શેઠ દિરાચંદ્રજી પોતાની પત્ની સાથે ગાયકવાડના દાનની મોટી પ્રશંસા કરી અને ગાયકવાડની જે વાત બબરમાં સાંભળી હતી તે બધી કહી ગયા. ગાયકવાડે હરથેક મંદિર-પાઠશાળા નીગેરેમાં ધણું દાન કર્યું હતું. બીજલીખાઇનું ચિત્ત ધણુંજ કોમળ હતું. જ્યારે કોઇના શુભની વાત સાંભળે ત્યારે દિલ ઉતારાઇ આવતું. તેમના મનમાં એ આવ્યું કે હું ક્યારે મોગ્ય થાઉં અને ખૂબ દાન-ધર્મ કરું અને બધાને નિવે કરું. વિચારતાં વિચારતાં શેઠ દિરાચંદ્રને કહ્યું કે બુદ્ધો, આપણા ભાગ્યને ઉદ્ધારવારે આવે કે આપણાથી એવું દાન ધર્મ થાય. શેઠ દિરાચંદ્રે કહ્યું કે આપણે તો એવા ભાગ્યશાળી નથી કેમકે અત્યાર સુધી વ્યાપાર કરવાં ખરચ કરતાં વધારે પ્રાપ્ત કર્યું નથી. જે વર્ષે પાનાચંદ્રે જન્મ થયો તે વર્ષમાં વ્યાપારમાં સારો લાભ મળ્યો હતો. હાલ તો સાધારણ લાભ થયા કરે છે પરંતુ મને એવી આશા છે કે પાનાચંદ્ર અવરત્ય ભાગ્યશાળી થશે અને દ્રવ્ય કમાશે તે વખતે કદિ તેનું પરિણામ દાન ધર્મમાં ફરશે તો એ પણ દાનની સુખને ફેલાવશે, જેની રીતે આજ ગાયકવાડનો યશ થઇ રહ્યો છે. એવી રીતે પરસ્પર વાર્તાલાપ કરી પતિ પતિન એજ રાત્રિએ અતિ પ્રેમથી શયનમંડપમાં સુઇ ગયાં. એજ રાત્રિએ વિજલીખાઇ ગર્ભવતી થયાં. બીજલીખાઇનું મન આખી રાત્રી દાનના ઉપગ્રમાં ફેલાઇ રહ્યું હતું. એ રાત્રિ એજ હતી કે સુપ્રસિદ્ધ -શેઠ માણિકચંદ્રેના જીવ વિજલીખાઇના ગર્ભમાં આવ્યો, જે આત્મા ગર્ભરથાનમાં નિવાસ કરનાર દાનના પ્રદેશ તેમાં લાગુ પડ્યા. તેમ

જેમ ગર્ભ વધતો ગયો તેમ તેમ વિજલીખાઇનું મન દાનને માટે ઉમંગતું હતું. સાધારણ સ્થિતિ ના સીધે એટલું તો હમેશાં કરતા હતા કે કોઇ ખારણા ઉપર મોંગવા આવે તેને કશાથી મુંઠો આપતા હતા. સારી ભાવનાઓની અસરથી સારંગ થયા કરે છે. સંસારી જીવોના બાવધી પુણ્યનું પરિણામ થાય છે.

(દાનવીર માણિકચંદ્ર જીવનચરિત્ર પૃષ્ઠ ૧૦૫-૧૦૬)

ઉપરના દાખલાથી સ્પષ્ટ માલમ પડશે કે ઉચ્ચ ભાવના રાખવાથી ઉચ્ચ વિચારની સંતાન પ્રાપ્ત થાય છે. શેઠ માણિકચંદ્રેના કાર્યથી કોઇ અનુભવ નથી. આખા હિંદુસ્થાનમાં તેમના કામની બહોલલાલી છવાઇ રહી છે. એ તેમના માત પિતાની ઉચ્ચ ભાવનાનું પરિણામ છે માટે ધર્મ બધુંજો, તમો સાચું સુખ પ્રાપ્ત કરવાનો વિચાર રાખતા હો. તો તથા શેઠ માણિકચંદ્રેના દિગંબર જૈન 'સધમાં નરતન' જેવા ધરાદો રાખતા હોય તો હમેશાં પ્રાતઃકાલમાં શયન સ્થાન છોડી સામાયિક (તપ) વગેરે ઉચ્ચ ભાવનાઓ ભાવવા શુકતા નહિ. પુણ્ય અને પાપ એ આત્માનાજ પરિણામ છે માટે હમેશાં પરિણામ ઉંચા રાખવા એવી મારી વિનંતિ છે.

આવશ્યક નિવેદન.

એટલું તો સર્વે બાઇઓને બાણીનું છે કે ગુજરાતના પાટનગર અમદાવાદ શહેરમાં મહંમ શેઠ માણિકચંદ્રે પાનાચંદ્રના કુટુંબ તરેરથી શેઠ પ્રેમચંદ્રે મોતીચંદ્ર દિગંબર જૈન બોર્ડિંગ સ્કૂલના અગ્રે સર્વે દિગંબર બાઇઓની સગવડવાની ખાતર એક ધર્મશાળા રાખવામાં આવી છે. તેમાં વાસણ, બીજાનાં, ગાદલાં તેમજ સુમારોને જરૂરઓતની બધી બીજેની ખાત્રી હતી, અને તે ખાત્રીની આવશ્યકતા સર્વે દિગંબર બાઇઓને તેમજ કાર્યવાદકોને તેની બહુ પણ હતી. અમો અત્યંત આનંદ પૂર્વક જણાવીએ છીએ કે આ ખાખત ધ્યાનમાં લઇ બેની બોર્ડિંગ



સ્કુલના સુધીન્દ્રેન્દ્ર છોડાલાલ નાથુરામ પરવારે
ગયા વેશાખ માસમાં જ્યારે સર્વે મેવાડા બાધ-
ઓની લગનસરા સોજના મુકામે ભરાએલી હતી,
તે તરનો લામ લાઇ કેટલાક ઉત્સાહી મેવાડા
બાધઓની મદદથી આશરે ૮૦૦) તું એક ઉમદા
ફંડ કરી આપ્યું છે. તથી સર્વે મેવાડા બાધઓ
ધન્યવાદને પાત્ર છે, પણ હાલની મોંઘવારી ધ્યા-
નમાં લેતાં આ ફંડ જરૂરીઆત કરતાં ઘણું જ
ઓછું માલમ પડે છે, માટે સર્વે દિગંબર જૈન
બાધઓને તેમાં ખાસ કરી હુમડ તથા નરમોડિપુરા
બાધઓને વિનંતી કરીએ છીએ કે તેઓ યથા-
શક્તિ આ ફંડમાં મદદ કરશે. આ ફંડમાં સહાય
કરનાર મેવાડા બાધઓના નામ નીચે પ્રમાણે છે-

- ૧૨૫) કેવળદાસ કિલાભાઇ, ભોરસદ
૧૨૫) ગ્રેમાનંદ નારજીદાસ, ભોરસદ
૪૫) ગંગાદાસ માધવજી, ઇસણવ
૫૧) લક્ષ્મીભાઇ દેવચંદ, ધાપજ
૨૫) શંકરલાલ તાપીદાસ, આમોદ
૨૧) જ્ઞેસંગભાઇ કિશોરભાઇ, ભોરસદ.
૧૧) વીરચંદ તળસીભાઇ, દાવોલ
૧૫) ડો. બાઇલાલ કપુરચંદ, નાર.
૨૧) કિલાભાઇ પીતાંબરદાસ, સન્મેલ
૧૭) બાબરભાઇ ત્રજલાલ, પીપળાવ
૨૮) નાથાભોઇ ત્રજલાલ, વેઢ્ય
૨૫) દલપતભાઇ કેવળદાસ, સોજના
૭) બેચરદાસ નાથાભાઇ, ભોરસદ
૨૫) બાઇજીભાઇ પાનાચંદ, ભોરસદ
૨૬) લક્ષ્મીભાઇ હરગોવિંદ, પરીએજ
૨૧) ત્રજલાલ રજીભાઇ, સોજના
૧૧) જ્ઞેસંગદાસ રજીભાઇ, સોજના
૫) કદાનદાસ મનુકચંદ, વડોદરા
૧૧) મલોદચંદ તાપીભાઇ, મલીઆતજ
૭) ગંગાદાસ દરગોવિંદ, મહેળાવ
૧૧) બેચરદાસ મનુકચંદ, તારાપર
૬) મોળીસા મેલભાઇ, વડો.
૭) રેસંદે લીલચંદ, મ.

- ૧૧) વનમાળીદાસ નાનચંદ. દાવોલ
૭) હરજીવન લાલચંદ. વડોદરા
૫) કુલચંદ શુલાખચંદ. પરીએજ
૫) પૂંજભાઇ દુલ્લભદાસ. માલાવાડા
૨) શીવલાલ મુલજીભાઇ વસો
૫) સીનલાલ ગંગાદાસ. પાદરા
૫) બેચરદાસ અમરચંદ. માલાવાડા
૫) મુલજીભાઇ અમીચંદ. ભોજ
૨) શા. પીતાંબરદાસ જવેરદાસ. દાવોલ
૨) તળસીદાસ તારાચંદ. દાવોલ
૫) કુલચંદ કદાનચંદ. માણીસા
૨) કેવળદાસ મુળચંદ. આમોદ
૧) નરસીદાસ તારાચંદ દાવોલ
૧) ત્રીકમદાસ ખુશાલદાસ. બાકરોલ
૧૧) મુલજીસા કેવળદાસ. બોચારાણુ
૫) મેલીલાલ ત્રીકમભાઇ મંજલપરા
૨) છોટાલાલ દલપતદા. આમોદ
૫) મથુરદાસ પાનાચંદ. ભોરસદ
૫) હરગોવિંદદાસ રામદાસ. વડુ
૪) કલાણુદાસ રામદાસ. વડુ
૫) મંગળદાસ રામદાસ. વડુ
૫) મંગળલાલ પરમોતમ. વડોદરા
૧) દામોદરદાસ હરગોવિંદ. મહેળાવ
૫) મેલીલાલ તળસીદાસ. વડુ
૫) કરસનદાસા ઇશ્વરદાસ. જલાલપુર
૫) પૂંજભાઇ હરજીવનદાસ. વસો
૭) તાપીદાસ હરગોવિંદદાસ. આમોદ
૫) સા. નાથાલાલ મનુકચંદ. વાજ
૧૧) શા. જ્ઞેસંગ મણેકચંદ. બાકરોલ
૭) પરસોતમદાસ અંબજીદાસ. પડોળી
૩) સા. કાગીદાસ હરજીવનદાસ. આમોદ
૨૧) જીરાભાઇ હરજીવનદાસ. ફાપગા
૫) જ્ઞેસંગભાઇ નાથાભાઇ. માણીસા
૫) ડો. નગીનલાલ નેમચંદ મેરિસદ
૨) રાધેચંદ તલકચંદ. વડો.
૭) ઇશ્વરદાસ સમજીદાસ. મોલિયાજી



- ५) सत्युभाध शुद्धाभय- पादरी
- ५) अ'अधदास धरदास. वरु
- ३) मेयरदास शुद्धाभाध. करमसद
- ४) नारददास नाथाभाध. काशीसी
- ५) रायसंगल प्रज्जवाल. काशीसी

छेवटभां लघुपवातु के मेवाडा भाधयोये
पेतानी उदारदा गतापी के दाभदे। मेसाउये।
छे, तेने अन्य दिगंबर भाधयो अनुमरशे. अभा
आशा राणीये छीये के कारवाहको आ इ'उने।
सह उपयोग'हरी सवे' दिगंबर भाधयोने. भातरी
हरी आपरी, के तेमना पैसानी जोधये तेवी
सारी रीते सफ उपयोग थयो छे.

गति सेवको-

छोटेलास नाथुराम परवार
मेरसदवाणा मोहनदास भगनदास
शाह भाधलास क्षालीदास

नवीन ग्रन्थ-

चर्चा समाधान

इधमें जैन विद्वान्ते रहस्योका १३५ प्रश्नोत्तरोद्धार
उत्तमतासे समाधान किया गया है । खुले पृष्ठ, बड़े
टाइप, नई सार्डम, शुद्ध उगई पृष्ठ १६० और मूल्य
२॥=) अत्रय मगाश्ये ।

मेनेजर, दि० जैन पुस्तकालय-सरत ।

हमारे उत्तमोत्तम ग्रंथ ।

आदि पुराण	१६)
उत्तर पुराण	१०)
दोनों एक साथ	५॥)
पंचाध्यायी टीका	५॥)
धर्म-प्रश्नोत्तर	२)
जिनशतक	॥)

मिलनेका पता—

लालाराम जैन,

महाराजन हंदौर ।

मोहः ।

(ले० चन्दनमल जैनाध्यापक, शालरापाटन)

—मोहकी शराव पी खराव हो रहा है—

कोई महानुभाव तुझे नमता, कोई अनुराग,
कोई प्रेम, कोई राग-द्वेष मिश्रित भाव, कोई
स्वपर भेद शून्य कह कर पुकारते हैं किन्तु
यदि सच पूछाजाए तो तु एक ही है परंतु तेरे
नाम, उपनाम और चिन्ह अनेक हैं । काम,
क्रोध, मान, माया, लोभ, मत्सरता, छल, कपट,
पाखण्ड, चोरी, डकेती असत्यादि जितने भी
दुर्गुण एवं कुवासनाएँ हैं, वे सब किसी न
किमी अंशमें व किसी न किसी रूपमें तेरे ही
साथी सगे हैं । वे सब तुझे अपना स्वामी एवं
राजा मान कर प्रतिदिन, प्रतिक्षण नूतन नवीन
बलियोंकी भेटसे तेरी ही सेवा सुश्रुषा किया करते
हैं । उनकी प्रत्येक कुचेष्टा और कुचिकित्साकी
प्रस्तुतता ही नहीं वरन् उनके प्रयत्न, परिश्रम
एवं लक्ष्मकी कटिबद्धतासे भी प्राणीमात्रको
अशुभ कर्मोंकी कालिमासे कलुषित करना ही
उनकी महत्वाकाङ्क्षा जान पड़ती है । अतः तेरी
पिशाचोंसे तुलना की जाए तो कदाचित् संभव
है कि कुछ समानता प्रगट हो किन्तु हाय मोह !
तू तो बेचारे अवोष जीवोंको नाम मात्रका बाह्य
सुखका स्मरण कराकर अंतरंगके क्षोभमें तुरत
कैमा देता है ।

फलत तू तो पिशाचोंका पिशाच ही है ।

तने तो बेचारे पिशाचोंको भी अपने जुगुलमें



गो०—सच है जो दूसरोंके काम आते हैं, उन्होंनेको मान मिलता है। देखो संसार कैसा स्वार्थी....हैं। कैसी घटा उठ आई! अरे! अभी तो कुछ नहीं था। देखते २ यह छो बिगली कड़कने लगी! बाह!

रामू—यह छो पानी भी बरसने लगा—पर हैं यह चिछाता कौन चछा आता है? अरे! कोई खी है! यह क्या? यह तो उन माइयोंकी बहन—“अरे भगवानके लिए मुझे इन अत्याचारियोंके हाथसे बचा लो। ये चाण्डाल मेरी जानके पीछे पड़े हुए हैं। हाय राम! वह आए! हाय! मुझे नरदी छिपाओ। नहीं....।”

गो०—अरे, यह तो बेहोश हो गई। वहाँ एकांत स्थानमें ले चलना चाहिए पर वे कौन मागे चले आ रहे हैं!

राम—छो माई! यदि इनको बचाना हो तो लड़नेको तैयार हो जाओ।

पश्यत् इषर इन् आगुन्तक सज्जनोंसे इनकी मुट्ठमेड़ होती रही, उधर कोई सुशीलाको लेकर चलता बना। अग्न उन्हे होश आया तो देखा सुशीला नहीं है। पर उन्ने प्रतिज्ञा कर ली कि उसकी रक्ष अवश्य करेंगे।

(१)

“भलाईको न भूलेंगे, सुशिक्षाको न छोड़ेंगे।
ठठले प्राण लो देंगे, प्रतिज्ञाको न तोड़ेंगे ॥”

गो०—माई! बड़ी घेय अटकी हैं। यदि जरा भी छूटे हाथ फारवाई करते हैं तो खुशाहीकी जान जोखिममें हुई जाती है। और यदि चुप हुए जाते हैं तो प्रतिज्ञा भंग हुई जाती है। बड़ी असंजमसता है।

रा०—जी हां, है तो विकट समस्या! पर मैंने इसे हट करनेको एक रास्ता निकाला है। अर्थात् सस्ते अच्छा मार्ग यही है कि हम हम चुपकेसे उनका पीछा करें और अवसर पाते ही सुशीलाको उनके व्यर्थोंसे निकाल लेना है।

मो०—है तो ठीक बात। तो अब Detective बनना पड़ेगा।

रा०—जीहां! चलिए अभी हीसे वन नार्वरना पता लगाना कठिन हो जायगा। तत्पश्चात् गोपाठ और रामः—अपनी प्रतिज्ञानुसार खाना हुए। पता लगाते २ उनको उन मकानको पता लग गया जिसमें सुशीला थी। दोनों यह प्रतीक्षा कर रहे थे कि कब अवसर पार और कब सुशीलाको छुड़ा पावें। रात्रि बड़ी भयानक थी पर उसी रात्रिको मित्रोंने सुशीलाको वहांसे निकाल लिया। अपने घरको खाना हो गए। वहां पर पु का आग और रहना किसीको विदित न किया।

(४)

गोपाठ और रामू अब उन सेठजीके पीछे पड़े हैं। उमने आन सेठजीसे मिलनेका कर लिखा है। सेठजी भी सुशीलाके होनेमें इनको घमकाते हैं। अन्तमें दोनों जीके यहां जा पहुंचे। सेठजीने ख्वाशा करके इनसे पूछा:—

“मुझको मखम हो गया है कि तुम्होंने यहांसे छुपा दिया है। अब मछाई इसीमें है कि उसको मेरे पास कर जाओ।

गो०—सेठजी अपना कहना ठीक पर आप यह भी जानते हैं कि सुशीला



आपसे विवाह कानको राजी नहीं है, तिसर आपने उसे उसके माइयोंको रुपया दे खरीदना चाहा है । इस प्रकार आप-मारी गउती पर है । नम आपसे मेरा यही कहना है कि आप इस पापवृत्त का ध्यान हृदयसे निकाल डालिए ।

सेठ०—वाह जी वाह ! लड़कीको बहका कर ले गए । अब बातें बनाते हैं । ठहरो तुम्हें कैसा मना खलाता हूँ ।

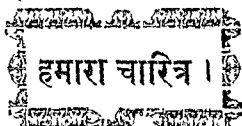
राम०—सेठजी सावधान ! इन घण्टियोंसे हम खरनेवाले नहीं हैं । हम खुद अदालतमें आपके ऊपर मामला चलनेवाले हैं । आपको मालुम है मुशीलाके पिताने उसका पाणिग्रहण मेरे साथ करानेका प्रण कर लिया था और देखिए स्वयं मुशीलाने यह क्या दिखा है !—

“मुझे अच्छी तह याद है कि मेरे पुत्र्य पिताजीकी इच्छा मेरी लग्न बाबू रामचन्द्रसे कानेकी, थी परन्तु इस रक्षा की पूर्विक पहिले ही उनका अचानक देहावसान हो गया । तत्पश्चात् मेरे माई मेरे रक्षक बने पर चारित्रहीन होनेके कारण उन्होंने सब घन बराद वर दिया । अब अपनी पाशविक्ताकी पूर्ति हेतु उन्होंने मेरेको एक बूढ़े सेठके हाथ बेचना स्वीकारा है । पर मैं इसे ‘अत्याचार’ समझती हूँ । और माइयोंको ‘अत्याचारी’ मानती हूँ ।

अब मैं सेठ गोपाउदामजीको और अपने मायी पति बाबू रामचन्द्रको इस विषयमें पूर्ण अधिार देती हूँ कि वे मेरी तरफसे पंचायत एवं राज्यसे उचित न्याय करावें और अत्याचारियोंको दण्ड दिवावें । मैं अपने पिताकी ईच्छानुसार बाबू रामचन्द्रको अपना मायी पति

स्वीकार करती हूँ अदि । ” देव लिया क्या दिखा है ! अब क्या मर्जी है ?

सेठजी—मर्जी क्या ! मेरे तो होश ठिकाने नहीं ! जमाना ही बदल गया ! अरे मगवान ! क्या होनेवा ! इति शम् ।



(से०—दामोदरलाल जैन)

प्रिय वाचकवृन्द !

यह बात निर्विवाद सिद्ध है कि इस असार परिवर्तनशील दुःखमय संसारमें एकेन्द्रियसे लेकर सैनी पञ्चेन्द्रिय पर्यन्त यावन्मात्र आत्माएं हैं वे सर्व सुख एवं शान्ति प्राप्त करना चाहती हैं । ऐसी कोई भी आत्मा नहीं है जो दुःखता ही अनुभव करती रहे और सुख न चाहे । अस्तु । अब हमें विचार इस बात पर करना अत्यन्त आवश्यक है कि किन २ कार्योंके करनेसे यह जीवात्मा अपनेको सुखी बनाता है, किन २ कारणोंके संयोग करलेनेसे शान्तिप्राप्त करता है और ऐसे कौन २ कार्य हैं जिनका कारा होता हुआ यह दुःख एवं अशान्तिदशामें पतन करता है क्योंकि यावत्काळ हमको उक्त कार्योंका बोध नहीं होगा तब तक शान्ति-प्राप्त होना बालुका गृह तुल्य ही होगा । स्वामी उमास्वामिने स्पष्ट रीतिसे अपने ग्रन्थमें कहा है कि सम्यग्दर्शनज्ञानचरित्रके संयोग होनेसे परमशान्ति दशा होती है । जिन समय आत्मा उक्त स्वभावोंसे अछूटा अपने आपको कल्प



है स्वयं तट्टुन होता है उसी समय अनुपम शान्ति लाभ करता है परन्तु यदि उक्त सम्यग्दर्शनादिमें चारित्रकी न्यून अवस्था हुई तो कदापि सुखकी प्राप्ति नहीं हो सकती अतएव अनुपम शान्ति लाभ करनेमें यदि हम चारित्रको ही परम सहायक समझे तो कोई अत्युक्ति नहीं आसक्ती, अस्तु । जब चारित्रका इतना उच्च दर्जा है तब उसका ज्ञान प्राप्त करना, उसके धारण करनेकी विधिका जानना और आधुनिक चारित्रसे भी जानकारी करना आवश्यक है । आधुनिक कालमें चारित्रकी अवस्था ठोक बेंसी ही है जैसी कि किसी नवीन आभूषणादि वस्तुकी कुछ काल बीत जाने पर हो जातो है । देखिये कहीं पर यह चारित्र शुभ कार्योंकी ओर यत्किञ्चित् लक्ष्य रख कर मनमानो शस्त्र विरुद्ध प्रवृत्ति करना ही पूर्णताको प्राप्त हुवा समझा जाता है, कहीं पर अनिच्छा पूर्वक एवं प्राचीन पद्धतिके बश-भूत होकर श्री जिनेन्द्रके दर्शन कर किसी तरह ५ मिनिट पूर्ण कर देना ही इनकी उत्कृष्ट सीमा समझी जाती है, कहीं कहीं घोर पापोंमें रात्रि दिन तल्लीन रहते हुए बाह्यमें सर्व साधारणको दर्शनके लिए चार छह हरित कायको रख सर्व हरित पदार्थोंका त्याग देना साक्षात् आनन्दका दाता समझा जाता है और कहीं पर रागद्वेषभी प्रष्टिके लिए जन सङ्घ-लयमें महत्त्व दिखानेके लिए शस्त्र विरुद्ध क्रियाओंको करना, ऊँचे श्वावकादि पदका प्रण करना वास्तविक चारित्रकी परम सीमा है । पाठक-मृन्द विचारिये, क्या कभी आपने नकली चीजसे आनन्द प्राप्त होते देखा है ? क्या नाली चीज

कभी असलीका मुकाबिला कर सकती है और क्या परीक्षकोंकी दृष्टिमें नकली वस्तु कभी उत्तम हो सकती है ? इसका उत्तर नहींमें ही होता है । हमने आधुनिक चारित्रका बहुत ही उत्तम ऊँची शृंगार बना दिया है, उसको अत्यन्त संगीन कर दिया है पर ऐसा चारित्र धारण करनेसे हमारी शान्ति नहीं हो सकती । क्या हम रा अनिच्छा पूर्वक यद्वा तद्वा ५ मिनिट मंदिरजीमें देवदर्शन करनेमें लगा देना, रात्रि दिन नाना प्रकारके जंजालोंमें फंसे रहना ही कर्तव्य है ! क्या यही चारित्र है ? यदि यही चारित्र है तो मालो व्यासादि तो अवश्य हमारे आदरणीय है क्योंकि वह तो रात्रि दिवस देवालयमें ही रहते हैं परन्तु हम उनको तो नीच दृष्टिसे ही देखते हैं । लेकिन जिसका मन ही देव दर्शन करनेको नहीं होता, जो सामाजिकव्यवस्थाके कारण नित्य प्रति ५ मिनिट इसमें व्यतीत करदे तर्हि उसे हम आदरणीय समझते हैं, वह भक्तकी उपाधिसे विमृषित किया जाता है । क्या किञ्चिन्मात्र शुभ क्रियाओंका सम्पादन करना और रात्रि दिवस क्रूरित्त वा-सनाओंकी वृत्तिके लिए नाना प्रकारकी भोग सामग्रीके प्राप्त करनेमें अपने समयको बर्बाद कर देना उत्तमता है—साक्षात् है ? यदि हि सदान्वारता एवं उत्तमता है तो त्रिपण्डितगिरि रावणका मुग्धज्ञान अवश्य होना चाहिये या क्योंकि वह तो देव पुनादि ग्रहस्थोचित शुभ कर्मोंका सम्पादन करनेशाला अवश्य था पर वह क्यों पतित हुआ ? क्या रागद्वेषको रजते हुये चार छह हरित काय पदार्थको रख कर शेष



त्याग देना उत्तम चारित्र्य है ? यदि यही उत्तम चारित्र्य है तो रागद्वेषादिके धारण करनेवाले भी केवल मात्र हरित कायके पदार्थोंको त्याग देनेसे हमारे पूज्य हो सकते हैं पर ऐसा शास्त्रोपदेश क्यों नहीं है ।

और क्या रागद्वेषकी पुष्टिके लिए एवं जन साधारणमें महत्त्व दिखानेके लिए शस्त्रविरुद्ध मनमानी प्रवृत्ति करना, ऊँची २ प्रतिज्ञाका ले लेना उत्तम आचरण कहला सरता है ? यदि यह उत्तमाचरण है तो धर्मविरुद्ध करनेवाले क्यों द्वेषी हैं तथा जो अपनी मनमानी प्रवृत्तियों करते हैं और धर्म विरुद्ध चलते हैं उनमें ही हमारी अधिक पूज्य दृष्टि क्यों होती है ? इन सबका आशय यही निश्चल है कि हममें योग्य अयोग्य, अग्र्य अग्रह्य, उत्तम अनुत्तम, अनुकूल प्रतिकूल आदिका रंचमात्र भी ज्ञान नहीं है—अनुत्तम नहीं है इसी कारण अली स्वभावका—असली आचरणवा भूट जाना और नली वस्तुमें प्रति करना हमारा स्वभावसा पड़ गया है । हम ऊँची मान, ऊँची दोगोंको ही अच्छा मानते रखना चाहते हैं पन्तु अंगरी पवित्रत, अंतरंगके भाव और अंतरंगकी शुभ वापसा उत्तम बनाये रखनेकी कोई फ़िकर नहीं रखते जिसके कारण दिनों दिन चारित्र्यकी हानि होती ही चली जाती है और वह दोगोंकी दृष्टि अधिकारित होती जाती है ।

पाठको ! उपर्युक्त प्रकारका चारित्र्य कभी भी वास्तविक चारित्र्य नहीं कहा जा सकता और न ऐसे चारित्र्ये हमारी अर्पण सिद्धि हो सकती है, प्रत्युत रागद्वेषात्मक होनेसे ही आचरण

हमको निम्न देशांमें पड़ुवाता है, दुःखोंका केन्द्र बनाता है, विषय वषायोंको विशेष प्रकारसे उत्तेजित करता है और धर्मविरुद्ध लोकविरुद्ध मनमाना कर्म करनेके लिए बाधित करता है ।

अथ वास्तविक चारित्र्य क्या है इसे प्राचीन धर्मधुंधर तीर्थंकर कृपि विद्वान आदि महापुरुषोंने किस रीति पर नतलाया है—जिन २ कार्योंसे यह आत्मा बाह्य वचन काय एवं अंतरंग भावनाको शुभ एवं शुद्ध कियावोंमें संग्रही होता है और अशुभ कार्योंसे अपनी प्रवृत्ति हटा लेना है वे स्वे वायं, आचरण ही उत्तम है, आदर्श है, सुखकारी एवं शान्तिदाता है । वे ही कार्य चारित्र्यकी उत्तम ध्रेणीमें सुशोभित हो सकते हैं, रागद्वेष क्रोध मान माया और लोभादिमे रहित होनेके कारण वे ही आचरण अनुत्तम—शान्ति लाभ कर सकते हैं, वे ही आचरण उत्साहता परोपकारता पवित्रता विवेकता सरलता गुणग्राह्यता सहिष्णुता निष्कपयता सत्य विवेकता क्षमता स्तोत्रप्रवृत्ति और परम शक्ति दि गुणोंको प्राप्त करनेमें समर्थ होते हैं—ऐसा ही आचरण करना सदा जीवमात्रसे मैत्री भाव रखने हुंवे दूसरोंको दुःखमें देख उनके दुःखको दूर करनेमें व्यग्र रहना तथा जिस किसी उत्तमाचरणसे उन्को सुखस्थानमें पहुँचा देना और पन्थात् अपने आपको आत्मव्ययनमें लवलीन करना ही मार है, उत्तम है । यह ही पवित्र जिन धर्मात् उपदेश है, सच है ।

इसी पवित्र उपदेशको धर्मनायक श्री महाबान अदि तत्वाने हमें बताया है । महाबान महावीर स्वामीने हमी अमृतके पान करनेकी



आज्ञा हमें दी है। यही उपदेश हमें भी सर्वोपरि प्रतीत होता है और इसी उपदेशके अनुकूल कार्य करनेसे हम उन्नत हो सकते हैं। तात्पर्य कहनेका यही है कि यदि हमको अपनी आत्माको शांति लाभ कराना है, उन्नत पथ पर ले जाना है और आत्मिक अन्तः शुद्धीका उसमें विकास कराना है तो हमारा कर्तव्य है कि हम शास्त्रानुकूल चारित्र्य धारण करें, मन वचन कायकी अशुभ प्रवृत्तियोंको दूर हटा कर शुभ कार्योंमें योग दें, सदा अपने मन वचन कायको पवित्र रखें, विष-यवासनाओंमें सारी शक्तियोंको लगा देवे तब ही हम उन्नत हैं, तब ही हम जीवित हैं, तब ही हम पवित्र धर्मके पूर्ण अनुयायी हो सकते हैं अन्यथा हम अभी जैसे हैं वैसे भी नहीं रह सकेंगे—सदा अन्नत होते बड़े जावेंगे और हमारे नामशेष होनेमें देर नहीं लगेगी।

बालकोंकी शिक्षा ।

प्यारे बालक ! तुम निम्न लिखित शिक्षाओंको ग्रहण करो। वे शिक्षाएँ आपको बहुत लाभकारी होगी इसलिये तुम उनपर अपना पूर्ण लक्ष्य दो।

(१) बाल्यावस्थाको पारकर विद्या पढ़नेमें अपना विशेष ध्यान दो क्योंकि बाल्यावस्थामें ही विद्या प्रप्त होती है।

(२) विद्या दाता गुरु और अपने पुण्य माता पिताओंकी आज्ञाका पाठन करो। बड़ोंकी आज्ञाका पालन ही तुम्हारा पाम कर्तव्य है।

(३) अपना समय स्रेष्ठ क्रममें व्यर्थ मत बिताओ क्योंकि जो समय आनन्द तुम्हारे हाथसे निकल जायगा उसका मिटन फिर तुम्हारे लिये

कठिन हो जायगा इसलिये अपने समयको पठन-पाठनमें खर्च करो।

(४) मान कभी नहीं करो, सदा ही नम्रता धारण करो। देखो रावणने मान किया था। आखिरको उसकी क्या दशा हुई? लक्ष्मणके हाथसे रणमें मारा गया और सब रामनाथ भी धूलमें मिल गया और अन्तमें नरकोंको जाना पड़ा इससे मानको हानि कारक मानकर छोड़ दो।

(५) सदा ही सब बोलो करो भूत की सूत्र वचनोंको जिह्वा पर न लाओ।

(६) किसीको गाली आदि खोटे वचन मत कहो। अगर तुम किसीको गाली वा खोटे वचन कहोगे तो तुम्हें भी दूसरे गाली और खोटे वचन कहेंगे और मरनेके लिये तयार हो जावेंगे ऐसा जानकर किसीको भी गाली न दो।

(७) सबसे मीठे वचन बोलो। मीठा बोलना ही दूसरोंको प्रिय और वन्द्य करनेका मंत्र है। देखो कोयल अपनी मीठी वाणी बोलकर संसारको अपना बना लेती है और कौआ बहुत बचन बोलता है इसलिये उसके बचनोंकी निंदा होती है और उसे कोई भी नहीं चाहता इसलिये तुम कोयलके समान मीठे वचन बोलो जिससे ही तुम सबको प्रिय और आदरके पात्र बनो।

(८) मूलर भी अनजना पानी न पियो।

(९) हलवाईके यहाँकी मिठाईको जहाँ तक चने त्याग ही करो।

(१०) बिड़ी चुट समाख आदि सोटी मांस वस्तुओंका त्याग करो।

(११) विद्याज्ञ दिपय सबसे अच्छा है।

विद्यार्थी ही हाराम, जैन पाँडे शाला, कहेंगी।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रगट धतुं मासिक

॥ दिगंबर जैन ॥

THE DIGAMBAR JAIN

नाना कलाभिविविध तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगन्धेषुगामिः ।

संघोपयत्यभिदं प्रवर्तताम्, दैगम्बरं जैन समाज-माधम् ॥

का १० वॉ.

॥ चार संवत् २४४३, चैत्र, विक्रम सं० १९७३ ॥

अंक ६ ठा.



शोक! शोक!! महाशोक!!!

हाय ! आज लिखते लेखनी कांपती है ।

हृदय धड़कता है ! आंखोंसे आंसुओंकी धारा बहती है ।

चारों ओर निराशा, निश्चिन्ता, दिखाई पड़ती है ।

जमीन, आस्मान शून्यसे प्रतीत होते हैं ।

आंखोंके आगे अंधकार छा गया है । ओ दुष्ट माय !

क्या तुझे हमारे ऊपर ऐसे ही समय इतनी भारी

विपत्ति पटकनी थी ! और पापी ! जरा हमारी दशा

तो देख ! और अधम ! हमने तेरा क्या बिगाड़ा है ?

जो तू हमें इस तरह दुःख दे देकर मार रहा है !

हमारी स्थिति तो देख ! कुछ दिन पहले ही तो

तू हमारी जातिके जैन जैन कुटुम्बपूजकानवीर श्रेष्ठ

माणिकचन्दजीको हमसे छुड़ा लिया है । हम तो उनकी

शोक ही न भूके थे । उन्ने बैसे काम करते उनकी

याद निना आये नहीं रहती थी, इतनेहीमें तू

इस असमयमें ही हमारे एक मात्र आधार, एक मात्र

अवलंब, एक मात्र सहायक, और एक मात्र कर्णधार-

को हमसे छुड़क क्यों कर दिया ! हमारे हृदयको

देख ! हमारी मनकी स्थितिको देख ! जरा तो दया

करना था । वना ! अब हम किसके पास जाकर जैन

सिद्धान्तका रहस्य समझेंगे ? किसके द्वारा जैनधर्म-

की सच्ची प्रभावना करावेंगे ? किसको उत्सवोंमें बुला

कर जैनधर्मपरके झूठे दोषोंको दूर करेंगे ? कौन

जातिको उसकी सच्ची अवस्था बतायगा ? कौन

उसके कल्याणका मार्ग दिखायगा ? कौन उसकी

दुबली नौकाको हस्तावलंबन देकर पार करेगा ? किससे

स्याद्वाद न्यायकी कुंजियां सीखेंगे ? किस विद्वान-

केपास जाकर जैनसमानकी वास्तविक स्थितिका ज्ञान

प्राप्त करेंगे ? किनके द्वारा स्पष्ट और हृदयके उद्धार सुन

सकेंगे ? सदाचारकी प्रतिमा कहाँ देख सकेंगे ? इन

सबका उत्तर तो तूने हमसे छीन ही लिया ।

हमारा मुकुट छीन लिया । हमारा गौरव छीन लिया ।

हमारा एक मात्र आभूषण छीन लिया । जातिकी

मुपूत छीन लिया । वना ! पापी वना ! हमारे

आधार, हमारे कर्णधार, हमारे अवलंब, हमारी



आज्ञा हमें दी है। यही उपदेश हमें भी सर्वोपरि प्रतीत होता है और इसी उपदेशके अनुकूल कार्य करनेसे हम उन्नत हो सकते हैं। तात्पर्य कहनेका यही है कि यदि हमको अपनी आत्माको शांति, लाभ कराना है, उन्नत पथ पर ले जाना है और आत्मिक अन्तः शुणोंका उसमें विकास कराना है तो हमारा कर्तव्य है कि हम शास्त्रानुकूल चारित्र्य धारण करें, मन वचन कायकी अशुभ प्रवृत्तियोंको दूर हटा कर शुभ कार्योंमें योग दें, सदा अपने मन वचन कायको पवित्र रखें, विषयवासनाओंमें सारी शक्तियोंको लगा देवे तब ही हम उन्नत हैं, तब ही हम जीवित हैं, तब ही हम पवित्र धर्मके पूर्ण अनुयायी हो सकते हैं अन्यथा हम अभी जैसे हैं वैसे भी नहीं रह सकेंगे—सदा अरुणत होते चले जावेंगे और हमारे नामशेष होनेमें देर नहीं लगेगी।

बालकोंकी शिक्षा ।

प्यारे बालको ! तुम निम्न लिखित शिक्षाओंको ग्रहण करो । वे शिक्षायें आपको बहुत लाभकारी होगी इसलिये तुम उनपर अपना पूर्ण लक्ष्य दो !

(१) बाल्यावस्थाको पाकर विद्या पढ़नेमें अपना विशेष ध्यान दो क्योंकि बाल्यावस्थामें ही विद्या प्रपन्न होती है ।

(२) विद्या दाता गुरु और अपने पुण्य माता पिताओंकी आज्ञाका पालन करो । बड़ोंकी आज्ञाका पालन ही तुम्हारा परम कर्तव्य है ।

(३) अपना समय खेड कूटमें व्यर्थ मत बिताओ क्योंकि जो समय आम तुम्हारे हाथसे निकल जायगा उनका मिटना फिर तुम्हारे लिये

कठिन हो जायगा इसलिये अपने समयको पठन-पाठनमें खर्च करो ।

(४) मान कभी हों करो, सदा ही नम्रता धारण करो । देखो रावणने मान किया था । आखिरको उसकी क्या दशा हुई ? लक्ष्मणके हाथसे रणमें मारा गया और सच रावणाड भी धूलमें मिल गया और अन्तमें नरकोंको जाना पड़ा इससे मानको हानि कारक मानकर छोड़ दो ।

(५) सदा ही सत्य बोला करो झूठ कर झूठ वचनोंको जिहा पर न छाओ ।

(६) किसीको गाळी आदि खोटे वचन मत कहो । अगर तुम किसीको गाळी वा खोटे वचन कहोगे तो तुम्हें भी दूसरे गाळी और खोटे वचन कहेंगे और मरनेके लिये तयार हो जावेंगे ऐसा जानकर किसीको भी गाळी न दो ।

(७) सबसे भीठ वचन बोलो । मीठा बोलना ही दुमरोंको प्रिय और वश करनेका मंत्र है । देखो कोयल अपनी मीठी वाणी बोलकर संसारको अपना बना लेती है और कौशा बहुत वचन बोलता है इसलिये उसके वचनोंकी निंदा होती है और उसे कोई भी नहीं चाहता इसलिये तुम कोयलके समान भीठ वचन बोलो जिससे ही तुम सबको प्रिय और आदरके पात्र बनो ।

(८) मूल घर भी अनटना पानी न पियो ।

(९) हलवाईके यहाँकी मिठाईको जहाँ तक चने त्याग ही करो ।

(१०) बिड़ी चुट तमाखु आदि लोटी मादक वस्तुओंका त्याग करो ।

(११) विद्याका विषय सबसे अच्छा है ।

विद्यार्थी टीकाराम, जैन पाठशाला, कदंगी ।



વિદ્યાથી, વિદ્વત્તાથી, ધાર્મિકતાથી, મદાચારથી ।
 સ્પૃષ્ટતાથી ઓર સામાજિકતાથી, પરોપકારતાથી ।
 જ્ઞાને સર્વ ગુણ એક સાથે હોનાં વહુત હી અસંભવ
 હોતા હૈ । પાઠશ્રો, વહા તક લિખા જાય ! જ્યો
 જ્યો પંડિતજીના સ્મરણ ક્રિયા જાતા હૈ ત્યો ત્યો
 દુઃખના મેગ વઢતા ઓર હૃદય કટતા હૈ, પર અત્ર
 હમારા જ્ઞાના હી કર્તવ્ય નહી હૈ કિ હમ રોવં ।
 હમારા જ્ઞાને મી અધિક કર્તવ્ય હૈ ઓર વહ
 યહ કિ પંડિતજી કે 'લિખે' પ્રત્યેક નગરકે જૈની
 માઈ શોક સમા કરે, ઓર પંડિતજીકે શોક સતત
 કુટુમ્બકે પ્રતિ સહાનુમતિ પ્રગટ કરે તથા હમારે
 ઊત્તર પંડિતજીકે જો અગણિત ઉપકાર હુએ હૈ અનેક
 સ્મરણકે લિખે, પંડિતજી કે પ્રતિ અપની કૃતજ્ઞતા
 પ્રગટ કર્મકે લિખે પંડિતજીકા સ્મારક સ્વોલે ।
 હમારા યહ સર્વસે વડા કર્તવ્ય હોનાં ચાહિયે કિ
 હમ પંડિતજીકા સ્મારક મ્બોલકર અનેકી સ્મૃતિ
 કાયમ કરે । યદિ હમ યહ ન કરે તો શાયદ હમારા
 સા કૃતજ્ઞી અન્ય કોઈ ન હોગ । અતઃકૃતજ્ઞતાકે
 કારણ પંડિતજીકે સ્મારકમે હમે ચાહિયે કિ
 યથાશક્તિ, કિં વહુના શક્તિસે મી વાહર સહાયતા
 કરે । હમ એક પંડિતજીકા સ્મારક પંડ જૈન મિત્રમે
 સોઝે હૈ ઓર ઉસમે અપની ઓરસે ૨૬)
 ૬૦ વી નમ્ર મેટ દેતે હૈ । હમારે પ્રત્યેક પાઠકકો
 જ્ઞાન સ્મારકમે યથાશક્તિ સહાયતા દેના ચાહિયે ।
 'દિગ્વર જૈન'મે વ 'જૈન મિત્ર' મે જો ૨ મહા-
 શય સહાયતા દેંગ વહ પ્રગટ હોતી રહેગી । સહાયતા
 'પ્રકાશક જૈનમિત્ર ચંદાવાડી સુરતકે' પત્રપર આના
 ચાહિયે । આશા હૈ કિ હમારે પાઠક અપને નગરમે
 મળાકર ઉપમે સ્મારકકે કિયે વજા મી કરંગે । ઓર
 મળાકે સમાચારોસે તુર્ત સુચિત કરંગે વ સ્મારક
 કંડ હમારે પામ મેંગે ।

દિગ્વર જૈનોમાં જોડાજો, તીર્થોદ્ધાર,
 અનેક સભાઓ, પાઠશાળાઓ
 ૬૦ જૈન કોમને નાં મહત્ત્વ કાર્યો કરી જનાર
 મહાન જોડ. સ્વર્ગીય જ્ઞાનવીર જૈનકુલ-
 ભૂપણ શેઠ માણેકચંદ-
 જ્ઞાના વિયોગને ઝાઝો સમય નથી એટલામા
 ગત ચેત્ર સુદ ૫ ની મનારે દિગ્વર જૈનોના
 એક બીજે મહાન દીવો । હોવાનાથ જવાના
 અતીવ દુઃખપ્રદ સમાચાર જોમેર ફરી વધ્યા
 છે, અમારા વાચકો જાણુતા દર્શન કે જ્ઞાનવીર
 શેઠ માણેકચંદને ધર્મ કાર્યો તરફ પ્રથમ
 દોરના પંડિત જોષાળદાસજી 'ખરેયાજી
 હતા અને જે અતીવ શુદ્ધિવાળી વિદ્યાન નર-
 રત્ને જૈનકોમની નિસ્વાર્થસેવા ઉત્તમ સેવા
 બનતી છે. વળી જેમ શેઠ માણેકચંદ જ્ઞાન
 અને કોમની નિસ્વાર્થ સેવા માટે જ્ઞાનવીર
 જૈનકુલભૂપણ અને જે .પી ની પદવી જોગ-
 વના ભાગ્યશાળી થયા હતા ત્યારે પંડિત જોષા-
 ળદાસજી ખરેયા વિદ્યા અને કોમની નિસ્વાર્થ
 સેવા માટે સ્વાદ્વાદવારિધિ વાદિગજકેશરી
 ન્યાય વાચસ્પતિની મહાન પદવીઓ મેળ
 વના ભાગ્યશાળી થયા હતા, જે બનાવ જૈનોમા
 પ્રથમજ છે. આ વિદ્યાન નગ્ને વિયોગ ચેત્ર સુદ
 ૫ દિને થનાથી જૈન કોમને જે અપૂર્વ
 જોડ ગઇ છે, તેના ખાડો ક્યારે પુગશે તે
 કશી શકાતુ નથી આ વિદ્યાન નગ્ને કોમની જે
 અપૂર્વ સેવા બનતી છે તેના બદલા રૂપે
 જૈનોના ફરજ છે કે દરેક સ્થળે શોકસભા
 બેનાવી એમના કુટુંબીઓપર દિસાસાધન મો-
 રેના (જ્ઞાનિયર) મોકલવો તથા પંડિતજીનામ
 અર્ધર્થિય યાદ રડે તે માટે એક સ્મારકકંડ
 'જૈનમિત્ર' મારદત જોડવામા આવ્યું છે અને
 જેમા ૨ ૨૫) ની અ ૫ રકમ અમારા તરફથી
 તથા બીજા ૧૮) તત્તલ બરાબા છે, તે એ
 મુખ્ય શ્રીમાન વિદ્યાન અને માધારણ
 બાદઓ પશુ પેતાપેતાની કુટુંબ મુખ્ય
 આ સ્મારકકંડમા રકમે અમારો ઓર મોકલી



આપશે એમ આશા રાખીએ છીએ. આ સ્મારકકંડની પહોંચ નામ ગામ સાથે દિગંવર જૈન તથા જૈનમિત્રમાં પ્રકટ કરવામાં આવશે. જે આ કંડમાં લાગણીપૂર્વક કાર્ય ઉપાડી લેવામાં આવશે, તેજ એમાં હંઠારોનું કંડ થવા સંભવ છે જેવી રવ. સ્વા. વા. ન્યા. પં. ગોપાલદાસજી બરવાલું પ્રાંતસ્મરણીય નામ ચિરકાળ સુધી ઉત્તમ રીતે જલવાપ રહે એવી વ્યવસ્થા થઈ શકશે. શોક સભા તથા સ્મારક કંડના સમાચાર એમને સત્વર મોકલવા કે જેવી તે આવતા અંકમાં પ્રકટ કરી શકાય.

ઉગ્રવાય છે તે એટલે સુધી કે કૃષ્ણજયંતી રામનવમી, જમશેદનરેશ્વ વગેરે તો નામદાર સરકાર તરફથી ખાસ જાહેર તહેવાર તરીકે વર્ષોથી પળાય છે જ્યારે જૈન ત્રી મહાવીરજયંતીને જુજાહેર તહેવારોમાં સ્થાન ન મળી શકે । એટલે, જે પ્રયાસ કરવામાં આવે તો એ કંઈ મુશ્કેલ નથી, આપણીજ એકઠાંની આ પરિણામ છે, અમને જણાવતાં આનંદ થાય છે કે હાહારના જૈનોએ પ્રયાસ કરવાથી ત્યાંના ઉપધુડી કલેક્ટર એચ. પી. ટાવીટને ચેત્ર સંક ૧૩ (મહાવીર જયંતી) ને દિને જાહેર તહેવાર પાળવાની આજ્ઞા પ્રકટ કરી છે. આ પ્રસંગે દરેક જલ્લામાં પ્રયત્ન કરવામાં આવે તો આપણે મહાવીરજયંતીને સમગ્ર હિંદમાં જાહેર તહેવાર તરીકે પગાવી શકીએ.

હવે આ જયંતી દરેક સ્થળે કેવીરીતે ઉજવવી તે સંબંધી થોડીક સુચનાઓ કરવી અસ્થાને ગણાશે નહિ—

૧ જૈનોના ત્રણ કિસ્કાના ભાંધાઓ એકજ મહાવીરપ્રભુને માને છે જેથી આ જયંતી એકજ મળીને ઉજવવી.

૨ મંદિરો, ઘરો, દુકાનો, ખોડિંગો, પાક-શાળાઓ આશ્રમો, પુસ્તકાલયો વગેરે એવી રીતે શાશ્વતારના કે જ્યાં જાહેરને એમ જણાય કે આજે જૈનોના કંઈ પરિવ્રાજક છે.

૩ દરેક મંદિરોમાં મહાવીર પ્રભુનું પૂજન અભિષેકપૂર્વક ભક્તભાવથી અને રાગતાનથી કરી મહાવીરચરિત્ર વ્યાખ્યાન કરી વચાવતું જોઈએ.

૪ સમગ્ર જૈનોની એક જાહેર સભા ઠાક માઠથી બોલાવી મહાવીર પ્રભુને જન્મકાળ અને તે પરથી લેવાના બોધ સંબંધી વ્યાખ્યાનો થવા ઉપરાંત મહાવીર જયંતી જાહેર તહેવાર તરીકે પાળવાને સરકારને અરજ કરનારો દરાવ કરવો તથા જે કોઈ સ્થળે મહામાંદે કંટોચા હોય તો તેનો સગ મનથી હાથાભાવે નીકાલ કરી નાંખવો જોઈએ તથા પુસ્તકો વગેરેની પ્ર-આવના કરવી જોઈએ.

લગભગ ચાર પાંચ વર્ષ થયાં જૈનોમાં મહાવીર જયંતિ ઉજવવા-મહાવીર જયંતી ની હિલચાલ અર્થ છે અને આવી છે. તે ઉત્તરોત્તર વૃદ્ધિ પામ-તી જાય છે એ ખુશી થવા જેવું છે. આ વર્ષે પણ એ શુભ દિવસ આવતી (ચેત્ર) સુદ ૧૩ સુરવાર તા. ૫૪-૧૭ ને ૩ શુભ દિને આવી પહોંચે છે. આ તેજ પગમપવિ-ત્ર દિવસ છે કે આજથી અડી ઉગર વધે ઉપર ને દિને શ્રી કુંડલપુરમાં આપણા ચોવીસમા તીર્થંકર શ્રી મહાવીર પ્રભુએ માતા ત્રીશ-લાની કુખે જન્મ લીધો હતા અને સર્વે સ્થળે અપાર આનંદોત્સવો થઈ રહ્યા હતા. આપણે આપણી, આપણા આપણોદાની, અને પુનપુત્રી-ઓની વર્તમાન ઉજવવાનું બુદ્ધતા નથી તો શું મહાવીર પ્રભુની જયંતી (જન્મનિધિ) ઉજવવાનું બુદ્ધી જતું જોઈએ ? કદીપણ નહિ. આ જયં-તીની ને એટલા ઠાકમાઠથી ઉજવવી જોઈએ કે આખા હિંદમાં ગમેગામ ને શહેરોશહેર સમગ્ર રૂપરૂપે એમ માન્ય પડે કે આજે (ચેત્ર સુદ ૧૩) જૈનોના કંઈ મહાન તહેવાર છે. અન્ય કોમોમાં રામજયંતિ, કૃષ્ણજયંતિ, હનુમાનજયંતી, નરસિંહજયંતિ ગણપતિજયંતિ, જમશેદનરેશ્વ જયંતિ, હનુમંતીરવની જયંતિ વગેરે જાહેર રીતે



५ आ पर्व निमित्त कंधने कंध २३५
निर्वाण भाटे काढी नेधये अने न्यां पाठ
नाणा न होय त्या ते स्थापना प्रथम ध्वजे
नेधये.

६ भासिक पाक्षिक के अडवाडिके सभा
न होय तो स्थापनी नेधये.

७ हर वर्ष नियमित रीते आ जयन्ती
उत्सव ते भाटे पाठ्य आधारस्थ थपु नेधये
याने अमुक सम्प्रदाये न्यातीना अर्थ, उपाडी
सेवानी प्रतिष्ठा करी नेधये.

८ आ जयन्ती द्येके स्थले, उपाध्यायाना
विशतवार सभाचार अभ्येते स्तर मेधरी
आपना के न्यां ते आर्त्ता अडभा प्रगट
करी सकाय.

पाठकोंको ज्ञात होगा कि चैत्र शुक्ल

प्रथोदशीके दिन भगवान्

महावीर जयन्तीका महावीरका जन्म हुआ था।

कर्तव्य। वे एक महात्मा थे। उनमें

अनेक गुण थे। सुख शान्ति

के दाता थे। हम भी सुख शान्तिके मार्गपर आना

चाहते हैं। इसके लिए यही उपाय है कि हम

उनके गुणोंका स्मरण करें। यद्यपि उनके गुणोंका

स्मरण चाहे जिस त्रियिकी और चाहे जिस

समय हो सकता है। लेकिन यह सर्व साधारण

आदमियोंसे नहीं हो सकता। यह वे ही कर

सकते हैं जो महावीरके गुणोंमें अत्यन्त अनुरक्त

हो गये हैं, जिनको यही धुन सगर हो गई

है। सर्व साधारण-मामूली व्यक्तिको किसी भी

काम करनेके लिए निमित्त कारण आवश्यकिय

होते हैं। उनकी चित्तवृत्ति निमित्ताधीन होती

है। भगवान् महावीरके गुणोंका स्मरण करानेके

लिए सर्व साधारणको कोई न कोई निमित्त

होने चाहिए। इसी आवश्यकताको ध्यानमें

रखकर भगवान् महावीरके निर्वाणके दिन

निर्वाणोत्सव मनाया जाता है। वह बहुत दिनासे

प्रचलित है।

इसी प्रकार भगवान् महावीरके जन्मातिथिके

दिन भी उनकी जयन्तीका उत्सव मनाया
जाता है। पाठकोंको यह ज्ञात होगा कि इस
उत्सवके मनानेकी प्रथा अभी चार छह वर्षसे ही
चली है। इतनेपर भी समाजको यह उत्सव इतना
मात्थ है कि वह आधुनिक होते हुए भी इस
समय सर्वत्र बड़े उत्साहके साथ मनाया जाता
है। लेकिन लोग इस उत्सवको ऐसे रूपमें
मनाते हैं कि जो दिवानीको मनाये जानेवाले
निर्वाणोत्सवका रूप है। निर्वाणोत्सवके दिन
आख्यानोंमें भगवान् महावीरके जिन
गुणोंका स्मरण किया जाता है वे ही गुण
जयन्तीके उत्सवके दिन भी कहे जाते हैं।
वे यह भूल जाते हैं कि यह जयन्ती-उत्सव है
और वह निर्वाण उत्सव।

असलमें होना तो यह चाहिए कि निर्वाण

उत्सवके दिन भगवान् महावीरके निर्वाण सब

न्या गुणोंका सूत्रियोंका वर्णन हो और जयन्ती

उत्सवके दिन भगवान् के जन्मसंबन्धी

गुणोंका वर्णन हो। ऐसा न होनेसे ये

उत्सव ऐसे ही अनवद्येते प्रतीत होते हैं जैसे

कि किसी पुत्रके जन्मोत्सवमें तो मरणके गीत

गाय जायें और मरण समयमें जन्मोत्सवके।

इसके लिए यह आवश्यकिय है कि म-

ग्न दोनो उत्सवोंकी न्यायी २ सूत्रियोंकी

अन्धी जानकारी प्राप्त करें। खास जयन्ती

उत्सवके गुणोंकी मरपूर जानकारी न होनेके का-

रण ही वत्ता महाशय भगवान् के अन्य उत्सव

संबन्धी गुणोंका वर्णन कर जाते हैं। क्योंकि कुछ

न कुछ तो कहना ही चाहिए। जयन्ती उत्सव कोई

साधारण उत्सव नहीं। उससे बालककी शिक्षाका

धर्मिक सम्बन्ध प्रतीत होता है। गालफकी होन

हस्ताका पता चलता है। जिस समय धरम

किसी पुण्यहीन निकृष्ट बालकका जन्म होता है

तो उस समय उस धरम नहीं रहता उत्पन्न



मंदिर है। ७० और ६० एकड़ जमीन है। से ४ बजे तक सामाजिक और ५ से ८ बजे तक धार्मिक व्याख्यान होंगे। सब भाइयोंको अवश्य पधारना चाहिए।

जिसकी ८० एकड़ जमीन है और जिनेन्द्र-मंगल ग्राममें पार्श्वनाथका मंदिर है जिसकी २०० एकड़ जमीन है परंतु सभा और मंदिर जीर्णहा-लतमें हैं। कहीं तो २ पूजन प्रक्षालन तक नहीं होता और सबमिलकर २५४८ एकड़ जमीन मंदिरों के कब्जेकी है परंतु यह सबकी सब जमीन अब सरकारके कब्जेमें हो गई है। यदि कोई धर्मात्मा श्रीमान् कोशिश करे तो यह सब जमीन सर-कारसे वापिस मिल सकती है। वहाँ जैनियोंकी वस्ती न होनेसे ही इस जायदादका यह हाल हुआ है।

उपदेशककी आवश्यकता—दानवीर सेठ माणिकचंदजीके ट्रस्ट फंडकी तरफसे भ्रमण करानेके लिए न्यायके जानकार एक विद्वान् उपदे-शककी आवश्यकता है। पत्रव्यवहारका पता—ब्र० शीतलप्रसादजी, ही० गु० जैन बोर्डिंग तारदेव बम्बई।

कुमार सभाका उत्सव—जैन कुमार सभा झालरापाटन केम्पका तीसरा वार्षिकोत्सव ता० १९ से २ अप्रैल तक होगा। जिसमें विद्वानोंके व्याख्यान भी होंगे।

स्वा० महाविद्यालयका वार्षिकोत्सव—श्रीस्वादादमहाविद्यालय काशीका वार्षिको-त्सव बड़े समारोहके साथ ता० ७-८ अप्रैल—चैत्र सुदी १५ और वै० कृ० १ को होगा। कार्यक्रम इस प्रकार है—प्रथम दिन दुपहरको रिपोर्ट और परितोषक वितरण, शामको धार्मिक व्याख्यान। दूसरे दिन डाउन हालमें दुपहर १

नये २ ग्रन्थ ।

आदिपुराण (महापुराण)

(भाषा टीका सहित)

पूर्ण ग्रन्थ छपकर तैयार है।

पृष्ठ १८०० मूल्य सोलह रुपया

हरिवंशपुराण

(नवीन आवृत्ति)

अबकी बार आजकलकी बोलचालकी भाषामें बहुत ही बढ़िया कागजपर छपकर तैयार हुआ है। मनोहर जिल्द बँधी हुई है। मूल्य छह रुपया।

अर्थप्रकाशिका ।

तत्त्वार्थसूत्रजीकी सरल भाषामें बड़ी भारी टीका। बढ़िया कागज, उत्तम छपाई, अलग पृष्ठ और मूल्य केवल साढ़े तीन रुपया।

गोम्मटसार जीवकांड ।

(भाषाटीका सहित)

पक्की जिल्द। मूल्य दारै रुपया।

नियमसार ।

ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी रचित भाषा टीका सहित।

कच्छी जिल्द १।।।), पक्की जिल्द २।

परमात्मप्रकाश ।

संस्कृत टीका और भाषा टीका सहित।

पक्की जिल्द। मूल्य तीन रुपया।

आत्मानुशासन ।

सरल बोलचालकी भाषामें नवीन भाषा टीका सहित। कच्छी जिल्द १।।।), पक्की जिल्द २।

मिलनेका पता—

मैनेजर दिगंबर जैन चंदाबाड़ी—मुरत.



विधवाविवाह ।

(ऐसक-मानभल वासलीवाल, बम्बई)

आज कल जैन समाजमें चारों तरफ विधवाविवाहका शोर मच रहा है। जिस अल-बारको हम देखते हैं उसमें कुछ न कुछ इस विषयकी चर्चा पाई जाती है। कोई कोई अलबार तो यहाँ तक पहुँचे हैं कि वे इस कृपाको जारी करनेका उपदेश देते हैं तथा बहुतसे अलबार इसका खंडन कर रहे हैं। हमें नहीं मायूम होता कि इस अवाजक उत्पन्न होनेका मुख्य कारण क्या है। विधवा-विवाहके प्रचारक इसको जाति संख्याकी वृद्धि-का हेतु मानकर इसको समाजमें प्रचलित करना चाहते हैं लेकिन हमको देखना चाहिये कि केवल जाति संख्या वृद्धि करनेसे लाभ है या जातिको अपने आत्म कल्याणकी ओर झुकानेसे लाभ है।

थोड़ी देरके लिए मान भी लिया जाय कि यदि एक जातिकी संख्या बहुत बढ़ रही है, लेकिन उसमें अपने "मौरल प्रिंसिपल्स" (moral principles) पर कुछ ध्यान नहीं दिया जाता तो क्या हम उस जातिको प्रशंसा-एष वाक्योंसे संबोधन करेंगे ? दृष्टान्त लीजिए कि कोई जाति अपने यहाँकी भावी संतानोंका रंग व मुख वगैरहकी आकृति अच्छी बनानेके लिए, व्यभिचार व अशर्मका कुछ खयाल नहीं करके अपने यहाँकी स्त्रियोंको संतानोत्पत्तिके लिए कोई, सुन्दर पुरुषोंके पास

भेजती है तो क्या हम उस जातिको एक अच्छी और उन्नति करनेवाली जातियोंमेंसे कहेंगे ? नहीं नहीं, कभी नहीं। इस पृथ्वीपर जब कि हमने मनुष्य जन्म धारण किया है तो इसका उद्देश सिर्फ यही कि सुख व भोगोंपर लक्ष्य देनेका नहीं होना चाहिए, किन्तु हमको अपने आत्मकल्याणकी तरफ भी ध्यान देना चाहिए। खास करके उस जातिको जो कि जैन धर्मकी अनुयायिनी है तथा उक्त धर्म कथित परलोकदिरुमें श्रद्धा रखती है।

अब हमको इस आवाजके उत्पत्ति होनेके मुख्य कारणकी ओर लक्ष्य देना चाहिए। यह सृष्टिका नियम है कि हमपर १०० पुरुष खूब भरे पेट भोजन करनेवाले इतना असर नहीं करते जितना कि पाँच पुरुष जो कि कारणवश भूखे रह जाते हैं व दुःखसे अपना जीवन व्यतीत करते हैं। इसी प्रकार हमारी जातिके १०० विवाहित पुरुष और १०० विधवा धर्मपूर्वक चलनेवाली स्त्रियाँ इतना असर नहीं करतीं, जितना कि पाँच अविवाहित पुरुष या पाँच ऐसी विधवाएँ जो कि अपने दुःख सहनेमें असमर्थ हैं, लेकिन जिस वक्त हम इन पाँच पुरुषोंके तरफ ध्यान दें तो हमारा लक्ष्य साधहीमें जो ज्यादा पस है उस तरफ भी जरूर जाना चाहिए तथा जो नियम हम बनाना चाहते हैं वे सर्वके हिंदु हों इस तरहके बनाना चाहिए। यदि विधवाविवाहसे सम्पूर्ण जातिको फायदा पहुँचे और जातिकी उन्नति होय तथा वह शास्त्रसम्मत हो तो चाहे पुरुष कुछ भी कहें, हमें उसको



जरूर प्रचलित करना चाहिए । इसके विपरीत-में, यदि उससे व्यक्ति विशेषोंका कभी किसी अंशमें, फायदा होय और जातिमात्रका सुकसान हो तो हमें उसका नाम भी न लेना चाहिए तथा आन्दोलन करके उसके प्रचारकोंका मुँह बंद करना चाहिए ।

विधवाविवाहका प्रचार होनेसे तीन चार बड़े अनर्थ होंगे और इसलिए विधवा-विवाह किसी हालतमें श्रेयस्कर नहीं कहा जा सकता ।

पहिले ही तो विधवाविवाहका प्रचार होनेसे जो खिया कि कर्मवश विधवा होगई हैं उन को अपना जीवन सफल करनेका मौका चला जायगा । जिस समय कोई स्त्रीका पति मर जाता है तो वह यदि समझदार है तो विचारती है कि " देखो मेरे कितने पापका उदय है " और फिर वह स्त्री गृहस्थ झगड़ोंमें ज्यादा नहीं पड़कर अपने उन महत्वापोंके धोनेका यत्न करती है । अब उन इस तरह जीवन व्यतीत करनेवाली स्त्रियोंको फिरसे सांसारिक भ्रमनालमें डाल देना पाप नहीं है तो क्या है ?

जरूरी बात है कि उपर कहे हुएपर बहुतसे महाशय दो आपत्तियाँ खड़ी करेंगे-पहली यह कि यदि ऐसा है तो मनुष्यको भी फिर पुनर्विवाह नहीं करना चाहिए । इस बातका जवाब तब किया जा सकता है जब कि हम इसका कारण मूलसे उठावें । ऐसा अब तक क्यों होता आया है कि पुरुष तो बहुतसे विवाह कर सकता है किन्तु स्त्रियाँ एक पुरुषके

सिवाय दूसरा पति नहीं कर सकतीं । यदि विधवाविवाहकी इजाजत दी जाय तो यह भी लाजमी बात है कि स्त्रियोंको एकके सिवाय दो तीन या इनसे भी ज्यादा पति बनानेकी इजाजत दी जाय किन्तु यह बात हम देखते हैं कि शास्त्र सम्मत और लोक सम्मत दोनों नहीं है ।

दूसरे प्रत्यक्षमें देखा जाता है कि एक मनुष्य बहुतसी थालियोंमें परोसे हुए भोजनमें जिस जिस रक्ताधीके भोजनके खानेकी इच्छा वह करे वह खुशीसे खा सकता है (सिवा इसके कि किसीमें अमश्य भक्षण रखा हुआ हो) लेकिन एक थाली जिसमेंसे उसने उठाकर खाया है वह फिर सिवा किसी शुद्ध जातिके पुरुषके और किसीके काम नहीं आसकती और यदि उस थालीमेंसे कोई उच्च पुरुष फिर कुछ खानेकी इच्छा करे तो लोग उसको मूर्ख तथा अधर्मीके नामसे ही संबोधन करेंगे । उसी तरहसे जो स्त्री एक वक्त किसी पुरुषसे उच्छिष्ट कर दी गई हो ऐसी स्त्रीको कोई दूसरा पुरुष भोग करे तो वह अधर्मी और पापी ही कहलायगा तथा इसके प्रचारकोंको कोई इनसे भी बड़े नामसे संबोधन करना पड़ेगा ।

दूसरा आशेष यह होगा कि क्या विधवा स्त्रियाँ उक्त प्रकार ही अपना समय व्यतीत करती हैं । इसका उत्तर देना कुछ मुश्किल है यह बहुत करके उनके चारों तरफकी हालत (surroundings) पर निर्भर है । बहुतसी स्त्रियोंके लिये कहा भी जा सकता है कि वे



धर्मसे चलती हैं तथा दूसरी थोड़ी बहुत स्त्रियाँ यदि अपने पयसे विधवा भी गई होय तो उनको सुमार्गमें लानेकी आवश्यकता है न कि उन थोड़ीसी स्त्रियोंके लिए सब स्त्रियोंके धर्मका हास कर देना ।

दूसरा अवगुण विधवाविवाहके प्रचार होनेसे यह होगा कि स्त्रीपुरुषोंकी आन्तरिक प्रीतिमें बहुत कुछ फर्क पड़ जायगा फिर आपसो पतिके लिए प्राण न्योछावर कर देनेवाली स्त्रियोंके उदाहरण बहुत कम मिलेंगे । प्रत्यक्षमें ही देखिए कि ऐसे दृष्टान्त भारत-वर्षमें (जहाँ कि विधवाविवाहका प्रचार नहीं है) कितने मिलेंगे तथा यूरोपादि खंडोंमें (जहाँ कि इसका प्रचार है) कितने मिलेंगे । मेरा कहनेका यह मतलब नहीं कि वहाँ प्रेमका अभाव ही है । प्रेमका जो स्वाभाविक सद्भाव है वह सब देशोंमें यहाँ तक कि आफ्रिकाके नीग्रोज़में भी पाया जायगा किन्तु वह गाढ़ प्रेम जिसके कि कारण एक स्त्री अपने पतिकी मृत्युके अनन्तर भी उसकी यादको नहीं भूलती है उसका अभाव हो जायगा तथा इस पृथक् प्रचलित होने वाद स्त्रियाँ व पुरुष एक सांसारिक वाञ्छाके निवृत्ति करनेके उपाय मान लें जायेंगे ।

तीसरा बड़ा अनर्थ विधवाविवाहके होनेसे यह होगा कि आपके यहाँ भी मुसलमान या यूरोपियनकी तरह माई बहिनमें शादियाँ होने लगेंगी । विचार कीजिए कि एक विधवा स्त्रीके अपने पूर्व पतिसे एक लड़की है । अब उसने दूसरे पतिसे विवाह किया उसके अपनी

पूर्व स्त्रीसे एक लड़का है । अब इन दोनों पुत्र और कन्याका विवाह आपसमें हो जायगा क्योंकि विधवा विवाह जन्मसे शुरू होगा तबसे साँखे वगैरह तो खूंटोपर टांग हो दी जायगी और यदि साँखे टाली भी जायेंगी तो कोई विघ्न जैसी बात नहीं उपस्थित होगी । अब आप विचारिए कि वह स्त्री (कन्या) अपनी माको "मा" के नामसे पुकारेगी या सामु कहेंगी, पुत्र अपने पिताको पितृ, श्रीके नामसे पुकारेगा या श्वशुर कहेंगा और वह कन्या अपने पतिको पति कहेंगी या भाई कहकर पुकारेगी । इसी प्रकारके बहुतसे अनर्थ होंगे ।

इन सब बातोंके विचारनेसे हमें मालूम होता है कि विधवाविवाह कितनी ही आपत्तियोंका स्थान है । संख्या वृद्धिका कारण यदि मान भी लिखा जाय (गो हिन्दुस्तानकी मनुष्य संख्या दूसरे देशों जहाँके पुनर्विवाह प्रचलित है, उनसे किसी अंशमें कम नहीं है) तो भी जातिका लक्ष्य च्युत होकर संख्याका वृद्धि किसी अंशमें कल्याणकारी नहीं कहा जा सकता ।

इसीलिए विवाहके प्रचारकोंसे (यदि कोई होय ?) मेरी सखिनय प्रार्थना है कि वे जातिपर धर्मपर तथा अपने देशपर कृपाकर इस विषयके लेख न लिखें तथा गिरती हुई जातिको और गिरानेकी कोशिश न करें । यदि वे समाजके सब हितैषी होय तो इस आवाज़के उठनेके मूल कारण बालविवाह, वृद्धविवाह कन्याविक्रयादि कुरीतियोंके निवारण करनेका यत्न करें ।



ઉપદેશક પીતાંબરદાસજીના

અમળનો રિપોર્ટ.

(તા. ૧૭-૧-૧૭ થી તા. ૧-૩-૧૭ સુધી)

સુબાઈમાં બાળસભામાં વ્યાખ્યાન કર્યું. વ્યાખ્યાન શેલી શીખવામાટે આજ પ્રમાણે શ્રેષ્ઠ સ્થળે બાળસભા સ્થપાવી જોઈએ.

આશ્રિત-સભા કરી ઉત્તિ પર વ્યાખ્યાન આપ્યું, જેથી અત્રેના બાઈએએ બાળબોધ નૈન પાઠશાલા સ્થાપવા વચન આપ્યું. બહુવા-લાયક ૧૫-૨૦ બાળક છે. જેએ સ્વાધ્યાયનો નિયમ સ્વીકાર્યો.

કેરવાડા-માત્ર ૧૨ ઘર છે. બાઈ નાગરદાસ-ના ઉદ્યોગથી ધર્મચર્યા સારી થઈ. ત્રણ જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. તથા શેઠ હરજીવન હરખચંદ ૫) ઉપદેશકદંડમાં બર્ધા.

પાઠરા-પાઠશાળાની પરીક્ષા લીધી તથા એક સભા કરી અબક્ષ્ય ત્યાગ અને સ્વાધ્યાય પર વિવેચન કરવાથી ૫ જણે રાત્રે અત્રના પદાર્થો ન ખાવાનો નિયમ કર્યો અને ૧૫ જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ સ્વીકાર્યો. ઉપદેશક-દંડમાં ૩૧. ૨) શા ગરખડદાસ બહેચરદાસે આપ્યા.

પાવાગઢ-મેળો તથા મેનેજંગ કમીટીમાં સામેલ થયો. રાત્રે શાસ્ત્રસભા કરી. કમીટીના જીવદલા ખાતામાં જે રકમ છે તેમાંથી અહિંસા ધર્મનો પ્રચાર કરનારા સેખ ટ્રેકટરે ગુજરાતી-માં કાળીકા દેવીના મેળો સમયે એવા સોફોને વેચવા જોઈએ કે જેઓ બળીદાનના સંકલ્પથી કાળીકા સમક્ષ પ્રગુપકી ચલાવે છે.

હાહોલ-કોન્ટ્રસ માટે તૈયાર થયેલા મંડપમાં સભા કરી દાનધર્મ પર વિવેચન કર્યું સંખ્યા ૫૦૦ હાજર હતી.

રખીઆળી-મહામહેનતે રાત્રે સભા કરી. ૧૦ બાઈએ હાજર થયા. કોન્ટ્રસમાં ડેલીગટ થવા કમીટી તો બુનાબ આપ્યો કે પ્રચુખ નાકી મયા વગર ફોર્મ કેમ બરામ!

હાકરોહા-એ સભા કરી જેથી ૨૧ જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. પાઠશાળા તથા શેઠ માણેકચંદ હીરાચંદ-પુસ્તકાલય સારાં ચાલે છે.

ઓરાણુ-એક સભા કરી સ્વાધ્યાય અને સદાચાર પર વ્યાખ્યાન આપ્યું. ૪૫ બાઈ સ્વાધ્યાય કરે છે. અત્રેની પાઠશાળા અધ્યા-પક બાઈ લલ્લુભાઈ રાયચંદના ધાર્મિક ઉત્સાહ-થી સારી ચાલે છે. ૫) ઉપદેશકદંડમાં આવ્યા.

સોનાસણુ-એક શાસ્ત્ર સભા કરી કુરિવાળે બંધ કરવા વિવેચન કર્યું. પાઠશાળા ૭ મહી-નાથી પાછી બંધ છે તે એના વ્યવસ્થાપક શેઠ જીવરાજે યોગ્ય અધ્યાપક બોલાવી ચાલુ કરવી જોઈએ.

કુતેપુર-એક સભા કરી. પાઠશાળા માટે માસિક ફંડ થયું છે. અધ્યાપકની જરૂર છે.

છંદર-સભા કરી કુરિવાળે ત્યાગ કરવા તથા કેળવણીના પ્રચાર સંબંધી વિવેચન કર્યું. જે બાઈએ સ્વાધ્યાય અને કેટલાક વિદ્યાર્થીઓ-એ રાત્રિએજીવનનો ત્યાગ કર્યો. પાઠશાળાની પરીક્ષા લીધી. છોકરીઓનું શિક્ષણ વખાણુના યોગ્ય છે. ગયે વર્ષે મોટી ઉમરની જહેનો બહુવા આવતી હતી પણ હાલ માત્ર એકજ આવે છે. પાઠશાળા સાથે શ્રાવિકાશ્રમ તો ચાલુજ રહેલું જોઈએ. ત્રણ બાઈએ દાહોલ સભા માટે પ્રતિનિધિ નિભાયા.

અમદાવાદ-શેઠ પ્રેમ મો. દિગંબર નૈન યોર્ડીંગના વિદ્યાર્થીઓને ધર્મશિક્ષણની પરીક્ષા લેવા માટે બોલાવ્યા, પરંતુ બાઈ કેશ-વલાલ ડાલાભાઈ બી. એ. એ કેટલીકવાર બોલાવ્યાબાદ માત્ર ચારજ વિદ્યાર્થી હાજર થયા ! ! ! વિદ્યાર્થીઓએ ખુશી રીતે કહ્યું કે અધ્યાપક ન હોવાથી અમે સમજી ધર્મ-શિક્ષણ જીતી ગયા છીએ. આપ અત્રે શા માટે કપડા આપો છો ?

હિલમીરી યાય છે કે ૧૨ વર્ગની ધાર્મિક કેલવણીના સરકાર મેટ્રીક્યુલેશન પાસ કરવા-વાળા વિદ્યાર્થીઓ પર કંઈપણ રતા નથી.

ગોડિંગના વ્યવસ્થાપકોની દુરુદ છે કે તેઓ
ધણીજ તોફાંદે ચોગ્ય અધ્યાપક સમજાનો
પ્રબંધ કરે. સુપ્રીન્ટેન્ડન્ટની તબીયત ઠીક નહોતી
એમ સાંભળવામાં આવ્યું છે.


દાહોદ-મુખાધ અને માળવા પ્રાંતિક
સમાના વાર્ષિકોત્સવમાં સામેલ થયા.

વિશેષમાં ઉપરોક્ત ભ્રમણમાં ખાસ કરી
દાહોદ સભામાં લાભ લેવા તથા કોમમાં પ્રચ-
લિત નકામા, હાનિકારક તથા ખર્ચાળ રિવાજો
ખંધ કરાવવા પ્રયાસ કર્યો હતો. ખાસ વિચિ-
ત્રતા એ છે કે કેટલીક પાઠશાળાઓમાં દસ દસ
ખાર ખાર વર્ષની છોકરીઓના દાંત સોનેથી
મહેલા એક તેમને પૂછવાથી જાણ્યું કે માળાપ
અને પતિના પ્રેમને ખાર એ ફળવ્યાલ
જડાવવા પડે છે. વાહરે પ્રેમ ! અને ખાલ
સુંદરતા ! કે જે મદતી વખતે લોહી છુટાણ થાય
તથા દાંત સાફ ન થઈ શકવાથી મોમાંથી દુર્ગંધ
આવે તથા જન્મપર્યંત કુદરતી દાંત ગમે તેટલા
કમજોર થઈ જાય તોપણ આ જોડંગી અને
અદ્ભુત સુંદરતાની આમળ આટલાં દુઃખોથી
કંઈ કિંમતજ નહીં થાય ! અમે તે સામ્રાજ્યો
અને માતાઓનું ખાસ ધ્યાન ખેંચીએ છીએ
કે તેઓ એ નીતિના માર્ગને અટકાવ કરે કે-“જેથી
ચેટ ઠાટી જાય એવી સોનાની કટારીનું” શું
પ્રયોજન છે ?”

સમાજ સેવક-ઠાકોરદારા ભગવાનદાસ ઝવેરી
મંત્રી, ઉપદેશક વિભાગ-મુખાધ

મંદિરોંકે કામમેં લાને ચોગ્ય

 પવિત્ર

ફાફમીરી કેશર 

વર્ષ भरके लिये अभीसे मंगा लीजिये,
क्योंकि इस वर्ष उपज कम होनेसे पवित्र
केशर वर्ष भर तक मिलना कठिन है ।
मूल्य १।।) डेढ रुपया फी तोला ।

मैनेजर:-दि० जैन युस्तकालप

चंदावाड़ी-मुरत ।

મુંબઈ સમાચાર

અને

વિધવાવિવાહની ચર્ચા.

મુખાધ સમાચાર તા. ૨૮-૨-૧૭ ના અંકમાં
દાહોદમાં મળેલી મુખાધ-માળવા દિગંધર જૈન
પ્રાંતિક કોન્ફરન્સના પ્રમુખ શેઠ નવલચંદ
હીરાચંદ ઝવેરીના બાધણની સમાલોચના
રૂપે એક સંપાદકીય લેખ લખાયો છે, જેમાં
ધણીબાળતોમાં એ વ્યાખ્યાનની પ્રસંસા કરવા
પછી શેઠ નવલચંદ વિધવાવિવાહને ધર્મ વિરુદ્ધ
જતાવ્યો છે તે ઉપર પોતાના વિચારો દર્શાવતાં
એવું જતાવવાનો પ્રયત્ન કર્યો છે કે જૈનશા-
સ્ત્રોમાં વિધવા વિવાહની મનાઈ નથી, પણ એની
આજ્ઞા છે (૧) એ બાબત ત્રણ દાખલાઓ
આપેલા છે, જેનું ખડન નીચે મુજબ છે-

૧. “ યોવીસ તીર્થંકરોમાંથી એકને ગૃહ-
સ્થાપનમાં જો બે પત્નીઓ હતી તેમાં એક
વિધવા હતી. ” આ વાત કોઈપણ દિગંધરજૈન-
શાસ્ત્રમાં નથી અને શ્વેતાંગર જૈનશાસ્ત્રોમાં પણ
નહીં જ હશે. જો કદાચ હેલ તો તેને માનવાવાળા
દાહોદ કોન્ફરન્સના પ્રમુખ કે ત્યાં મળેલા
દિગંધર જૈનો નથી.

૨. “ રાવણની સ્ત્રી મહોદરીએ અને
વાલીની પત્ની તારાએ વિધવા ચવાથી અનુક્રમે
વિધીપણુ અને સુમીવની સાથે વિવાહ કર્યો. ”
આ બાબતને પણ જૈન લોકો માનતાજ નથી.
દિગંધર જૈનાચાર્ય રચિત ખાસે સાકાવણુ વીર
સંવતનું સંસ્કૃત પદ્યપ્રગણુ ખુદશી રીતે બતાવે
છે કે મહોદરી વિધવા ચવા પછી સાધ્વી-આર્યિકા
થઈ ગઈ હતી. રાવણના મૃત્યુ પછી મહોદરીએ
આ વાક્યો કહ્યાં-“હું પિતા, પુત્ર અને પતિ એ
સર્વથી રહિત થઈ. સ્ત્રીના એજ નરસક છે.
હવે હું કેને શરણે જાઉં ? ” આ વાક્યોથીજ
જાણીય છે કે એ પ્રાચીન કાળમાં, વિધવાવિવા-
હનો રિવાજ નહોતો. જો એ રિવાજ હોત, તો



પેતા, પુત્ર અને પતિ એ ત્રણજ સ્ત્રીના રક્ષક છે એવું વાક્ય કહેવામાં નહીં આવતે. શોકથી રહિત થઈને મદોદરી આર્થિકા થઇ ગઇ અને તપસ્યા કરવા લાગી. એજ સમયે રાવણની પ્રેરેન ચંદ્રનખા જે પોતાના પતિ ખરદૂપણના મરવા પછી ધણું વર્ષ થયાં વિધવા અવસ્થામાં આવિકાનાં મતો પાળી રહી હતી, તે પણ હવે આર્થિકા થઇ ગઇ. ઉપરની બાબત લેખકે હિંદુઓના સમાયણની લખી હશે કે જેને જૈનો પ્રમાણિક માનતા નથી.

૩. “દ્રૌપદીને પાંચ પતિ હતા.” આ વાત પણ દિગંબર જૈન શાસ્ત્રોમાં નથી. શ્રીજિન-સેનાચાર્યકૃત જાણીતા દરીવંશપુરાણ ગ્રંથમાં તથા પાંડવપુરાણમાં ચોખ્ખું દર્શાવેલું છે કે દ્રૌપદી માત્ર અર્જુનનીજ પત્ની હતી. દિગંબર જૈન શાસ્ત્રોમાં કોઇ પણ સ્થળે એવું કોઇ પણ દ્રષ્ટાંત ‘મળતું’ નથી કે કોઇ ધર્માત્મા ગ્રહ-સ્થ સ્ત્રીએ વિધવા થવાથી ફરી લગ્ન (વિધવાવિવાહ) કર્યો હોય. વિધવાવિવાહ શબ્દજ્ઞ અસંબદ્ધ છે. એ વાક્યજ્ઞ અશુદ્ધ છે કેમકે પ્રાચીન કાળમાં વિવાહનો અર્થ ચોખ્ખ વર સાથે કન્યાના દાનનો હતો. સ્ત્રીઓને ખીન્ન પતિ માટે એટલે સુધી અટકાવ હતો કેભ્યારે રાજ્યસમતીના વિવાહ માટે આવેલા નેમીતાથ તીર્થંકર વૈરાગ્યવાન થઇને પાછા આત્મા ગયા ત્યારે રાજ્યે કહ્યું કે-જે કે નેમીતાથનું પાણિગ્રહણ પ્રકટરૂપે મને થયું નથી, તોપણ હું મારા મનથી એમનેજ વરી સુધી છું. હું અન્ય પુરૂષની ધ્વજા કરી રાકતી નથી. જે વાતની દિગંબર જૈન શાસ્ત્ર આગા આપતું નથી તેનેજ દિગંબર જૈનો ધર્મ વિરૂદ્ધ માનશે.

પ્રમુખ શેઠ નવલચંદે પોતાના બાપણમાં વિધવાવિવાહને અજરૂરીપણ બતાવ્યો છે કેમકે જે કામોમાં વિધવાવિવાહનો રિવાજ છે તેમાં પણ ૧૫ વર્ષસુધીની ઉંમરની ૧૦૦૦ માં ૧૫ વિધવાઓ ફિવામાં આવે છે. મુંબઇ પ્રાંતના

મુસલમાન અને ખ્રીસ્તીઓમાં અનુક્રમે ૧૦૦૦માં ૨૦ અને ૧૩ વિધવા મળી આવે છે. જૈનોમાં વિધવાઓની જે સંખ્યા વધારે છે તે બાળલગ્ન, દુર્ધવિવાહ, વેર્યાવૃત્ત્ય ગરેરે કુરિવાજો બંધ કરવાથી ઓછી થઇ શકશે અને કોઇપણ બાળવિધવા જણાઇ શકશે નહિ. પ્રમુખના બાપણથી અધિપતિને માલૂમ પડ્યું હશે કે જે નીચ કોમમાં વિધવાવિવાહ થાય છે ત્યાં બાળલગ્ન વધુ થાય છે કેમકે વિવાહ કરવા ચોખ્ખ વિધવા અને કન્યા બન્ને તૈયાર હોવાથી કન્યાના બાપો સારો વર મળવાની લાલચે લાચાર થઇને નાની ઉંમરમાં પરણાવી દે છે અને મુંબાઈ સેસન્સ કમીશનના લખવા પ્રમાણે એમજ છે.

પ્રમુખના બાપણના ૬ ઠા પાનેથી અધિપતિને માલૂમ પડશે કે મુંબાઈ પ્રાંતમાં જૈનોમાં બાળકોથી કન્યાઓ વધુ ઉત્પન્ન થાય છે અર્થાત્ ૧૦૦૦ માં ૧૧૫૮ છોકરા અને ૧૩૦૪ છોકરીઓ છે. જે માતાઓ કન્યાઓની ચોખ્ખ રીતે બરદાસ્ત કરે તો કન્યાઓના વિવાહ માટેજ પુરૂષો મળવા મુશ્કેલ થઇ પડે, તો પછી વિધવાઓ થાટ કપાંથીજ મળે અને જે વિધવાવિવાહ ચાહુ થાય તો મુંબાઈના સેન્સસ ઓફિસરે લખ્યું છે તેવુંજ ફળ થાય કે કન્યાઓના બાળલગ્ન આથી વધુ થાય અથવા મોટી ઉંમરસુધીકુમારા રહેવું પડે છતાંદી કારણોથી પ્રમુખે જે લખ્યું છે તે બરાબર છે. મુંબાઈ સમાચારના ૧૪મી માર્ચના અંકમાં એક જૈને દિગંબર જૈન કોમની ધટતી જતી સંખ્યાને મટાડવાના ઉપાયો માટે જે લેખ લખેલો છે, તેમાં બતાવેલા ઉપાયો તાકીદે અમલમાં લાવવાની જરૂર છે. વિધવાઓ માટે આશ્રમો હોવાની જે જરૂરત બતાવેલી છે તે ચોખ્ખ છે. એક બાળુ વિધવાઓની સંખ્યા ઓછી કરવાનાં કારણો અમલમાં આવે અને ખીજ બાળુએ જે વિધવાઓ હોય તેને ચોખ્ખ કેળવણી દ્વારા ઉપયોગી બનાવવામાં આવે, એજ ચોખ્ખ છે.



સોજીત્રા સંભાના મટેપરાં (વીસા-
મેવાહા)ના પુકડાના સંભાવા-
ઝાને પુક વિનંતિ.



બાધ્યો, હવે આપણું પંચ આપણું
સુકામે ભરાઈ તેની અંદર સુધારાઓ થયા તે સર્વે
આપને યાદ દશે. આપણે આજ સુધી મધના
ટીપાની માફક જે આશાઓ રાખતા હતા
તેમાંનું કાંઈપણ થયું નથી, એમ હવે સારી પેઠે
સમજ્યા દશે.

આપણા એકડાના પંચ સિવાયના બીજાઓ
જ્યારે આપણને હવકા ગણે છે તો તે વિષે
તમારાં રૂચાં જ્યારે જિયાં થતાં નથી તે શું ?

મહાત્મા મોહનલાલ કરમચંદ ગાંધીના
દાખલો લઈ તેમની માફક પોતેજ જ્યારે પરિ-
શ્રમ ઉદાપરો અને બીજાઓની દરકાર નહીં
કરો તોજ ફળીજીત થશે અને સારી કીર્તિ-
ને પામશે.

જેઓ આપણી પાસેથી કન્યાઓ લઈ જઈ
ને આપણનેજ ધીકારે છે, તો તે તમે કેમ સહન
કરો છો ? આ બાબતને વિચાર કરી આપણે
તે વિષે કંઈ પણ યોગ્ય કાર્ય કરીશું નહીં,
તોપણ આપણી પાયામાલી થઈ જશે, માટે
હવે ઘોર બેધમાંથી જાગો તો સારું.

આપણા સંભાવાળાઓએ ભેગા થઈ નીચે
ચુનવ દરાવ કરી તેને અમલમાં તાકીદે સુકવાની
જરૂર છે કે જેથી કરી આપણને જેઓ હલકા
જાણતા હશે તેજાજ આપણી પ્રસાસ કરશે.

૧ આપણા સંભાની અંદર કોઈને નીચ
જાય ન ગણતાં મધ્યાને સમાન ગણવા.

૨. આપણા સંભાની બહાર કોઈએ કન્યા
આપવી નહીં અને ચારે તો તેની સાથે કોઈપણ
જાનતા સંબંધ રાખવો નહીં અને તે સંબંધ-
માં તેને કોઈએ પણ પણ પકડવો નહીં

૩. આપણી સંભામાંનો કોઈ માણસ કન્યા-
વિક્રય કરી પોતાનું કાણું મોં કરે તેને આપણા
સંભાના વ્યવહારથી છ'દગીપર્યંત બહાર મુકવો.

૪. આપણા સંભાની અંદર બની શકે તો
અંકલેશ્વરના મેવાડાબાધ્યો તથા વાંચ-
સભાના રાયકવાળા બાધ્યોને તથા બીજા
દિગંજરો બાધ્યોને ભેળવી આપણા સંભાની
અંદર બસોની સંખ્યા વધારવી.

૫. આપણા સંભાની અંદર કોઈ સાડું
તેખડું કરે નહીં, પણ પોતાની નજરમાં આવે
ત્યાં પણ આપણા સંભાની અંદરજ કન્યા
આપવા લેવાનો સંબંધ કરે તે વિષે યોગ્ય
બંદોબસ્ત મજબુતાઈથી કરવો કે જેથી કરી
આપણને બીજા હલકા માને નહીં.

જેઓ આપણને ધિકારતા હોય તેવાઓને
કન્યા આપવી એ આપણી કેટલી હલકાઈ
ફેલાય. બીજાના આગળ પચની બાબતમાં
જાણીશું અને આપણી હલકાઈ દેખાડવી અગર
બાધસાહેબ કેહેવા અને કેહેવું કે તમે સુધારો
કરો એ આપણે કેટલું શરમાવા જેવું છે ! તે
માણસ છે અને આપણે શું નથી ! જિયાં કે
નીચી પદવી મેળવવી એ આપણા હાથમાં
છે, માટે જેમ બને તેમ આપણામાં સુધારો
કરવા આપણે જાતેજ તૈયાર થવું જોઈએ. કેહેવત
છે કે 'આમ મુખા વિના સ્વર્ગે ન જવાય'
માટે હું મહારાજો ! હવે આપણા બધાઓને
વિચાર કરી 'દાદે કરીશું' એમ ન રાખતાં જે
કરવું યોગ્ય લાગે તે જલદી કરવા તત્પર થશો.

ગાતિસેવક-જીવણલાલ હલોચંદ-મુખાધ.

પુત્રીકો માતાકા ઉપદેશ

(સસુરાલ જાતે સમય)

વિવાહાદિ પ્રસંગોપર ચાંટને યોગ્ય, પૃં ૩૦
મૂલ્ય સિર્ક)-૧૧ ઓર ૬) સૈકડા ।

મૈનેજર, દિં જૈન પુસ્તકાલય-સુરત.

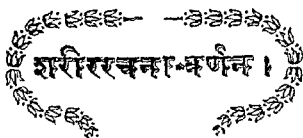


आजकल करने २ अरसा २० सालसे मैं एक ऐसी दवाकी खोजमें था जो जगत्को आशीर्वाद द्य हो जाय, एक ही छोटी सीसी अपने जेबमें रखनेसे सारा दवाखाना निघरामा हो जाय—यानी अपनी जाकिटकी जेबमें एक छोटीसी सीसीके अंदर सारा दवाखाना आजाय। पदेशमें, रेलमें, जहाजमें, जंगलमें, छोटे मोटे गांवमें जहां जिस वक्त कोई बीमारी उमड़ आये उसी दम उसका इलाज अपने जेबमेंसे निकल पड़े। कई आशा निराशाके झोके खाते आज २० वर्षके पड़े परिश्रमके बाद मैंने यह “चन्द्रामृत” पाया है।

इससे यादी, बदहजमी, इस्त, कै, खांसी, दमा, शिरदर्द, जुखाम, आंखका दई दांत या दाढ़का दई, कर्ण रोग, दाद, खुजली, खाज, हैजा, सूक्ष्म गठिया, पात, लकवा, कमजोरी, अशक्ति, नामर्दी, जहरी ढंक, फ़ीहा, अण्डवृद्धि, प्रदर, रोग, सररी, बन्नासीर, मुहके छाले, प्रमेह, रक्त शुद्धि, जलना, ताप (बुखार), न्दारुआ, हिचरी, दुर्गन्धि, खटमल आदि प्रायः सर्व रोगोंका पूरा इलाज है। ग्रहस्थोंको एक सीसी अवश्य पास रखना चाहिये। कीमत अमीर गरीब सबके लिये थोड़ी रखी है खाने लगानेकी तरकीब दवाके साथ मिलती है। की० फी सीसी ॥१॥ तीन सीसी २) ४० बा० सर्वे अलग।

दवा मंगानेका स्थल:—

चन्द्रसेन जैन वैद्य, चन्द्राश्रम-इटावह. U. P.



શરીરરચના-કર્ણન ।

(લે. દાથીચર માણેકવંદ-સોનાસળ)

(૪ થા અંકથી ચાલુ)

શરીરના મુખ્ય ભાગો.

આપણા શરીરની અંદર કયા કયા અવયવો અથવા ભાગો ક્યાં ક્યાં આવેલા છે, એ સંબંધી સાધારણ જ્ઞાન દરેક માણસને હોયું જોઈએ, પણ આપણા દેશી લોકો એ સંબંધી કશું પણ જ્ઞાન ધરાવતા નથી અને તેથી તેઓ પોતાનાં દરદોના સંબંધમાં વારંવાર ભૂલો કરે છે અને પોતાના ડૉક્ટરો કે વૈદ્યોને પણ ભૂલવામાં નાંખી દે છે. આવી અજ્ઞાનતાને લીધે દર્દીની હકિકત પર વધુન થોડું વગન રાખી શકાય છે અને જો ડૉક્ટર દર્દીના ચોલવાપરજ વિશ્વાસ રાખી જાતે શરીર તપાસ્યા વિના દવા આપે છે, તો જરૂર ભૂલ થાય છે. દર્દ કલેનામાં હોય અને વાંક ચરલનો કાઢવામાં આવે છે અથવા દર્દ આંતરડામાં હોય અને વાત કલેજાની કરવામાં આવે છે. પોતાના શરીર વિષે માણસો એ આટલું બધું અજાણપણું રાસતું જોઈએ નહિ. શરીરની અંદરના મુખ્ય મુખ્ય ભાગોનું અને તેનાં કાર્યોનું જ્ઞાન તો દેશ માણસે મેઝવતું જોઈએ.

શરીરમાં માથું અને ધડ એ બે મુખ્ય અંગો છે. એ બન્ને ભાગો ડોઝવડે સંધાયેલા છે. જો ડોકથી એ વચ્ચે ભાગોને જુદા કરવામાં આવે, તો શરીરનો સત્તો વ્યવહાર શંક પડી મૃત્યુ નીપજે છે.

માથું.

માથું શરીરનું ઉત્તમ અંગ ગણાય છે; કેમકે આપણા શરીર પર અધિકાર ચલાવનારા અધિકારીનો મુખ્ય મહેલ માથામાં આવેલો છે, જે મગજ અથવા મેજું એવા નામથી ઓળખાય છે. માથામાં ચંદ્રાર દૃષ્ટિ પડતા અવયવોમાં ચોપરી અથવા મગજની તુંવડી, જોવા માટે બે આંત્રો, સાંભળવા માટે બે કાન, સુંવા માટે બે નસ્કોરાં અને ચોલવા માટે મોંદું છે, જે સર્વે અવયવો પેલા અધિકારીના ઉપયોગને માટે તેના મહેલની લગોલગ ગોઠવવામાં આવેલા છે. માથામાં બે ગોઠવા અથવા પોલો છે એક ચોપરીની પોલ અને બીજી મોંની પોલ. આ શરીરના અધિકારીનું ઘર ચોપરીની પોલમાં છે. આ ઘરમાં જ્ઞાનતંતુઓ અને ગતિતંતુઓનો સંગ્રહ થયેલો છે અને એ સંગ્રહને મગજ એવું નામ આપવામાં આવ્યું છે. મોંની પોલમાં મોં, જીભ, દાંત વગેરે આવેલા છે. મોંના ગોઠવામાંથી એક નઠ ડોક વાટે જાતિમાં થઈને પેટમાં ઉતરે છે, જે અન્ન-નઠ કહેવાય છે, અને ચોપરીની પોલમાંથી એક નઠ પાટલા ભાગમાં ચરડાની કરોટમાં ઉતરે છે જે કરોડરજ્જુ નઠ કહેવાય છે, અને વાસ્તવિક રીતે જોતાં એ બે નઠ વાટે આ આપણા શરીરનો સર્વ વ્યવહાર ચાલે છે, તેથી જ મોંડાનો પહેલો, હાથનાં જીનો, પેટનાં જીનો અને પગનો છેલ્લો દરજ્જો ગણેલો છે.

ધડ.

ધડમાં પણ માથાની માફક જ મહોટી પોલો છે—એક જાતિની પોલ અને બીજી



પેટની પોલ. છાતિની પોલ અથવા પાંજરું એક કોટડીના જેવું છે. છાતિની પોલમાં બે ફેફસાં અને હૃદય એ બે મુખ્ય જીવનસ્થાન છે. એ સિવાય મોંની પોલમાંથી હોક વાંટે ઉતારેલાં અન્ન-નલ્લ છાતિમાં થઈને નીચે ઉતરે છે. છાતિમાં આ અવયવો સિવાય સ્ત્રીઓને બે સ્તન હોય છે. છાતિ તથા પેટની પોલની વચમાં માંસનો ઘુંમટના આકારનો એક ગોળ પડદો દીવાલના આકારે આવેલો છે. અન્નનલ્લ એ દિવાલને મેદીને પેટમાં ઉતરે છે.

પેટની પોલના ઉપલા ભાગમાં યકૃત એટલે કલેજું, પ્લીહ એટલે વરોલ, આમાસ્ય એટલે હોજરી અને પચાશય એટલે આંતરડાં આવેલાં છે. હોજરીના ઉપલા છેડામાં અન્ન-નલ્લ મળે છે અને નીચેના છેડામાંથી નાનાં આંતરડાંની શરૂઆત થાય છે. પેટની પોલના નીચલા ભાગમાં મૂત્રાશય એટલે ફુકો આવેલ છે, જેમાંથી મૂત્ર મૂત્રમાર્ગની નળી વાંટે બહાર આવે છે. મૂત્રનળી નીચે ટૂપણની કોથળી આવેલી છે. ઘડના પાલકા હાડકાંને વરડાની કરોડ કહે છે, જેના આધારથી આખું શરીર ટ્યાર રહેલું છે. કરોડમાં હાડકાંની એક પોલી નળી ઉતરેલી છે. આ નળી ઉપર છેક મગજ સાથે સંબંધ રાખે છે અને નીચે કંઈ મુધી પહોંચેલી છે. ઘડની અંદર છાતિ અને પેટ એ બે મોટી પોલો સિવાય બે ચાત્રમાં બે હાથ અને નીચે બે પગ આવેલા છે, જે મગજમાં રહેલા અધિકારીની આજ્ઞાથી પદાર્થોને પકડે છે અને શરીરને એકથી બીજી તરફ એડે જાય છે.

સ્વોપરીની પોલ (માથાની ટુંબી Skull)

પાલકા મગજના પ્રમાણે શરીરમાં મુખ્ય

ત્રણ અગત્યની પોલો છે—સ્વોપરીની પોલ, છાતિની પોલ, અને પેટની પોલ. શરીરના સર્વે ચૈતન્યવાળા ભાગો અથવા જીવસ્થાનો એ ત્રણ પોલોમાં આવેલા છે. શરીરમાં જુદા જુદા અવયવોની વૃથક વૃથક ક્રિયા થવી, તેનું નામ જીવ છે, અને એ ક્રિયાઓ બંધ પડવી તેનું નામ મૃત્યુ છે. એવી ચૈતન્યવાળી ક્રિયા અથવા જીવનનાં મુખ્ય સ્થાનોમાં મગજ સર્વોપરી સ્થાન છે અને તેનું કારણથી તેનું રક્ષણ પણ વધુજ મન્યુત કિલ્લાની અંદર થયેલું છે. એ કિલ્લો તે માથાની સ્વોપરી છે. માથાની આ ટુંબડીની અંદર મગજના ચાર ભાગો સિવાય આંત્ર, કાન, નાક, જીમ અને મોંઢાનાં ઘર આવેલાં છે.

મગજ (મેનું Brain)

મગજ સ્વોપરીની પોલમાં બરાબર વેસ્ટું કરવામાં આવેલું છે, સ્વોપરીની જમીન મગજની સપાટીને અનુસરતી છે એટલે તેમાં શાકા શકના છે, જેમાં મગજ બરાબર વેસ્ટું આવે છે. સ્વોપરીમાં મગજને માટે ત્રણ આચ્છાદન એટલે પડ છે. સૌથી ઉપરનું વાહ્યપદ જાડું તથા મન્યુત છે અને સ્વોપરીની અંદર ચારે તરફ આવેલું છે; તેનો એક કાંટો મગજના બે ભાગની વચમાં ઉતરે છે. મગજમાંથી જે લોહી ફરીને પાકું જાય છે, તેને માટે આ વાહ્યપદમાં નળી જેવા માર્ગ હોય છે. બીજું પડ મેજના મધ્યમાં છે. જેને મધ્યાવરણ કહેવામાં આવે છે તે પડ ચેપડું છે અને તેની પોલમાં પ્રવાહી છે. ત્રીજું પડ મગજની લગોલગ આવેલું છે, તેને અંતરપદ એવા નામથી ઓળખવું. મગજના પોષણ માટે તેમાં રક્ત નળીઓની નાલ પમાડેલી છે. મગ-



જના ચાર માગ કરવામાં આવેલા છે, જેમાં બે મુલ્ય છે—આગલું અથવા મોટું મેજું અને પાછલું અથવા નાનું મેજું. મોટું મેજું માથાના આગલા અને ઉપલા ભાગમાં મુકાયલું છે. મમરોની જરા ઉપરથી વેડ કાનના હિટ્ટો આગળ થઈને માથાની આસપાસ એક લીટી ઘેરવાથી મોટા મેજાની હદનો અડસટો મનમાં આવી શકે છે. તે ઉપરથી ગોઠ કરચલીવાળું અને છડચડું દેખાય છે. તેના સ્પર્શના એક ફાટ હોવાથી મધ્યમાંથી તેના બે અર્ધગોળાકાર ભાગ થયેલા છે. આ મોટા મગજના ઝંડાણમાં ઘણ નાની પોલાણ જગાઓ છે, અને તેના તલ્લીઆમાંથી કેટલીક તંતુઓ નીકળી નાક, કાન, જીભ વગેરેમાં ફેલાયેલી છે.

નાનું મેજું માથાના પાછલા હાડકાંના છાદામાં મુકાયલું છે. તે મોટા મેજાનાં જેવું કરચલીવાળું નથી, પણ ચોપડીનાં પાનાંઓની પેઠે તેમાં પડ હોય છે. તેના પણ બે અર્ધગોળા ભાગ થયેલા છે. તેનું કદ નારંગી જેવડું હોય છે. નાનું મેજું કાપતાં અંદરના પ્રાદના જેવો દેખાવ નજરે પડે છે. મગજ સાથે જો બીજા બે નાના ભાગો આવેલા છે, તેમાંનો એક ભાગ સૌથી નીચે આવેલો છે અને તે ચરદાની કરોડરજ્જુ સાથે સંબંધ ધરાવે છે. આ માગની મદદથી શ્વાસ લેવાનું કામ ચાલે છે. કોઈ પ્રાણીનું આગલું મેજું કાપી નાંખ્યું હોય તોપણ તેનો આ ભાગ આગ્યો રહ્યો હોય ત્યાં સુધી શ્વાસની ક્રિયા ચાલુ રહેશે.

આ ભાગને તથા ઉપરનાં મોટાં તેમજ નાનાં મેજાંને જોડનાર એક ચોથો ભાગ મગજનો છે,

તે આડો પડેલો છે અને તે સૌથી ન્હાનો ભાગ છે.

આજના મગજનું એકંદર સરાસરી વજન આસરે ઘણ રતલ ગણાય છે. સ્ત્રીનું મગજ પુરુષના મગજ કરતાં કોઈક ન્હાનું હોય છે. મગજના નાના મોટા કદના પ્રમાણમાં માણસની ઓછી વધતી અકલ હોય છે. મોટા મગજવાળા માણસમાં વધારે બુદ્ધિ હોય છે અને ન્હાના મગજનાં માણસમાં ઓછી બુદ્ધિ હોય છે. ઇગરની સાથે પ્રમદ, વળ, વેચાઈક, ચર્ચા, સુધી વજનમાં વધે છે અને ૩૦ થી ૪૦ વરસની વય સુધીમાં સંપૂર્ણ હાલતમાં આવે છે. આ ઉપર પછી મગજનું વજન ઘટવા માંડે છે. કોઈ કોઈ બહુ બુદ્ધિશાળી માણસનું મેજું વજનમાં ૪ રતલ જેટલું હોય છે અને છેક મૂર્ખ માણસનું મેજું ૧૧ રતલ જેટલું પણ થતું નથી. હાથી અને મગરમચ્છ સિવાય બીજાં સજ્જાં પ્રાણી કરતા માણસ જાતનું મગજ વધારે મોરે હોય છે. હાથીમાં તેનું વજન ૮ થી ૧૦ રતલનું અને મગરમચ્છમાં ૧ રતલ જેટલું હોય, એમ કહેવાય છે.

માથાની તુંબીના ધીજા

અગત્યના અવયવો.

આંસ (Eye). માથાની તુંબીમાં જોવાની ઇંદ્રિ ગોટથી છે, તેને આંસ કહેવામાં આવે છે. આંસો બે છે. મમરો, પાંપળો, પોષણ વગેરે તેની વહાર દેવાવના ભાગો સર્વેને જાણીતા છે, આંસના ડોલા નાવની બંને બાજુના છાદાઓમાં મુકાયેલા છે.

હોઝા ઉપર ઘણ પડ છે, સર્વેથી વ્હારનું પડ ઘોઝા રંગનું છે, તે અપારદર્શક હોવાથી



તેમાંથી પ્રકાશ અંદર જઈ શકતો નથી. એ પડ સ્પર્શ હોવાથી આંખના ઢોળાની ગોઠાકૃતિ કાયમ રહી શકે છે, પણ તેનો આગલો વચ્ચો ભાગ કાચ જેવો સ્વચ્છ હોવાથી તેમાંથી અજવાળું જઈ શકે છે. આંખના સંપેદ પડ નીચે વીંતું કાઠું પડ છે, તે ગ્રીણી નસોનું તથા તંતુઓનું વનેલું છે. એના રંગ પ્રમાણે ઉપરનો ઢોળો કાળો કે માંજરો દેખાય છે. આંખની અંદર ગોઠ ચક્કર જેવું દેખાય છે, તે કીકીનો પડદો છે. તેના મધ્યમાં એક નાકું છે, જેને આપણે કીકી અથવા પુત્તી કહીએ છીએ. કીકીના નાકા ઉપર પહેલા પડનો નાજુક આગલો ભાગ આવેલો છે. કીકીના પડદાના સંકોચાવા પ્રમાણે કીકી ૨^૧ થી ૧^૧ ઈંચ સુધી ન્હાની મોટી થઈ શકે છે, અને તે ઉપરથી કેટલાક રોગની પરીક્ષા કરી શકાય છે. આંખનું ત્રીજું પડ છેક અંદર છે, અને આંખના દૃષ્ટિ તંતુઓ ઢોળામાં પથરાઈ ગયાથી તે વનેલું છે. તે તંતુવાળું પડ કહેવાય છે. આંખના બહારના પડ સાથે માંસના છ નાના લોચાઓ વઝોળા છે, જે વડે આપણે ઢોળાને ચાર તરફ ફેરવી શકીએ છીએ. આંખની અંદર ઘણાં ઓરડાઓ અથવા કોષ્ટ્રો જેવી જગ્યાઓ છે, જેમાં પાણી તથા રતન જેવી આંખની અગત્યની વીજો રહી શકે છે. આગલો ઓરડો આંખના સ્વચ્છ સંપેદ પડની અને રતનની કોયડીની વચ્ચેમાં છે. તે ઓરડો સૌથી ન્હાનો છે. તેમાં આંખનું પાણી રહે છે, જેનું ઘનન પાંચ ઘટ્ટું માર જેટલું હોય છે. આંખનો વચ્ચો ઓરડો મધ્ય પડનો વનેલો છે અને

તેમાં આંખનું રતન લટકેલું છે. આ રતન આગલ પાછલ ગોઠ હીરા જેવું પારદર્શક છે. આંખનો ત્રીજો અને પાછલો ઓરડો સર્વેથી મોટો છે, જેમાં વીલોર જેવો નિર્મલ પદાર્થ આવેલો છે.

કાન (Ear)

સાંમઝવાંની ઇન્દ્રિયને કાન કહેવામાં આવે છે. માથાની તુંવડીમાં એ સાંમઝવાંની ઇન્દ્રિયે બાજુમાં ગોઠવવામાં આવી છે. કાનનો બહારનો જે ભાગ દેખાય છે તે કુમઝાં હાડકાંનો વનેલો છે. દરેક કાનમાં એક એક છિદ્ર છે. એ છિદ્ર આગળથી એક ન્હાની નક્કી શરૂ થાય છે, જે આશરે દોઢ ઈંચ લાંબી છે એ નક્કી ઉપર ચામડીનું પડ છે. કાનની નક્કીનો આગલો ભાગ નરમ હાડકાંનો વનેલો છે અને પાછલો ભાગ હાડકાંનો વનેલો છે. કાનની અંદરની ત્વચા ઘણીજ પાતલી હોય છે. કાનમાં મેઝ ભરાય છે, તે મેઝ બહારથી આવતો નથી પણ આ વારીક ચામડીમાંથી ઉત્પન્ન થયા કરે છે.

કાનનો વચ્ચો ભાગ ન્હાનાં ટાંકાંનો વનેલો છે. તેની તથા બહારની કર્ણ-નક્કીની વચ્ચે એક વારીક પડદો આવેલો છે, જેને આપણે કાનનો પડદો અથવા પડઘમ કહીએ છીએ. આ ભાગમાંથી એક વારીક નક્કી નીકળીને, અંદરના ભાગમાં ઉતરેલી છે અને તેથી કાનના આ વચ્ચા ભાગ સાથે મોંઢાને સંબંધ રહેલો છે.

કાનનો છેક અંદરનો ભાગ ઘણો ગુંચવણ ભરેલો છે અને સામાન્ય વર્ણનથી નહિ સમજી શકાય એવો છે. મગનમાંથી આવેલી શ્રવણ તંતુઓ એ ભાગમાં ઘસાટ થાય છે. તે તંતુઓને પ્રેક્ષા થતા મોટે તેમાં વારીક છિદ્રો હોય છે.



નાક (Nose)

સુંવાની ઇન્દ્રિને નાક કહેવામાં આવે છે. તેને માથાની તુંબીમાં ચહેરાના મધ્યમાં ગોઠવામાં આવેલું છે. નાકનો આગલો ભાગ પાંચ કુમળાં હાડકાં (કુર્ચાઓ) નો બનેલો છે. બહાર વે છિદ્રો દેખાય છે તેને નસ્કોરાં કહેવામાં આવે છે. નાકના વે ભાગ છે—એક બહાર દેખાતો ભાગ અને બીજો અંદરનો ભાગ. બહાર દેખાતા નાકનું મૂળ કપાલ સાથે છે. જેમ બહાર છિદ્રો છે, તેમ નાકના અંદરના ભાગમાં પણ વે છિદ્રો છે, જે મોઢાના પાછળા ભાગ સાથે સંવંધ રાખે છે. વે નસ્કોરાંની વચ્ચે એક પડદો છે. નસ્કોરાંનાં મોં આગળ ઘાટ ઉગે છે, જે નાકની અંદર જતી ધૂલ વગેરેનો અટકાવ કરવાનું કામ કરાવે છે. નાક ચોટે શ્વાસોશ્વાસ લેવાય છે અને વાસ પરવાય છે.

જીભ (Tongue)

મગજનાં જુદાં જુદાં કામ કરનારી જ્ઞાનેન્દ્રિયોમાં સ્વાદનું જ્ઞાન જાણનારી ઇન્દ્રિ જીભ છે. સ્વાદની ઇન્દ્રિ જીભમાં વસેલી છે. જીભ સિવાય જીભની આસપાસના ભાગો જેવાંકે તાલ્કનું, પઢજીભી, ચોરીઆ, તેમાં પણ સ્વાદ પારખવાની શક્તિ હોય એમ જોવામાં આવે છે, જેમના અગ્રભાગ ઉપર ઢાળા ઢાળા હોય છે, તે ઢાળા સુધી મગજની સ્વાદેન્દ્રિયના તંતુઓ પસરેલા હોય છે, અને તેથી જીભના ટેરવે કોઈ વસ્તુનો ગુણ યત્ન જ્ઞાન સ્વાદની પરીક્ષા થઈ શકે છે. બહારનો કોઈ પણ પદાર્થ, તેણે કે સ્પર્શે હોય છે, તેનો પરીક્ષા જીભ કરી શકે છે. પદાર્થ જેમ વધારે પ્રવાહી એટલે જીભના તંતુઓ

જલ્દી પ્રવેશ કરે એવો હોય, તેમ સ્વાદ વધારે જલ્દી અને સારી રીતે પરખાય છે. કઠણ પદાર્થોનાં પરમાણુઓ જીભમાં ઉત્પન્ન થતા રસમાં પ્રવેશ કરે છે, ત્યારેજ તેના સ્વાદનું જ્ઞાન થઈ શકે છે. જીભની અંદરના તંતુઓને જેવા સ્વાદનું જ્ઞાન થાય છે, તે જ્ઞાન મગજને પહોંચાડે છે ત્યારેજ આપણને અમુક સ્વાદનું માન અને જ્ઞાન થાય છે.

જીભ માંસમય લોચાની બનેલી છે. ચારે તરફના સ્નાયુ જીભને વલ્ગોળા હોવાથી જીભ વધી તરફ વળી શકે છે. खोराक ખાવવાના કામમાં જીભ ઘણીજ મદદ કરે છે. તે खोराकને વારંવાર દાંત નીચે લાવે છે, અને જીભની અળીઓ खोराकને નરમ કરે છે. આ સિવાય બોલવાના કામમાં જીભનો મુખ્ય ઉપયોગ છે, ટૂંકી જીભવાળું માણસ બરાબર બોલી શકતું નથી.

છાતિની પોલ. (Chest)

છાતિની પોલમાં રક્તાશય, મોટી રક્ત વાહિની અને વે ફેફસાં આવેલો છે. આ સિવાય અન્નનળ છાતિમાં થઈ પેટમાં ઉતરે છે અને શ્વાસનળીનો થોડો ભાગ પણ છાતિની પોલમાં આવેલો છે.

છાતિમાં વે બાજુપર વે ફેફસાં છે અને વચ્ચેમાં રક્તાશય (હાર્ટ) છે. છાતિમાં દરેક વાજુએ બાર બાર પાંસડીઓ છે. છાતિના પાછલા પીઠના ભાગમાં મધ્યમાં કરોડ છે અને છાતિના આગળ ભાગમાં મધ્યમાં ઉરોમ્થિ એટલે છાતિનું સીનાનું હાડકું છે જેની સાથે પાંસડીઓ વલ્ગોળી છે. આ સીનાનું હાડકું આશરે પાંચ ઈંચ લાંબુ



છે. આ અસ્થિમાં મૂલ તો વળા કટકા હોય છે, પણ પાછલથી તે કટકાઓ સંઘાઈ જાય છે. સીનાતું હાડકું ગળા તરફ પહોલું હોય છે અને નીચે જતાં સાંકડું થતે થતે પીપડી આગળ અળીદાર થાય છે. પછવાડે આ ચોર પાંસલી ચરડાની કરોડના મળકા સાથે સંઘાયલી છે અને આગળ પ્રથમની સાત પાંસલીઓ છાતિના સીનાના હાડકાં સાથે જોડાયલી છે અને નીચેની ત્રણ પાંસલીઓના છેડા છૂટા છે. પાંસલીઓ સ્થિતિસ્થાપક છે, ટૂંકા નરમ અને વળી શકે એવી હોવાથી શ્વાસોશ્વાસની ક્રિયામાં મદદ કરતાં થઈ પડે છે.

ફેફસાં (Lungs)

ફેફસાં બે છે, અને તે છાતિમાં બે વાજુ પર આવેલાં છે. ફેફસાંનો આકાર પડા જેવો, ઉપરથી સાંકડો અને નીચેથી પહોળો હોય છે અને ગુણ વાદળી જેવો છે. દરેક ફેફસાંનું વજન લગભગ દોઢ રતલનું હોય છે. ડાબા ફેફસાં કરતાં જમણું ફેફસું જરા વધારે મોટું છે, પણ જમણા ફેફસા કરતાં ડાબું ફેફસું વધારે લાંબું હોય છે.

ફેફસાં વાદળી જેવાં સ્થિતિસ્થાપક હોવાથી દૃઢાય છે અને પાણં પૂરે છે. ફેફસાંની અંદર ન્હાનાં ન્હાનાં અસંખ્ય છિદ્રો અથવા પોલા ઘાણા હોય છે, જે હવાથી ભરેલા હોય છે. એવી ગળગળીકરવામાં આવેલી છે કે, દરેક ફેફસામાં એવાં ત્રીસ કરોડ છિદ્રો છે. જો ફેફસું કાત કોથલી જેવું હોત, તો તેમાં હવાને ઘગી થોડી જગ્યા મઠી શકત, પણ ઉપર જગાવ્યા પ્રમાણે તેમાં અસંખ્ય છિદ્રો હોવાને લીધે હવાને

પુષ્કળ જગ્યા મઠી શકે છે. દરેક ફેફસાંમાં હિનાં હવાથી ભરેલાં છિદ્રો એકંદર ૧૪૦૦ ચોરસ ફીટ જેટલી જગ્યા રોકે.

પીઠના ત્રીજા મળકા સામેથી શ્વાસ નીની બે શાખાઓ થાય છે. જમણી શાખા જમણા ફેફસામાં જાય છે અને ડાબી શાખા ડાબા ફેફસામાં જાય છે. ફેફસામાં પહોંચતાં પહોંચતાં તે શ્વાસનળીની શાખાના ઉત્તરોત્તર ભાગો અને વિભાગો થઈ છેવટની વારીક શાખા પર પોડીઓ થઈ રહે છે. શ્વાસનળીઓના આ અસંખ્ય છેડાઓ જ્યાં આગળ ફેફસાંને મળે છે, ત્યાં હવા અને લોહી પરસ્પર સંવયમાં આવતાં લોહી શુદ્ધ થાય છે.

રક્તાશય (Heart)

રક્તાશય એ છાતિની વલ્લોલમાં બે ફેફસાંની વચ્ચે, કાંઈક ડાબી તરફ વાંકી પડેલી એક માંસમય થેલી છે. ડાબી તરફની ઉપલી ત્રીજી પાંસલીથી, નીચે છઠ્ઠી પાંસલી મુઘી, તેની લંબાઈ પાંચ ઈંચની છે. આ થેલી અથવા રક્તાશય એ લોહીનો હોન છે, જેમાંથી લોહી આગા શરીરને પહોંચતું થાય છે. છાતિના ડાબા પાસા પર પાંચમી અને છઠ્ઠી પાંસલી ઉપર હાય મૂકી રાતવાથી જે ઘચકારો માલમ પડે છે, તે રક્તાશયનો છે. રક્તાશયનું કદ લગભગ મુઠી જેવું છે અને વજન આશરે પોણા રતલનું છે. સ્ત્રીઓના રક્તાશયનું વજન અર્ધા રતલનું હોય છે. તે અંદરથી પોલું છે અને વનમાં એક પડદો આવવાથી તેના બે ભાગ થયા છે, જેમાંના એકને જમણો સંક અને બીજાને ડાબો સંક પણ નામથી ઓચિત્તવામાં આવે છે. દરેક



સંદના પાઠા વચ્ચે વિભાગ થાય છે. જમણા સંદમાં કાલું લોહી અને ઢાઢા સંદમાં રાતું લોહી વહે છે. વચ્ચે સંદની વચ્ચમાં છિદ્ર હોય છે, તે છિદ્રને પડદા હોય છે, જે નીચલા સંદ તરફ ઉઘડે છે અને વંધ થાય છે. સુલ્લો હોય છે ત્યારે એક સંદનું લોહી બીજા ઓરડામાં નડે શકે છે, પણ વંધ થાય છે ત્યારે તેના પડદા દ્વારા તો સજ્જત વંધ થાય છે કે તે ઓરડામાંથી આગલ ગયેલું લોહી પાછું તેમાં આવવા પામતું નથી. દરેક ઓરડામાં આશરે પાંચ તોલા લોહી સમાય છે.

રક્તાશયની આસપાસ એક મજબુત નાડો સફેદ પડદો ફરી વળેલો છે. એ પડદો એક વંધ કરેલી કોથલી જેવો છે અને રક્તાશયની સાથે વળેલો નથી. તેમાં પાણી જેવો રસ પેદા થાય છે, જેથી રક્તાશયને કસો ઘસારો લાગી શકતો નથી.

હાતિ તથા પેટ વચ્ચેનો પડદો- (Diaphragm)

હાયાક્રમ હાતિ તથા પેટની વચ્ચમાં એક પડદો છે, તે માંસના ઢોવાનો વનેલો છે; તે ગોલ યુમટના આકારમાં વનેતો છે. એ પડદો પાડલ્યો ચરડાની કરોડનાં હાટકાંની બંદરની બાજુ સાથે, અને આગલથી પાંસડીની બંદરની કોર સાથે ફરતો વળેલો છે. એ પડદાની ઉપલી બાજુ સાથે ઢાઢો જમણી તરફ ફેફસાં અને વચ્ચમાં રક્તાશય જોડાયેલું છે, અને નીચલી બાજુ સાથે જમણી તરફ કલેજું, ઢાઢી તરફ ચરોલ અને વચ્ચમાં હોજરી જોડાયેલી છે.

આ પડદામાં ત્રણ મોટાં છિદ્રો છે, જેમાંના એકમાંથી મોટી ધોરી નસ અને બીજામાંથી અન્નનલ હાતિમાંથી પેટમાં ડતરે છે. ત્રીજા છિદ્રમાંથી મોટી કાઢી નસ પેટમાંથી હાતિમાં જાય છે. આ ત્રણ મોટાં છિદ્રો સિવાય તેમાં બીજાં કેટલાંક બારીક છિદ્રો છે જે વોટ જ્ઞાન-તંતુઓને રસ્તો મળે છે.

પેટની વચ્ચોલ Abdomen

શરીરમાં સૌથી મોટી બોલ પેટની છે. પેટની પોલના પાડલ્ય ભાગમાં ચરડાની કરોડ આવેલી છે અને ઉપલા ભાગમાં બાજુપર પાંસડીઓ આવેલી છે. આ પોલનું આગલું અને પડદાનું ઢાંકણ સ્નાયુ તથા ચામડીનું વનેલું છે. ઉપરના ભાગમાં હાતિ અને પેટની વચ્ચે આવેલો યુમટના આકારનો પડદો છે, અને નીચલા ભાગમાં પ્લેટુ અથવા ચરિન છે. પેટમાં ટવાથી જોવાથી દુબલ્લા માણસના પેટનું ઢાંકણ હેઠળ કરોડને અટકે છે; અને કરોડના મળકા હાથને લગતા જણાય છે. પેટનું એક ઢાંકણ ચીની ગર્ભપાલી અવસ્થામાં અને બહુ ચરબી તથા ઝઘોદર વગેરે દરદમાં ઘણું જ વધી જાય છે. પેટની દિવાલની મધ્ય રેખામાં હાંટીનો તાડો છે તેની નીચે પ્લેટુ છે અને પેટના હેઠળ ઉપલા પાંસડીઓની વચ્ચેના ભાગને પીપડી કહે છે; અને બાજુઓના ભાગને પડદા કહે છે. પેટમાં હોજરી, કલેજું, ચરોલ, આંતરડા, મૂત્રાશયનાં ગુરદા વગેરે ગળા અગત્યના અવયવો આવેલા છે. તે સમગ્રમાંની ચોક્કસ હદ જાણવા તથા ધ્યાનમાં રાખવા માટે પેટની આરપાર જે આટી અને જે ઉપી લીટીઓ ટોરલી કલ્પવાથી તેના નવ ભાગ થાય છે, અને તે નવ ભાગમાં કેટલા અવયવો આવેલા છે તે દ્વારા પછીનું અંકમાં લેખવામાં આવશે. (અપૂર્ણ)



(जे० मास्टर दीपचन्द्र परवार, नरसिंहपुर)

अहा ! यह दो अक्षरका शब्द कानों-को कैसा प्रिय मालूम पड़ता है । अहा ! इस शब्दके स्मरण होते ही हर्ष रोमाञ्च हो आते हैं । मन प्रफुल्लित होकर क्षणिक तो समस्त चिंताओंको विस्मरण कर जाता है । भय, शोक, ग्लानि, और हतोत्साहता पलायन कर जाती है । एक अपूर्व ही भावोंका संचार हो जाता है । साहस और बल बढ जाता है । कठिनसे कठिन काम भी सरल मालूम पड़ने लगते हैं । नम नममें उत्साहका रक्त बहने लगता है । इत्यादि कहाँ तक कहा जाय ? यह शब्द (मित्र) जादू कैसा प्रभाव रखता है । यथार्थमें संसारमें मित्रके समान कोई भी हित् नहीं है । जिस समय माता पिता भ्राता स्त्री पुत्र सम्बन्धी सब किनारा कर जाने हैं उस समय मित्र ही सहायक होता है । जिमने मित्रकी कदर नहीं की, वह मित्र ही बेगा । जो संपत्तिमें मिले और विपत्तिमें भूल जाय वह मित्र नहीं, किन्तु पूरा शत्रु है । सुख व शान्तिके समय मित्रकी परीक्षा ही क्या हो सकती है ? परीक्षा होती है विपत्तिमें । कहा है—

“संपत्तिमें तो करोड मित्र, पर मित्र वही जो विपत्ति पंगो” श्रीकृष्ण और सुदामाजीकी मित्रता लोचप्रमिद है, क्योंकि

सुदामाजीपर जब विपत्ति आई, तब वे कुछ सोच समझ कर द्वारिका पहुँचे । श्रीकृष्ण महाराज-की डचोदीपर पुकार की, कि राजासे कहो तुम्हारा मित्र सुदामा आया है । परन्तु कबु गणो ! लोकमें “चमत्कारको नेमस्कार” होती है । इसलिए डचोदीदारोंने इनकी दरिद्रावस्था देखकर कुछ ध्यान न दिया किन्तु उल्टा धमकाने लगे, कि देखो, यह नीच निर्लज्ज कैसा दीठ हुआ है जो श्रीमहाराजको मित्र बताता है । क्या प्रभुके ऐसा दरिद्र भी मित्र हो सकता है इत्यादि ! परन्तु यह वार्ता किसी प्रकार श्रीकृष्णजीके कानतक पहुँच गई । फिर क्या था ? वे बालचेष्टाएँ जो जो सुदामाजीके साथ की थीं, एक एक करके सा-म्हने दिखने लगीं । उनसे फिर एक क्षण भी न रहा गया कि उन्हें नौकरसे बुलवाने । वे तुरंत ही नंगे पांव सिंहासनसे उतर कर दौड़े आये । तो देखने क्या हैं ? एक भिखारीकी अवस्थामें तनक्षीण मनगलीन सुदामाजी दीन हुए खड़े हैं । मन्त्रा ऐसी अवस्था मित्रकी मित्र देखकर कैसे शान्ति रख सकता है ? बप, श्रीकृष्णजी अपनी राज्यावस्थाको एकदम भूल कर सुदामाजीके गलेसे लिपट गये । दोनोंने परस्पर मित्रक अपने बहुत दिनोंके विरहगनक दुःखको आँसुओंद्वारा निकाल कर माफ किया । श्रीकृष्णजीने अपने कर कमलोंसे ही अपने मित्रकी सेवा टहल की । सब लोग देखने ही देखने रह गये । सत्य है मित्रता इसका नाम है । कहा है—

“जल-पग-प्रीति सराहिये, एक रूप है जाय ।



वह वा कारण तब वहे; वह दे अग्नि बुझाय । ”

देवो, पानी जब दूधके निकट आता है, तो वह उसे मिलाकर अपने स्वरूप कर लेता है, कि पानी और दूध अलग अलग नहीं दिखते हैं । जब लोग उन्हें अलगानेके लिए आगपर बढाते हैं, तो पानी आप ही सकता है, परन्तु अपने मित्र दूधको नहीं जलने देता है, तब दूध भी मित्रको जलता हुआ देखकर तुरंत उफन करके आगको बुझा देता है, और खुद आगमें पड़कर मित्रको बचाता है । सत्य है, यदि मित्र हो तो ऐसा ही हो, अन्यथा आडंबरमात्र है । कहा है, “पानी पीजे छान, अरु मित्र कीजिये जान । ”

क्योंकि संसारमें विषय और कषायोंमें फँसानेवाले ऐसे तो अनेक मिलते हैं, परन्तु इनसे छुड़ाकर सच्चे मार्गमें लगानेवाले कदाचित् ही कोई होंगे । आजकाल बर फोड़नेवाले, माल उड़ानेवाले, व्यसनोंमें फँसानेवाले, विपत्तियोंमें डालकर दूर हो जानेवाले, और दुर्गति देखकर हँसनेवाले ही मित्रोंका डेर है । हे प्रभो ! इनसे बचाओ ।

यद्यपि संसारमें मित्रके बिना जीवन व्यर्थ है । बिना मित्रके खेल-कूदमें, नाच-गानमें, स्वदेश विदेशमें, विवाहादि शुभ कर्ममें, समाधि शुभ व हर्मात्सवादिमें, स्वाध्यायमें, व्यापार व्यवहारमें, खान-पानमें, शत्रुके सामने रणमें, वनमें, इत्यादिकिसी भी ठिकाने आनन्द नहीं, जय नहीं, लाभ नहीं है । यथार्थमें

संसारमें जिसके मित्र नहीं है, उसका जीवन निरंतर मरलेजरूप ही रहता है । मनुष्यपर चाहे जैसी विपत्ति क्यों न आवे, परन्तु मित्रके सामने प्रगट करदनेमात्रमें ही आधी रह जाती है । उसका बड़ा भारी बोझ कम हो जाता है । यदि आनन्दमें हो और मित्र मिल जाय तो वह आनन्द कई गुना बढ़ जाता है । जैसे पक्षीको पंखका बल होता है, वैसे ही मनुष्यको मित्रका बल रहता है । इसलिए मनुष्यमात्रको अपना कोई मित्र अवश्य ही बनाना चाहिए । क्योंकि जो बात माता, पिता, गुरु आदिके समझानेसे नहीं समझमें आती है, वह बात मित्र बातकी बातमें कानमें लगते ही समझा सकता है । भूलेको राह लगा सकता है । कई गुप्त बातें जो किसीसे प्रगट करने योग्य नहीं होतीं, वे मित्रको ही सुनाई जा सकती हैं, वह उनमें उचित सलाह दे सकता है, और उपाय भी कर सकता है । इसलिए मित्र तो चाहिए, परन्तु हो वैसा ही, दूध पानी जैसा, सूर्यमा, श्रीकृष्ण जैसा, सूर्य और कमल जैसा, चन्द्र और कमोदनी जैसा ।

इकंगी प्रीति प्राणघातक होती है । देवो, पतंग दीपकसे प्रेम करके अपने शरीर तकको भूलकर निकट आती है, परन्तु दीपक उसकी कुछ परवाह न करके उलझ जल्य देता है । प्रीति, कुछ निकट रहनेसे ही नहीं रहती है । देखो, जब और कमल निरंतर पास रहते हुए भिन्न भिन्न रहते हैं । और सूर्य कमलसे ८०० योजन ऊँचे रहते हुए भी अपनी प्रभासे कमलको प्रफुल्लित कर देता है ।



चन्द्रमा उससे भी ऊपर रहते हुए कुमुदनीको विकसा देता है। इसी प्रकार सच्चा प्रेम दूरसे ही प्रभाव डाल सकता है।

लोगोंका विचार है कि प्रेम निकट रहनेसे बढ़ता है। यह भूल है, वह दूरसे ही बढ़ता है, और निकट रहनेसे उतना नहीं रहता है। आजकल प्रायः पैसेकी मित्रता दृष्टिगोचर होती है। और यदि बिगड़ती है, तो भी इसीके पीछे। परन्तु जहाँ पैसाका ध्यान है, वहाँ मित्रता कहाँ? मित्रोंको परस्पर एकमन, निष्कपट, और निर्लोभ होना चाहिए। जैसे एक अंगकी पीड़ा दूसरे अंगको होती है। वैसे ही मित्रकी पीड़ा मित्रको होना चाहिए। कहा है—

“जे न मित्र दुःख होंहि दुखारी ।

तिनहि विलोकत पातक भारी ॥”

प्रायः देखा जाता है और मैंने जहाँतक अनुभव किया है कि जवनक कोई विपत्ति नहीं आई, जवनक पैसा पास रहा, जवनक शरीर शिथिल नहीं हुआ, वहाँतक ही मित्र मित्रता दिखाते हैं और ज्यों ही कोई ऐमा अवसर आया कि मित्र ऐसे बन जाते हैं, मानो कभी मित्रता ही नहीं हुई। जान पहिचान तक नहीं है।

किमी नगरमें गंभीरचंद एक वृद्ध वणिक् रहने थे। उनके प्यारचन्द एक ही लड़का था। प्यारचन्द अंग्रेजी स्कूलमें पढ़ने जाना था। मैट्रिकयुक्तेशन तक पढ़कर ही उसने पढ़ना छोड़ दिया। घरमें परचरण आठा दाढ़ बनाने लगा था। समस्त प्यारचन्दसे

अंग्रेजी पढ़कर तराजू तौलना असह्य था। वह निरंतर अपने दोस्तोंमें घूमता-फिरता और गप-शप उड़ाया करता था। गंभीरचन्द बहुत समझाता, पर उसके समझमें न आता। एक दिन गंभीरचन्दने सोचा कि जबतक इसकी यह संगति नहीं छूटेगी तबतक यह कभी धंधेमें न लगेगा। और यदि धंधेमें न लगा, तो मेरे मरनेके बाद ये झूठे मित्र सब रुपया बरबाद कराकर इससे भिक्षा माँगवायेंगे। इससे यह दुःखी होगा और मेरे कुलका नाम डुबावेगा। कहा है—

“होतसुसंगति सहज सुख; दुख कुसंगके थान ।

गंधी और लुहारकी; बैठो देख दुकान ॥”

इत्यादि सोचकर उसने युक्तिद्वारा दृष्टान्तसे समझाना ठीक समझा और लड़केको बुलाकर कहा—“वेडा! मैं वृद्ध हुआ हूँ, अब मृत्युके दिन निकट हैं, लक्ष्मीका कुछ भरोसा नहीं है, इसलिए यदि कुछ धंधा सीखोगे तो काम आवेगा, ये तुम्हारे मित्र (दोस्त) काम नहीं देंगे। जैसे फलविहीन वृक्षको पत्ती छोड़ देते हैं, वैसे सम्पत्तिहीन होनेपर तुम्हें ये लोग छोड़ देंगे।

वेडा—माई डियर फादर ! तुमारा कहना ठीक नहीं है। हमारे फ्रेंड कभी ऐसा नहीं करेगा। यह लोग बरा सच्चा है, निरर हमारा पसीना गिरगा, वह लोड गिरानेको तैयार है। हमसे धंदा गंदा नहीं होता है।

दाप—अच्छा वेडा ! परीक्षा करके देखना चाहिए ।

वेडा—बहुत अच्छा, आज ही सही ।

बोली जिस तरह करना होगा ।



बाप—आज १० बजे रातको एक ठूरी (मुरदेको ले नानेकी सीढ़ी) बनाकर उसमें कृत्रिम मुरदा रखो और लातका रंग उसपर व अपने कपड़ोंमें छिड़कर अपन दोनों लेकर तुम्हारे बहुत प्यारे मित्रोंके घर चठकर कहें—“भाई बचाओ, मुझसे आज एक खून हो गया है ।” बस, इसीमें परीक्षा हो जायगी ।

वेद्य—ठीक है ऐसा ही होगा । बस, रात्रिको केलेका कृत्रिम मुर्दा बनाकर ठूरी कसकर लाल लाल लाखके रंगसे सब कपड़े तर करके बाप वेद्य हाँफते हाँफते बड़े शोकातुर बनकर चले । पहिले गोकुलचन्द, जो बड़ा स्नेही था, के घर गये । पुकारा । भाई गोकुल ! गोकुल ! अन्दरसे—कौन है ? प्यार है । इम वक्त न्यो आये ? यार ! गौर्वे बिखर गई सम्हालो । हैं, दिलगी मन करो, नींद आती है । अरं यार ! किनाड़ तो खोलो जरूरी काम है । बोलना कुछ है ही नहीं, क्या है ? यार ! एक खून हो गया है । खून है तो हम क्या करें ? जाओ यहाँसे, क्या हम्हें भी फँसाने आये हो ? (रोकर) यार ! जरा बात तो सुन । कुछ उपाय तो बता ? चल चल उपाय फुपाय हम नहीं जानने, उसी कम-बख्त नवुआसे पूछ जिसे माल खिलया है । जाता है ? नहीं तो पुलिसमें खबर करता हूँ, 'जान न पहिचान, बड़ी बुआ ! स्याम,' यहाँ हमको फँसाने आया है, जा जो तेरे दोस्त हों.... इत्यादि । इसी प्रकार और भी दो चार जगह उत्तर मिले । एक जगह तो पुलिसमें हवाने ही कर दिये गये । परन्तु या क्या ?

तलाशी करनेपर मामला तय हो गया । और पानीका हत्या ऊपर आ गया ।

प्यारचन्दने जाना कि यथार्थमें Friends are plenty, if the purse is full. अर्थात् ये सब स्वार्थी हैं । कदाचित् आज कुछ मची विपत्ति आई होती तो फिर बचना कठिन था । पितानी ! आप धन्य हो क्षमा करो, अब यह दास ऐसा न करेगा ।

इसलिए हे मेरे प्यारे बन्धुओ ! ऐसे कपटी मित्रोंसे बचो । जबतक पूर्ण परीक्षा किसीकी न कर लो वहाँ तक अपने मनकी बात किसीसे मत कहो । अपना मित्र मत बनाओ । और मित्र बनाओ तो पक्का बनाओ—फिर बनाकर उसे त्रिगाढो मन । कहा है—

“कठिन मित्रता जोड़िये, जोड़ तोलिये नाह ।
तोडेसे दोऊनके, प्रगट दोष हो जाह ॥”

यदि तुम्हे योग्य मित्र नहीं मिलता है, तो धर्म, ज्ञान, नीति, दया, क्षमा, शील, सरलता, उदारता, स्वा-याय, परोपकारता, सचाई, अचौर्यनादि गुणोंहीको अपना मित्र बनाओ । बस, संसार तुम्हारा मित्र अपने आप ही बन जायगा । एकान्तमें बैठकर अपने किये हुए कुल कामोंको स्मरण करो और उनपर विचार करो कि उनमें कौन योग्य व अयोग्य हुआ है और आगे क्या करना है । उसमें किसीकी हानि तो नहीं है । इत्यादि विचार कर अपनी भूलों-पर पश्चात्ताप करो । और फिर आगामी न होने पावे, इस प्रकार प्रवर्तन करो । नम, यही सच्चा मित्र है । शास्त्र पुरान आदि ही हमारे सच्चे मित्र हो सकते हैं । निमको कहीं विराप



प्रस्ताव नं० ३-जीवन सार्थक करनेका उपाय । जैन जातिमें जनतक बालकोंकी माता-पिता अर्थात् कन्याएँ सुशिक्षित न होगी तबतक कभी उन्नति नहीं हो सकेगी, इसलिए स्त्रीशिक्षा-प्रचारके लिए अध्यापिकाओंकी आवश्यकता है । अतएव यह परिषद् प्रेरणा करती है कि विधवा बहनें धार्मिकाश्रममें चार वर्ष रहकर अध्यापिकाकी योग्यता प्राप्त कर कन्याओंको ज्ञान दें, और अपना कल्याण कर अपना अनूल्य मनुष्य जन्म ब्रह्मचर्य और सयमसे विताकर सफल करना चाहिए ।

प्रस्ताव नं० ४-सुरीति प्रचार । यह परिषद् अपनी स्त्रीसमाजको प्रेरणा करती है कि यह जैन जातिके भीतरसे निम्न लिखित कुरीतियोंके बद करनेकी पूरी २ चेष्टा करे—

(१) ब्याह शादी आदिमें वैश्यावृत्त्य ।

(२) ब्याह शादी आदिमें असभ्य गाली गाना ।

(३) जैनपद्धति छोड़कर अपने भ्रदानके विरुद्ध मिथ्या रीतिसे सन्तानका विवाहादि संस्कार कराना ।

प्रस्ताव नं० ५-विपत्तिमें सहायुभूति ।

जिन्नी आदि ठाणुओंमें भारतकी स्त्रियोंकी बहकाकर ले जाया जाता है और उनसे मजदूरी करानेके सिवाय बलात्पूर्वक उनके पतिव्रत धर्मको तोड़ा जाता है, इस बातको जानकर इस परिषदको बड़ा दुःख है । अतएव यह परिषद् बड़े लाट महोदयसे प्रार्थना करती है कि वह उस कानूनको जिससे बहोंके एजेन्ट ले जाते हैं फौरन रोक दें तथा प्रस्ताव करती है कि इस उद्दण्डकी नकल तारद्वारा भीमानके पास भेजी जावे ।

प्रस्ताव नं० ६-द्रव्य बचाकर दानकी प्रेरणा । यह परिषद् प्रेरणा करती है कि

हमारी बहिने अपने देशकी बनी हुई संस्तौ और टिकाऊ तथा मांस, चर्म, हड्डीके ससर्ग रहित वस्तुएँ काममें लावे और अपने द्रव्यको अनावश्यक महंगी चीजोंके लेनेसे बचाकर उसे विद्यादानमें लगावे तथा प्रस्ताव करती है कि स्त्रीशिक्षा फंडमें पहले मदद करे । जो फंड एकत्र होगा उसका आधा बागड़ प्रान्तके स्त्रीशिक्षाप्रचारमें खर्च होगा, शेषसे धार्मिकाश्रम बर्बर, मुरादाबाद और जैनमित्र छातेमें परिषदकी प्रमुखोंकी सम्मतिके अनुसार विभाग किया जायगा ।

एक होओ ।

मज्जहके बास्ते प्यारो !, हजारो जों गँवाते हैं ।
 व तन मनने निजी धनको, मज्जहमें ही लगाने हैं ॥
 यहाँपर तो बहुतसोंने, अविद्या नीदमें सोकर ।
 मज्जहको तज दिया है मा,—मनो 'जैनी' कहाते हैं ॥
 अभी कुछ रोजसे कुछ जन, त्याग निद्रा अविद्याको ।
 मसलने आँख उठ बैठे, दूसरोंको उठाते हैं ॥
 जो उठ बैठे हैं उनको भी, कभी कुछ झोंक आ जाती ।
 तो वे पत्रोंमें विधवाव्याह,—का होना बताते हैं ॥
 धनिक हैं वे भी स्वाकर झोंक,—को पुत्रोंकी शारीमें ।
 हजारों रुपये देकरके, वे वैश्याको नचाते हैं ॥
 धनिकों औ बाबुओंमें भ,—ज हैं वे झोंकों तजकर ।
 उठावे उनको जो निद्रा,—में सोने सत्सरते हैं ॥
 बचाकर शक्ति लड़नेमें, लगाओ धर्म उन्नतिमें ।
 यही 'बावल व चन्दू' कर, मिला अर्जी सुनाते हैं ॥
 चावलराम चन्दूलाळ, गुजालपुर ।

उपयोगी नवीन ग्रंथ

मनमोदन पंचशती ।

उपदेशात्मक ५०० सर्ववैका अपूर्व संग्रह ।

पृष्ठ २००

मूल्य १/८

भैनेर, दि० जैन पुस्तकालय—सुरत ।



स्वर्गीय श्रीमती फूलीबाई-उन्नाव

(रायचहादुर दानवीर सेठ कल्याणमलजीजी या साहब)

आपने मृत्यु समय २१०००) के दानसी व्यवस्था की है।

कलम-आदि गति ० म १९११

म १९-प्रेमाच यदु म १९७८.

चनविचर 'द्रम-मुरत'

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रगट थतुं मासिक

❧ दिगंबर जैन ❧

THE DIGAMBAR JAIN.

जाना कलाभिविधिवेध सत्त्वैः सत्योपदेशैस्तुगवेपणाभि ।

सगोषयत्वनमिदं प्रनर्तताम, दिगम्बर जैन-समाज मोनम् ॥

वर्ष १० वॉ.

॥ वीर संवत् २४४३. वैशाख. निम स० १९७३ ॥

अंक १३ वॉ.



विना नैमित्तिक कारण कोई भी कार्य उचित रीतिसे नहीं हो श्रुत पंचमी पर्व । सकता परतु कारणके होनेपर कार्यही सिद्ध हो सकती है । ऐसा ही नैमित्तिक कारण श्री श्रुत पंचमी पर्व आगामी ज्येष्ठ शुद्ध ५ के दिन आ पहुंचा है । जैन ग्रन्थ प्रथम लिपिबद्ध होनेका यही शुभ दिन है और कई वर्षोंसे यह पर्व माननेका अवसर पूज्यवर पं० पन्नालाल बाकलीवालके प्रयाससे प्राप्त हुआ है जिसको दिनोंदिन विशेष रूपसे माननेका प्रयत्न करना चाहिये । ज्ञाते न हो सके तो इतना तो अवश्य होना चाहिये कि (१) अपने २ भंदिरोंके शास्त्रोंको एक चौकी पर विराजमान करके श्रुतस्कंध पूजन करना चाहिये (२) शास्त्रोंकी सूची न

हो तो बतानी चाहिये । (३) जिन २ शास्त्रोंके बंधन न हो उनके नये बताने चाहिये । (४) जो २ ग्रन्थ अपने शास्त्रभंडारमें न हो उनको लिखित या मुद्रित जैसे मिलने हो संग्रहानेका आर्डर भेजना चाहिये (५) एक सभा करके श्रुत पंचमी पर्वका माहात्म्य सर्व भाइयोंको प्रगट करके कुछ न कुछ द्रव्य शास्त्रदानके लिये निकालना चाहिये, आदि । ईडर, सोनीत्रा, सूरत, महुआ, व्यारा आदि कई स्थानोंपर बडे़ शास्त्रभंडार है पर सारसंभालया उपयोग न होनेसे न तो सब ग्रन्थोंकी विगनवार सूची बनी है और न ग्रन्थोंका कुछ उपयोग होता है । जो अप्रकट जैनग्रन्थ हमको भेजे जायेंगे उनको प्रकट करनेके लिये हम यथाशक्ति प्रयत्न करनेके लिये तैयार हैं ।

गर्तः क्षेत्र शुक्ल १३ को इन्दौरमें श्री

महावीर जयंती उत्सव सेठ हुक्मचंदजीका बहुत धूमधामसे हमारे

अभिप्राय । दानवीर रायब-

हादुर सेठ हुक्म-



चन्द्रजीके सभापतित्वमें हुआ था जिसमें बम्बईसे श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह और बा० कृष्णलालजी वर्मा भी पधारे थे । श्री वाडीलालजीने अपने भाषणमें श्री शिखरजी केसका निवेदना दिगम्बरी श्वेतांबरियों की एक पंच नियत करके उनके द्वारा करने का विवेचन करने पर सभापतिजीने अपने भाषणमें जो शब्द कहे हैं वह मननीय और उपयोगमें लाने योग्य हैं आपने कहा कि—

“ मैं नहीं चाहता कि जैनधर्म धारियोंमें परस्पर द्वेष हो । प्रेमसे अच्छी कोई वस्तु नहीं है । मैं सदा परस्पर प्रेम रखना चाहता हूँ । दिगम्बर श्वेतांबरोंका पारम्परिक युद्ध मुझे बहुत खटकता है । पर किया क्या जाय ? यदि कोई मारता आवे तो इस टेबिलके नीचे चुपकर अपनी रक्षा भी न करे तो कैसे बन सकता है । मैं इस द्वेषको भेटनेके लिये मनवचन कायसे तैयार हूँ । ममय पडनेपर पंचोंकी जूतियों तरु उठानमें मुझे कुछ उजर न होगा । जहाँ तक मुझे स्मरण है कि दिगम्बर समाजने कोई आक्रान्त नहीं किया है। यद्यपि मैं पूर्णतया नहीं तो भी बहुत अंशमें कह सकता हूँ कि दिगम्बर समाजको मैं सुन्नेके लिये तैयार कर सकता हूँ बशर्त कि स्वच्छ हृदयसे सुन्ने की जाय । घरमें दो भाइयोंमेंसे यदि एक टाल और दूसरा चायत खाना पसंद करना हो तो इसके लिये परस्पर लड़ना जिन तरह अनुचित है उसी प्रकार दिगंबर श्वेतांबरोंका झगडा भी अनुचित है । मैं आशा करता हूँ कि हमारे भाई इस विषय पर प्रेमपूर्वक विचार करेंगे और

आपसमें सुलह करेंगे क्योंकि अभी जो कोर्टसे न्याय मिला है उसमें दोनों बाजू समान रहीं हैं । अभी तो सुलह करनेमें किसीकी नाक ऊंची नीची नहीं होती पर यदि कल कोई पलडा नीचा हो गया तो फिर सुलह होना कठिन हो जायगा । मेरी समझमें इसके लिये शीघ्र ही एक मीटिंग बुम्बई या तो इन्दौरमें की जाय जिनमें दिगंबरी श्वेतांबर दोनों तरफके नेता एकत्र हों और आपसमें ही निपट लेवें, अदालती कार्रवाई नहीं की जाय आदि । ”

हमारे सेठ हुकमचंदजी हमारी भारत० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटीके सभापति हैं और आप ऐसी मीटिंगके लिये दिगंबरी नेताओंको एकत्रित करनेके लिये तैयार हैं तो हमारे श्वेतांबर भाइयोंको भी उचित है कि अब समय न बिताकर शीघ्र ही ऐसी मीटिंग होनेका प्रयत्न करें । एक दिगंबरी और एक श्वेतांबर अभिप्रेरकी सहीसे ऐसी मीटिंग बम्बईमें सुभीतेसे हो सकती है परंतु इसके पहिले अभी दोनों तरफके जो २ अगुए इस केंद्रमें कार्रवाई कर रहे हैं उनको समझा लेना चाहिये तभी ही पूर्ण सफलता प्राप्त होगी ।

स्वर्गीय म्यादादवारिषि वादिगमनेश्वरी

न्यायमान्यति पं०

गोपालदाम स्मारक । गोपालदामजी

वरैयाके अनन्य उपकारको जनममान सभी भी न भूले इसलिये और पंडितजीरा नाम स्मरणमें रखनेके लिये पंडितजीके नामका एक स्मारक फुट ऐसा



होना चाहिये कि जिससे पंडितजीका नाम भी अमर रहे और उनके उद्देश्य भी सफली-भूत होते जावे। ऐसा जो कुछ कार्य है तो वह यही है कि पंडितजी द्वारा स्थापित **मोरेना जैन सिद्धान्त विद्यालय** के लिये कमसे कम एक लाख रुपयेका स्थायी फंड एकत्रित करके इस विद्यालयके साथ पंडितजीका नाम जोड़ दिया जाय। ब्रह्मचारी शीतल-प्रसादजीने भी 'जैनमित्र' में यही राय दी है। परंतु यह कार्य केवल बात करनेसे कभी भी नहीं हो सकेगा इसके लिये तो जैसे हिन्दू विश्वविद्यालय बनारसके लिये डेप्युटेशन निकला था उसी मुताबिक कमसे कम तीन चार प्रतिष्ठित ग्रहस्थोंका डेप्युटेशन निकलना चाहिये जो शहर शहर घूमकर इस फंडमें रुपये भरावे। इस कार्यके लिये दानवीर सेठ हुकमचंदजी, पं. घनालालजी काशलीवाल, सेठ हीराचंद नेमचंदजी दोशी, ब्र. शीतलप्रसादजी आदिना शीघ्र ही डेप्युटेशन निकलना चाहिये अन्यथा बात पुरानी हो जानेसे सफलताकी कल्पना संभवना होगी। यदि कोशिश की जाय तो जैन समाजमेंसे एक लक्ष राया इकट्ठा करना कुछ बड़ी बात नहीं है।

हमने 'जैनमित्र' द्वारा एक स्था-
यिक फंड खोला था उसमें भी कमसे कम दो-
चार हजार रुपये तो अवश्य इकट्ठे हो जाते
परंतु प्रां० मणिके महा मंत्री बाबू माणिकचंदजी
बैनाडाने कहा कि इसमें बड़े फंडको धक्का लग
जायगा, इस लिये आप इसको बढ़ा करे।
जिससे हमने तो इस फंडको बंद कर दिया है

और जो रुपये हमारे पास इकट्ठे हुए हैं वह
मोरेना विद्यालयमें ही भेज देंगे परंतु हमारे
स्थालसे इस फंडकी स्वीकारता 'जैनमित्र'
और 'दिगंबर जैन' द्वारा कमशः प्रसट
होनेसे फंडकी बात सर्वत्र स्मरणमें रह जाती
और बड़ा फंड जो कुछ होता उसकी
स्वीकारता भी उसमें प्रसट हो जाती।



स्थानकवासी थे. जैनबंधु श्रीयुतवाडीलाल
मोतीलाल शाहने निजी
संयुक्त जैन बोर्डिंगका खर्चसे बम्बई और
स्तुत्य प्रयास। अहमदाबादमें संयुक्त
जैन बोर्डिंग आगामी जून माससे खोलनेका जो
स्तुत्य विचार किया है वह अभिवंदनीय है।
इस बोर्डिंगमें दिगंबरी श्वेतांबरी और स्थानक-
वासी तीनों संप्रदायों के विद्यार्थी प्रवेश किये
जायगे और मन्त्रको अपने २ संप्रदायानुसार धर्म
शिक्षण दिया जायगा ऐसा प्रकट किया गया है
सो उचित ही है। इस बोर्डिंगके बारेमें इसी
अंकमें 'जैन विद्यार्थियोंोंने नवंबर'
नामक विज्ञापन प्रकट हुआ है जिसकी तरफ
हम जैन विद्यार्थियोंका ध्यान आकर्षित करते हैं।



हमारी न्यायप्रिय ब्रिटिश सरकारने
अभी जो हिन्दी वार
सार हिंदमें एक ही। लोन निकाला है जिसमें
सार हिंदुस्तानके आन
तक १९ करोडसे भी ज्यादा रुपये भरे
गये हैं और आगे भरे जा रहे हैं परंतु इन
सबमें ज्यादासे ज्यादा वार लोन लेनेवाले यदि
कोई वीर नर है तो वह हमारे 'दानवीर'
रायबहादुर सेठ हुकमचंदजी इन्दौर



હું કિ જિહોને એકદમ એક કરોડ રૂપ-
યેકા વાર લોન સ્તરીદા હૈ જિતના કિ
સોર હિંદકે એક રાજા મહારાજાને અમી
તક નહીં સ્તરીદા હૈ । યહ જૈનિયોંકે લિયે
બડે મારી ગૌરવકી વાત હૈ । ઇસ મહાન કાર્ય-
કે લિયે હમ સેઠ સાહવકો વધાઈ દેતે હું ।
આપને આજ તક સાઢે તૈરહ લાખ રૂપયે-
કા દાન કિયા હૈ જિસકી સૂચી હમ આગામી
અંકમેં આપકે નવીન ફોટો સહિત પ્રકટ કરોંગે
મિસે પઢનેસે હમારે પાઠકોંકો વિદિત હોગા કિ
આપને જૈન સમાજકા કિતના વડા મારી
ઉપકાર કિયા હૈ ।

ઉપદેશક પિતાંવરદાસજીના અમળનો રિપોર્ટ.

(તા. ૨ માર્ચ થી ૩૧ માર્ચ સુધી)

પાટનાકુવા-એ સભા કરી સ્વાધ્યાય
અને સદાચારપર વિવેચન કરવાથી તથા જલ્લે
સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. રેવચંદ બહેચરદાસે
૫) શિખરજી ફંડમાં આપ્યા. ગયે વર્ષે પાઠ-
શાળા શરૂ કરાવી હતી તે ચાલે છે.

ધનિયોળ-એ સભા કરી, જીથી જોજો
રાત્રિભોજન ત્યાગ અને ચાર બાધઓએ સ્વા-
ધ્યાયનો નિયમ લીધો તેમજ એક પાટીદારે
માંસ અને મદ્યનો ત્યાગ કર્યો. ૩) ઉપદેશક
ફંડમાં મળ્યા.

ધારીસણા-સ્વાધ્યાય અને અભક્ત્યાગ
પર વિવેચન કરવાથી પાંચે રાત્રિભોજન ત્યાગ
અને આઠ જલ્લે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો.
પાંચ તરફથી રોજ અષ્ટ દ્રવ્યથી પૂજન કર-
વાનો પ્રબલ્લે કરાવ્યો. પાંચ બાધઓએ ૫)
ઉપદેશક ફંડમાં મળ્યા.

જલ્લુદરા-મંદિર કે ગ્રેન્થાલય ફંડ પચ

નથી. દિ. જૈનોના માત્ર પાંચ ઘર છે. રાત્રે
એક સભા કરી અજૈનોને પણ જોડાવ્યા નથી
કેટલાકે ઝેરીલા તથા જૂ વગેરે છવોનો દિંસાનો
માંસ ત્યાગ કર્યો તથા જે જલ્લે જન્મપર્યંત દારૂ
અને મદ્યનો ત્યાગ કર્યો ૫ શ્રાવક અને ૭
શ્રાવિકાઓએ રાત્રિભોજન ત્યાગ અને સ્વા-
ધ્યાય કરવા તથા સાંભળવાની પ્રતિજ્ઞા લીધી.
ઉપદેશક ફંડમાં રૂ. ૭૫ મળ્યા.

વાસણા-એ સભા કરવાથી ૫ બાધઓએ
સ્વાધ્યાયનો અને એક રાત્રિભોજન ત્યાગનો
નિયમ લીધો. તથા બાધઓએ ૪) ઉપદેશક-
ફંડમાં મળ્યા.

છાલા-સ્વાધ્યાય અને સદાચાર ઉપર વિ-
વેચન કરવાથી રોજ શાસ્ત્ર સભા કરવાની
પ્રબલ્લે થયો તથા પાંચ તરફથી અષ્ટ દ્રવ્યથી
પૂજન થવાની પણ જોડવાયું થયું. ૬ બાધઓ-
એ સ્વાધ્યાય અને રાત્રિભોજન ત્યાગનો નિયમ
લીધો. ૨) ઉપદેશક ફંડમાં મળ્યા. અત્રે
જૈન પાઠશાળાની ઘણી જરૂર છે જે બાબત
પાંચે ધ્યાન આપવું જોઈએ.

પેથાપુર-લગ્નપ્રસંગ હોવાથી બહારના પણ
૧૫૦ જૈન બાધઓ મળેલા હતા. લગ્ન જૈન
વિધિથી થયા નહોતા. બાધ યુનીલાલના પ્ર-
યાસથી એક સભા થઈ, જેમાં કુરીતિ ત્યાગપર
વિવેચન કરવાથી કેટલીક સ્ત્રીઓએ ફટાણું-
ગીતા ગાવાનો ત્યાગ તથા એક જલ્લે સ્વાધ્યાય-
નો નિયમ કર્યો. ત્યાંની પાઠશાળા માટે
આશરે રૂ. ૬૦૦) મળ્યા.

દરીશા-ચાર સભા કરીને કુરીતિઓ બંધ
કરવા માટે વિવેચન કરવાથી રોજ શાસ્ત્ર
સભા કરવાનો પાંચ તરફથી પ્રબલ્લે થયો. ૧૨
બાધઓને સ્વાધ્યાયનો નિયમ છે. ૪) ઉપદે-
શક ફંડમાં મળ્યા.

ઉજેરિયા-એક શાસ્ત્રસભા કરી સદાચાર
અને સ્વાધ્યાય પર વિવેચન કર્યું, પણ એકા-
એક કાંઈ બાધના અપુના સમાચાર મળવાથી
અંધે શોકમાં પડી ગયા, જીથી બીજી સભા



यद्यपि शरीर नष्ट, गये वर्षों अत्रे पादशाणा स्थपात्री होती, पशु पक्षी शिथिलतायी के पीछे हारण्युथी दाल अध छे बाध भक्षनक्ष-
लने उत्साहित करी पादशाणा करी आधु करनी जेष्ठये.

सोनासधु-शा नेभय'द भगनवायनी साथे पुस्तकालय'द निरिक्षण कर्तुं. गांधी उव-
राज उगरय'द पोतानी पत्नीना स्मरणार्थें (१००) जैनसिद्धांत प्रकाशिकी संस्थाभां भरी मेभार थया.

जालुडी-शेठ क्यराभाधना प्रयासथी जे सभा करी स्वाध्याय, कुरीति त्याग अने जिन-
पूजन पर विवेचन करवाथी ७ बाधयोअये स्वाध्याय तथा केशकाक स्त्री पुत्रपोअये अष्ट
श्रमथी शेर वाराइरती पूजन करवाने नियम लीधो. पांच भाधयो तारइथी ६) उपदेशक
इंडोभां भव्या.

विशेष-गुजरात प्रांतभां यथा बाधयो हने स्वाध्याय कोरेने तो नियम लेा लाग्या छे, पशु तेनो उपयोग जराभर थतो नथी जेतवे के जेजो कष्ट पशु शास्त्र नियमथी वांयता तथी अने पूर्ण करानथी. तेजो स्वाध्यायना भण तरवने समथ न शक्याथी जेक पीलभां इलायली अज्ञानता अने कुरीति हर करी श-
क्या नथी, गटे जर छे के जे शास्त्रने स्वाध्याय करे ते पसंगोपात विवेचनपूर्वक पूर्ण करे अने जेक पील भाध परपर प्र-
शेनातर करीने परतु स्वयं समथने सहायारथी रहेवानी डोशीय करे.

सभाज सेवक-राकेरदास (लगवानदास भंजी, उपदेशक विभाग, सुभय).

नवीन ग्रन्थ

तीस चौकीसी पूजा ।

मूल्य .१।।।- (१जी जिल्द २)-

पैनेगर. दि० जैन पुस्तकालय-सूरत

सेठ कल्याणमलजीकी माता और वृहत दान ।

हमारे पाठक इन्दौर निवासी रा० वा० दानवीर सेठ तिलीकचंद कल्याणमलजीसे अच्छी तरहसे परिचिन होंगे क्योंकि जबसे आपने दो लाख रु० का दान करके इन्दौरमें जैन हाईस्कूल खोला है तबसे सारे हिन्दुस्तानमें आपका नाम मशहूर हो गया है । गत वैशाख कृ० ईको आपकी पूज्य मातेश्वरी श्री-
मती फुलीबाई, जिनकी आयु ६३ वर्षकी थी, स्वर्गवास्ते समय श्रीमतीजी निम्न लिखिन ६१०००) का दान कर गई हैं—
१००००) तुकोगंज मंदिरके धुर फंडमें,
१०२५) इन्दौर, उज्जैन, विजयपुर आदिके मंदिरोंमें, १०१) सि० विद्यालय मॉरेना, १०१) स्या० महाविद्यालय बनारस, १०१) महा-
विद्यालय मधुरा, ५१) ह. ब्रह्मचर्याश्रम हस्तनापुर, १०१) कंचनबाई श्राविकाश्रम (दो वर्षमें कपड़ा आदि देना), ६२१) शिख-
रजी, गिरनारजी, बड़वानी आदि तीर्थोंमें, १०१) बम्बईके मंदिरमें उपकरण, २००) मालवा प्रांतके मंदिरोंमें, ५००) शास्त्रदान व कोई ग्रन्थ वांटनेके लिये, १०१) दि० जैन समाचार पत्रोंको सहायता, ३९१३) संबंधियोंको और ४४०८४) स्त्रियोंके उपयोगी अथवा और किसी उपयोगी संस्था इन्दौरमें खोलनेके लिये इस प्रकार मृत्युके समय आपने ६१०००) का वृहत दान किया है और पहले भी आपके हाथसे कन्याशास्त्र आदिके लिये वृहत दान



हो चुका है । रा० ब० सेठ कल्याणमलजीका यह भी विचार है कि यदि अच्छी जगह और सब सुभीते मिल जाय तो करीब एक लाख रुपये लगाकर माताजीके नामसे एक धर्मशाला बनवा दें । यह बात सेठ साहबने मा साहबसे कही थी और मा साहबने भी स्वीकारता दे दी थी परंतु यह काम योग्य जगह आदि सब सुभीतोंके मिलजाने पर किया जानेवाला है ।

आपके जीवनमें सबसे बड़ी बात यह है कि सबसे उनके पति सेठ तिलोकचंदजीका स्वर्णवास हुआ तभीसे आपकी यह इच्छा थी कि पूज्य पतिके स्मारकमें कोई अच्छी चीज बनाई जाय जिसके लिये आप बारंबार प्रेरणा करती थी । अंतमें उनकी राय व खाम प्रेरणासे ही सेठ कल्याणमलजीने अपने पूज्य पिता सेठ तिलोकचंदजीके स्मारकमें दो लाख रुपये लगाकर तिलोकचंद जैन हाईस्कूल इन्दौरमें खोल दिया है जो इस सालसे इलाहाबाद यूनिवर्सिटीसे रिकगनाइज़ होकर हाईस्कूल हो गया है ।

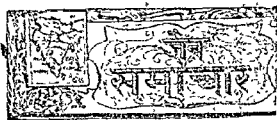
ऐसी दानी और आदरणीय माताका फोटो हमने खास कोशीश करके मंगाया था और इसी अंकमें प्रकट कर दिया है ।

हम आशा करते हैं कि रा० ब० दानवीर सेठ कल्याणमलजी साहब अपनी मातेश्वरीका नाम अमर रखनेके लिये शीघ्र ही कोई द्रियोपयोगी बड़ी भारी संस्था, धर्मशाला, ग्रंथमाला आदिका प्रवन्ध करेंगे ।

आराधना कथाकोष

(११४ कथाओंका संग्रह मूल्य ४०)

भैरव, दिगंबर जैन पुस्तकालय-सूरत ।



गोपालदास ग्रंथमाला—अजनासेसे मंत्री गोविन्दरामजी लिखते हैं कि गत ता. ७-४-१७ को यहां स्वर्गीय स्वा० बा० न्या० पं० गोपालदासजी वरैयाका नाम सदा स्मरण रखनेके लिये एक सभा होकर प्रस्ताव पास हुआ कि 'गोपालदास दिगंबर जैन ग्रंथमाला' स्थापन होनी चाहिये । फिर इसके लिये कुछ चंदा भी हो गया । पुनः इस ग्रंथमालाके एक मेम्बरने 'पंचाध्यायी' की टीका किसी सुयोग्य विद्वान द्वारा कराई है उसके छपानेका प्रस्ताव किया वह स्वीकृत हुआ ।

विना मूल्य—'श्री समवसरणदर्पण' पुस्तककी २०० कापी एक महाशयने विना मूल्य बांटेनेके लिये खरीदी है इसलिये पोस्टेजके लिये आधे आनेका स्टैम्प भेजकर निम्न लिखित पतेसे यह तीन आनेवाली पुस्तक मंगा लीजिए । पं० मुन्नीलाल जैन, सिकंदराबाद, यु० पी० ।

हाथरसकी जैन धर्मवर्द्धनी सभा 'जैन मार्गड' नामक मासिक पत्र निकाल रही है और अभी उपदेशक विभाग भी खोल दिया है और श्री बालमुकुन्द शर्मा जैनको उपदेशार्थ नियत किया है ।

मुंबई आचिकाश्रम—श्रीमती



मगनब्हेन जणावेळ के ता० ३१-४-१७ थी ता० १५-६-१७ सुधी आश्रममां गरमीनी, रजा पडी छे. हालमां आश्रम तरफयी श्रीदेवी-बाई तथा श्रीमतीबाई गुजरातमां भ्रमण करी रहेला छे, जेओ अमदावाद, ओराण, प्रांतिज सोनासण, इडर वगैरे स्थळे उपदेशार्थ जजे मांटे गुजराती व्हेनो तथा माईओए अमन उतरवानी तथा गामेगाम पहाँचाडवानी सगवड करी आपवा उपरांत तेमनो उपदेश सांभळो.

**सर्पने जातिस्मरण अने वि-
षापहार स्तोत्रनो प्रभाव**—प्रांतिज (अमदावाद) थी शा नेपचंद उगरचंद गांधी जणारे छे के अमनगर (इडर) मा ता० १५-३-१७ ने दिने कोटडिया रावजी अप्पेचंदना पुत्र मोतीचंदने सर्प करडयो हतो त्थारे तेमना भाई सत्ताबाई रावजीए विषाप-हार स्तोत्र भणीने पाणी छांटवा मांडयुं अत्ते ने (जेने सर्पहुं झेर चंडहुं हतुं ते) बोल्यो के मारे पाठला. भयमां ते वीमनगरमां बाप हनो अने तेणे मने जीवतो बांधी कुशमां नांखी मारुं मरण निरगावेळुं माटे तेनो बडलो लेवाने हुं करडीने एनो प्राण लईश वगैरे. ज्यारे णुं थयुं त्थारे झेर उतरी गयुं अने हेनी एम जहेछे के हवे पडी पण करडीने प्राण छीरा घिना हुं छोडनार नथी, माटे कोई विद्वान आनो उपाय बतावे अने ए सर्पने वश के तो तेने अभयदानतुं पुण्य मळो.

मुनीमनी जरूर—पालीताणा दि० वारखाना माटे लायक अनुभवी मुनीमनी जरूर छे. गुजराती भाईने प्रथम चान्त मळो.

लखो-भगवान छगन, हुमडनी शेरी-भावनगर।

सूरतमां महावीर ! जयंती—

अत्रे आ उत्सव चैत्र सुद १३ने दिने नगर-गेठ बावूमाई गुलाबभाईना प्रमुखपणा नीचे मोरे ठाठथी उनमाई महावीरना गुणानुवाद थवा पत्री महावीर जयंतीनो त्हेवार सूरत जिल्लामां जाहेर त्हेवार तरीके पाळयाने सर-कारने अरज करनारो तथा म्युनीसिपल स्कूलमां पर्युपणनी रजा पाळवा माटे स्कूलबोर्ड कमी-टीने सूचना करनारो एम वे ठरावो थया हता.

वृद्ध महेताजीनी कदर-सूरतमां स्वर्गीय गेठ माणेकचंदजी तरफयी 'फूलकोर कन्याशाळा' चाले छे तेना वयोवृद्ध महेताजी परमानंदास इच्छाराम रिटायर थता होवाथी तेमने छेवटुं मान आपवा अत्रे गई ता० ३जीए एक मेळावडो शेठ काळीदासना प्रमुख-पणा नीचे थयो हतो, जेमां मूलचंद कसनदास कापडिया, डॉ. ईश्वरलाल, श्रीमती मगनब्हेन वगैरेए महेताजीना गुणानुवादतुं वर्णन करवा पडी श्री० मगनब्हेन तरफयी महेताजीने पोशाक अने अनुक रकमनी पर्स मेठ आपी हारतोर आपवामां आव्या हता.

**ग्रन्थराज छप रहा है—जैन सि-
द्धांतका अपूर्व ग्रन्थराज श्रीपंचाध्यायीजी-**की हिन्दी टीका पं० मन्मतलालजी न्याया-लंकारने तैयार की है और यह ग्रन्थ सूरतमें छप रहा है।

सभापति हुए—हिन्दी साहित्य सम्मेलनरा अष्टम वार्षिक अधिवेशन इन्दौरमें होगा जिमकी स्वागतकारिणी कमेटीके सभा-



पति हमारे श्रीमान दानवीर रायबहादुर सेठ हुकमचंदजी नियत हुए है ।

महावीर केवलज्ञान जयंती—यह जयंती गत वै० शुक्ल १० को सोलापुरमें मनाई गई थी जिसमें पं० बंशीधरजी, बाबू कृष्णलालजी वर्मा आदिके व्याख्यान हुए थे ।

गोपालदास लायब्रेरी—अलीगंज (एटा) में स्व० पं० गोपालदासजी बैरैयाके स्मारकमें एक लायब्रेरी स्थापित हुई है ।

आर्यसमाजी जैनी हुए—गत मास जैनोंमें आर्यसमानियोंसे जैनोंकी तरफसे पं० बनारसीदासजीने शास्त्रार्थ किया था जिसका असर यहाँ तक आई कि आर्य-समानियोंने यह धर्म छोड़ कर जैन धर्म स्वीकार किया ।

जैन कामरशियल क्लास—लखनऊमें लाला कन्हैयालाल गोदाने बिना किसीकी द्रव्य सहायतासे तीन माहसे लाला प्रमुदयालजीकी पाठशालामें जैन कामरशियल क्लास खोला है जिसमें १६ विद्यार्थियोंको मंस्कृत अंग्रेजी और धार्मिकशिक्षा मुफ्त दिये जानेके अतिरिक्त शार्टहेड और टाइट राइटिंगका काम सिखाया जाता है ।

मकानका शिलारोपण—बड़वानीमें बोटिंगके मकानका शिलारोपण उत्सव बड़वानी नरेश श्री रणजीतसिंहजीके करकमलों-द्वारा गत ता० १४ अप्रेन्को हुआ था ।

प्रयत्नका फल—श्री० बलचारी शीतलप्रसादजीके प्रयासमें सांगलीमें श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रमके लिये २१॥ दिनका आ-

हारदान स्वीकृत हुआ है । आहारदानमें एक दिनका २५) देना पड़ता है ।

सम्मेलनशिखर अपील—पट्टेके बिपयका जो मुकदमा नं० २७५ राजा पाल्मनसे चल रहा है उसकी तारीख २० अप्रेलको थी वह मुलतवी होकर ता० १४ मई नियत हुई है । तथा पूजा टोंके मुकदमा नं० २८८की अपील दिगंबरियोंने ४ मार्चको और श्वेतांबरियोंने १६ मार्चको की है ।

दक्षिण महाराष्ट्र जैन कान्फ-रेंस—श्री दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाका वार्षिकोत्सव गत ता० २२ को कवलापुर (सांगली) में ब्र० शीतलप्रसादजीके प्रमुखत्वमें हुआ था जिसमें कई महत्वके प्रस्ताव होकर आगामी बैठक स्तवनिधिक्षेत्रके मेलपर करना निश्चित हुआ था । इस समाने स्व० दानवीर सेठ माणिकचन्दजीके स्मरणार्थ (८०००) एकत्र कर उससे बेलगाममें एक माणिकबाग नामक बंगला लिया है जिसकी आमद ५०००) प्रति वर्ष है । यह रकम किसी उपयोगी कार्यमें खर्च की जायगी । इस मौकेपर प्राथमिक शिक्षणोत्तेजन संस्थाका प्रथम वार्षिकोत्सव श्रीयुत बालचन्द रामचन्द कोठारी बी० ए० के सभापतित्वमें हुआ था । इस संस्थाके सेनेटरी अण्णाराव अप्पानी मूले बी० ए० है, जो विद्यार्थी वस्तीगृह, वाचनालय, चर्चामंडल, रात्रिशाला, कन्याशाला, व्यायामशाला, उद्योगशाला, औषधालय, दुर्घटन निवारक मंडल ऐसे ९ कार्यालय स्थापित करके चला रहे है । कुल २१ छात्र पढ़ते हैं, जिनमें ८ जैन और एक मुसलमान भी है ।



સુધારકોની પ્રવૃત્તિઓ

કેવી હોવી જોઈએ ?

સાધનો ચાલુ જમાનો “ સુધારકોની જાણ ” એમ કહેવાય છે તે વિષે કેટલાકનો અભિપ્રાય હાલ ઘણો ભૂલ ભરેલો હોય છે અને તેમ હોવાનું કારણ એક નથી પણ અનેક । તેમજ એક પક્ષનાં નથી પરંતુ બન્ને પક્ષ-પક્ષોએ સગતા છે.

હિન્દીમાં ઘણી પ્રજાઓ ચોડીકવાર જન્મી અને તારાની માફક આકાશની સપાટી ઉપરથી પૃથ્વિ પર ગઈ છે. રોમ, ગ્રીસ તેમજ હિન્દુસ્તાની પ્રજાઓ એ સપાટી ઉપર વધારે ધર વિદ્યાર્થી રહી છે અને સૌથી વધારે હિન્દુ-જાત રહ્યું છે અને હાલ પણ આંખી બોલતી વ્યક્તિ છે.

દરેક પ્રજાની યશસ્વીની પદ્ધતિ ધર્મ જેવી એક વસ્તુ રહેલી હોય છે. યુરોપના સોળમાં સોળો ઇતિહાસ ધર્મના અગાધોત્તર ભરપૂર છે અને યુરોપ તે વખતે તે ધર્મના અગાધ સોહવાને સક્તિમાન ન થયું હોત, તો હાલ તે સુધારકોના ચિત્તે અથવા માનસિક ક્ષેત્રમાં આગળ પડતું ધર્મના પામ્યું હોત. ત્યાર પછી એ ધર્મ કે જે ગ્રીસ તેમજ રોમમાંથી પ્રસારમાં મળેલો છે તેને જ લીધે રોમ અને ગ્રીસની યશસ્વી અને આખાની યથા છે, એટલે એક દરેક પ્રજાની યશસ્વી પદ્ધતિના કારણે રૂપે એક કારણ થઈ પડે છે. મોટી મોટી લાઠીઓ દરેક પ્રજાનાં પ્રવૃત્તિનાં ક્ષેત્રે જવાં કે જોમ, મહિત્ય ઇત્યાદિમાં દરેક ધર્મને સુખ્ય પદ આપે છે. રોમનું અને ગ્રીસનું સાહિત્ય ક્ષેત્રે જોયું, તો જણાશે કે તેમાં દબારે આ-વધારે ધર્મની વાતોચીનાં (Illusions) નીચેનાં એકપુત્ર નહિ પરંતુ કથાનો નીચેનાં એકપુત્ર, તો જણાશે કે તેમાં નીચેનાં કારણે દરેક હોય છે અને હોવાનું

જોઈએ કારણકે મનુષ્ય અને ધર્મ એ જોડી વસ્તુઓ નથી અને જ્યાં મનુષ્ય હોય ત્યાં ધર્મ હોયોજ નોંધે પછી ભલે કાળને સમોધી પ્રમાણમાં અને પીળમાં ફેરફાર હોય. ઉપરથી દરેક પ્રજાઓ કરતાં હિન્દુસ્તાની પ્રજા-માં ધર્મનાં કિરણ ઘણાંમોટા પ્રમાણમાં દરેક કાર્યપ્રવાહમાં ફેલાયેલાં છે. સાહિત્ય, કળા, લઘાલઘાદિ દરેકમાં ધર્મનાં કિરણો પ્રેરાયેલાં છે.

એટલે દરેકમાં મનુષ્ય અને ધર્મ એક પીળ સાથે જોડાયેલાં રહે છે અને જ્યાં બે-માંથી એક ભગડે છે કે બીજું પણ ભગડે છે અથવા બેમાંથી એકનો જોડો અર્થ કરીશું તો બીજું પણ જોડો રૂપમાં સમજાશે. તો પ્રથમ સુધારકોની પ્રવૃત્તિઓ આ તરફ દોરાય તો તે ધર્મીજાં થોડાં અને લાભકર થઈ પડે.

હિન્દુસ્તાન દેશ કેળવણીમાં ઘણો પડાત છે એ વાત તો હવે ધણી રીતે સાબિત કરી ચુકાઈ છે અને સર્વે લોકો એમ માને છે પણ ખરા એટલે હિન્દુસ્તાનમાં (gooderms mass) અથવા પીળ કેળવણી પ્રજા સમુદાય ઘણો છે, હવે તે સમુદાય જાંવારણ સુખ્યત્વે ટીકીને ધર્મને પદાને ટીકી રહ્યું છે. જો ધર્મના ખરે-ખરા અર્થ ઉપર ઉજુ હોય તો તે કેળવણી નથી જોમ છે જ નહીં. ધર્મના નામે કહેવાતું કારણ એટલું જ કે તેઓ અર્થ અદાથી ધણી લાંબા વખત ઉપર લખાયેલાં શાસ્ત્રો અને તેમાં થયેલા સામાન્ય દ્રષ્ટી સુદિવજાઓ તરફથી જોડા ફેરફારો ઉપર પોતાનામાં રહેલી સમજ સક્તિને ઉપયોગ કર્યો વિના અર્થ અદા રાખના હોય છે. આથી દરેક એમ નથી કહેવા માંગતો કે અદા ન હોવી જોઈએ પરંતુ સુદિવ યુગ અદા હોય, તો જ તે માણસનામાં અદા છે. વળી શાસ્ત્રો લખાવાને ઘણો કાળ થઈ જવાથી તેમાં કાળ ક્ષેત્ર ક્રિયાદિને લીધે ધણી ફેરફારો થયા અને વળી આધુનિકમાં પૂર્વજોના જોમ યજ્ઞમાં ઘટાડો થતો ગયો, તેમ તેમ તેની સમજવાની સક્તિ આજી યથા એટલું જ નહિ.

પરંતુ તેના ખોરા અર્થ પશુ એહી સેવા માંડ્યો. જેમાં આસ કરીને જેનો વેપારી વર્ગ થય ગયા અને તેથી તે જ્ઞાન તરફ લાક્ષ્ય અને લોભથી વધારેને વધારે એટલેકાર થવા લાગ્યા. ધર્મની દરેક બાબતનો ખોળે પોતાના ધર્મ-ગુણો ઉપર અથવા આત્મણુ ઇત્યાદિના ધર્મ-ગુણો ઉપર નાંખતા ગયા અને આથી તે ધર્મગુણો પશુ કેટલાક પોતે સ્વતંત્રતાથી શાસ્ત્રોના ગમે તેવો ઉપયોગ કરવા લાગ્યા. જોદ્ધ જેવી મોટી પ્રજા થઈ પરંતુ તેની સામે ઘણા ધર્મ વિરોધીઓ ઉભા થવાથી ઝટ નાશ પામી. જેનોની સંખ્યા નાની હોવા છતાં પશુ આટલો વખત ટકી રહી તેનું કારણ એ કે બાપારી વર્ગ થવાથી ધર્મવિષે જ્ઞાન ઇત્યાદિને બાજુ ઉપર મૂકી દીધાં, અને આત્મજો ઇત્યાદિના હાથમાં તેના વિષય સોંપી દીધો, આથી તે લોકો પોતાનો સ્વાર્થ સાધવા સાદુ ગમે તેવો ઉપયોગ કરવા લાગ્યા અને હાલ પશુ કરે છે. આત્મજો સાથેનો આપણા સજંધનો એક દાખલો આપણું ધણું ખરાં લભ આત્મણુ જોરના મારફતે કરવામાં આવે છે એટલુંજ નહીં પરંતુ એ સિવાય બીજા ઘણા આચારો આત્મણુ આચારો આપણામાં દાખલ થયલા છે અને તે કેટલે દરજ્જે સારા કાંઈવા જોડા છે તે હાલ અહીં તપાસવાનું નથી, પરંતુ આગળ અન્ય ધર્મજો આપણી સામે થયા નહિં અને તેથી આપણી પ્રજા આટલો લાંબા વખત સુધી ટકી રહેવાનું એ પશુ એક કારણ છે. જે પ્રજાએ માથાને અને શરીરને જુદું ગણી વર્તન અદાવવા માંડ્યું તેની પડતી થયા વિના કેમ રહે ? ધર્મ અને મનુષ્ય એ જેનો સંજંધ એવો છે તે પછી જ્યારે આપણે એ પ્રમાણે નો સંજંધ તોડ્યો ત્યારથી આપણી પડતી થવા માંડી.

તેને જે એજ ધર્મનો આપણી સાથેના મંજંધ નેડવા માંડીયું તે આપણે જરૂર એક આજ્ઞાદ પ્રજા થઈયું. ધર્મમાં સુધારો કરવો

એટલે આપણે આપણું જીવ આમરણ નાંખી દઈયું નહિ પરંતુ તેને નવો આકાર આપી અને યોગ્ય ઘાટ આપીયું. માણસ શરીર, બુદ્ધિ અને આત્માનો અનેકો છે અને તેથી તેને દરેક બાબતમાં જે જેનું એ તેટલી સ્વતંત્રતા આપવામાં આવે તો આપણે આપણો ધર્મ સાધ્યો એ નિશ્ચય છે કારણ કે ધર્મ પશુ શરીર, બુદ્ધિ અને આત્માથી છુટો પાડી શકારો નહિ. તો પ્રથમ સુધારકોએ આપણા શાસ્ત્રો લઈ તપાસી તેનું રહસ્ય, ઇરાદો ઇત્યાદિનું ખારીક અવલોકન કરી તેને તેજ સોનાનાં નવા આભરણો બનાવવાં નેપ્રજા અને જે આમ થશે તો અજ્ઞાન સમૂહ તેના ઉપર અંધ શ્રદ્ધા રાખે છે તેમની પશુ આંખો ઉઘાડશે અને તે પશુ ધર્મ સમજવા માંડશે એટલે શરીર મન અને આત્માને જોળખતા અને વાપરતાં શિખરો પીયું અજ્ઞાન સમૂહની સંખ્યા વધારે છે એટલે જ્યાં તેમાં સુધારો થયો એટલે આખી પ્રજામાં સુધારો થવો આવશ્યક છે. આમ યતો બીજાં નાના નાના સુધારાઓ કે જેના સામે જીવના જમાના ઉપર અંધ શ્રદ્ધા રાખવાવાળા માણસો તરફથી વાંધો ઉઠાડવામાં આવે છે, તે પશુ બંધ થશે અને બધા સુધારા સ્વયં દાખલ થશે અને સુધારો એટલે એજ કે મન, શરીર અને આત્માને દરેક બાબતમાં સ્વતંત્રતા આપવી. શ્રદ્ધામાં, વિચારમાં, આચારમાં, બાબામાં તેમજ દરેક કાર્યમાં મનને તેમજ બીજાનું અવધેને સંપૂર્ણ સ્વતંત્રતા ન્યાયસર આપવી તેનેજ સુધારો કહે છે, પરંતુ આપણી વિચાર-શક્તિ ઉપર અંધ શ્રદ્ધા અને અજ્ઞાનનું આવરણ છવાઈ ગયું છે, તેથી આ દયા થઈ છે માટે તે દૂર કાવાને પ્રથમ વિપ્લો ઉઘાડે એવો નેપ્રજા.





हरिवंशपुराणकी सत्यवादीकी समालोचनाका प्रतिवाद ।



पाठक ! कई समाचार पत्रोंमें आप हरिवंशपुराणकी समालोचना पढ़ चुके हैं, उसी साक्षात् देख भी चुके हैं कि संस्थाने एक बड़ी भारी पूंजी लगाकर उसी किस रूपमें प्रकाशित किया है और उसके संपादकने उसके संपादनमें कितना परिश्रम उठाया है ? साथमें आप यह भी समझ गये हैं कि स्वर्गीय पं० दोलतरामजीके अनुवादमें और इस नवीन अनुवादमें क्या खूबी है ? और पं० दोलतरामजीने जिन प्रकरणोंको छोड़ दिया है उन्हें इस नवीन अनुवादमें किस खूबी, किस सरलता और कितने परिश्रमसे लिखा है ? मैं आपके सामने इस बातको निर्भीक हो कह सकता हूँ कि इस ग्रंथके संपादनमें मुझे अधिक कष्ट भोगना पड़ा है और विशेष-कर उन प्रकरणोंके संपादनमें जिन्हें कि पं० दोलतरामजीने छूआ तक नहीं और जो वर्तमानमें गुप्त सरीखे जान पड़ते हैं, परंतु संपादक 'सत्यवादीके' हृदयमें इस ग्रंथके संपादनका जरूर भी महत्त्व नहीं जगा और हरिवंशका बहु भाग उन्हें विपरीत गूँथ गया । यद्यपि समालोचकको अधिकार है कि यह अपने विचार प्रदर्शित कर सकता है और समालोच्य अर्थोंके गुण दोषोंका उल्लेख करना उसका परम धर्म है परंतु ऐसी समालोचना अनुचित है जो निमूल हो और

व्यर्थका पांडित्य बतलानेके लिये खींचातानीसे की गई हो ।

खैर, संपादकजीने जो व्यर्थकी "प्राचीन अनुवाद ही छपाना था" आदि बातें लिखी हैं और भी कई बातोंमें अपना पांडित्य दिखाया है उनकी हम यहाँ प्रत्यालोचना करना अनुचित समझते हैं क्योंकि उक्त संपादकजीको अपने विचार प्रदर्शित करनेका पूर्ण अधिकार है और जो बातें उन्होंने लिखी हैं पाठकोंने भी वे पढ़ी होंगी कि वे कैसी वे शिर पैरकी हैं ! परंतु उन्होंने जो अशुद्धियाँ निकाली हैं उन्हींका हम प्रतिवाद करते हैं । आपने—

शंभवे वा विमुक्तो वा भन्ना यत्रैय शंभवे

भेनु भन्त्या नमस्तस्मै तृतीयाय च शंभवे ।

इस श्लोकके अनुवादको मिथ्या और सिद्धांत विरुद्ध ठहराया है । प्रथम तो यहाँ यह निवेदन है कि आप अपने सर्वथा विश्वासपात्र पं० दोलतरामजीके इस श्लोकका भाव देखें उन्होंने क्या लिखा है ? यदि पं० दोलतरामजीका भाव मिथ्या और सिद्धांत विरुद्ध है तो मेरा अनुवाद भी मिथ्या और सिद्धांत विरुद्ध बतला सकते हैं क्योंकि मेरा और पं० दोलतरामजीका भाव एक है । यदि पं० दोलतरामजीका भाव युक्त और सिद्धांत विरुद्ध है तो मेरे भावको अयुक्त और सिद्धांत विरुद्ध ठहराना प्रलापमात्र है दूसरे अनुवाद करते समय मुझे जहाँ तक विश्वास है 'भेनु' की जगह 'भेनु' !! क्रियापद नजर पड़ा था और मनु धातुका अर्थ 'विचार'



यथार्थ है इसलिये उक्त श्लोकके अर्थमें यदि पं० दोलतरामजी अपराधी है तो मैं भी हूँ अन्यथा नहीं । आपने जो यह लिखा है कि—यहांपर विचारको संशय कोटिमें रखनेसे यह मालूम होने लगता है कि “ भक्त्योंको भगवानके स्थिति कालमें भी यह निश्चय न हो सका कि सुख मोक्षमें है या संसारमें ? संपादकजी ! यहां तो आपने कमाल किया । यदि आप जरा गहरी दृष्टिसे विचारते तो आपको पता लग जाता कि मेरे वा पं० दोलतरामजीके भावमें क्या चमत्कारी है । मुझे खेद है मेरे अर्थमें आपको संशय कोटिका मान कैसे हो गया ? हिंदी साहित्यमें “ असली जौहरीकी मौजूदगीमें ही रत्नके खरीददारोंको इस बातका ज्ञान हुआ कि बहुमूल्यता रत्नमें है या कांचमें ? इत्यादि वाक्योंका प्रयोग होता है परंतु सिवाय आपके कोई भी हिंदी साहित्यका वेत्ता वहां “ जौहरीके स्थितिकालमें ग्राहकोंको यह निश्चय ही नहीं हो सका कि बहु मूल्यता रत्नमें है या कांचमें ? इत्यादि संशयकारक अर्थ नहीं करता । यहां तो आपने अपनी हिंदी साहित्य विज्ञताका भी परिचय दे दिया । महाशय ! उस श्लोकका मेरा भाव यह है कि—भगवान शंभवनाथके पहिले भव्य भक्तोंको इस बातका ज्ञान ही न था कि निराकुलतामय सुख संसारमें है या मोक्षमें ! किन्तु उनके स्थितिकालमें ही उन्हें इस बातका भान हुआ कि वास्तविक सुख संसारमें है या मोक्षमें ? इसलिये

उन्होंने संसारसे सुख मोड़ मोक्ष सुखके लिये उद्योग किया । अब बतलाइये, यहाँ क्या तो असत्यता और विरुद्धता आ गई ? मेरी रायसे तो इस अर्थसे भी ग्रंथकारकी उक्तिमें अपूर्व चमत्कारी प्रतीत होती है और ऐसे अर्थमें कविगणको प्रखर पांडित्य और भक्ति संभार प्रतीत होता है । खैर, इस श्लोकके अर्थमें मैं कलंकित ही नहीं परंतु आप भी तो अपने अर्थपर विचार करें । आप ही कहां कलंकसे मुक्त हैं । प्रथम तो आपने— ‘शंभवे’ इस शब्दका जिस कल्याणकारी भगवानके निमित्तसे अर्थ किया है वही विवाद अस्त है क्योंकि आपने जो ‘निमित्तसे’ यह अर्थ किया है वह किस शब्दकी सामर्थ्यसे ? क्या आपका यह भी सिद्धांत है कि निमित्त अर्थको चोतन करने वाली सप्तमी विभक्ति भी है ? व्याकरण शास्त्रमें मेरे दृष्टि गोचर तो यह बात नहीं हुई है । हाँ, यदि आप ‘विवक्षातः कारकाणि भवन्ति’ इस असमर्थ वैयाकरण सिद्धांतपर आरुढ़ हो कर यह बात कहें कि सप्तमी विभक्तिका भी निमित्त अर्थ हो सकता है तो सिवाय आपकी व्याकरण विषयक दुर्बोधताके दूसरा कोई उपाय नहीं । अब आपही बतावें मैं तो ‘भज्’ धातुके अर्थमें घोका खा गया और अपने यह क्या कर पाड़ा ? यहांपर आपको शंभवे पद सप्तम्यंत तो अवश्य मानना पड़ेगा । क्योंकि ‘शंभय’ शब्द अकारांत भी है । दूसरे उसै सप्तम्यंत पद बतलानेवाला ग्रंथकार द्वारा दिया गया ‘यशेव’ विशेष



पण वहांपर मौजूद है। महाशयजी ! यहाँ पर सति सप्तमि है और उसका जिस संभवनाथके स्थितिकालमें यही अर्थ युक्ति युक्त है न कि जिस भगवानके निमित्तसे यह। खैर, भाषामें ऐसा अर्थ हो भी जाता है तथापि आप 'यत्रैव' पदको घसीट कर कहां लगा गये हैं और उसका क्या अर्थ कर गये हैं तनिक तो विचारो। आपने जो 'यत्रैव' पदका अर्थ "जहां-पर वे रहें वहांपर" यह किया है सो क्या संगत है ? यहां तो 'जिम' यह अर्थ ही युक्त है अस्तु।

दूसरे आपने 'जिस कल्याणकारी' यहांपर जो 'जिस' अर्थ किया है वह किस पदका अर्थ है ? यदि आप कहें कि वह भी 'यत्रैव' पदका अर्थ है तब एक 'यत्रैव' पदकी व्यर्थ दो जगह घसीट करना उसकी मिट्टी पलीत करना है। हां, हम इस बातको स्वीकार करते हैं कि एक शब्द अनेक जगह काममें आता है परंतु कहां, जहां वेसा किये बिना अर्थमें किसी प्रकारकी गड़बड़ हो परंतु यहां तो कोई गड़बड़ नहि मालूम होती इसलिये यहां ऐसा कैसा असमंजस सरीखा प्रतीत होता है। यदि आप यह कहें कि जहांपर वे रहें वहांपर 'यह' अर्थ यत्रैव पदका नहीं किंतु भव' और 'विमुक्तौ' पदोंकी सामर्थ्यसे है तो भी अयुक्त है क्योंकि अर्थात् जब तक मासस्में रहे तबतक संसारिक सुखको भोगा और जन मुक्तिमें रहें तब मुक्ति

सुखको भोगा। आपके इस भावसे यत्रैव शब्दका ही उपर्युक्त अर्थ स्पष्ट जान पड़ता है।

आपने दूसरे पादके 'शंभवे' शब्दका अर्थ शंभवनाथ भगवान न कर कल्याणकारी किया है यह भी जरा दृष्टिमें चुभना सरीखा है क्योंकि या तो आप भाषाके सौंदर्यके लिये 'जिस भगवानके स्थिति कालमें' यह अर्थ करें या "जिस कल्याणकारी शंभवनाथ भगवानके" यह अर्थ करना उचित है। शायद आपको इस बातका तो संशय न होगा कि शंभव शब्द अकारांत भी है। तीसरे भगवानके वाचक 'शंभव' और 'शंभु' दोनों शब्द हैं उनमें 'शंभव' शब्दका अनेक जगह प्रचार है और 'शंभु' शब्दकी स्थितिमें यह ग्रन्थ भी प्रमाण है। यद्यपि शंभव शब्दका कल्याणकारी भी अर्थ है परंतु यहांपर वह अयुक्त है क्योंकि कल्याणकारी अर्थ करनेसे शंभव शब्द विशेषण पड़ता है और उसके लिये विशेष्य भगवान पदकी विवक्षा करनी पड़ती है, दूसरे यदि शंभव शब्दको विशेषण माना जायगा तो "विशेषणका विशेषण नहीं होता" इस नियमानुसार 'यत्रैव' विशेषण निरावार मानना पड़ेगा। तीसरे हमें "तृतीयाय स्वयंभवे" यह भी पाठ मिला था इसलिये इस पाठसे भी यह दृढ़ता होता है कि दूसरे पादका शंभव शब्द विशेष्य है और वह तीसरे तीर्थका वाचक है। अब वनवासमें महाशय संतादरजी ! जिस श्लोकको आपने पूर्ण विचारकर नवीन अनुवादमें उस मिथ्या और सिद्धांत विरुद्ध उद्-



रानेके लिये पूर्ण दोड़ की उसीमें आप तीन जगह फिसल गये तब यदि आप इसका पूर्ण अनुवाद करेंगे तो क्या होगा ? यह तो आप भी अवश्य जानते हैं कि जब किसी व्यक्तिको कलंकित करनेकी मनमें ठान ली जाती है उस समय पूर्ण विचार करना पड़ता है कि तु जहाँपर कर्तव्य कर्म किया जाता है वहाँ अधिक विचार नहीं । मैं प्रतिदिन १००-१२५ लोकोंका अनुवाद करता था इसलिये मुझे अधिक विचार करनेका अवसर नहि मिलता था और आपने मुझे कलंकित करनेके लिये धीरे विचार किया है । जब ऐसी दशामें एक मुलम श्लोकके लगानेमें तीन मूल होगई तो हिसाब लगानेसे इस ग्रन्थके पूर्ण अनुवादमें आपकी उत्तीस हजार भूलें हो सकती हैं क्योंकि इस ग्रंथका परिमाण बारह हजार है । यदि आप मेरे समान शीघ्रतासे अनुवाद करते तो कितनी भूलें रहतीं ? वे अवक्तव्य हैं तब मेरी सौ पचास अशुद्धियाँ भी हो जाय तो आपको इतना गोर एतराज क्यों ? अस्तु ।

प्र० अ० नं० ३१के श्लोकमें जो देवसंस्की वाणी नियमसे बंदनीक है यहा पर देवसंस्की जगह देवनंघ होना चाहिये यह लिखा है वहापर इतना ही वक्तव्य है कि हमें सत्र प्रतियोंमें देवसंस् ही पाठ मिला था यद्यपि वहाँ हमें संदेह अवश्य था परंतु सबप्रतियोंमें देवसंस् ही पाठ मित्रनेसे हमने देवनंघ पाठ ब गड़ा क्योंकि नवीन पाठका गठना हमारी शक्तिके बाहर था । दूसरे-देवनंघका विषी अवस्थामें देवसंस् भी नाम हो सकता है उग

क्रिये ऐसे स्थानपर प्रतियोंको देखकर और उसका पाठ ग्रहण करने पर भी किसी शब्दके बदलनेके लिये समालोचनासे जोर देना सर्वथा अयुक्त है ।

आपने लिखा है कि “प्र० अ० नं० ३४के श्लोकमें काव्यमयी मूर्तिका “कृतपद्मो दया” जो विशेषण दिया है उसका “रविपेणकी काव्यमयी मूर्ति भी पद्मपुराणकी विकाश कर-नेवाली है” यह वर्तमान अनुवादका अर्थसर्वथा अनुचित है किंतु काव्यमयी मूर्तिके पक्षमें यह अर्थ होना चाहिये कि जिसमें “पद्म-बलभद्र-रामचंद्रके उदय अभ्युदयका वर्णन किया गया है” क्योंकि पद्मपुराणका अर्थ तो काव्यमयी मूर्तिसे निकल आता है विशेषण देनेका अभि-प्राय उसमें बलभद्रके अभ्युदयका वर्णन किया गया है यह होना चाहिये” । महाशय ! किसी ग्रन्थमें कभी आपने काव्यका लक्षण भी बाँचा है ? जो आपने काव्यमयी मूर्तिसे पद्मपुराणका अर्थ निकाला है ? जरा ध्यान दीजिये-काव्य का लक्षण “अदोषौ सगुणौ सालंकारौ शब्दार्थौ काव्यं” यह है और यहाँ पर किसी ग्रंथकारके ग्रंथको काव्यके लक्षणमें प्रविष्ट नहीं किया है फिर काव्यमयी मूर्ति पदसे पद्मपुराणका बोध कैसे हो सकता है ? मेरे, हम, आपके सिद्धान्तानुसार ‘शब्दार्थौ’ पदकी सामर्थ्यसे पद्मपुराणका भी काव्यके लक्षणमें अनर्भाव कर लेने कब ? जब कि रविपेणकी केवल पद्मपुराण ही रुनि होती सो हो नहीं और भी उनके कई ग्रंथ हैं और उ दशामें पद्मपुराणका ही ग्रहण क्यों ? औरोंका



भी होना चाहिये। संपादकजी! 'कृतपद्मोदया' इस पदना पत्रपुराणको विकाश करनेवाली है यह अर्थ निर्दोष है आपकी समझका फेर है। आप जरा तो यह तो सोचिये कि पत्रपुराणके अर्थसे क्या "रामचंद्रके अमृतदयका वर्णन" यह भाव नहीं निकलता? शायद आपको इस बातका तो विस्मरण न होगा कि "नामके एक देशसे भी सर्व देशका ग्रहण हो जाता है" यहां पत्र शब्दसे भी पत्रपुराण अर्थ लिया जा सकता है। क्योंकि आप सिद्धांत कौमुदीमें इसी बातके पोषक सत्या, मामा सत्यमामा जाति उदाहरण पद चुके हैं अस्तु।

प्र० अ० नं० ३८ के श्लोकमें हमें संदेह वह गया था और हमने वहां प्रश्नवाचक चिन्ह भी पटक दिया था परंतु संपादकजी! अपनी लेखनीतो आपने वहां भी नहीं भराया। क्या संपादकजी! जो बात समग्रमें न आज उस पर प्रश्नवाचक चिन्हका पत्र ठेका पाव है? हम कोई प्रभावचर नामका गव है? इस बातका पता नहि लगा था इसलिये वहां प्रश्नवाचक चिन्ह पत्र दिया था। पं० दोलनरामजीका सर्वांगमें विद्वत्ता ही क्योंकि आप और म्यलोंको जाने डे इसी श्लोकके अंतमें नं० ५३-५४ के श्लोकोंका अर्थ ही उन्होंने क्या लिखा है और हमने क्या बारा है? क्या आप सिवाय दोलनरामके ही और भी प्रमाण दे सकते हैं कि कोई पत्रा चंद नामका ग्रंथ है?

आपने किया है कि उपरके कथनसे यह मालूम हो सकता है कि जेमा विषयाम और ग्रंथमें होगा सत्यादि। संपादकजी! यह

तो आपने विलक्षण वाक्य रचनाका परिचय दिया। यदि आप यह साफ लिख देंगे कि समस्त ग्रंथ अशुद्ध है तो क्या कोई आपका सुट पकड़ लेता अस्तु।

आपने जो रूप सत्यका अर्थ अयथार्थ ठहराया है वहां पर इतना ही वक्तव्य है कि आप रूप सत्यका भाव पं० दोलनरामजीके अनुवाकसे देंगे, उन्होंने क्या लिखा है क्योंकि मेने उन्हीके अनुवादके आधारसे लिखा है। यदि आप पं० दोलनरामजीके वचनको भी असत्य ठहरावें तो यह आपका कथन कि—'पं० दोलनरामजीका ही अनुवाद उपायना था' अरण्यरोदन सरीखा होगा।

दूसरे यहां रूप सत्यका अर्थ बनवाया ही कही गया है वहां तो रूप सत्य और स्थापना सत्यमें भेद बनवाया है और वह यथार्थ है। संपादकजी! हमें जान पड़ता है समालोचनाके समय आपने शुद्ध अंत करणमें किसी बातको नहीं विचारा नहीं तो आपको ये व्यर्थकी नुस्तिहा न सुझनी अस्तु।

विशेष—हरिवंशपुराणमें जो श्लोक छूट गये हैं म्यर्थ जान प्रस्तावनामें उनका उल्लेख नहि किया है यदि आपको देखनेकी अभिगता हो तो संपादक जैन मित्रके पास एक सूची बनाकर भेज दी गई है, आप वहांसे देखलें अन्यथा यदि आप लिखेंगे तो मैं वक्त पढ़ने ही सूची भेज दूंगा क्योंकि वर्तमानमें मैं निज जन्मभूमिमें पड़ा हूँ, बीमार हूँ और एक भी प्रति हरिवंशकी मेरे पास मौजूद नहीं है।

गजाधरलाल जैन
(अनुवादक, हरिवंशपुराण)



દશા હુમડ જ્ઞાતિમાં-

કન્યાવિક્રય અને વૃદ્ધવિવાહ.

આહા ! ! શું કહેણ કળીનું, ઝામીયું જોર આજે; સાચા શત્રુ સ્વજન સધળા, દેખીને દીલ દાઝે. નહાડો ગાઠો ધર્મ ધરથી, ન્યાય તો નાશ પામ્યો; નહાટી બુદ્ધિ અશુદ્ધ રૂઢિનો, શોક સર્વજ્ઞ ભ્રમ્યો.

હાલ દરેક ચેપરમાં, દરેક જ્ઞાતિમાં અને દરેક સભાઓમાં કન્યાવિક્રય અને વૃદ્ધ વિવાહ બંધ કરવાના ઉપાયો કરવામાં આવે છે ત્યારે હમારા બાધ્યો તે વાતને ઊરકેરી કન્યાવિક્રય અને વૃદ્ધવિવાહ બંધ કરવાને બદલે ઉડટા આગળ પડી ચાલુ કરે છે અને તે આ સાથે આપણી જ્ઞાતિમાં કેટલાંક લગ્નો થયાં છે, તે આપ સર્વને વિદિત છે એટલે નામ આપવાની જરૂર નથી.

હાલ આપણી દશા હુમડ જ્ઞાતિમાં કેટલાક કન્યા વિક્રયના અને વૃદ્ધ વિવાહનાં લગ્ન થયાં છે તે જોઈ કેના દિલમાં ત્રાસ નહિ વર્તાશે. અને આવા દુઃખજનક બનાવો જોઈ, આહા ! આવી બાળાઓને બળતી ઉમારવા અને હાલ થયેલા કન્યા વિક્રય અને વૃદ્ધ વિવાહ જેવાં લગ્નો ફરીથી નહિ બનવા માટે આપણા યુજ્જ્વાલતા દશા હુમડ પંચની કમીટીના મેંબર માહેજો યોગ્ય કાયદા ઘડી પુરતો બંદોબસ્ત શું નહિ કરે ?

પણ આહા ! આપણે જે આશા રાખીએ છીએ તે નક્કી છે, કારણકે એક કહેવત છે કે “અધેર નમરી, અધેર-રાજ; ટકે શેર બાજી, ટકે શેર ખાંજી” તેમ છનસાઈ કે બ્યાં રાજ પોતે અન્યાય કરે તો પ્રજાને કેમ રોકાય ? પણ રેખતનો કાયદો રાજાને લાગુ પડે છે. જેની રીતે હાલ આપણા મદાન દયાળુ નામદાર કમીટી સરકારની ન્યાયની કોર્ટમાં ચીમત અને ગરીબ બનેને સરખો ન્યાય મળે છે, તેવીજ

રીતે આપણા પંચના મેંબર માહેજો નિષ્પક્ષ-પાતે આવા કૃત્યો કરનારને શું યોગ્ય શિક્ષા નહીં કરશે ?

આહા ! જ્યાંથી વહાર આવવાની આશા હોય ત્યાંથી ધાડ આવે, તો પછી કહેવું કેને ? તેમ જ્યાં આપણી જ્ઞાતિના આગેવાને કે જેઓ પંચમાં તેમ સભાઓમાં જે મોટાં મોટાં બાપણો કરે છે તેઓજ આવાં કામો કરવા પહેલે નબરે તૈયાર થાય છે, તો તેઓ આવાં લગ્નો બંધ કેમ કરી શકશે ?

પણ મહારા વિદ્વાન બાધ્યો તો સમજ્યા હશે કે “વિનાશ કાળે વિપરીત બુદ્ધિ” જેવું થયું કે આગેવાનો આવાં કામો કરવાને ડરતા નથી, તો પછી આપણી જ્ઞાતિની ઉન્નતિ થવાની સ્વપ્ને પણ આશા રખાય કે ?

આપણે આપણી સાત કે દશ વર્ષની પુત્રીના વિવાહ કરવો હોય અને જો બાર કે પંદર વર્ષનો વર હોય તો તે મોટી ઉમરનો ગણીશું. ત્યારે બીજાની બિચારી અગીઆર બાર વર્ષની પુત્રીને પોતાના સ્વાર્થ સાથે સામાને ગમે તેમ સમજાવી વચ્ચે બાંજગડીઆ નાંખી પચાસ કે પચાવન વર્ષની ઉંમરે પરણવાવાળાને શું યોગ્ય ગણીશું ?

અરે ! આપણે હુંકમાં વિચાર કરીશું, તો સહેલાઈથી જણાશે કે આપણે એક ચાર છ પૈસાની જીજ્ઞા કિંમતની ચીજ ખરીદવા જઈશું, તો કેટલીક જગ્યાએ બાવની તપાસ કરી ખરીદ કરીશું કારણકે વખતે ઉતરાઈ જવાય. અરે ! આપણે આવી નજીવી રકમ બદલ આટલી તપાસ કરીશું, ત્યારે આપણે આપણી વહાલી છોડીના લગ્ન કરવા બદલ કે જેની સાથે આખો જન્મ ગાળવામાં છે, તો તેનો પુરેપુરો વિચાર. ક્યાં સિવાય પચાસ પચાવન વર્ષનાં વર સાથે લગ્ન કરવા તે હાથે કરી હુવામાં પડવા જેવું છે.

વળી કેટલાક બાધ્યો પોતાની પુત્રીના વિવાહ કરતા પહેલાં એની પાત્ર કરે છે કે



यादो, कावे दा ना दशे (मरी जगे) तो छोड़ी
येहा येहा आशे ! कोधनी ओशियाणी तो
नहि थरो ! । याद ! डेवी भावना ! शु' आपजे
प्रथमधीन 'अनु' विचारिये छिये तो आगम
साड' ध्याधी थरो ?

भावा व्हावा वांयने ! आ दोष वांथी ले
आना जेनावे जन्मा छे ते जइव आपणी
कभीडी जेगी थाय तेमां यथां यथावी अक
संपथी योग्य प्रणय करवा करववा भरा
अतःकरणी भवेनत करशे, तोन आपणी
आतिभांधी एव विवाह अने जन्मा विक्षयुं
नाम जशे अने आपणी आतिनी दनति थरो.

अक दशाहुभउ आति अंध.

(आराधु प्रातिन विभाग)

सर्व साधारण और उन्नतिका रख ।

(उन्नतिकी देव भागी चली जा रही है, कि-
सान बेचार उस ओर देख रहे हैं और नेतम
ही सड़े २ बड़ी रहे लाने हैं ।)

हम लोगोंको विद्वान है कि 'भारतमें
पहिले दीर्घायुष्क, धनी, दानी, विद्वान और
बन्कान आदमी होते थे, पर अब नहीं । अब
हम अत्यायुके धारक और निर्बल हो गये हैं'
लेकिन यह बात सर्वथा मत्त नहीं, दादाभाई
नौरोजीके अत्याय 'सरस्वती'में और भी कई
व्यक्तियोंके चित्र और चरित्र ऐसे प्रकाशित
हुए हैं जिनसे ज्ञात हो सकता है कि अब भी
कई व्यक्ति ऐसे हैं जिनकी आयु, सौ वर्षसे
भी ऊपरकी है । धर्मिषोका अस्तित्व जे०
जे० जयसेभाईसे हम पा सकते हैं कि जि-
न्होंने 'एक करोड़ रुपयेका दान एक
मुक्त सर्व' साधारणके हितार्थ किया है ।
विद्वानोंमें शिवकुमार आत्मीकानाम मशहूर है

अथवा बा० तिलककी गणना उपयुक्त होगी,
जिन्होंने गीतापर ऐसी बड़ी टीका लिखी है
कि जिसकी तुलनामें प्राचीन टीकाएं कई अं-
शोंमें कुछ कम ही महत्व रखती हैं । और
बनेजाकर लिए तो सिर्फ राममूर्तिका नाम ले
देना काफी है । ऐसी २ महत्त्वशाली व्यक्ति-
योंके रहने हुए यह कैसे कहा जा सकता है
कि इस समय पहिलेकी अपेक्षा अवनति है ?
इसलिये हमका मतलब यह है कि एक एक
व्यक्तिके आधारपर किसी देशकी दशाका अ-
नुमान नहीं किया जा सकता है । एकाध व्य-
क्तिके बुरे-नीच होनेसे कोई देश बुरा-अवनत
न समझा जा सकता और न किसी दो एक
व्यक्तिके भले उच्च होनेसे कोई देश उच्च
समझा जा सकता है । किन्तु देशकी उन्नति
और अवनति सर्व साधारण पर अपना आश्रय
रखती है । सर्व साधारण अगर संप, शक्ति-
शाली और उच्च विचारके हुए तो देश उन्नत
कहलायेगा और सर्व साधारण यदि असंप,
निर्बल और नीच विचारके हुए तो देश अवनत
कहलायेगा ।

अब कि सिद्धान्त यही है कि देशके
सर्व साधारण लोग जैसे-कुछ होते
हैं वैसा ही देश बनना है यानी 'भारतका
नाम समुन्वय करनेके निमित्त सर्व साधारण
लोग ही हैं तो अब देखना यह है कि उनके
उठानके लिए क्या प्रयत्न हो रहा है ।

सर्व साधारणसे मेरा मतलब उन लोगोंसे
है कि जो अधिकतर ग्रामवासी हैं, शहरोंमें
बे न्योग जो दिनों गत पेटकी भाग बुरानेमें



लगे रहते हैं जो न कभी अक्षरों का, पुस्तकों का अथवा व्याख्यानों का नाम भी नहीं जानते । जो अपना नाम तक लिखना नहीं जानते या जो कुछ २ टेढ़ी मेढ़ी लकीर खींच जानते हैं । ऐसे ही मनुष्यों की संख्या आज दिन भारतमें सबसे अधिक है ।

ऐसे मनुष्यों के दो भाग हो सकते हैं । एक तो वे जो निरक्षर भए हैं । दूसरे वे जो कि पुस्तक या अक्षर बांच सकते हैं ।

पहिले प्रकारके लोगों को उठाने के लिए उन्हें अपने कर्तव्यों का बोध कराने के लिए सिर्फ व्याख्यानों का ही अवलम्ब नज़र आता है । व्याख्यान भी वे नहीं, किन्तु वे जिनका अभीष्ट भाग उनके परिचित हो । जैसे पुराण पुराणों की कथाएँ । रामचंद्र-सीता, अर्जुन-भीम, आरुहा-उद्धव । ऐसे महात्मा के घटनात्मक चरित्रसे तो वे लोग परिचित होते हैं, सिर्फ ओजस्विनी भाषामें उनके भावों का प्रचार मात्र करता है ।

दूसरे प्रकारके सर्व साधारण लोगों के साहित्य की भी आवश्यकता है या यों कहिए कि उनको अपने कर्तव्यों का बोध कराने के लिए साहित्य भी अवलम्बन हो सकता है ।

आजकल भारत की व्यापक भाषा हिन्दी तथा अन्य प्रान्तीय भाषाओं में जितने समाचार पत्र, सामयिक पत्रिकाएँ और पुस्तकें निकलती हैं उन सबकी न केवल भाषा तथा विषय भी इतने उँचे दर्जे के—उनके लिए कठिन होते हैं जिसे सिर्फ शिक्षित ही समझ सकते हैं । क्योंकि दूर तक पत्र सम्पादन या लेखक अपने सामने

शिक्षित जनता को ही देखता है, वह लेख लिखते समय उन्हीं मनुष्यों के चित्त को आकर्षण करनेवाली शब्दशैली और विषय की बारीकी रखता है । जो लोग कि उस विषयसे कुछ परिचय रखते हैं उसकी रूचि उसी ओरको बढ़ती है जिसे शिक्षित लोग अपनाते हैं । यहाँ तक कि वह उसीमें अपनी उच्च योग्यता समझता है जिस ओर शिक्षितों की रुचि बढ़ती जाती है । फल यह होता है कि साहित्य इतनी बारीकी विषय की चर्चा करनेवाला होता जा रहा है जिससे सर्व साधारण को उस साहित्यसे साक्षात् लाभ विलकुल नहीं पहुँचता ।

विषय की बारीकी को और आलंकारिक भाषा को मैं बुरा नहीं बतलाता । पर सर्वसाधारण को इससे लाभ कुछ नहीं होता ।

सर्व साधारण के लिए तो ऐसे छोटे २ और मामूली विषय होने चाहिए जैसे १४—१५ वर्ष के बच्चों के लिए होते हैं । भाषा भी छोटे २ वाक्योंवाली और निहायत सादा हो । यह और अच्छा हो कि उसमें ऐसी छोटी-मोटी दिलगी भी होना चाहिए जिससे उनका उम्र विषयमें दिल लगा रहे, उत्रे नहीं ।

इन उपायोंसे सर्व साधारण भी अपनी उन्नति कर सकेंगे और वे अपने साथ हो लेंगे । ऐसा न होना चाहिए कि हम लोग उन्नति क्षेत्रमें बैठे हुए आगे भागे चले जाँय और ग्रामवासी या सर्व साधारण लोग हमारी ओर पीछे २ ताकते २ वहीं रह जाँय ।

एक आगम निवामी ।



चन्द्रसेन जैन वैद्य, चन्द्राभम-डरायह
 अनेक रोगों को एक दवा

आजकल बरतने २ अरसा २० सालसे स एन ऐसी दवाही रोजमे या तो जगतको आशीर्वाद दप हो जाय, एन ही छोटी शीशी अपने जेबमें रखनेमे सारा दवाखाना निग्रामा हो जाय-यानी अपनी त्रान्किटरी जेबमें एन जोटीसी शीशीमे अदर सीता दवाखाना आजाय। परदेसमें, रेलमें, जहाजमें, जगजमें, छोटे मोटे गावमें जहा जिस वक्त कोड़े बीमारी उमर आई उगी दम उमरा इलाज अपने जेबमें निकल पड़े। नई आसा निरासावे छोड़े लाते जान २० यदो बड़े दमिश्चको फाद मेंने यद “चन्द्राभम” पाया है।

इसमें बादी, बरहजमी, रस, क, खासी, दमा, सिन्दूर, तुलाम, आलना रर रोन वा छात्रा दरे, कर्ण रोग, दाद, खुजली, खाज, हैजा, सूख गठिया, पात, दाहम, वमनोरी, अतक्ति, नामदो, जहरी डक, फ्लीटा, अप्पुद्धि, प्रदर, रोग, सररी, वषागी, भुदके छाले, प्रमेह, रक्त मुह्रि, जडना, नाप (बुखार), न्हाहआ, हिनारी, दुग्दिक, गृध्रम आदि प्रायः सर्व रोगोरा पूरा २ दवाज है। मुख्योको एक शीशी अल्प्य फल रखना चाहिंदे। कामत अमीर गरीब सबमे छिमे थोड़ी रमी है खाने जगमेरी सरसीच दवावे साथ मिलती है। की० पी शीशी ॥१॥ तीन शीशी २) ४० दा० रने अलग।

इसा मेगानेता स्थर —

चन्द्रसेन जैन वैद्य, चन्द्राभम-डरायह. U. P.



अन्योक्ति पंचक ।

शोक ! शोक !! शोक !!!

(लेखक-छोटेलाल जैन मास्टर, खुरद ।)

कमल ।

वक और वाचाल अनाई इन बगुलोसे,
अपमानित हो, कड़ ! चित्तमे चिन्तित कैसे ?
चिन्ताकी तू छोड़ ईशसे वही त्रिनय कर,
चिरजीवे, ये मधुप मार्मिक आँर मुह्रदवग ।

मोर ।

वर्षाकी घनघोर घटाभे हो मदमार्ती,
निबल जीवको सता सता कर अती इतराती ।
मूर्ख मोर ! अभिमान क्षणिक सुख है यह तेरा,
रोवेगी निज चरण देख कहना सुन मेरा ।

मेघ ।

हे घन ! कर दे मूक पिकोंको हाथ, भले ही,
और बनाले दुष्ट मेण्डकोंको स्वस्नेही ।
इसकी चिन्ता नहीं किन्तु अशम यह तेरा,
करता आँ शशि टौक धुद्र राघोत उजेला ।

काक ।

रग सगृहमें भीरु पातकी वज्रक चञ्चल,
धिक धिक काक ! पुषीग निन्द्या मशकरे राल ।
यद्यपि काला रग बना कोकिल रग तेरा,
किन्तु कौन आँ वृद्ध शब्दमें भेद घनेरा ।

प्याज ।

धोकर बार अनेक अगम सगितारे जलों,
दे पेशर पुट शुक किया छाया शीतलम् ।
किन्तु न छोड़ी गन्ध अन्ध अविवेकी क्रेश ?
हाय ! अन्नमें रहा प्याज जैसे का तेरा ।

पुत्रीको माताका उपदेश

(ससुराल जाने समय)

विवाहादि प्रसंगोंपर घोटने योग्य, पृ० ४०
मूल्य सिर्फ १-॥ और ६) मकड़ा ।

मैनेत्र, दि० जैन पुस्तकालय-सुरत,

हा ! आज हम रेतें सभी,
उस तेज पुंज निधानको ।
आवे हजारे आपदा,
देगा महारा आनको ॥
हा ! जैन जाति सुपुत्र तेरा,
रत्न प्यारा खो गया ।
जो सुपद था, आदर्श था,
हा ! न्यायवारिधि उठि गया ॥ १ ॥
न्याय अर कानूनमें तो,
आप पूरे दक्ष थे ।
इसके बतानेके लिये ही,
न्यायवारिधि पदक थे ॥
हा ! दुःख अब उन सुक्तिर्योसे,
कौन धीर बँधायगा ।
वर धैर्यदाता रस धरासे,
न्यायवारिधि उठि गया ॥ २ ॥
मोह लपी मय पी गज,
धूमते सखार बन ।
सब हो सुखी, उनके भगाते,
आप ही तो सिंह बन ।
आकर पड़ा यह वष दुःख,
अब कौन उन्हें भगायगा ।
या, वादिगजका केसरी,
हा ! न्यायवारिधि उठि गया ॥ ३ ॥
शुगल पसी इस जातिरा,
उद्धार कती कौन था ।
यय ? हो गया उत्तर यही,
वह एक वाचस्पति तु था ।
गर्भार मोटे अब तु प्यारे,
यन्न वीन सुनायगा ।
धर्मोपदेश, सत्य वक्ता,
न्यायवारिधि उठि गया ॥ ४ ॥



जैसा ही उनका नाम था,
वैसा ही उनका काम था ।
आराध अर गोपालका,
निस्वार्थसे रसवात था ।
दास बन इस जातिका,
सब कौन ओत चहायगा ।
बेजा लगीया नायका हा ?
न्याय वाग्धि उठि गया ॥ ५ ॥

अमचमाता आज दिनकर,
जस्त हो, किंत भगि गया ।
अपने सुदिव्य प्रकाशे,
भाथि उजाळ करि गया ।
इस व्यथित हृदय मरोजको,
दे किरण कान पिलायगा ।
जो, प्राण ! था सर्वन्व भा, हा ।
न्याय वाग्धि उठि गया ॥ ६ ॥

उस जगत गुरुका क्या ? मनोहर,
गुह्य ये उपदेश था ।
निर्माण, सगे, मीर, निर्माण
बनो ये आदेश था ।
अ ! धाम्य उस स्वाधीनताका
बीज पाठ पढायगा ।
असंग गुंथाया देनगा
न्याय वाग्धि उठि गया ॥ ७ ॥

हस भेष्ट राज्य सर्वाङ्गभर,
पच बोरह आव ये ।
भामासे औत्त नेमार्थ,
निस्वार्थ भेष्टर जाय मे ।
गुह्यतर भूतल राजन भ,
सम्मान कौन दि हायगा ।
ना, राक्षस, म्पदेश सेवी,
न्याय वाग्धि उठि गया ।
वे, ना मीर इस लोहमें,
निज अस्त्र रते, मीर मन ।

जो प्राण ! थे इस जातिके,
देकर दया किंत रमि गये ।
मुदी हुई इस जातिकी अप,
बीज सुवा पिलायगा ।
अमृत स्वल्पी यचन दाता,
न्याय वाग्धि उठि गया ॥ ८ ॥
दुर्भाग्य ! जैन समाज ! क्या ?
अप रुदन करना ठीक है ।
उपकारिताका प्रगट करना,
ये पुरानी लीक है ।
उस गृह्य यह, गुह्यव्यंका,
अब कौन नाम चलायगा ।
एसा करेगा ते, न तो,
सच-याय वाग्धि उठि गया ॥ ९ ॥
यह छा ? मडल ! आज रोता,
पितृशोक वियोगसे ।
जय याद आती पडत छाती,
मीर बढ़ता हगतसे ।
आखें फटी रह जाति हैं हा ।
कौन उन्हें दिगायगा ।
न पकड हाय समाज नहीं,
सच न्यायवाग्धि उठि गया ॥ १० ॥
कुजविहारीलाल,
जैनविद्वान्ताविद्यालय-मोरेना ।

मंदिरोंके काममें लाने योग्य

पवित्र

काश्मीरी केशर

वर्षभरके लिये अभीसे मंगा लीजिये,
क्योंकि इस वर्ष उपज कम होनेसे पवित्र
केशर वर्ष भर तक मिलना कठिन है ।
मूल्य १।) डेढ़ रुपये की गोळा ।
मेलजर.-दि० जैन पुस्तकालय
नंदावाजी-सुरत ।



सहायक-पंचक ।

फिशाकका व्याह ।

(प्रहमन)

(१) अधिकांश लेखक इस बातको नहीं जानते कि उनके लेख सर्व साधारण नहीं समझ सकते, वे सिर्फ उन्हीं मनुष्योंको सामने रखकर, जो कि शिक्षित-अपनेको नेता मानने-वाले हैं, लेख लिखते हैं ।

(२) दिनभर मुस्त बैठे रहनेवालोंके लिए यह अवश्य कहना उचित है कि 'बिना काम किये कोई सुखी नहीं रह सकता ।'

लेकिन इसका मतलब यहाँ तक नहीं है कि, दिनों रात साधारण काममें इतना पैसे जाना कि जिससे अपने आपकी-अपने कर्त-व्यकी-अपने अनुभव और सदाचारकी वृद्धिकी भी याद न रहे । ऐसे मनुष्योंको यह बात ध्यानमें रखना चाहिये कि "कामके लिए जीवन नहीं बल्कि जीवनके लिए काम है ।"

(३) जिस तरह तुम अपने नौकर पर हुकूमत करनेमें हिचकिचाते हो कि कहीं यह हुकूम-अदलील कर बैठे, विश्वास रखो, वैसे ही यह भी हुकूम-अदलील करनेमें तुमारी नाराजगी भीतर ही भीतर हिचक रहा है ।

(४) याद रखो, नौकरकी वृद्धि नौकरकी ही वृद्धि नहीं है किन्तु तुम्हारी भी वृद्धि है ।

(५) जब तक कि तुम किसी विषयमें इतने लित न होगे कि अपने आपकी भी तुम्हें खबर न रहे तब तक तुम उसके अच्छे विद्वान् न हो सकोगे ।

दो रंगीन नकशे ।

अंदाज द्वीपका नकशा ।=)

नवतत्त्वके भेदका चित्र

(यमालुपु और पदमेका स्वरूप सहित) -

भौतिकी पना-

मैनेजर-दि० जैन पुस्तकालय-मुम्बई.

रात्रिका समय है । मन्द मन्द सुगन्धित पवन चल रही है । श्यामाकर (चन्द्रमा) की प्रतिबिम्ब मेघोंमें गुस्कर यत्रतत्र अपनी प्रभा (ज्योत्स्ना) फैला रहा है । इसी समय एक गृहस्थ रमणी अपने कमरेमें बैठी हुई, न मालूम किम शोकसागरमें डूब रही है । इतनेमें कहकरसे आवाज आई—“अरी भिन्नाइ तो मोल !”

रमणीने चुपचाप दरवाजा खोल दिया । यह आवाज देनेवाला रमणीका पति था ।

इसका नाम नन्मूल और रमणीका नाम बनासोनाई है । नन्मूलकी दो कन्याएँ हैं ।

नन्मूल—(रमणीसे) प्रिये! मैं सब ठीक कर आया हूँ, केवल तुम्हारी आज्ञाकी ही कमी है ।

बनासो०—मैं आज्ञा क्या दूंगी ? जो तुम्हें स्वे सो करो ।

नन्मूल—मैं रत्नफरोरी (बड़ी लड़की) की सगाई पक्की कर आया हूँ । दमहजार रुपये नगद, और पाँच हजारका गहरा ढेनेंके के लिये तैयार है । वही, तुम्हारी क्या गय है ?

बनासो०—मैं रत्नफरोरीका व्याह चैन-मिह ही के माथ कलंगी, क्योंकि वह रत्नके लिये बहुत ही योग्य घर है, उसकी अम्मा भी ठीक (१८ वर्षकी) है । अहा ! ऐसे सुन्दर जवाइ (दामाद) का मिलना की क-दिग है ।



नन्मड—(स्वागत) अब भी चेतसिंह यहाँ आता है, मालूम पड़ता है कि, उसीने स्नानो बहना रक्खा है। (गुस्सा होकर) वह क्या पड़ा लिया नहीं है? बेरिम्गी पास ही है और हाईड्रो-जका नग है। पागो रूपे पहचानी जाता है। और क्या चाहिये? नहवीके मुँहमें कुछ कभी है?

इतनी कह नन्मड जानकीप्रसादक म कानपर गया जोर आवाज दी—“जानकीप्रसादजी, जो जानकीप्रसाद” “जानकीप्रसादजी है क्या?”

जानकीप्रसाद—कोन है?

नन्मड—अभी मैं हूँ नन्मड।

जानकीप्रसाद—आइये बाबूसाहब! कहिये कुछ। यहाँ सब ठीक है, केवल ज्योतिषी जोको बुठाकर दिन ठीक करना है।

नन्मड—अच्छ आप ज्योतिषीके घर जाइये! उनको बुठाकर मेरे घर आइयेगा।

जानकीप्रसाद—“ठीक है,” कहकर

जानकीप्रसाद ज्योतिषीके घर पहुँचे और आवाज दी—“ज्योतिषी! ओ ‘ज्योतिषीजी!’”

ज्योतिषी—हौन हे भाई?

जानकी—अभी मैं हूँ जानकीप्रसाद।

ज्योतिषी—ओहो! किम लिये तकनीक आइये? आइये—

जानकीप्रसाद—बाबू नन्मडकी नडकी के बिकारकी बातच रही है उन्होंने आपको बुद्ध किया है।

ज्योतिषी “अच्छा मैं आता हूँ, बाबूजीसे मेरा जुहार कहियेगा।” इतना कह ज्योतिषीजी अन्दर चले गये।

पाठक! अभी तक आप जानकीप्रसादसे अपरिचित हैं। यह कन्याविजयका दण्ड एक मतउरी बार हैं।

x x x

(२)

(एक पगपर स्नानकनेरी और चेतसिंह ये हुए बातचीत कर रहे हैं।)

चेतसिंह—मने सुना है तुम्हारा ब्याह एक बुद्ध बेरिम्गीके साथ होनेकी तयारी की जा रही है।

स्न०—किसने कहा?

चेतसिंह—तुम्हारी गेनी बहन कलक-माता रहती थी।

स्न०—(गले लगकर) चेतसिंहजी, आप ही इस तमाममें मेरे सब कुछ हैं। मुझे इस विपत्तिसे बचाइये, नहीं तो मे प्राणनो दुँगी।

चेतसिंह—(रूपालसे आसु पोंडकर) स्न०, काँट चिन्ता नहीं, मैं तुम्हारे पिताको समझाऊँगा, इतना कह चेतसिंह वहाँसे चउदिये। उमरेसे बाहर पैर रगा ही था कि, नन्मडने हाथमें एक पिन्गोल लेकर गुम्मेसे कहा

“चेतु! यहाँ कैसे आये?”

चेतसिंह—रोजरी तरह आज भी आया हूँ।

गान आपका यह प्रश्न केमा?

नन्मड—उम दिन तुमसे कुछ दिया था कि यहाँ भूत कर भी न जाना।

चेतसिंह—भूतकर नहीं, चरकर ही



आया हूँ, घबड़ाइये नहीं। क्या बात है ?

नन्मल—“क्या कहा ? देख ! यह पिस्तौल तेरा खून किये न रहेगी, कहकर चेतसिंहको एक गोली मार दी। चेतसिंह जमीन पर गिर पड़ा; और “हाय, मर गया” कहकर चुप हो रहा।

पिस्तौलकी आवाज सुनते ही रामस्वरूप कमरेमें आ गया। रामस्वरूपने चेतसिंहको जमीन पर पड़ा देखकर उसकी नाड़ी ट्योल कर कहा—“चेतसिंह तो मर गया !”

यह सुन नन्मलकी पतलून बिगड़ गई। बोलना बंद होगया और आँखोंकी पुतलीयाँ ऊपर चढ़ गईं। अब क्या था, इतनेमें बतासो और रत्नकटोरी भी भीतरसे आ पहुँची, सबके सब चिल्लाहटके साथ रोने लगे।

नन्मल—(घबड़ाकर) अरे चुप रहो, नहीं तो अभी अपन सबके सब पकड़े जावेंगे !

रामस्वरूप—(चिल्लाकर) “हा ! चेतू” “चेतू” “ओ चेतू”

नन्मल—अरे भाई ! शोर मत करो, कोई उपाय बतलाओ, नहीं तो मैं मारा जाऊँगा।

राम०—इन लोगोंको यहाँसे हटाओ, इनके चिल्लाहटसे पुलिसको खबर पहुँच जायगी—

नन्मल—(हाय जोड़कर) तुम लोग यहाँसे जाओ; घरमें जाकर रोओ; नहीं तो मैं मारा जाऊँगा।

राम०—मुझे इनाम दिया जाय तो काम ठीक कर सकता हूँ।

नन्मल—अरे रामस्वरूप ! इनामकी क्या कहता है ? तू इस आपत्तिसे मेरे प्राण बचाओ तुमारी कसम, इनाम अच्छा दूँगा।

रामस्व०—अच्छा, आप यहाँसे जल्दी चले जाइये।

नन्म०—तुम क्या करोगे ?

राम०—मैं चेतसिंहको चुपकेसे तालाबके किनारे गाढ़े आता हूँ।

नन्मल—(कांपता हुआ) अच्छा, मैं जाता हूँ, होशियारीसे काम करना भैया ! देख मैं खूब इनाम दूँगा।

रामस्वरूप चेतसिंहको तालाबपर ले गया। पाठक ! आप चेतसिंहसे अपरिचित हैं।

यह नन्मलका चलता पुर्जा नौकर है। चेतसिंह शहरके एक बनानका पुत्र है। जो सदाचारी और होशियार था।

+ + +

(३)

रत्नकटोरी अपने कमरे सो रही थी। कनकमाया आगई और कहा—“जी जी” ओ “जी जी,” माँ बुलाती है, जल्दी उठ !”

रत्न०—(करवट लेकर) क्या है ?

कनक०—छोटी थाने तल, माँ बुलाती है।

रत्नकटोरी—मुझे भूल नहीं है।

कनक०—जीजी उथतो, मुन, तुमाली छगाई एक छाहकं साथ होगी। तू मैं बनोगी, जीजी ! तू मैं बनोगी।

रत्न०—क्या बकनी है पगली ! किसे कहा मैं मैं बनूँगी ?

कनक०—हमसे माने कहाथा कि जीजी बनदी ! तू छोटी थाने तल, माने बुलाया है।

रत्न०—कनक कैसी होगई है। तू माने



कह दें गुझे भूँन नहीं है, मैं रोटी नहीं खा-
ऊंगी ।

कनक०—अर्था; मैं माँ तो भोजती हूँ ।

[स्थान—तालाबका किनारा]

रामस्वरूपने गड़वा खोदकर चेतसिंहको
उठाया ही था कि, चेतसिंहने गंभीर स्वरसे
कहा—रामस्वरूप ! क्या जिंदा ही गाढ़ दोगे ?
इनाम क्या टहरा लिया है ? रामस्वरूप ! क्या
करते हो ?

रामस्वरूप—(भयसे काँपता हुआ) भा
—भा—डूँ—चेतू—भाफ—क—क—गे ।

चेतसिंह—दरनेकी कोई बात नहीं; मैं
तुमको एक पत्र लिखकर देता हूँ, उसे स्तन०
को ही देना, अन्य किसीको नहीं ।

रामस्वरूप—अ . अ ... च—मैं दे—दे-
दे दूँगा ।

चेतसिंहने पत्र लिखकर रामस्वरूपको
दिया और कहा—जाय स्तन०को देना ।

ठीक, कहकर रामस्वरूप सीधा परको
बग आया और कनकमालाके हाथमें पत्र देकर
कह दिया कि, इसको अपनी जीजीके हाथमें
देना और किसीको नहीं । कनकमालाने स्तन०के
कमरेके निरुद्ध पहुँचकर आवाज दी—“जीजी !
निवाड़ तो सोल !”

स्तन०स्टोरीने निवाड़ खोल दिये । कनकके
हाथसे पत्र पाकर स्तन०स्टोरीने विस्मयमें पत्रको
खोलकर पढ़ा, उसमें इस प्रकार लिखा था—

स्तन,

‘जिन्ता न करना’ मैं अभी जीवित हूँ।
तुम धैर्य धरो, धैर्यसे सब कार्योंमें सफलता
प्राप्त होती है । स्वयम् ॥ चेतसिंह ।

(४)

नन्मूल रबीवारकी लुट्टीमें अपने मित्र
कैलाशचन्द्रके घर पर चौपड़ खेलने जाया
करते हैं इसलिये चेतसिंहने यही अरमर स्तनमें
मित्रनेका ठीक समझा ।

एक दिनकी बात है कि नन्मूल उसी
तालाबके किनारेके रास्तेसे कैलाशचन्द्रके घर
जा रहे थे कि इतनेमें उनके सामने रौद्रवेश
धारण किये हुए एक पिशाच आ गया । इसे
देखकर नन्मूलको होश न रहा, गला सूख
गया, चीत्कार करनेकी चेष्टा की; परन्तु वह
प्रयत्न व्यर्थ हुआ । उसने पहिलेहीसे मुँह बन्द
कर लिया और कहने लगा—मैंरें डालता हूँ।
नहीं तो मैं जो कहूँ उसे कर ।

नन्मूल—(भयसे काँपता हुआ)
य ह—नाओं तु तु—तुम कौ कौन हो ?

पिशाच—मैं चेतसिंह हूँ । मर कर
भूत हुआ हूँ ।

नन्मूल—अच्छा, जो जो—जो—तुम क-
क रहोगे—व व यही—क—क रहेंगे ।

पिशाच—करेगा क्या, करना ही पड़ेगा ।

नन्मूल—अ—अ—च—न—न—जल्दी कहो
मैं—मैं—न—न—नगर—कहूँ—रहूँ—गा ।

पिशाच—अच्छा कैरोंगे तों कैरो ।

नन्मूल—“ अच्छा, क—क रहूँ—”

पिशाच—(बात फाटकर) क—क ... क्यों
कैरेंगे हों ? इतनापि लिखना पड़ेगा ।

नन्मूल—(स्वगत) सैर जान बची । भूत

स्वयम् लिखाकर ही गया करना ! कुछ कर
तो सकता नहीं, खेर लिखे देता हूँ । (प्रसन्न)
अच्छा, क्या लिखूँ ?



પિશાચ—યૈહ લિલોં કિં “ મેં ચેત-
સિં કૈં માય અપની વડીં લડકીંકા વ્યાહ
કહ્લગાં, ઔર કિસીંકે સાંચેં નહીં । ” ઉપકે
નીચેં ઔપેં હસ્તાક્ષર કરોં !

નન્દમલકો એમા હી કરના પડા ।

પ્રિય પાટકો, ચેતસિંહકા રત્નકટોરીકે
સાથ વિરાહ કર દિયા મયા તંવ ઉન દોનોં
(ચેતસિંહ ઔર રત્નકટોરી) કી આનન્દકી
સીમા નહીં રહી । દોનોં સાંસારિક સુલોંકો
વાધા રહિત અનુભવ કરને લગે । ઇમ સંબંધસે
નન્દમલકી નાહુશ થે, પરન્તુ અવ વે અત્વચ્ચ
રહને લગે । વે દિન પરદિન સુલેતે મયે ઔર
અંતમેં કુઝ સમય ચાદ શરીરાન્ન કર મયે ।

પ્રિય પાટકો ! ઇસ “પ્રહમન” સે આપકે
હૃદયમેં અવશ્ય કુઝ અપર પડા હોગા ! ઇચકા
અસર તમી સફલ હોગા, નજ કિ આપ અપની
શક્તિકે અનુમાર, આત્મી જાતિમેં પ્રવિષ્ટકુરી-
તિયોંકો વન્દ કર્મકા પ્રયત્ન કરોંગે ।

આંશા હૈ હમારે મુઝ પાટકરૂના નિયમ
તો અવશ્યહી કરોંગે કિ—“ હમ વેટી નહીં
વેચેંગે ઔર જો કોઈ વેટી વેચેગા, જો કોઈ
વેટીવાલેકો રૂપયે દેગા, તથા જો કોઈ ઇમ
કાર્યમેં સદાયતા દેગા, ઉમકે યહાં વ્યાહ-
મે જીમને નહીં જાવેંગા । ”

યદિ આપ મુઝ અજ્ઞાનીકેં કહને પર
રૂંતની કુશ કરોંગે તમી મેં અન્ને ઇસ લેત્તમેં
અપનેકો સકલિમૂત માનુંગા; ઔર તવ મેં અન્ને-
કો હરસે વ્યાહા રૂવાયે સમજુંગા, નજ કિ મુઝે
અથવા “દિગંધર જૈન” કે સંપ્રદાયકો એક
કાર્ટ દ્વારા સૂચિત કરોંગે કિ, હમને એમા પ્રગ
કિયા ।

ધન્યકુમાર જૈન વિદ્યાર્થી

સ્વા. મહાવિદ્યાલય—કાશી

અમારી યાત્રા.

કાગળ માસમાં દહોદમાં મળેલી સંયુક્ત
દિ. જૈન કોન્ફરન્સમાં સભાપતિ તરીકે અમેને
નીમવામાં આવ્યાથી અમે કુટુંબ સહિત તથા
અમારા ભાણેજ યુનીવાઇઝ ઝેરેચંદના વિધવા
જડાવખાઇ એ પ્રસંગે દહોદ ગયા હતા અને
ત્યાંથી પછી અનેક યાત્રાઓ કરવાને સુપ્રસંગ
અમેને પ્રાપ્ત થયો હતો, જેમાંની કેટલીક જાણવા
ચોગ્ય હકીકત અને પ્રકટ કરીએ છીએ.

દહોદમાં ૬ દિવસ (તા. ૨૨ થી ૨૭)
દરમિયાન પંચકલ્યાણીક ઉત્સવ અને કોન્ફરન્સમાં
ભાગ લઇ ૨૫૦) કોન્ફરન્સ, ૧૦૦) પાંચ
સંસ્થાઓ, તથા ૫૦) સમરેક છલોંદાર દુડમાં
આપ્યા તથા સરકારી કન્યાશાળાની મુલાકાત
લઇ ત્યાંની ૧૫૦ જાળકીઓને દપડાં વગેરેનું
દાન આપ્યું. અને ચતુર દહેર વીસપથાનું
છે અને નવું દહેર તેરાપથી આમનાયનું છે
દશા દુમકની વરતી આશરે ૩૦૦ ની છે.

તા. ૨૭ થી એ દહોદથી નીકળી વડોદરા,
વીરગામ, સીંદોર થઇ તા. ૨૯ થી એ પાસી-
તાણા જઇ રહેતી ધર્મશાળામાં મુકામ ધર્યો.
અને આઠ દિવસ રહી શેતુન્ય તીર્થની પયાયા
કરી તથા તીર્થની વ્યવસ્થા તપાસી, તે જાણ્યું
કે દરેક કાર્ય યુનિમ ધરમચંદની દેખરેખથી
ઉત્તમ રીતે થાય છે. કાષ્ઠખતુ યાત્રીને કાષ્ઠખ
તકલીફ પડતી નથી. ગામના દહેરાસરમાં
મુનીમજીએ એવી તો સુદર રચના કરી છે
કે દહેરામાંથી ખમતુ મમતુ નથી. દરેકજ
સારે ધામધૂમથી આસતી હોય છે. દાક્ષમાં
બે મોંઝાર બનાવેલા છે તેમાંના એક મારે ૩૫
૧૦૦) જડાવખાઇએ આપ્યા.

પાલીતાણાથી તા. ૪ થીએ સારે ભાવન-
ગર મયા અને ત્યાં ૧૦ થીએ વડી ૧૧ થીએ
પોધા મયા. અને દાંડીયા, ગુજરાતી અને
ગોપાલનું એમ ત્રણ દહેરા પ્રાપ્તી છે, તા.



૧૨ મીએ વિદ્યાનદેસનામીના દર્શન કર્યા અને ત્યાંના ચોતરો તથા દહેરાનોઃ છણોદાર કરી આરસ બેસાડવા માટે રૂ. ૧૫૩) આપવા સ્ત્રી કાર્યુ. એજ સારે ભાવનગરની પાઠશાળામાં સમા થઇ પરીક્ષા વગેરે લેવાઇ, જેથી સતેષ પામી ૨૫) પાઠશાળામાં બેઠ આપ્યા. તા. ૧૩ મીએ ભાવનગરથી નીકળી ધોળા જંકશન થઇ તા. ૧૪ મીએ જુનાગઢ પહોંચ્યા અને તા. ૧૫ મીએ પહાડપર ચડી ગીરનારની પાંચે દેવના તથા સદસાવન પણ દર્શન પૂજન કર્યા. અને એ સુખ્ય ૧૭ તથા ૧૮ મીએ પણ પહાડની યાત્રા કરી. તહેરીના મંદિરમાં સાંજના દીવાજાતીની સગણ નથી તે ચવાની જરૂર છે. ધર્મશાળાની આસરી તથા ચોક આગળ પથ્થર બેસાડવાની જરૂર છે કેમકે એ જગ્યાઓએ માટી અને રેતી વિશેષ હોવાથી માનીઆને રસોઇ વખતે ઘણીજ હરકત પડે છે. વળી સ્ત્રી તથા પુરુષોને ન્હાવા માટે જુની જુદી એકેક ચોરડીની જરૂર છે. વળી કુવાની ચારે બાજુએ પથ્થર જડાવવાની પણ જરૂર છે કેમકે એ વિના ધણોજ કાદવ થાય છે અને જીવ જંતુ હિંપત થાય છે. તા. ૨૧ તથા ૨૨મીએ જુનાગઢના મંદિરમાં દર્શન પૂજન કર્યા. કિરોતો, પાવ, નવગન કૂવો, તળાવ, સંઘાર બાગ વગેરે જોયાં. દહેરાસરની વ્યવસ્થા સારી છે. કારખાનામાં હિસાબનામું વગેરે તપાસતાં તે બરાબર જણાયું. આગળ જેવો અધિર કારખાનર નથી. હાલ સર્વે પ્રકારે સુખ્યવસ્થા છે. સુનીમ રૂબરૂ દાંડ લાયક, પ્રમાણિક તથા ધર્મોભા છે. દરેક કામ ધર, પ્રમાણે કરકસરથી કરે છે. ની ધર્મશાળામાં ૧૨ ચોરડાઓ તૈયાર થયા છે અને બે બંગલા પણ તૈયાર થયા છે. જેની બાજુમાં એક બંગલો, જડાવખાંડએ પોતાની છત્રી ખડેન કીકીના રમણુરે બાંધવા રૂ. ૧૦૫) આપવા કમલ દર્શાવી તથા તહેરીના મંદિરની તરફે ચોક્કસ આરસ જડાવવા અંગ્રેજોએ પગાનગી ગાળી. સુનીમના કામ સુખ્ય

૨૩) ખગાર ઓઢો છે. જે વધારી આપવાની જરૂર છે. વળી તહેરીપર દેખરેખ સાર જવા આવવા માટે એક જાથુક ટાંચાની જરૂર છે. તહેરીની ધર્મશાળાની વ્યવસ્થા પણ સારી છે. તા. ૨૪ મીએ જુનાગઢથી નીકળી મહેમાણા થઇ તારંગા આગ્યા અને પગે ચાલી પહાડપર ગયા અને સર્વેએ આનંદથી યાત્રા કરી તથા ૨૭ મીએ સિદ્ધશીલા તથા કોડરીલાની યાત્રા કરી. અત્રે ચૈત્રી પુનેમની યાત્રા સારી બસાઇ હતી. આશરે ૩૦૦ યાત્રાળુઓ હતા. જલ્લયાનાનો વરવોડા નીકળી અગિયેક થયો તથા સર્વે મળી સંઘ જમાડયો હતો. અને સુનીમ નાનચંદ પદમશી લાયક છે અને દેખરેખ હિસાબ પણ સારો ગણે છે. સુનીમના હાથ નીચેના માણસ રામચંદ મેજ નિયમ પૂજન કરે છે અને સાત્ર વાંચે છે. આરતી પણ રોજ ધામધુમથી ઉતરે છે. ખંધે દહેરે તથા બે મહેરીઓ ઉપર પ્રસાદ પૂજન બરાબર થાય છે. સિદ્ધશીલા તથા કોડરીલાના દહેરીના છણોદાર માટે તો સોઢાપુરનાડા શેઠ હીરાચંદ અમીચંદ વગેરે તરફથી મંજુરી મળી છે, જેમાં બેસાડવા બેનરમાંથી નીકળેલી બે કાચેત્સગી પ્રતિમા કે જે સં. ૧૧૯૨ ની છે તે વિરામગાન કરનામાં અવનાર છે. વળી આપણા મોટા દહેરાની બાજુમાં ખીખા બે દહેરાં છે જેમાં પદ્મપ્રભુનું સં. ૧૧૬૩ તું અને વાસુપ્રભુનું ૧૬૧૪ તું છે જેનો છણોધાર કરવા માટે જડાવખાંડએ કમલ તથા સંભવનાથના દહેરાના સભામકપમાં આરસની લાદી બેસાડવા અંગ્રેજોએ પરમાનગી આપી હાલનું તારંગાનું રોશન હવે થોડા દિવસમાં ગદસાઇ ટીખા નામનું નવું રોશન થનાર છે, જ્યાં ધર્મશાળા બંધવા માટે જમીન લેવાઇ છે અને ચોરડીઓ તૈયાર થાય છે. જે કાલ બાદને પોતાના નામની ચોરડી બંધાવવી હાય તો સુનીમને લખવું. તારંગાજી પર ધર્મશાળાની ૩૦ ચોરડી અને પણ બંગલા જેમ ૧૫ ચોરડી



છલું હાલતમાં છે તે સુધારવાની તથા નવી ધર્મ-
શાળા બાંધવાની જરૂર છે. આ તીર્થેના વહો-
વટ સારો ચાલે છે, જે માટે એની એનેછંગ
કમીટીન ધન્યવાદ થતે છે

તારંગાશયી, તા. ૧૦મી એ નીકળ્યા મે-
સાણા અને અમદાવાદ થઈ તા. ૧૧ મી એ
ખેપેરે સુખશાંતથી અંગે મું માઈ આવી પહોંચ્યા.

નવલયંદ હોરચંદ ઝવેરી, મુંબઈ.
નોટ-પોતાના વડીલ ભાઈ માણેકચંદછની માફક
હવે શેક નવલયંદછ પણ આપણું જાહેર કાર્યોમાં
ભાગ લેતા થયા છે, જે જાણી આગાશ પાંચ-
કાને આપાનંદ થશે અને એજ સુખ્ય શેક
નવલયંદછ પોતાની જાણીબની છંદગી પોતાના
વડીલ બંધુની માફક હવે સમાજસેવાના કાર્યમાં
ઉત્સાહતર થઈ રૂપે સુખ્યરોજ એવી આશા
રહે છે. આ શેકના ભાણેજ રવંગવાસી શેક
સુનીલાલ ઝવેરચંદના વિધવા જગત્યાઈ પણ
ધર્મશ્રદ્ધાળુ હોવાથી વાગ્યાર ધર્મકાર્યોમાં
ભાગ લઈ રહ્યા છે અને દાન પુણ્ય પણ યથા-
શક્તિ કર્યોજ કરેછે જે જણાવતા અમને આનંદ
થાય છે.

સંપાદક.

અસિદિપુરાણ ગ્રંથ

પૂરા છપ મચ્યા ।

જો મગવજિનસેનાચાર્યકૃત
બહા મારી ગ્રંથ મૂલ સહિત સરલ
હિંદી ભાષામાં વહુત દિનસે છપ
રહ્યા થા વહ પૂરા હો. ગયા । મોટે
ઔર મજબૂત કાગજપર વહેંટાઈપ-
મેં છુલે પત્રોંપર છપા હે । ન્યોંછાવર
અમી ૧૬) સોલહ રૂપે હી રચવી
હે । ડાકલર્ચ અલગ લમેગા । જિનહે
વાહિયે વે જીંપ્રતાસે મેંગા લેવેં ।

મહારામ જૈન

મહારામ-દંદોર.

મહાવીરજીકે મેલેકા દૃશ્ય ।

ગત ચૈત્ર શુક્લા ૧૧ સે વૈશાલ કૃષ્ણા
૧ તક સદાકી માંતિ હસ વર્ષ મી જયપુર
રાજ્યાન્તરગતિ ચાંદણગાંવમેં આતિશય ક્ષેત્ર
શ્રી મહાવીરજીકા મેલા હુઆ । અનુમાનસે
એક લક્ષસે અધિક જન સંસ્થા થી ! જો
પ્રતિ વર્ષ દિન દૂની ઔર રાત ચૌગની બઢ
રહી હૈ । ચીં તો ચારોં ઔરકે માઈ હસ મે-
લેમેં આતે હેં કિંતુ જયપુર, વેહલી ઔર
આગરાકે વહુત યાત્રી આતે હેં । હસ ક્ષેત્રકા
હાલ ' જૈનમિત્ર ' વર્ષ ૧૬ કે અંક ૩ મેં
' તીર્થયાત્રા-શ્રી મહાવીરજી ' કીર્ષક લેસ
દ્વારા સમાજકો માલસ હોગયા હૈ ।

મહાવીરસ્વામીકી પ્રતિમા કેસી મ-
નોમ્ય ઔર સૌમ્ય હૈ હસકા જ્ઞાન દર્શકકો
હી હો સકતા હૈ । કિંતુ સેદ હસ વાતકા
હૈ કિ હસ મેલેમેં યાત્રીયોંકો પૂજન તો વ્યા
દર્શન મી કઠિનતાસે મિલતે હેં । જો પૂજન
કે અધિક પ્રેમી હોતે હે વે શાસ્ત્રકે વિરુદ્ધ
રાતકે ૨ યા ૩ વજેસે પ્રક્ષાલ આદિ પ્રાર-
મ્મ કરતે હેં । શેષ દિનમેં વહુધા યાત્રી (પુ-
રુષ બ સ્ત્રી) યા તો ગંજપા આદિમેં સમય
ધિતાતે હેં યા મેનાર્જીકે મંડ ગીત સુનતે હેં
ઔર ડનકા નાચ દેખતે હેં તથા ધર્મ ઉપર
મૂમતે હેં । હસકે કહેમેમેં કોઈ અવ્યક્તિ ન
હોમી કિ યહાં યાત્રી લોક જાતે તો પુણ્યો-
પાર્જન વરનેકે ટિપ હેં કિંતુ ડનમેં અધિક-
તર પાપોપાર્જન હી કરતે હેં ।

માગોદવસે હમ વર્ષ મેં મી હસ પુણ્ય

भूमि पर मेलके समय पहुँचा । इस मेलका कुछेक चित्र में आपने सम्मुख रखता हूँ जिससे आप अपनी समाजकी अज्ञानता और क्षेत्रके प्रबंधका कुछ २ हाल जानेंगे । गुंडे रोद हैं कि गत वर्ष भी 'दिगंबर जैन' में इसी मेलके प्रबंधके विषय पर वावू मदनलाल जैन आगरा के समाजकी नेताया था किंतु देरानेसे मालूम हुआ कि उस लेखने समाजने कुछ भी लाभ न लिया और प्रबंध पैसा का बँसा ही रहा ।

मै ब्रह्मोदरजीके दिन इस पात्रि क्षेत्र पर पहुँचा । मंदिरके चारों ओरकी बड़ी भारी धर्मशाला यात्रियोंसे भिरी हुई पाई । कुछ डेरे भी लगे देता है भी प्रबंधक (भट्टारक) के पास एक डेरेके लिए गया । मेरे सामने एक और भाईने भट्टारकसे डेरा मागा, उन्होंने पुरी तरहसे यह जवाब दिया, "क्या तुमने मेरे पास डेरा गेज दिया था ? जो मेरे पास थे सो दे दिए ! .." गुंडे यह देखकर बड़ा आश्चर्य होता है कि भट्टारकजीके कहनेके बाद कई डेरे लगे, न मालूम वे कहाँगे जाए । पीछे जानेवाले हजारों यात्रियोंको पासके गर्माचेही आश्रय हुए । इस मात्र भूप, मेढ़ और आधीसे जो जो दुःख लोगोंको उठाना पड़ा वह कहते नहीं बन सकता ।

दुःखाने—खान पान आदिकी वस्तुएँ मिलनेके लिए धर्मशालाके हातेके बाहर चौ-उमें रेतगे दुकानें लगी थीं । अत्यंत आना-पन्नने धूल उटनेके कारण सब चीजें खराब

हो जाती थी और वही धूलमिश्रित सामि-शी यात्रियोंको खानी पड़ती थी । इतना ही नहीं यहाँ हरकोई हर तरहकी दुकान लगा सकता है, किसीको कुछ रोक-टोक नहीं है । मैने देखा कि कई यवन (मुसलमान) तमोलियोंकी दुकानोंपर हमारे भाई मजेसे पान खा रहे थे । यहाँ तक सुना है कि गय जैसी अपवित्र वस्तुकी भी दुकान यहाँ लगी थी । जिसका कुछ लोगोंने बहुत विरोध किया था । प्यारे भाइयो ! प्रबंधक-के प्रबंधका ज्ञान इससे करिए ।

प्याऊ—इतने बड़े मेलमें धर्मशालाके हातेके भीतर एक भी प्याऊ नहीं थी । पानीकी यह दगा देखकर ला० उम्मेदीलालजी आदिने ७५।) का चढ़ा करके स्वयं ही प्याऊ बँटाई थी ।

वास्तव्य—प्रेम या वास्तव्य तो जैन समाजमें दूतक भी नहीं गया है । प्रतिदिन टहरनेके ऊपर मारी झगड़े होते थे । गुना है कि एक दिन पुलिसमेनने किसी यात्रीको एक लात मारी वह भट्टारकजीके पास गया किंतु उन्होंने 'मेलमें क्यों आते हो तुम्हें किमने बुलाया आदि' शब्दोंसे ही उस दुखी यात्रीका सत्कार किया ।

मैना, गृजर—इन नामकी दो जातियाँ हैं । ये महावीरस्वामीको अपना इष्ट देव मानते हैं और इनके मनमें स्वामीकी बड़ी श्रद्धा है । मैना नामकी जातिके स्त्री पुत्र्य बालक सब इस मेलमें चतुर्दशीसे आते हैं और पतिपदा तब इनकी खूब धूम रहती



है। ये असभ्य जन मंदिरजीमें भंड गीत गाते हुए और 'महावीरके लिंगकी जय' बोलते हुए जैसेके तैसे घुस जाते हैं। प्रत्येकके हाथमें कोई न कोई हथियार या लठ और कुछ नहीं तो पेड़ोंकी डालियां रहती हैं। ये लोग इतने अंधे होकर दौड़ते हैं कि सामनेवालेको भागना पड़ता है। जैसी अशिक्षित जाति यह है और जैसी स्वामीकी श्रद्धा इनमें है वैसी और किसीमें न होगी। यदि प्रयत्न किया जाय तो शिक्षा द्वारा इस जातिके लक्षों जन सच्चे जैन हो सकते हैं।

अविनय-इस मेलेमें अविनयका तो कुछ कहना ही नहीं है। उक्त असभ्य जातियाँ तो मंदिरजीमें जुते पहिने घुसती ही हैं किंतु मांसाहारी यचनादिक भी वे-रोकटोक जुते पहिने प्रतिमाकी ओर पैर करके मंदिरजीमें खूब मौज उड़ाते हैं। अपने भाई स्त्री पुरुष भी विनयको त्याग कर निर्लज्ज व्यवहार करते हैं। हमें शोक है कि छापेके विरोधी महा विनयी जैनी भी ऐसी बातें स्वयं देखकर कुछ नहीं नेतते।

उपदेश-हमारे विद्वान उपदेशकोंने (पंडित, बाबू और त्यागी) जाने क्या समझ रखा है कि उनमेंसे एक भी मेलेमें नहीं आते। जिनका यह सिद्धांत है कि संसारमें असंगम्य तो कुछ है ही नहीं और इस शब्दको कोपसे निकाल देना चाहिए वे सज्जन

भी इस ओर लक्ष्य नहीं करते। खेद है कि मेलेमें शास्त्रमभा तक नहीं होती। इस वर्ष कुछ उस्ताही युवकोंका इस मेलेमें समागम हुआ था, जिनमें मुख्यकर यह थे-महासभाके आ० उपदेशक मुंशी लट्ठरमलजी, 'जैन मार्चंड' के संपादक लाला मिश्रीलालजी सोमानी, आगरेके बा० मंगीलालजी, कोसीकी सभाके मंत्री ला० रतनलालजी, गुनाके श्रीमान् पं० मूलचंद्रजी, जिनधर्मसंरक्षणी सभा आगराके मंत्री ला० हजारीलालजी, प्रेमी हजारीलालजी, ला० उम्मेदीलालजी आदि। आदिके ४, ५ महाशयोंने मेलेमें सभा करनेके बड़े प्रयत्न किए और कईबार गटारकजीसे भी मिले किंतु उनका उत्तर यही मिला, "मैं सभाके लिए विस्तार आदि किसी तरहका प्रबंध नहीं कर सका हूं और न मेरी सभा करनेकी सम्मति ही है।" वहीं सुदिकलसे ताः ४ व ६ को रात्रिमें ला० उम्मेदीलालजीने भजन कहे। ता० ७ को जो प्रयत्न इन युवकोंने किया वह सराहनीय था। रातको इन्होंने मंदिरकी छोटी छतपर बिना विहंटरके सभाकी जिसमें अनुमानसे कुल २५० मनुष्य एकत्र हुए होंगे। प्रथम ही ब्रह्मचारी सुखानंदजीका व्याख्यान हुआ। उसके बाद पं० मूलचंद्रजी और मुंशी लट्ठरमलजीका (विधा)पर भाषण हुआ। ला० रतनलालजीने स्वरचित प्रभावशाली एक कविता नयाँपर पढ़ी। बा० मंगीलालजीने अभय और जुआपर कहा और ला० मिश्रीलालजीने पूर्ण व्याख्यानका समर्थन दिया।



सभापर उपदेशोंका अच्छा प्रभाव पड़ा और कुछ लोगोंने त्याग भी किया। प्यारे भाईयो! इन क्षेत्रोंपर उपदेशकोंकी बड़ी भारी आवश्यकता है। विद्वान् जातिहितेषी सज्जनोंको तो आना ही चाहिए किंतु महासभा और प्रांतिक सभाओंको तो अपने-२ उपदेशक अवश्य ही इस मेलेके वक्त भेजने चाहिये।

रथयात्रा और झगड़े-वैशाख वरी १ ता: ९, अप्रैलको रथयात्रा हुई। आज भीड़ोंकी शमार नहीं थी। ऐसे वैसे आदमीकी हिम्मत तो इस भग्गड़में निकलनेकी भी नहीं होती। रथपर नाजिम साहब बैठकर चलाते हैं। रथ चलनेके पहिले भटारककी आज्ञासे महावीरस्वामीके गलेमें फूल माला पहनाई गई और बालोंके चंवर स्वागीके आगे कई भाई झेलने लगे। दिगम्बर आम्नायके सर्वथा विरुद्ध यह बात थी अतएव झगड़ा शुरू हुआ और लोग बहुत विगड़े। नाजिम साहिबके आनेपर फैसला हुआ और दोनों वस्तुएं उतरवा दी गईं। फिर लोगोंने कहा कि रथके आगे भटारककी पालकी नहीं जा सकती। हम नहीं जानते कि भटारकने क्या सोचकर, रथके साथ आना अच्छा न समझा और नाराज हो कर मंदिरजीमें चले गए। जब रथ नदी पर पहुंच गया तो भटारककी पूछ हुई। बड़ी कठिनतासे खूशा-मदके साथ आप आए। आपके आते ही फिर माला पहना दी गई। हम नाजिम साहिबको धन्यवाद देते हैं कि जिन्होंने फिर नाला उतरवा दी नहीं तो लड़ाई अवश्य

होती। देहलीके भाईयोंने इस स्वत्वकी रक्षाके लिए सबसे अधिक प्रयत्न किया जिसके लिए वे अधिक धन्यवादके पात्र हैं। इतने पर ही इन साम्प्रदायिक झगड़ोंका अंत नहीं हुआ किंतु ता: १० को मैंने स्वयं देखा कि दिगंबरियोंको उभाड़नेके लिए कुछ भाई भटारककी आज्ञासे महावीरस्वामीका चांदीके बरफ आदिसे शृंगार कर रहे थे। सुना है कि कुछ लोगोंसे भटारकने कहा है कि मेरे पास कई श्वे० घनाट्योंके पत्र आए हैं जिनमें उन्होंने मुझे आदेश किया है कि तुम दिगंबरियोंसे मुकदमा लड़ो हम पूरा २ खर्च देंगे। हम नहीं जानते कि भटारकजी जो एक त्यागी होते हैं उन्हें इन बातोंसे क्या मतलब और क्यों वह दो भाईयोंको परस्परमें लड़ाना चाहते हैं।

प्रार्थना-भटारकजी! आपका कर्तव्य है कि यदि कोई लड़ता भी हो तो उसे शांत करें और जिस पवित्र आम्नायके अनुसार आपके पूर्व पवित्र भटारक अब तक कार्य करते रहे उसी तरह आप भी उनके अनुगामी बनें। फिर हम अपने भाईयोंसे प्रार्थना करते हैं कि वे अब जाग्रत होकर उन्नतिके उपाय करें न कि इन आपसी झगड़ोंको बढ़ाकर समाजके लक्ष्यों रुपयोंपर पानी फेंकें।

पश्चात् तीर्थक्षेत्र कमेटीको अपना मुंह इस ओर फेरना चाहिए और हजारों रुपए जो इस क्षेत्रके भंडारमें आते हैं उनका क्या होता है इसका पता लगाना चाहिए। और हर तरहका ठीकर प्रबंध करना चाहिए।



अपे ममाज ! तू ध्यान रख कि यदि इस क्षेत्रका प्रबंध ठीक न हुआ तो आगामी इस वर्षसे भी अधिक झगड़े होनेकी संभावना हैं । अपने अधिकारोंकी रक्षा करना तेरा कर्तव्य है अतएव तेरा धर्म है कि तू इस क्षेत्रका ठीक २ प्रबंध करे । भाईयो, चेतो और समाजके द्रव्यका दुरुपयोग मत होने दो ।

अंतमें हम पाठकोंसे निवेदन करते हैं कि वे इस लेखको पढ़कर रख ही न दें । इस भेलेकी जों २ छुटियां ऊपर अविनय-इन्हें दूर करनेका प्रयत्न करें । कुछ कहना ही नहीं गई वे सत्य हृदयसे जातियों तो मंदिरजीमें जुभी यदि कोई शब्द ही हैं किंतु मांसाहारी यवनोंसे क्षमा करें । रोकटोक जुते पहिने प्रतिमाकी स्त्री-करके मंदिरजीमें रुख मौजू उड़ाते अपने भाई स्त्री पुरुष भी विनयको त्याग कर निर्लज्ज व्यवहार करते हैं । हमें शोक है कि छापेके विरोधी महा विनयी जैनी भी ऐसी बातें स्वयं देगकर कुछ नहीं नेतते ।

उपदेश-हमारे विद्वान उपदेशकोंन (पंडित, बाबू और त्यागी) जाने क्या समझ रतों हैं कि उनमेंमे एक भी भेलेमें नहीं आते । जिनका यह सिद्धांत है कि संसारमें असंभव तो हुआ है ही नहीं और इस शब्दको ओपते निजाल देना चाहिए के गल्लन

कुरीति निवारण ।

बुरी चालसे ऊंचे कुल भी
महा नीच हो जाते हैं ।
बुद्धमान अकुलीन जगतमें
मान बराबर पाते हैं ॥
वचन ही से जो बच्चोंको
विद्या नहीं पढाते हैं ।
तो वह बालक मूर्ख होकर
कुलका नाश करते हैं ॥
बालकपनमें शादी करना
बच्चोंको दुखदाई है ।
फिर क्यों जान बुझकर तुमने
अपनी बुद्धि गमाई है ॥
बचपनमें है व्याहृका करना
बीज नाशका बोते हैं ।
पढ़ना लिखना सभी छुड़ाकर
गहरी धार डुबोते हैं ॥
दुर्लभ हो सतान इसीसे
प्रेमप्रीति सब म्वोते है ।
फिर पीछे पछताकर अपनी
बुरी दशा पर रंतें है ॥
कुल २५ काजमें अंधे होकर
गूरखता दिखलाते हैं ।
उमके वा अवगुणकी मूल द्वारपर
वेध्याको नचवाते हैं ॥
नगाल उठके प्यारे मित्र हमारे
बुरी कुरीति दूर करो ।
नशोंपर और जुबक गमगण कहते हैं
निश्चय पर उपकार करो ॥
जीने प्ये गमगण जैन, फिरोजाबाद ।

दिगंबर जैनके इसी अंकका क्रोड पत्र ।

जैनसमाजमें बिल्कुल नई बात ।

जैनसंसार सचित्र मासिकपत्र ।

जैनसमाजमें आजतक एक भी ऐसा पत्र नहीं था जो मनोविनोदके साथ ऐसी ऐसी बातें बताता जिनमें लोगोंके हृदयोंमें खल भली पैदा हो जाती और वे एकदम अपनी बुराईयोंको निकालनेके लिए तत्पर हो जाते । दुनियाका काम न सिर्फ़ गभीर विचारोंसे चलता है, न सिर्फ़ शृंगार रसकी बातोंसे चलता है, न सिर्फ़ आध्यात्मिक बातोंसे चलता है और न सिर्फ़ शारीरिक व व्यापारिक बातोंके करते रहनेसे ही चलता है, बल्कि सबही की बराबर मानाओंसे चलता है । 'जैनसंसार' में ये सब बातें रहती हैं । जैनसंसारमें रसीली कहानियाँ पढ़िए, चमकीले भट्ठीले विनोदी चित्र देखिए, दिव्यगीके प्रहसन पढ़िए, ऐतिहासिक बातें पढ़िए देशी और विदेशी वीर, कवि और महात्मा पुरुषोंका हाल जानिए और शारीरिक मानसिक और आध्यात्मिक लेखोंको देखकर शरीर, मन और आत्मासे वाकफियत लीपित कीजिए ।

इसमें सामाजिक आलोचनाएँ इतनी मजेदार होती हैं, कि उनको बार बार पढ़ते ही रहना अच्छा लगता है । किसी जाति या समाज विशेषका इसमें पक्ष नहीं होता, जैनसमाजके चारों फिरकोंके लिए यह पत्र समान उपयोगी है ।

इसकी उत्पत्तिका विषयम तमाम एक स्वयंसे प्रशंसा करते हैं । उदाहरणके लिए इतना बताना देते कि प्रसिद्ध पत्र जैनहितैच्छुने भी इसमेंसे एक प्रहसा उद्धृत किया है

इतना होने पर भी वर्षभरमें इसकी कीमत ढाक महसूल सहित १॥= एक रुपया दश आना मात्र जो जैनसंसारके चित्रोंके लिए भी काफी नहीं है ।

इस पर भी तुरा यह है, कि वर्षभरमें तीन चार अच्छी २ किताबें इनमेंसे दी जायेंगी ।

जैनसमाजमें दिया पढ़नेका शोक बटानेके शुभ आशयसे संयुक्त जैन भव्तांवर वराह प्रान्तिक नेमाने इसका सब घाटा जो वर्षभरमें लगभग डेढ़ हजारके होगा अपने सिर लिया है, और ऐसे उत्तम पत्रकी बान्नीके मूल्यमें बरबर बढ़ानेका निश्चय किया है ।

प्रत्येकको इसके माहक बनकर लाभ उठाना चाहिए और समाज सचालकोंको उत्साहित करना चाहिए ।

गणियोंको, स्त्रियोंको और विद्यार्थियोंको यह पत्र आपे मूल्यमें दिया जाता है । सेठ साहकारोंके उनका सम्मानार्थ ५० रुपये लिए जाते हैं जो उदार सज्जन संसारकी सहायताके लिए ५० रुपये देते हैं, संचारमें उनका फोटो और चरित्र भी प्रकाशित किया जाता है । नये अंकमें चार चित्र दिये गये हैं । तीन आनेका टिकिट भेजकर नमूना भेगाइए । और दिव्यमई-मनस्तुति-कीजिए ।

मनिअर्हर भेजने और अन्य सय तरहके पत्रव्यवहारका पता—

मेनेजर-जैनसंसार, जुबिलीवाम, तारदेव-बम्बई ।

ताजाखबरें ।

१—जर्मनीने अवनक ४५ लाख रुपये युद्धमें खर्च किये हैं । २—इन्दौर निवासी सेठ हक्क-बम्बईने नवेलारा रुपयेकी बार लोन खरीदी है । ३—सैनफ्रांसिस्को (अमेरिका) की एक कोटने, बायबकी ऑल्लोंकी कीमत ७५०००) रुपये निधम की है ।

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रगट थतुं मासिक

❀❀❀ दिगंबर जैन ❀❀❀

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्तुगवेषणाभिः ।

सुबोधयत्प्रमिद प्रवर्तताम्, देगम्बर जैन समान-मात्रम् ॥

वर्ष १० वॉ.

वीर संवत् २४४३. ज्येष्ठ. विमम सं० १९७३.

अंक ८ वॉ.



हमारे पाठकोंको विदित है कि कई दिनोंसे चारों ओरसे इन्दौरमें अपूर्व सूचना हो रही है कि प्रसंग। स्वर्गीय स्याहादवारिधि नादिगनकेशरी न्याय-

वाचस्पति पंडित गोपाय्यामजीका नाम स्मरण रखनेके लिये और पंडितजी द्वारा संस्थापित श्री जैन सिद्धांत विद्यालय गुरैनाको चीर ग्वासी बनानेके लिये शीघ्र ही प्रबंध होगा आरिये। परंतु अभीतर इसके बारेमें कुछ नाम कोशिश नहीं की गई थी परंतु हर्ष है कि "जैन मित्र" "दिगम्बर जैन" आदि पत्रोंके आन्दोलनसे गुरैना विद्यालयकी प्रबंधकारिणी बनेगी तथा पंडितजीके अतन्व मित्र पं. घना-राजमी आप्त हुए हैं और आगामी आमाद सुदी ५-३ ता. २४-२५ जूनको इन्दौरमें

विद्यालयकी कमेटीका ग्वास अधिवेशन होनेवाला है जिसमें पवारनेके लिये सर्व श्रीमान् और विद्वान् आमंत्रित किये गये हैं। विद्यालयकी कमेटीका अधिवेशन इन्दौर जैसे सुप्रसिद्ध नगरमें श्रीमान् दानवीर रायबहादुर सेठ हृकमचन्दजी, दानवीर रा० बा० सेठ कल्याणमलजी, रा० न० शेठ कस्तूरचंदजी आदि महानुभावोंके समीप बहुत ही आशाजनक होगा और विद्यालय तथा पंडितजीका नाम चिरस्थायी करनेके लिये सर्व उपस्थित मंडली ग्वास प्रबंध करेगी ऐसी हमें पूर्ण आशा है। पंडितजीका नाम स्मरण रखनेके लिये जो चंदा होवे उसको बनानेके लिये एक डेपुटेशन निष्ठा करनेका भी इन्हीं मीटिंगमें निश्चय होनेकी आवश्यकता है तब ही पूर्ण सफलता प्राप्त हो सकेगी। जैने स्वर्गीय दानवीर जैनकुटूबूषण सेठ माणिकचंदजी धनी होनेसे आने हाथसे ही अपना नाम चिरस्थायी कर गये हैं उसी प्रकार स्वर्गीय पं० गोपालदासजी बरैया विद्यावाचाली खूनही दान कर गये हैं परन्तु अपना नाम चिरस्थायी



રક્તનેકે લિયે કુઝ દ્રવ્ય નહીં નિકાલ ગયે હૈં ।
પરન્તુ જો કુઝ રક્ત ગયે હૈં વહ ઉનકા વિદ્યાલય
હી હૈ અતઃ ઉસકે લિયે બડામારી પંડે એકત્ર
કરકે હસ વિદ્યાલયકે સાથે પંડિતજીકા નામ
જોડકર હસકો સ્થાંચી કરનેસે પંડિતજીકા નામ
ચિરસ્થાયી હો સકેગા ઝૌર વિદ્યાલયકી નીવ મી
હદ હો જાયમી । આશા હૈ કિ હસ કાર્યકે
લિયે પં. ધનાઢાલની જી જાનસે કોશિશ કરેંગે ।

ગતાંકમાં જણાવવા મુજબ મુ'બાઇમાં તથા
અમદાવાદમાં એમ બે
સંયુક્ત જૈન બોર્ડિંગ. જુદા જુદા સ્થળે જૈન
બોર્ડિંગો શ્રીયુત વા-
ડીલાલ મોતીલાલ શાહ તરફથી સ્થાપનામાં
આવનાર છે, જે માટે મોંગણી કરતા વધુ
અરજી આવનાથી મુ'બાઇની ૩૭ અને અદવા-
દની ૪૨ અરજીઓ પાસ થઇ છે. અમદાવાદમાં
મકાન પાછળ આશરે ૨૨૦૦૦) ખર્ચાયા છે
તેમ મુ'બાઇમાં વિદ્યાળ મકાન પીન્સેસરટીટ પર
ખાડે રખાયું છે. આ બોર્ડિંગમાં ત્રણે દિરકાના
વિદ્યાર્થીઓને તેમની માન્યતા મુજબ જુદું જુદું
ધર્મ શિક્ષણ અપાશે, જેમાં દિગંબરી તરફથી
શ્રીયુત બાપુ જુગલાકિશોર મુખત્યારને ઝોન-
રો તરીકે નીમવામાં આવ્યા છે. ગરીબ
વિદ્યાર્થીઓને લોનની પદ્ધતિ ઉપર રકોલરશીપ
આપવામાં આવનાર છે, તેમાંની લગભગ ૨૫
રકોલરશીપ તો મી. વાડીલાલ પોતે આપનાર
છે અને વધુ રકોલરશીપ માટે આખી જૈન
કોમને અપીલ કરવામાં આવી છે. આ
રકોલરશીપ ૮ વર્ષખાટે ૪૦) થી ૫) સુધીની
આખી શ્રદ્ધા છે અને એ પછી એવી યોજના
સ્થાપિત છે કે જેથી ભવિષ્યમાં મદદની જરૂર
પડશે નહિ અને દાતાઓનાં નામ અમર રહશે
આ બોર્ડિંગોનું મુદ્દને તા. ૨૦મી જુનને મનાર
છે જે થવેથી વિશેષ હકીકત અજવાળામાં
આવશે, પણ આ સંયુક્ત જૈન બોર્ડિંગ સંખ્યા

વધુ જાતની મેળવનારે શ્રીયુત વાડીલાલ મોતી-
લાલ શાહ નામદેવી સ્ટ્રીટ-મુ'બાઇને લખનાથી
ઉદ્દેશ અને નિયમો મફત પુરા પાડવામાં
આવે છે.

આમારા વાંચકો સારી રીતે જાણે છે કે
જુનરાતમાં ઇડરની ગા-
જુનરાતમાં ભદારક દીના અને સુરતની ગાદીના
તરફ ફર્યાદો. ભદારક જાણીતા છે,
જેમાં ઇડરની ગાદીના
સ્વર્ગીય ભદારક શ્રી કનકકીર્તિજી પછી ધણાં
વર્ષો સુધી એ ગાદી ખાલી રહેવા પછી લગ-
ભગ ત્રણચાર વર્ષ થયાં બ્રહ્મચારી મોતીલા-
લજીને ઇડર તથા ડુગરપુરના ભાઇઓએ એ
ગાદીને માનનારી સર્વે પંચની સંમતિ વિના
ખેસાડી દીધેલા છે અને તેમનું નામ વિજયકીર્તિ
અપાયલું છે તે પણ જાણીતું જ છે. આ વિજય-
કીર્તિ ભદારકે ખેસતાં પહેલાં ઇડરની પંચને
એક પ્રતિજ્ઞાપત્ર લખી આપ્યું હતું તે પ્રમાણે
તેઓ ત્યાસરો કે કેમ તે પ્રથમથી જ સર્વેને
શંકા હતી તે ખરી પડેલી જણાય છે અને
એમને ખેસાડનારા જુદા ઇડરના ભાઇઓજી હવે
તેમની વિરુદ્ધ થયા છે પણ કોઈ આગળ પડતું
નથી એ અજબ જોવું છે । આ ભદારકજી
હાલ રાયદેશમાં ખાલેખમાં નિવાસ કરી
રહેલા છે. સાથે ૩-૪ ઘોડા તથા ૧૫-૨૦
તોકરો રહે છે । અહરથ કરતાં પણ
સારો રાજવૈભવ ભોગવાય છે ! રાયદેશના ભોળા
શ્રાવકો પાસે રળીને ભાવનાઓ તથા તે સાથે
ભાવનાની દક્ષિણાઓ લેવાય છે જેથી રાયદેશવાળા
પણ કંટાળી ગયા છે, છતાં પણ મુઝે
મોંઠે સદન કરી રહ્યા છે એ અજબ જોવું છે ।
ઇડરની પંચની શું ફરજ નથી કે જો તેઓ
પ્રતિજ્ઞાપત્ર પ્રમાણે ન ત્યાસે તો તેમાં દશવિધી
દક્ષમનો ઉપયોગ કરવો જોઈએ. આ જામન
વિશેષ ખુલાશી પ્રકટ કરવાને અગો ઇડરની
પંચને નમ સૂચના કરીએ છીએ.



સુરતની ગાદીના બદલરુક સુરેન્દ્રકીર્તિજી
પિરેલાવક કથ વિશેષ કહેવાતુ નથી કેમકે જ્ઞે કે
તેઓ સર્વસમતિથી બેઠેલા નથી તોપણ તેમનો
વેત્ત કથ વિમલકીર્તિ જ્યેષ્ઠો નથી. હાલનો
સમય અધ્યક્ષતાનો નથી પણ હવે તો સર્વ
પરીક્ષાપ્રધાની થયા હાજ્યા છે, માટે આ
બદલરુક જ્ઞેમ બી તેમ પરિશ્રદ આદિ
કર્મ પોતાનો સમય ઉપદેશ આપવામા અને
ધર્મસેવામા વ્યતીત કરશે તો લોકત્રિય થવા
સબન છે. બદાગક શબ્દની વ્યાખ્યા શુ અને
બદારક કોણ કહેવાય તેટલોજ વિચાર લદાગકજી
કરશે અને તે પ્રમાણે ચાલશે તોજ જમ છે

હવે એક નીલ બદારકથી અમારા બધા
વાચકો જાણીતા નહી હવે કેમકે એમણે નામ
તો ખોરમે પડેલા જેણે હતુ, પણ એમના
મનધર્મા જે મોટા ચર્ચાકરો અમને
મનપ્રાપ્તિ આપે તે વ્યાજ્ઞે ચોક્કસ નિર્ણય
કરવાની દરજ પડે છે કરમશાહની ગાદી પર
હવેના જ્ઞેમકીર્તિ નામે બદારક (અસર નામ
જ્ઞેમતાત અને અર્જેન) કેવા સજ્જો વચે
કેવી રીતે બેઠેલા તેની અમને ખબર નથી,
પણ એટલું તો જણાય છે કે તેઓ ધણા
વૈભવી મુખધર્મા કામીગીપુરામા ધરખાર કરી
રહેલા છે । અને કરમશાહ તરફ જતાજ નહોતા
તથા અદરથીનો વૈભવ બોધનતા હતા જેઓ
હાલમા કરમશાહ જવા માગતા હતા પણ
ત્યાંના બાળ્યોએના કહેવાથી કાણીસા (અભાત)
પહોંચેલા છે તેવાતુમાં કન્યા છે એમ જા
ણવામા આવ્યુ છે, જેથી જે મેનાડ બાધ્યો
સૌ મેનાડા બાધ્યોને તથા ખાસ કરી કાણીસાની
પરંતે બાધ્ય થવા મૂચના પ્રે છે કે જે ક્યા
કરમ કરો ને સમાજાને કરશે. જેણે સોહવાતુ
મેનાડા સુધ મકા આ પ્રસંગે કથ કરી
ખનાડો કે ?

માધુર્યલતા (નીતિ ઉપન્યાસ)

મૂલ્ય ચાર આના ।
મેજાત, દિ. ૦ જૈન પુસ્તકાલય-સુરત ।



હન્દોરમેં તા. ૨૪-૨૫ આપાદ
શુક્ર ૧-૬ કો મુરૈના જૈનસિદ્ધાન્ત વિદ્યાલયની
કમેટીના અધિશન હોવા જિસમે સ્વર્ગીય પ.
ગોપાલભાસનીદ્રા નામ સ્થાયી રવનેકે લિયે
સ્વાસ કાર્યાઈ કી જાયગી ।

શ્રી મહાવીરજી તીર્થક મેલેમે
અવવલ્યા દર્શક લેલ મનાકમે પ્રકટ હુઆ હૈ
જિમકે કારમે મદારક શ્રી ૧૦૮ મહેન્દ્ર-
કીર્તિજી જામ સુવના ડ્રાકર પ્રકટ
કરંતે હૈ કિ વામ્નવમં દમ્મ મેરા કુત મી વોપ
નહીં હૈ । યહ તો મેર અલગ વિચે કુચે એક
ચેત્તેકી સત્ત ચાલવાની હૈ । ઉત્તીને સત્ત
અનર્થ કરવાયા થા આદિ । મદારકનીકો
ઉચિત હૈ કિ આગામી મેલે પર તીર્થકા સત્ત
હિમાત્ત પ્રકટ કરંતે ઓર જૈનિયોંકી મ્હાયતા
પ્રયમસે લેફર મેલેકા સત્ત ઈક ૨ પ્રવચ કરં
જિમમ કિ નિર્મીકો ઈકા ટિપ્પી કનરા
મૌત્ત હી ન મિતે ।

અજમેરસે મનાજાત વડજ્યા
લિલો હૈ કિ નર સર્વ જાતિયોંકે મહાવિદ્યાલય
મૌજુદ હૈ પરંતુ સેદ હૈ કિ હમ નગરમે જૈનિયોંકે
કઈ ઘનનાન્ મગ્યવાન્ મૌજુદ હૈ તો ખી એક
ખી મોડિંગ યા મહાવિદ્યાલય નહીં હૈ । ક્યા
હમારે અજમેરકે ઘનાજી મઈ હમ વિદ્યાલયની
અમક ત્તર નહીં હૈવે ।



घड़नगरके शुद्ध औषधालयसे सूचना मिली है कि माँग अधिक आनेसे क्रमवार औषधियाँ भेजी जाती हैं और प्लेग तथा हैजाकी औषधियाँ चिट्ठी व तार आते ही भेजी जायँगी ।

केशलौंच—मुनि श्री चंद्रसागरजीने आषाढ वदी १३को तलवाड़ा (वांसवाड़ा)में और ऐलक पन्नालालजी महाराजने आषाढ वदी २ को जयपुरमें केशलौंच किया था ।

न्यायतीर्थ हुए—पं० बंशीधर (भुरैना), पं० जीवंधर तथा पं० उमरावसिंह (काशी) अवकी वार न्यायतीर्थकी परीक्षामें उत्तीर्ण हुए हैं ।

धरणागांवमें अभी पंच कल्याणक प्रतिष्ठा उत्सव शोध चुन्नीलाल अंबुशा गांधीकी तरफसे हुआ था जिसमें दो स्त्रीसभा होकर श्रीमती मगनबाई, ललितबाई, प्रभावतीबाई आदिके कई व्याख्यान हुए और २००) श्राविकाश्रम बम्बईको सहायता मिली तथा तीन श्राविकाएँ आश्रममें भरती हुई ।

मोहोल—(सोलापुर)में शा० मोतीचंद मवानचंदकी ५००) की सहायतासे औषधालय खुल गया है ।

सेठ नाथारंगजीके पौत्र सूरचंद भाईने अपनी पत्नीके पुण्यार्थ १९०) अनेक संस्थाओंको दानमें भेजे हैं ।

नई देहलीमें—कन्या विद्यालय पहाड़ी धीरज देहलीके मकानका मइतौत्तर जैनधर्ममूल्या ३० शीतप्रपादकी प्रमुखत्वमें गत ता० २ को हुआ था । इस मौके

पर ब्रह्मचारीजीका स्त्रीशिक्षापर बहुत ही प्रभावशाली व्याख्यान हुआ और करीब ४०००) की सहायता मिली । श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रमके लिये आपके प्रयाससे देहलीमेंसे २६ दिनके आहारदानके रु. ६५०) प्राप्त हुए (एक दिनका आहारदान २९) रु. में होता है ।)

राय साहय हुए—देहलीके लाला प्यारेलालजी बकील अवकी वार राय साहय हुए हैं ।

महाधवल—ग्रन्थको पुरानी कनड़ीसे बालबोधमे देवराज सेठी मूलविद्रिमें नकल कर रहे हैं ।

शोक—देहलीके रा० सा० लाला ईश्वरीप्रसादजीप्रसादजी और लाहौरके लाला मुंशीलालजी एम० ए० के वियोगसे दि० जैन समाजमें एक श्रीमान् और एक विद्वान् की कमी हो गई है ।

सिहोरारोड (जबलपुर)में लाला किशोरीलालजीका वेहान्त हुआ है । आप अंतस्मय अपने हाथसे २००००) गमय करानेके लिये लिख गये है । क्या ही अच्छा हो यदि इस २००००)की व्यवस्था करनेवाले इसका उप योग वहां ही विद्यादानमें करें !

सिंहहारा—(बिजनौर)में ता० २२ जूनको जैनकुमार सभाका वार्षिकोत्सव बड़ी खुशामसे होगा ।

प्रथम श्रद्धांशु—आमल ७३ ७३ शुक्रवातना वीसादुभय भाष्यभाषा ७३ पञ्च श्रद्धांशु नदोते, पञ्च दास शुभाष्टनिवासी भाष्य रतनचंद मुनीद(भ. नदीन) दा (अभाग आदेश)

ખી. એ. ની પરીક્ષામાં પાસ થયા છે જે માટે એ પ્રથમ જીજ્ઞુષ્યને આભવદન આપી આપી પણ વધુ અભ્યાસ લખાવવા આવક કરીએ છીએ.

સુરતનો એક ચર્ચાપત્રી લખે છે કે અત્રે રામકંઠપરાના દેરાનો વહીવટ હાલ મુંબઈવાલા શેઠ ડાહ્યાભાઈ પ્રેમચંદ કરે છે જેમાં પૈસા ખર્ચવા જતાં પૂજન પ્રકાશ બરાબર ચલાવે નથી. વળી કુસંધ હોવાથી સુરતવાળા તો કંઈ દેખરેખ નોંધાવે નથી । તો શેઠ ડાહ્યાભાઈની ફરજ છે કે સુરત આવી તકરાર હોય તેનો વિવેક લાવવો જોઈએ વગેરે.

આવડાવાડા (જવાસ) માં સુરતવાળા શેઠ તલકચંદ જેલામી તાસવાળા તરફથી એક વર્ષ થયાં પાઠશાળા ચાલે છે જેનો ૪૩ છે કર્મ છોડીએ આવે લે છે. અત્રે કંઈ પણ શિક્ષણ સેવાની સમય નહોતો, જે આપી પરી પડી છે. હાલમાં એની પરીક્ષા લેવાઈ હતી. પરિણામ સતોષપ્રદ છે. વળી હાલમાં છોકરીઓને ઓરણીઓ તથા છોકરાઓને પુસ્તકો હાથ તરીકે લેવાયા હતા.

મેવાડા યુવક મંડળની પ્રથમ બેઠક સોહવામાં તા. ૧૨-૫-૧૭ ને દિને ભદ્રારક સરેન્દ્રોત્તીષના પ્રમુખપદે મળી હતી જેમાં ચેન્કરી મનસુખલાલ બહેચરાદાસ ખી. એ. એલ. ખી. તથા ડૉ. બાહલાલે મંડળની ઉપેક્ષિતા પર વિવેચન કરવા પછી પ્રમુખે લખાણથી જણાવ્યું હતું કે ઉચ્ચતા બાળકોના સુધારના ઉપર જ બલિષ્ઠનો આધાર છે, માટે બાળકોને કેળવવા આવા મંડળને ઉત્તેજન આપે. આ બાળકો કેળવાઈ જશે તો અમારે માર વચ્ચે નહીં રહેશે એવો સંકેતો વિચાર ન સમો વગેરે બીજા દિવસની બેઠકમાં કેટલાક નવા મેમ્બરો થયા હતા તથા નિયમે ધરાયા હતા. બીજી બેઠક આવતે વર્ષે અન્યમંડળ પ્રમુખે મંડળી.

ઉત્તેજિયામાં ફરી પાઠશાળા ચાલુ થઈ છે. આસરે ૪૦ વિદ્યાર્થી લાભ લે છે. ૫૦ કનેયાશાલ ધર્મશિક્ષણ આપે છે, જેઓ ચાતુર્માસ અગ્રેજ રહેનાર છે.

બહેસરથી હાલના શિક્ષણચંદ લખે છે અત્રે ૫૦ પિતાંબરદાસજી ઉપદેશકના આવવાથી ઉપદેશનો મણોજ લાભ થયો છે તથા અનેક પ્રતિભાઓ લેવાઈ છે. આજ પ્રમાણે ગુજરાત. આરાધ્ય પ્રાંતિજ વિકાસ અને રાજ્યદેશમાં આ ઉપદેશકજીને વારંવાર ફેરવવા જોઈએ વગેરે

માન અમુખુ-સુરતમાં કરાદુમકવાતિમાં ગાંધી અમરતવાલ દ્કીરચંદ ખી. એ. ની પરીક્ષામાં પસાર થયા માટે દિ. જૈન પાઠશાળાના વિદ્યાર્થીઓએ એક મેલાવડો કરી તેમને માન આપ્યું હતું. જેમાં મી. સરંયા તથા શા. નવલચંદુ કેળવણી પર વિવેચન થઈ ચાલ પાણી. કરવામાં આવ્યા હતા.

મુંબઈ આવિકામમને શ્રીમતીમાઈ તથા શ્રીદેવીબાઈ મારફતે ભ્રમણ દરમ્યાન પાટના-કૂવા, ધનિયોલ, ધારીસણા અને સાણોદાથી ૧૪૧) ની મહદ મળી છે.



જૈન ચાલબોધક દ્વિતીય ભાગ-

આકાર રોયલ ૧૬ પેજી, પૃષ્ઠ સંલગ્ના ૧૦૮ મૂલ્ય ૥) । મિલનકા પત્ર, જૈનમિત્ર મંડલી, નં ૨ વિશ્વકોષલેન, શાગવાજાર, કટકતા ।

હત પ્રેક્ષકો પં ૫૦ પત્રાલાલેખી યાકતીવાલને સર્વ જૈન ચાલકોને હિનાર્થે લેવાયા હૈ । કુટ દં ૦ પાટ હૈ ।

જેવેં કુટ મળ જન્મુ પુત્તકોતે મો લિયા ગયા હૈ । મળમે કરી ૨ અગુદિયાં રહે ગઈ હૈ, જન્મુ ૫ અગુદિયાં ૩ અગુદિયાં



उपयोगिता देखते हुये नहीं सी हैं। इस पुस्तकसे बालकोंको लौकिक ज्ञानके साथ २ धार्मिक ज्ञान भी अच्छी तरहसे आसकता है। जैन स्कूलोंके प्रबन्धकर्ताओंको चाहिये कि अपने पठनक्रममें इस पुस्तकको भी रखकर विद्यार्थियोंको सदाचारी और धर्मप्रेमी बनावें।

अहिंसा परमोधर्मः—प्रकाशक बाबू दयाचन्द्रजी गोयलीय बी. ए. लखनऊ। मूल्य ८) और ५) सैकड़ा। इस पुस्तकमें महात्मा गांधीके दो प्रभावशाली अंग्रेजी लेख अहिंसा विषयपर हैं इसमें यह भली प्रकार बतलाया गया है कि अहिंसा वास्तवमें क्या है और हम सचन उसको कैसा मान रखना है। अहिंसा कायरताका उपदेश कभी नहीं देती है किन्तु अहिंसाके पालनसे मनुष्यताका उपदेश मिलता है। प्रत्येक अंग्रेजी जानकारको यह पुस्तक एक बार अवश्य पढ़नी चाहिये। मुखपत्रपर महात्मा गांधीका त्यागशिक्षक चित्र भी है। उपाई कागज आदि भी उत्तम हैं।

अहिंसा परमोधर्मः—प्रकाशक वही उपरोक्त बाबू दयाचन्द्रजी। यह एक ४ पेजका द्रुकृत है। इसमें महात्मा गांधी और मिस्टर पोलकरके गत जैन कान्फ्रेंस लगनऊमें दिये गये व्याख्यानोका सार हिन्दी भाषामें है। मूल्य १) सैकड़ा।

जैन गजल गुलचमन चहार—इसमें मुनि चोधमलनी महारान विरचित मिल २ विषयोंपर उपदेशी गायन हैं। प्रकाशक, भैरवाल नौरतन बोहरा; लाखन कोटडी—अजमेर से बिना मूल्य प्राप्त होती है।

जैन धर्मके विषयमें सम्मतियां—प्रथम भाग। पृष्ठ संख्या १६। यह श्री जैन-धर्म संरक्षिणी सभा अथरोहा (मुरादाबाद) का पहिला ट्रेक्ट है। इसमें श्रीयुत मास्टर बिहारी लालजी बी. ए. ने अजैन विद्वानोंकी जैन-धर्मके विषयमें क्या सम्मति है ? संग्रह किया है। इसमें लोकमान्य तिलक, डाक्टर सतीशचन्द्र, स्वामीराममिश्र शास्त्री इत्यादि विद्वानोंकी सम्मतियां हैं। अजैन विद्वानोंको बिना मूल्य और जैनियोंको ॥ तथा ३) सैकड़ामें मिलती है।

मांस और मद्य निषेध—इस पुस्तकका विषय नाम ही से प्रगट है। वांस्नेके लिये बहुत उपयोगी है। प्रकाशक—मुनीम नंदराम गनीराम भावसार, अंजड (वड़वानी) से बिना मूल्य प्राप्य।

जीव रक्षा दर्पण—आकार बड़ा, छठ संख्या ७६ मूल्य १) इस पुस्तकको स्वर्गीय रायसाहन ईशरीप्रसाद खंजाची देहलीके मुपुत्र बा. पारमदास खंजाजीने बड़े श्रमसे संग्रह किया है। इसमें हिन्दू और जैनधर्मके शास्त्र जीवदयापर क्या कहते हैं ? इसका संग्रह है। हिन्दुओंके माननीय शास्त्र, वेद, गीता, महाभारत, भागवत्, मार्कण्डेयपुराण इत्यादि और जैनियोंके ज्ञानार्णव, पुत्रार्थसिद्धचुपाय इत्यादि ग्रन्थोंमें श्लोक, कथाएं मंत्र इत्यादि उद्धृत करके हिन्दी भाषामें यह भरी प्रार्थ दिगीता है कि प्राणीमात्रपर दया करो तथा हम पापको मर्ष शास्त्र मुक्तकरके स्वीकार करें हैं इत्यादि। अथवा हिन्दुको यह पुस्तक



दिना चाहिये । संग्रह कर्ता महोदयने इसका श्रम दि० जैन अनाथाश्रम दिहलीको प्रदान कर दिया है ।

रिपोर्ट—भारतवर्षीय जैन अनाथाश्रम तथा जैन एंग्लो वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल, देहलीकी यह सन् १९१४, १९ और १६ की रिपोर्ट है । इसमें उक्त दोनों संस्थाओंका संक्षिप्त विवरण, हिसाब और चार महाशयोंकी अध्यक्षीय सम्पत्तियाँ हैं । इसमें ६२ अनार्योंका पालन होकर उनको शिक्षा दी जाती है ।

वार्षिक रिपोर्ट शुद्ध औपधालय—श्री दिगम्बर जैन मालवा प्रां. सभा बड़नगर । वीर सं. २४४१-४२ की इस रिपोर्टसे विदित होता है कि इस औपधालयकी दिनोंदिन उन्नति हो रही है । इसमें कुल १२९ प्रकारकी औपधियाँ **विना मूल्य** बांटी जाती हैं । ३२० स्थानोंमें तो इसकी शाखाएं खुल चुकी हैं वहाँसे भी विनामूल्य औपधियाँ मिलती हैं । औपधालयकी सहायता करनेके लिये चार आनेसे १०० तककी खुबसूरत टिकटें सैदा की गई हैं जिनको हरकोई खरीद सकता है । इसके मुखपृष्ठपर औपधिदानका फलरूपी वृक्षका चित्र भी है । हर एक व्यक्ति को फर्न है कि इस परमोपकारक संस्थाकी हर प्रकारसे सहायता करे और आवश्यकता पड़ने पर इससे शुद्ध देशी औपधियाँ मंगाकर ही उपयोगमें लेवे । यह ९८ पृष्ठकी रिपोर्ट पत्र दियेजैसे मुफ्त मिलती है । पता—दि० जैन मालवा प्रांति सभा कार्यालय, बड़नगर ।

प्रतिष्ठासरोव्वार—प्रकाशक और

अनुवादक पं० मनोहरलाल शास्त्री, जैन ग्रन्थ उद्धारक कार्यालय, हौदावाडी—गिरगांव, बम्बई । पं० आशाधरजी विरचित इस ग्रन्थमें प्रतिष्ठाका विधान संक्षिप्त भाषानुवाद सहित भले प्रकार दिलाया गया है । इस ग्रन्थके प्रकाशित हो जानेसे अब प्रतिष्ठादिका कार्य भले प्रकार सम्पन्न हो सकेगा । इसके अभावमें प्रतिष्ठाकारक इच्छानुसार विधानादि करते थे । इस ग्रन्थके प्रगट हो जानेसे जैनसंसारकी यह कमी मिट गई । अब प्रतिष्ठादिक कार्य इसी ग्रन्थानुसार होना आवश्यक है । डबल पु० सं० १४२ मनोहर पत्रकी जिल्द और मूल्य २) प्रकाशकसे प्राप्य ।

मेरठ जैन बोर्डिंगका रिपोर्ट—

प्रकाशक बाबू चक्रमदास बी ए० वकील, मंत्री । सं० २४४१-४२ के इस रिपोर्टसे विदित होता है कि बोर्डिंग और स्कूलका काम अच्छा चल रहा है । बोर्डिंगके लिये स्वतंत्र बड़े मकानकी खास आवश्यकता है ।

जैन कुमार सभा आगरा

प्रथम द्वि० रिपोर्ट—इस सभाने दो वर्षके अर्धमें अच्छा कार्य किया है । कुल १२ सभाएँ हुई थी । इसकी तरफसे पुस्तकालय और पाठशाला भी चलती है । मंत्री बाबू नौरंगीलालजी उत्साही और परिश्रमी होनेसे यह सभा सबिष्यमें इससे भी बहुत कुछ उन्नत दशा पर पहुँचनेकी आशा है । आगराप्रान्तके जैनो भाइयोंका फर्न है कि इस सभाकी हर प्रकारसे सहायता करें ।

जैन मार्तण्ड—वर्ष १ अं. ६-७

प्रकाशक जैनवालसभा—हाथरस । वार्षिक



मूल्य १॥) इसमें स्वाध्याय, हमारी उन्नति, वर्ष व्यवस्था, आदि लेख और कविताएं पढ़ने योग्य हैं । छपाई सफाईपर विशेष ध्यान देनेकी आवश्यकता है । हर एक जैनको माहक होना चाहिए ।

जैन समाज—वर्ष १ अं. २ पृ. ४८ वार्षिक मूल्य उपहार सहित सिर्फ १) सम्पादक और प्रकाशक श्रीभुत टेकचन्द्र सिंघी बी. ए. । यद्यपि प्रकाशक प्रहाशश्रु शे. स्था. जैन हैं तो भी इस नवीन हिन्दी मासिकपत्रमें सर्व जैनो-पयोगी लेख हैं । स्त्रियोंकी आधुनिक दृष्टि-दर्शक लेख बहुत ही उपयोगी है । जहां तक हो हरएक लेख पूर्ण ही छपना चाहिये । सभी जैनोंको माहक होने योग्य है । नमूना मुफ्त मिलता है । पता—सम्पादक, जैन समाज यम्बई नं. २ ।

वैष्णव धर्म पताका—गिरगांव, नम्बईसे प्रकट होता हुआ इस मासिकपत्रने गोदेही असेमें खूब ही कार्य कर दिखाया है । इसके सम्पादक पं० माधव शर्मा बहुत ही उत्साही हैं । हिन्दी और गुजराती दोनों भाषामें अलग २ प्रकट होता है । यह छठा अंक तो बड़े सज्जनसे विमर्शांक रूपमें प्रकट किया गया है जिसमें गो० देवकीनन्दनजी महाराजके अलग २ अवस्थाके ६ चित्रके अतिरिक्त और भी कई चित्र हैं । छपाई सफाई उत्तम और पृ. सं. ७२ । वैष्णव संप्रदायवालोंके लिये यह पताका बहुत ही उपयोगी है परंतु इसकी कार्य प्रणाली तो हरएकको देखने योग्य है ।

श्रीसुभ ६५५५ (आविडा)—गुजराती भाषातुं श्रीयोगीश्वरी नवीन सवित्र मासिकपत्र पृ. १ अंक १-३ वार्षिक ३) अं. ३) प्रकाशक देवराज दाभण शाह सावनगर, आ सवित्र मासिक तदन नवी स्ट्राइस उपर प्रकट करवायां आव्युं छे अटलेके लगभग दरेके लेख सवित्र-प्रकट थाय छे तेम इटलाह लेखो श्रीमान् दाभण लघाय छे अगोना मित्रो सामान्य नदि पण लेखने लाय दर्शवनाश भास तेथार दरेलां होयछे न वांयवाधी वांयकने रस पडवा उपरांत ते लेखनी सयोट असर थाय छे जैन के अनेन दरेके अंगि आ सवित्र मासिकना आहक थयुं नेष्टजे. पृष्ठ सम्पादना प्रभाशुमां लवानम वधु लघाय छे पणु पत्रोप-मित्रोनी उपयोगिता तरु जेतां ते कछ वर्षां न छेवाय. आ नवीन साहसनी-अमे दरे रीते इते छे छवि छे छे.

कुम्भी जैनमित्र (समिन) वर्ष १ अं-१ वार्षिक ३) आ नवीन गुजराती मासिक-पत्र सर्वे कुम्भी जैन भाष्योना उपयोगार्थे प्रकट करवायां आव्युं छे. छपाइ सफाइ उत्तम तेम लेखो पणु सम्पादकित पणुन उपयोगी छे. दरेके लेखनी साथे लेखकना होरा छे तथा भीन कटलां मित्रो छे. तेम सुभपण्ड पणु आहर्षणीय छे. दरेके आ अंक जेवा साथ छे. **अमुक्षपाथे** आव्यमासी-श्रीभुत भुतनी अणुन साह धुक्षीया (भानदेव) इत अणुनेना अमद. अउधायानानी टीकी भीउवाधी जेम-नीन पासेधी भइत गे छे.

महावीर जैन पुस्तक भंडार, पांडराण तथा जोरिंग घाराछ (काडीवावा) ना पत्र धारणे तथा दिसाण भयो छे. श्रीभुत वनेय पोषट इतरीना आ प्रवास आयुतम छे. पुस्तक भंडारमां सारे समद था रणे छे. **श्री वृद्धिदण्ड जैन सभा** (सावनगर) ना दिसाण तथा *Isoly Maxima of Lord Mahavira* नामे दरेक भयो छे न भाषार श्रीमजीमे छे.



शेष शक्ति ।



मुझे उस दिनकी यह एक बात स्मरण हुई कि मुझे बड़े बेगसे ज्वर चढ़ा है, मस्तिष्कमें असह्य पीड़ा है और मेजपर जो दीपक रखा है उसकी ज्योति बहुत मन्द है, ठीक उसी समय कहींसे मुझे चूड़ियोंकी झनझन आवाज सुनाई दी, मैंने समझा कि मेरा भाई ननि शायद बाजारसे चूड़ी आदि लाया होगा, किन्तु जब जग ध्यानसे देखा तब मालूम हुआ वह नहीं है, वह तो कोई और ही है; उस समय तक मेरा मस्तिष्क ठीक नहीं हुआ था। मैंने कहा कौन है ?

किन्तु उत्तर नहीं मिला, सिरके पास कोई धीरेसे आकर बैठ गया, मैंने फिर पूछा 'कौन है ?' इस बार वह मेरे सिरके समीप आकर बोली 'मैं-वह'।

अब मुझे मालूम हुआ कि मेरी स्त्री हेमलता है, मैंने धीरेसे उसके दोनों हाथों-को खींच कर अपने माथे पर रख लिये मैं, अत्यन्त विश्वासके साथ, अनाथ बालकके समान, उसकी कोमल अङ्गुलि-योंको, अपने बालोंके मध्यमें तापत्रयहारिणी औषधिके सदृश अनुभव करने लगा और जैसे अन्यकारमें चन्द्रमाकी किरणें प्रवेश करती हैं वैसे ही उसके मनकी सब कथायें इन भंगुलिओंके द्वारा मेरे मनोमन्दिरमें प्रवेश करने लगीं।

कुछ समयके बाद जब मैंने अपनी

* भगवतीमें अनुवर्तित एवं परिवर्तित।

प्रत्यक्षात् ।

आंखें बन्द कर ली तब मुझे मालूम होने लगा कि प्रभातीय दीप्तिमय शुक्र ताराके सदृश, वही मेरे माथेके ऊपर गंभीर सरल्लण, सनीर और काजलसे पूरित नेत्र, ज्योतिमय तारावलीके सदृश प्रेमकी लाल २ और स्निग्ध किरणोंकी छिटकानेवाली; वही सोढागिन श्रीका चित्तस्वरूप मेन्दुरकी लम्बी रेखा, उसकी लाल पाड़ साड़ीकी लम्बी और रक्त धारियाँ, उमके कोमल कपोल पर स्थित काला नित्र और उसके मुखसे निरलनेवाली सुगन्ध वायु उन्वादि उमकी समस्त वस्तुयें मेरे निकट है। उस दिन मुझे उसके पैरका अंगूठा तक भी मनो-हर मालूम होता था किन्तु उसकी समस्त वस्तुओंकी अपेक्षा मुझे उसकी सेन्दुरकी स्वच्छ और लाल रेखा अत्यन्त मनोहर मालूम होती थी क्योंकि वह केवल मेरे ही कारण बनाई गई थी, वह केवल मेरे ही अन्तरङ्गका रङ्ग था, और वह केवल मेरी ही गुप्त सम्पत्ति थी।

मैं उसकी सेन्दुरकी रेखाको कभी न भूलूंगा और न मैं अपने हृदयके रंगसे रंगे हुये उसके कोमल चरणों ही को भूलूंगा क्योंकि उसके ऊपर उपर हिलने-डुलने और मेरा हाथ उसके पैरों पर लग जानेके कारण जिन दोनों पैरोंको, वह आज अत्यन्त संकोच के साथ छिपाये थी, वे (पैर) ज्यों ही मुझे मालूम पड़े, त्यों ही वह शीघ्रतासे उठकर मेरा पैर पर प्रणामार्थ अपने मस्तकको झुकाया और जिस प्रकार सूर्यास्तके समय सूर्यकी अन्तिम लाल किरणें, पर्वतोंके

शिखरोंको चूमती है उसी प्रकार उसके लाल २ ओष्ठोंने मेरे पैरोंको चूमा । उस समय मेरे पैरोंको उसके मुखकमलने भली प्रकार छिपा लिया था ।

कुछ देरके बाद उसको मैंने अपनी क्रीड़ाकी सामग्री समझकर, उसके हाथोंको अपने माथेसे उठा लिया और अपनी छाती पर रखकर उसकी कोमल एवं पतली २ अंगुलियोंको गिनने लगा, कुछ समयके बाद मैं उसकी चूड़ियोंको वजाने लगा और फिर उसके रक्त नखस्थानों पर अंगुलियां फेरने लगा । उस दिन वह ऐसी हो गई थी, मानों उसने अपनेको मुझे मोप ही दिया हो, इसी लिये आज वह कुछ नहीं बोली । वह मेरे नेत्रोंके सन्मुख अत्यन्त विश्वास और निर्भरता..... ।

उसने अपने हाथोंको मेरी छाती परसे कब उठा लिया, यह मुझे विलकुल नहीं मालूम । अतएव आज मैं अन्य दिनकी अपेक्षा प्रातः काल शीघ्र उठा, आज मेरा शरीर भी कुछ अच्छा था, किन्तु वह मेरे सिरहाने नहीं है । है क्या ? एक तार, मैंने शीघ्रतासे उसे उठाया और पढ़ा कि:-

‘हेमलता परसों रात्रिको मर गई ।

अनुवादक-

जुगमन्दरलाल ।

पुत्रीको माताका उपदेश

(ससुराल जाते समय)

विवाहादि प्रसंगोंपर बोलने योग्य, पृ० ४०
मूल्य सिर्फ १-॥ और १) सेकडा ।

मैनार, दि० जैन पुस्तकालय-मृत.

सुधारकोंका नया आन्दोलन ।

आज मुझे विधवा विवाहके पोषकोंसे यह पृष्टना है कि क्या वह यह बतानेकी कृपा करेंगे कि जिन कारणोंके रोकनेके लिये विधवा-विवाहका आन्दोलन किया जाता है (अर्थात् व्यभिचार, भृणहत्यादि पाप । वे उन देशोंमें भारतवर्षसे ज्यादा क्यों पाये जाते हैं जहाँ कि इस प्रथाका प्रचार बड़ी अनर्गलतासे प्रचलित है ? क्या ये प्रमाण इस कथनकी पुष्टिके लिये अकाट्य नहीं हैं कि विधवा-विवाह इन पापोंको रोक नहीं सक्ता परन्तु इससे दूने बढनेकी समावना है । महाशयो ! युक्ति, प्रमाण, शास्त्रीयवार्क्य, ऐतिहासिक प्रमाण सन्मुख लाइये कि जिसका उत्तर दिया जाय, अपने मत पोषणार्थ झूठी २ आश्वासिकायें बना बनाकर तथा झूठी झूठी कार्णिक घटनाओंको लिख लिखकर मोले लोगोंको भडकानेसे कार्य सिद्धि नहीं होती । यह तो वापसोंकी बात है । ऐसे मिथ्या कार्णिक चित्र खींचकर किसी कुन्याके प्रचारके लिये प्रयत्न करना घोरानघोरपाप है । दूसरा यह कथन कि बिना अवस्थामे स्त्रियोंको घोर दुःख होता है यह तो ठीक ही है, जब उनका आग य देवता ही नहीं रहना तो दुःखकी कौन बात ? परन्तु यह दुःख, असत्य नहीं कहा जा सकता, जिन्होंने उद्यकृष्णमे नम्र लिया है उन्हें इन आत्मोत्सर्गका पाठ बाल्यावस्थासे ही पढ़ाया जाता है और, परीक्षाका समय आनेपर वे सभी रागर नहीं होती, यह हम



जल्द कहेंगे कि उन शिक्षाओंका अभाव समासे हो रहा है । अतः हमारा रुतब्य है कि हम उन पूर्ण शिक्षाओंका पुनरुद्धार करें कि पुन हिन्दुओंके गृह एकाग्र स्वर्गगृह हो उठें न कि हम उनमें नरकगृह बनानेका प्रयत्न करें । दूसरी बात यह कि विवाह होनेके जो मुख्य कारण हैं अर्थात् बाल्यविवाह अनेक विवाहादि, उन्हें रोकनेका प्रयत्न करें न कि एक ऐसी प्रथाका प्रचार करें कि समाज और हिन्दुओंकी पवित्रता ही जाती रहे । तीसरी बात यह है कि यदि जो स्त्रियां ब्रह्मचर्य धर्म पालन नहीं कर सकती और उनको दूसरा विवाह करलेना ही अभीष्ट है तो प्रत्येक समाजमें उनके लिये स्थान मौजूद ही है और इसका विधान भी है ही, नवीन प्रथाकी तथा आवश्यकता है फिर किसीका यह कहना कि उन्हें नीची दृष्टिसे न देखना चाहिये तो कहना होगा यह नहीं हो सकता क्या आप कहना चाहते हैं कि उनको और विना ब्रह्मचारिणियोंको एक दृष्टिसे देखें ? यह कैसे सम्भव हो सकता है और क्या यह न्याय है ? कदापि नहीं तथा इस विधवाविवाहके विधानकी क्या आवश्यकता है ? आवश्यकता उस विषयके विधानकी हुआ करती है जो विषय उत्सर्गमार्ग (राजमार्ग) हो, सो राजमार्ग तो यह विधवाविवाह हो नहीं सकता क्योंकि राजमार्ग तो उच्चमार्ग ही हो सकता है नीचमार्ग राजमार्ग नहीं होता जैसा कि पहिले तो विधान ब्रह्मचर्यव्रतका ही

होगा उसके अतीचारोंका नहीं । नीचमार्ग ही अपवाद मार्ग होते हैं इसके बहुतसे प्रमाण दिये जा सकते हैं । अस्तु विधान तो विधवाओंके लिये ब्रह्मचर्यका ही होगा जिनसे न रहा जाय वे पतित हो कर अन्य विवाह भी कर सकती हैं इसके लिये समाजमें आकाश पाताल एक करनेकी क्या जरूरत है यह नियम तो आदिकालसेही चला आता है फिर यदि इस पर भी यह कहा जाय कि स्त्रियां अपनेको नीच मानना कबूल न करेंगी तो फिर इसका उत्तर यही होगा कि यदि कोई सदा स्त्री यह कहे कि मे नीच तो होना नहीं चाहती और विवाहिन पतिसे मेरी तृप्ति नहीं होती तो क्या समाज या विधवा विवाह पोषक महाशय उसे भी ५-१० पति करनेके लिये कोई तजवीज निकाल देंगे ?

अब रही यह बात कि विधवाओंके साथ बहुत कठोर व्यवहार किया जाता है । यह कल्पना बिल्कुल निर्मूल है । यदि किसी एक खास घरमें कोई बात होती हो तो समाज उसका लक्ष्य नहीं बन सकता । लेखकका स्वयम् अनुभव है कि हमारे यहाँकी हिन्दू-विधवायें बड़ी ऊँची दृष्टिसे देखी जाती हैं, हा, यह अवश्य है कि गृहस्थके किसी ऐसे कार्यमें कि निम्नमें भोग विलासका महत्व ज्यादा हो, हिन्दू विधवायें भाग नहीं लेती, जैसे कि विवाहादि कार्य, उनका अधिकार धार्मिक कार्योंमें ज्यादा रहता है । और यह उनके पक्षके सर्वथा अनुकूल ही है, क्योंकि



વહ લોગ ગૃહવાસિની વ્રતચારિણી હૈ, અવ રહી
યહ બાત કિ इतना होते भी जो कुलटा कुकर्म
पर ही कमर बांध ले तो उसके लिये तो
कोई उपाय ही नहीं हो सकता ।

વિવત્તા-વિવાહકે પોષક લેવકો ! સમસ્ત
સમાજ તુમ્હે સ્વાર્થાન્વ સમગ્ર રહી હૈ; સમાજ
સમગ્રતી હૈ કિ તુમ ઘોર સ્વાર્થપરતાવશ સમા-
જકો ઘોર કુમ્મીપાકમં ડાલના ચાહતે હો ।
યદિ યહ બાત અસત્ય હૈ ઓર તુમારા હૃદય
સચી સમાન હિતૈપિતાસે દ્રવિત હુઆ હૈ તો
સત્યતાકે લિયે સમાજકે સામને તુમ્હે શપથ
પૂર્વક કહના હોગા કિ હમ નિર્દોષ હૈં, નહીં
તો યહ અદમ્ય કલંક તુમ્હારે સિરસે કમી
ન હોગા ।

જૈન સમાજકા એકે સચા હિતૈષી ।

अदिपुंरुण ग्रंथ॥

→॥ पूरा छप गया ।

જો ભગવજ્ઞિનસેનાચાર્યકૃત
વડા ભારી ગ્રંથ મૂલ સહિત સરલ
હિંદી ભાષામં વહુત દિનસે છપ
રહા થા વહ પૂરા હો ગયા । મોટે
ઓર મજબૂત કાગજપર વહે ટાઈપ-
મં છુલે પત્રોંપર છપા હૈ । ન્યોછાવર
અમી ૧૧) સોલહ રૂપયે હી રચ્છી
હૈ । ડાકલર્ચ અલગ લગેગા । જિન્હે
ચાહિયે હે શીઘ્રતાસે ઝેગા લેવેં ।

लालाराम जैन

महाराज-हंदौर.

આપણી સ્થિતિ સુધારવાને
ब्रह्मचर्यनी जरूर.

(લેખક-હાથીચંદ માણિકચંદ, રોનાસણુ)

આપણે આર્યસોદો પૂર્વે અપાર શરીરબળ-
વાળા હતા, એવું જૈનગ્રંથો તેમજ મહાભારત,
પુરાણ વગેરે ઇતિહાસના ગ્રંથોથી આપણે
જાણીએ છીએ. ૧૨ ચક્રવતી, ૯ તોરાણ,
૯ બધમદ, ચંદ્રગુપ્ત, મહાવીર વગેરેનાં બળનાં
વર્ણન વાંચી આપણે ચકિત થઈએ છીએ.
આવું અપાર શરીરબળ હોવું એ શરીરની
મોટામાં મોટી ચઢતી છે. આવું અપાર શરીર-
બળ એક કાળે આપણે મેળવી શકીએ તેમ નથી.
આર્યપ્રજાતું એ અપાર શરીરબળ અનેક દુરા-
ચરણોથી એણું થતાં થતાં, આંગના જેવું
જનાનખાની બળ થવામાં જેમ હમરો વર્ષ
વહી ગયાં છે, તેમ આપણી રહેણી કહેણી
સુધારતાં વધતાં વધતાં તેવું પૂર્ણ બળ થવામાં
તેજાંજ વર્ષ જવાની જરૂર છે. આપણે આ-
પણું શરીર સુધારીએ તો આપણી હવે પછીની
પ્રજા આપણા કરતાં વધારે બળવાળી થાય,
તે પ્રજા પાછી પોતાનાં શરીર સુધારે તો તેની
પ્રજા તેથી અધિક બળવાન થાય, એમ વધતાં
વધતાં શિખરે ચઢાય, તેથી પૂર્ણ બળ મેળવવામાં
અત્યંત ધીરજ અને પ્રયત્નની જરૂર છે.
જે ઉપાયો વડે આપણા પ્રાચીન આર્યોએ
શરીરતું પૂર્ણ બળ મેળવ્યું હતું, તે ઉપાયો
જે આપણે પણ સેવન કરીએ, તો આપણું
શરીરબળ વધવાને સંભવ આવે, માટે તે
ઉપાયો આ ક્યા હતા તે વિશે હવે આપણે
વિચાર કરીશું.

આપણું શરીર સાત ધાતુઓમાં અનેક
છે જેવી કે-૧ રસ, ૨ ક્ષિર, ૩ માંસ, ૪
મૂત્ર, ૫ મેદ, ૬ અરિધ, અને ૭ વીર્ય. આ
સાત ધાતુઓમાં આપણી ૨૯ વર્તની ઉપર
સુધીમાં વધારો થતો જાય છે, અને તે વધે
શરીર પૂરેપૂરું બધાંજ રહે છે. ત્યાર પછી ૬૦



વર્ષની ઉંમર સુધી શરીર રક્ષણના અથા નિયમો પાળ્યા હોય તો તે બધાયણું શરીર તેડું ને તેડું જ કાપમ રહે છે અને પછી તેમાં ફીણતા થવા માડે છે, જે ધીરે ધીરે વધતાં સો વર્ષે આ શરીરનો નાશ થાય છે. ૨૯ વર્ષની ઉંમર સુધી શરીરમાં જે જનતની ક્રિયાઓ ચાલતી રહે છે- એક શરીરમાં ચાલતા ધસારાની ખોટ પુરી પાડવાની, અને બીજી દરેક અવયવનો પૂરેપૂરો ખીનવાને માટે તેને વધારનાનું પોષણ આપતા જવાની. આ કારણથીજ બાળકોમાં અને જુવાનોમાં પુષ્કળ ચાલારી હોય છે. ૩૦ વર્ષની ઉંમર પછી શરીરમાં પડતા ધસારા નેટણું જ નવું પોષણ શરીરમાં ઉપજ થતું રહે છે. અવ્યયો પૂરેપૂરો બધાજ ગમેલા હોવાથી નવું વધારાનું પોષણ શરીરમાં ઉપજ થતું નથી, અને પોષણને ઉત્પન્ન કરનાર જઠર વગેરે યંત્રોની શક્તિ નિત્ય કામ કરવાથી ઓછી થાય છે અને ૬૦ વર્ષ પછી ધસારાની ખોટ પુરી પાડવા નેટણું પોષણ શરીરમાં ઉપજ નહીં થતું હોવાથી શરીર ધીરે ધીરે ફીણ થતું જાય છે.

૨૯ વર્ષની ઉંમર સુધી શરીરનું બંધારણ થાલી ક્રિયા શરીરમાં ધમધોકાર ચાલતી હોય છે, એ શરીરશાસ્ત્રના નિયમના જાન- યોગ આપણા પ્રાચીન આર્યોએ પોતાના શરીરને અત્યંત બળવાન કર્યું હતું. એ જાન વહેજ તેઓ ૨૯ વર્ષ સુધી શરીરને વધારવાના ક્ષરતના આ પ્રયત્નને મદદ કરી શરીરમજબની ઉંચામાં ઉંચી સ્થિતિ મેળવતા હતા અને ક્ષરતની સામે ધણ શરીરને બળવાન કરવા ઇચ્છનાર બધી મહેનતે પણ શરીરને બળવાન કરી શકતા નથી. જેમકે સામા પ્રવાહે નાવ એકનાર થઈ જાય વાપરના છતાં પણ એછો માર્ગ મળે છે. ક્ષરતના નિયમથી શરીરનું બંધારણ બંધાઈ હોય, તે વખતેજ તેનો નાશ થાય એવો ઉપાય કરવાના ખવે તે તે ક્ષરતનો સામે થવાને પ્રયત્ન કર્યો મજબૂબ છે અને તેને પ્રયત્ન કરનારનું શરીર કોઈ દિવસ પણ

જોઈએ તેવું બંધાતું નથી. આ નિયમને જાણનાર આપણા પૂર્વ આચાર્યો તેમજ મુનિ- ઓએ શરીરનું બંધારણ બંધાવવાના સમયમાં તે પૂરેપૂરું બંધાઈ રહે માટે જલ્દયર્થ આ- ગ્રમો ટેકાણે ટેકાણે ઉઘાડ્યાં હતાં, પરંતુ આજે આપણે આ આગ્રમોને છેકજ વિસારી દીધાં છે. આપણાં બાળકોના ઘણે રથજે બાર કે પંદર વર્ષની ઉંમરથી જલ્દયર્થનો ભંગ થાય એવા ઉપાય આપણે આપણા હાથે યોગ્ય દીધા છે. આપણાં બાળકોના કુમળા શરીર રૂપી ઝાડ ઉપર કુદાડાના ધા મારવા આપણે શરૂ કરી દીધા છે. શરીરમાં હજી તો વીર્યનું બંધારણ બંધાવવાનું શરૂ થયું હોતું નથી એટલામાં તો આપણે તેના ક્ષયનો રસ્તો મોકળો કરી આપીએ છીએ. તળાવમાં પહેલા વરસાદનું પાણી હજી આવ્યું નથી, એટલામાં તો પાણીને એમ ધણ જવાના પાતાળી ભુખાઓ આપણે રચી મુકીએ છીએ. કીડી કુંથુના સરખાને પણ ધન ન કરવાનો ફાંકો રાખનાર અને અહિંસા પાળવાનું મિથ્યા અભિમાન ધરનાર આપણે, આપણાજ બાળકોના કામગી ગળાં ઉપર છરી મુકીએ છીએ. ગોઠવ્યા કરનાર ધાતકો મનુષ્યોને જોઈ આપણને કંપારી છુટે છે, પણ આપણા ગાયથી પણ અધિક નિર્દોષ બાળકોની આપણા હાથેજ હત્યા કરતાં આપણે કંપારી છુટની નથી કે લગ્ન આવતી નથી. ઉગ્રી તેની હત્યા કરવામાં આનંદ મानी આપણે મ્હોટા વરોડા કાઢીએ છીએ અને આતો જમાડીએ છીએ. ખીનખોના શવ લેનારી રાક્ષસી સ્વભાવની જ મક્કી પ્રજાઓ જન્મતમા હજે, પરંતુ પોતાનાજ બાળકોને રીઆયરીબાઈને મારે એવાં સાધનો રચી આપનારી, નિર્દયતામાં રક્ષામેને પણ દબર મારે એવી છેક દલદી દસામાં આવી ગમેલી આપણી હાલની આર્ય પ્રજા જેવી પ્રજા જનાવરોની સહિમાં પણ જંગમ સંસાર નથી.

ક્ષરતના કાપવાને તોડનાર કોણું સુખી થાય છે । દેવતામા હાય નાખનાંજ કાપ ઉપર



દેશના ઉદ્ધવાની ચેતવણીને ન ગોંડતાં દેવતામાં અપલાવનાર કોણુ રાખ થયા વિના રહે છે ? ૨૯ વર્ષની ઉંમરે પાકું શરીર બધાયા વિના ગૃહસ્થાશ્રમનો આરંભ કરવાથી અનેક જાતના રોગો થવા છતાં હાડ પાંસણા દેખાય એવાં હાડ પિંડરોના સંગ્રહસ્થાન જેવી આપણી પ્રજા થવા છતાં અને આખી દુનિયાની પ્રજાઓમાં નાનુંસક યૌગમાં ગણાવા છતાં પણ હજી આપણી આંખ ઉઘડતી નથી. આપણા બાળકોના કલ્યાણનો આપણે વિચાર કરતા નથી, તો પછી આગળ ઉપર આપણી આર્થ્ય પ્રજ્ઞા નામ નિશાન પણ ન રહે, એવો વખત આવે એમાં શું નવાઈ ?

રાજકીય નીતિ આણવાનો યત્ન કરવાનું જ્યાં ત્યાં વિદ્વાનો તરફથી કહેવામાં આવે છે. દરવર્ષે રાષ્ટ્રીય સભાઓ ભરાઈ લાખો રૂપિયા ખર્ચવામાં આવે છે. જૈનેતર કોનફરન્સો ભરવામાં લાખો રૂપિયા ખર્ચાય છે. સેંકડો વર્તમાનપત્રો દરરોજના આઠવાડીએ દેશની સુરતી ઉરાડવાને પોતાનાં પાનાં ભરે છે. કસા-યલા વિદ્વાનોના હાથે વર્ષ દહાડે હજારો નવીન યાતો ભાષાના તરજુમા રૂપે પુસ્તકો બહાર પડે છે. લાખો રૂપિયા પાઠશાળાઓ, માનસાળાઓ, વ્યાયામશાળાઓ અને એવાં અનેક ખાતાઓમાં ખર્ચાય છે. નાટક મંડળીના માલોકો ઐતિહાસિક બનાવને જાહેરમાં મૂકી ઉપરનાં કારણો યોગ્યતા પૂર્વક સુનન્દા એંટરે પાસે ભજવી જતાવે છે. મોટા મોટા વક્તાઓ મોટાં મોટાં બાપણો કરી આપણામાં દેશોભિમાન ઉપજાવવા પોતાના અપાર ભુદિ બળને ઉપયોગ કરે છે, પરંતુ સાત દહાડાની અખંડ હેલીમાં પહોંચેલા લોકડાના મોટા ઢગલાને એક ચણુમારી દેવતાથી સંગઠાવવાનો પ્રયત્ન જેમ નિષ્ફળ નીવડે છે, તેમ વીરવના દાવથી સત્વવિનાની યુદ્ધ મથેલી આપણી મુઠ્ઠાદા પ્રજા ઉપર કૃષી અમર જની નથી. વીરે વિનાના શરીરમાં મન પણ નીવડેલિનાનું રોગચાળું યદ્ય જનું દો-

વાથી આપણી રોગી મનવાણી પ્રગટે જે જે યોગ્ય નિશ્ચયો સમજાવવા આપણા દેશહિતેષુ આ પ્રયત્ન કરે છે, તે તે સર્વે નકામા જાય છે. દેશના હિત માટે તનનો ભોગ આપવા, હૃદયને વીધી નાંખે એવી વાણીમાં ભોધ આપવામાં આવે છે, આર્થ પ્રજ્ઞ તે સાંભળે છે. પોતાની દુઃખી અવસ્થા જોઈ દુઃખી થાય છે. પણ તે ટાળવાના ઉપાયો કરવા તેનામાં ઉત્સાહ પ્રકટતો નથી. શી રીતે ઉત્સાહ પ્રકટે ? બાર મહિનાથી ખાટલે પડેલાં, પશુધાતથી રોગી ગયેલા રોગીને તમે પશુધાત ટાળવા, શરીરમાં લોહી વેગથી ફરતું કરવા માટે કસરતને ઉપદેશ આપો અને તે તેને ખરો લાગતો હોય પણ ખાટલામાંથી ઉભાજ થવાનું હોય અને ખાટલામાં પડ્યા પડ્યા પંચુ હાથ પગ હલાવી શકાતા ન હોય તો તે બિચારો રોગી કસરત શું એના કરમની કરે ? રોગ ટાળો, તેના સાંધા હાકી ચોંટી શો એવું કરો અને પછી તમારા ઉપદેશની અસર તેના ઉપર થયા વિના, નહિજ રહે. ઉત્સાહ વિના કોઈપણ કામ સારું થતું નથી, અને ઉત્સાહ શરીરના બળ વિના આવતોજ નથી. આપણી પ્રજાનું શરીર બળ વધે એવા ઉપાય કરો. શરીરબળ વધવાથી મન બળવાન થશે, મન બળવાન થવાથી ઉદ્યોગ, ઉત્સાહ, વાત્સલ્ય, અને સ્વદેશ પ્રીતિ વગેરે અસંખ્ય શુભો એની મેળેજ ઉત્પન્ન થશે; અને જેમ સુકાં લોકડામાં એક ચીણુમારી પડતાંજ ભડકો થાય છે, તેમ બળવાન વેળામાં આપણી પ્રજાનું અતઃકરણરૂપી સુકાં લોકડામાં સડજ બોધરૂપી ચીણુમારી પડતાંજ પ્રગટ થઈ સધળા દુર્ગુણોનો નાશ અને આ દેશની પડતી રૂપ દારણુ અપાટણી જશે.

અગ્રજી - બ્રહ્મચર્યનો જોગ, એટલે ૨ વર્ષની ઉંમર થતાં પડેલાં પોતેના કામમાં મજાનાં છતાં બાળકના પિતા થવાને



અત્યંત અપદોત ઉદય આરંભે, એ આપણા
શરીરના વિનાશનું પ્રથમ દારણ છે. જ્યારે પ-
દર વર્ષની ક્રમમાં બાળકને યુદ્ધરથો બતાવી
હાલમાં બજવાતાં નોટકોમાં વેપ લઇને આવતા
દુર્ગમદાર વર્ષનાં બાળકોને ત્રીસ આલીશ વર્ષના
દેશિકાને ને તારામતિ કે, જગદેવ ને વીરમતિ
બનાવીને, શરીરમાં બીધે બંધાવાતું ચિન્હ જે
મહેતું કુટુંબ, તેની રૂપાંતરી સરખી પણ દેખાયા
પડેલાં, આપણે આપણાં બાળકોને રોગની
શાળામાં બેસાડીએ છીએ. માથુસની, જાળ-
માંથી કાઢીને વંદની જાળમાં શપ્ત થવાને
સમપણુનો સંસ્કાર કરીએ છીએ અને શરીર
મન તથા હૃદયરૂપી બળવાન કિલ્લાને તોડીને
ચુરેચુરા કરી શકાય એવી સુરંગ બરવાની ક-
ળાને શીખવીએ છીએ અને આ પ્રમાણે કરી
આપણે આપણી દરજ બળવી બજે રાજ થઇ
આપણા મનથી આપણને મોટા ભાગ્યશાળી
માનીએ છીએ.

પાસને રોગ અને પપાલીને ડામ દેવા
જેવા, દેશની ચંદનીના આશમવળા ઉપાયો
સા માટે કરવામાં આવે છે તે સંગમનું નથી.
બીજાં સર્વે ઉપાયો કામના છે, પણ તે પછી
કરવાના છે; હવે ખોદવા પહેલાં, પાણી કાઢવાનું
દોરડું અને ઘડે મહેનત કરીને આપણાં, પણ
ક્યા ખોદવા વિના તેનો શો ઉપયોગ ? અથવા
અનાજ ખવાતું દોષ એવા નળના બંદરને
બળવાન ક્યા વિના ખાતા માટે જાત જાતના
નામના કોદાર બરવા કમ્મર કસીને મચવું
તેના જેવી અજસમજજી બીજ કઇ છે ?

પ્રાણીની પણ વડાલાં ગણાતાં છતાં પણ
મારાં નિદોષ બાળકોનું નિત્ય લોહી ચુસે એવા
વા અપોચ સગવળા યુદ્ધરથાશ્રમ રૂપ પિશાચના
પ્રેમમાં નો તમે તમારા બાળકને સોંપ્યું-દોષ તે
તે બાળકનું રક્ત કરવાની, એક પણ પંખ
ખોશો નહિ. આપણે વિરમ ઉપર તમારા પુત્ર
માથે પાત નંદરચની તમારી ખોરી સમ્મતાને
બાળકને મૂકો તમારા પોતાના ખોરા દર્શાવ્યા

આપણાં શુભા રીવાજથી, તેના મનમાં બંધાઇ
ગમેલા શલભરેલા વિચારથી, અહાયમતા બંગલી
જે દેવ પડી ગઇ છે, અને જે દેવ તેના માથુ
હરનારી છતાં સુખ આપનારી માને છે, તે
દેહી નીપજતાં દારણ કુળો તેને બરાબર
સમજાવે. તેને સ્પષ્ટ કહો કે બાઇ, રહ
વર્ષની વયેજ આપણું શરીર પૂરેપૂરું બંધાઇ
રહે છે. તે પહેલાં અહાયમતા બંગ કરવાથી
શરીરનો નાશ વહેશે યામ છે, અને જેમ
અપ્રીય કે સોમલ ખાઇને જે કલાકમાં મરી
જતાર, માણસ આત્મહાતી ગણાય છે, તેમ
અહાયમ પાળાને સો વર્ષે મરવાને બદલે અહ-
યમતા બંગ કરી શરીરમાં મચળાઇ આપણી,
જાતજાતના રોગનો ભોગ થઇ પડી ચાલીશ કે
પચાશ વર્ષની ઉમરે મરી જવું એ આત્મહાતિજ
છે; અને અપ્રીય ખાઇને કે ગાળા ખાઇને કરેલો
આપવાત મહા પાપ ગણાય છે, તેમ અહાયમતા
બંગથી શરીરનો આણેલો વહેશે અત, એ
પણ આત્મહાતિ હોવાથી મહા પાપજ છે.
વળી હે બાઈ આ અહાયમતા બંગથી આપણે
આપણી એકલાનીજ આત્મહાતિ કરીએ છીએ
એમ નથી, પણ જેમ માકો ગ્રીકલો બંધાયા
જિતા રોપેલા આંખાતું ઉત્તમ ઝાડ કહી થતું
નથી, તેમ કાચા બીધેથી ઉત્પન્ન થયેલાં બાળક
પણ કદી ઉત્તમ બળવાળાં થતાં નથી, તેથી તે
જાળ બળવાળા બાળકનું આયુષ્ય બોધુ થવાથી
આપણે જેમ આપણી પોતાની હત્યા કરીએ
છીએ તેમ આપણા બાળકની પણ પુરે આયુષ્ય
બોધુ થવાથી, આપણે જેમ આપણી પોતાની
હત્યા કરીએ છીએ તેમ આપણા બાળકને પણ
પુરે આયુષ્ય ભોગમ્યા વિના નાની ઉમરમાં મરવું
પામવાને લાપક કરીએ છીએ, તેથી આડંબરી
રીતે તેની પણ હત્યા કરીએ છીએ અને તે
બાળકમાં પણ “બાપ તેજા બેરા” એ પ્રમાણે
આપણાં જવાનું મુજો ઉતરી આવવાથી તે પણ
અકાલી, અહાયમતા બંગ કરવાની રવવાલો યામ
છે, નથી તેનાં છાકરાં નળા તેનાથી વધારે



દુર્બળ થાય છે અને તે છોકરાનાં છોકરાં વળી તેથી પણ વધારે દુર્બળ થાય છે અને આ બધું દુષ્કાળાં ધાંડું મૂળથીજ પહાડી કાઢાતું ન હોવાથી ત્રીશ કે ચાલીશ વર્ષની ઉંમર થતાં તો મરીજ જવાતું; જેથી મૂળ અલ્પચર્યાના બંગ કરનાર આપણે આ પ્રમાણે વધતાં વધતાં બધાં બાળકોની દયા કરનાર થઈએ છીએ, તેની ગણતરી કરવી પણ કઠણ પડે એમ છે; તેથી અણુસમગ્રમાં જો કે અમે તમારું લગ્ન કર્યું છે તોપણ હવે તમે આજથી તમારા વીર્યનું રક્ષણ કરતાં શીખો અને શરીરમાં વીર્યની પૂરેપૂરી જમાવટ થયા વિના તેનો ઉપયોગ કરશો તો તેવા કાચા વીર્યથી ઉત્પન્ન થયેલાં બાળકો તમને અને આ દુનિયાને નકામી વેદેશજન થઈ પડશે. વટાણા જેવડી આંખે થયેલી ફરીઆને તોડી દાવી તેને ઘેર પકવી રસરોટલી જમવાની આશા રાખવી એ જેમ અક્ષતનું આરદાનપણ બતાવે છે, તેમ નખળા વીર્યથી ઉત્પન્ન થયેલાં બાળકો ધરના, કુળના અને દેશના શત્રુ-ગાર થશે એવી આશા રાખવી, એ પણ મૂખાંધ બતાવે છે. માટે આ અલ્પચર્યાના બંગની ધિક્કારવાં લાયક એવે જોને તમે અણુસમગ્રથી નિત્ય સેવો છો, તેને એકદમ બંધ કરો, તમારી પડેલી એવ તમને પુરત નહીં છૂટે માટે દાહ તો માત્ર મહિને મહિનેજ આ દુષ્ટ એવને તમે વશ થતા હો, અને પછી છ છ મહિને કે વર્ષે વર્ષેજ આ આણુપતો નાશ કરનારી એવને વશ થજો. અને હવે ત્રણ ત્રણ વર્ષને આંતરે સેવાતી એવને નિર્દોષ ગણી તે પ્રમાણે તમારું વર્તન કરજો, કરાવજો. તે રીત ઉત્તમ દ્રવ્ય આપનાર નીવડે છે. એ વિષે ઉત્તમ શરીર શાસ્ત્રીઓનાં પુસ્તકો સમજજો અને સમજાવજો. આટલું સમજાવીનેજ એસી રહેશો નહીં, પણ માખાપ રૂપે ગણાતા તમે પોતે પણ તમારું પશુપણ દૂર કરી, અલ્પચર્યાના આ ઉત્તમ નિયમને પાળી, તમારા શુદ્ધ દેહાંતના નિર્મેગ વાતાવરણમાં તમારું ઘર કરજો. તમારે પુત્રી હોય તો તેની મતાપાસે એ પ્રશરને બોધ અપાવજો કે-હે બહેન !

આ સંસારમાં પતિ એજ તારું દેવત છે. તેના શરીરની સુખાકારી ઉપરજ તારા બધા સુખનો આધાર રહેલો છે. તે રોગી હોય અથવા તેનું શરીર ન હોય તો આ સંસારમાં તારું જીવતર નકામું છે માટે તારા પતિનું શરીર રોગ વિનાતું રહે તથા લાંબા આયુષ્ય વાળું થાય, એને માટે તું હંમેશાં કાળજી રાખી રહેજે. બહેન ! અયોગ્ય સમયે અલ્પચર્યાના બગથી તારા પતિને અને તને જેટલું નુકસાન થાય છે એટલું બીજા કશાથી થતું નથી. કોમળાઆનો રોગ થવાથી કે ગાંડીઆ તાવથી લાસ થઈ ગએલું શરીર ઉપાયો કરવાથી ખૂબ સુધારી શકે છે, અને તે માણસ લાંબો કાળ જીવે છે, પણ અકાળે અલ્પચર્યા બંગ કરવાથી તુટી ગએલું શરીર લાંબો ઉપાયથી પણ સુધરી શકતું નથી અને તેનું ટૂંકે થયેલું આયુષ્ય વધતું નથી, માટે એવા ખોટા સુખની લાલચ છોડી કરીશ નહીં. આંખોને આંધળું કામ હોય છે, એવું આપણી જાન ઉપર એટલું આગ, હે બહેન ! તું તારા સહાયરથી ટાળજે. વીર્યનું રક્ષણ ન કરીને જીવજીતી કે કોડીપંથ નમાલાં હાડગાંસનાં પુતળાંઓને જન્મ આપવાને બદલે તારા લોહી અને તારા પતિના વીર્યનું રક્ષણ કરીને યોગ્ય કિર્તિ રેજ, હે બહેન ! તું સિંહજીની જેમ તારી કુખને, તારી ચાતિને અને તારા દેશને દીખાવનાર પીર પુત્રની જનેતા થજે, આવી રાજ બોધ આપી તેના અંતઃકરણમાં અલ્પચર્યા કાયદા સારી રીતે ઠસાવજો.

કરશે નહિ. પણ એ તમારા પુત્રને તમે, અને પુત્રીને તેની માતા, આ બ્રહ્મચર્ય પાળવાના બાબતે, અને તોડવાના અપાર દુઃખને સમજાવવા અને તેટલો યત્ન કરજો; અને તેઓ પોતાનું કદાચ પુણ્ય રીતે રક્ષણ નહિ કરી શકે, તોપણ પોતાની પ્રજાનું અવશ્ય રક્ષણ કરશે. આપણા પૂર્વજોએ આપણું કલ્યાણ વિચારીને બ્રહ્મચર્ય આશ્રમે કાઢી શરીર બળ વધારવાને પ્રયત્ન કરવો જોઈએ તેની સાથે બીજા કેટલાક નિયમો પાળવાની પણ જરૂર છે.

આપણા શરીરની સાને ધાતુઓ ઉત્તમ પ્રકારની થવામાં અન્ન, જલ, વાયુ, સ્વચ્છતા શુદ્ધ દવા અને જોઈએ એટલા પ્રમાણમાં અન્નપાણું, આપણા શરીરની, તથા વસ્ત્રોની આપણાં રહેવાનાં ધનની અને આપણા શહેરોની ધનની સ્વચ્છતા, આતુલ્યની ધુરંધરોએ વિચાર વડે નહીં કરેલી યોગ્ય કસરત, તથા ઉંચી જાતના ભાજ આપે એવી શરીરની, મનની અને વાણીની ટ્રિયાઓથી શરીર ઉત્તમ થાય છે. અને એ બધાં દોષવાળાં હોય છે તો શરીર દોષગ્રાણું થઈ દુર્બળ થાય છે; તેથી કેવી જાતનું અન્ન, કેવી જાતની દવા, કેવા પ્રકારની કસરત વગેરે શરીરને બળવાન કરનાર સાધનો સેવવાની જરૂર છે, તે સારી રીતે ઓછાથી જાણી લેવું.

આ સેખનું મુખ્ય તાત્પર્ય એ છે કે આપણાં બાળકોનું મનોબળ વધારવાને જોગ આપણે રાત દિવસ મહેનત કરીએ છીએ, તેનીજ સાથે અને તે અગાઉ પણ તેમનું શરીર બળ વધારવાના વિષય પણ તન દધીને કરવા જોઈએ. બાળકોને મોડાપડા આપે તો કોઈ કિંમતે ધાલીને બેસાડી મુકવાને બદલે તેમનું શરીર ખીસે એવા ઉપાયો પણ હામે લમાડવા જોઈએ.

શરીર-મજા વિના આપણી કે દેશની મહત્તી કરનાર મનોબળ તથા હૃદયબળ જોઈએ તેવા કદી થઈ શકતાં નથી, માટે શરીર-બળ વધારવા બ્રહ્મચર્ય પામવું જરૂર, અભિવ્યવસ્થા જોઈએ,

તેની સાથે શરીર શાસ્ત્ર, અને આરોગ્યશાસ્ત્રોનું રાત્રિ દિવસ વાચન યોગ્ય રખાવવું, જેનાથી વીર્યદીનપણાથી તમારા મનની થયેલી દુર્બળતાનો નાશ થશે. આમાં કક લખાણ આપણા કલ્યાણ માટેના સખવાની જરૂર પડી છે તેનાથી ન હુઆતાં પ્રતાપી નીપજવાની યોગ્યતાવાળા આર્થ જાણીએ. નાનું યાગ્યો, પરમાત્મા તમને સદ્ગુણો અને સન્માન દર્શાવે, તમારું.

નર્યે નર્યે ગ્રન્થ ।

તાંસ ચૌવીસી વૃજા ૧।। (=) ૧૬ ૨ =

આદિપુરાણ (પૂર્ણ) ૧૬

હરિવંશપુરાણ (૧૬૧ મિલ્ડ) ૬;

તત્ત્વજ્ઞાનતરંગિણી ૧।।

મનમોદન પંચશતી ૧ =

ગોમદસાર જીવકાંડ-કર્મકાંડ ૪।।

અર્થપ્રકાશિકા (સુવર્ણીકી મહી ટીકા) ૩।।

શ્રીપાલ ચરિત્ર (નંદીધરવતમાહાત્મ્ય) ૧।।

આરાધનાકથાકોષ (૧૧૪ કથાઓ) ૪ =

પુણ્યાશ્રવકથાકોષ (૧૬ કથાઓ) ૩

લઘ્વિસાર (લપ્તાસાર સહિત) ૧।।

સાગારધર્મામૃત ટીકા (પૂર્ણ) ૨।।

શ્રેણિક મહારાજકા ચરિત્ર ૧।।

ભારત ૦ દિ ૦ જૈન શિરૈકટરી ૮

જૈન સિદ્ધાન્ત સંગ્રહ (૧૦૦ ગ્રન્થ) ૧।।

ટોહરમલજીકી રહસ્યપૂર્ણ પિઠી ૩

પદ્યનંદિપદીસી ૪

~~પવિત્ર~~ પવિત્ર કેશર ।

૧।। ફી તોચ ।

મિલ્કેના પતા-

મૈનેજ, દિ ૦ જૈનપુસ્તકાલય-સુરત ।



श्री ऋषभ निर्वाण संवत् पर- शंकाएं और उनका उत्तर ।

(ले० श्रीमान पं० विहारीलालजी जैन, सी० टी०

(इन्दौरशहरी, अमरोहा)

विदित हो कि यह लेख गत मास जन-
वरीके " जैन प्रचारक " में, तथा गत १०
जनवरीके " जैन प्रदीप " में और गत माघ
मासके " दिगम्बर जैन " में प्रकाशित हुआ
था जिसे पढ़कर बहुतसे इतिहास प्रेमी हमारे
भाइयोंने अपना हार्दिक हर्ष प्रकट किया और
तीन चार महाशयोंने इस सम्बन्धके विषयमें
कुछ शंकाएं भी की हैं जिससे ज्ञात होता है
कि इस लेखको बहुतसे भाइयोंने ध्यानपूर्वक
बढ़ी रुचिसे पढ़ा है और अपनी २ योग्य
सम्मति देनेका कष्ट उठाकर मेरे उत्साहको
बढ़ाया है और मुझे आभारी बनाया है जिसका
धन्यवाद देनेके लिये मेरे पाम यशोविन शब्द
नहीं हैं ।

कई भाइयोंने जो कुछ शंकाएं प्रकट की
हैं उनका सारांश निम्न लिखित दो भागोंमें
बिभक्त हो सकता है:—

(१) इतने बड़े ७१ अंकोंके महान
सम्बन्धको किस प्रकार पढ़ा जावे जब कि इकाई
दहाई आदि दश शत तक कुछ १९ ही अंक
प्रमाण नियत है ।

(२) किस जैन ग्रन्थके आधारपर और
किस प्रकार यह संवत् निकाला गया है ?

उपरोक्त शंकाओंमेंसे पहली शंका
करते हुए हमारे कुछ आर्य समानी भ्राताओंने
तथा कई अन्य अजैन विद्वानोंने तो
पूर्ण गणितज्ञ होनेका यहाँ तक परिषय
है कि दश शतसे आगे गिनतीका होना ही
असंभव बतला बैठे, जिनपर सचमुच निम्न
लिखित दृष्टान्त पूर्णतया चरितार्थ होता है:—

एक समय एक महासमुद्रके किनारे
बसनेवाला राजहंस एक छोटेसे जलकूपकी मंड
पर आ बैठा उस जलकूपमें रहनेवाले मंडके
राजहंसको देखकर पूछा:—

मंडक—क्यों माई आप कौन हैं ?

राजहंस—मैं राजहंस हूँ ।

मंडक—आपका निवास स्थान कहाँ है ?

राजहंस—माई मैं समुद्रके तट

रहता हूँ ।

मंडक—समुद्र क्या वस्तु है ?

राजहंस—समुद्र एक बहुत बड़े

शायरा नाम है ।



मंदक—वह जलाशय किनना बड़ा है ।

राजहंस—बहुत बड़ा ।

मंदक—(अपनी एक टांग फैलाकर)

क्या इतना बड़ा है जहाँ तक मेरी टांग पहुँची ।

राजहंस—नहीं भाई ! वह बहुत बड़ा है ।

मंदक—(दूसरी टांग और फैलाकर)

क्या इतना बड़ा है ।

राजहंस—नहीं २, वह तो बहुत बड़ा है ।

मंदक—(अपनी चारों टांग फैलाकर)

तो क्या इतना बड़ा होगा ?

राजहंस—(नड़ी गम्भीरतासे) भाई !

वह बहुत ही बड़ा है । तुम उसके फैलाव और महत्वको नहीं समझ सकते ।

मंदक—(कुछ झुंझाकर और अपने कूपके कुछ भागमें चकर लगाकर) अच्छा तो बहुतसे बहुत वह समुद्र इतना बड़ा होगा ?

राजहंस—(बड़े कोमल शब्दोंमें) नहीं भाई जान ! वह बहुत ही बड़ा है ।

मंदक—(अधिक झुंझाहटमें भरकर और अपने जलकूपके चारों ओर पूरा चकर लगाकर) तो क्या वह तुम्हारा समुद्र इतना अधिक बड़ा है । या इससे भी अधिक ?

राजहंस—हां आत ! वह इससे भी वहीं अधिक बड़ा है ।

मंदक—(अति झुंझाकर और राजहंस को महा तिरस्कारकी दृष्टिसे देखकर) झूठ ! झूठ ! ! ! महा झूठ ! ! ! इससे बड़ा कोई जल-शय हो ही नहीं सकता । हा ! तुमको ऐसे निर्मूल और अमंथव प्रचन बोलने लज्जा भी नहीं आती ।

राजहंसने मंदकको महा मूर्ख समझकर फिर कुछ उत्तर न दिया और बड़े शान्त मनसे अपनी राह ली ।

ऐसे पूर्ण विद्वान सर्व विद्यानिधान सर्वज्ञ तुल्य महाशयोसे नम्रता पूर्वक निवेदन है कि वे गंभीर दृष्टिसे अपने हृदयमें विचारें कि क्या गणनाकी भी कोई हद हो सकती है । इस प्रकार विचार दृष्टिसे काम लेने पर भले प्रकार ज्ञात होगा कि गणनाकी कोई हद या सीमा नहीं हो सकती तो भी हम संसारी मनुष्योंको अपनी २ आवश्यकतानुकूल कुछ अंकों तक गणना नियत कर लेनी पड़ती है । अपनी २ आवश्यकताओंको ध्यानमें रखकर हरदेशके विद्वानोंने अपनी २ बुद्धि वा विचारानुसार अनेक प्रकारसे गणनाके कुछ न कुछ स्थानादि मानकर उनकी कल्पित संज्ञा नियत करली हैं, और अपने २ आवश्यककीय सर्व कार्य उसीसे निकाल लेने हैं, उदाहरणके लिये कुछ विद्वानोंकी कल्पित इकाई दहाई आदि नीचे लिखी जाती हैं—

(१) अर्घा फारसीकी इकाई दहाई—इकाई, दहाई, सैफडा, हजार, दशहजार, सौहजार । केवल ६ अंक प्रमाण ।

(२) लीलावतीकी इकाई दहाई—एक, दश, शत, सहस्र, अयुत, लक्ष, प्रयुत, कोटि, अर्बुद, अब्ज, खर्व, निखर्व, महाप्रम, शङ्ख, जलधि, अय्येन, मय, परार्ध । १८ अंक प्रमाण ।

(३) उर्दू हिन्दी भाषाकी इकाई दहाई—इकाई, दहाई, सैफडा, महल्ल, दश सहल्ल,



लक्ष, दश लक्ष, कोटि, दश कोटि, अर्ब, दश अर्ब, खर्व, दश खर्व, नील, दश नील, पद्म, दश पद्म, संख, दश संख ॥ १९ अंक प्रमाण ॥

(४) श्री महावीराचार्य कृत गणित-सार संग्रह* की इकाई दहाई—एक, दश, शत, सहस्र, दश सहस्र, लक्ष, दश लक्ष, कोटि, दश कोटि, शत कोटि, अर्बुद, न्यर्बुद, खर्व, महा खर्व, पद्म, महा पद्म, शोणी, महा शोणी, शंख, महा शंख, सित्य, महा सित्य, शोम, महा शोम ॥ २४ अंक प्रमाण ॥

(५) अंग्रेजी भाषा की इकाई दहाई—इकाई, दहाई, सैकड़ा, हजार, दशहजार, सौहजार, मिलियन, दशमिलियन, सौमिलियन, हजारमिलियन, दश हजारमिलियन, सौ हजारमिलियन, बिलियन, दश बिलियन, सौ बिलियन, हजार बिलियन, दश हजार बिलियन, सौ हजार बिलियन, ट्रिलियन, दश ट्रिलियन, सौ ट्रिलियन, हजार ट्रिलियन, दश हजार ट्रिलियन, सौ हजार ट्रिलियन ॥ २४ अंक प्रमाण । यह इकाई दहाई ऐसे ढंगसे

* यह जैन आचार्य कृत गणित—ग्रन्थ भास्कराचार्य कृत “लीलावती” से ३०० वर्ष पूर्वका है जो अंग्रेजी अनुवाद सहित “मद्रास प्रांत” सरकार की आशुतोषार बर्किंग गवर्नमेंटी (सर्कारी) प्रिंटालयमें प्रकाशित हो चुका है । “लीलावती”में सम्भवतः अधिकतर इसीका अनुकरण है ॥ आज कलकी हिन्दी उर्दुमें प्रचलित इकाई दहाई भी और किसीसे न मिलकर अधिकतरमें इसीकी इकाई दहाईसे मिलती जुलती है ।

नियत की गई है कि कांठिलियन आदि शब्दों द्वारा छह २ अंक उपरोक्त रीतिसे बढ़ाकर २४ अंक प्रमाणसे आगे भी अधिक अंक प्रमाण बढ़ी सुगमतासे की जा सकती है ।

उपरोक्त उदाहरणोंके अतिरिक्त और भी अनेक प्रकारकी इकाई दहाई हैं जो अनेक विद्वानोंने अनेक प्रकारसे कल्पना की हैं और जो माननेवाले जन समूहकी नित्यप्रतिके सर्व व्यवहारिक कार्योंमें पड़नेवाली आवश्यकताओंको पूर्ण करनेके लिये केवल पर्याप्त (उपयुक्त) ही नहीं किन्तु पर्याप्तसे भी अधिक हैं ।

जैनसिद्धान्तमें चूंकि तनिलोक का स्वरूप तथा उसमें रहनेवाले पदार्थका वर्णन इतना अधिक विस्तार पूर्वक है कि नितक शत सहस्रांश भी इस पृथ्वी तलपर अन्यत्र कहीं नहीं पाया जाता इसीलिये इसी सिद्धान्तका गणित भाग भी और भागोंकी समान बहुत ही उच्च कोटिका है ।

गणित विद्याके जो अंक गणित, नीज-गणित, क्षेत्रगणित आदि अनेक भेद हैं उनमेंसे एक अंकगणितके जैन गणितमें दो मुख्य विभाग हैं पहला लौकिक और दूसरा अलौकिक या लोकोत्तर । इन दोनोंमेंसे पहलेके मान, उन्मान, अवमान, गणिमान, प्रतिमान, तदप्रतिमानादि भेद हैं और दूसरे लोकोत्तरके द्रव्यमान, क्षेत्रमान, कालमान, और भावमान इस प्रकार ४ भेद हैं । इन चारों भेदोंमेंसे पहले द्रव्यलोकोत्तरमानके अन्तरगत संख्याके लोकोत्तरमान



और उपमालोकोत्तरमान यह दो उप-
भेद हैं ।

इन दोनोंमेंसे संख्या लोकोत्तर मानके
मूल तीन स्थान अर्थात् संख्यात, असं-
ख्यात, और अनन्य हैं और विशेष २१
स्थान हैं । तथा इसी संख्या लोकोत्तरमान
की सर्वधारा, मयधारा, विषमधारा, कृति-
धारा, अकृतिधारा, घनधारा, अघनधारा,
कृति मात्रिक धारा, अकृति मात्रिक धारा,
घन मात्रिक धारा, अघन मात्रिक धारा, द्वि-
रूप वर्णधारा, द्विरूप घन धारा, और द्वि-
रूप मनाघन धारा, यह १४ धारा हैं ।

दूसरे उपमा लोकोत्तर मानके पल्य, सा-
गर, सख्याकुल आदि ८ स्थान हैं ।

इसी प्रकार दोन काल और भाव लोको-
त्तर मानके अनेक भेद उप-भेद आदि हैं ।

इन सबका सविस्तर वर्णन उदाहरण
आदि सहित जानना हो तो “**बृहत् धारा
परिकर्मा**” और “**महावीर गणित
सार संग्रह**” आदि जैनगणित ग्रन्थोंसे
तथा श्री त्रिलोकसार और श्री गो-
महसारदि जैन ग्रन्थोंके गणित भागसे
वेधें । यहां केवल इतना बताना ही अभीष्ट
है कि इतना बड़ा ७६ अंक प्रमाण संख्यावाला
सम्बन्ध किस प्रकार पड़ा जा सकता है ? इसके
पढ़नेके लिये कौनसी इकाई दहाई है ?

उत्तर बनाया जा चुका है कि “लौकिक
गणित भाग” के ६ भेदोंमें एक चौथा भेद
“**गणित मान**” है । इसके अन्तरगत
जो इकाई दहाई है वह उपरोक्त प्रकार २४
अंक प्रमाण है ।

लौकिक कार्योंमें इससे अधिक तो क्या
इतने अंकोतककी भी आवश्यकता किसीको
नहीं पड़ती । परन्तु लोकोत्तर गणित
भागमें अवश्य अधिककी आवश्यकता पड़ती
है । जिसके लिये जैनाचार्योंने उपरोक्त
प्रकार संख्या लोकोत्तर मानमें जंचन्य संख्यात
आदि उत्कृष्ट अनन्तानन्त पर्यन्त २१ भेदों
और सर्वधारा आदि १४ धाराओंमें तथा
उपमालोकोत्तरमानमें पल्य, सागरादि
द्वारा बड़े विस्तारके साथ आवश्यकतानुसार
सब ही कुछ समझा दिया है । इनमेंसे संख्या-
लोकोत्तरमानके अन्तरगत निम्नलिखित
इकाई दहाई है जिसकी सहायतासे यदि
आवश्यकता पड़े तो हम ७६ अंक तो क्या
सैकड़ों सहस्रों अंक तककी संख्याको बड़ी
सुगमतासे पढ़ सकने हैं । वह यह है—

एक, दश, शत, सहस्र, दश सहस्र,
लक्ष, दश लक्ष, कोटि, दश कोटि, अर्बुद,
दश अर्बुद, सर्व, दश सर्व, नील, दश नील,
पद्म, दश पद्म, शंख, दश शंख, महाशंख,
यहां २० अंक प्रमाण गिनी है । इससे
आगे एकट्टी, दश एकट्टी, शत एकट्टी,
सहस्र एकट्टी, दश सहस्र एकट्टी, आदि महा

× २ को ६४ जगह रखकर परस्पर
गुणा करनेसे जो १८४४६७४४०७६७०९५
५१२१६ सख्या २० अंक प्रमाण आती है
उसे भी एकट्टी कहते हैं । यह सख्या २०
अंक प्रमाण सख्याके संपन्न भेदसे अधिक
है इसीलिये इकाई दहाईके दिसावमें २१
अंक प्रमाण सख्याका नाम भी “**एकट्टी**”
माना गया है ।



ઉપદેશક પિતાંબરદાસજીના અમળનો રિપોર્ટ.

(તા ૧ એપ્રિલ થી ૧૫ મે સુધી)

સામગ્રી-એ સાતસભા અને એક વ્યાખ્યાન સભા કરી. સાત જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. વસ્તીની બદલ એક મોટું દહેરું છે જેમાં ૬૦ નેમ્બર થેન પ્રતિભાઓ છે. પુનરી આદાશ હોવાથી વ્યવસ્થા મારી નથી ને બાબત પચે ધ્યાન આપવું નોંધાયે. ૧) ઉપદેશક કંડમાં મળ્યા.

કરિયાદરા-જણ સભા કરી સ્વાધ્યાય, જિનપૂજન અને કરીતિ ત્યાગપર વિવેચન કરવાથી આઠ જણે સ્વાધ્યાય, અને રો સન્નિભોજન ત્યાગનો નિયમ લીધો. અને એક ધર્મપ્રેમી પ્રદેન ઠંઠાલીમાઇ ને મનુ પધારીએ હતી તેણે કહ્યું કે આપ એવો પ્રયત્ન કરી આપો કે મારા મનુ પછી કોઇપણ સ્ત્રી જાતિ કરીને રહે નહિ. આથી ચોરોવાડમાં ચાર મ મની પત્ન એકઠી કરી આ રિવાજ બંધ કરવાનો ભાવ થયો. ૩) ઉપદેશક કંડમાં મળ્યા.

ચોરાસણ-એ સભા કરી કેટલાકે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. અને એક ઉત્પાદી પ્રદેને હવેની ચાતિની ધણી સ્ત્રીઓને એકઠી કરી જેવા તેમના આગમ નારકી છવોનું વર્ણન કરવાથી તેમનું મન પીગત્યુ અને તેઓએ સંકલ્પી દિસાને ત્યાગ કર્યો. ૧) ઉપદેશક કંડમાં મળ્યા.

ચોરીવાડ-જણ સભા કરી અબક્કા-ત્યગ તથા સ્વાધ્યાય પર વિવેચન કર્યું. કેટલાકે સ્વાધ્યાય અને રાત્રિ ભોજન ત્યાગનો નિયમ લીધો. કરિયાદગમાં નકી ઘરા સુખમ ગોગા, ચોરાસણ, ચોરીવાડ અને કરિયાદરાની પત્ન એકત્ર થઇ, જેમની સન્મુખ જાતિ કરીને રડવાના કુરિવાજ સળધી વિવેચન કરવાથી જણ ઔમવાળાએ તો જણ કરવા કહ્યું. ૫) ચોરીવાડની પત્નના શેર કોદરગવળએ

ના કહી અને કહ્યું કે બાપદાદાની રીતેને છોડવી તે અધર્મ છે. ૧) ઉપદેશક કંડમાં મળ્યા.

ચોરણ-શેર ધુણરામના પ્રયાસથી પાંચ સભા કરી. મામના બીજા લોકો પચુ સભા હાજર થતા હતા. આઠ જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો.

મુરેટી-જણ સભા કરી, પચુ લોકોમાં બીજાકે ઉત્પાદ ન હોવાથી વારંવાર બોલાવવા છતાં પચુ મણાજ થોડા બાધ્યા હાજર થતા હતા. ૫) જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. ૬) રા-વાસાળાવાળા શ્રીમતી મેનાબાઇએ ચોરણની વરીકે બાગકે બાલિકાઓને ધર્મશિક્ષણ આપવા કહ્યું તથા શેર વીરગદ પાનાવડે એક વર્ષ માટે પુસ્તકો આપવા કહ્યું. ૩) ઉપદેશક કંડમાં મળ્યા.

ઘોંઘોડા-અને એક મોટું દહેરું છે જેને કગતા પર ગ્રેમાલય છે. પ્રતિભાની સમ્યા મણી છે. પુનગરી બાબત છે. અને અગાઉ જેનેની ૩૦૦ ધરની વસ્તી હતી જ્યારે હવે ૧૫ ને ધર રહ્યા છે. રોજ વારાફરતી અઠ-પ્રવાથી પૂજન કરાવતું પચે કહ્યું. આઠ જણે સ્વાધ્યાયનો નિયમ લીધો. ૩) ઉપદેશક કંડમાં મળ્યા.

કાંકાટુકી-જણ સભા કરી દેવ ધર્મ ગુરુત્ર અરપ બતાવ્યું, તેટલામાં શા કોદરમલજી ગુરુસે થયને બેઠ્યા કે વગે અગાગ ગુરુજી (બારાક) ની નિન્દા કરો છો. અને કંઈ સમાને બાધ્યતા નથી, જૈનમિત્ર, સિંગમજૈન તથા હાલેલાં પુસ્તકોને અને જોવા પચુ માંગતા નથી. સન્નનો. ૧) જોવી જુદિમાની છે. ૧) ૧)

મઉ-એ સભા કરી, જેથી ૮ જણે સ્વાધ્યાયનો તથા કેટલાકે રાત્રિભોજન ત્યાગનો નિયમ લીધો. દુધ રહી વગેરે મર્યાદાપૂર્વક રાખવાનું કહ્યું.

મુનાઇ- પાંચ દિવસ રહી પત્ન મળા કરી. કેટલાક નિયમો લેવાયા. અને ગુજરાતી શિક્ષણ લેવાની પચુ રુકા નથી, ને બાબત પ્રગટ્ટે ધ્યાન આપવું નોંધાયે. અનેથી ૬



लोग दर्शन करनेके लिये उत्सुक हुये, जिसका पूरा हाल टाईम्स आफ इन्डिया और इंगलिश-मैनने तारीख १२ व १३ मार्चमें प्रकाशित किया है, इसीसे इन श्रीमान् सेठ हुकमचंदजी 'दानवीर' 'रायबहादुर' का फोटो आपके समक्ष दिया गया है कि जो लोग केवल धन कमाना जानते हैं, साथ ही में दान भोग और परोपकारमें खर्च नहीं करते वे सेठ साहिबके इस चरित्रसे उपदेश ग्रहण करें। आपके सुयशसे आज हिन्दुस्थान हीमें क्या विलायत तक इन्दौर नगरीकी प्रशंसा लोगोंके मुंह पर है। धन्य हैं ऐसे वीर पुरुष ! इति—

१३५००००) के दानकी सूची।

जिसका हाल ऊपर दिखाया गया है। यह सेठ साहिबने निज हाथसे परोपकारसे खर्च किये हैं।

५०००) कटारवा ग्राममें जैनी भाईयोंकी स्थिति मंदिर बनवानेकी नहीं होनेसे मंदिर बनवाया, सम्वत् १९५३ में।

६०००) इन्दौरके नडे मंदिरमें कलश चढ़ाया गया जिसमें तीनों भाईयोंने १८०००) दिया जिसमें आपने दिये, सम्वत् १९५७ में।

४०००) छावनीके मंदिरके जीर्णोद्धार कराया व कलाश चढ़ाये, सं० १९५७ में।

२०००००) इन्दौर स्टेशनके पास एक पक्का जैन मंदिर, २ कुबे, एक बंगला व धर्मशाला बिना किसी फीस भाड़ाके मुसाफिरोंको ठहरानेके लिये बनवाई जिसमें सर्व जैन अजैन हिन्दू आरामसे ठहरते हैं, सम्वत् १९५१ में बनवाई और प्रतिष्ठा कराई।

१००००) इन्दौरमें एक औपचालय स्थापित किया सं० १९५३-६० जिससे अनेक रोगियोंको लाभ पहुंचा।

१०००) इन्दौरमें प्लेगके समय गरीब लोगोंको रहनेके लिये Huts शोपड़े बनानेमें मदद दी, संवत् १९६० में।

३०००) तीनों भाईयोंने एक जैन सहायक भोजनशाला खोली जिससे असमर्थ जैनी व विधवाओंको भोजन रेल खर्च सहायता दी जाती है जिसमें आपका लगा सं० १९६२ में।

३२०००) इन्दौर नाशियामें हुकमचंद दिगम्बर जैन बोर्डिंग खोला, जिसके खर्चके लिये १२८) माहवार ३२०००) का सुद देते हैं इससे संस्कृतकी पाठशालाको खर्च जिसमें अंगरेजीके विद्यार्थियोंको जो स्कूल कालेजोंमें पढ़ते हैं एक घंटा धर्म शिक्षा दी जाती है, और विद्यार्थियोंको ७) से १०) तक स्कालरशिप दी जाती है। संवत् १९६२ में।

२५०००) नाशियांजीके मंदिर व धर्मशालाका खर्च चलायानेके लिये स्थाई फंडमें दिये, संवत् १९६५ में।

७०००) इन्दौरके तुकोजीराव हास्पिटलमें तीनों भाईयोंकी तरफसे महानजन बार्ड बनाई गई जिसमें आपने दिये, सं० १९६६ में।

१०००) लेडी मिंटो हास्पिटलमें दिये संवत् १९६६ में।

१००००) श्री मारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाके प्रबंध खातेमें दिये, संवत् १९६७ में।

१०००) श्री स्वाहाद महाविद्यालय काशीके स्थाई फंडमें दिये, संवत् १९६७ में।

१००००) श्रीसम्मोदशिक्षरानी पर्यतरसा फंडमें अपने जगह २ चूबरकर चंग कराया।



इन्दौरसे २१०००) भेजे उसमें आपने दिये, संवत् १९६७ में ।

१०००) इन्दौर नरेश तुकोजीराव बहादुरके कारोनेशनके समय विद्या खातेमें दिये, संवत् १९६८ में ।

१६०००) और धर्मशाला सुधारणार्थ उसी समय दिये संवत् १९६८ में ।

२००००) श्रीमान् तुकोजीराव महारान बहादुरके हाथसे कोई पब्लिक फायदेकी संस्था खोलनेके लिये, सं० १९६९ में ।

२५००) मालवा प्रांतिक समाके उप-देशक भंडारमें दिये संवत् १९७० में ।

११००) मालवा प्रांतिक समाके प्रबंधातेमें दिये, संवत् १९७० में ।

१००००) बम्बईमें मंदिरजी बनानेके लिये चन्दा कराया जिसमें आपने दिये, सं० १९७० में ।

१०२००) श्री ऋषभप्रज्ञानार्थश्रमके डेपुटेशनको इन्दौरमें बुलाकर १६५००) का चन्दा करा दिया जिसमें आपने दिये संवत् १९७० में ।

१००००) इन्दौर दीतबारामें तीनों भाई मित्रकर एक मंदिर बनवा रहे हैं जिसमें आपके लगे, संवत् १९७० में ।

२५०००) स्टेशनके पासवाली धर्म-शालाको पक्की करानेके लिये १६०००) के सिवाय और दिये संवत् १९७० में ।

२५००) महाविद्यालय मधुराके वासनातेमें दिये, संवत् १९७० में ।

२१००) बावनगनाजी बड़वानीमें जीर्णोद्धारके चन्देमें दिये संवत् १९६९ में ।

३६६५००) जवरीबागमें महाविद्यालय बोर्डिंग बनानेके लिये दिये। १६६५००)

इमारत जवरीबागमें ८० विद्यार्थियोंके लायक बोर्डिंग महाविद्यालयादिकी - इमारत बनी ।

२०००००) स्पाई फंड - सर्व चलातेको १०००००) कंचनबाई श्राविकाश्रमके लिये दिये, संवत् १९७२ में ।

- ८०००) सन् १९१४ में इम्पीरियल वार रिलीफ फंडमें दिये ७०००) छावनीसे और १०००) इन्दौर मार्फत ।

१०००००) सन् १९१५ में - ४००००) किंग एडवर्ड हास्पिटल छावनी ।

१००००) लेडी ओउवायरगर्ल्स स्कूल छावनी ।

९२०००) सन् १९१५ में एक वि-शाल धर्मशाला दिनचारा बाजारमें बनाई ।

२०००) सन् १९१५ में मध्य भारत साहित्य समितिके मकान बनानेमें ।

१००००) उदासीन आश्रम इन्दौरमें लगाने मध्ये ३००००) के ।

३००००) सन् १९१५ में आपकी वर्षगांठका उत्सव महाविद्यालयमें मनाया गया उस समय सहायता दी ।

२५०००) सन् १९१५ में मेडीकल स्कूल छावनीके लिये बिल्डिंग खरीदकर दिया।

१००००) इन्दौरमें आयुर्वेदीय औ-षधालय खोला जिसमें दस हजारका मुद्र खर्च करते हैं ।

१५००००) छोटी रकमें संस्थाओंको दी गई दस वर्षमें जो कि १००) से १००) तककी हैं ।

कुल दान रु. १३६५००००)



कर्त्तव्यपालन ।

अब हो गये हम पतित कैसे ?
 सो हमीसे जान लो ।
 प्रमाण क्या ? कर रहे जो,
 उसीसे हमें पहिचान लो ॥
 त्याग कर कर्त्तव्य अपना,
 वनादी भूमि भारत मुर्दनी ।
 पूर्वजोंका धन मान खोकर,
 हो गये सब निर्धनी ॥ १ ॥
 छोड़कर उच्चादर्श अपना,
 हम विलासी बनने लगे ।
 कहां वह ब्रह्मचर्य पाछन ?
 जब होर सम बनने लगे ॥
 बल वीर्य पौरुष तौ है नहीं,
 कहो क्या वाकी रहा ?
 हो चुकी अब सब नष्ट माया,
 शरीर ही वाकी हहा ॥ २ ॥
 क्या शरीरको भी नष्ट करके,
 उठा चाहो तुम अभी ? ।
 यह विचार तो कुबिचार है,
 जलसे दही होता कभी ? ॥
 कार्य क्षेत्रमें चलो उठकर,
 यही प्रथम कर्त्तव्य हो ।
 करते नहीं यदि कर्त्तव्यपालन,
 तो नहीं श्रान्तव्य हो ॥ ३ ॥
 अपना करो यदि कर्त्तव्य पाछन,
 फल नहीं क्या पावोगे ।
 इस वीर जननी भूमिके फिर,
 वीर नर कहल्यवगे ॥
 महावीर, बुद्धसम धर्मरक्षक,
 अरु जो हुवे योधा यहां ।
 कहो किस भूमिके इतिहासमें,
 अरु वे हैं भी कहां ? ॥ ४ ॥

क्या उन्हींका मान सन्मान है,
 यह जिसे तुम कर रहे ?
 नहीं, यह तुम्हारा मान है,
 व्यर्थ क्यों हो सड़ रहे ?
 यदि है कुछ अंश अवशिष्ट उनका,
 तो पढ़े क्या तक रहे ?
 उन्नति फिर दिखा दो देशकी,
 अधिक क्यों हो बंक रहे ॥ ५ ॥
 धन्यार्ह हो तुम सभी सेवा,
 देशकी करने लगे ।
 ले गया पापी काल जिसको,
 उसे फिर लाने लगे ॥
 सोनेकि चिड़िया इस उक्तिको,
 कर सको यदि फिर सही ।
 झट वन जावगे गुरु तुम सभी,
 अरु प्रसन्न होंगी मही ॥ ६ ॥
 मुसलमान हिन्दू अरु जैन सब हैं,
 वीर पुत्र इस भूमिके ।
 उच्च कर दिखा दो इस देशको,
 मातृपदको चूमिके ॥
 माता, सेवा विना स्वपुत्री,
 सुखी है होती नहीं ।
 करो अब शीघ्र प्रसन्न उसको,
 दुःखित वो होवे नहीं ॥ ७ ॥
 “विनाशकाले विपरीत बुद्धि,”
 जगतमें सुविख्यात है ।
 स्वकार्य देखो शीघ्र अपने,
 यह तो नहीं चरितार्थ है ॥
 करो तुम सब कर्त्तव्य पालन,
 कहना यही अब सार है ।
 जीता समय फिर आता नहीं,
 असार यह संसार है ॥ ८ ॥
 वीरतादय ।

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोटींग तरफधी प्रगट थतुं मासिक

❧ दिगंबर जैन. ❧

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेष्टैस्तुगवेषणाभिः ।

सरोपयत्यत्रमिदं प्रवर्तताम्, दैगम्बर जैन समाज मानम् ॥

वर्ष १० वॉ. | वीर संवत् २४४३. आपाठ-श्रावण. विक्रम सं० १९७३ | अक्ट ९-१० वॉ.



जैनियोंके कितनेकी त्योहार ऐसे हैं जो सार्वजनिक त्योहार-
रक्षावधन पर्व । रूपसे वर्षोंसे माने जा रहे हैं । उनमेंसे एक त्योहार रक्षावधन पर्व भी है जो अभी ही श्रावण सुद १५ ने दिन आनेवाला है । यह वही दिन है कि जिन दिन अकंपनाचार्यादि ७०० मुनियोंको बलिराजा द्वारा किया हुआ उपसर्ग विष्णुकुमार महामुनि द्वारा विज्रिया ऋद्धिके वस्त्रसे दूर हुआ था जिनके स्मरणार्थ हस्तिनापुरके रहीसोंने अपने हाथोंमें रक्षाका दोरा अपनी भगनियोंसे बाँटाया था और प्रति वर्ष इसी मुवाफिक होता रहा सो अचनक सार्व-जनिक त्योहार रूपमें प्रचलित है । इस पवित्र त्योहारमें हमारा कर्तव्य है कि मन्दिरोंमें श्री सङ्गना पूजन यानि विष्णुकुमार महामुनिका पूजन करके रक्षावधनकी वज्र सत्रको सुनारों

और अपनी भगनियोंसे रक्षावधनका दोरा बाँटाकर उनको कुछ न कुछ द्रव्य देने हैं उसी तरह इस शुभ दिनके स्मरणमें हमारी समाजसेविका भगनियोंको कुछ न कुछ दान भेजना चाहिये । यह सेविकाएँ कौन हैं और कहाँ हैं ? ऐसा प्रश्न सहज उठेगा तो हम प्रथम ही सूचित कर देते हैं कि यह समाजसेविकाएँ उत्पन्न करनेका स्थान वम्बईका “आचिका श्रम” है जिनको जैनमहिलाभूषण श्रीमती मगनबाई, श्रीमती कंकुबाई, श्रीमती ललितबाई आदि भगनियों सुचारु रूपसे चला रही हैं परन्तु आश्रममें स्थायी फंड न होनेसे वार्षिक, मासिक या तो फुटकर सहायतासे कार्य नि-भाया जाता है इसलिये वर्षमें एकवार और सो भी यह रक्षावधन पर्व जैसे पवित्र त्योहार पर तो इस आश्रमको अग्र्य याद करना चाहिये और जो कुछ सहायता बन सके तुरंत ही मनीओर्डरसे भेजना चाहिये । आचिकाश्रमका पता—मुन्गेली बाग, तारुदेव, वम्बई है ।



श्रीमान स्वर्गीय विद्वद्गुरु स्यादुवादवारिधि
वादिगनकेशरी न्याय-
डेपुटेशन पार्टीका वाचस्पति पं० गोपाल-
कर्तव्य । दासजी बैरयाका नाम

स्मरण रखनेके लिये
उनका स्थापित "जैन सिद्धांत विद्यालय—मुरे-
ना" के लिये एक लक्ष रुपयेका स्थायी फंड
करके इस विद्यालयके साथ पंडितजीका नाम
जोड़ देनेका प्रस्ताव इन्दौरकी मिटिंगमें हो
चुका है और फंडमें करीब ५००००) भरे
गये हैं और शेषके लिये पं० धनलालजी
आदिका डेपुटेशन निकालनेका प्रस्ताव हुआ
है जिसको एक महीना बीत चुका तो भी
इस डेपुटेशनने इसके लिये क्या प्रयास किया
यह कुछ भी जाननेमें नहीं आया । यह काम
घर बैठे रहनेसे या लेख लिखनेसे नहीं हो
सकेगा परन्तु शहरोंशहर जाकर पब्लिक सभों
बुलाकर उसमें विचारालयके लाभ प्रकट करके जब
उसी वस्तु चंदा करावेंगे तब ही हो सकेगा ।
जिस कार्यप्रणालीसे माननीय पं० मदनमोहन
मालवीयजी आदिने हिंदु युनिवर्सिटिके लिये
घूम २ कर चंदा एकत्र किया था इस तरह
यह कार्य भी होना चाहिये और सो भी बहुत
ही शीघ्रताके साथ होनेकी आवश्यकता है
अन्यथा इस बातका विस्मरण हो जानेसे चंदा
एकत्र करनेमें सकृपता मिटना मुश्किल है ।



हमारे पाठक इन्दौर निवासी रावबहादुर
दानवीर शेट बन्धुगण-
शेठकल्याणमलजीका मठजीसे तो अच्छी
शास्त्रदान । तरहसे परिचित है ।
आपने अपनी पूज्य

मातुश्री फुलूपाईके स्मरणार्थ ६१०००) का
दान प्रकट किया है जिसमें ५००) शास्त्रदानके
लिये कहा गया है जिसके लिये सेठजीसे प्र-
व्यवहार होनेपर इस शास्त्रदानका लाभ हमारे
पाठकोंको देनेकी स्वीकारता मिली है और इस
शास्त्रदानमें श्री अशाकविकृत महावीरचरित्र
ग्रन्थ, कि जिसका हिन्दी अनुवाद हमने पं०
खूबचंदजी शास्त्रीसे तैयार करवाया है, दिया
जायगा । इसकी २००० कापीमें ऐसी मंहगीके
समयमें खर्च अधिक पड़ेगा इसलिये १००)
अधिक देनेकी शेटजीने कृपादृष्टि दिखाई
है और इससे और भी बाटा पड़ेगा
तो आफिससे लगाकर यह "महा-
वीरचरित्र" नामक नवीन उपयोगी
ग्रन्थ हमारे पाठकोंको उपहार स्वरूप दिया
जायगा । इसके छपनेका कार्य प्रारंभ होगया
है और जहांतक हो शीघ्र ही प्रकट होकर
ग्राहकोंकी सेवामें उपस्थित होगा । हमारे
सभी उपहारोंमें इसवारका यह उपहारग्रन्थ
बड़े ही महत्वका प्रकट होगा ।

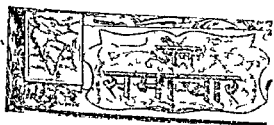


हमारे सोलहकारण और दशलक्षणपर्वके
दिन निकट आ रहे हैं
सोलहकारण और और इसमें हमारे कद्
दशलक्षण पर्व । भाई यह दोनों व्रत करेंगे
और सास करके हर एक

मंदिरजीमें दोनों व्रतोंकी पूजा तो अवश्य
पढ़ी जायगी परन्तु जहांतक हम जानते हैं
पूजाके साथ २ इस पर्वका क्या भाहात्म्य है
और दर्शनविशुद्धि, विनयसंनतता शीघ्र



बनेष्वनतीचारादि सोहल भावनाओंको सम-
जाया नहीं जाता, जिससे इस पर्वमें हमारा
क्या २ कर्तव्य होना चाहिये यह सर्वसाधा-
रणको मालूम नहीं होता इसलिये यह खास
आवश्यक है कि इन दिनोंमें यह दोनों
धर्मोंकी २६ भावनाओंका वर्णन सबको सु-
नाया जावे और व्याख्यानदि द्वारा भी इस
पर्वका महात्म्य प्रकट किया जावे । और जो
कोई यह दोनों व्रत करते हैं उनको तो सो
लहकारणधर्म और दशलक्षणधर्मकी कई
पुस्तकें मंगाकर अपने २ नगरमें वितरण क-
रनी चाहिए ।



श्री सम्मेदशिखरजीके पट्टेका
केस-इस पहाड़का पट्टा हमको देनेके लिये
सर एन्ड्रु फ्रेजर हुक्म कर गये थे और
१००००) अपनी तरफसे दिये भी गये थे
परंतु बा० लार्ड मिन्टोने जाने समय यह हुक्म
रद्द किया था जिससे हमारी तरफसे राजा
पालगंजके उपर हमारीबागकी कोर्टमें ता०
१-९-१३ को दावा किया गया था कि
पट्टा कर दिया जाय या तो हमारे रुपये, उसका
सुद और आज तकका उकसान हमको दिलाया
जाय आदि । प्रथम बा० धनूलालजी और
बा० परमेश्वरीदासजीके नामसे दावा किया था

परंतु यह दोनों महाशयका अकस्मात् स्वर्गवास
हो जानेसे रा० व० दा० सेठ हुक्मचंदजी,
ला० जंबूप्रसादजी, सेठ हरमुखदासजी, ला०
प्रभुदयालजी आदि ९ महाशयोंके नामसे दावा
चलानेकी स्वीकारता ता० १-२-१५ को
मिलने पर ता० १३-५-१५ को इसस
(Issues) निकल कर विलायतको सर
एन्ड्रु फ्रेजर और एफ० डबल्यू ड्यूकके इन-
हार लेनेके लिये कमीशन ता० १७-२-१६ को
गया था वह मार्च १९१७ को वापिस आया
परंतु फ्रेजर साहेब बीमार होनेसे इनहार नहीं
दे सके । बाद मुकद्दमा ता० २८-६-१७ को
शुरू होकर अपनी ओरसे बा० मौजीलालजी,
बा० सुन्दरलालजी बैनाडा, बा० दुर्गाप्रसादजी,
बा० विहारीलालजी, एफ० डबल्यू० ड्यूक
(कमीशनसे) की गवाही ली गई और मुद्दाल-
योंकी ओरसे बा० शक्तिप्रसाद, बा०
विपिनविहारी, लक्ष्मीचंद (श्वे०) की गवाही
हुई थी । बाद इसका चुकाटा हमारीबाग
कोर्टसे ता० २९-७-१७ को यह मिला कि
मुकद्दमा मय खर्चके खारिज (डिस्मिस) किया
जाता है । इसका विशेष खुलासा पत्रद्वारा
आनेपर मालूम होगा और आगे क्या कार्रवाई
करनी चाहिये उसका की विचार किया
जायगा ।

ढालगण चिना मूल्य-कविवर टंकचंद्र
कृत ढालगण नामक ओटीसी पुस्तक, कि
जिसमें ३२ उपदेशात्मक पदोंका संग्रह है
इमके प्रकाशक-बालमुकुंद मूलचंद जैन,



सिंहौर छावनीसे आधे आनेका पोस्टेज स्टैप भेजनेसे विना मूल्य मिलती है ।

चाहिये सच्ची देशसेवा, और समाजसेवाका दृढ़ संकल्प आदि ।

त्यागी ब्रह्मचारियोंका चातुर्मास
निम्नलिखित त्यागी ब्रह्मचारियोंके चातुर्मास निम्न लिखित स्थानोंपर होनेकी खबर हमें मिली है ।

मुनि अनंतकीर्तिजी—कोल्हापुर ।

“ चंद्रसागरजी—त्रागीदोरा (वांस्वाडा)

ऐलक पन्नालालजी—पहाडी धीरज, देहली ।

ब्र० शीतलप्रसादजी—तुक्कुगंज, इन्दौर ।

वर्णी भगीरथजी—खतौली (मुजफरनगर)

ब्र० शांतिदासजी—शाहपुर (निमाड)

ब्र० महावीरप्रसादजी—नासिक

भ० सुरेन्द्रकीर्तिजी—सोनित्रा (पेट्लाड)

भ० विजयकीर्तिजी—ओराण (प्रांतिज)

भ० मुर्नीद्रकीर्तिजी—डुंगरपुर (रजपुताना)

ब्र० हेमसागरजी—करमसद (आणंद)

और भी त्यागी ब्रह्मचारियोंके चातुर्मासकी खबरें हमें मिलेगी तो प्रकट की जायगी ।

झालरापाटन शहरमें—गत ता०

१९ को सेठ लालचंदजी सेठीके सभापतित्वमें

सभा हुई जिसमें देशभक्त श्री० दादाभाई

नौरोजी और पं० गोपालदासजी बैरैयाकी

मुख्य पर शोक मनाया गया जिसमें पं०

गिरधर शर्मानि यह दोनों महापुरुषोंके देश-

सेवा और समाजसेवाके कार्योंका बड़ी खूबीके

साथ कथान किया । अंतमें सभापतिमहोदयने

कहा कि अब भी इस देशमें कई दादाभाई

और कई पंडित गोपालदासजी बन सकते हैं ।

प्रतिमा मिली—नयाबांस (हाथरस) से सुखवासीलाल जैन लिखते हैं कि यहांसे एक फर्लांगपर एक कुमारको वर्तनके लिये मिट्टी खोदते खोदते ११ हाथ जमीनके नीचेसे एक प्रतिमा प्राप्त हुई जो उन्होंने ले जाकर अपने मकानपर रख ली । बाद जाट कौमका एक मनुष्यने इसके मकानपर यह प्रतिमा देखकर कहा कि तु इस प्रतिमाको अपने मकानपर न रख आदि । फिर सबको कह देनेपर सब जैनी भाई यह प्रतिमा देखनेको आये और गत ता० १९ को श्री चन्द्रप्रभुजीके प्राचीन मंदिरमें यह प्रतिमा लाकर विराजमान की गई है । पंडित लोग परीक्षा करने आ रहे हैं । कोई पूजनीक कहता है और नहीं कहता है कि प्रतिमा खंडित हो गई है, नाकपरकी नोक नीची मालूम होती है आदि । इस बातका शीघ्र ही निर्णय होना चाहिये और प्रतिमा, जीपर कुछ लेख मालूम होता हो तो प्रकट करना चाहिये ।

ज्वरांकुश मुफ्त—माउलाल कन्हैयालाल पाटणी मु० कांची (अहमदनगर) ने हमेंको “ज्वरांकुश” का नमूना भेजा है जिसके बारेमें आप लिखते हैं कि इससे सब प्रकारके ज्वर आराम होते हैं आदि और जिनियोंको डाक्टरचर्च भेजनेपर हम मुफ्त भेजते हैं आदि । इसलिये जिन भाइयोंको ज्वरांकुश चाहिये पत्र और पोस्टेज स्वर्च भेजकर भेगा लें ।



राजगृहीमें दो मुकदमें चल रहे थे । जिनका फैसला हो गया है और अपनी धर्म-शालाके सामनेकी जमीन (एक खेत जिनका प्लॉट नं० ४८४५ है) की अपीलमें पटना हाईकोर्टमें (८००) हम लोगोंसे श्रे० भाइयोंको दिलवाये और जमीनका सब हक हमको दिला दिया गया है । इसमें नवीनमन्दिर बनवानेका शीलारोपण ता. २२-६-१७ को हस्तं ला० न्यायमलजी देहलीके हुआ था । दूसरा मुकदमा पहाड़के उपरके १९ मंदिर दि० आम्नायके हैं उनके कब्जे वास्तका विहार कोर्टमें चलता था जिसमें मजि० सा०ने नं० १४९ फौजदारीका नोटिश बहाल रखनेपर हाईकोर्टमें अपील की गई थी जिसका चुका-दा माननीय जनोंने ता० ३-७-१७को किया कि खारिज किया जाता है आदि । हाईकोर्टमें यह दोनों फैसले हमारे ही लाभमें हुए हैं ।

इन्दौरमें गत ता. २४-६-१७को सु-रेना विद्यालयको स्थायी करने और उसके साथ स्व० पं० गोपालदासजीका नाम जोड़नेके लिये रा० व० दा० सेठ हुकमचन्दजीके सभा-पत्रित्वमें सभा की हुई थी जिसमें (१००००) सेठ हुकमचन्दजी, (१०००) सेठ रोडमल मेहरान सुसारी, (५०१) फतेहचन्द इन्दौर और (२५१) भीलानी चांदुलालने दिये तथा (३८०००) तो सेठ हरीभाई देवरुण सोला-पुरवालोंकी तरफसे पहलेसे मिलनेकी स्वीकारता हुई थी इससे एक लक्ष रु०के स्थायी फन्डके लिये और (५००००) की जरूरत है ।

खतौलीमें दत्ता अग्रवाल भाईओंको प्रशाल पूजनादिके लिये ता. २२-६-१७को दि० जैन चैत्यालयकी स्थापना व० शीतल-प्रसादजी द्वारा हो गई है । इस प्रकार दा-होदवाले अधिवेशनका प्रस्ताव अमलमें लाया गया और दत्ते अग्रवाल भाईयोंको धर्मसाधन-में सुभीता हो गया है । प्रयासका फल !

टीका लगानेसे हानि-लाभशंकर लक्ष्मीदासने गजटमें एक पत्र प्रगट कराके दिल्-लाया है कि चेषक (शीतल) का टीका जो बच्चोंको लगाया जाता है उससे बहुत हानि होती है । इसके विरुद्ध लंडनमें एक सभा है जो इसके रोकनेका प्रयत्न करती है । पता है "National anti-vivisection league, Donison House, Vauxhall Bridge Road, London S. W." इसके उद्योगसे इंग्रेज सरकारने विधायतमें जवर्दस्ती टीका करानेका कायदा उठा दिया है, अब लाखों इंग्रेज अपने बच्चोंको टीका नहीं लगवाते । वहाँ अब ५० लाख बिना टीका लगे बच्चे हैं (नम्बई कानि-कल मार्च १९, १९१७) । इस देशवासियोंको भी समझकर टीका लगानेसे बचाना चाहिये व सरकारको भी यदि यह हानिकारक है तो इस बातको बन्द करा देना चाहिये ।

“जैनमित्र”

पशु-वध बंद-उत्तरपुर (बुंदेलखंड)
नेरशने अपने राज्यमें आज्ञा निकाली है कि
(१) राज्यभरमें मितने तालाब हैं उनमें जाल
या बंशी न डाली जाय अर्थात् मछलियां न
मारी जाय । (२) राज्यभरमें भेरी आवाजे



सिवाय कोई शिकार न खेलें । (३) राज्य-भरमें देवी-देवताको जीवकी बली न दे । (४) राज्यभरमें बकरा बकरी लेनेवाले हिंसक और बेचनेवाले दोनोंसे चौथाई २ रुपये लिये जाय । दूसरे महाराजाओंको इन दयालु महाराजाका अनुकरण करना चाहिये ।

बम्बई और अहमदाबादमें श्रीयुत वाडीलाल मोतीलाल द्वारा संयुक्त जैनबोर्डिंगकी स्थापना होगई है और झालरापाटनके महाराजा भवानीसिंह बहादुरने २० वर्ष तक इस संस्थाको (५००) वार्षिक सहायता (दस हजार रु०) देनेकी स्वीकारता दी है ।

इन्दौरमें कंचनबाई श्राविकाश्रमका वार्षिकोत्सव और उद्योगशाला खोलनेका समारंभ श्री सो० कमलाबाई कीबेके सभापतित्वमें ता० १७-६-१७ को हुआ था । इसी मौकेपर प्रमुखा और संचालिका कंचनबाईजीका व्याख्यान बहुत ही प्रभावशाली हुआ था ।

कन्याका दाम बढ गया—जयपुरमें भी कन्याविक्रयकी भरमार है । अभी एक कन्या जिसका मूल्य ९००) पका कर लिया था उसको २०००) देकर दूसरेने खरीद ली ! अतीव खेद है कि जयपुरकी जैन पंचायती इसका कुछ प्रबंध नहीं करती ।

इन्दौरमें सेठ हुकमचंदजी आदि तीनों भाइयोंने मिच्छर जो नवीन मंदिर करीब दो लाख रुपये लगाकर बनवाया है उसमें प्रतिमाजी विराजमान करनेका उत्सव आपाढ़ वदी १० को हुआ था जिस वस्तु सेठजीने रु. ५००००) भस्मन आदिके लिये और अ-

पनी पत्नी सौ. श्री कंचनबाईकी तबीयत डेढ़ वर्षमें अच्छी हो जायगी तो १०००००) भर चांदीसे श्रीजीकी तीन प्रतिमा बनवाकर उपरकी वेदीमें विराजमान करनेकी प्रतिज्ञा ली है ।

झयडाका अंत—झयडा (टोंक)में करीब ५० वर्ष हुए दिगंबर और श्वेतांबरमें मंदिरके लिये झयडा चल रहा था वह अदालतसे तय होकर दिगंबर जीते और श्वेतांबरियोंको १६००) देने पडे । उस मंदिरजीमें आपाढ़ सुद १०मी को प्रतिमाजी भी पधराई गई और उत्सव भी किया गया था ।

देहली निवासी बाबू प्यारेलालजी वकील **रायसाहिब**के पदसे विमुक्ति हुए हैं ।

कचनेरमें विवाहोत्सवके समय पाठशालामें बड़ी सभा की गई और खंडेलवाल पंच महासभाका भी नैमित्तिक अधिवेशन होकर तीन प्रस्ताव पास हुए कि—सभाका अधिवेशन आगामी कार्तिक सुदी १५ को कचनेरजीमें किया जाय, नादगांव वाली बाईके मृत्युपर मुकद्दमा चलाया जाय और नायडोंगरी वाले रुपचंदजीसे कुछ अनीति हो जानेके कारण दंड लिया जाय कि वे १०००) कचनेर पाठशालाको दें और वहां जाकर कर्मदहन पृथाविधान करावें और सम्मंदशिक्षरकी यात्रा करें । यह अनीति क्या हो गई थी सो भी प्रकट होनेकी आवश्यकता है, जिससे समाजको मालूम हो जावे कि यह कैसा अराध था और उसको उचित दंड दिया गया है या नहीं ।

જબલપુરમાં સિંચેડે ગરીબતાની કે વૌત્ર-
કા વ્યાહ હો ગયા નિમ્મં વિદ્યાદાનમે તો
કુટ મી નહીં દિવા ગયા પરંતુ રંડોકા નાચ
તો સ્વં કરાયા ગયા ! ! ! સેદ !

અલાહવાદ બોર્ડિંગમે સ્વ વર્ષકી કો-
લેજની પરીક્ષામે બેઠે હુણ ૧૬ વિધર્મિયોમેસે
૧૪ વાસ હુણ હું ।

દાનવીરની સ્મૃતિ સલા-શ્રીમાન સ્વર્ગીય
દાનવીર જૈનકુલપુત્ર શેઠ માણેકચંદ-
જે. પી ના સ્વર્ગવાસની સ્મૃતિ સભાઓ
અખાડ વદ ૯ ને દિને મુંબઈ આનિકાશ્રમ,
અમદાવાદ બોર્ડિંગ, કોલ્હાપુર બોર્ડિંગ, અને
સ્તલામ બોર્ડિંગમાં થઈ આ શેઠજીના અનોકિ
ગુણોનું વર્ણન થઈ તેનું અનુકરણ કરવાનો
બોધ આપાયો હતો. દરેક સ્થળે દર વર્ષે
આની સભા થવાની જરૂર છે.

સોલાપુરમાં તા. ૧૭-૬-૧૭ ને દિને સ્ત્રી
સેડો શ્રીમતી તારાબાઈનું 'સ્રીઓને કસરત
કરવાની જરૂર' ઉપર જાહેર ભાષણ અપાણ
હતું તથા જૈન પાઠશાળામાં સ્ત્રીઓપરથી
કસરતો બતાવી વ્યાખ્યાન અપાણું હતું. વળી
ત્યાની જાતમ નેમચંદ વ્યાયામશાળાના મહીની
ખેસો જોઈ મિસ તારાબાઈ પ્રસન્ન થયા હતાં
અને પોતાના એક ખેસની અડધી ઉપજ
વ્યાયામશાળાને અર્પણ કરી હતી.

અમદાવાદમાં એક દિગંધરજીનું શુભ થયું-
જાણી (અમલગર, ઈડર) થી શા માણેકલાલ
બાઈચંદ એક પત્ર દ્વારા જણાવે છે કે 'મારા
બાઈ જગનલાલ બાઈચંદ (કે જેની ઉંમર ૨૪
વર્ષની અને રંગે સ્વામિક ગોરાશ છે) અખાડ
સુદ ૭ ને દિને ધીના'ડમ્મા લઈ અમદાવાદ
આપાર માટે ગયા હતા અને ત્યાં ઉતરી
ધીના ડમ્મા દલાસને ત્યાં મુકી વીસીમાં જમવા
એવા તે દરમ્યાન કાલુપુર ગઢારની વીસીમાં
મંત્રબાઈના ડેલાના માળ ઉપર અગર નીચે

બેઠે જીસ (૧) ના માણુમેએ તેને એકસો
જોઈ ગમરાવી નાંખી માળ ઉપર ચઢાવી
કળને કરી અખાડ સુદ ૮ ને દિને
પૂતા લઈ ગયેલાનું જણાયાથી અમે
તથા અમારા બનેલી મગનલાલ લખમીચંદે ત્યાં
જઈ તપાસ કરી, પણ બે દિવસ રાખી ત્યાંથી
કચે ડેકાએ લઈ ગયા તેનો પતો નથી, પણ
સ્વાભાવિક રીતે અમારા જાણુવામાં આવે છે
કે પંચમ તામે રૂકી લઈ ગયેલાનું સંભ-
ળાય છે, જેથી રૂકી; તરફના દિગંધર જૈનો
આ બાબતની તપાસ કરી અમારા બાઈને છો-
ડાવે તો મહાન પુણ્યગમ કરી શકશે. અમારે
શું કરવું તેની કંઈ સમજ પડતી નથી અને
નીરાશ થઈને બેઠા છીએ. વળી આપણા દિ-
ગંધરી બાઈચંદએ અમદાવાદ વગેરે શહેરોમાં
જતાં બહુ હોંશિયારી રાખવી જેથી ફરીથી
આવા લોકો દસાવી જીંદગીને હાનિ કરે નહી,
તેમ જૈન લોકોએ અમદાવાદની વીસીમાં જમના
જવું નહીં કારણકે એ લોકો ગમે તેવા મા-
ણુસને લાવવ્ય આવી પાછળ રહીને દસાવે
છે. વળી એ વીસીઓમાં જમવાથી વટવાઈ
મરના જવું થાય છે તથા જીંદગીને પણ
નુકસાન થાય છે, માટે એથી સાવધ રહેવું..."

જો આ બાબત ખરી હોય, તે નામદાર
સરકારે આ બાબત પી તરતજ તપાસ કરી બાઈ
જગનલાલ બાઈચંદનો પતો મેળવી આપવાને
બનવું કરવાની આવશ્યકતા છે.

આ વર્ષે બાદરના માસ બે હોવાથી તથા
પર્યુપણ પરમાએક તિથિ ઘટતી હોવાથી સોલહ-
કારણ પર પ્ર. બાદરના સુદ ૧૫થીજ શરૂ કરવાના
છે તેમજ દશલક્ષણપર પીજા બાદરના સુદ ૪
થીજ શરૂ કરવાના છે અને પંચમેર સ્થાપના
તદા પંચમીનું વ્રત તો પાલ્યમેજ કરવાનું છે
જે અમે અમારા પંચાગમાં પ્રકટ કરી
ગયા છીએ, પણ પ્રાચીન વિવાજ મુજબ
કેટલાક બદારકો પર્યુપણના દિવસોનાં ડીપણા !
ગામેગામ બીડે છે તેમ જુગરુરથી બ. સુતી'પ-



કાર્તિકે વ્રતનો જોરો' ગામેગામ ખીડ્યો છે તેમાં પ્ર. ભાદરવા વદ ૧ થી સોલહદશરણ અને પંચમેશ્વર તથા પંચમીનું વ્રત ખીજ ભાદરવા સુદ ચોથે કરવાનું લખ્યું છે તે તદ્દન ખોટું છે, માટે એથી લખણમાં પડતું નહિ. મોટાપ મેળવાવાનાં લોભથી આવા પ્રયાસ કરનારા અપદ ભટ્ટારકોથી સર્વેએ વારંવાર સાવધ રહેવાની જરૂર છે.

મૃત્યુ સમયે દાન-આમોદના હરજીવન (કાળીદાસ) હરજીવનદાસના પુત્રના સ્મરણાર્થે ૮૦) તું દાન નીચે પ્રમાણે કરવામાં આવ્યું છે-

૧૦) અમદાવાદ શ્રે. મો. દિ. જૈન બેડિંગ, ૭) આવિકાશ્રમ, મુંબઈ, ૬૩) તીર્થો, ગામેના મંદિરો તથા સદાવત વજોરેમાં.

લ. વિજયકીર્તિએ જોરાણમાં ચાતુર્માસ કરી દીધો છે, તેમના સંખ્યામાં એક લખનાર જણાવે છે કે એમની સાથે પાલખી ઉચકનારા બોધજી સિવાય ખીજા ૧૦ માણસો તથા ૪ ઘોડા છે (હજી આ રાજવેલવ તો ખાલુ ચોડે કહેવાય !). જોરાણ પ્રાંતિજ વિભાગોમાં ભાવનાઓ આપવાની મરજી ન હોવા છતાં પણ એક ગામવાળાએ આખી, ખીજા ગામ વાળાએ આખી એમ કરતાં બધા ગામવાળાઓને આપવી પડે છે । ન આપવાવાળાને પણ આપવી પડે છે તેનું કારણ એ છે કે ન્યાતિમાં આપણી હલકાઈ પડશે ને નિંદા થશે અને એ વાત ખરી છે કે જે માણસ ભટ્ટારકજી મહારાજના મત (ધારા ૧) પ્રમાણે ન ચાલે તેની દરેક વાતમાં ને રીતમાં અદ્યોષ કરે છે ને મહારાજના મતને પુષ્ટિ આપે છે વજોરે." મહારાજની એક દિવસની ભાવનામાં કુદલે કેટલો ખર્ચ થાય છે અને એક ભાવના દીક વધુમાં વધુ કેટલા રૂપા પડાવાય છે તે પણ આ ભાષ લખી મોકલશે તો અમે પ્રકટ કરના છજીએ છીએ. જોરાણ પ્રાંતિજના ભોળા ભાષજી શું હજી નહીં એતશે ? એવું બસા (૧) ભટ્ટારકો મુજરાતના ભોળા ભક્તોને ખમાવવામાં હોંશિયાર છે એમાં કંઈ શક નથી.

મેવાડા યુવક મંડળને સૂચના-સોહ ગ્રામાં આ મંડળની થયેલી બેઠક સંખ્યામાં કાણીસાની મિત્રમંડળી એક પત્ર દ્વારા જણાવે છે કે એ બેઠકમાં ગામડાઓમાં ખરાબર આમત્રણ ન થવાથી જોષએ તેવી સંખ્યા એકઠી થઈ નહોતી માટે મંડળનું કાર્ય મજબુત કરવાને નીચલા પ્રયાસો થવાની જરૂર છે-(૧) હેતુઓ છપાવી પ્રકટ કરવા (૨) દર છમાસે બેઠક કરવી, ૩) સાધારણ અમુક ફી લેવી વજોરે. આ આખત એના કાર્યકર્તાઓએ લક્ષ આપવાની જરૂર છે.

ચેથાપુરની પાઠસાળામાં આખાહસુદ ૧૧ને દિને શીવગંજના શા. પ્રેમચંદ કરતુરચંદના પ્રમુખપણાનીચે થયેલી સભામાં શા. સુનીલાલ સંકળચંદે માનસિક શક્તિ વિષે બાપણ આપ્યું હતું અને ૨૦ની સંખ્યા લાભ લે છે. પ્રમુખે રૂ. ૧૦) તું ધડીયાળ, ૨) મદદ અને પ્રભાવના વેચી હતી. નવાગામ (ઉદેપુર) માં એક વર્ષ થયાં દોભાડા કરતુરચંદ અમથારામ દિ. જૈન પાઠસાળાની સ્થાપના થઈ છે તેની મુલાકાત કેશરીયાજીની યાત્રાએ જતાં શેઠ લલ્લુભાઈ લખમીચંદ ચોકશી, વીરચંદભાઈ (મુંડેડી) અને સુનીમ નાનચંદે લીધી હતી, જેથી જણાયું છે કે કુલ સંખ્યા ૫૦ છે, જેને વ્યવારિક અને ધાર્મિક શિક્ષણ અપાય છે. શિક્ષણ તપાસતાં તે સંતોષ કારક જણાયું હતું અને વિદ્યાર્થીઓને ઉત્તમ બોધ આપી ઇનામ વેચવામાં આવ્યું હતું.

નહેર સભા અને દારૂ નિષેધ-વહાસણ (મહીકાંક)માં શા. હાથીચંદ માણેચંદ સોનાસણવાળાએ જઈ એક રાત્રે નહેરસભા કરી ગામના ૪૦૦ માણસોને એકત્ર કરી દારૂ નિષેધપર અસરકારક વિવેચન કરવાથી ગામના રજપુત વજોરે તમામ લોકોએ દારૂ નહીં પીવાની પ્રતિજ્ઞા લીધી હતી અને સદીઓ કરી આખી હતી તેમજ એ કસવ તોડે તેની પાસે રૂ. ૫૦ દેવાનો અને તે દંડનો ઉપયોગ ચોખ્ખાનામાં ચોખ્ખાપૂરક કરવાને એક કમીટી પગ નીમાઈ હતી. પ્રયાસનું રજા !



લગ્નને નામે વાલાઓ ઉપર

થતો જુલમ.

- સધ્યાકાળનો વખત થયો છે. સૂર્ય પશ્ચિમ દિશામાં પોતાની ગતિથી જઈ રહ્યો છે. દિવસનું અન્નવાણું મંદ પડવા લાગ્યું છે. પશ્ચિમ દિશામાં રંગબેરંગી કવર દેખાય છે. રાત્રિ પોતાનો અધકાળ ધીરેધીરે આકાશમાં પ્રસરવા લાગી છે. જિનમંદિરમાં આરતી થતી હોવાથી ધંટમંજરી આદિનો અવાજ થઈ રહ્યો છે. ભગ્યજનો જિનમંદિરમાં આરતી થાય છે એમ જાણી ધરકામ બંધ કરી મંદિરમાં જાય છે. આરતી થઈ રહ્યા પછી શાસ્ત્રસભા થઈ ત્યાર પછી પાઠશાળા ઉપડી સવળા વિદ્યાર્થીઓ પાઠશાળામાં ભેગા થયા છે તેવામાં મોહનલાલને તેમના મિત્ર છોટાલાલનો સમાગમ થયો. એ બંને મિત્રો વચ્ચે યોડીવાર ગાંધિ ઉત્તરિ ત્રિવે ચર્ચા થઈ, ત્યારપછી મોહનલાલે છોટાલાલને કહ્યું કે આ વર્ષે તો આપણી ગાંધિમાં એવા જનાવ બન્યા છે કે જે સંભળવાથી આપણને ખેદ થાય છે.

છોટાલાલ-શું, શું બદલે?

મોહનલાલ-તમે જાણતા નથી કે ઘણી સુવર્તીઓ શોક રૂપી ચણીએ વીધાઈ ઘણું દુઃખ ભોગવે છે અને ઘણીની છંદગી છૂદ અને બાળ પતિને પાતલે પડવાથી રડ થઈ ગઈ છે.

છોટાલાલ-આવા દુષ્ટ કર્યોતું ક્યા તમામના લેવામાં આવે છે તેપણ સમજતા નથી કે કેટલીક તરણ, બાળાઓને આખી છંદગીસર અસહ્ય દુઃખ ઉઠાવતું પડે છે.

મોહનલાલ-પણ મિત્ર, આપણી ગાંધિમાં બાળનમ મોટા પ્રમાણમાં થાય છે. છતાં ગાંધિ અત્રેસરની આંખ કપાતી નથી તે આપણે અને ગાંધિનું દુર્ભાગ સ્વયંજા પુરવું છે. નેના અધિકારો આંધળા, નેનું કંઈક પણ

કપામાં પડે એ તહેવત પણ હવે આવી કરી ચુકી છે.

છોટાલાલ-પણ તાલમાં તો જે મન્યાય તે બોલું. પેના આપણા એક ગાંધિ બાળાએ પોતાની બાળાસુત્રીના લગ્ન વદ સાથે કરી તેનો જન્મ બંધ કર્યો છે.

મોહનલાલ-આવા કૃત્યેકરનાને તેના લેનાર દેનાર તથા તેમાં મંમતિ આપનારાઓનું અંધ થાય, તેમાં તરણ બાળાઓનો શો અપરાધ ? અર્થાત્ કંઈ નહિ.

છોટાલાલ-ભાઈ, આવા કરી આંખે પોતાની વડાલી બાળાઓને કુત્રામાં નાંખવા કોણ અત્ય શુદ્ધિના તૈયાર થયા હશે.

મોહનલાલ-મારા વચવામાં આબુ છે કે-સ્વાર્થી મળ્યાં શાસ્ત્ર લખનાર, નહિ કોઈ નાર પક્ષ કરનાર;

તેમ જ્યાં સુધી આપણી ગાંધિમાં બાળાલગ્ન અને વદ વિવાદ સંબંધી કંઈ પણ પ્રમાણ થયો નથી ત્યાં સુધી હું તો એમજ કહીશ કે આવા કૃત્યે કરનાર તથા તેને સંમતિ આપનારાઓનું અધમ્માન છે.

છોટાલાલ-અરે ! અંતારી માણસો અજાને વશ થઈ પોતાની બાળાનું કંઈ દિન ચાકતા નથી. જમ, પેમા અને કુળજ દેહત જુએ છે. મુરતીઓ કેવો છે તેની કંઈ બોળ બોળ કુત્રા નથી અને પોતાની મિથ્યા મોટાઈ અને પેમાના સ્વાર્થથી મોકડાની કાંટે માળા આંખા જેવું કરે છે.

મોહનલાલ-અધુ ! આપણે એક જુલમ કિમતનું કપડું સેવાને કેટેવો ભવે વિચાર કરીએ છીએ, તેમ રસ્તામાં સારા સંગાતને માટે કેટલી કાળજી રાખીએ છીએ તેટલી કાળજી જે જન્મ પર્યંતનો સાર્થી કરવાનો છે, જેના પર મુખદુઃખનો આધાર રાખવાનો છે તેને માટે અવેશનરૂપી અજાનેને વશ થયેલા કેટલાક માણસો કંઈપણ વિચાર કરવા નથી. અમણ, શુદ્ધિ વણિક ! કહેવાયું છે કે જો



આધીન થઇ અવધિત જોડાં મેળવે છે તે કેટલું શોચનીય અને વિચારવા જેવું છે ? એથી કેવાં માણં પરીણામો આવે છે તે તેઓ અનુભવે છે, ફિનિયામાં જુએ છે, છતાં છતી આંખે પોતાના પગમાં કુદાડો મારી દુઃખ વહેરી લે છે અને નીચેની કહેવત મુજબ અને છે.

“જે આત્માના પ્રભુય હર આદેશ ભણ્યા વિનાનાં, લગ્નો કીધાં લગ્ન નહિ એ સાખ થુતિ પુરે ? હા-ડાહી સ્ત્રીને અમુધ પતિ એ ધા ઉડો અંતરે છે, જોડી વિના યવન ઝરણુંના વહાળ્યું પડે છે.

છોટાલાલ—ભાઈ, તમારું કહેવું સત્ય છે. બાળાઓ ખરેખર ધરસકે રહે છે, તોપણ આપણી શાંતિના કેટલાક અંગની ભાષણો પોતાનો તુલ્ય રેકે છોડતા નથી, માન ખોટી મોટાઈને વળગીને પતંગીઆની ભાષક માહોમ કરીને વિચાર કર્યા વિના એકદમ સાહસભર્યું કામ કરે છે અને અંતે તેમને પાછળથી ધણું સોસવું પડે છે.

મારા સુઘ બાઈઓ અને શાંતિ અગ્રેસરો, મારી નમ્રતા પૂર્વક દરેક પ્રત્યે વિનંતી છે કે આપણે તેનું મૂળ કારણ દ્રષ્ટમાં નેહણું તો જણુશી કે આપણે કેળવણીમાં કેટલા પછાત છીએ ! લગભગ આપણા દેશનો રૂં લાગ કેળવણીમાં પછાત છે. આપણા દરેક બાઈઓની ફરજ છે કે પોતાના છોકરા તથા છોકરીઓને સારી કેળવણી આપે. કેળવણી માટે વડોદરા રાજ્યના નામદાર ગાયકવાડ મહારાજા ખાસ ધ્યાન આપે છે અને ફરજિયાત કેળવણી અપાય છે. તેઓ શ્રીમતે બાળકમ માટે ફરજિયાત દાયદો ધડો છે અને આપણું ધણું દિત ઇન્દિયુ છે તેથી આપણે તેઓ શ્રીમતેનો નેટશે આભાર માનીએ તેટલો એહો છે. આવા આપણા માયાળુ સરકાર તરફથી સાગણી સેવાયા છતાં આપણા કેટલાક બાઈઓ હંડને પાંચ ધાય છે, તોપણ આ વિષય પર કંઈ પણ ધ્યાન આપતા નથી, તે ધણું મૂઝા બરેણું છે. ભારે આપણે આપણા સંતાનને કેળવણી

આપીશું અને શાંતિમાંથી ફરિયાજો દૂર કરોશું, બાળલગ્ન, કન્યા વિક્રય, વહાલિવાડ વગેરે ફરિયાજોનો યોગ્ય પ્રયત્ન કરી તે અટકાવવા અને તે બદલ એકપતામી ધ્યાન ખેંચીશું, તો આપણી ચઢતી ધરો અને આપણે ઉચ્ચ સ્થિતિ પર આવીશું.

એક દશાદુભક શાંતિ સેવક.

માનો કહી હમારી ।

(ગજલ)

જનતિ જો ચાહો કરની, માનો કહી હમારી ।
પરમાદ ત્યાગ દો અવ, માનો કહી હમારી ॥૧॥
દેં લાલોં જૈની ઘેરો, નરો મૂલ મંચ જાને ।
પરચાર કરદો ઘર ઘર, માનો કહી હમારી ॥૨॥
અજાનોરો રો અંધે, પૂજે કુદેવ પેહુતે ।
રો સત્યદેવ મતલા, માનો કહી હમારી ॥૩॥
ધનુ ઠગિયોં જાલિયોંકો, ગુરુદેવ જાન પૂજે ।
મતલાદો સત્ય ગુરુકો, માનો કહી હમારી ॥૪॥
પરુ કર્મ મુખ્ય થાવક, પાલે ન બહુત માર્દ ।
મતલાદો મુખ્ય કર્તવ્ય, માનો કહી હમારી ॥૫॥
વિદ્યાસે હીન રોકર, નરો ઘાંજ દેલ જાને ।
વિદ્યા પ્રચાર કરદો, માનો કહી હમારી ॥૬॥
જ્ઞાન્યોંકે જ્ઞાન કે વિન, રોજાંય શટ વિધર્મી ।
અન ચિગતો કો લઠાલો, માનો કહી હમારી ॥૭॥
હસ ‘રત્ન’ ધર્મકા અવ, કરદો પ્રચાર ઘર ઘર ।
જૈની વરણે ગાલો, માનો કહી હમારી ॥૮॥

રતનલાલ જ્ઞાણશ્રી ફોલીકળા (મધુરા)

દો રંગીન નકશે ।

અઢાઈ દ્વીપકા નકશા (૮)

નવનસ્ત્રવેકે ભેદકા હસ

(સંગ્રહિત ઓર વરલેસા સહિત) નિર્ફ. -)

મૈંગાનેકા પત્તા-

મૈનેમર-દિ૦ જૈન પુસ્તકાલય-મૂરત.



શેઠ પ્ર. મો. દિ. જૈન યોડિંગ

સ્કૂલ-અમદાવાદ.

મહેરખાન મહારાણી,

ઉપરના નામવાળા ખાતાના સંવ. કિત. ચિંતકોને માણુ છે કે ગયા વરસ સન ૧૯૧૨ની સાલમાં દિવાળી પહેલાં રિવાજ યુગ્મ એક મેળાવડો થયો હતો, જે વખતે ત્રિહીટસે કમી-દીની એક બેઠક થઇ હતી, જેમાં અન્ય કામો સાથે કલમ સીસ્ટમ અને કીચન સીસ્ટમ ઉપર કેટલીક ચર્ચા થઇ હતી ખાતાના કાર્યવાહકો તરફથી જેવી ફતીલ રચુ કરવામાં આવી હતી કે હાલની મેળાવારી તથા વિદ્યાર્થીઓની જોરાક સંબંધી ચાલુ ફરીઆદો વગેરે અગવડો દૂર કરવા તથા ખાતાની કાયમતા સચવાઈ રહેવા માટે તેનું ખરચ તેની આવકની હદમાંજ રહે, એવા હેતુથી કલમ સીસ્ટમની તરફેણમાં કાર્યવાહકો હતા, જ્યારે કમીદીના કેટલાક શુદ્ધચો-તું માનતું હવું કે કલમ સીસ્ટમથી હાલની કાયમ આવકમાંથી ગરીબ વર્ગના વિદ્યાર્થીઓ જેઓ હાલ તેન પેઠીકે દારૂમેળ તરફેણ થાય છે, તેમને મળતો લાભ અટકી દરેક વિદ્યાર્થીને માથે ખરચતો બેતને વધી જશે, તેથી એ નવી સીસ્ટમ હાલ બે વરસ દાખલ કરવી અટકાવીને આવકમાં કંઈક વધારો થાય એવાં પગલાં લેવાં છેવટે કમીદી એવા નિશ્ચય ઉપર આવી હતી કે સન ૧૯૧૭-૧૮ ને સન ૧૯૧૮-૧૯ (માર્ચ સન ૧૯૧૯) સુધી જુની રીટી પ્રમાણે કીચન સીસ્ટમ ચાલુ રાખવી અને તે દરમ્યાન સન ૧૯૧૭ (ચાલુ) સાલના વાર્ષિક મેળાવડા વખતે કમીદીએ આવક વધારવાનો કંઈક રસ્તો શોધી કાઢવો, જેથી ગરીબ વિદ્યાર્થીઓને બલિષ્ઠમાં લાભ મળવો ચાલુ રહે.

આ ઉપરથી ત્રિહીટસે કમીદીના મેકેટર તથા મેમ્બર મહેરખાન મારી વિનિત છે કે સન ૧૯૧૭ ની સાલના મેળાવડા માટે વખત નહક આપ્યો છે તેને સંબંધી આગમી દિલચાલ કરી કંઈક મંગીન મદદ

મળે એવી જોડવણી થવી જોઈએ. આમકાચ હાલના મુધરેલા જમાનામાં ચારે દિશાઓમાં બધી કામમાં કેળવણીનાં વાગ્યાં વાગી રહ્યા છે. જુદા જુદા પ્રકારે દરેક શ્રીમંત પોતાના ધનનો ઉપયોગ કેળવણી વધારવામાં કરી રહેલ છે તેના મનચૂંતિપ્રિય સનેજ વખતમાં આપણા શ્રીમંતો અને કેળવાયલાઓ જો ઉંઘે તો દુનિયાની કે-ળવણીની સરતમાં તેઓ પાછા પડી જશે. શ્રીમંત મન્નિ દાનેશ્વરી શેઠ માણુકચંદ હીરાચંદ અને સખાવતે પાઠાદુર તેમના કુટુંબે આવા ખાતા માટે આપણા યુગ્મરાત-માં પહેલ કરી આપણને ન્દયત કર્યા છે-પાણી સીચી આપણું છે ત્યારે ૧૪ વરસ પડી પશુ આપણે તેને પુર જોશમાં લાવવું એ હાલના કેળવાયલા યુવાનો અને શ્રીમંત સખી મરદોતું કામ છે. યુગ્મરાતના સંચુક-ર્યો, હજી તો આ કેળવણીનું પહેલુંજ ખાતું છે તેને મદદ કરવા માટે ન્દયત થાઓ, જોશ રાખો અને પ્રમાણિક નિશ્ચયી કામ કરી પોતાની દરજ્જા બળવો. આપણા વડીલોની પ્રતિષ્ઠા સાચવી રાખો, વધારો. કેળવણી વિના આપણી વ્યાપારી કામ એકઠાર અવસ્થામાં પડી રહી છે તેને અજવાળામાં લાવવા મારા બહાદુર કેળવાયલા રતો બહાર પડો. હૈન, મનથી પુરતી મદદ આપો, અને તેથી કરી શ્રીમંત સખી શુદ્ધચોના ઉદાર હાથને ધનથી લંબાવ-પ્રયત્ન કરો. એક હાથે તાણી પકડી નથી. શેઠ હીરાચંદ જુમાનજીના કુટુંબે પહેલ કરી દુનિયાની દૃષ્ટિમાં આપણને આગળ સુકયા છે તો તે મોઝો સાચવી રાખવા તન મન ધનથી પુરો પ્રયાસ કરશો તો વીર બગવાન તમારા કાર્યને યશ આપશે. તમારતુ ।

મહાધુર્યલક્ષ્મી ।

(જવીન હિન્દી રૂપગાથ)

મુલ્ય ત્રિંક ચાર આના

મૈનેજ, દિ. મૈને પુસ્તકાલય-સુરત ।



श्री बृहस्पति निर्वाण संवत् पर- शंकाएं और उनका उत्तर ।

(छे० पं० बिहारीलालजी जैन, अमरोहा)

[गताक्रमे आगे]

अब रही दूसरी शंका कि किस जैन ग्रन्थके आधार पर और किस प्रकार यह सम्बन्ध निकाला गया है । इस शंकाके विषयमें हमारे किसी २ जैन भ्राताने बड़े आश्चर्यजनक शब्दोंमें लिखा है कि क्या सागरोंकी भी वर्ष हो सकते हैं ? जैसे सागरके जलकी थाह नहीं ऐसे ही सागरके वर्षोंकी गिनती नहीं । सागरके वर्षोंकी गिनती करना मानो समुद्रको खुल्लूमें माप लेना और भ्रष्टानोंको भ्रममें डाल देना है । यदि सागरके वर्षोंकी गिनती हो सकती तो बड़े २ जैनाचार्योंने क्यों शास्त्रोंमें नहीं लिखा तथा एक योजन (दोसहस्र कोश) व्यासका और एक योजन ही गहरा गङ्गा मोघमृमिके सात दिन तकके मेंढके बालाग्रोंसे खून भरकर और सौ २ वर्षके अन्तरसे एक २ टुकड़ा निकालना बताकर जो एक पक्षके वर्षोंकी गणना अचार्योंने बताई है वह इतने पक्षमें डालकर किसलिये कथनको इतना बढ़ाया और अपने समयादिको रोया ? बस अंकोंमें पक्षके वर्षोंकी गिनती लिख देते इत्यादि..... इसके उत्तरमें शास्त्रप्रमाणों हाथ शंका दूर करनेसे पहिले यह निवेदन

है कि उपरोक्त बातोंको दृष्टिगोचर करते हुए हमारे भ्रातृगण जो कुछ शंका करें वह ठीक ही है । वास्तवमें कालके बहुत बड़े भागको "सागर" का नाम इसी लिये दिया गया है कि वह सागर अर्थात् समुद्रके समान महान है । सागरके महान कालको जिस सागर (समुद्र) से उपमा जैन ग्रन्थोंमें दी गई है वह सागर (समुद्र) भी कोई सामान्य सागर "हिन्द महासागर" या "पारिफिक महासागर" आदि जैसा छोटा सा नहीं किन्तु उसकी उपमा उस "लवण समुद्र" नामक महासागरसे दी गई है जो एक लक्ष महायोजनके व्यासवाले "जम्बूद्वीप" के निर्दिष्ट दो लक्ष महायोजन चौड़ा और एक सहस्र महायोजन गहरा बलयाकार है या इसके महत्वको भले प्रकार समझनेके लिये यों जान लीजिये कि अमेरिनी विचारानुसार आजसुतकी मानी हुई सारी पृथ्वी जिसमें "एशिया, यूरोप, अफ्रीका, अमेरिका" आदि सर्व देश देशान्तर और "हिन्द महा सागर

एक महायोजन दो सहस्र कोश या लगभग ४ सहस्र मीलका होता है ।



पाम्फिक महासागर, अष्टादिक महासागर'
आदि सर्व छोटे बड़े समुद्र गर्भित हैं ऐसी
बड़ी २ छाछों करोड़ों पृथिव्या जिन एक
ही "लवण समुद्र" में समा सकती है।
ऐसे बड़े सागर (समुद्र) से सागरके काँठों
उत्पत्ति दी गई है। ऐसी अवस्था में
हमारे भ्रातृगणकी यह शक्ति कि "सागरके
काँठों वर्षों में गिन लेना और वह भी एक
सागरकी नहीं किन्तु काँडाकोडि सागर महान
काँठों केवल ७६ ही अंकों में गिन लेना
मानो सागरको चुल्ह में माँग लेनेकी समान
सर्वथा असम्भव है आदि" वास्तव में यथार्थ
है। परन्तु जिन समय ऐसे दावा करनेवाले
भ्रातृगणको यह ज्ञान होगा कि इनने अधिक
बड़े "लवण समुद्र" के सम्पूर्ण जलके
यदि बहुतसे छोटे २ बिन्दु सरसोंके दानोंके बराबर
कर लिये जायें तो उन सर्व बिन्दुओंकी संख्या
७६ अंक तो दूर रहे ४७ अंकों से भी अधिक
न बड़ेगी, तब तो उनकी डाँका मासे सी
बाहर निकटकर न जाने कहाँ कहाँ तरु
पहुँच जायगी। और फिर जिन समय उन्हें
यह ज्ञान होगा कि गणितज्ञोंके लिये गणितज्ञ
भी कोई पूर्ण गणितज्ञ नहीं किन्तु मामान्य
होके लिये लवण समुद्र तो क्या, उससे छाछों
करोड़ों गुणें बड़ महासमुद्रके परसोंसे भी
शताश सहस्राश ट्रेन्सोर्टेड बिन्दुओंकी गिन्ती
बना देना एक वैसी ही साधारण सी बात है
जैसे कि किसी दीमाकी ईंटोंकी गिन्ती बना
देना है, तब तो नहीं कहा जा सकता कि उनके
चित्तकी उपेक्षा उनके विचारोंकी त्रुटि
करके कहीं पहुँचा वे।

अब रही यह बात कि यदि सागरके
कालकी गिन्ती वर्षों में निकाल लेना सम्भव
होता तो बड़े २ आचार्यों में भी निकालकर
शास्त्रों में क्यों न बनादी अथवा पत्रकी
संख्याको बतानेके लिये महान गढ़ा खोदने
और बालाघ्न करने आदि आठवें क्यों रना ?
इसके उत्तर में निम्नलिखित निवेदन है—

(१) आचार्यों तो सब कुछ निकाल
कर शास्त्रों में रख दिया (जैसा कि आगे
चलकर हमी लेखसे आपको ज्ञात होगा) पर
जब हम ऐसे ग्रन्थोंको देखें पढ़ें और ध्यान
पूर्वक समझनेका प्रयत्न करें तब ही तो जानेंगे।
हमारे पवित्र और सम्पूर्ण विद्याओंके भटार-
रूप जैन ग्रन्थों में कोई बात कल्पित व मन
गढ़न नहीं किन्तु जो कुछ है वह सर्व वास्तविक
और यथार्थ है और हर विषयको ऐसी उत्तम
से उत्तम रीतिसे समझा दिया गया है कि
योग्य रीतिसे ध्यानपूर्वक समझनेवालेको कुछ
भी कठिनाई नहीं पड़ती। परन्तु और सागरा-
दिका हिसाब लगा देना तो एक बहुत ही
साधारण और छोटीसी बात है पर जैन ग्रन्थों
में तो गणिता विद्याके (अन्य विद्याओं
या विषयोंके समान) बड़े ही उत्तम २
माधनाटि बताने विषयमें विषय और कठिनसे
कठिन प्रश्नों और सूक्ष्मसे सूक्ष्म बातोंको इस
उत्तम और सुगम रीतिमें माध कर सिद्ध कर
दियाया है कि देखकर आज कलके स्कूलोंके
पढ़े पढ़े २ गणितज्ञ तथा विद्वान महाशय
बातों तब उगड़ी दयाकर अवगमन समुद्रम,



(२) एक महायोजन अर्थात् दो हजार कोस या लगभग चार हजार मील व्यासका और इतना ही गहरा गोल गर्त खोदकर जो पल्यका हिस्सा समझाया गया है। उसका एक कारण तो यह है कि पल्य शब्दका अर्थ ही खत्ती खलियान, गढ़ा या गार है। दूसरा मुख्य कारण यह है कि पल्यके बड़े भारी कालका महत्व भले प्रकार चित्तर अंकित हो सके। यदि उसके वर्षोंकी महान् संख्याको केवल अंकोंमें लिख दिया जाता (जो ४७ अंक प्रमाण ही है) तो उसके वर्षोंकी संख्याको केवल अंकोंमें लिख दिया जाता (जो ४७ अंक प्रमाण ही है) तो उसके वर्षोंकी महान् संख्याका पूर्ण और वास्तविक महत्व कदापि चित्तर अंकित न होता। जैसा कि श्री ऋषभ निर्वाण सम्बत्का वास्तविक और पूर्ण महत्व शंका करनेवालोंके चित्तर अंकित नहीं हुआ जो पल्यके वर्षोंकी संख्यासे केवल संखों गुणा बड़ा नहीं किन्तु संखों गुणोंसे भी करोड़ों गुणा बड़ा ७६ अंकोंमें है।

उदाहरणके लिये श्री जिनवाणी के अपुनरुक्त असरोंकी संख्या हीको ले लीजिये जो एक वष एकट्ठी अर्थात् १८४४६७४४-०७३७०८५९१६१९ केवल २० अंक प्रमाण है। इन अंकोंमें बता देनेसे इसका पूर्ण महत्व हृदय पर अंकित नहीं होता। परन्तु इन असरोंकी संख्याके विषयमें यदि उस प्रकार कहा जाय कि वह इतनी अधिक दृढ़ी है कि अगर उन सम्पूर्ण अपुनरुक्त असरोंको कागज पर लिखा जाय तो उनके लिखनेमें कमसे कम

योंकी तोलके बराबर स्याही खर्च हो जायगी और अँधे, खँधे, हाथियोंके बज्रन बराबर कागज खर्च होगा और उसकी केवल एक प्रति लिखनेमें जल्दीसे जल्दी लिखनेवाले सैकड़ों मनुष्योंको भी करोड़ों वर्ष लगेंगे। (यह भी ध्यान रहे कि असर भी कोई विविध प्रकारके या अनोखे नहीं किन्तु वैसे ही जैसे एक श्लोककी गिन्तीमें ३२ मानकर हमारे सुप्रसिद्ध ग्रन्थ पद्मपुराणमें साढ़े छह लाख (६९००००) के करीब हैं।) तब तो श्री जिनवाणीके असरोंकी संख्या कितने बड़े आश्चर्यजनक रूपको धारण करके हमारी आंखोंके सामने आ उपस्थित होती है। यहां तक कि हमारे बहुतसे आतागण कहेंगे कि श्री जिनवाणीके असर संख्यासे बाहर हैं। उनको गिनकर अंकोंमें बताना मनुष्योंकी शक्तिसे बाहर है। इस उदाहरणसे इस लेखके पाठक महोदय भले प्रकार समझ गए होंगे कि किसी वस्तुकी महान् गणनाको अंकों द्वारा बतानेसे उसका पूरा असली महत्व चित्तर अंकित नहीं होता इसी लिये पल्यके वर्षोंकी महान् संख्याको इस रूपमें हमारी दृष्टिके साम्हने रखा गया है।

इस प्रकार उप-शंकाओंका थोड़ासा उत्तर दे चुकने पर अब मूल शंकाका उत्तर नीचे लिखा जाता है। निम्नसे ज्ञात होगा कि श्री ऋषभ निर्वाण सम्बत् किस जैन ग्रन्थके आधार पर और किस प्रकार निकाला गया है और कैसे यह पूर्णतया शुद्ध और ठीक है:-

[illegible]

शास्त्रप्रमाण—१. श्री गोपट्टेसारजीकी
श्रीमान् पं० टोडरमजी कृन् टीफा जीवकांड,
अधिकार ३के प्रारम्भमें अलौकिक गणित ।

(२) श्रीगोमट्टमार, कर्मठांडकी श्रीमान् पं० मनोहरलालजी कृष्ण छोटी टीकाकी भूमिका ।

(३) श्रीतत्त्वार्थसूत्रजीकी अर्थप्रकाशिका टीका
अध्याय ३, सूत्र ३८ की व्याख्या।

(५) श्रीतत्त्वार्थ सूत्रमीहो मर्गार्थमिहो माया टीका, अ पाय ३, सूत्र ३७ की व्याख्या ।

(६) श्रीमान् पं० दानतरायजीहून चर्चा
शतरफा पद्य ३३ और उसकी व्याख्या ।

(६) श्रीहरिवंश पुराणभाषा टीकाका सर्ग ७।

(૭) શ્રી ત્રિલોચનાચાર્યની ભાષા ટીકા શ્રીમાન
પં. દેવદાસજી કૃતના ગણિત ભાગ રૂપાદિ
દેવે ।

(२) व्यवहार पक्षके रोमोंकी संख्याको १००में गुणा करनेसे जो संख्या प्राप्त होगी वह एक पल्योपम कालके वर्षोंकी संख्या है जिसमें उपरोक्त २७ अंक और २० शून्य पूर्व ४७ अंक हैं।

शान्दप्रमाण—उपरोक्त ग्रन्थ ।

नोट—जिसे पल्लव अर्थात् खत्ती या गड़ेसे उपमा दी जाय उसे "पल्लोपम" कहते हैं। इसलिये जिसे हिन्दी भाषा ग्रन्थोंमें बहुधा पल्लवकल बोला जाना है वह वास्तवमें

पल्योपम—काल है। पल्य तो केवल गठे हीका नाम है जिसे कालादिकी गणना करनेके लिये तीन भेदों अर्थात् व्यवहार पल्य उद्धार पल्य और अद्धा पल्यमें विभाजित किया गया है और जिनसे यथायोग्य स्थानोंपर कालादिकी बड़ी गणनाओंमें काम लिया जाता है।

(३) दश कौड़ाफोड़ी (१० - ११) करोड गुणा अर्थात् एक पद्मपल्लयोपम सागरोपम (जिसे छवण सागरसे उगई है) होता है। पल्लयोपमके उपरोक्त संख्याको दश कौड़ाफोड़ीमें गुणा करने से २७ अंक और २९ शून्यपर्यन्त बर हो जाते हैं जो एक सागरोपमका लक्ष संख्या है।

शास्त्रमाण—उपरोक्त ग्रन्थ ।

नोट—नर्हा २ बडी २ आयुवाले या देव देवी आदिनी केवल एक जन्म स आयुकी स्थिति बताई गई है वह स पल्योपम और सागरोपमसे है किमी प्रकारके पन्थ या सागरसे ज वास्तवमे कालादिके परिमाण सूचक न किन्तु कालादिकी महान गणना जाननेमे उपमा मात्र सहायक हैं। शास्त्र प्रमाण तत्त्वार्थमुत्र, अध्याय ३, मूलसूत्र ६, २९, अध्याय ४ मूलसूत्र २८, २९, ३३, ४२, अध्याय ८ मूलसूत्र १४, १७ इत्यादि

इन सूत्रोंके टीकाकारोंने
और पश्योपन तथा सागर और सागरो
वादनविक अन्तर पर विशेष ध्यान न



पल्योपमके स्थानमें पल्य और सागरोपमके स्थानमें सागर लिखा है जो एक प्रकारकी अशुद्धि है ।

(४) एक कल्पकाल २० कोड़ा कोड़ी सागरोपमका होता है जिसके एक भाग अत्र-सपणीका चतुर्थकाल (जिसमें वर्तमान चौवीसी हुई) ४२ सहस्र वर्ष कम एक कोड़ाकोड़ी सागरोपमका है । इसी लिये एक सागरोपमके वर्षोंकी उपरोक्त संख्याको एक कोड़ा-कोड़ीमें गुणा करनेसे उपरोक्त २७ अंक और ४९ शून्य कुछ ७६ अंक प्रमाण संख्या एक कोड़ा कोड़ी सागरोपमके वर्षोंकी प्राप्ति हो जाती है । इस संख्यामेंसे ४२ सहस्र वर्ष घटा देनेसे जो संख्या प्राप्त होगी वह पूर्ण चतुर्थ कालके वर्षोंकी संख्या है जो ७६ अंक प्रमाण ही है ।

(५) श्रीऋषभदेवजी महाराजका निर्वाण चतुर्थ कालके आरम्भसे ३ वर्ष साढ़े आठ मास पूर्व हुआ और श्री महावीरजीका निर्वाण पंचम कालके आरम्भसे इतने ही काल अर्थात् ३ वर्ष ८॥ माह पूर्व हुआ । इसलिये प्रथम तीर्थंकरके निर्वाण कालसे अन्तिम तीर्थंकरके निर्वाण काल तकका अन्तर ठीक उतना ही है जितना पूर्ण चौथा काल ।

शास्त्र प्रमाण—श्री पद्मपुराण पर्व २०, जहां चौथे कालका वर्णन करते हुए २४ तीर्थंकरोंके अन्तराष्ट्र कालका कथन पूर्ण किया है । तथा हरिवंशपुराण सर्ग ६० श्लोक ४८६, ४८७ जहां २४ तीर्थंकरोंके अन्तराष्ट्र काला-दिके कथनको पूर्ण करके श्री महावीर स्वामी-

के ११ गणधरोंकी आयुका कथन है उससे धारो ।

(६) अब यदि प्रथम तीर्थंकरके निर्वाणसे अन्तिमके निर्वाण तकके अन्तराल काल अर्थात् पूर्ण चतुर्थ कालके वर्षोंकी संख्यामें श्री वीर-नि० सम्बत् जोड़ दें तो हमारा अभीष्ट श्री ऋषभ-निर्वाण सम्बत् प्राप्त हो जायगा जिसके वर्षोंकी संख्या वही है जो कई जैनसमाचार पत्रोंमें प्रकाशित हो चुकी है ।

नोट—जिन महाशयोंको यह भी जानना अभीष्ट हो कि इतने अधिक बड़े पल्यमें भरे गए भोग भूमिके ७ दिन तककी व्यवहारे मेंदेके बालकके बहुत ही छोटे २ रोमों या बालाग्रोंकी उपरोक्त संख्या ४९ अंक प्रमाण किस प्रकार निकाली गई है वह पूर्वोक्त ग्रन्थोंके इसी विषय सम्बंधी कथनको ध्यान पूर्वक पढ़ें । श्री अर्थप्रकाशिका तथा श्री गोमटसारादिमें सब कुछ मौजूद है । यदि तब भी समझमें न आवे तो मुझसे पत्र व्यवहार करें । तथा किसी प्रकारकी शंका उपरोक्त लेखमें हो तो वह भी प्रगट करें । किसी जैन समाचार पत्रद्वारा भठे प्रकार समझा देनेका प्रयत्न किया जायगा किमपि-किम् ।

नोट—इस लेखमें यह बताया गया है कि महावीरार्चयिष्ठ गणितसार संमदमें २४ अंक प्रमाणकी गिनती है और इससे अधिककी गिनती नहीं देखनेमें आती । परंतु हमने 'दिगंबर जैन' वर्ष ८, अंक १ वीर सं. २४४१ में "अक्रान्धी" नामक लेखमें ६७ अंक प्रमाणकी



की शक्तिसे धर्म रक्षा करना नितान्त बाहर है। यह कार्य मुनियों ही की शक्तिका है।

यह सप्रमाणिक है कि प्रत्येक गृह त्यागी और मुनिका कर्तव्य है कि अपने प्राणोंको भी देकर धर्म रक्षा करें। तब क्या पृथ्वीवर मुनियो एवं त्यागियो ! आपका यह कर्तव्य नहीं है कि अब अपनी आत्माका उपयोग अन्य साधनोंमें न लगाकर निकलकर और विष्णुकुमार मुनिके सदृश धर्मरक्षामें— अपनी जैन जातिको कालके जालसे बचानेमें लगावें। जिस धर्मके आप अनुयायी हैं उसी धर्मकी यह अव्यक्तित और मरणोन्मुख जाति भी अनुयायिनी है तथा यह ध्रुव है कि धर्म धर्मात्माओंमें रहता है। जैसा कि समन्त-भद्र स्वामीने रत्नकरण्ड श्रावकाचारमें कहा है—

रमयेन योऽन्यान्त्येति धर्मस्थानं गर्वितामयः
योऽत्येति धर्ममाधीयं, न धर्मो धार्मिकैर्विना ।

अर्थात्—जो अभिमानी पुरुष अन्य धर्मात्माओंकी अवहेलना करता है सो वास्तवमें अपने धर्मकी ही अवहेलना करता है क्योंकि धर्मात्माओंके बिना धर्म अन्यत्र कहीं नहीं पाया जा सकता ।

मुनिराे ! क्या आप लोगोंके हृदयमें इन महात्माओंके वचनोंका कुछ भी अभिमान है ? यदि है तो आप लोगोंका यह प्रथम कर्तव्य है कि अब एकान्तावासको छोड़कर अपने सहधर्मियोंको अपने धर्ममें दृढ़ रखें— उनको पृथ्वी तलपर स्थिति रखें अन्यथा वे विचारो तो पतित और नाश हो ही रहे हैं— मुसलमान, ईसाई और आर्यसमानी हो ही रहे

हैं, आप भी अपने धर्मकी रक्षा न करनेके कारण वास्तवमें धर्मात्मा कहलानेकी योग्यताका विनाश कर रहे हैं ।

यदि आप इस पवित्र कार्यमें हाथ डालेंगे तो केवल जातिको जीवनदान देना ही न होगा किन्तु अपने धर्मकी रक्षा करना भी होगा । इसलिये यदि आप इस कार्यमें कुछ भी प्रमाद करेंगे तो समझिये आप अपने प्राणप्रिय धर्मकी अवहेलना कर रहे हैं जो कि आप लोगोंके लिये हास्यास्पद है ।

धर्मरक्षको ! आप लोगोंसे मेरा नम्र निवेदन है कि भारतवर्षके जिन भागोंमें जैनकुलोत्पन्न मनुष्य निवास करते हैं वहाँ २ वर्षोपदेशकी आवश्यकता है। आप लोग भी एक दो नहीं हैं किन्तु सैकड़ोंकी संख्यामें हैं । इसलिये आप इस आवश्यकताकी देश-देश, ग्राम २ भ्रमण करके पूर्ति कर सकते हैं । जितना सुधार जैन समाजमें आप लोगोंके उपदेशसे होगा उतना सुधार अल्पज्ञानी वेतन भोगियोंसे नहीं सम्पन्न हो सकता है। जिस ग्रामके जैनियोंकी आत्मा महावीर प्रभुके उपदेशानुसार न मिटनेसे धर्म शून्य हैं—पतित हैं— अपने उच्चादर्शको त्याग कर आचार विचारसे भ्रष्ट होकर—महावीर स्वामीके शासनसे बिच्छिन्न होकर छोटे मार्गमें ले जानेवाले धर्मोंमें मिळती जा रही हैं; उनकी आत्माओंमें आप लोगोंके वचनामृतसे एक नवीन ही जीवनका संसार होगा—दृष्टे हुये प्राणियोंको हाथका सहारा होगा, भीड़ घांटाडादि ब्रह्मकी आत्मा-



ओंको परमात्मा बनाने वाले वीरप्रमुकेशासनका पालन होगा। आपको इस कार्यसे केवल उन्हीकी आत्माओंका कल्याण न होगा किन्तु आपकी भी आत्माका कल्याण होगा—सम्यक्तके स्थितिकरण अंगका पालन होगा।

ऐ जैन समानके त्यागियो ! धर्मरूपी नौकाके खेवटियाओ ! उठो और इस धर्मकार्यके लिये तनमनसे लग जावो। यह बात ध्यानमें रखने योग्य है कि जैन समानकी—आपके प्राण-प्रियधर्मकी रक्षा आपहीके मुजबलसे होगी जैन समानकी संख्या विधवा विवाहादि नियम कार्योंसे नहीं बढ़ेगी किन्तु आपके इस पवित्र कार्यसे बढ़ेगी। केवल आपकी आत्मामें जैन समानकी अग्रगति—धर्मका नाश देखकर उसकी उन्नति—उसकी रक्षार्थ कार्यरूप भाव होनेकी देर है—जैन समानकी संख्या करोड़ोंमें होनेके लिये आपके घोर परिश्रमकी देर है।

अब इस कार्यमें चिन्मय करनेका समय नहीं रहा है क्योंकि आपके धर्मको नष्ट करनेवाले कीड़े बहुत दिनसे उमकी जड़में लग गये हैं किन्तु अब तो इस धर्मको प्रसन्नेवालोंकी अधिकता एवं बलवान होनेके कारण इस धर्मका विनाश बड़े वेगसे हो रहा है—अवर्षके समुद्रके वेगसे बहनेवाले प्रवाहमें केवल वह ही नहीं रहा है किन्तु अब डुबानेवाले गोते भी छा रहा है। यदि आप लोगोंने अब भी इसके बचानेका उपाय नहीं किया तो स्मरण रखिये कि जिस प्रकार डूबनेवाली नौका अपने आसपासकी वस्तुओंको लेकर समुद्रके लिये

जलनलमें डूब जाती है उसी प्रकार यह वीर प्रमुका धर्म भी आप लोगोंको समेट कर सदाके लिये डूब जायगा और तब न आपके आहार देनेवाले गृहस्थ ही मिलेंगे और न गृहस्थोंको आहार देनेवाले आप जैसे स्वार्थ त्यागी—गृह त्यागी मुनि ही।

ओंशांतिः ओंशांतिः ओंशांतिः

शरिररक्षणा-वर्णनः ।

(ले० दायीचंद माणेरुचंद-सोनाधण)

(६ ठा अक्षरों चाहु ।)

१—जमणी पांसळी पासेना भागमां—कलेजानो जमणो भाग, पितो, न्हानां आंतरडानो पहलो भाग, मोटां आतरडानो जमणो बीटो अने जमणा; गुरदानो उपलो भाग.

२—पीपडीवाळा मय्य भागमां—होजरीनो वचलो भाग, अने जमणो छेडो तथा कलेजानो डावो भाग.

३—डावी पांसळी पासेना भागमां होजरीनो डावो छेडो, बरोल अथवा तल्ली, मोटा आतरडानो बीटो अने डावा गुरदानो उपलो भाग

४—जमणा कमर तरफता भागमां—उपर घटतुं मोटुं आंतरहुं, जमणा गुरदानो नीचेनो भाग, अने न्हाना आतरडानो थोडो भाग.

५—हुटीवाला पेटना मय्य भागमां मोटा आंतरडानो आडो भाग, अने नानां आंतरडाना थोडां गुंचळां.



૬—ઢાંચા કમર તરફના ભાગમાં મોટા

આંતરડાનો છેડો ઉતરતો માગ, ઢાંચા ગુરદાનો છેડો માગ, અને નાનાં આંતરડાનાં થોડાં ગુંચડાં.

૭—જમણી જાંઘ તરફના ભાગમાં નાનાં આંતરડાનો છેડો, મોટા આંતરડાનો શરૂવાતનો ભાગ અને પેસાવ લઈ જનારી જમણી નક્કી.

૮—પેદાવાલા નીચલા ભાગમાં ન્હાનાં આંતરડાનાં ગુંચડાં, પેસાવનો ધરેલો કુત્તકો, અને ગર્ભથી મોટું ઘનાર ગર્ભસ્થાન.

૯—ઢાંચી જાંઘ તરફના ભાગમાં મોટાં આંતરડાનો નીચેનો અને સફરાનો ઉપલો ભાગ, તથા પેસાવ લઈ જનારી ઢાંચી નક્કી.

ઉપલા કોઠા ઉપરથી સામાન્ય રીતે એટલું તો સમજાશે કે, પેટની જમણી બાજુમાં પાંસડાં, નીચે કલેજું (યકૃત), કલેજા નીચે થોડો ન્હાનાં તેમજ મ્હોટાં આંતરડાનો ભાગ મૂત્રાશય અને સૌથી નીચે જાંઘ પાસે મૂત્ર લઈ જનારી જમણી નક્કી, એટલા ભાગો આવેલા છે. પેટની વધવામાં-ઉપર હોજરી અને કલેજાનો થોડો ભાગ, તેની નીચે હૃદયવાળા માગમાં મોટું આહું પંડું આતરું અને નાનાં આંતરડાં તથા સૌની નીચે પેદુમાં ન્હાનાં આંતરડાં અને સ્ત્રીઓનું ગર્ભસ્થાન, એટલા ભાગો આવેલા છે. પેટની ઢાંચી બાજુમાં પાંસડાં નીચે હોજરીનો ઢાંચો છેડો, કોઠા અને મોટું આતરું, તેની નીચે પગ મોટું આતરું તથા મૂત્રાશય અને સૌની નીચે જાંઘ પાસે મૂત્ર લઈ જનારી જમણી નક્કી, એટલા ભાગો આવેલા છે.

અન્નનલ-(Alimentary Canal)

ઉદરની પોલના હોજરી વગેરે ભાગોનું વર્ણન કરતો પહેલાં, હોજરીમાં અન્ન ક્યાં થઈને શી રીતે આવે છે તેવું જાણવાની જરૂર છે. આપણે અનાજ મોઢામાં ઘાવીને ગરમ ઉતારીએ છીએ અને તે છાતિનો પાછલા માગમાંથી નીચે ઉતરતો હોય એવું આપણને લાગે છે. સાથેજ અનાજ ગરમમાંથી જે રસ્તે થઈને હોજરી વગેરેના અવયવોમાં ઉતરે છે, તે રસ્તાને અન્નનલ કહેવામાં આવે છે. જેમ ઘરમાં પાણી વગેરેના નલ ઉતારવામાં આવે છે, એવી જ રીતે આ નલ ઉતારવામાં આવેલો છે. આ અન્નનલ માંસમય સ્નાયુનો બનેલો છે, અને તેના સંકોચાવાથી સાથેજ સોરાક ધકેલાઈને હોજરીમાં આવે છે,

આ અન્નનલ-ગરમની ધારી ગરમની નીચલા છેડાથી શરૂ થાય છે, તે નલ ધ્યાન નક્કીની પાછલ અને જરા ઢાંચી તરફ કરોડને આધારે નીચે ઉતરે છે, અને ઉપર જળાવેલા છાતિ તથા પેટ વચ્ચે આવેલા હુમટમાં થઈને હોજરીમાં આવે છે. ત્યાં જોઈએ તો આ અન્નનલનો છેડો ગુદાદ્વારમાં આવે છે કેમકે જે સોરાક લાવામાં આવે છે તે અન્નનલ વાટે હોજરીમાં ત્યાંથી હોજરીની સાથેજ જોડાયેલાં નલનાં આંતરડાંમાં અને ત્યાંથી તેની સાથેજ જોડાયેલાં મોટાં આંતરડાંમાં થઈને સફરામાં આવે છે. ગરમની ધારીથી તે ગુદાદ્વાર સુધી પહોંચતાં આ અન્નનલની લંબાઈ મુમારે ૨૦ ફુટની છે. અન્નનલ ધ્યાનનક્કીની પાછલ મુકાયેલો છે તેથી ઉપરે સોરાક ગરમીએ છીએ, ત્યારે જ અન્નનો કાંઈ પણ ભાગ ધ્યાન નક્કીમાં ન જનારી ગાય



તે માટે એ શ્વાસનઝીનું મોં બંધ કરવાને એક ન્હાતું ઢાંકણૂં ચીમ સાથે વઢગે છે, જે સ્તોરાક ગળેથી ઉતરતી વેળા શ્વાસનઝીનું મોં ઢાંકી દે છે, અને તેના ઉપર થઈને સ્તોરાક અન્ન નઝીમાં પ્રવેશ કરે છે.

હોજરી-અન્યાશય-આમાશય

Stomach

ગળાથી તે ગુદા છુટી સ્તોરાકના માર્ગનો એક જ નલ છે, જેમાં હોજરીનો પણ સમાવેશ થાય છે. હોજરી એ સ્તોરાક માર્ગનો સૌથી પ-હોલો ભાગ છે. હોજરી પેટના પીપડીવાળા મધ્ય ભાગમાં તેમજ ડાબી પાંસળી તરફના ભાગમાં આવેલ છે. હોજરીની ઉપર ઉરોદર પટલ અને કલ્લેજાનો ડાબો ભાગ છે. હોજરીની ડાબી તરફ જરોલ છે, જમણી તરફ કલ્લેજું છે, નીચે આંતરડાં છે, અને પડાકે કરોડ છે. હોજરીના ઉપર છેડામાં અન્નનઝીનો સંયોગ થાય છે અને નીચલા છેડાથી આંતરડાનો આરંભ થાય છે. હોજરીનો આકાર પાણીની મસક અથવા ન્હાની પલાલ જેવો છે, તેમાં સ્તોરાક જાય છે ત્યારે તે પહોળી થાય છે, અને ત્યારે તેની ડાબી જમણી બાજુની લંબાઈ ૧૦ થી ૧૨ ઇંચની અને પહોળાઈ ૪ ઇંચની હોય છે. હોજરી લાલી હોય છે ત્યારે તે સંકોચાઈને ન્હાની થઈ જાય છે. તેનું વજન સુમારે ૧૧ તોલાનું છે, અને તેમાં ૪ થી ૬ રતજ પાણી સુમાઈ શકે છે.

હોજરી માંસની સાફાઓ અથવા દોરીઓની બનેલી છે. તેનું અંદરનું પડ કરનલીવાળું અને મધ્યમાંનીના મધ્યપટલ જેવું સ્વાગસાળું હોય છે,

જે પડમાંથી એક જાતનો તેજાજ જેવો પ્રવાહી ઝરે છે, જે જઠરરસ કહેવાય છે. આ જઠર રસથી લાધેલો સ્તોરાક પચે છે અને એવી રીતે હોજરીમાં પચેલો કેટલોક રસ હોજરીની ઘ્રીળી નસો વાટે લોહીમાં જાય છે, પણ સમગ્ર સ્તોરાક હોજરીમાં પચી શકતો નથી, ધીકાસવાઝી અને આડાના સત્ત્વવાઝી વસ્તુઓને હોજરીનો જઠર રસ પચાવી શકતો નથી, તેથી તેવો સ્તોરાક હોજરીમાં કેટલુંક સ્થાન્તર થયા પછી આંતરડામાં જાય છે અને ત્યાં તેની પાચન ક્રિયા થાય છે.

આંતરડાં-પક્વાશય-Bowels.

સ્તોરાક માર્ગમાં હોજરીના નીચેના છેડાથી જ નઝી સંવાય છે, તેને આંતરડાં કહેવામાં આવે છે. આંતરડાં હોજરીથી ગુદાપર્યંત ૩૦ ફીટ લાંબા છે, પણ તેનાં શુંચઝાં વઝીને પેટની પોલમાં પડેલાં હોવાથી એવડાં વડાં મોટાં છે એમ લાગતું નથી. આંતરડાંના બે ભાગન છે. ન્હાનાં આંતરડાં અને મોટાં આંતરડાં.

ન્હાનાં આંતરડાં-મોટાં આંતરડાં કરતાં ન્હાનાં આંતરડાં કદમાં પાતઝાં છે તે હોજરીના નીચલા અથવા જમણા છેડાથી શરૂ થાય છે અને રુની આંટીની માફક શુંચઝાં વઝીને પેટના ડુંડીવાળા તથા પેટુવાળા ચપલા ભાગમાં પડેલાં છે. તેનો છેડો જમણી જાગ તરફના ભાગમાં ડતરે છે, જ્યાં તે મોર્ડ આતરડાં સાથે સંવાય છે અથવા ડથાંથી કદ મોટું થતાં તેને મોટું આંતરડું કહેવામાં આવે છે.

ન્હાનાં આંતરડાં ૨૦ ફીટ લાંબાં અને ૧ થી ૧૫ ઇંચ જાડાં છે તેનો શરૂ થવાનો ભાગ



થોડાની નાઠના જેવો વાંક લેછે અને તેમાં પિત્ત લાવનારી નેઝીનું મ્હોં હોય છે, જેમાં થઈને પિત્ત આંતરડાંમાં આવે છે.

ન્હાનાં આંતરડાં અંદરથી નેઝી જેવાં પોલાં છે. એ નેઝી જુદી જુદી ચાર જાતના પડની થયેલી છે. તેમાંનું એક પડ માંસનું છે અને તેનાં સાંકોં ડાઘા તથા ગોઠ ફરી વળેલા છે. આવા ન્હાનાં આંતરડાંનાં માંસના સાકા સઘળાં એકજ વણતે તંગ અને ઢીલા થતા નથી પણ થોડા થોડા ભાગના સાકા વારાફરતી સંકોચાય છે; તેથી આંતરડાંનો એક ભાગ સંકોચાય છે ત્યારે બીજો ભાગ ઢીલો થાય છે, અને એ રીતે જેમ સર્પ ચાલતાં ચાલતાં વળેલાય છે તેમ આવાં આંતરડાંમાં એક પ્રકારની ગતિ પેદા થાય છે અને તેથી જોરાંકનો બાકી રહેલો ભાગ આગલ આગલ ધકેલાય છે. આંતરડાંનું છેક અંદરનું પડ સ્વલ્પચંદ્રું અને કરચલીવાળું હોય છે, તથા તેના ઉપર મલમલની પેઠે રુધાટાં જણાય છે. એ પડની દરેક કરચલી ૧ થી ૨ ઇંચ લાંબી અને ૦.૧ ઇંચ ઊંડી હોય છે, અને તેમાં જોરાંકને ચુમવાની સૂક્ષ્મ રંગો આવેલી છે. આ રંગો જોરાંકના પોષણકારક તત્વને ચૂસી લે છે. આ સઘળી રંગોનો સંયોગ થઈ એક નરૂ થાય છે, તે નરૂ ઉદરમાંથી છાતિમાં જઈ નમળી તરફની મોટી શિરાને મળે છે. પાચન થયેલો રસ એ નરૂમાંથી છોહીને મળે છે.

મોટાં આંતરડાં—નમળી જાંગ તરફના ભાગથી મોટાં આંતરડાં શરૂ થાય છે. મોટાં આંતરડાંના ઢાળ ભાગ કઠિણ થો, નમળી

જાંગ પાસેથી શરૂ થવાની જંગાથી નમળી પાંસઝી સુધી તે ઉપર પડે છે તેટલા ભાગને “ચઢતું મોટું આંતરડું” કહેવામાં આવે છે. પછી ત્યાંથી કાઠનાંની હેઠલથી તે ઢાબી તરફ વળણ લે છે અને ત્યાંથી પીપ્પડીવાળા ભાગમાં થઈને ઢાબી પાંસઝી સુધી તે પેટમાં આડું પડે છે, અને તેથી એટલા ભાગને “આડું મોટું આંતરડું” કહેવામાં આવે છે. ત્રીજો ભાગ વરોલની નીચેથી શરૂ થઈ પેટની ઢાબી વાજુએ ઢાબી જાંગ સુધી સીધો ઉતરે છે, અને એ ભાગને “હેઠે ઉતરતું મોટું આંતરડું” કહેવામાં આવે છે. મોટાં આંતરડાંની લંબાઈ પાંચ ફૂટની છે, ઉપર ચઢતો ભાગ ૨.૧ ઇંચ જાડો છે, પણ આગલ જતાં મોટાં આંતરડાં પતલાં થતાં જાય છે, અને તેના હેઠે ઉતરતા ભાગની જાડાઈ ૧.૧ ઇંચથી વધારે હોતી નથી.

સફરાનો નરૂ—મોટાં આંતરડાંનો જે છેડો ઢાબી જાંગ તરફ ઉતરે છે, ત્યાંથી એક વાંકવાળો નરૂ શરૂ થાય છે, જે સફરાના મ્હોં સુધી જાય છે તે નરૂને સફરો અથવા રેક્ટમ કહેવામાં આવે છે. તે ઢાબી તરફથી શરીરના મધ્ય ભાગ તરફ વળે છે અને મધ્યમાંથી સીધો હેઠે ઉતરે છે. સફરાની આગલી વાજુ ઉપર મૂલાશય એટલે પેશાબનો કુશ્કો અને ગર્ભસ્થાન આવેલ છે અને પાઠલથી તે વેડે વેસળીનાં હાટકાં સાથે વેળગેલો છે. સફરો ૬ થી ૮ ઇંચ લાંબો છે.

કલેજું—કાઠજું—ચક્રત—Liver

શરીરની અંદરના અવયવોમાં કલેજું સૌથી મોટો અવયવ છે, તેનું વનન આશરે ૪ રાત ધાય છે.



તે જમણી તરફની પાંસડીઓ હેઠળ પેટના જમણા પડછામાં આવેલું છે, પણ તે મોટું હોવાથી પી-પડીવાળા મધ્ય ભાગમાં તેમજ જરા ઢાંચી પાંસડીના ભાગ સુધી પહોંચેલું છે. જમણી બાજુથી ઢાંચી બાજુ સુધી કલેજાની લંબાઈ આશરે એક ફુટની છે; અને પહોળાઈ આઠ ઇંચની છે. કલેજાની ઉપર **ઉરોદર પટલ** આવેલું છે અને નીચે અન્નાશય, આંતરડાં, તથા મુત્રપિંડ આવેલા છે. કલેજાનો મોટો ભાગ જમણી તરફથી પાંસડી-ઓથી ઢંકાયેલો હોવાથી પેટમાં દાવવાથી તે માલમ પડતું નથી. જ્યારે તેમાં કાંઈ દરદ થઈને કલેજું વધી બહાર આવે છે, ત્યારે તે તે દાવો જોવાથી માલમ પડે છે અને કલેજા પર ટોકવાથી બોલો અવાજ થાય છે.

કલેજું ન્દાની ટાંકળીનાં માર્ગાં કરતાં પણ ચારીક હનારો ઢાળાનું ચનેલું છે. એટલે ઢાળામાં લોહીની ચારીક રંગોની જાલ પથરાયેલી છે. **કલેજાનું મુખ્ય કામ** લોહી શુદ્ધ કરવાનું અને પિત્તનામના રસને પેદા કરવાનું છે. હોજરી અને આંતરડાની શિરાઓ મઝીને એક શિરા થાય છે, તે **મધ્ય શિરા** (પોર્ટલ વેઇન) કહેવાય છે. આ મધ્ય શિરા કલેજામાં દાખલ થઈ તેની શાખાઓ બનીને લેમનું લોહી શુદ્ધ થાય છે. કલેજાનું ત્રીજું મુખ્ય કામ પિત્ત પેદા કરવાનું છે. કલેજામાં પિત્ત નામનો એક રસ પેદા થાય છે. એ પિત્તને હઈ જનારી એક નઝી કલેજામાંથી બહાર નીકળે છે તેને પિત્તાશય કહેવામાં આવે છે. આ પિત્ત આંતરડાંને મઝી તે માહેના સોરાકને પચાવે છે. સોરાકમાં ચીકણાવાળો અને ત્રવીવાળો માગ હોય છે,

તેને પિત્ત જલદી પીગળાવે છે. પિત્તથી આંતરડાંને જલદી ગતિ મળે છે અને શાહો છુલ-સેથી આવે છે. પિત્તનો થોડો ભાગ શાહા ત્રાટે બહાર આવે છે, અને તેથી જ શાહાનો રંગ પીળાશપર હોય છે. ચોવીન કલાકમાં ત્રણ રતલ પિત્ત પેદા થઈ આંતરડાંમાં જાય છે.

પિત્તાશય-(Gall Bladder)

કલેજામાં પિત્તનું જે સ્થાન છે તેને **પિત્તાશય** અથવા પિત્તો કહેવામાં આવે છે. આ પિત્તો કલેજાની નીચલી બાજુ તરફ વળેલો છે. આ એક ગાજર જેવડી ઢોલી છે. પિત્તની નઝી હોજરીના નીચલા છેડાથી શરૂ થઈ ન્દાનાં આંતરડાંમાં મળે છે. આ પિત્તની નઝી સાથે એક બીજી **પાંક્રિયાશ્વ** નઝીનો સંયોગ થાય છે; અને તે બન્નેની એક નઝી થઈ આંતરડાંમાં પ્રવેશ કરે છે. આ બીજી નઝી ઘાટે ચૂક જેવો રસ આંતરડાંને મઝી પાચનક્રિયાના કામમાં મદદ કરે છે. પિત્ત કલેજામાં પેદા થાય છે; અને પિત્તાશયમાં એકઠું થઈ પિત્તની નઝી ઘાટે આંતરડાંમાં જાય છે.

ચરોલ-તિલી-પ્લીહા-Spleen

પેટના ઢાંચા પડછામાં નવમી, દશમી, અને અગીયારમી એ ત્રણ પાંસડીઓથી ચરોલ ઢંકાયેલી છે, તેથી કલેજાની પેટે તે પણ ઢાંચી જોવાથી માલમ પડતી નથી. **ઉરોદર પટલ** તથા હોજરી સાથે તે રસ પડથી સંધાયેલી છે. તેનો રંગ વાદળી રંગની સ્લેટ જેવો છે. તે પાંચ ઇંચ ઢાંચી, ત્રણ ઇંચ પહોળી અને ૧૦ થી ૧૫ ટોલા વજનની હોય છે. તેનું કામ લોહી-ને શુદ્ધ કરવાનું છે. તાવની બીમારીમાં તે વધે



છે અને વાલતે પૃથ્વી વધી મ્હોટી થાય છે કે, એક સહત પથ્થર જેવી ગાંઠ પેટના ઘણા ટ્રા માગમાં જણાય છે. એવી વધેલી વરોલ ૨૦ થી ૪૦ રતલ મુખી વજનની હોય છે. વાલતે તવાઈને પૃથ્વી વધી ન્હાની થઈ જાય છે કે, તેનું વજન એક એક તોલા કરતાં વધારે હોતું નથી.

મૂત્રપિંડ-ગુરદો-(Kidney)

મૂત્રપિંડ બે છે. દરેક મૂત્રપિંડ કરોડની વાજુ તરફના પાછટા માગમાં આવેલ છે. દરેક ગુરદો ૪ ઇંચ લાંબો, ૨ ઇંચ પહોલો અને ૧ ઇંચ જાડો હોય છે. તેનું વજન આશરે ૧૦-૧૨ તોલાનું છે. બહારથી તે સાફ અને લીસો છે અને તેનો આકાર અડદના ઢાળા જેવો છે. જમણો ગુરદો કલેના સાથે લાગેલો છે અને ઢાંચા ગુરદાનો ભાગ વરોલથી ઢંકાયેલો છે. ગુરદા ચારીક નક્કીઓના બનેલા છે. એ નક્કીઓની આસપાસ લોહીની નશોની જાલ વંચાય છે, અને તેમાંથી કેટલાક ટ્રાચા નકામા ભાગો જુદા પડે છે, અથવા બીજા શબ્દોમાં બોલીએ તો મૂત્ર અથવા પેશાબ પેદા થાય છે. આ આજ્ઞા દહાડામાં ૨, થી ૩, રતલ પેશાબ બંને ગુરદામાં પેદા થાય છે.

દરેક ગુરદાની માંહેલી તરફ એક ન્હાનો ટ્રાહો હોય છે, તેમાંથી એકેક ચારીક નક્કી શરૂ થાય છે, જે પ્લેહુનો માગ ઓઝેમીને મૂત્રાશય (ક્લેટર)માં જાય છે. આ નક્કીને મૂત્ર નક્કી કહેવામાં આવે છે.

મૂત્રાશય-ફુલો-Bladder

બંને તરફના મૂત્રપિંડોમાં મૂત્ર ઉત્પન્ન

થાય છે અને મૂત્રનક્કીવાટે તે મુત્ર વસિતના આગલા ભાગમાં યાં એકતું થાય છે તે ભાગને મૂત્રાશય કહેવામાં આવે છે. મૂત્રાશયનો આકાર ફેંડાને મેલતો છે. આ મૂત્રાશય એક માંસની કોથળી છે, તેની અંદર ત્રણ નાકાં છે, જેમાંનાં બે નાકાં વાટે મૂત્રપિંડમાંથી પેશાબ મૂત્રાશયમાં આવે છે અને બીજા નાકા વાટે બહાર નીકળે છે, જે ગુરદામાં મૂત્ર ટીપે ટીપે એકતું થાય છે, અને મૂત્રાશય મૂત્રથી ભરાય છે, ત્યારે મૂત્રાશયના માંસના સાકાઓ સંકોચાઈ મૂત્રને ગતિ આપીને શિશ્ન નક્કીવાટે બહાર કાઢે છે.

ઉત્પત્તિ-અવયવો-(Generative Organes.)

જે અવયવો વડે સંતતિની ઉત્પત્તિ થાય છે, તેને ઉત્પત્તિ-અવયવ અથવા જનનેન્દ્રિય કહેવામાં આવે છે. પુરુષ તેમજ સ્ત્રી એ બન્ને જાતિના ઉત્પત્તિ અવયવોની રચના ટ્રાસ જુદી જુદી હોય છે. વૃષ્ણ, વીર્ણાશય અને મેટ્ર એ પુરુષના ઉત્પત્તિ અવયવો છે, અને ગર્ભાશય, તેની અંદરના અવયવો અને યોનિ એ સ્ત્રીના ઉત્પત્તિ અવયવો છે.

વૃષ્ણ-(Testicles.)

વૃષ્ણની માંસમય થેલી છે. આ થેલીની અંદર વૃષ્ણની બે ગોઠીઓ તે થેલીની રંગો તથા નસો સાથે જોડેલી છે. ગોઠીઓ ફેંડાના આકારની લંબગોળ છે; જમણી ગોઠી કરતાં ઢાંચી ગોઠી જરા નીચી અને મોટી છે. દરેક ગોઠીની સરાસરી લંબાઈ ૧ થી ૧½ ઇંચ, પહોળાઈ ૧½ ઇંચ અને જાડાઈ ૧ ઇંચ હોય છે.



તંદુરસ્ત શરીરમાં દરેક ગોઠીનું વજન ૨ થી ૨½ તોલા સુધી હોય છે. વૃષણની થેલીના મધ્ય ભાગમાં રેશા હોય છે, જેવી થેલીના બે ભાગ પટેલા છે અને દરેક ભાગમાં એક-એક ગોઠી આવેલી છે. એવું કહેવાય છે કે ગર્ભસ્થાનમાં ચાલકની ગોઠી પેટમાં મૂર્ચ્છિડની પાસે હોય છે. ચાલક આશરે આઠ માસનું થાય છે ત્યારે તે ગોઠી પેટની દિવાલમાંથી રસ્તો કરી વૃષણની કોથળીમાં ઉતરે છે.

જન્મતી વયે તે કોઈ ચાલકને ધણે તે ગોઠી પ્હેડુમાં હોય છે અને કોઈને વયે એકન ગોઠી ઉતરે છે, અને બીજી ઉતરતી નથી. ગોઠીના ઉપર એક જાડું મન્યુત પટ હોય છે અને તેને તક્કીયે બીજું ત્રીજું કરોઠીઆના પડ જેવું પડ હોય છે. આ ગોઠીઓ આશરે ૮૦૦ સુક્ષ્મ નળીઓની બનેલી છે. આ દરેક નળી ૨½ ઇંચ ઇંચ ૧ ઇંચના ૨૦૦ મા ભાગ જેટલી પાતળી હોય છે. અને હંડાઈમાં તે નળીઓ ઓઝામાં ઓઝી ૧૨ ઇંચની અને વધારેમા વધારે ૨૨ ઇંચની હોય છે. આ વધી આટલો નળી-ઓના છેદા સાંધીને લાંબી કરીએ તો ૦.૧૧ માઈલ સુધી લાંબી દોરી થાય. આવા વગાન ધારીક તાંતળાઓની ગોઠીઓ બનેલી છે. આ ગોઠી-ઓમાં આવી વંચે વ્રણ વ્રણ નળીઓનાં ગુંચલાં હોય છે. નળીની બહાર ધોરી નસની ધારીક નાલ પથરાયેલી છે, જેમાંના લોહીમાંથી ઘાત પડા થાય છે. જે રંગો અથવા દોરડીઓથી થેલીમાં ગોઠીઓ વચ્ચી રહેલી છે, તે દોરડીમાં વીર્યનલ, ધમની અને શિરા હોય છે. શિરાની અંદર જ્યારે લોહી મગડું રહે છે ત્યારે તે કોઈ

વાર સુઝી આવે છે. આ વીર્યનલ, ધમની તથા શિરા પેડુના છિદ્રવાટે પેટમાં ઢાલ થાય છે, અને શિરા મોટી શિરા સાથે મળે છે, ધમની મોટી ધમનીમાંથી નીકળેલી શિરા છે અને વીર્યનલ મૂત્રાશય ઉપર થઈને વીર્યાશયને મળે છે, અર્થાત્ વૃષણની કોથળીમાંથી નીકળેલી નળીઓ આગળ જતાં જોડાઈને એક થાય છે; અને તે ગોઠીની નસ આગળથી ઉપર ચડીને, પેડુની બહોલમાં મૂત્રાશયના ફુલ્લા પાડલ જાય છે અને પેશાબના ફુલ્લા તથા સફરા વચ્ચે બે ન્હાની કોથળીઓ છે, તેની નળી સાથે જોડાય છે. આ કોથળીઓમાં ઘાતુ એકઠી થાય છે, જેને વીર્યાશય કહેવામાં આવે છે. વીર્યાશયની દરેક કોથળીમાંથી એક એક નળી નીકળે છે અને તે નળી વૃષણની ગોઠીમાંથી નીકળનારી વીર્ય નળી સાથે મળી જઈને પેશાબ કરવાના રસ્તામાં ઉપડે છે અને પેશાબની નળીવાટે બહાર પડે છે.

વીર્યાશય—ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે વૃષણમાંથી વીર્યની નળીઓ પ્હેડુમાં ઢાલ થાય છે અને મૂત્રાશયના થઈને તેને તક્કીયે ઉતરે છે. મૂત્રાશયને તક્કીયે દરેક નળી પહોળી અને, ગૂંચલાવાળી થાય છે; તેમાં વીર્ય મરાઈ રહે છે, અને તેથી તેને વીર્યસ્થાન કહે છે.

વીર્યાશયની નળીઓ મૂત્ર માર્ગમાં ઉપડે છે અને ત્યાંથી વીર્ય બહાર પડે છે. આ ઉપરથી સમગ્ર શકાએ કે વીર્ય પ્રથમ વૃષણમાં પેડા થાય છે અને ત્યાંથી ઉપર ચડીને પ્હેડું માંહે આવેલા વીર્યાશયમાં એકઠું થાય છે અને ત્યાંથી મૂત્ર-નળી વાટે બહાર પડે છે.

મૂત્ર નળી અથવા શિશ્નને મંદુ કહે-



વામાં આવે છે. આ નઠી ત્રણ નઠોની બનેલી છે. આમાંના બે નઠ ડાચ હોય છે અને ત્રીજો નઠ તેમની મધ્યમાં નીચલા માગમાં હોય છે. તે દરેક ભાગ મંજુત અને સફેદ તંતુમય નઠીના જેવો હોય છે. તેમની બેચમાં ગળા પડ્યા હોય છે અને દરેક મઠમાં ન્હાનાં ન્હાનાં છાનાં હોય છે, જેમાં લોહી ભરાય છે અને ઠલવાય છે. લોહી ભરાય છે ત્યારે મેદમાં જોર આવે છે અને ઠલવાય છે ત્યારે શિથિલ થઈ જાય છે.

ગર્ભાશય—(ગર્ભસ્થાન-કમલ)

આ અવયવ સ્ત્રી જાતિમાં જ હોય છે, અને તે પ્લેઝુરી ચલોલમાં સફરા તથા મૂત્રાશય (બ્લેડર) ની વચ્ચે આવેલું છે. ગર્ભાશયનો આકાર જામફલ જેવો ઉપરથી પહોળો અને નીચેથી સાંકડો છે. તે ૩ ઇંચ લાંબું અને ૨ ઇંચ પહોળું છે. કુમારી સ્ત્રીમાં ગર્ભસ્થાનનું વજન આશરે ૨ થી ૪ તોલાનું અને વધાંવાઝી સ્ત્રીમાં ૪ થી ૬ તોલા સુધીનું હોય છે. ગર્ભસ્થાન માંસના જાડા સ્નાયુઓનું બનેલું છે અને અંદરથી પોલું છે. તેના નીચેના સાંકડા ભાગમાં એક ગોળાવાળો છે અને છેડા પર એક ચીરો છે, તે કમલનું માં વહેવાય છે. આ કમલમુખ સંસ્થા માર્ગની સાથે સંસ્થા રાફે છે. ગર્ભસ્થાનમાં આર્ત્ય એક દસ્તાન અને ચાલક શી રીતે પેદા થાય છે તેનું વર્ણન બીજા ભાગમાં હવે પછી આપીશું. ગર્ભસ્થાન મોટું થવા મોટું છે અને તેથી તેનું વજન વધીને ૧ થી ૩ રતલ જેટલું થાય છે. ગર્ભ રચ્યા પછી તે પ્લેઝુરા ઉપર ભાગમાં ઘેરે છે અને હૃદી સુધી પહોંચે છે. ગર્ભસ્થાનને ડાલે બે ગુણ ૩ થી ૪ ઇંચ લંબાઈની એક નઠી વલ્લોગી હોય છે, જેનું એક મોં

ગર્ભસ્થાનની કોથળીમાં ઉઘડે છે અને બીજો છેડો છુટો રહે છે. ગર્ભસ્થાનની બહારની બે બાજુ સાથે બેંચનથી વલ્લોગી ઇંડા આકારની બે ન્હાની ગાંઠો છે જેને અંગ્રેજીમાં ઓવરી કહેવામાં આવે છે. એ દરેક ગાંઠ ૧ ૧/૨ ઇંચ લાંબી, ૦ ૧/૨ ઇંચ પહોળી અને જાડાઈમાં ૦ ૧/૨ ઇંચથી જરા ઓછી છે, તે દરેક ગાંઠનું વજન ૦ ૧ થી ૦ ૧/૨ તોલા વજનનું હોય છે. એ ગાંઠમાં ટાંકણીની અળીથી તે વડાણના ઢાંણા જેવડા કદના ૧૦ થી ૧૦૦ ઢાળા હોય છે. અને તેમાં ઇંડાની સફેદીને મઠતો પ્રવાહી હોય છે એમાંનો ઢાળો ડ્યારે મોટો થાય છે. અને ડ્યારે તે ઘુસ્ત થાય છે, ત્યારે ગાંઠની છેક ઉપર ઉપસી આવે છે; અને તેની ઉપર ગર્ભસ્થાનની આગળ કહેલી બાજુની નઠીનો છેડો વલ્લોગી જાય છે. અને તે નઠીમાં તે ઢાળો ફૂટીને, પોતાની અંદરનો પ્રવાહી તે નઠીમાં રેદે છે અને જેમાંથી પછી તે રસ તે નઠીના ગર્ભસ્થાનની કોથળીમાં ઉતરેલા મ્હોં વાટે, ગર્ભસ્થાનમાં પડે છે.

સ્તન (Breast)

ગર્ભાશય સિવાય સ્તન પણ સ્ત્રી જાતિનો જ આ અવયવ છે, અને તે અવયવ પણ ઉત્પત્તિ અવયવની સાથે કેટલોક સંસ્થા રાખે છે, તે એક સ્ત્રીને ગર્ભ રહે છે ત્યારે તેના આકારમાં તથા રૂપમાં ફરકાર થાય છે, પ્લેઝુર નહિ પણ પેદા થનાર ચાલક માટે તેમાં પોષણકારક દુધનો કુપાલુ કુદરત અગાઉથી જ સંગ્રહ કરી રાખે છે. સ્તન દેહીતા એક માંસનો લોપાનો ચંચળા ઘામે છે પણ સર્વ જોતાં તે માંસના સ્નાયુવાળા ૧૬-૨૦ શુભાગાઓનાં મોંઘાં છે, ત્યાં દુધ પેદા થાય છે. (અર્થ)



स्टेशनकी राफ़ि*

(लेखक—धन्यकुमार जैन-रया० म० काशी)

(१)

शीत ऋतु है। रात्रिका समय (८॥ बजे) हैं। इतनेमें एक गाड़ी संगमपुर स्टेशन पर आ पहुँची। मुसाफ़िरोंके नई उतरते ही गाड़ीके छूटनेका नंग्र बन्ना। ठीक इसी समय एक बानूने दौड़ते हुए प्लेटफार्म पर प्रवेश किया। “वो” से सीटी बजाकर इजान महाशयने मानो बानूको तिरस्कार रूपसे “वत वत” शब्द करते हुए दौड़ना प्रारम्भ किया। बानू हताश होकर स्टेशन मास्टरसे पंछने लगे—
बानूजी, अब देन (रेलगाड़ी) कम आवेगी ?
स्टे० मा०—“कहाँकी देन ?”
बानू—“कलहसा जानेंके लिए।”
स्टे० मा०—“अब तो एक बजे आवेगी।”
उसी समय स्टे० मा० वहाँसे अटक्य हो ए। एक सलासीने निशेणी (नसेनी) द्वारा न लालटेन बुझा दीं। बानू धीरे २ प्लेटफार्मके बाहर जाकर टहलने लगे। इतनेमें एक उवाईकी दुकान दिखाई पड़ी।

स्टेशनसे ग्राम दो मीलकी दूरी पर था। रात्रिके दोनों किनारों पर केवल जंगल ही था। उम जंगलमें सिके भूगलोंके हुआ, हुआ” शब्द मान सुनाई पड़ते थे।

* “मानवी ओ समवेणी” के एक बंगाली कवि भाषावाद।

वहीं रात्रे २ बानूने कुछ आहार करनेका निश्चय किया। धीरे-२, ये हटसाईकी दुकानपर पहुँचे। घूरा, हलवाई नम्रा लगाकर रामायण पढ़ रहा था उसने कहा—आइये। साहब, बैठ जाइये।
बानू—(बैठकर बैठकर) तुम्हारी दुकानपर क्या २ चीजें तैयार हैं ?

हटसाई—महाशयजी, आपको क्या चाहिये ? ताजे पेड़े, परफ़ी, कनौड़ी और सिगाड़े हैं—ये सब आज ही सँतरे बनाये गये हैं।

इच्छानुसार मिठायादि लेकर बानू आहार करनेके लिए बैठ गये।

इसी अवसरमें इनका परिचय देना परम-आवश्यक है। एतक विषय है कि इसके लिए हमको विशेष परिश्रम नहीं करना पड़ेगा, नाम ही प्रकाश करनेसे पाठक समझ आयेंगे। इनका नाम “श्री गोवर्द्धनदास” है; और इनका निवास काठमांडू हैं। इस स्टेशनसे कोई दो कोसकी दूरी पर एक ग्राम है, उसग्रामके एक सज्जनकी कन्याके साथ इनके भतीजेका सम्बंध निश्चय हो रहा है। आज दिनके तीन बजेकी गाड़ीसे ये आये हैं; और ८॥ बजे की गाड़ीसे जाना चाहते थे, किन्तु भाग्य ने पड़े हैं।

आहार कर चुकने पर गोवर्द्धनदास नहीं पड़ा। पार्श्वसे पंछा—“तुम्हारी दुकान तो बंद रहनी है ?”

हटसाई—“जो भजे सलासीने जाकर दी थी। गोवर्द्धन बानू—“या, मैंने उसका कुछ भी

हटसाई—“उम्मा। यदि आप कष्ट सहें तो शयन करता हूँ।”



(२)

संग्रामपुर छोटा सा स्टेशन है । उसका आफिस, तारघर आदि सब एक ही कमरेमें हैं । मुसाफिरखाना भी नहीं है । गोवर्द्धन बाबू प्लेटफार्म पर पहुँचे, वहाँ जाकर देखा कि आफिसका ताला बंद है । बाहर एक खलासी कम्बल ओढ़े सो रहा है । सिर्फ एक बत्ती जल रही है, उसका भी प्रकाश बहुत कम है ।

गो० बा०—(खलासीसे) “ बाबू कहाँ गये हैं ? ”

खलासी—“ भोजन करने गये हैं । ”

गो० बा०—“ कब आवेंगे ? ”

खलासी—“ आते ही होंगे ! ”

वहाँ पर एक वेश पड़ी थी, उसी पर बैठ गये । बेगको खोलकर पानका डिब्बा निकाला और जूता खोलकर सोनेका विचार किया; परंतु इस शीत ऋतुमें उनके लिए सोना मुश्किल हो गया । इतनेमें सामनेसे जूतेकी आहट सुनाई पड़ी । बत्ती हाथमें लिए हुए स्टेशन-मास्टरने आफिसमें प्रवेश किया और दरवाजा संवेध मार दिया । थोड़े समय तक गोवर्द्धन आर्तव एटेंडिंग कर धैर्य तो बड़े । उठकर स्टेशन-मास्टर से तैयारी अभी तो गाड़ीको बहुत विद्युत् आपीशु, गर्भस्थान देनकी कृपा करें । तेभी तेजुं यज्ञन व... कार्यकी सिद्धि हो गई । माय छे. गर्भ रंया... बैठ जाइये । ” मांगमां चंटे छे अने हंटी छे... प्रवेश किया स्थानने उपने वे गुण ३... गये । भी एकेक नज्दीकलेगीहीर... वहाँ एक लम्बी

मंज पड़ी है, उस पर बहुतसे खाते (रेल्वे बुक) बिखरे पर पड़े हैं । स्टेशनमास्टर भी अपने कार्यसे निपट कर एक पुस्तक पढ़ने लगे । गोवर्द्धन बाबूने मस्तक उठाकर देखा कि यह पुस्तक (भीषण रक्तारक्ति) उन्ही (गोवर्द्धन बाबू) की बनाई हुई है । गोवर्द्धन बाबू नवीन लेखक नहीं हैं । वे इस छोटेसे गांवमें अपने उपन्यासका प्रचार देखकर फूले न समाये उनका जाड़ा कहाँ चला गया इसका कुछ भी पता नहीं । स्टेशनमास्टरने भी उपन्यासको आधा पढ़ डाला । गोवर्द्धन बाबू मन ही मन कहने लगे कि मैंने जो विज्ञापनमें लिखा है कि इस उपन्यासके पढ़नेसे निद्रा नहीं आती, सचमुच ही वह सत्य है ।

गोवर्द्धन बाबू पाठकको अपना परिचय देनेके लिए मछलीके समान तड़फने लगे और सोचने लगे । पुरानी चादर ओढ़कर, फटा जूता पहरकर, मैं यहाँ इस अवस्थामें बैठा हूँ । क्या इस बातको सुनकर ये (स्टेशन-मास्टर) चकित न होंगे ? अहा ! यह तो बड़े ही सज्जन हैं । मैं इनका नाम पहिले पृष्ठगा, तो ये मेरा नाम अवश्य ही पढ़ेंगे । गर्दन उठाकर गोवर्द्धन बाबूने देखा, कि वे तेईसवाँ परिच्छेद पढ़ रहे हैं; और यही परिच्छेद विरेप चमकदार है, अतः रसभंग करनेकी इच्छा न हुई । परिच्छेद सम्पूर्ण होनपर गोवर्द्धन बाबूने स्टेशनमास्टरसे पूछा—“ महाशय, आपका नाम क्या है ? ”

स्टे० मा०—(पुस्तक पढ़ते हुए) “ यीशु-नाथ प्रोप । ”



इनका कहकर चौबीसवां परिच्छेद प्रारम्भ कर दिया । गोवर्द्धन बाबू सहजमें छोड़ देनेवाले मनुष्य नहीं हैं ।

गो० बा०—(स्टेशनमास्टरसे) “आपका निवास स्थान कहाँ है ?”

स्टे० मा०—(पुनः पढ़ते हुए) “दुगलीके निकट ।”

गो० बा०—“ग्रामका नाम क्या है?”

स्टे० मा०—“शंकरपुर।”

यह कहकर पच्चीसवां परिच्छेद पढ़ने लगे और गोवर्द्धनबाबूकी दाढ़ न गल सकी ।

(३)

स्टेशनमास्टरने जब उपन्यास पढ़कर समाप्त किया, तब कोई साढ़े बारह बजे थे ।

स्टे० मा०—(गोवर्द्धन बाबूसे) तबसे आप बैठ ही हैं ?”

गो० बा०—“जी, हाँ ? और क्या करता?”

स्टे० मा०—“आपको बड़ी तन्मूर्ति हुई होगी, पान खाइयेगा ?” कहकर गो० बा० के सामने पानका डिब्बा रख दिया ।

गो० बा०—(पान खाकर, अस्ने मनमें कहने लगे) “हाय ! यह व्यक्ति जानता नहीं कि मैं निमतो पान दे रहा हूँ यह कौन है ?”

स्टे० मा०—“आप कहाँसे आ रहे हैं; और आपका क्या नाम है ?”

गो० बा०—मैं अपने भतीजेके लिए कन्या देखने गया था, मेरा नाम गोवर्द्धन-दत्त है ।”

नाम सुनते ही (स्टेशन मास्टर) ने पूर्व पक्षि पुनःकरा दाढ़भयेन खोकर पढ़ा,

और गोवर्द्धन बाबूकी ओर देखने लगे । उनकी अवस्था देखकर, गोवर्द्धन बाबू हँसकर बोले—

“क्या विचार रहे हैं ?”

स्टे० मा०—(संकोचके साथ) “क्या आप ही इस पुस्तक (भीषण रक्तारक्ति) के लेखक हैं ?”

गो० बा०—(भोले बनकर) “कौनसी पुस्तक ?”

स्टे० मा०—“भीषण रक्तारक्ति।”

गो० बा०—“जी हाँ, मैंने ही लिखी है।”

स्टे० मा०—“ऐ-आप !-आप ही का नाम गोवर्द्धनदत्त है ? महाशय, आपके साथ मैंने यह बड़ा अन्याय किया है । क्षमा कीजिये ।

गो० बा०—“नहीं नहीं, आपने कुछ भी अन्याय नहीं किया ।”

स्टे० मा०—“यह अन्याय नहीं है कि आप यहां तीन घण्टेसे बैठ हैं, मैंने आपसे पूछा भी नहीं कि आप कौन हैं ? यह अन्याय नहीं तो; और क्या हो सकता है ?”

गो० बा०—कुछ भी अन्याय नहीं; बल्कि आप मेरी पुस्तक पढ़कर उन्मत्त हो रहे थे, यह मेरे लिए सौभाग्यका विषय है । आपने मेरे बनाये हुए और कौन २ उपन्यास पढ़े हैं ?”

स्टे० मा०—“और कोई भी नहीं पढ़ा । हाँ; सुनीपत्रमें आपके बनाये हुए बहुतसे उपन्यास देखे हैं । यह पुस्तक कोई यात्री छोड़ गया था, मुझे खजासीने लाकर दी थी । इसमें एक पत्र भी था, मैंने उसका कुछ भी तान्त्रिक नहीं समझा । यदि आप मध्यम सके तो जीजिये ।

गोवर्द्धन बाबूने चश्मा लगाकर पत्र पढ़ना प्रारम्भ किया—

माई कुल !

मंगलवारकी रात्रि और शत्रु दुर्ग आक्रमण; याद है! तुम दल सहित हो, अतः उसी दिन शामको यहां उपस्थित होना अन्यथा कार्य निगड़ नायगा। सबको यहां शामिल होकर शामको चलना होगा। रात्रिके दो बजे कार्य (युद्ध) शुरू होगा। कार्य समाप्त होनेपर प्रातःकाल ही चले जा सकोगे। अलमतिविस्तरेण ॥

तुम्हारा हितैषी—

निताई चन्द्र ।

पत्र पढ़कर गोवर्द्धन बाबू समझ गये; यह स्वदेशी डकैती है।

गो० बा०—“वे सब कितने आदमी थे ?”

स्टे० मा०—“बीसके करीब होंगे।”

गो० बा०—“उनकी अवस्था कितनी और चेहरा कैसा था ?”

स्टे० मा०—“अवस्था सोलहसे लेकर बीस तक और चेहरा सांवल था।

गो० बा०—“टिकट किस क्लासकी थी ?”

स्टे० मा०—“इन्टर क्लासकी।”

गो० बा०—“सिग्नल या रिटर्न ?”

स्टे० मा०—“रिटर्न।”

गो० बा०—“टिकट निगड़लिया तो सही।”

स्टेशनमास्टरने डेस खोला, और उसमेंसे सब टिकटें निगड़ लीं और उनमेंसे छल २ टिकटें छानकर गोवर्द्धन बाबूको दीं। गोवर्द्धन बाबूने उन्नीस टिकटें छँदी। उन सबके नम्बर नोट-

बुकमें लिखना प्रारम्भ किया। सब टिकटोंके नम्बर क्रमवार ही थे।

गो० बा०—(गम्भीर भावसे) “स्वदेशी डकैती !”

स्टे० मा०—(विस्मित हो कर) “स्वदेशी डकैती ! ऐं स्वदेशी डकैती ! आप यह क्या कह रहे हैं ?”

गो० बा०—“स्पष्ट स्वदेशी डकैती ! आपके पास म्यामि फाइंग्लास (जिस कांचसे स्पष्ट दीखता है) है ?”

स्टे० मा०—“नहीं, किस लिए चाहिये ?”

गो० बा०—“लिफाफेकी मोहर साफ नहीं दीखती है। यदि वह ग्लास होता तो स्पष्ट पढ़ कर इन डकैतोंका पता लगाता।”

गोवर्द्धन बाबूने चश्मा लगाकर ही पढ़ना चाहा लेकिन वह प्रयत्न बृथा हुआ। निदान बहुत प्रयत्न करने पर कुछ २ पढ़ सके।

गो० बा०—(गम्भीर भावसे) “आज ही नौ बजेकी डिलिवरीमें बहुबामारके पोष्ट-आफिससे यह लिफाफा बांटा गया है”—यह कह कर लिफाफा स्टेशन मास्टरको दे दिया।

स्टे० मा०—(गोवर्द्धन बाबूसे हाथमें पत्र लेने हुए) “आपकी बुद्धिको धन्य है !”

गो० बा०—(स्वगत) इन डकैतोंमेंसे कोई कुछ नामरु डकैत बहुबामारमें अवश्य रहता होगा। आज किसी घनिकर पर इन लोगोंने डकैती की है (प्रकट) “आज प्रातःकाल ही इन लोगोंसे पकड़ना होगा।”

(४)

गोवर्द्धन बाबू—(स्वगत) “यदि मैं इन



“उकैतोंको पकड़ सका, तभी रायचहादुरकी पदवी पा सकूंगा, अन्यथा नहीं ।” -

बहुत दिनोंसे गोत्रहैन बाबू इस (रायचहादुरकी पदवी)के लिए आशा रखने थे । आज गोवर्द्धन बाबूका मनोरथ सफल होगा ।

देन चली गई । स्टेशनमास्टर टिकट चेक करके ऑफिसतों लौट आये । जेबसे पानका डिब्बा निकालकर खाया, और गोवर्द्धन बाबूको दिया । निरुद्ध कुर्सीपर बैठकर बोले—“ न मालूम आज किसका सर्वनाश होगा ।

गो० बा०—“देखिये आज इन टकैतोंको पकड़कर मनोरथ सफल करना होगा ।”

स्टे० मा०—“कौन पकड़ेगा ?”

गो० बा०—“आप और मैं ।”

स्टे० मा०—“क्या कहा, मैं ?—“सर्वनाश” उन लोगोंके पास तमझे है, हम दोनोंकी गोपडी अलग ही दीवाई देगी ।”

गो० बा०—(हँसकर) “नहीं, अब उन लोगोंके पास तमझे नहीं है । वे (खेन) उन सबोंको आपसे साथ नहीं लावेंगे । कड़ी गाड़ कर आवेंगे ।”

स्टे० मा०—“तो भी उन लोगोंको पकड़ना सरन नहीं है । वे उन्नीम नीम आठमी और रहा हम दो—”

गो० बा०—“कौशमे पकड़ना होगा ।”

स्टे० मा०—“उमके बाट ।”

गो० बा०—“उसके बाट मारट—”

स्टे० मा०—“उसके बाट—”

गो० बा०—“श्री पर, अर्थात् केहें होगी !”

स्टे० मा०—“उमके बाट ।”

गो० बा०—“रायचहादुरकी पदवी—”

आइये, आप हमारे इस कार्यमें यथाशक्ति सहायता कीजिए ।

स्टेशनमास्टर गालपर हाथ रगकर विचारने लगे ।

गो० बा०—(ठंहरकर) “क्या आप कुछ भी सहायता न करेंगे ?”

स्टे० मा०—(हाथ जोड़कर) “गोवर्द्धन बाबू मुझे माफ कीजिये ? मैं गरीब हूँ, मैं इस कार्यके लिये असमर्थ हूँ । मुझे इस फंडमें गन डालिये ।”

गो० बा०—मैं क्या माफ करूँ ? आप यदि मेरी सहायता न करेंगे, तो मैं ही उनको पकड़नेके लिये यथासाध्य प्रयत्न करूँगा । मे अकेला उन टकैतोंको पकड़ सकूँगा ?

स्टे० मा०—(हाथ जोड़कर) मुझ पर कृपा-दृष्टि रखिये । आप भद्रात्मा पुत्र हैं—इस गरीबके ऊपर दया कीजिये । मुझे इस फंडसे बचाइये ।

गो० बा०—(राशपकड़कर) ‘उठिये, उठिये’ यदि आप इस कार्यसे डरते हैं, तो आप सहायता मन कीजिये । मैं जो कहता हूँ उसे ध्यानसे सुनिये—“यहां कोई एक ऐसा मकान है जिसमें कि उनको बँड किया जाय ?”

स्टे० मा०—“है, है बहुत अच्छी जगह पर है ।”

गो० बा०—“यहां पर है ?”

स्टे० मा०—(बाहर निकलकर) वह देखिये ।

जो बड़ी कोठी दीख रही है ! उसमें उन उन्नीस डकैतोंको बंद कर सकेंगे ।

गो० बा०—“वह मकान खाली है ?”

स्टे० मा०—“जी हां, खाली है । और उसमेंसे निकलना भी कठिन है । जब तक पुलिस न आवेगी, तब तक ‘डकैत’ इसीमें बंद रहेंगे । फिर तो ‘श्रीधर’ (कैदखाना) तैयार ही है ।”

गो० बा०—“कृपाकर आप लालटेन लेकर आइये, मैं घर देखना चाहता हूं ।

गोवर्द्धन बाबू घर देखकर फिर आफिसको लौट आये । आफिसमें जाकर करीब एक घण्टे तक बाबूसे परामर्श किया । इसके बाद इधर उधरकी बातें करने लगे । इतनेमें पौने दो बजेकी गाड़ी भी आ पहुंची । (कमशाः)

अहिंदपुराण ग्रन्थः

→ पूरः छप गया

जो भगवज्जिनसेनाचार्यकृत बड़ा भारी ग्रंथ मूल सहित सरल हिंदी भाषामें बहुत दिनसे छप रहा था वह पूरा हो गया । मोटे और मजबूत कागजपर बड़े टाइप-में खुले पत्रोंपर छपा है । न्योछावर अभी १६) सोलह रुपये ही रक्कवी है । डाकमार्फ अलग लगेगा । जिन्हें चाहिये वे शीघ्रतासे भेगा लें ।

• लालाराम जैन

महाराज-दंडोर.



वार्षिक चिवरण-जैनशिक्षा प्रचारक

सोसाइटी पहाड़ी धीरज, देहली । इसमें प्रथम सोसाइटीके कार्यकर्ताओंकी नामावली है फिर निरीक्षक महाशयोंकी शुभ सम्मतियां, पत्र-क्रम, निघमादि तथा ३१ मार्च १९१७ तकका खुलासा हिसाब है । रिपोर्टमें अंग्रेजी सम्म-तियोंका मापानुवाद भी होना आवश्यक था ।

द्विपती वार्ता विदार-प्रकाशक बीजापुर, छोटालास चौधरी - लखनऊ, अमदावाद ५० २०० छुटके डिमें छ आना । जेभां छुटके छ वार्ताजे छ जेभां जेक तो अतुरभाध नाम जेमे जदार पडेला दिंदी पुस्तकतो अतुर-वाद छे । प्रकाशक तरुथी द्विपती धर्म पुस्तक-भासा प्रकट थाप छे जेभां ४००-पु. जुं वांयन द्वा आनाभां अपाय छे तेतो आ पयी १०मे संयुक्त ग्रन्थ छे । जीर्ण पथ-पवित्र प्रभु जेमेतो प्रभाव, नवीन गृहिणी जेमे नरेन्द्र अथवा जे विद्यार्थी जे पुस्तक जेमेतीन तरुथी भज्यां छे जे आभार सदिन रवीशरीजे छीजे । आ सस्ता वांयनतो दरेक गुनराती जेभूजे लाभ सेवे जेछजे । द्विपती द्वितेन्धु नामे मासिकपत्र पथ आन गृहस्थ तदन भक्षत जदार पडे छे जे जेनु पोस्टेन मात्र छ आनांन भरनु पडे छे ।

वार्ता वारिधि-५ वर्ष ८ अ-५-६ प्रका-सक ५०० छुटके लासयद-अमदावाद वारिधि-३१ २१ जेभां जुदी जुदी भाषाप्रद वार्तातो संयुक्त प्रकट थाप छे ।

पाटीदारसुयोध सत्यभासा भाग १ दो-प्रकाशक-बीजापुर, छोटालास, मदीधर-पुरा-सुरत डि. ०१० जेभां पाटीदाशने उपयोगी जुदां जुदां छीयेतो संयुक्त छे । साधन प्रभावभां किंमत मजीन वधारे छे ।



સોલાપુર જૈન પાઠશાળાનો રિપોર્ટ-
એલક પલાલાલજી દિ. જૈન પાઠશાળાનો આ
૧૯૭૧-૭૨નો સંયુક્ત રિપોર્ટ જોતાં જણાય છે
કે આ પાઠશાળા સૌથી જુની એટલે ૩૨
વર્ષ થયાં ગયાં છે જે એના સંસ્થાપક શ્રી
દોશરાવે નેમચંદ દોશીને આભારી છે.
કે જે ૭૧ વિદ્યાર્થી પૈકી ૪૯ જૈન છે,
જેમાંના બહારના ૧૬ વિદ્યાર્થીઓ નાથારંગજી
જૈન ઓર્ગેના રહે છે. આશરે ૪૦૦૦૦) તું
ફંડ છે, જે સોલાપુરના શેડોને ત્યાં જ નમે છે
અને તેઓ જ એનું વ્યાજ આપે છે. એનું પાકું
ટ્રસ્ટીડ થવાની જરૂર છે. ૭૧ વિદ્યાર્થી પૈકી
૧૯ તો સંસ્કૃત અને અંગ્રેજી બોલે છે. દેખરેખ
ધણી સારી છે. આ રિપોર્ટમાં વિદ્યાર્થીઓનો
ગ્રુપ (ફોટો) પણ છે.

જૈનોનું મરણ પ્રમાણ-“મુંબઈ ધવાકાની
જૈન પરતીમાં પ્રાન્તવાર આવતું મરણ
અને જૈન કોમના નેતાઓની ફરજ” નામે આ
પુસ્તકમાંના જૈનોના મરણ પ્રમાણના આંકડા
એના પ્રકાશક શ્રી નરેશભાઈ બી. શાહ, ૧૫૫,
મેમનવાડા, મુંબઈની સંશોધન કરી પ્રકટ કર્યા
છે, જે જોતાં જણાય છે કે દિનેશ્વર મરણની
સંખ્યા વધતી જાય છે અને તે ઘટે તેવા ઉપા-
યો યોગ્યતા એ જૈનોની મુખ્ય ફરજ છે. જે
પેસાની ટીકીટ બીડી આ પુસ્તક મંગાવી વાંચીને
વિચારવા લાયક છે.

બાલકુલ્યા પ્રતિભાનું મૃત્યુ અને અનાથ
બાલકોનું પંડિતપુરનો ૧૯૧૪-૧૫-૧૬નો રિપોર્ટ
મળે છે, જે જોતાં જણાય છે કે એમાં અનેક
બાળકો અને નિરાધાર સ્ત્રીઓ પળાય છે.

હિંદુ અનાથાશ્રમ નડિયાડનો ૧૯૧૫-
૧૬ નો ૨૫૦ ય. નો રિપોર્ટ મળે છે. આ
સંસ્થા દિનપરદિન મોટા પાયાપર આવતી જાય
છે અને મદદ પણ ધણીજ સારી મળે છે જે
ઉત્તરોત્તર પ્રયાસરૂપે જાય છે. અમારે કહેવું
જોઈએ કે આ રિપોર્ટની ૪૦૦૦ પ્રતપર લખ-
વડે ખર્ચ કરવામાં આવ્યો છે. એટલીજ પ્રતો

આવી વ્યય ખર્ચમાં હજારો રાશત. સાર્વજન-
નિક મદદ મેળવીને તેનો ઉપયોગ હાથ રાખીને
કરવો જોઈએ.

પંચામૃત પ્રશ્નાલ-પ્રકાશક, બુદ્ધજીવ
શ્રાવક-દમોહ (સી. પી.) મૂલ્ય હેઠ આના ।
इसमें बहुत अभिप्रेकपाठ शब्दार्थ और भावार्थ
सहिा सरल भाषामें दिया गया है । हमारे
कई माई संस्कृत पंचामृत अभिप्रेकपाठ
पढ़ते हैं परंतु उसका अर्थ तो जानते ही नहीं
और बिना अर्थ जाने उसका फल मिलना
असंभव है इस लिये जो कुछ भी पाठ पढ़ा
जाय उसका अर्थ तो जानना ही चाहिये ।
हरएक पाठशालामें भी यह पुस्तक प्रवेश करने
योग्य है । प्रकाशकसे प्राप्य ।

શ્વે० તેરાપંથી સભાની રિપોર્ટ-
શ્રી જૈન શ્વે० તેરાપંથી સમા કલકત્તેની यह
तृतीय वार्षिक रिपोर्ट देखनेसे विदित होता है
कि यह समाका कार्य उत्तरोत्तर बढ़ता जाता
है । १९०००) का तो स्थायी फंड है जो
११ महासर्वोंके पांच २ हजार देनेपर हुआ
है, जिसमेंसे पाठशाला, व्याख्यान सभा, पुस्त-
कालय, लाइब्रेरी आदिका कार्य उत्तमनासे होता
है । इस वर्षमें कुल ४८०४१-) खर्च हुआ
था । इसके मंत्री केशरीचंदजी कोठारी (क्ला-
इव स्त्रीट, कलकत्ता) बहुत ही उत्साही मालूम
पड़ते हैं । हरएक स्थान पर ऐसी सभा होमेकी
आवश्यकता है ।

सर्विषयाका इतिहास-लेखक-राजराना
महानीसिंह बहादुर, झांझवाड़ और प्रकाशक-रामच-
ताना हिन्दी साहित्य सभा-आलरापाटन सिटी-
पृ० ८० और मूल्य पाँच आने । झांझवाड़



नरेशने युद्ध व्याख्यानमें पढा हुआ यह व्याख्यान उनके फोटो सहित है जिसके पढ़नेसे एकता, स्वाधीनप्रियता, शूरीरता आदि अनेक प्रकारकी शिक्षाएं मिल सकती हैं। इस समाकी वार्षिक फी १) है, जिसमें समाकी ओरसे प्रकाशित पुस्तकें विनामूल्य मिलती हैं, और कोई भी महाशय आठ आना प्रवेश फी देनेपर स्थायी ग्राहक हो सकता है और उन्हे सर्व ग्रन्थ लागतके मूल्यसे मिलते हैं। इसका फुटकर मूल्य भी कम रखना उचित था जिससे कि विशेष प्रचार हो।

भारतीय जै०सि०प्र० संस्थाकी रिपोर्ट—जैन साहित्यकी सेवामें रात्रिदिन छवलीन, निःस्वार्थी समाजसेवक और बाल-ब्रह्मचारी पं० पन्नालालजी बाकलीवालने कलकत्तेमें भारतीय जैनसिद्धांतप्रकाशिनीसंस्था नामक संस्था तीन वर्ष हुए स्थापित की है जिसका यह २४४१-४२ का हिसाब है। इतने थोड़ेसे समयमें इस संस्थाने संस्कृतके और भाषाके कई ग्रन्थ जैसे कि तत्त्वार्थरामचार्तिकनी, शब्दार्णवचंद्रिका, आसमीभाषा, शब्दानुशासन, जैनैन्द्र प्रक्रिया, संस्कृत प्रवेशिनी आदि संस्कृत भाषा टीका सहित तथा हरिवंश पुराण, अर्थप्रकाशिका, तत्त्वज्ञानतरंगिणी, न्यायदीपिका (बंगला अनुवाद) सहित आदि हिन्दी भाषाटीका सहित बहुत उत्तमताके साथ प्रकाशित किये हैं। संस्थाकी बहुतसी रक्म पुस्तक प्रकाशनमें लग गई है और अब रोकड़ सिटक न होनेसे आगे कार्य रुका

हुआ है इस लिये हरएक जैनीका फर्ज है कि इस परोपकारी संस्था द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ खरीद करें और जहां तक हो इस संस्थाके स्थायी समासद भी बनें। यह हिसाब और संस्थाकी नियमावली निम्न लिखित पतेपर पत्र लिखनेसे सुफ्त मिलती है—मंत्री, भारतीय जैनसिद्धांतप्रकाशिनी संस्था, नं ९, विधकोश लेन, बाग बाजार, कलकत्ता।

पारमार्थिक संस्थाकी रिपोर्ट—

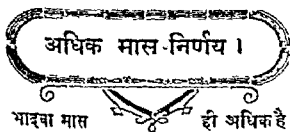
जैन समाजके सुपरिचित श्रीमान दानवीर रायबहादुर सेठ हुकमचंदजी साहब (इन्दौर)ने करीब तीन लाख रुपये लगाकर इन्दौरमें दि० जैन पारमार्थिकसंस्थायें स्थापित की हैं जिनकी वीर सं. २४४२की यह रिपोर्ट मंत्री लाला हजारीलालजीने प्रकाशित की है। इसमें जैन मंदिरजी, सार्वजनिक विशाल धर्मशाला, महाविद्यालय, बोर्डिंगहाउस, कंचनबाई श्राविकाश्रम, औषधालय आदि संस्थाएं उत्तरोत्तर वृद्धि पूर्वक चल रही हैं। महाविद्यालय और बोर्डिंगमें तो छात्रोंकी इतनी संख्या हो गई है कि अब ज्यादाको भर्ती करनेका स्थान नहीं है। सेठ साहबको उचित है कि इस विद्यालयको विशेष सहायता देकर महाविद्यालयका नाम बरान सार्थक करें। इस वर्ष धर्मशालासे १०२२७ यात्रियोंने सुगमतासे लाभ लिया था। बोर्डिंगमें ५६ विद्यार्थी रहते हैं। कंचनबाई श्राविकाश्रममें सिर्फ २० श्राविकाएं पढ़ती हैं इसलिये इसकी संख्या बढ़ानेका प्रयास होना चाहिये। इस रिपोर्टमें पाँचों संस्थाओंकी अलग अलग रिपोर्ट और आंकड़ा भी सामिल



किया गया है और प्रारंभमें इस संस्थाके दार्शनिक दराजेका भव्य चित्र भी प्रकट किया है ।

जैन पुस्तक अंशरत्ना रिपोट—धारा-
ल (आडियावाड) भां १५ वर्ष यथा जैन पुस्तक
अंशरत्नी स्थापना यथेली छे, जेना १८९८थी
७२ सुधीना पांच वर्षने आ रिपोट जेवां
अध्याय छे के आ संस्थानुं काम नियमित रीते
थाय छे. ओरिंअ, स. पाठशाणा अने बाय-
बेरी अक्षावना उपरंत पुस्तकालयभां नखे हिर
झना जैन ग्रंथोना वधावे यथेअ नय छे.
भासिक आठ आना भरनाथी आ संस्थाना
स्थापी मेअर थाय छे भंत्री, कामदार पोपट
पनभाणी, धाराल (आडियावाड) ने अन्वयाथी
रिपोट तथा सर्वे गाह्यति भजे छे.

अन्वयक—प्रकाशक—पुश्पोत्तम—गीगाभाध
साह, अधिपति, जैन शासन—आपनगर—आप-
नगरथी जैन शासन नामे अहवाडिक (डि-
ही—गुजराती) पर प्रकट थाय छे तेना
सातभा वर्षना आठकोने आ २५० पृष्ठानुं पु-
स्तक भेट आपवामां आव्युं छे, न्यारे छुटक
किमत १) छे. आ ओक भराडी पुस्तकने
अनुवाद छे, जे वांयवासी साति अक्षरशेनी
दाक्षनी छोडी स्थितिथी छटकी अवनति यती
नय छे तेनुं हिंदीसँ दृष्टांत रूपे थाय छे.



अधिक मास निर्णय ।

भाद्रमास ही अधिक है ।

(१) जैनचार्यकृत ज्योतिष ग्रन्थोंमें अधिक
मासका 'निमित्तवारा', 'जैनसंहिता', 'द्विवात्री-
कल्प' 'भावप्रबोध' आदि अनेक ग्रन्थोंमें वर्णन

है, परन्तु 'निमित्तवारा' छोटासा ग्रन्थ है
उसमें इमका अच्छा वर्णन किया है ।

(२) यदि मूल पाठ लेकर उसकी व्याख्या
की जाय तो लेख नष्ट जानेका भय है, इसलिये
खुलासा भाषामें लिखता हूं जिसको लघु दीर्घ
सब समझ सकें ।

(३) अधिक मास उसको कहते हैं जिसमें
संक्रांतिन हो, जैसे कभी वैशाख ८० ३०को
संक्रांति हुई और दूसरी ज्येष्ठ शुद्ध १को जो
हुई तो वैशाख मास अधिक होगा । यथार्थ
यह नियम असली जानो, और भेदाभेद स्थूल
मन हैं यथार्थ नहीं ।

(४) अधिक मासका विचार शाका शालि-
वाहनसे है परंतु जो प्राणी विक्रम सम्मतसे करते
हैं, उसमें अंतर पड़ जाता है ।

(५) चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आपाद, धावण,
भाद्रपद, अश्विन यह सात मास ही अधिक
मास होते हैं । कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ,
फाल्गुण यह पांच कभी भी अधिक नहीं होते ।
और प्रत्येक मास १९ वर्षमें आता है, केवल
ज्येष्ठ मास १९ वर्षमें दो बार आता है, ८में
और ११ में ।

(६) यह नियम शाका शालिवाहन १७०१
से लगाकर १८०० तक रहा, फिर इसमें
परिवर्तन हो गया । मारार्थ—विक्रम सम्बत्
१४४० के पश्चात् इममें भेद पड़ गया ।
जो आगे दिखलाया जाता है और पूरे
१०९ वर्ष पश्चात् परिवर्तन अवश्य हुआ
करता है ।

(७) आजकाल ज्योतिषियोंने एरुहिसाव



बना रक्खा है, वह इस प्रकार है कि जितने विक्रम सम्बत हों उनमें ४ अंक और जोड़कर उन्नीसका भाग देंगे जो अंक शेष बचे उनमें २-३-४-८-११-१३-१६-०० इतनी पर ही अधिक मास होता है, और पर नहीं, और २ पर चैत्र, ३ पर आश्विन, ५ पर श्रावण, ८-०० पर ज्येष्ठ, ११ पर वैशाख, १३ पर भाद्रपद, १६ पर आषाढ़। इसी हिसाबको यथार्थ मान आनकल अनेक ज्योतिषी आश्विनको १९७४ में अधिक होना बताते हैं परन्तु यह विचार उनका ठीक नहीं है।

(८) शाका १८०० तक यह हिसाब ठीक रहा। उसके पश्चात् मासभेद हो गया, जैसा कि १९४९ में वैशाखके स्थान पर चैत्र, १९६४ में वैशाखके स्थान पर चैत्र १९६६ में भाद्रपदके स्थान में श्रावण, १९७२ में ज्येष्ठके स्थान में वैशाख अधिक मास हुए हैं।

(९) ज्योतिष शास्त्रका यथार्थ आधार सूर्यकी गतिपर है, और देशभेदसे सूर्यका उदयास्त भी पृथक् है। बस, जहां संक्रांति अमावस्यके दिन हो और दूसरी शुक्ल प्रतिपदाकी हो वहां वही मास अधिक होता है।

(१०) जहां कहीं अमावस्यकी घटिका दिनमाससे थोड़ी हों और जब शुक्ल प्रतिपदा उस दिन ही आ जाय और प्रतिपदाकी घटिकाओं में संक्रांति प्रवेश करे तो वह मास अधिक नहीं हो सकता। कुछ ग्रन्थकारोंका ऐसा भी मत है, परन्तु अप्रमाण है।

(११) १९७४ में हमारे पंचांगमें भाद्रपद कृष्ण १४ वृहस्पतिकारकी ३२-२० पर

सिंहार्क है और कन्यार्क अगली अमावस्यको रविवार ३३-०८ पर है और उस दिन अमावस्य २१ घटि है, इस लिये इस वर्ष भाद्रपद ही अधिक मास-निश्चय है।

(१२) यदि किसीको पूर्वोक्त लेखपर कुछ शंका हो तो लिख भेजें, फिर सप्रमाण उत्तर दिया जावेगा, और सम्पूर्ण जैन सम्पादक समानको चाहिये कि इस लेखको अपने अपने पत्रमें स्थान देकर जैनियोंका उपकार करें, क्योंकि भाद्रपद मास जैनियोंका उत्तम मास है। अलम्।

जैन मात्रका दास—

आ० मा० ज्यो० २० पं० जियालाल चौधरी—फरखनगर (गुजरात-पंजाब)

वार्षिक भ्रमण श्री ऋषभ ब्रह्मचर्या-

भ्रम-हस्तिनापुर और

जैनविद्वी मूलविद्वीकी

महान् यात्रा ।

अवकी बारका आश्रमका भ्रमण अपूर्व ही होगा। इस भ्रमणमें सबसे बड़ा लाभ श्री जैन-विद्वी मूलविद्वीकी वन्दनासे विशेष पुण्यकर्म और विशुद्ध परिणामोंकी प्राप्ति होगी। दूसरा लाभ ससंगतिका होगा। अवकी बार ब्रह्मचारियोंके साथ बाबा भागीरथजी वर्णी, ला० गेंदनलालजी-अभिष्टाता आश्रम, पं० मन्मथनलालजी शास्त्री-न्यायालंकार-मुन्या-ध्यायक आश्रम तथा बाबू ज्योतिषसादनी-सम्पादक, जैनविद्वी आदि विद्वान् साथ



रहेंगे, इससे मार्गमें तत्त्वचर्चा, शास्त्रसमा, व्याख्यान समाजोंका अच्छा आनन्द रहेगा । विशेष हर्ष यह है कि अवकी बार श्रीमान् ला० जग्गीमलजी—समापति आश्रम रहंस, देहली तथा साहू जुगमन्दरदासजी—ऑनरेरी मजिस्ट्रेट, नजीबाबाद—मंत्री आश्रम भी कुछ समयके लिये भ्रमणमें साथ रहेंगे ऐसी आशा की जाती है । इसमें सन्देह नहीं कि अवकी बारका भ्रमण महत्त्वका होगा । जो महानुभाव इस समागमके साथ इस महान् यात्राका लाभ लेना चाहें वे कृपाकर हमें सूचन करें ।

विशेष—अवकी बार १५-२० ब्रह्मचारी भ्रमण करेंगे, शेष कुल ब्रह्मचारी सिद्धसेन श्री सोनागिरजीमें रहेंगे ।

प्रोग्राम इस प्रकार है:—

१ देहली	१-२ अगस्त
२ ग्वालियर	३-४
३ खंडवा	५-७
४ नांदगांव	८-९
५ बारामती	१०-१२
६ बार्सी-यउन	१३-१५
७ कुंजगिरि	१६-१८
८ शोलापुर	१९-२१
९ हुबली	२२-२४
१० धवणपेलगुल (जैनविद्वी)	२५-२८
११ मूलभिट्टि	२९-१ सितम्बर
१२ बैंगचोर	२-४
१३ भैरु	५-८

१४ दावनगिरि	९-१२
१५ घेलगांव	१३-१५
१६ कोल्हापुर	१६-१७
१७ सांगली	१८-२०
१८ पुना	२१-२३
१९ बम्बई	२४-२७
२० गजपंथाजी	२८-३०
२१ हस्तिनापुर	१ अक्टूबर

नोट—कारणवश नियमित तारीखोंमें एक दो दिनका परिवर्तन होनेसे आगेके स्थानोंमें तार द्वारा सूचना दी जावगी ।

समाजसेवी—

गेंदनलाल, अधिष्ठाता—आश्रम
हस्तिनापुर (मेरठ)



(१)

रात्रिका समय है, सम्पूर्ण पशुपक्षी वगैरह निद्रादेवीकी गोदमें पड़े हुए हैं, चन्द्रदेवमानो अपना कलङ्क प्रगट होनेके डरसे आधा मुत्त छिपते हुए आकाशमें गमन कर रहे हैं । सब जगह शान्ति देवीका राज्य स्थापित है; ऐसे समयमें मैं अपने पाठकोंको बनारसके धर्म नामक उद्यानमें लिये चढता हूं । पाठको ! चलो, हम लोग आज ऐसे समयमें बागकी बहार लें । एक मनुष्य जिसने शुद्ध अवस्थामें अभी ही प्रवेश किया है एक मंडेको रम्मीसे बांधकर लिये



जा रहा है, हाय! हाय! अरे पापी! तू ये क्या करने लगा? क्या तुझे पापका डर नहीं? तू समर्थ है तो क्या दूसरे निर्बल जन्तुओंको मारनेके लिये....हाय! पर वहां ऐसा कहनेवाला ही कौन है? आखिर उस पापीने वहां पर उस मेढेको मार ही डाला और उसका मांस भक्षणकर नौ दो ग्यारह हो गया।

(२)

“महाराज अब मैं क्या करूं! मेरा नीच पेशा है। मुझे प्रतिदिन फांसी देनेका कार्य करना पड़ता है। अब मैं आपके उपदेशका पात्र कैसे बनूं?”

सर्वोपनि मुनिके निकट एक मनुष्य हाथ जोड़े हुए बैठा है और उक्त प्रकारके वचन कह रहा है इसी समय सज्जन दुर्जन और नीच ऊंचमें रागद्वेष रहित सर्व हितकारी मुनि महाराज बोले—

मुनिराज—यमपाल, यद्यपि तेरा पेशा बहुत खराब है किन्तु “तू मेरे उपदेशका पात्र नहीं है” यह कहना भी ठीक नहीं। यदि तুম अपना रोजगार नहीं छोड़ सकते तो चतुर्दशीके दिन इस कामसे दूर रहा करो। तेरा इसमें भी बड़ा कल्याण होगा परन्तु याद रखना कि इस प्रतिज्ञाको जन्मभरमें कभी घटका न लगे।

यमपालको मुनिराजके अमृतमय वचन सुनकर बहुत आनन्द हुआ—

(३)

भयोंरी, आज तेरा पति वहां गया!

श्री—महाराज, आज मे प्रातःकालसे ही

दूसरे ग्रामको चले गए हैं।

आगन्तुक—(अपने आप नरा जोरसे) अरे-अभागो! आज तू ग्रामको चला गया! आज सेठके लड़केकी फांसी लगना थी। तेरा तो उसके गहनोसे ही जन्मदारिद्र्य चला जाता।

हाय लोभ! तू सचमुच पापका बाप है। बड़े-वीरोंके भी तेरे साम्हने छत्के छूट जाते हैं। फिर चोरी चण्डालिनीकी क्या ताकत है जो तेरे साम्हने चूं भी कर सके। आखिर तुम्हारे बाणने चण्डालिनीके ऊपर असर कर ही दिया। अब यह विचारी शोक सागरमें निमग्न हो गई। अब वह क्या करे? यदि कहती है तो पतिका भय है। यदि नहीं कहती है तो धन हानि होती है परन्तु आज लोभ महाराज अकेले ही नहीं आए थे किन्तु अपनी प्राण प्यारी मायारानीको भी साथमें लाये थे। आखिर उस बेचारीने मायारानीकी शरण ली और कोटपालसे तो यही कहने लगी कि वे ग्रामको गये हैं और अंगुलीसे अपने पतिकी तरफ इशारा करने लगी। आखिर बेचारे चाण्डालको बाहर आना ही पड़ा।

(४)

आज तुमको श्रेष्ठ पुत्रकी फांसी लगाना होगी।

महाराज! आज तो चतुर्दशीका दिन है इसलिये मैं फांसी नहीं लगा सकता।

(जोरसे) अच्छा, तू हमारी आज्ञाका उल्लंघन करता है। आज मैं तुझे इसका मना चलाऊंगा, देख, फिर तेरी प्रतिज्ञा कहां रहती है।

नरनाथ! आज समर्थ हैं जो धरें पर सकते



हैं किन्तु मैं अपने व्रतका भंग नहीं करूंगा ।
चाहे मुझे ही फांसीका हुकम भले ही हो
जावे किन्तु मैं अपने इस नश्वर शरीरको ऐसे
कामोंमें लगा देत बहुत प्रसन्न हूंगा ।

(क्रोधसे) कोटपाल । इस दुष्ट चाण्डालको
और श्रेष्ठिपुत्रको ले जाकर मगरमच्छादि स-
हित सरोवरमें बांधकर गिरा दो ।

लेखक—अहाहा ! यमपाल तुम्हें धन्य है !
एकवार नहीं सहस्र बार तुम्हें धन्य है ! धन्य
है ! तुम ऐसी कठोर आत्माको सुनकर भी नहीं
हिले, धन्य है तुम्हारे साहसको ! तुम
कभी नहीं बचड़ाना, इस रागाने अभी तुम्हारे
व्रतके प्रभावको नहीं जाना है पीछे तो ये
आप ही पड़तायगा । अब मैं तुमसे क्या कहूं !
कोटपालने तो तुम्हारी मुसके ही बाध दी
और अब तुम सरोवरमें गिरा दिये जावोगे ।

(९)

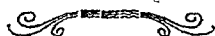
बनारस नातियोंके झुंडके झुंड एक छोट्टेसे
सरोवरकी ओर जा रहे हैं ! न मालूम आन
वहां क्या उत्सव है ?

पाठको ! चलो इन्हींके साथ हम भी चलें ।
अहाहा ! यह तालाबके बीचमें क्या चमक रहा है ?
ओ हो ! यह तो राज सिंहासन है और उसके
ऊपर एक आदमी बैठा हुआ है । ऐसा कहते-
र और देखते २ मनुष्योंके झुंड तालाबके पास
पहुँचे । वहाँ देखते क्या है कि उन सिंहासनपर
बैठे हुए मनुष्यका देव अभिषेक कर रहे हैं ।
अरे ! उनके ऊपर तो हमारा पूर्वपञ्चिन
यमपाल ही बैठा हुआ है ।

लेखक—यमपाल, धन्य है तेरे प्रतिज्ञा

पालनको ! अन्यथा तेरा अभिषेक देव क्यों करते ?
हाय ! काल ! तू वास्तवमें काल है । तुने मेरे वे
दिन कहाँ खो दिये ! हाय ! अब वे दिन कहाँसे
पावें जब कि चाण्डालकी भी देव सेवा करते थे ।
हाय ! हम लोग नरासी भी प्रतिज्ञा दो चार
दिनके लिये भी पूर्ण नहीं कर सकते । जैन
जातिके वीरो ! क्या तुम भी इस प्रकारका
प्रतिज्ञा पालन कर जैन धर्मकी प्रभावना करोगे !
पाठको ! कह बैठना कि ये कहाँका रोना गाना
मचाया है इससे मैं स्वतः पहिलेसे ही शांत
हुआ जाता हूँ । आपको मैं ज्यादा तकलीफ
नहीं दिया चाहता लेकिन एक बार वीर प्रभु-
की जय बोलकर प्रतिज्ञा पालनमें तत्पर हो
जाओ ।

दरबारीलाल जैन—दमोह सी. पी.



मनुष्यजन्मका कर्तव्य और
सुख प्राप्तिका उपाय ।



(ले० मोहनलाल बडजात्या—कुचामन)

प्रिय पाठक वृन्द !

“मनुष्य जन्म अति दुर्लभ है” ऐसा ज्ञानी
श्रुत्य, वैरागी महात्मा, तपस्वी जन, कह गये
हैं और यह यथार्थ है क्योंकि निगोदरूपी
स्वयम्भू समुद्र, एकैन्द्रियरूपी लवण समुद्र,
विकलेन्द्रियरूपी कालोदधि समुद्र और पशु
आदि पर्याय रूपी महा सागर भर करके इस
मनुष्यरूपी कुडमे माग्योदयसे शुभकर्म प्रमा-
वात् ही आ पड़े हैं अर्थात् भयंकर दुःख



और सागरोपम आयुष्यरूपी अपार जलको तैर कर थोड़ी आयुष्य और तुच्छ सुखरूपी थोड़े जलमें यानि मात्र पांच डुबे इतने जलमें आ गये हैं । और अब हमको विशेष-दूर भी नहीं जाना है क्योंकि परम सुखरूपी जो मोक्षमहल है उसका द्वार यह नर देह है, इस द्वारको खोलकर बन्धुगण आगे बढ़नेका प्रयत्न करिये, कार्यसिद्धि आपको अवश्य मिळ नायगी ।

मनुष्य भवमें स्वर कल्याण करनेके लिये अन्य भवोंकी अपेक्षा इतनी अधिक सामग्री मिली है कि उसका वर्णन करना कठिन है और यह बात आप जानते ही हैं कि अनन्त पुण्यराशीके बलसे यह भव मिलता है और इस भवमें पांचों इन्द्रिय, मन, वचन, काय और ज्ञानके प्रयोग द्वारा इच्छित वस्तुकी प्राप्ति कर सकते हैं । इन्द्रियोंके प्रयोगसे यह तात्पर्य नहीं है कि इन्द्रियोंसे सांसारिक काम लो-विषय-सेवनादि करो, लेकिन मतलब यह है कि शरीरसे तप आदि करो, हाथसे दान देओ, रसनासे यह ही नहीं कि अच्छे २ पदार्थ खाये, पराद निंदा करी, अस्तव्य मापण किया आदि, लेकिन उपदेश दो, सत्य बोलो, कमी किसीकी निंदा न करो, जिन्हाइन्द्रियके बशी-भृत होकर आप मानते ही हैं मछलीकी क्या गति होती है । घ्राणेन्द्रिय इस तेज बगैरः सुगंधित पदार्थोंसे दूर रहो ये पदार्थ राग उदय करते हैं । ध्रुमर इसी इन्द्रियके बश कमलके भीतर ही रह जाता है । चक्षुइन्द्रियके प्रयोगसे यह अर्थ नहीं है कि आप सांसारिक पदार्थों-

को देखकर आनंदित होवो, दुनयवी सुन्दरताको देखकर नयन तृप्त करो, यह रमणी अच्छी है यह स्त्री सुन्दर आदिसे पाप बन्व करो, लेकिन इन दो नेत्रोंसे जिन दर्शन करो, तीर्थोदि पर जाकर वहां जिनराजके दर्शन करो, इनके द्वारा शास्त्र पढ़ो आदि । श्रोत्रसे यह तात्पर्य नहीं है कि इनसे आप रागादिकके गीत सुनो, वेदयादिके भण्डगान श्रवण करो, अपनी कुल कामिनियों द्वारा महान निन्दनीक सीढनादि सुनो, लेकिन श्री जिनवाणीका श्रवण करो, उपदेशादि होते हो वहां जाकर सुनो !

इस असार-मनुष्य देहको ही विद्वानोंने संसारसमुद्रसे तिरनेका एक मात्र कारण कहा है:-

संसारवाधेस्तरणैकदेहम्, असारमप्येम

मुशन्ति येस्मात् ।

तस्मात् निरीदैः अपि रखणीयः कायः

परं मुक्तिरता पश्यते ॥

अतः मुक्तिकी वेड इस नर कायाका-उत्तम साधनों युक्त इस नर देहका दुरुपयोग न करके सदुपयोग ही करना आवश्यक है ।

स्व-पर (अपना तथा दूसरेका) हित करना मनुष्य जन्मका कर्तव्य है इसलिये जो मनुष्य तन मन धनसे पर-हित करता है और परोप-कारी कार्य करके वीरि सम्पादन करता है उसी मनुष्यका नरजन्म सार्थक है । कहा है कि-

यश्मिन्नीवति जीवन्ति महदः स तु जीवति ।

का कोऽपि किं न कुर्वते चक्षुषा स्वोदरपूरणं ॥

जितके मीनसे बहुत मनुष्य जीते हैं वही जीता है बाकी तो कौवा भी अपनी उदर पाटना घोंच द्वारा करता है इस लिये



जो प्राणी स्वोदर निर्वाह उपरांत अन्य अनेक प्राणियोंको जीवित रख सकता है—पाल सकता है, उनके निर्वाहादि साधनोंमें सहायभूत हो सकता है उसीका जीवन यथार्थ जीवन है । लेकिन जो जन्म धारण करके मात्र अपने हितमें अनुरक्त रहता है—अपनी पेट पालना ही में लीन रहता है और पर-हितके लिये एक क्षण भी उद्योग नहीं करता उसका जीवन कागके जीवनके समान जगतको निरूपयोगी है ।

यह न समझें कि भोजन मात्र ही जीवन साधन है यानि भोजन दान ही प्राणियोंको जीवित रख सकता है । नहीं नहीं, विद्यादानसे भी जीवित रह सका है यानि विद्या पद लेगा तो अपनी जीविका उत्पन्न कर लेगा । शास्त्रोंमें दान चार प्रकार कहा है और हम विद्यादानमें अन्ना दान आ जाते हैं लेकिन अभी यह विषय नहीं है अतः यही कहना काफी है कि दान करते रहना चाहिये ।

अब स्वपर कल्याण क्या है ? कैसे करना ? किस किमने किया है इत्यादि बातें जाननेके लिये शास्त्र अध्ययन एवं श्रवणकी आवश्यकता है । कितने मनुष्य शास्त्र श्रवण करके नष्टिमें विपरीत वर्तना देखकर कालको दोष देने हैं, कइ धर्मको दोष देने हैं, कइ भावी भाषपर आधार रतने हैं तो कइ भवस्थितिही बाट जोने हैं । कइ ऐसे कहते हैं कि जैसा केवली भगवानके ज्ञानमें झलका है वैसा होगा तो कइ क्षेत्रपर दोष मर्ते हैं हम प्रकार कइ निरुद्धमे कारणोंकी शोचना वरके समय बरबाद करने हैं लेकिन हमसे क्या बनेगा यह विचार-

ते भी नहीं हैं । ऐसा नहीं चाहिये, धर्म कृत्यमें मुरुपतासे उद्यम करना योग्य है अतः प्रत्येक छोटे बड़े, धनवान, दरिद्र मनुष्य देहधारीका कर्त्तव्य है कि जो अन्य मानव बन्धुगण किसी आधि व्याधिकर पीडित हो, ज्ञानसे विमुक्त हों, धर्म ज्ञान रहित हो उनका दुःख दूरकर सन्मार्ग बताना, कुमार्ग छुड़ाना, यह मनुष्य जन्मका बड़ेसे बड़ा और सच्चा कर्त्तव्य है ।

स्वयं तरना—परको तारना—उद्धारना ।

अब पाठक घृष्ट ! धर्म तथा मनुष्यजन्मकी उत्तमताके संभवमें महान तपस्वी, अनुमवी, महर्षी, महात्माओं द्वारा कथित चार अति उत्तम श्लोक लिखना हूं उनको आप सदैव ध्यानमें रखें:—

त्रिवर्गबंधाधनमतरेण, पञ्चोरिवायुर्विफलं नरस्य ।
तत्रापि धर्मे प्रवरवदन्ति, न तं विनायद्रवतोर्थकामौ ॥

अर्थ:—त्रिवर्ग (धर्म, अर्थ, और काम) के साथे विना मनुष्यकी आयु पशुके समान व्यर्थ है और इनमेंसे धर्मको श्रेष्ठ कहा है क्योंकि इसके बिना अर्थ और काम नहीं साथे जा सकते हैं ।

यः प्राप्य दुष्प्राप्यमिदं नरसं, धर्मे न यत्नेन करोति मूढः ।

ऋषयश्चान्न सत्कम्पयन्, चिन्तामणि पातयति प्रमादात् ॥

अर्थ—जो मूढ पुरुष इस दुष्प्राप्य नर देहको पाकर यत्न सहित धर्म साधन नहीं करता है वह अति कष्टसे मिले हुए चिन्तामणि रत्नको प्रमाद पूर्वक समुद्रमें फेंकता है ।

स्वर्णं स्थाले श्रियति सरजः पादयोजन विधत्ते ।
पीडयेत्, प्रवर करिण वाहयत्यैवमारे ।

चिन्तारत्नं विकरति करादायसोऽप्यनार्थम् ।
यो दुःप्रायं गमयति मुधामर्त्यं जन्मप्रमत्तः ॥

अर्थ—जो पुरुष अति दुःखसे प्राप्त हुवे मनुष्य जन्मको व्यर्थ खोता है वह सोनेके थालमें धूल फेंकता है, अमृतसे पांव धोता है, उत्तम हाथी द्वारा काष्ठ भारा दुहाता है, और कागके उड़ानेके लिये चिन्तामणि रत्नको हांपसे फेंकता है ऐसा समझना चाहिये ।

ते घत्सुरतरं वपन्ति भवने प्रोन्मूल्य कल्पद्रुमं ।
चिन्तारत्नमपास्य काचशकले स्थी कुर्वते ते जटाः ।
विकीर्यद्विरदगिरीन्द्रसदृशं क्रीणन्ति ते रासभे ।
ये लब्धं परिहृत्य धर्ममधया धावन्ति भोगाधयाः ॥

अर्थ—जो अधम पुरुष प्राप्त हुवे धर्मको छोड़कर विषय भोगादि वाञ्छनाके लिये दौड़ते हैं वे मूल अपने गृहांगणमें उगे हुवे कल्पवृक्षको उखाड़कर उसके स्थानमें घटुरेको बोते हैं । चिन्तामणिको त्यागकर काचके टुकड़े-को स्वीकार करते हैं तथा पर्वतके समान ऊंची काचके हांपीको बेच कर गधा मोल लेते हैं ।

अतः पाठकगण, इस संपारमें चौरासी लाख योनीमें भट्कते भट्कते अत्यंत पुण्य राशीसे भिड़े हुवे इस दुर्लभ मनुष्य जन्मको व्यर्थ न खोओ और मोक्ष साधनके उपाय करते रहो । उन उपायोंमेंसे मुख्य धर्मसाधन, इन्द्रिय दमन, परोपकार आदि हैं ।

अन सुख प्राप्तिके उपाय मुनिये—सुख प्राप्तिके उपाय ये ही हैं जो कि मनुष्य जन्मके कर्तव्य हैं—लेकिन सुख तथा वस्तु हैं यह विचारणीय है । सुखके लिये प्रत्येक प्राणी प्रयत्न करता है लेकिन सुख क्या है, वह

किस रीतिसे प्राप्त हो सकता है, इस बातका ज्ञान कइयोंको नहीं है । कइ पैसमें—धन द्रव्य में सुख मानते हैं तो कइ अधिकारमें—ओहदा पद आदिमें मानते हैं, और कइ स्त्री पुत्रादिकमें सुख मानते है और कुछ वैराग्यानंद तथा ज्ञानानंदमें सुख मानते हैं, लेकिन उन सर्व भिन्न भिन्न दिशामें प्रयत्न करनेवालोंने मता-ग्रही होनेके कारण जो सुख मान लिया वही सुख है अन्य कोई सुख नहीं है—ऐसा निषङ्क कहते हैं लेकिन पाठकगण, सच्चा सुख तो वही है कि जिसका परिणाम दुःखरूप न हो ।

दौलत—लक्ष्मी में ही सुख माननेवाले यह विचारते नहीं कि—

जनयत्यर्जने दुःखं तापयन्ति विपत्तिपु ।
मोहयन्ति च सम्पत्तौ कथमर्थः सुखावशाः ॥

अर्थ—जो धन उपार्जनके समय दुःख देता है विपत्तिमें परिताप करता है और सम्पत्तिमें मोह जरता है ऐसा धन सुखकारी कैसे होसकता है । अतः धन सुखकारी नहीं ऐसा सिद्ध होता है ।

फिर स्त्री पुत्रादिक भी क्षणिक सुख ही देनेवाले हैं क्योंकि ये शाश्वत और चिरस्थायी नहीं है इसलिये इनमें सुख माननेवाले भी गलती करते हैं । जिसमें हम सुख मानते हैं वही वस्तु परिणाममें यदि दुःख उपजावनेवाली हो जाय तो हमको समझना चाहिये कि हमारा माना हुआ सुख, सच्चा सुख नहीं है । सुख तो उसे ही कहना योग्य है कि जिसकालमें कोई भी कारणवशान



उसका परिणाम दुःखरूप न हो । इसलिये क्या स्त्री पुत्रादिककी 'प्राप्तिमें' सुख मानने वालोंका विचार ठीक है ! देखिये, स्त्री आदि यदि सद्गुणी, धर्मशील और व्यवहारवत् हों तो व्यवहारमें सुखदाई हैं लेकिन ऐसा होते हुवे भी स्त्री पुत्रादि अजर अमर नहीं हैं लेकिन नाशवत् हैं इसलिये जब वे नाश होते हैं—तब योगसे उनका और आपका वियोग होता है तो वह वियोग अमरुय दुःखदाई होजाता है, उनके संयोग समागमसे जो सुख मित्रता उससे विशेष अधिक दुःख उनके वियोग होनेसे भोगना पडता है । फिर कहा भी है कि—

चल चित्त चल मित्र चल भार्या च मंडली ।

चलाचले च ससारे धर्म एको हि निश्चल ॥

अर्थ—धन, मित्र, स्त्री, मंडली आदि सर्व चल हैं । ऐसे चल और अचल रूप संसारमें सिर्फ एक धर्म ही निश्चल स्थिर है । इस प्रमाणसे स्त्री, पुत्र, धन, मित्र, आदिकी प्राप्ति सचे सुख और आनन्दको देनेवाली नहीं है लेकिन ये क्षणिक अस्तित्वशील होनेके कारण आरम्भमें सुख देकर मोह उत्पन्न करते हैं पर अंतमें सब ही अति दुःखदेनेवाले हो जाते हैं ।

फिर धन और अधिकारकी प्राप्ति भी यथार्थ सुख है या नहीं सो विचार करिये तो उम सुखनी भी दशा ऊपर वर्णित सुखके समान ही है कारण कि धन भी अचल नहीं चल है । अधिकारका भी प्रारब्ध नियमानुसार परिमित समय तक अस्तित्व रहता है और जब धन तथा अधिकार पुण्य क्षय होते ही हाथमेंसे चने

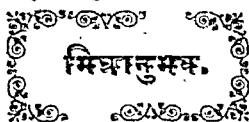
जाते हैं तो अपनी अंतरात्मा सृष्टि नियमको न समझकर दग्ध होता है, अपना मन विह्वल और व्यग्र हो जाता है, अपने चेहरे पर शोक छा जाता है और फिर सोना, बैठना, खाना पीना कुछ भी अच्छा नहीं लगता है । इस प्रकार धन और अधिकारका नाश अनेक प्रकारसे दुःखदायी हो जाता है, इस प्रकार प्रमाणित है कि धन और अधिकारकी प्राप्तिसे मिला हुवा सुख शाश्वत् और यथार्थ सुख नहीं है पर क्षणिक—अचल होनेके कारण मिथ्या है । अब एक ही प्रकारके सुख पर विचार करना रहा है और वह ज्ञानानन्द अथवा वैराग्यानन्दसे उत्पन्न हुवा सुख है । जिस ज्ञानसे वस्तुका यथार्थ और ज्ञान हो वही सच्चा ज्ञान है । वैराग्य धारण करनेवालोंका ज्ञान प्राप्त करनेकी इच्छा वालोंको इन्द्रियजीत होना चाहिये । मोह, माया, और ममताका त्याग करना चाहिये । समार असार है इस विषयका यद्यपि ज्ञान होना चाहिये, और पहिले जो श्लोक लिखा गया है उनके प्रमाण पुत्र मित्र स्त्री धन आदि चल ह, और सिर्फ एक धर्म ही निश्चल है, ऐसा विश्वास होना चाहिये, इस प्रकार सर्व प्रकारकी पात्रता प्राप्त करनेसे ही सचे सुखकी प्राप्ति करके उसका आनन्द ले सकते हैं ।

अथममज्ञानी मनुष्यको यदि कभी मत्स्य प्रभावानु सचे सुखको प्राप्त करनेका मार्ग मित्र नाय तो भी वह उसको ग्रहण नहीं कर सकता है जो मत्स्य मूल तथा है उसे पहिचान भी नहीं सकता अब पाठकगण



યદિ આપકી સચ્ચા સુખ પ્રાપ્ત કરનેકી ઇચ્છા હો તો સર્વવિદ્યા સંગ્રહન કરો, શાસ્ત્રકા શ્રવણ, મનન, ઔર અભ્યયનકા અભ્યાસ રક્ષો, સત્સંગ કરો, ધર્માચરણ કરો, જગત તથા સ્ત્રી પુત્રાદિ ઔર ધન દૌલતકે મિથ્યા મોહકા ત્યાગ કરો, પુણ્ય ઔર, પરમાર્થકે કાર્મોકી સાધના કરો ઔર વ્યર્થ તત્ત્વકા--સત્ય સ્વરૂપકા જ્ઞાન પ્રાપ્ત કરો ઇત્યાદિકી જિતની આપ સાધના કર સર્કેને તૌ સચ્ચા સુખ ઉતના હી આપકે સમીપ ર આતા જાયગા । આપ યહ બી નિશ્ચય રલિયે કિ નાશવંત પદાર્થોંમે મિથ્યા મોહસે માના હુવા સુખ સચ્ચા સુખ નહીં હૈ લેકિન સચ્ચા જ્ઞાન ઔર વૈરાગ્યકે ફલ સ્વરૂપ મિલા હુવા સુખ હી શાશ્વત, ચિરસ્થાયી ઔર તીનોં કાલમેં આનંદ દેનેવાલા હૈ ।

સદગૃહપો, આશા હૈ કિ સચ્ચે સુખકો ઇસ પ્રકાર પર્હિચાન કર ઉસકી પ્રાપ્તિકા ઉપાય આપ કરેંગે ઔર સાંસારિક મિથ્યા સુખમેં ન ફેસકર અધ્યાત્મજ્ઞાનકી પ્રાપ્તિદ્વારા સચ્ચે સુખકો પ્રાપ્ત કરેંગે તથા અન્ય બંધુવોંકો બી સન્માર્ગ બતાવેંગે । આપકા પ્રયત્ન ફલદાયી હો એસી ઇચ્છા કરતા હુવા મેં લેલિનીકો વિશ્રામ લેતા હું । ઇતિ શુભમ્ ।



મિત્રાનુમ્બક.

અતિ પ્રિય છે બાને તેથી મણા આનંદ થાય છે. વનરપતિ આંખને તાઢી કરનાર છે અને હૃદયમાં શાન્તિ આપે છે, પણ આ બંને કરતાં મિત્ર વધારેમાં વધારે સુખ, આનંદ અને શાન્તિ આપનાર છે. મિત્ર વગર કોઇપણ માણસ જોઇએ તેવો સુખી થઇ શકતો નથી. અને ખરો શાન્તિ તથા અત્યંત આનંદનો ભોગી પણ નજ થાય.

મિત્ર કેવો જોઇએ ? આપણે સોનું લઇએ તે કસોટી પર ધસીને લઇએ છીએ. પતિ પતિનો સંબંધ થાય છે, તે પણ ગુણ દોષની ઓળખાણ કરીને જ થાય છે. ગમે તે વસ્તુનો સંબંધ કરતાં પહેલાં તે કેવી છે તે તપાસવું પડે છે અને તપાસીને જ ગ્રહણ કરીએ છીએ. ત્યારે મિત્ર કરવો તે પણ તપાસીને અને તેના ગુણ દોષ જાણીને જ કરવો કારણકે પાછળથી કેટલાકને 'પરતાવું' પડે છે.

મિત્ર સદગુણી, નિર્માની, અદાળ પ્રેમી, નિસ્વાર્થી અને સારે રસ્તે દોરનાર હોવો જોઇએ. જોનામાં આવા ગુણ છે તેજ સારો મિત્ર છે. નહિ તો પોતાનો સ્વાર્થ સાધનાર, આપણે કાળે દૂર ખસનાર કપડી કે લોભી હોય તે મિત્ર નહિ પણ શત્રુ જ છે. મનુષ્યના ગુણ દોષની પરીક્ષા સદવાસથી થાય છે, માટે મિત્ર તા કરતા પહેલાં તેના ગુણ-દોષની પરીક્ષા કરી લેવી.

મિત્ર શા માટે જોઇએ ? દરેક મનુષ્ય જાતિને ધણી વખતે ધણાં સંકટો આવે છે, તે સંકટોને દૂર કરવા, હૃદયને શાન્તિ મળવા, મનને આનંદથી ભરપૂર બરવા, અને સારે માર્ગે જવા સાર સલાહ પૂછવા માટે મિત્ર જોઇએ. કંઈ કારણસર અજાણસલા મળજને શાન્તિ આપનાર પણ તેજ છે. અરે ! તેના વગર તે વખતે બીજા કોઇ શાન્તિ આપવા સમર્થ નથી.

કારણકે જે વિચાર માતાને ન કહી યથાવ, પિતાને ન કહી સમાવ કે બીજા કોઇ

દરેક મનુષ્યને સુખ તથા શાન્તિ આપનાર જગનમાં ત્રણ વસ્તુ છે. એક મિત્ર બીજું સંગીત અને ત્રીજું વનરપતિ છે. ગા.વન કાનને



પણુ મર કેડુંખીને ન કહેવાય તે એક મિત્રનેજ કહેવાય છે. કારણકે બંનેના વિચાર મળતા આવે છે અને હૃદય પણ એક સલાહથી કામ કરે છે. આમ બંન્નારે યાવ ત્યારે મનનો બાર તકન હલકો થઇ જાય છે. મિત્રને પોતાની સુખ વાત કહેનામાં બધ હોતો નથી કે લજ્જા આપતી નથી અને કાંઈ વાતનો સંકોચ પણ થતો નથી અને પોતાના હૃદયનો ખુલતો ખુલ્લા હોયથી વાત કરીને કે પદ લખીને કહે છે.

મિત્ર બે રીતે થઇ શકે છે.

એક સ્વાર્થ સધનારો અને બીજો નિ સ્વાર્થ રીતે એક બીજાને પ્રાણ અર્પણ કરનાર હોય છે, તે હમેશા પોતાનો સ્વાર્થ કેમ સધાય, તેમાંજ પોતાના વિચાર જમાવી બેઠેલો હોય છે. તે પહેલાં તો એટલો બધો પ્રેમ દેખાડે છે કે જાણે આપણે અને એકજ છીએ પણ સ્વાર્થ સધાય એટલે ધીમે ધીમે દુઃખ ખસવા માડે છે. કહ્યું છે તે પ્રમાણે પોતાનો સ્વાભાવ તે પ્રગટ કરે છે—
કુક્ષે પ્રિયવાદી ચ મૈત્ર્વ વિશ્વાસવારણમ ।

મધુ તિષ્ઠતિ તિષ્ઠામિ હરમે વુ હલાહલમ ।
અર્થ—જો દુર્જન માણસ હોય છે તેના પ્રિય વચનો પર કાંઈ પણ કાળે વિશ્વાસ રાખવો નહિ કારણકે તેના જીભ પર મધુ હોય છે (એટલે સારા પ્રિય વચન બોલી બીજાને હગે છે) પણ તેના હૃદયમાં તો તત્કાળ અલ્પને પ્રાપ્ત કરનાર વિષ હોય છે (એટલે તેના મનમાં એટલું તો કપટ હોય છે કે આમાનુષ્ય કરના જરીએ યોજતો નથી અને વરત ખરાબ નિયતિમાં આણી મૂકે છે), તેથીજ સાનુ પુરોને પણ આવા દુર્જનનોજ બધ હોય છે તેઓને બીજા કોઇનો બધ હોતો નથી આવી યોગા દ્વિવેસો માટેની સ્વાર્થ અને કપટી મિત્રનાને ન વિચાર છે. યશ્ય દોષની પરીક્ષા ન કરી હોય તો આનુ થાય છે. નહીંતો ખસ પ્રેમમાં હમેશા અને મિત્ર સુખનીજ મેડે છે.

મિત્ર માત્ર બે અક્ષરનુંજ નામ છે, પણ તેમાં શું રસવતા અને શું એકતા. ભરામણી છે તે સમજાવતું નથી.

સોનારાતિ પરિવ્રાજા પ્રીતિ વિભ્રમભાજનમ્ ।

કેવલ રત્નમિદં મૃષ્ટ મિત્ર મિત્યક્ષર દ્રવ્યમ્ ॥

જો કદાચ કોઇનો કુમિત્રથી પ્રસંગ પડ્યો હોય અને તેની સાથે અનુપયાની બેઠાયો હોય તો તે મૂર્ખ અને દુરવ્યવસ્થી બનતો દે છે. કારણકે જેના તરફ વધારે બળ હોય, તેના તરફ તેનું વલણ આપોઆપજ થાય છે. જો મારો સદગુણી મિત્ર હોય અને તેની સાથે સાધારણ ગુણવાળો બેઠાયો હોય, તો તે પણ સારો કે ઉત્તમ થઇ જાય છે. લોહુ જો પારસમણીનો સ્પર્શ કરે તો તે સુવર્ણરૂપ ધારણ કરે છે. આ ઉપરથી સહજ વિચાર આવશે કે “સોનને અસર થાય છે”

સારા મિત્રથી કાયદા અને બચાવ આવત થાય છે. જો કાંઈ કુરસે દોરાતો હોય તો તેને સુધારી સારે રસ્તે દોરે છે, અજ્ઞાન હોય તેને સુવિચાર સુઝાડી જાન આપી સવાન કરે છે. કંઈ નાના નાના અવગુણો હોય તો તેને પણ હમેશા ટોકતા રહી સુધારવા તરફ તેનું મન સતત પ્રયત્ન કરે જાય છે.

ખરો મિત્ર જે હોય છે તે એક વખત બધેથી મેની તોડવા કાંઈ કાળે ધન્યજીતો નથી કહ્યું છે કે “પીડાની ભરેલી પ્રિત તોએ કરે પડિન, દુઃખ પામે તોએ આપના મટી” તેમ તે છોડતો પણ નથી જો તે મરીજ હોય કે ધનવાન હોય, સુખી હોય કે દુઃખી હોય અથવા બીજી કંઈ પણ આપતિ આવે તોપણ તે તેને છોડતો નથી.

હરવને વ્યસને વૈવ દુર્ભિદો શશુવેમદે ।
રાજદ્વેરે સ્મરણને ચ ચસ્તિષ્ઠતિ સ ચાન્ધવ ॥

જોઇએ તો આવોજ બધુ જોઇએ મિત્રની કસોટી માટે ખરેખર બચાવ વિન આવે છે. પણ તે બધાને ધીરજ ધરી સહન કરવાથી આગળ સુખ મળશે એમ લાગે છે.



મિત્રનો વિચાર કરવાથી અતિશય આનંદ થાય છે. તેનો સહવાસ અત્યંત પ્રિય થઈ પડે છે અને એનાથી જરૂરી ખસવાનું મન થતું નથી. અહા ! મિત્રના સંયોગથી શું આનંદ થાય છે, તે વખતના હૃદયની લાગણીને જણાવતા અરે ! હું તો અસમર્થ છું. સતત તે આજ પ્રેમપણામાં મગ્યાં રહે છે અને તાદાત્મ્ય ધારણ કરવા ઇચ્છે છે.

તેજ પ્રભાણે તેનો વિરહ પણ હૃદયના આંતરિક ભાગને અત્યંત બાળે છે. આકાશ પાતાળ ભેગાં કરી દે છે, અને આપું જગત શબ્દતામાં સમાધિ જાય છે. તેના સંયોગમાં ધણુંજ સુખ છે અને તેના વિયોગમાં અત્યંત દુઃખ છે. દુઃખ થવાનું કારણ એ છે કે એક બીજાનું હૃદય આલ્સી થયેલું હોતું નથી. જેમ સાગરમાં મોજ આવે છે અને તેમાં તેમાં સમાધિ જાય છે, તેમ તેઓના હૃદયમાં દરિયાની ક્રિયા થવા કરે છે, વિચારોના ગુચળો પળતો જાય છે, અને મન મુંઝાવા કરે છે પણ મન વશ રાખવાની વિદ્યા જેને આવડે છે, તેને વિશેષ કંઈ થતું નથી.

પ્રેમ એ પ્રકારનો છે. એક સંસારિક ધર કુટુંબનો પ્રેમ અને બીજો પ્રભુ પ્રેમ. સંસારિક પ્રેમમાં અચળતા હોતી નથી થોડીવાર પ્રેમથી સુખ થાય છે, અને થોડીવાર દુઃખ થાય છે; કેટલીક વખત હર્ષ થાય છે, અને કેટલીક વખત શોક થાય છે, પણ પ્રભુપ્રેમમાં આ કશીએ ક્રિયાઓ થતી નથી. ફક્ત સુખ, શાન્તિ, નિરાકુલતા અને આનંદ ખરેખર અનંદજ સર્વ અંગમાં વ્યાપી રહે છે. પ્રભુપ્રેમ-દર્શન થવાથી આખા સરીરના ડબ્બાંકર સ્વરામમાન થાય છે, આત્મશીતલમાંજ ખરેખરી શાન્તિ પસરેલી છે. અહા ! અવિચળ આત્મરસ પીવાથી શું ઓછો આનંદ થાય છે ? અત્યંત શાન્તિમય થવાય છે. અહાહા ! અતિશય ચિત્તનંદમય બની જવાય છે. પણ જેણે પ્રભુપ્રેમ ઓગળ્યો હોય તેનેજ આ બધું છે નહીંના કંઈજ નથી. જે

સુખ આત્મશાંતિને મળે છે, તેજ સુખ સંસારિક પ્રેમથી મળે છે, એમ ને માની જોડે તે તદ્દત ખોટું છે. સંસારિક સ્નેહમાંજ મિત્ર પ્રેમ આવી જાય છે.

કુધ તથા પાણીની મિત્રતામાં સંયોગ તથા વિયોગનું સુખ દુઃખ કેવું થાય છે તે દર્શાવે તો જગ જાહેરજ છે. અહા ! કેવી મિત્રતા ! મિત્રપણું જોઈએ તો આવુંજ જોઈએ. એકતા વિના મિત્રતા કંઈજ કામની નથી.

એક પક્ષી હતું. તે એક જંગલમાં એકબીજા ધણું સુખ ભોગવતું હતું. તે એટલું તો ખુબસૂરત હતું કે તે સુંદરપક્ષી નામથી ઓળખાતું હતું તેનું આંખપૂંચ પંચ ધણું મોટું અને જે જોઈએ તે ખાવાનું જંગલમાં મળતું હતું. એવા આ સુંદર પક્ષીને પોતાની અવરથા બદલવાની આવે, ત્યારે તે પોતાના ઝોળીયાને ચંદનના લાકડા વીણી લાવી અગ્નિ સરકાર કરતો એટલે તેને તે પક્ષી બીજું સુંદરપંચ ધારણ કરી અવનિમાં મોઝ માનતું હતું, તેમાં એક વખત બીજું નવું પક્ષી આવ્યો તેને મળ્યું. તેણે પ્રશ્નઃ અલ્યા, તું અહીં આ એકલો કેમ જણાય છે, ત્યારે સુંદરપક્ષીએ પોતાની એકલવિહારી સ્થિતિ કહી બતાવા. એટલે પેલા નવા પક્ષીએ કહ્યું કે તને એકલું રહેવું તે કેમ ગમે છે ? આજે હું ભૂલો પડી અહીં આવ્યો તો મને ગમતું નથી તો તું કમેશા શી રીતે રહે છે ?

ગમે તે સુખ હોય પણ એકલવિહારીમાં સુખ કે શાન્તિ નથી. કોઈપણ માણસ હોય, પણ તેને હૃદય ખોલવાની જગ્યા અવરથ જોઈએ. તે જગ્યા યોગ્ય જોઈને પસંદ કરવી. મિત્રતા એવા જોડે બાંધવી કે જેના વિચાર આપણી સાથે મળતા હોય, જેની સાથે કમેશા રહેવાય, બંનેના હૃદ એક હોય, અને કાંઈની સિદ્ધિ મેળવવાનો એક વિચારપર બંનેનું મન હોય, એવા સુખચાગા જોડે મિત્રતા બાંધવી. આવા સુખો જેનામાં ન હોય તેની પ્રીતિ પ્રયોગ વખત ટકી નથી અને જેનામાં આવા સુખો



होय तेनी मैत्री अथवा तेनो प्रेम धरोण
वખत કે भरથુ સુધી ટકી રહે છે. અને તેજ
મિત્ર ખીજા ભવનો પથુ સંગાતી થાય છે
અથવા થવો શક્ય છે. આ ભવમાં પથુ
જે કોઈની સાથે પ્રેમ બધાયો હોય છે તે
પથુ પૂર્વભવના સંસ્કારથીજ બંધાય છે. માણસ
કંઈ કરી શકતું નથી. માત્ર પહેલાનાજ સંસ્કાર
એક ખીજાના હૃદયનું વખથુ કરી એક ખીજાને
ગાઢ સંબંધ રૂપે જોડે છે.

હોયે, એજ કહેવાનું કે દરેક માણસને
કોઈપથુ એક સહુથી માણસ સાથે સંબંધ
જોડવો જોઈએ. કારણકે તે આપણને અનેક
વિપત્તિ કાળે ધીરજ, શાન્તિ અને ગમે તે વાતે
અથવા પૈસા ટકે મદદ કરે છે એકલાથી કંઈ
કામ થઈ શકતું નથી માટે હરેકને મિત્રની
જરૂર છે.

ખડું જોતાં અને નિશ્ચય પર દષ્ટિ ફેંકતા તો
કોઈનું કોઈ છેજ નહીં પથુ વ્યવહાર દષ્ટિથી કોઈ
પથુ માણસ સયાહ પૂછવા જોઈએ છે. હૃદયના
ભાવ ગમે તેને કહેવાથી ધણી વખતે તુકલાન
પડેજો છે. માટે જો એકજ સ્થાન હોય તો
તેથી આપણને હાનિ પહોંચતી નથી.

આ લેખનો સારાંશ એજ છે કે—થુ—
દોષની પરીક્ષા કરી ચોખ્ખા મિત્ર કરવો આવશ્યક છે.
આવિકાશ્રમની સેવિકા—પ્રલાવતી !

શ્રી વીર નિર્વાણ સમ્વત્તમે અશુદ્ધિ ।

લેખક—વં. વિહારીલાલજી જૈન, ઈ. ટી., અમરોહા ।

આ સમ્વત્ત્કો-જ્ઞાનનેકે લિયે દિગમ્બર આ
મ્નાયમે શ્રી નેમવન્દ્રાધાર્યજીન મૈલૌક્યસાર પ્ર-
ત્યક્તી નિમ્નેલિખિત ગાથા છે —

પળ છત્સય વત્સ પળ ।

માઘ હુદે ગમિય વીર ગિન્ધુ યદો ॥

સગ રાજાદો કલ્કી ।

વદુ જવલિય મહિય સગમાલં ॥

અર્થ—૬૦૫ વર્ષ ૫ માસ પહિલે શક
રાજાસે શ્રી વીર મગવાનકા નિર્વાણ હુઆ ઔર
૩૯૪ વર્ષ ૭ માસ પીછે કલ્કી હુઆ ।

ગન ચૈત્ર સુદી ૧ સે શક સમ્વત ૧૮૩૯
કા આરમ્મ હૈ, અર્થાત્ ચૈત્ર કૃષ્ણા ૩૦ તક
શક રાજાકે રાજ્યાભિષેકકો ૧૮૩૮ વર્ષ હો
ચુકે । (લેખો આ વર્ષકે તીથિ પત્ર)

અવ યદિ ઉપરોક્ત ગાથાકે અનુપર શ્રી
મહાવીર નિર્વાણકા સમય શક રાજ્યકે
રાજ્યાભિષેકસે ૬૦૫ વર્ષ ૫ માસ પૂર્વક
લગાયા જાય તો શ્રી વીર નિર્વાણકો ગત
ચૈત્ર કૃષ્ણા ૩૦ તક ૧૮૩૮ વર્ષ ઔર
૬૦૫ વર્ષ ૫ માસ અર્થાત્ ૨૪૪૩ વર્ષ ૫
માસ વીત ચુકે, આલિયે ગન કાર્તિક કૃષ્ણા
૩૦ તક પૂરે ૨૪૪૩ વર્ષ વીત ગયે । આ
હિસાબસે ગન કાર્તિક શુક્લા ૧ સે શ્રી વીર
નિર્વાણકા ૨૪૪૪ વાં વર્ષ પ્રારંભ હોતા હૈ,
અર્થાત્ ગન દિવાલીકે પીઢેસે શ્રી વીર નિર્વાણ
સમ્વત ૨૪૪૪ પ્રારંભ હોતા હૈ, ન કિ ૨૪-
૪૩ । વિદ્વાન મહાશય આપર મને પ્રકાર
વિચાર કરે । ઔર યદિ ઉપરોક્ત ગાથા હી કે
આધારપર શ્રી વીર નિર્વાણકા સમય શક રા-
જાકે જન્મકાલસે ૬૦૫ વર્ષ ૫ માસ
પૂર્વકા માને તો શક રાજા (શાલિવાહન) કે
જન્મકાલસે રાજ્યાભિષેક કાલ તકકે ૧૮ વર્ષ
જોડ દેનેસે ગન દિવાલી પીઢેસે ૨૪૪૪×૧૮
અર્થાત્ ૨૪૬૨ વીર સમ્વતકા આરમ્મ માનના
ચાહિયે । મેરી રાયમે યહી અર્થાત્ ૨૪૬૨



वीर निर्वाण सम्बन्ध गत कार्तिक शुद्ध १ से मानना निम्न लिखित कारणोंसे किसी प्रकार अनुचित नहीं, किन्तु सर्व प्रकार शुद्ध है:—

(१) श्री त्रैलोक्यसारकी उपरोक्त गाथाके पूर्णतया अनुकूल है ।

(२) कई अन्य जैन व अजैन विद्वानों तथा इतिहासज्ञ महानुभावोंकी भी ऐसी ही सम्मति है ।

(३) बौद्ध ग्रन्थोंमें लिखा है कि जब बुद्ध भगवान शाक्य भूमिको जा रहे थे तब उन्होंने देखा कि पावामें “ नात्पुत्त महावीर ” का निर्वाण हो गया है । जिससे जाना जाता है श्री वीरका जिनका निर्वाण बुद्धदेवके निर्वाणसे कुछ समय पूर्व हुआ, और बुद्ध निर्वाण सम्बन्ध आजकल २४६० माना जा रहा है, इसलिये श्री वीर निर्वाण सम्बन्ध इस २४६० सम्बन्धसे अवश्य अधिक होना चाहिये ।

नोट १:—इस उपरोक्त लेखसे प्रकट है कि आजकलका माना हुआ वीर निर्वाण सं० २४४२ तो किसी प्रकार भी शुद्ध नहीं है । या तो २४४४ होना चाहिये या २४६२ । दिगम्बर व श्वेताम्बर सर्व ही जैन विद्वान् महाशय इसपर विचार करें और जैन समाचारपत्रोंद्वारा अपनी २ योग्य सम्मति प्रकट करनेकी कृपा करें, जिससे यदि वास्तवमें इस सम्बन्धमें अशुद्धि हो तो वह शीघ्र दूर होकर शुद्ध सम्बन्धका प्रचार हो ।

नोट २:—नब तक यह विषय निर्णीत न हो जाय तब तक इस सम्बन्धमें कोई परिवर्तन न किया जाये ।



लेखक—भूषणचंद जैन—अमरोहा ।

प्रार्थना ।

स्थिर रहे सुख शान्तिमें, नृप जार्जका शासन यहां ।
कपटी कुचाली क्रूरका, नमस्तर न हो आसन यहां ॥
खर्चें सदा सत कार्यमें, धनवान् धनदिय खोलकर ।
हो कार्यकर्ता कार्य तत्पर, सम्मिलित जिय खोलकर ॥

मान्यर पाठकगणों ! आज में श्री परब्रह्म परमात्माको नमस्कार करके हमारी जमि कैसी है इस बातका विचार करता हूँ ।

मैं सोचता हूँ कि आजकल रोगियोंकी संख्या क्यों अधिकतर बढ़ती हुई नज़र आती है जिसमें ज्यादातर पेटकी बीमारियाँ अधिक दिखाई देती हैं तो मालूम होता है कि हम परहेज नहीं करते और निद्राके लोलुपी होकर जो चाहे अनाप सनाप भक्षण करते हैं उसका नतीजा यह होता है कि हम बीमारियोंद्वारा घेरे जाते हैं और हकीमोंको तलाश करते फिरते हैं । यदि बहुत खोज करनेसे कोई जानकार हकीम मित्र भी गया और हमारे पूर्व कर्मके निमित्तसे उस समय कुछ आराम हो भी गया तो किया हुआ किन्तु फिर शरीरमें बुझाया शीघ्र समाजाता है और काटके मुलामें भी शीघ्र ही प्रवेश होता है ।

हमारी यह बात कि जो पदार्थ शरीरको हानिकारक होते वही बुद्धिको भी । अगर हम मांस, शराब, शहद, दिग्दूध, आदि का



भक्षण करते हैं या भूकसे अधिक स्वादके कारण भक्षण करते हैं। यह तो सोचते नहीं कि जिन्हाके स्वाद चाहनेके कारण क्या २ हानियाँ होती हैं। हम स्वाद ही स्वाद करते २ बिन्हाके इतने लोलुपी हो जाते हैं कि अगर एक समय भी बड़े २ खुशनुमा खट्टे मीठे चटपटे तरह ९ के स्वाद पहुँचानेवाले भोजन न मिले तबतक भोजन न करें। एक दिन वह आता है कि हमारी सारी पृंजी खर्च हो जाती है और हम कंगाल हो जाते हैं और ऐसे भोजन करनेसे काम वासना भी बढ़ती हैं जिसके कारण आज जैन समाज विधवाओंका धर्म भ्रष्ट करना चाहती है। सोचिए ! अगर आप मांस ही खाते हैं उससे भी महान हानियाँ होती हैं। प्रथम तो यह बात कि हमारा हृदय कठोर होता है, अगर साफ भोजन किया जाता तो हमारा हृदय भी साफ स्वच्छ और निर्मल हो जाता और हमारे हृदयमेंसे दयाकी भरी हुई और जीवोंके कल्याण करनेवाली ऐसी वाणी निकलती, क्योंकि 'जैसा खावे अन्न वैसा होवे मन, जैसा पीवे पानी, वैसी होवे बानी' यह कहावत बिटकुल ठीक है। क्योंकि हम मनुष्योंको देखते हैं कि अगर उनकी आखोंकि सामने किसीकी गर्दनपर हुरी भी चल रही हो तब भी उनके बचानेका प्रयत्न नहीं करते। क्योंकि देखिये, हमारे देशोंमें नित्य प्रति सैरुडों गाय भैंसादि निरपराधी जानवर बध किये जाते हैं और हमको जरा भी रुपाल नहीं होता इसका यही कारण है कि हमने भ्रष्ट पशुओंको भक्षण करके अन्ते टिलो दिमागको

भी भ्रष्ट कर रखा है और दयाको हृदयसे निकाल दिया। जब हृदयमेंसे दया ही निकल गई तब हम धर्मके मार्गको कैसे ग्रहण कर सकते हैं ? जब हमने मनुष्य योनि प्राप्त की अगर तब भी धर्मको न संभाला और सदा पाप कार्योंमें लीन रहे तब बनलाईये हमको अगली गतियोंमें कितने कितने दुःखोंका सामना करना पड़ेगा ? उन दुःखोंको मैं क्या कोई भी वर्णन नहीं कर सकता इसलिए मनुष्योंको उचित है कि इस मनुष्ययोनिको प्राप्त करके अपना धर्म तो अवश्य ही संभाल लेना चाहिए, धर्म तब ही सुधर सकता है जब हम रसना इन्द्रियको वशमें कर लेंगे, क्योंकि बिना वशमें किए हम उपवास वगैरे नहीं कर सकते। बिना उपवासके किये न तो धर्मकी ओर रुचि हो न शास्त्र पढ़ने या सुननेमें मन लगे और आलस्य चढा रहेगा।

इसलिए हमको उचित है कि हमको जैसा भी रुखा सुखा भोजन मिल जाय उसीको बहुत खुशीके साथ ग्रहण करले किंतु इतना जरूर रुपाल रहे कि शुद्ध हो, साफ हो, बुद्धि और बलको बढ़ानेवाला हो और भूखसे अधिक खा लेने पर भी रुकसान न देना हो।

मेरी अन्तिम प्रार्थना समाजसे यही है कि इस रसना इन्द्रियको तमाम हानियोंकी जड समझकर इसके फन्देसे सबको छूट जाना चाहिए और अष्ट मूल गुणोंको हमेशके लिए ग्रहण करना चाहिये क्योंकि यही ध्यानक बनानेके लिए जडके समान हैं और इनके बिना हमको जैनी नाम धरना शोभा नहीं देता।

इति शम्भु ।



प्रिय भ्राताओ और बहिनो ! श्रावण शुक्ल १५ के दिन जैनियोंमें ही नहीं, किन्तु सब हिन्दुओंमें रक्षा-बंधनका त्योहार (उत्सव) बड़े आनंदके साथ मनाया जावेगा और रक्षा-के निमित्त शुभ मंगल सूचक धागा हाथमें बांधा जावेगा । मिश्रु आशीसात्मक यह धागा कनसे और क्यों बांधा जाता है और इससे हमको क्या शिक्षा मिलती है। इस बातके जाननेकी इच्छा मनमें उत्पन्न होना सहज बात है । इसलिये शास्त्रोंमें जो कुछ इस विषयमें कहा गया है मैं संक्षिप्त रूपसे आपके सम्मुख निवेदन करती हूं ।

उज्जैनी नगरीमें श्री वर्मा नामका राजा बड़ा धर्मात्मा था । उसके चार मंत्री बलि, नमुचि, वृहस्पति और प्रल्हाद नामके थे । ये चारों विद्याके मद करि उन्नत और धर्म विरोधी थे । अचानक उस नगरके वनमें अकंपनाचार्य मुनि सातसौ मुनियोंके संघसहित पधारे । वनमें आनेके साथ ही श्रुतिमागर मुनि आहारके निमित्त नगरमें चले गये । पीछे अवभित्तानके वस्त्रसे आचार्यने जाना कि आज मुनि-संघ पर कुछ उपसर्ग आनेवाला है । इसलिये आचार्यने सब मुनियोंसे कह दिया कि कोई लोग आकर तुमसे कुछ कहे तो तुम लोग कुछ न कहना, मौन धारण करना । नहीं

तो कोई न कोई उपसर्ग आवेगा । मुनिकी ऐसी आज्ञा सब संघने हृदयमें धारण की और अपने २ धर्मकार्य ध्यानादिमें प्रवर्त हो गये । नगरके लोग मुनि संघका आगमन सुनकर दर्शनोंको आने लगे । तब नगरके लोगोंके समूहके समूहको नगरसे बाहिर जाते देख रानाने इसको कारण पूछा तो ज्ञात हुआ कि वनमें मुनियोंका संघ पधारा है इसलिये ये लोग दर्शनको जाते हैं । ऐसा जानकर राजा भी मंत्रियों सहित दर्शनको गया । राजाने वहां जाकर मुनियोंको नमस्कार किया तो मुनि मौनसे रहे किसीने आशीर्वाद तक न कहा, तब वे चारों मंत्री बोले—ये सब मुनि मूर्ख मालूम होते हैं इनको “कूर जोगी मौन साध” की कहावतके अनुसार कुछ भी ज्ञान नहीं, ऐसे कई दुर्वचन कहे । राजा सबकी बंदना करके मंत्रियों सहित लौटा । तो रास्तेमें आहार करके लौटते हुए श्रुति सागर मुनि मिले, तो उन चारों मंत्रियोंने उनसे वाद-विवाद किया और अन्तमें हारकर लज्जित हुए, मनमें बहुत कोषित हुए परन्तु राजाके साम्हने क्या कर सके थे । अपने २ घर आये । मुनिराजने संघमें पहुंचकर रास्तेमें हुआ सब वाद-विवादका हाठ आचार्यसे निवेदन किया तब आचार्य बोले—तुमने ये काम अच्छा नहीं किया, ये लोग सर्व संघको दुःख देंगे, इससे उचित है कि तुम रात्रिको कायो-सर्ग धारण कर वाद-विवादके स्थानमें तिष्ठो । गुरुकी आज्ञा पाकर श्रुतिसागरनी वहीं कायोत्सर्ग करि जा तिष्ठे । यहाँ चारों



मंत्रियोंने क्रोधके बश मुनियोंके मारनेका विचार किया और तलवार लेकर रात्रिके समय चारों मारनेको चले । रास्तेमें जाते हुए देखा कि वे ही परास्त करनेवाले मुनि उसी बाद स्थानपर स्थिर खड़े ध्यान लगाये हैं । वस चारोंने इकदम तलवार मारनेके लिये ऊँचा हाथ उठाया । उस स्थान पर नगरका रक्षक यक्ष देव था वो इस महा अनर्थ और अधर्मको देखकर दुखी हुआ और तत्काल चारोंको ज्योंका त्यों कील दिया । ज्योंके त्यों वे चारों पत्थरके पुनछेके समान रह गये । प्रातःकाल नगरके लोगोंने यह हाल देखा, कोलाहल मचा, राजा तब खबर पहुँची । तब इनके कुटुम्बियोंने आकर मुनिसे क्षमा प्रार्थना की, तब मुनिने यक्षसे इनको छोड़ देनेके लिये कहा । यक्षने छोड़ दिया । राजाने इन चारोंको काला मुँह कर गधे पर चढाय अपने राज्यसे निकाल दिया । मुनिराज अपने संनमें गये ।

ये चारों मंत्री उज्जैनसे निकलकर हस्तिनापुर गये । वहाँका राजा महापद्म, रानी लक्ष्मी मती, पुत्र पद्मरथ और विष्णुकुमार थे । यह राजा महापद्म अपने पुत्र विष्णुकुमार सहित मुनि हो गये और राजा पद्मरथ राज्य करता था । ये चारों वहाँ पहुँच कर राजासे मिले । बुद्धिमान और राजकाजके ज्ञाता तो थे ही । इनसे राजा खुश हुआ और चारोंको अपने यहाँ रख लिये । एक दिन राजाको अति चिंतावान देख इन मंत्रियोंने चिंताका कारण पूछा, तब राजाने कहा कि कुम्भनगरका राजा हरिवंश

मुझसे विरोधी हो गया, आज्ञा नहीं मानता इसी बातकी चिन्ता है । यह सुन वे मंत्री बोले— महाराज, ये क्या बात ? अभी हम लोग जाकर उसे बश करते और पकड़ लते हैं । राजाकी आज्ञा पाकर सेना ले उस राजा पर गये और उलबट कर पकड़ उसे राजा पद्मरथके आधीन किया । इस बातसे राजाने खुश होकर कहा कि जो तुम वरदान मांगो सो लो । तब चारोंने सम्मति कर कहा कि हमारा वरदान भंडारमें जमा रहे । जब जरूरत होगी मांग लेंगे ।

कर्मयोगसे वे अकंपनाचार्यजी चौमासा लगते ही संन सहित हस्तिनापुर पहुँचे और वनमें चार मास रहनेका निश्चय करि ठहरे । यह बात इन चारों मंत्रियोंने सुनी तब इनने सोचा कि हमने जो दुष्टता इनके साथ की थी, यदि वो बात यहाँ प्रगट हो गई तो बड़ी खराबी होगी । इस वास्ते ऐसा करना चाहिये, जिससे ये सभी मुनि कष्ट या २ कर यहीं मरे । ऐसा विचारकर भण्डारमें अमानत रखवा हुआ वरदान राजासे मांगा और वरदानमें ७ दिनका राज्य मांगा । राजा पद्मरथने प्रतिज्ञालुसार वरदान दिया, राजकाज इनके सुपुर्दे कर आप राजमहलोंमें जा पधारें । वस, राज पाकर, इनने मुनियोंके रहनेके वनमें नरमेव यज्ञ रचा । मुनियोंके चारों ओर बाड़ा बांध फूँडा करकट हाड मांसादि जमाकर अग्नि लगाई । यज्ञका बड़ा भारी धुआं कराया । इस प्रकार ऐसे २ कार्य किये जिससे मुनिराजोंको महान् कष्ट (उपसर्ग) हुआ । आचार्यकी

देशी, पवित्र, स्वादिष्ट पाचक दवाइयोंका अपूर्व संग्रह

दिलवहार चूर्ण

(खाना शीघ्र हजम करने व भूख बढ़ानेवाला)

किसी भी उत्तम चूर्ण में तीन गुण होना आवश्यक हैं (१) स्वादिष्ट यानी जायकेदार (२) पाचन करनेवाला (३) भूख बढ़ाने वाला । हर्ष है कि इस चूर्ण में तीनों गुण हैं। बहुत से लोगों को रोज चूर्ण खाने की आदत होती है उन के लिये भी यह बड़े कामकी चीज है, इसकी खुराक १॥ मांशे की है पन्तु जायकेदार होने से अगर थोड़ा ज्यादा भी खा लिया जावे तो गर्मी वगैरह कोई हानि नहीं करता है क्योंकि चूर्ण होने पर भी हमने इसमें किसी तीक्ष्ण चीजका प्रयोग नहीं किया है सन दवाइयाँ मादिल गुणवाली है इसलिये बीमार आदमी भी खुशी से खा सकते हैं । पवित्र औषधियों के सम्मेलनके कारण सभी सम्प्रदायवाले वेष्टके खा सकते हैं । हम बहुत बढ़कर बात नहीं कहना चाहते हैं । इस में स्वादिष्ट, खाना जल्द हजम करना, भूख बढ़ाना तीन विशेष गुण हैं उनके लिये हम दावे के साथ कहते हैं कि इन बातों में आप को कभी धोखा नहीं होगा तिस पर भी—

आप के विश्वास के लिये—

हमने इसके एक २ तोले के नमूने के पैकेट बनाकर रखे हैं यदि आप इस चूर्णकी परीक्षा करना और इससे लाभ उठाना चाहते हैं तो एक कार्ड भेजकर बिना डांक खर्च के एक पैकेट मंगाकर परीक्षा कर लीजिये फिर आपका मन भरे तो पूरी शीशी मंगाकर लाभ उठाइये । बस इससे अधिक हम और कुछ भी नहीं कह सकते हैं । फी शीशी चार औंस (करीब आध पाव) वाली की कीमत १) डांक खर्च ॥) तीन शीशी २॥=) डांक खर्च ॥=) आना । मिलनेका पता—

चन्द्रसेन जैन वेद्य,

चन्द्राग्रम-दृटावा ।

शेठ प्रेमचंद मोतीचंद दिगंबर जैन बोर्डिंग तरफथी प्रगट थतुं मासिक

दिगंबर जैन

THE DIGAMBAR JAIN.

नाता कलाभिर्विविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्तुगवेपणाभिः ।

सद्योद्यत्यत्रमिदं प्रवर्तताम्, दैगम्बर जैन समाज मात्रम् ॥

वर्ष १० वॉ.

वीर संवत् २४४३. भाद्रपद. विक्रम सं० १९७३

अंक ११ वॉ.



यह अंक हमारे पाठकोंके पास पहुँचेगा

तब तक तो दशलाक्षणी

उत्तमक्षमाका पर्व पूर्ण होगा और

उपयोग । उत्तम क्षमावणीका दिन

ही निकट होगा । इस-

लिये दशलाक्षणी पर्वके संबंधमें अब न लिखकर सिर्फ दो बातें उत्तमक्षमावणीके बारेमें लिखना आवश्यक समझते हैं । दशलाक्षणी पर्व पूर्ण

करके हमारे भाइयों आपस आपसमें उत्तम-

क्षमा मांगते हैं और मित्रों कुटुम्बियों आदिको क्षमावणीके पत्र लिखते हैं यह तो एक

खूबी ही पड़ गई है परंतु सच्ची उत्तमक्ष-

मा निमके पाप मांगनी चाहिये यह तो होता ही नहीं । सच्ची उत्तमक्षमा तो

मित्रोंसे नहीं परंतु शत्रुओंसे ही—अपने विरोधियोंसे ही मांगनी चाहिये । हमारे पाठक चारों ओर दृष्टि प्रसारेंगे तो मालूम

होगा कि अनेक शहरोंमें भाई २ में शत्रुता पाई जाती है और अनेक न्यायियोंमें कई वर्षोंसे दो २ तीन २ पक्ष पड़ गये हैं और धर्मकार्योंमें अनेक विध्वंसावाणं उपस्थित होती है । उत्तम क्षमा मांगनेका वर्ष भरमें यह एक ही दिन आता है और उसी दिन यदि परिणाम कोमल करके शत्रुओंकी ही उत्तम क्षमा मांगी जाय तो हमारी जैन कौममेंसे फूटका नाश हो जाय वरना दीलाऊ क्षमावणीके पत्रों लिखनेसे विशेष लाभ नहीं दीखता । क्षमावणीके पत्रों तो खास करके उन भाईओं पर लिखने चाहिये जिसके साथ अपनको अनवन हो । हमारे पाठक इस कथनपर ध्यान पूर्वक मनन करके मित्रों, स्नेहियों, संबंधियोंके साथ २ अपने कोई शत्रु याने विरोधी हो तो उनपर सच्चे दिलसे क्षमावणीके पत्र लिखेंगे तो विशेष लाभप्रद होगा । इन्दौर, सोलापुर आदि अनेक शहरोंमें जहां फूट महारानीका राज्य जोरशोरसे प्रवर्त रहा है वहाँके अग्रगण्य महातुभावों यदि चाहें तो इस उत्तम क्षमावणीके दिन उत्तम क्षमा



दे लेकर अपना सच झगड़ा सुभीतेसे मिटा सकते हैं। सुझेसु किमधिकम् ?



भारतवर्षकी स्थितिमें कई महिनोंसे परिवर्तन हो रहा है और अर्जुनलाल सेठीको सारी भारतकी प्रजा याद नहीं करेंगे ? अपना कर्तव्य समझ रही है और हमारे न्यायी ब्रिटिश सरकारसे उचित हक मांग रही है और हमारी सरकार भी देनेकी तैयारी कर रही है। विना मांगे कौन देता है ? इसलिये मांगना हमारा कर्तव्य ही है और वह भी न्यायपूर्वक आन्दोलन करके ही मांगना चाहिये। हिंदूके हितैषी मि० विसैंट, बाडिया और एरंडेलको नजरबंदीसे छुड़ानेके लिये सारा हिंदूने न्यायपूर्वक आन्दोलन किया जिसका फल यह हुआ कि यह तीनों व्यक्तियोंका नजरबंदीसे छुटकारा करीब तीन माहमें ही हो चुका है। परंतु खेद है कि हमारी जैन समाजके निःस्वार्थी परोपकारी नेता पं० अर्जुनलालजी सेठी जो कि ब्रिटिश राज्यके अन्तर्गत जयपुर राज्यमें तीन वर्ष हुए नजरबंद पड़े हैं उनको छुड़ानेके लिये हमारी जैनसमाजने पहले कुछ आन्दोलन किया था परंतु उसका कुछ भी फल न पाकर अब कई महिनोंसे निराश होकर बैठ रही है। क्या यही प्रत्यक्ष है ? क्या यही जीरदया है ? क्या यही समानतेवियोंकी कदर है ? नहीं, नहीं, ऐसा तो कभी भी नहीं होना चाहिये। अब भी कुछ गया नहीं है। आप फिर न्यायपूर्वक गोर आन्दोलन कीजिए और

भारतमंजरी मि० मोंटगु जो दो तीन माहमें हिंदूमें पधारनेवाले हैं उनके कानोंतक इस आवाजको पहुँचाइये कि हमें सिर्फ न्याय दिलवाइये। यदि पं० अर्जुनलालजी दोषी होते उसका दोष सिद्ध करके दिखलाईये और उनको कड़ी शिक्षा कराइये परन्तु न्यायकी कसौटीपर बिना चढ़ाये इस तरह जयपुर राज्यकी नजरबंदीसे शीघ्र-अतीव शीघ्र छुटकारा करवाइये। देर मात्र हमारे वाइसराय महोदयके ओर्डरकी ही है। हमारे भारत-जैनमहासंघलने आजतक इसके बारेमें अच्छा आन्दोलन किया है और इससे भी ज्यादा आन्दोलन करनेके लिये हम उसके कार्यकर्ताओं बाबू अजितप्रसादजी एम० ए० लखनऊ, मान्यवरजे० एल० जैनी, जज साहब, इन्दौर, बाबू दयाचंदजी बी० ए०, चेतनदासजी बी० ए०, बाबू माणिकचन्दजी बी० ए० आदिको आमहपूर्वक निवेदन करते हैं और हरएक स्थानपर फिर समाएं होकर इसका आंदोलन होना चाहिये।



थोड़े ही दिन हुए देहलीमें आर्यसमानियों और जैनियोंमें आर्य-देहलीमें अपूर्व धर्म समानके हॉलमें और प्रभावना। आर्यसमाजी समापतिके समापतिवर्षमें जैन पं०

मकखनलालजी शास्त्री न्यायालंकार (प्रधान अध्यापक ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम) और आर्यसमाजी पंडित नृसिंहदेवजी शास्त्री दर्शनार्थप्रो० टी० ए० बी० कालेनलाहोरके



मध्य ईश्वर कर्तृत्व और तीर्थंकर सर्वज्ञत्व खंडन मंडन विषयक शास्त्रार्थ हुआ था जिसमें जैनियोंकी अपूर्व विजय हुई है जिससे देहलीकी सारी जनसमाजपर जैनधर्मका अच्छा प्रभाव पड़ा है और पं० मन्खनलालजी न्यायालंकारकी विद्वत्ताकी कदर करनेके लिये देहलीकी जैनसमाजने आपको वादीभक्तेशरीका पद प्रदान किया है। आर्य समाजी पंडितोंके सामने और सो भी उन्हीके स्थान और सभापतित्वमें शास्त्रार्थके लिये खड़े होकर विजय प्राप्त करना साधारण विद्वत्ताका काम नहीं है। पं० मन्खनलालजी जैसे पचीम पचास विद्वान जन्म नजर आवेंगे तब ही जैन धर्मका प्रभाव सारे भारतवर्षमें पड़ सकेगा परंतु ऐसे विद्वान तैयार करनेके लिये स्थायी प्रवंच करना हमारा प्रथम कर्तव्य है। यह पं०-मन्खनलालजी दूसरे किसीके शिष्य नहीं परंतु आप स्वर्गीय स्याद्वादगारिषि वादिगनकेशरी न्यायवाचस्पति पं० गोपालदासजी चरैयाके ही शिष्य है और आपने पंडितजी द्वारा स्थापित मुरैना जैन सिद्धांत विद्यालयमें ही रहकर यह योग्यता प्राप्त की है तो ऐसे विद्वान तैयार करनेके लिये इस विद्यालयका ध्रुव फंड होना और पंडितजीकी स्मृति कायम रखनेके लिये इस विद्यालयके साथ पंडितजीका नाम जोड़ देना अतीव आवश्यक है परंतु बिना एक लाख रुपयेका फंड हुए यह नहीं हो सकेगा। इसलिये विद्यालयकी ओरसे एक डेप्युटेशन अभी

देहली पहुंचा है जिसमें अधिष्ठाता पं० धनलालजी, मंत्री पं० खूबचंदजी शास्त्री, पं० लालरामजी, पं० बंशीधरजी, व० शीतलप्रसादजी आदि शामिल हैं और देहलीमें इस फंडके लिये उद्योग कर रहे हैं, आशा है कि इस प्रयासका फल उत्तम ही निकलेगा क्योंकि श्रीमान त्यागी ऐलक पन्नालालजी महाराजका चातुर्मास भी देहलीमें है जिससे आपके उपदेशसे भी इस कार्यमें विशेष सहायता मिल सकेगी। इस डेप्युटेशनका कर्तव्य है कि इसी तरह दूसरे बड़े २ शहरोंमें जा नाहिर समाएं बुलाकर विद्यालयके लाभ बताये जावेंगे तो शेष ४९०००) भरा जाना कुछ मुशकिल नहीं है। जिस तरह हो शीघ्रता करके एक लाख रुपयेकी रकम पूर्ण करके विद्यालयके साथ स्वर्गीय पंडितजीका नाम जोड़ देना चाहिये।



अजमेरनिवासी रायबहादुर शेठ मूलचं-

दजी सोनीके सुपुत्र

शेठ नेमिचंदजीका रायबहादुर शेठ

वियोग। नेमीचंदजी साहेब

आ० मेजिस्ट्रेटको कौन

नहीं जानता ? आपकी दानशीलता, धार्मिक प्रेम और उदार स्वभावसे आपका नाम सारी जैनसमाज और अजमेर भरमे विख्यात है। परन्तु आज अतीव खेदके साथ लिखना पड़ना है कि शेठ नेमीचंदजी अब इस संसारमें नहीं हैं। आपका स्वर्गवास द्वि० भादवा वृ० ९ को होनेका समाचार मिलनेसे हार्दिक दुःख होता है। हमारी समाजमेंसे



तीन चार वर्ष हुए कई नरत्नोंका वियोग हो रहा है उसमें सेठ नेमिचंदजीके वियोगसे विशेषता हुई है। क्या किया जाय ! होनहार बलवान है। सेठ नेमीचंदजीके स्वर्गवामके समय दानकी कुछ बड़ीभारीर कम अवश्य निकाली गई होगी जिसका समाचार मिलनेसे प्रकट करेंगे परंतु हमें पूर्ण आशा है कि आपके सुपुत्र शेट टीकमचंदजी साहब अपने पिताका नाम अमर करनेके लिये अजमेरमें या कोई अन्य उचित स्थलमें एक बड़ी भारी संस्था खोल देंगे। अजमेरमें स्वर्गपूरी समान मंदिरनिर्माणमें तो आपके लख्खे-रूपये लग चुके हैं और आपका नाम विलायत तक विख्यात हुआ है इसलिये अब तो सेठजीके नामका एक विद्यापीठ (जैन बोर्डिंग, जैन कालेज या जैन हाईस्कूल) खोलकर सेठजीका नाम अमर करना चाहिये। आशा है कि सेठ टीकमचंदजी साहब हमारे इस निवेदन पर अवश्य लक्ष देनेकी कृपा करेंगे।



देहलीका जैन समाज ! ध्यान दें।

आजसे १० वर्ष पहले गोम्मटसार त्रिलोकसार आदि सिद्धान्त ग्रन्थोंका रहस्य सर्वथा छिपा हुआ था, परन्तु आज उन्हीं सिद्धान्त ग्रन्थोंकी चर्चा करनेवाले अनेक विद्वान् दृष्टिगत हो रहे हैं। कुछ दिन पहले पाठशालाओंमें सिवा अन्य मतियोंके ग्रन्थोंके जैन ग्रन्थोंका नाम भी नहीं था, थोड़ा कहीं था भी तो केवल साहित्य और व्याकरण ग्रन्थोंका था, न्याय और सिद्धान्तको तो कोई छूता भी नहीं

था, और न उनके पढ़ानेवाले विद्वान् ही दीखते थे, प्रायः सब पाठशालाओंमें ब्राह्मण ही अध्यापक पाये जाते थे इसलिये छात्रगण यथार्थ तत्त्वज्ञानसे शून्य रहते थे, इतना नहीं किन्तु विपरीत संस्कार युक्त बन जाते थे, परन्तु अब वह बात नहीं है। अब हरएक पाठशालामें जैन ग्रन्थोंका ही पाठ मुख्यतोसे होनलगा है, साथ ही उच्च कोटिके ग्रन्थोंके पढ़ानेवाले विद्वान् भी जैन मिलते हैं।

कुछ समय पहलेके व्याख्याता केवल मनुष्य दुर्लभताका व्याख्यान देकर उच्च व्याख्याताओंकी श्रेणीमें समझे जाते थे परन्तु आज जगह-र-स्थाद्वाद सिद्धान्त, कर्ममीमांसा, जैन सिद्धान्त आदि तात्त्विक व्याख्यानोकी धूम मची हुई है। जो गुणस्थान चर्चा प्रायः सर्वथा लुप्त हो चुकी थी आज उसकी विस्तृत रत्ना सर्वत्र स्वरससे सबोंको मुग्ध बना रही है, जैन सिद्धान्तके न पढ़नेसे कुछ दिन पहले परवादियोंके समक्ष आनेमें जैनछात्र संकोच करते थे परन्तु आज जैन सिद्धान्तके अकाट्य हेतुबाद और नयवादको समझनेवाले छात्र परवादियोंका सामना करनेके लिये सदा प्रस्तुत ही रहते हैं। पाठको ! इन सब बातोंपर दृष्टि डालो, और विचार करो कि उपर्युक्त सब कार्य जैनधर्मकी उन्नतिके लिये कितने महत्त्वक हैं, इनके अभावमें जैनधर्म आज १० वर्ष पहलेकी अवस्थासे भी न्यून हो जाता इतना ही नहीं किन्तु वहत हुए समयके वेगमें धर्मज्ञान शून्य छात्र स्वयं वहने लगने और दूसरोंके लिये सहसा बनते। सज्जनों ! ये



सब महान् उपकार किसके ? स्वा० वा० न्या० श्री० पं० गोपालदासजीके । उक्त पण्डितजीने ही अपने रहस्य पूर्ण असाधारण तार्किक व्याख्यानोसे जैन और जैनपर लोगोंको जैनधर्मके महत्त्वसे प्रभावित बना दिया । पण्डितजीने ही वर्तमान प्रगति और यथार्थ धर्म परिस्थितिका स्वरूप समझा कर समयसमयमें जानेवालोंसे सचेत कर दिया । अब भी पण्डितजी इतनी विद्वत्सम्पत्ति छोड़ गये हैं जो कि आर्यवाक्योंका अनुपकरण यथार्थ मार्गपर पहचानेमें समर्थ होगी ।

हम नहीं कह सकते कि ऐसे परमोक्तारीको जैन जनता कैसे विस्मृत बनाती है ? अन्यथा पण्डितजीको स्वर्ग गताहुए आज ७ मास बीत गये, परन्तु उनके कीर्तिस्तंभ सिद्धान्त विद्यालयको अभी तक धुव न बना सकी, यह क्या कम खेदकी बात है ? क्या यही धार्मिक प्रेम है ? धर्मकी गहरी चोटसे जिसका शीणशरीर हो गया, जिस निष्कामसेवीने धर्मकी उन्नतिके लिये अपनी समग्र शक्तियोंको प्राणवशसे लगा दिया, मरते २ समय तक निमको जैन सिद्धान्त प्रचारकी धुन लगी रही ऐसे महात्माके लिये समाज थोड़ीसी कृतज्ञता भी नहीं प्रकट कर सका ? ध्यान रहे कि पण्डितजीने तो निम्नके लिये कभी स्वप्नमें भी किसीसे सहायता नहीं चाही, और न समाज उनके उपकारोंका बदला कभी चुका ही सका है, परन्तु खेद है कि समाज अभी तक अपनी आवश्यकताओंको नहीं समझ मना । समाजको स्मरण रहना चाहिये कि इस समयमें यदि

सिद्धान्तके जानकार छात्र न तयार होंगे तो जैन धर्मकी उन्नति अवश्य ही आर्य समाजियोंकी परिस्थितिमें मिल जायगी, इसमें थोड़ा भी संदेह नहीं है । इसलिये आवश्यक है कि शीघ्र ही मुरेना विद्यालयको दृढ़ बनाकर सिद्धान्त ग्रन्थोंके जानकार छात्र तयार किये जाय । साथ ही कृतज्ञता प्रकाशनार्थ उक्त विद्यालयके साथ पूज्य पण्डितजीका नाम जोड़ दिया जाय । दूसरे लोगोंने तिलक आदि परोपकारी महानुभावोंके लिये उनके निम्नके लिये लाखों रुयोंकी भेंट देकर कृतज्ञता प्रकट की है तो क्या जैनसमाज अपने ही हितके लिये ५००००)की सहायता मुरेना विद्यालयको देकर कीर्तिस्तम्भको दृढ़ भी नहीं बना सकता ? लोगोंने गोखले आदिके अनेक स्मारक बना दिये परन्तु जैन समाज एक सच्चे धर्मोद्धारक विद्वान्के बनाये हुए विद्यालयको भी अभी तक स्थिर नहीं कर सका । सज्जनो ! विद्यालय तो अब टूट नहीं सकता है, क्योंकि पण्डितजीके ही समान उसको सहारा देनेवाले मिल गये हैं, पण्डितजीके परम सखा माननीय विद्वान् पं० धनालालजीने उसे सम्हाल लिया है इसलिये विद्यालयको कौन चलावेगा, यह बड़ा भारी प्रश्न तो दूर हो गया । अब केवल यही प्रश्न शेष है कि 'विद्यालय कैसे चलेगा, इसको दूर करना समाजके ऊपर है ।

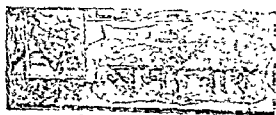
इस समय मुरेना विद्यालयका डेप्युटेशन दिखी गया हुआ है जिसमें समाजके हितैषी अग्रगण्य जैसे श्रीमान् विद्वद्धार पं० धनालालजी, जैनधर्मनृपग २० शीतलप्रसादजी, माननीय



पं० लालारामजी शास्त्री, श्रीमान् पं० खूब-चंदजी शास्त्री आदि गण्य मान्य पुरुष निकले हुए हैं। इन महाशयोंकी प्रार्थना पर देहलीका जैन समाज अवश्य ही पूर्ण ध्यान देगा। देहली इस समय गौरवाश्रित है। ऐसा न हो कि अजमेरकी तरह वह भी अपनी शक्ति-को छिपा-ले। हम धार्मिक, शिक्षा प्रेमी लाला जगजीमलजी तथा ला० सोहनलालजी, ला० तिलोकचंदजी आदिसे प्रार्थना करते हैं कि वे इस अवसरको कमी न चूकेंगे और अपने पूर्ण उद्योगसे कमसेकम (१५०००) की सहायता अवश्य ही करवेंगे। यह रकम बड़ी नहीं है, श्रीमान् बा० मुलतानसिंहजी अकेले ही इसे भर सकते हैं। उपर्युक्त विद्वान (४५०००) की सहायताके लिये हरएक नगरमें घूमेंगे तभी काम चलेगा।

कोल्हापुर ता० २५-९-९७

प्रार्थी—मकखनलालजी जैन।



२५०००)का दान।

इन्दौरके दानवीर रायबहादुर सेठ लुकम-चन्दजी साहबकी धर्मरत्नी श्रीमती कंचनयाईने कांजी चारसके व्रतका उद्यापन किया जिसका उत्सव भाद्रपद द्वि० सुदी १२ को हुआ। बड़े भारी लगान्ना सहित गजस निकला। (२५०००) का दान सेठजी साहबने

इस अवसर पर किया जिसमें (१७०००) सेठजीके महाविद्यालय धर्मशाला चालू फंडमें दिये और (१००००) दस हजार दीतवारोंके निज मंदिरजीको दिये और (२०००)के उपकरण इन्दौरके सम्पूर्ण दि० जैन मंदिरोंमें दिये। कुछ बिरादरीमें वस्त्र व श्रीफलकी प्रभावना भी वितीर्ण की। धन्य है ऐसे परोपकारी सज्जन जो व्यवहारिक कार्योंके साथ साथ धार्मिक कार्योंमें पूर्णतया सहायता देते रहते हैं।

उपहारमें तीर्थ दर्पण—इस अंकके साथ हमारे पाठकोंको दिव्यतरु (भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थदर्पण) भेंट किया जाता है आशा है कि पाठकगण इसको ध्यानपूर्वक पढ़ने और चौकटमें जडवाकर श्री मंदिरजी या पुस्तकालयमें टांकनेकी कृपा करेंगे। इसके प्रकाशक (भगत) निर्मलराम जैन (कटरा अतरफी, देहली) सूचित करते हैं कि इस तीर्थदर्पणमें यदि कुछ त्रुटियां रह गई हो तो उसकी सूचना मुझे करें ताकि आगामीको इसका खयाल रखा जाय। जिनको इस नकशेकी और आवश्यकता हो उनकी कार्य द्वारा सूचना आनेपर भेज दिया जावेगा। कर्मकी १४८ प्रकृतियोंका नकशा आपहीकी कोशिश और सहायतासे हमारे पाठकोंको उपहार स्वरूप मिठचुका है और यह अतीव उपयोगी तीर्थदर्पण नामक नकशा भी नये परिश्रमसे तैयार करके उपहारमें देनेके लिये आप अनेकदा धन्यवादके पात्र हैं। तीर्थयात्राके लिये यह नकशा एक उत्तम मापी होगा।



पुलगांवमें खंडेलवाल सभा— आगामी आश्विन वदी ७-८ ता० ७-८ को पुलगांवमें नागपुर प्रा० खंडेलवाल चालसभाका वार्षिक अधिवेशन सेठ पदमचंदजी बैनाडा आगरानिवासीके सभापतित्वमें होनेवाला है जिसके लिये बड़ी २ तैयारियां हो रही हैं । सभी खंडेलवाल भाइयोंको इस मौकेपर अवश्य पधारना चाहिये । स्वागत कमेटीके मंत्री सेठ मोहनलाल मानमठ आगरी हैं ।

वर्षामें घृहत् संमेलन—वर्षा (म प्रा) में आगामी आश्विन वदी ५-६ को दि० जैन बोर्डिंगका पंचम अधिवेशन सेठ नत्थमाहजी इलिवपुरवालोंकी अध्यक्षतामें होगा जिस मौकेपर बहादुर मध्यप्रांतिक कान्फरस, रमोत्सव और महिला परिषदका ने० अधिवेशन भी होगा । वर्षाका यह मेला सबसे बड़कर होगा ऐसे अनक सुचिन्ह दृष्टिगोचर हो रहे हैं । मध्य प्रांतके सभी माद्योंकी अवश्य पधारना चाहिये ।

‘मुनि’का स्वास अंक—‘मुनि’ नामका मासिक १३ बोदवट (खानदेश) से प्रकट होता है जिसका १५० पृष्ठका सचित्र खास अरु श्रीप्र ही प्रगट होनेवाला है । इसका अलग मूल्य (॥) और वार्षिक मूल्य २-८ है ।

शिकार बंद—देहलीमें जैनियोंके प्रयाससे मनिट शिकार आदि धर्मध्वानोंपर सदैवके लिये परित्नोंके शिकार करने व गोलीसे मारनेकी गर्वमेंने बन्दी कर दी है ।

विद्वानोंको इनामकी सूचना—जो सन्तन “जैन सन्धा (प्रतिजग्ग)” का रहस्य”

इस विषयपर हिन्दी भाषामें लेख लिखकर भेजेंगे उनमेंसे जिसका लेख उत्तम होगा उसको यह सोसायटी (१०) इनाम देगी । लेख फुल्लस्केप कागजके २० पृष्ठसे कम न हो और ३१ नवंबर तक सभापति, श्री आत्मानन्द जैन ट्रेक्टर सोसायटी—अंबाला शहरको भेजना चाहिये । सर्वोत्तम लेखको छपवाने और स्वाधीन रखनेका सर्व हक सोसायटीको होगा ।

मालवा सभाका औपचालय—बदनगरके उक्त औपचालयका काम दिनोंदिन बढ़ रहा है । इसके मैनेजर सुचित करते हैं कि सारे हिन्दुस्थानके कई पत्र हमारे पास कई भाषाओंके ऐसे आते हैं कि जिसको हम पढ़ नहीं सकते इसलिये इस औपचालयसे औपधियां मगानेवालोंको शुद्ध हिन्दी लीपिमें ही अपना पता साफ २ लिखना चाहिये । इस औपचालयकी ओरसे इस अक्के साथ दो कोडपत्र बाटे गये हैं जिस पर हम पाठकोंका ध्यान आकर्षित करते हैं ।

पशुवध बंध—देहलीमें बालिका देवीपर होता हुआ पशुवध जीवरक्षिणी सभाके परिश्रमसे बिल्कुल बंद हो गया है ।

मैसूरमें ब्रह्मचर्याश्रम—श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम गत ता० १८ को मैसूर पहुंचा था, बहा अच्छा सत्कार हुआ और न्या० ५० मस्तनगलजी, ब० गेंदनलाल तथा नेमीसगरजी वर्णीके विद्या, ब्रह्मचर्य आदि विषयोंपर व्याख्यान हुए थे । एम० नेमिरानय्या ।

झालरापाटनमें शोक—यहां शेठ लक्ष्मणलालजी पाटयाका स्वर्गवाम द्वि० माइया

कुं १ को हो गया। आपके सुपुत्र कस्तुर-चंद्रजी पांड्या सूचित करते हैं कि पिताजीके स्मरणार्थ जो रक्तम निकाली गई है उसमेंसे शास्त्रदानके लिये एक नवीन ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जायगा।

कारंजापिशा भट्टारक श्री देवेंद्र-कीर्तिजीका स्वर्गवास आ० सु० १२ को हो गया। आप बड़े विद्वान, अच्छे वक्ता और योगाम्यासी थे। क्या बड़ा ह्म प्राप्ति निवासी आपकी स्मृतिमें कुछ नहीं करेंगे?

५१ उपवास-देहलीमें स्या० जैन छोटेलाहलजीने ५१ उपवास प्र० भा० सु० १ को निर्विघ्न पूर्ण किये थे। आपका स्वास्थ्य अच्छा है।

जैनप्रभात संपादकके इस्तीफा दे देनेसे अभी बंद पड़ा है परन्तु मालवा समाके महा-मंत्री नये संपादककी खोजमें है। इसके पाठक वैयर्थ रहेंगे।

महासभाका अधिवेशन बड़वानीमें आ-गामी मेलपर करनेके लिये आमंत्रण मिला है ऐसे समाचार प्रथम जैनगणमें और उस परसे जैनमित्रमें छाया हैं परन्तु उसमें कुछ भी तथ्य नहीं है। अभीतक निर्मग्न, नहीं किया गया है ऐसा हमें बड़वानीके पंचोसे मालूम हुआ है।

फिर शास्त्रार्थ-आगामी ३० सित-म्बरसे अंबालेमें आर्यसमाजके भेदियोंमें जैन और आर्य समाजियोंसे क्या ईश्वर कर्मफल दाता है इस विषयपर शास्त्रार्थ होगा। समाजकी ओरसे धुरंधर पं० आनेवाले हैं और दोनोंकी तरफसे पं० बनारसीदासजी रहेंगे।

स्वीकार-समालोचना-स्यानामावसे आगामी अंकमें प्रकट होगी।

उपहार-इस वर्षके उपहारके बारेमें सब खुलासा आगामी अंकमें प्रकट होगा। आगामी अंकके साथ एक उपहार अवश्य बांटा जायगा।

यज्ञोपवित संस्कार-छात्रीसा (अभात) भां ६ ज्येष्ठ आशु सु६ १५ ने दिने जैनविधि पूर्वक यज्ञोपवित धारण कर्तुं हुं।

दा३ भांस त्याग-नवा (अभनगर) भां ६ द्वादशी रावण अण्येयना उपदेशी ६ द्वादश अने १ रजपुत भण ७ ज्येष्ठ जन्म पर्वत दा३ भांसने त्याग कर्तुं छे।

श्री गामनु पंच-छात्रीभां अद्देशना श्री गामनु पंच प्र. भादवाभां भव्य हुं, ज्मां अक्ष सभा यतां पांडनेर (भीक्ष्ण) निवासी गडीया पानायद खुलापयना कुरीति निषेधक, संध, विद्या वज्रेपर भायलो आपवाधी रजस्वला धर्म, सुतावड वज्रे पाणवा संधी तथा रजवा डेटवा वज्रेने निवाज ओछा करवा संधी छ करवा यवा हुता, तेभन नवाभमनी पाहसाणाना विद्यार्थीज्मांनी परीक्षा सेवाछ डेटकुं छनाम पणु वेयायु हुं।

सोलापुरभां-यतुरभां आविज्ञमनी वार्षिक मेणावडे दि. भादवा सु६ ३ ने दिने जैनमहिलासल श्रीमती भगनछेनेना प्रमुअवे यथा हुता, ते प्रसजे विवेक्षीभां, राजभां अने श्रीमती भगन छेने विद्या अने सेवा धर्म उपर विवेचने कर्तुं हुतां, सवादा यवां हुतां तथा सौ. ज्मानाभां आविज्ञमनी स्थितिध, सर्वने वांके कर्तुं हुतां।

मुदासभां इयमनायलना प्राचीन भदिरना लुण्ठोदार भाटे टीप करवा पंच तर-धुथी डेटलाक भायसे शुभरातमा नीक्षेला छे ता नेमां शुभरातमा बाधयेये भद आपवी ७३२नी छे।

५३ (पादरा)भां व्यास मासकी पाहसाणा खुली छे अने २० विद्यार्थी पाठ ने छे।

मिश्र संवाद ।

मादोंका महिना है। पावस ऋतु अपनी यौवनकी तरंगों सहित क्रीडास्थलमें वर्तमान रहती है। कभी गंजना करती है, तो आँखें बनाकर (विनली चमकाकर) ढरवाती है, कभी आंसु बहाती (रिमझिम रिमझिम बरसती) है, कभी पाँड़ें मारमार (नोरमे) रोती है, कभी जीम ही बना देती है (धूप हो जाती है), कभी उष्ण और कभी शीतल ध्यासे भरती है। इस समयकी इसकी चंचल गतिका ठिकाना ही नहीं है। इसकी मतवाली चाल निराली ही है। कोई चाहे इसकी इस चालसे दुखी होवे व सुखी, परन्तु इसको क्या है? जो करना है वही करेगी। ठीक है जवानी दीवानी ही होती है। परन्तु स्मरण रहे कि यह जवानी अधिक समय नहीं रहनेकी। जितना काल चाल और घृष्टावस्थाका होता है, उसका एक अणुमात्र काल भी इस जवानीका नहीं होता है। यह तो जल कल्लोलवत क्षणस्थायी है। ए पावस! देव आज तू मधमस्त हुई जैसा औरोंको तिर स्कार कर रही है, ऐसा ही एक दिन होगा कि जब तू भी अन्य ऋतुओंकी अपेक्षा तिरस्कृत होगी। जैसे तू किमी भी प्राणीके मृत दुग्धपर दृष्टि न देकर मनमानी करती है, अर्थात् जैसी तुझे किमीसे सहाय्य नही है वैसी ही याद ग्या। तरेमाथ भी कोई सहाय्य नही दिखानेका न रहेगा। कदा है—

दिन दम, आदर पायसर, करले आप बखान ।
जय लग वाक भाऊ पख, तब लग गुप्त सम्मान ॥

जबकि पावस ऋतु तस्यानस्याको प्राप्त थी, तब ही प्लेग महाशय बरका रूप धारण कर इससे व्याह करनेकी इच्छासे आये। अब क्या था, लगे दोनों अपना अपना बल दिखाने। पावस ऋतुने गरज कर, बरस कर, तडाका देकर खेतीको सड़ाया, मकानोंको गिराया, ग्रामोंको बहाया, रेल और पुलोंको बिगाड़ा, तो प्लेगने भवसर ताक कर विचारे असहाय जीवोंको (जो कि किसी प्रकार महिनत मजदूरी करके अपना और चाल बच्चोंका पेट पाल लेवे) बस्तीसे निकाला। 'नवरदस्तका ठेंगा शिर पर'। बस्तीमें रहें तो प्लेगसे मरें, कोई खबर भी न लेवे, मृतक किया भी न होवे। बाहर जावें तो हवा पानी ओलोंसे मरें, तात्पर्य "सांड सांड लडें बाडी झुस्तन उडें" इत्यादि अनेकों प्रकारकी विचार तर्गों उठने लगीं, कभी दीनोंकी पृकार, कभी वनिकोंकी धुतार, कभी कालका चमत्कार, कभी मोहकी हुंकार इत्यादि एकते बाद एक बान लगातार पीछे पीछे दौडने लगीं, बहुत चाहा कि चित्तको स्थिर करें, परंतु सब व्यर्थकी चेष्टा थी।

इतने ही में घोडेकी टाप सुनाई दी, तब जयचन्द्र झटके उठा और खिडकीमेंसे झांक कर देखा है तो तांगा आकर द्रविजवर खड़ा हो गया। मित्रों टेकचन्दनी उममेंसे उतर पड़े, परस्पर शुश्रूषा व्यवहार हुवा, फिर यथा-स्थान वेदक्यानेमें जा बैठे।

टेकचन्द्र—भाई साहेबको तो कभी अक-



सान ही नहीं मिलता है। आजकल माताजी तथा आपकी भावना बहुत याद किया करती हैं। दश दिन बाद पर्युषणपर्व प्रारंभ होगा, इसलिए विचार करना है कि अपना प्रोग्राम किस प्रकार रखना जाय, जिससे कि कुछ सफलता होवे।

जैचंद—भैया, प्रोग्रामकी क्या बात है, वह तो मनमाना स्थिर हो सकता है। तुम पहिले यह देखो कि तुम्हारा मन, तुम्हारे आधीन है या नहीं। यदि तुम्हें धामधूम पसंद हो, जेवरकी झनकार, वस्त्रोंकी फटकार, मुखियोंकी ललकार, पुजारियोंकी व पंडितोंकी वक्ता, परस्परकी तक़ार, और गानेकी बहार इत्यादिका आनन्द भोगना हो तो, मामूली बने हुए नियमानुसार जाइये और जयजयकार उड़ाइये। और यदि इसके विपरीत आप जिनेन्द्र भाषित धर्मका पालन करना चाहते हैं, तो विगत वर्षके आश्विन मासका क्षमावनीवाला दिगम्बरजैनका अंक निकालकर पढ़ जाइये कि मैंने किस प्रकार इस पर्वके दिनोंमें समयका व्यवहार किया था, उसीके अनुसार यदि पसन्द हो तो कीजियेगा। अर्थात्—

नित्य प्रातःकाल ४ बजे उठकर हाथ मुंह धोकर प्रातःकालीन संध्या (सामायिक) करना, नित्य प्रति क्रमसे उत्तम क्षमादि दश धर्मोंकी जाप देवें, उनकी भावना भाँवे, इसके विपरीत, क्रोध मान मोया लोभादि कपार्योंको यथा-संभव दमन करें, सामायिकके बाद छह बजे शौनादि क्रियासे निवृत्त होकर स्नान करें और फिर एक अध्याय तत्त्वार्थ सूत्रका साथ

पढ़ें, भक्तानाम सहस्रनाम आदिका पाठ करें, आठ या साढ़े आठ बजे अष्टद्वय संजोकर श्रीजिनेन्द्रकी पूजन करें, जितनी पूजनपाठ करें उनका भाव मले प्रकार समझें, तभी पूजाका फल होता है। बहुत लोग रुढ़ीके अनुसार संस्कृत तथा प्राकृत और भाषादिकी बहुतसी पूजाएं करते हैं, समवशरणादि बड़े बड़े पाठ दो दिनमें व एक एक दिनमें पूरे कर डालते हैं, अथवा केवल गानेकी लयमें लय हो जाते हैं। इस तरह चार घंटे बिता देते हैं, परंतु अर्थ कुछ भी नहीं समझते हैं। इससे उनका चित्त स्थिर नहीं होता है, केवल पूरा पाठ करनेकी पड़ती है। कभी कभी चढ़ानेवाले मिलते हैं तो बाँचनेवाले नहीं मिलते, और बाँचनेवाले मिलते हैं तो चढ़ानेवाले नहीं सड़े होते, और रुढ़ि ऐसी है कि इतनी पूजन होना ही चाहिये। जो हो हम तमालोचना नहीं करना चाहते। हमारा अभिप्राय तो समझकर पूजा करनेसे है कि, पूजा परम भक्ति श्रद्धापूर्वक तन मन वचनकी एकाग्रतासे करना चाहिये।

पूजाके पश्चात् दश लक्षणोंमें एक एक धर्मका व्याख्यान पढ़ें व सुनें। फिर यदि उपवास न हो, तो दो पहरका सामायिक करके प्रातृक, शुद्ध, नीरस या रस त्यागकर एकासनसे ऊनोदर भोजन करें या दो बार नियमपूर्वक भोजन कर लें। भोजनान्तर पुनः पूजन विधान करें अथवा स्वाध्याय करें, तत्त्वोंकी चर्चा करें, आत्माका विचार करें। सांझ होते समय पुनः सामायिक करें, वंदना स्तुति करें, शायसमा



कर व सुने । इस प्रकार सवेरसे १० बजे रात्रि तक यथायोग्य समयका व्यवहार करे । रात्रिको जहां तक निद्रा न आवे, कुछ आत्म चिंतन करता रहे और उन्हीं विचारोंमें निमग्न हुवा निद्राकी गोड़में जा पड़े, इत्यादि यही प्रोग्राम है । तात्पर्य यह कि इन पर्वके दिनों जितना हो सके अपनी कषाय और विषयोंको मंद करे, गृहारम श्रद्धा देवे, समयको अमूल्य समझकर एक मिनट भी व्यर्थ न खोवे । चौथके दिनसे पुनोके दिन तक, अर्थात् धारणाके दिनसे पारणा तक सब प्रकारके व्यापार धर्मोंको बंद करके यथासंभव धर्मध्यानमें काल बिताने । रूढ़ीमें धर्म नहीं है । धर्म तो आत्माको विषय कषायोंसे छुड़ाकर अपने शुद्ध स्वभावको प्राप्त करना है । और ये पर्वके दिन उसीकी प्राप्तिके साधनभूत अभ्यास करनेके लिये नियत किये गये हैं ।

टेकचन्द—भाई साहब इस साल मैंने भी यही विचार कर लिया है कि न तो नवीन कपड़े बनवाना, न गहना ही उजरवाना, कुछ कपड़ोंके व्यवहारका निषम रख लूंगा, जो स्वच्छ और साधे होंवें, उन्हींको काममें लूंगा । तुम्हारी भावनाके विचारोंमें भी अब बहुत अन्तर पड़े गया है । अब तो भयभंजन (दण्ड) को कभी स्वस्थान च्युत नहीं होना पड़ता है । वह योग्य सम्मति देती है । आपने न जाने क्या जादूसा कर दिया है कि अब वह बहुत शांत हो गई है ।

जैचंद—भैया, यह आश्चर्यकी बात नहीं है, जीवोंके कर्मका उदय तो है, जब ऐसा

रस देने लगे । बाह्य निमित्त मिलनेसे भी वह कार्यकारी हो जाता है । खी हो या बच्चे, उनपर अपने ही लोगोंकी प्रतिभा पड़ती है । भावनाके स्वभावमें अन्तर पड़नेका कारण यह है कि आपके भी स्वभावमें तो अन्तर पड़ गया है । अपन शांत स्वभावके होवेंगे तो अपने आश्रित जन भी ऐसे ही हो जाते हैं । कहा भी तो है “आप भला तो जग भला” आपने जो विचार किया है वह सराहनीय है । तो अपन सब डेढ़दियोंके मंदिर (नरसिंहपुर)में ही पूजन करेंगे, क्योंकि वहां एकान्त रहता है ।

टेकचंद—ठीक है, यह बात तो हुई, परन्तु एक बातकी शंका कई दिनसे हो रही है उसीके लिये आज मैं विशेष करके आया हूँ । जैनमित्रादि पत्रोंमें छया था कि जैनजाति-भूषण दानवीर सेठ हुकमचंदजीने एक लाख तोला चांदीकी प्रतिमा (तीन) अपन नवीन मंदिरमें इस शर्तपर विराजमान करनेका विचार किया है कि यदि उनकी सहधर्मिणी आरोग्य हो जावेंगी । तो, सो क्या यह बात सत्य है ? अच्छा, कदाचित्त (ऐसा न होवे) कि उनको डेढ़ वर्षमें स्वास्थ्य लाभ न हुवा, तो फिर क्या होगा ? और क्या इस प्रकारकी कसूरतसे वह स्वास्थ्यलाभ कर सकती हैं या कोई उन्हें स्वास्थ्यलाभ करा देगा ? क्या बात है ? कुछ समझमें नहीं आती । भाई, मैं तो मूढ़-मती हूँ, कृपया संशय दूर कीजिएगा ।

जैचंद—भैया, ऐसी बातोंमें मौन रहना ही ठीक है, कारण समयकी विवक्षणा तो



समझिये । आजकल यदि यथार्थ बात कही जाती है तो लोग उसे स्लेच्छ, अश्रद्धानी, नास्तिक, धर्मघातक आदि शब्दोंमें स्थागत करते हैं, और अनेक प्रकारसे उसके व्यवहार-को अटका देनेका प्रयत्न करते हैं ।

टेकचंद—यह तो ठीक, परंतु वस्तुका स्वरूप तो जानना ही चाहिये ।

जैचंद—हां यह ठीक है, तो समझ लेंगे कि इस प्रकारकी कबूल करना जैनधर्मानुकूल नहीं है । सिवाय इसके एक और भी बड़ी हानि इस सोने चांदी हीरा पत्ता आदि बहु मूल्य पदार्थोंकी प्रतिमा बनानेमें यह है कि फिर इन प्रतिमाओंके दर्शन भी दुर्लभ हो जाते हैं, निरंतर तालोंमें बंद रहती हैं, चारों ओर विद्रोहियोंके द्वारा नष्ट होनेका निरंतर भय रहता है, जैसा कि महमूद गजनवी आदि अन्यायी मुगल सम्राटोंके समयमें हुआ था—काश्मीरके प्रसिद्ध सोमनाथके (शिव लिंग) मंदिरमेंसे मूर्तिको तोड़कर स्वर्ण रत्नादिक ले गया, कुछ भाग नगरके प्रदर्शनी ग्रहमें रख गया और कुछ गजनीकी मस्जिदके द्वारपर आने जानेके स्थानपर लगाया, इत्यादि । सो भाई, गैरी समझमें तो मनुष्याकार पापाणकी मूर्तियां ही हम लोगोंके लिये कल्याणकारी हैं । अब रही यह बात कि मैं गरीब हूँ—निर्धन हूँ, तो क्याचित ऐसे भाव आते हों । परन्तु मैं तो यहां तक सोचता हूँ मूर्ति और जपमालादि तो बहुत मूल्य सुवर्ण रूपा, मणि, मोती, रत्नादि की नहीं होनी चाहिये, इसमें रक्षाकी भिना और लालचियोंकी निहास

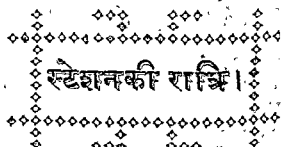
लार टपकना लगा ही रहता है । फिर यह जिन धर्म वीतरागी धर्म है । इसमें कबूल व आकांक्षा न करके ही धर्म कार्योंमें दानादिकी प्रवृत्ति करना चाहिये ।

टेकचंद—बस भाई, समझ गया अच्छा, अब जाता हूँ । जुहार ।

जैचंद—अच्छा भैया जुहार । फिर शीघ्र मिलना । जुहार ।

टेकचंद तांगेपर बैठकर लम्बे हुए और पानी भी टिपटिमाने लगा । जैचंद अपने विचारोंमें निमग्न हो गये और हम भी अब शास्त्रसभामें चले । जुहार ।

दीपचन्द परिवार, नरसिंहपुर ।



स्टेशनकी रात्रि ।

(लेखक—धन्यकुमार जैन स्वा० म० काशी ।)

(गतांसे आगे)

(५)

अपने मित्र, निताईचन्द्रकी चारातमें जो बहुतसे कलकत्तानिवासी आये थे, वे उन्हीं (निताईचन्द्र) के मित्र थे । निताईचन्द्रके हृदयमें बचन ही से युद्ध सम्बंधी भाव उत्पन्न हो गये थे । उसने पत्रमें जो विवाहको "युद्धारम्भ" और मुस्तरालको "शत्रुदुर्ग" वर्णन किया था, उसके (उक्त दोनों शब्दोंके) द्वारा उसका यह स्वप्नमें भी विचार न था कि, मेरे बन्धुगण आपत्तिमें पड़ेंगे ।



जिस ग्राममें विवाह हुआ वह स्टेशनसे दो कोसकी दूरीपर था। विवाह और खान-पानके बाद, निताईचन्द्रसे बिदा लेकर वे सब स्टेशनको चल दिये। सीधी रास्ता है, मूछनेकी कोई आशङ्का नहीं है। ज्योतिस्नाके उजेलेमें गीत गाते २ अति आनन्दसे गमन करने लगे।

जब रातके दो बजे तब स्टेशनका उजेला दृष्टिगोचर हुआ। थोड़े ही समयमें वे स्टेशन पर आ पहुँचे। वहाँ देखा कि एक बाबू सिरपर साफा बाँधे हुए प्लेट-फार्मपर घूम रहे हैं। उन्होंनेसे एक युवकने बाबूसे पूछा “बाबू सह्य ! ट्रेन आनेमें अभी कितनी देरी है ?”

बाबू—व्या आप ही लोग आज शामके पाँच बजेकी ट्रेनसे आये थे ?

युवकगण—जी हाँ।

बाबू—आप लोगोंमेंसे, कुछ आदमी हाव-हेके स्टेशनपर रह गये थे ?

कुञ्ज—यह तो नहीं मालूम, पर और तीन आदमी आने वाले थे, वे नहीं आये; शायद वे ही पीछेसे आये हों ! क्यों ? कोई आया है क्या ?

बाबू—तो ठीक है, आपहीके साथी हैं। दो आदमी आज रातके ९ बजेकी ट्रेनसे आये हैं, उनमेंसे एकको बहुत मोरसे ज्वर चढ़ आया है।

कुञ्ज—वे कहाँ ठहरें ?

बाबू—वह देखिये, जो लम्बीसी कोड़ी दिखती है उसीमें वे ठहरे हैं। मैं अभी

देखनेके लिए गया था, उसको १०५ डिग्री बुखार है।

युवकगण आपसमें कहने लगे—शायद मोहनलाल और रामस्वरूप होंगे। रामस्वरूपको ही ज्वर आया होगा। हाय ! उस बेचारेको हमेशा रोग ही बना रहता है।

बाबू—हाँ हाँ, रामस्वरूपको ही बुखार है।

मैं नाम भूल गया था। चलते हैं ? चलिये कह कर, बाबू मकानकी ओर चल दिये। पाठक ! समझ गये होंगे कि, ये वे ही गोवर्द्धन बाबू हैं, जिनकी इज्जत महाशयने दिलगी उड़ाई थी।

युवकगण भी उनके पीछे २ चल दिये। मकानपर पहुँचते ही बाबूने कहा “देखिये यह सो रहे हैं” क्योंकि रात भरके जगे हुए हैं। आप लोग धीरे धीरे जाइये, जिससे उनको शब्द न सुनाई दे, नहीं तो उनकी निद्रा भंग हो जायगी, फिर निद्रा आना मुश्किल है।

युवकोंने देखा कि, उस लंबे मकानके पिछलेसे माममें एक पलंग बिछा हुआ है। पलंगके पास ही एक मेज़ पड़ी है। उसके ऊपर तीन चार औपचारिकी शीशियाँ रखी हैं, दीवालपर एक टाबलेन लगी है, उसका प्रकाश भी बहुत थोड़ा है।

युवकगण निःशब्द प्रवेश करने लगे। प्रायः सब एक ही साथ शय्याके पास पहुँचे। दो तीन आदमियोंने रनाई उठाकर देखा तो, वहाँ केवल विज्ञान ही बिछोने दिखाई दिये।



अब तो वे घबड़ाये, और बाहर निकलनेके लिए दरवाजेमें धक्का मारा; परन्तु दरवाजा बाहरसे बंद है, यह जानकर तो उनके छक्के छूट गये, और बाबू बाबू कहकर चिल्लाने लगे । परन्तु सब प्रयत्न व्यर्थ हुए । किसी ने पलंग ही तोड़ना प्रारम्भ कर दिया । इतनेमें तुलसीने कहा “ भाई कुञ्ज, इस काल कोठरीमें कब तक रहेंगे ? मुझे लालटेन दो, इन किवाड़ोंपर तेल डालकर दियासलाई लगा दूं ।

कुञ्ज—धूँआँ भर जानेपर....

केशव—यम घर....

राजेन्द्र—क्यों ?....

केशव—यों की ल्यों....

कुञ्ज—अब इन बातोंको जाने दो । मैं जो कहता हूँ उसे ध्यान देकर सुनो, इस पलंगको तोड़के इसकी निवार खोलो, और पलंगके पाटिया व मेज़के पाये, इस निवारसे बांधकर एक नसैनी बना लो । उस नसैनीसे ऊपरके झरोखेमें पहुँच जायेंगे । फिर निवारको खोलकर, उसको दोवर करेंगे, और उसमें एक हाथके फासले पर गाँठ देंगे । फिर उसको तुम लोग पकड़े रहना; और मैं उस तरफ उतर जाऊँगा । यदि ताला लगा हुआ देखा, तो सीधे थानेमें जाकर दरोगासे सब हाल कहूँगा जिससे वे सिपाहीको भेजकर हम लोगोंका इस विपत्तिसे उद्धार करेंगे । यह कहकर सचने मित्रकर नसैनी बना ली । नसैनी और निवारके रस्तेके सहारे कुंठ बाहर चला आया ।

स्टेशन मास्टर इस विपत्तिसे मयभीत होकर, पहिले ही से ताला तथा साँकल खोल आये थे । उन्होंने विचारा था कि, ये थोड़े ही समयमें निकल भागेंगे । अतएव मेरी भी जान बच जायगी, परन्तु उन विचारोंको दुर्भाग्य ।

स्टेशन मास्टरने आफिसमें जाकर देखा कि, गोवर्द्धन बाबू चादरा ओढ़े मेज़पर सो रहे हैं । उस तालीको जहाँकी तहाँ रखकर, स्टेशन मास्टर अपने कार्यमें तत्पर हो गये ।

थोड़ी देरके बाद गोवर्द्धन बाबूकी आँख खुल गई । उन्होंने सूर्यका प्रकाश देखकर कहा (स्टेशन मास्टरसे) “थानेको आदमी भेना है ?”

स्टे० मा०—नहीं । एक भी खलासी का पता नहीं, कहिये क्या करूं ?

गो० बा०—अच्छा मैं ही जाता हूँ । थाना यहाँसे कितनी दूर है ?

स्टे० मा०—एक मीलके करीब होगा !

गो० बा०—इससे अच्छा तो यह है कि मैं कलकत्तेको तार दे दूँ । जिससे हथियार-बन्द पुलिस आकर, इनको पकड़ लेगी । फिर तों किला जीत ही लिया है ।

स्टे० मा०—मेरी समझमें भी यही आता है, क्योंकि यहाँकी पुलिसका कुछ विश्वास नहीं । आप तार लिखिये, मैं अभी जाता हूँ कहकर स्टेशन मास्टर वहाँसे चम्पत हुए ।

गोवर्द्धन बाबू तार लिखने बैठे ही थे कि, इतनेमें बाहरसे कोलाहल व जुत्तोंके शब्द सुनाई पड़े । गोवर्द्धन बाबूने बाहर आकर देखा, उससे उनके हृदय कमजोर बड़ा मारा



घना पहुँचा । इनमें उनसे एक युवकने रुहा यह वही तो है, जिसने हम लोगोंको बन्द किया था ।

इसके सुनते ही, 'मारो मालेसो' कहकर सबके सब गोवर्द्धन बाबूके ऊपर दूट पड़े ।

गोवर्द्धन बाबूने उनको अपनी ओर आँत देखा, जंगलकी ओर मागना शुरू कर दिया । जंगलमें दौड़ते दौड़ते उनका जूते गिर पड़े । अतएव काँटोंक मारे उनकी नाखमें डम हो गई । कमश गति मन्द होन लगी । निदान वे एक वृक्षके तले गिरे पड़े । होश आने-पर गोवर्द्धन बाबू धीरे धीरे स्टेशनकी ओर चलने लगे । तीन चार घण्टेके बाद स्टेशन पर पहुँचे ।

स्टेशन मास्टरने उनकी यह अवस्था देखकर, उनको अपने कपड़े पहननेके लिए दिये । कपड़े पहनकर गोवर्द्धन बाबूने कहा, 'देन इन आवेगी ?'

स्टे० मा०—क्या ? आपको जाना है ?

गो० बा०—जी हाँ—

स्टे० मा०—आती ही होगी । पाव मिनटकी देरी है ।

गोवर्द्धन बाबू—अच्छा, मैं चला कह कर उहासे चल दिये ।

दुमरे दिन ही वीरेन्द्र बाबूके नाम, एक बटी सी झुक पैकेट आई । उसको खोलकर वीरेन्द्र बाबूने पुस्तकोंको डैकमें रख दीं, और गोवर्द्धन बाबूक लिए धन्यवादना लिखने बैठ गये ।

धन और उसकी प्राप्ति ।

(ले०—मोहनलाल बजाया, कुचामन ।)

वन, दौलत, द्रव्य, लक्ष्मी (Wealth) आदि शब्द एक ही अर्थके वानक हैं । उन बड़ी प्यारी वस्तु हैं । धन बिना हम ससारमें कोई भी कार्य नहीं हो सकता । इसीसे अच्छे अच्छे कपड़े पहिननेको मिलते हैं । इसीसे गाड़ी घोड़े, बगी आदि रख सकते हैं । धन होनेसे ही महल हवेली, बाग बगीचे, धर्मशाळा, मंदिर, सरस्वती भवन आदि बना सकते हैं । इसीसे बेटे बेटियोंका विवाह बड़ी धूमधामसे कर सकते हैं । इसीसे लाखों रुपया धर्म कार्य चन्दे आदिमें देकर सत्पाए खोलकर, तीर्थयात्रा कर, नामवरी एवं धर्मोपार्जन कर सकते हैं ।

जैसे बच्चा समझने लगता है तभीसे पैसेको प्यार करने लगता है । और मनुष्य बूढ़ापे—अत्यंत जीर्णशीर्ण अवस्था तक एव भरे जब तक इसके उत्पन्न करनेमें—उपार्जनमें लगा रहता है । यानी धन बचेसे लेकर बूढ़े तकको प्यारी चीज है । इसकी प्राप्ति हेतु मनुष्य अहर्निश परिश्रम करता है, इतना ही नहीं पर धनहीके लिये जन्म लिया है ऐसी तरहसे धनके पिछाड़ी तनमनसे जीजानसे लग रहा है । जिसके पास धन होता है वह मूर्ख, गुणहीन तथा अन्यायी होनपर भी चतुर, गुणी और न्यायी कहलाता है । निर्धनी सर्वगुणसम्पन्न होनेपर भी अपन स्थानपर भी प्रतिष्ठा नहीं पाता, और धनी सर्व प्रकारसे अयोग्य होने



पर भी सब स्थानों पर प्रतिष्ठा पाता है । आजकल हमारी सभा सोसाइटियों की समाप्ति आदि पद पर भी सेठ लोग ही स्थापित किये जाते हैं । यद्यपि विद्या के समान संसार में और उत्तम वस्तु नहीं है । इस आत्मा का कल्याण साधन भी इस विद्या (ज्ञान) के द्वारा ही होता है । संसार की उन्नति का होना विद्या ही पर निर्भर है, एवं धन भी विद्या के द्वारा उत्पन्न किया जा सकता है; तथापि मनुष्य जब तक धनसम्पन्न न हो तब तक उसकी प्रतिष्ठा नहीं होती ।

दृष्टान्त है कि—एक दरिद्री पुरुष अत्यंत दुखी होकर धन कमाने की इच्छा से बाहर निकला । राह में एक गांव पड़ता था, वहां उसकी बहिन रहती थी । बहिन एक धनवान को व्याही गई थी । वह बहिन के पास मिलने की इच्छा से गया । बहिन ने सुना कि भाई दरिद्रता में आया है, इसलिये उसे कहलवा दिया कि मेरे घर न आवे, और नगर के बाहर ही एक टूटे फूटे मकान में ठहरा दिया और वहीं पर उसके लिये खाने को भेज दिया । उस दरिद्र को बड़ा शोक हुआ और उसने विचार कि वह मुझ निर्धन से क्यों मिलने लगी । हाय ! दरिद्रता बड़ी दुखदायी है—ऐसा विचार करता हुआ वह वहां से चला और देशांतर में जा पहुंचा । वहां पर उसने उद्यम किया और बहुतसा धन कमाया । धनवान बनकर वह अपने देश को लौटा और बहिन से मिलने गया । बहिन ने सुना कि भाई बहुत अच्छी दशा में आया है, अपने मकान में

बड़े आराम से ठहराया और भोजन के लिये अच्छी अच्छी सामग्री बनाकर थाल परोसा । भाई जो आभूषण पहिने हुये था वे सब, और रुपयों की एक थैली थाल के सामने रखकर हने लगा—“भोजन करो, द्रव्य ! तू भोजन कर ! ”

बहिन बोली—भाई, यह क्या बात है ? “आप भोजन क्यों नहीं करते ? ”

वह बोला “बहिन, तूने भोजन इन्हीं के लिये बनाया है अतः मैं इन्हीं से—धन आदि से ही कहता हूं कि भोजन करो, यदि तू मुझे ही खिलाती तो जब यहां—पहिले आया था तब ही खिलाती—इसी प्रकार भोजन कराती ।” सच है धनी की वे लोग भी निन्दा करते जिनका उनसे कोई स्वार्थ नहीं सघता । निर्धनी की वे भी निन्दा करते हैं जिनके स्वार्थ के लिये वह सदैव प्रयत्नवान रहता है । हम कहते हैं कि विद्या के द्वारा बड़े बड़े कार्य हो सकते हैं एवं धनोपार्जन भी विद्या से हो सकता है यह नहीं, आजकल इसके विपरीत बात है । आजकल विद्या भी धन से प्राप्त होती है । जिसके पास सैकड़ों हजारों रुपये स्कूल की फीस देने की और प्रुस्तकें खरीदने की रखे हैं वही विद्या पढ़ सकता है । बाकी निर्धन का कुछ सहारा नहीं । निर्धनों का सहारा धनिक हैं । उन्हें योग्य है कि निर्धनों को पढ़ावे उन्हें स्कूल-शिष आदि सहायता देवे पर धनिकों की आंखें खुलें तब ना ? उन्हें अभी पुत्र विवाह आदि में कहो तो लक्षों रुपया लगा दें, पर इन कार्य में परोपकार में वे क्यों लगाने लगे ? उन्हें यह



ज्ञान कहा खता है कि परोपकारमें । धर्म कृत्योंमें लगाया हुआ द्रव्य खेतीकी भांति है, कि एक गुना बीन डालें और कई गुना अधिक फल पावें । लक्ष्मीसे सम्बन्ध स्थिर रखना है अगर चाहते हो कि आगेको फिर मिले तो इसे सत्कार्योंमें लगावो ।

प्रिय वन्द्युगण ! धन ऐसी ही वस्तु है । पर धनकी प्राप्ति कैसे हो ? हम धनके लिये इतना परिश्रम करते हैं तो भी उसकी प्राप्ति नहीं होती इसका क्या कारण है ? इसका उत्तर यह है कि प्रथम तो हम सचा प्रयत्न ही नहीं करते और फिर जैसा प्रयत्न करते हैं वैसा साधन नहीं है, इसी लिये कार्यकी सिद्धि होना कठिन है । कारणसे कार्यकी उत्पत्ति होती है । और उसके अनुसार चले बिना कार्य सिद्धि की आशा करना नितान्त भूल है । धन लाभ-द्रव्य प्राप्तिके सम्बन्धमें कई तो प्रारब्धको मुख्य मानते हैं और कई उद्योगगो । यद्यपि धनी होना प्रारब्धपर निर्भर है, बिना प्रारब्धके कोई विशेष श्रीमान नहीं हो सक्ता है, तथापि प्रयत्न करनेसे कोई मनुष्य दरिद्री नहीं रह सकता । विचारिये प्रारब्ध भी क्या चीज़ है ? प्रारब्ध भी पूर्वजन्ममें किये हुए शुभ अशुभ कर्मोंका फल ही है, इसलिये हमें निरुपमी-आत्मी नहीं बनना चाहिये । जो मनुष्य आलसी होता है उसको कभी सफलता नहीं होती । आलस्य मनुष्यका पगम शत्रु है । आलस्यको कभी धाम न आने देना चाहिये और सदैव प्रयत्नशील उद्योगी बने रहना योग्य है । इस

जगह में इतना और कह देता हूँ कि उद्योग करनेके पूर्व यह अवश्य विचार लेना चाहिये कि यह हमारा उद्योग शुभ है व अशुभ, नीतियुक्त है व अनीतियुक्त, शुभ परिणामी है व अशुभ परिणामी, इन बातोंका निर्णय करके आगे बढ़ना चाहिये । अन्यायसे, निन्द्य कर्मोंसे कभी भी द्रव्योपाजन करना योग्य नहीं है । आजकल धनके लिये लोग नीचसे नीच काम करते हैं, यहां तक कि इस धनके खातिर ही अपनी प्यारी बेटीको भी बेच देते हैं । ऐसा द्रव्योपाजनका मार्ग कभी ठीक नहीं हो सकता । व्यापारादिमें हम उच्छिद्र कष्ट करनेसे बिल्कुल नहीं डरते हैं । पर हमें याद रखना चाहिये कि कष्टसे हमारे व्यापारको बड़ी हानि पहुँचती है ।

श्रुत व्यवहार, कष्टनासे हमारा विश्व स छूट जाता है और हम हमारे उद्योगमें, व्यापारमें निष्फल हो जाते हैं । ग्राहक आना है तो हम हमारी वस्तुके दुगुने, तिगुने दाम मांगते हैं । ग्राहक एकदम कम दाम कहता है, फिर जमश वह बढ़ता जाता है और हम घटते जाते हैं । यह दग ठीक नहीं । इससे दुकनदारका तथा ग्राहक दोनोंका समय व्यर्थ जाता है, क्योंकि ग्राहकको भी ठीक जचाईक हेतु ३-४ दुकनदारोंके यहां फिरना पड़ता है और तब फिर वहीं सौदा एक दुकनदारसे पटता है । विदेशी दुकनदारोंको लीमिये उनके यहां एक मूल्य नियत रहता है । उसी वस्तुको चाहे एक अनजान बच्चा खरीद खाने चाहे एक समप्रदर मनुष्य, मूल्य एक ही लगेगा । उदा है

Honesty is the best Policy इसको हमें अच्छी तरहसे ध्यानमें रखना योग्य है, क्योंकि निष्कृष्ट कर्मोंके द्वारा जो प्रतिष्ठा होती है वह यथार्थ प्रतिष्ठा नहीं है। मनुष्यकी यथार्थ प्रतिष्ठाले लिये शुद्ध आचरणकी आवश्यकता है। आचरणके सम्मुख धन किसी भी गिनतीमें नहीं। महात्माओंकी प्रतिष्ठा धनसे नहीं हुई है केवल शुद्धाचरणसे हुई है, अतः शुद्धाचरण ही सबसे श्रेष्ठ है। न्यायका पालन करना ही शुद्धाचरण है। और इसीलिये शास्त्र कहते हैं कि नीतिज्ञ लोग, चाहे निन्दा करो व प्रशंसा, धन सम्पत्ति चाहे रहे और चाहे वह नाश हो नावे, चाहे आज ही मृत्यु हो और चाहे एक कल्पभर जीवित रहे, किन्तु न्यायके पालनेसे कभी विमुख नहीं होना चाहिये। अन्यायसे अधिक धनोपार्जन करके महल बनाकर रहनेसे थोड़ा धन कमाकर झोंपड़ा बनाकर रहना अच्छा है। न्यायसे कमाकर सूखी रोटी खाना अच्छा है पर अन्यायसे विविध प्रकारके व्यञ्जनोंका खाना अच्छा नहीं है। अन्यायसे प्राप्त किया हुआ द्रव्य अल्प काममें ही नष्ट हो जाता है। न्यायसे उत्पन्न किये हुये द्रव्यसे मनुष्यकी विशेष उन्नति होती है, अन्यायसे प्राप्त करनेसे समाजको हानि पहुंचती है। अतः अन्यायसे द्रव्योपार्जन करना महा पाप है।

इसलिये प्रियवन्धु गण, न्यायसे द्रव्य कमाना चाहिये और उद्यम सदैव करते रहना चाहिये। निरुद्यमी होनेसे ही भारतवर्षकी यह दशा हो रही है। समय अनमोल है—

उसका मोल नहीं हो सकता, जो समय निकल जाता है वह चाहे जितनी मिहनत करो, व चाहे जितना धन व्यय करो फिर नहीं आ सकता। अतः एक मिनिट भी समय व्यर्थ नहीं खोना चाहिये।

संसारमें जलचर, थलचर, नमचर, सभी कुछ न कुछ काममें लगे हैं, निरुद्यमीका कोई भी आदर नहीं करता। सबको काम ही प्यारा है "Motion means life and stagnation means death" प्रत्यर्थ ही जीवन है और आलस्य या प्रमाद, मृत्यु या ह्रास है। जो प्राणी, जो पुरुष, जो जातियाँ इस प्राकृतिक नियमका पालन करती हैं वे सुखी, समृद्धिशाली और चिरंजीवी रहती हैं और जो इसके विरुद्ध चलती हैं वे दुखी, दरिद्री और अल्पजीवी होती हैं। लोहा जब तक प्रयोगमें रहता है तलवार कहलाता है और शत्रुके हृदयको दहला देता है, परन्तु जब वेकार हुवा तो काटा जाता है और पाती कहलाता है और कोई उसकी कदर नहीं करता। बहता हुआ जल सबके मनको भाता है, पर गड़ेके स्थिर जलको कौन पसन्द करता है? कार्य करनेसे, परिश्रम करनेसे ही कार्यकी सिद्धि होती है "There are no gains without any pains." विना परिश्रमके लाभ नहीं होता। और भी कहा है कि—

उद्यमे न ही विद्विषन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
नहि मुमस्य सिद्ध्यस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥

प्रिय वन्धुओं, जिस देश व समानने पुरुषार्थकी जितनी शर ली है वह उतना ही



विभवशाली, प्रतापी और सुखी हुआ है । पश्चिमीय देशों में प्रत्यर्थपर कमर कसी तो देखिये क्या क्या कर दिखाया है और व्यापार में कैसी उन्नति कर ली है । इसी प्रत्यर्थकी वशीलन यूपका प्रभाव सारे संसार पर छा गया है । अमेरिकामें मजदूर तक भी अपना समय व्यर्थ नहीं खोते । एक नवयुवक रोगमारकी तलाश करता हुआ एक दुकानदारके यहां गया, उसने कहा " अभी कोई जगह खाली नहीं है, अगर तुम चाहो तो यों ही (१५) ६० मासिक दे दूंगा । " युवकने यह सुनकर दुकानदारके गोली मारनी चाही और कहा " क्या तुम मुझे मुफ्तखोर समझते हो ? "

पुरातन कालमें जबकि भारतवर्ष पूर्ण समृद्धिशाली था और इसकी सम्पत्ताकी ख्याति सारे संसारमें छाई हुई थी, तब यह सब प्रत्यर्थके कारण ही था । पूर्वकालमें क्यों, वर्तमानमें भी एक व्यक्ति कुछ वर्ष पहिले भारवाड़से मात्र डोर लोटा और कुछ पैसे लेकर बचई गया था वह आन इसी प्रत्यर्थके कारण बहुत बड़ा आदमी बन गया है और लाखों रुपये पैदा कर लिये हैं । हा ! एक वही समय था कि हमारे पूर्वज सुनहसे शाम तक पैदल चरते थे, मोटे देशी रेमीके कपड़े पहिने थे, श्रीराम और उनके साथ साथ सीतानी भी १४ वर्ष तक वनमें रहीं तो वे पैदल ही फिरते थे । आन हम ऐसे आलसी हुये हैं कि कुछ कदम भी पैदल चलना कठिन हो रहा है, नोम लाना तो दूर रहा । बिना मोटर,

ट्राम, सवारी आदिके तो हमारी गति ही नहीं है । स्टेशन आया कि बाबूजी अपने हैंड-बैगके लिये (जिसमें कि कठिनतासे ५ सेर बोझ भी न होगा) कुली कुली प्रचारने लगे । मुसाफिर खानेके बाहिर पहुंचे कि इक्के बागीपर सवार हुये । अहा ! क्या ही अच्छा हो यदि रेलगाड़ीसे उतरते ही स्टेशनके बाहिर ले जानेको भी कोई साधन हो जाय ।

मित्र बन्धुओ ! आलस्य, विषयवासना और विलासप्रियताको त्यागो । समय काम करनेका है, और जाति देश समृद्धिशाली बने इसका प्रयत्न करो । उद्योगी बनो, व्यापारी बनो, कारण " व्यापारे वसते लक्ष्मीः " इसको याद रखो और शिल्पविद्याका प्रचार करो ।

हाय ! यह भारत कैसा समृद्धिशाली था और आन इसकी क्या दशा हो गई है, यह विचार करते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं । यह भारत तुकों, मुगलों द्वारा कई बार लूटा गया, यहांसे लुट लुट कर द्रव्यकी गाड़ियां की गाड़ियां बाहिर चली गईं, इसके लुटके द्रव्यसे कई बादशाहतें बन गईं । लेकिन देखो अब क्या अमनचैनका समय है । न्यायप्रिय ब्रिटिश शासनकी छत्रछायामें कैसी स्वतन्त्रता और निर्भयता हमें प्राप्त हुई है । पर हाय ! उस निर्भयताका—उम स्वतन्त्रताका हमने क्या उपयोग किया ? हम हमारी कला—कुशलता, व्यापार, शिल्पचातुरी, आदि सबको मुझकर निरुद्यमी, आलसी और विजासप्रिय बन बैठे । मित्र आत्माग, उठो

और व्यापार कर, उद्यम कर, कलाकौशल सीखकर भारतको समृद्धिशाली बनावो । और एक दिन वह फिर आवे कि हम बड़े भारतकी पुरातन कालकी भांति फिरसे व्यापारकी, कलाकौशलकी तूती चारों ओर बनने लगे ।

व्यापारका अर्थ यही नहीं है कि विलायतसे माल मंगवा लिया और यहांपर बैठे बैठे बेचकर अपने देशके धनको बाहिर भेजते रहे, और न यह है कि सौदा सट्टा कर अपने भाइयोंका द्रव्य समेट लिया । बाहिरसे माल मंगाकर बेचना तो उन देशोंकी, उन शिल्पव्यसनी मुल्कोंकी दलाली मात्र है । देखो हमें हमारी खर्चकी सामग्रीके वास्ते भी पराये देशोंपर रहना पड़ता है—अन्य शिल्पव्यसनी देशोंकी तर्फ मुंह ताकना पड़ता है । वहांसे सामग्री न आवे तो हाथ पर हाथ दिये बैठे रहो ।

इस महा युद्धके कारण कई वस्तुओंका मूल्य किनना बढ़ गया है और बढ़ रहा है यह बतलानेकी आवश्यकता नहीं—सब जानते हैं, और कई वस्तुओंका तो मिलना भी कठिन हो गया है । ऐसे अवसरको जापानने जाने न दिया—उमका उपयोग कर लिया और देखो कई चीजें बना डालीं और पैसा पैदा कर रहा है ।

हाय ! हम कुछ भी नहीं कर सकते ? करें कैसे ? हमें हमारे देशकी समृद्धि का विचार हो तब न ? हम तो हमारे पासकी व्यापारिक चीजोंपर बैठे हुये झूठसे ही खुशी है ।

नहीं, नहीं, मित्रो, यह झूठी खुशी है और हमें योग्य है कि हम भी जापानकी भांति कलाकौशल्य, उद्योग-धंधों और कारखानोंमें लग जायें ।

हमें इस महा युद्धसे शिक्षा लेनी योग्य है । बाहिरसे आनेवाली प्रत्येक वस्तुकी ऐसी मंहगीको देखकर मनमें कुछ भय लाना चाहिये और हमें हमारी नित्यकी आवश्यकीय वस्तुओंके लिये भी अन्य देशोंका मुंह न ताकना पड़े इसके लिये प्रत्येक वस्तु जो यहां न बनती हो बनानेके कारखाने खोलने योग्य हैं, तब ही हम धन—सच्चा धन कमा सकते हैं और देश समृद्धिशाली बन सकता है, बनाने इच्छित वस्तुओंका दुगुना, तिगुना, चौगुना एवं कई गुना मूल्य दिये जावो और कंगाल बने जावो ।

अब मैं डाक्टर स्माइल्स कथित ५ अति उपयोगी नियमोंको लिखकर लेखनीको विश्राम देता हूं ।

(१) आयसे व्यय कम करो (२) प्रत्येक वस्तु नकद मूल्य देकर खरीदो (३) मावी लाभकी आशापर कभी व्यय न करो (४) आय और व्ययका पूरा हिसाब रखवो (५) कोई वस्तु व्यर्थ न जाने पावे ।

प्रिय बन्धुओ, ये नियम बड़े उपयोगी हैं । इन्हें सदैव ध्यानमें रखना योग्य है । इनपर चलने वाला मनुष्य कभी दरिद्री नहीं हो सकता । संसारमें सुखी होनेके ये मुख्य साधन हैं ।

(१) आयसे व्यय कम करो—यह बढ़ा



उपयोगी नियम है। हमें जो कुछ भी हमारी आमदनी हो उसमेंसे अवश्य कुछ न कुछ बचाना योग्य है। कदाचित् ऐसा समय आ जाय कि हमारी आय कुछ भी न रहे तो फिर क्या होगा—यही बचाया हुआ द्रव्य हमारी रक्षा करेगा और हमें दूसरों का मुह न तारना पड़ेगा। हम कह सकते हैं कि हम क्या बचायें, हमारी आय तो बहुत कम है, उसमें तो खर्च भी नहीं चल सकता है। यह कहना भूल मरा है। आय कम है तो व्यय भी कम करो और उसीमेंसे जो कुछ बचे बचाओ। हम भोजनादि व्ययमें २५) रुपया मासिक व्यय करते हैं तो १५) मासिकसे भी काम चला सकते हैं। बख्ताबि हमें बढिया कपडे बनाकर ५०) खर्च करते हैं तो शरीर रक्षा हेतु ५) के कपडेसे भी काम चला सकते हैं। जिस प्रकार एक अमीर अपने घर खर्चमें १०००) रुपया मासिक व्यय करता है तो एक १०) रु० मासिक पानेवाला मजूर भी ८) रुपयेमें काम चलाकर २) रुपये बचा सकता है। जो काम कम राशियोंमें हो सके उसमें अधिक खर्च न करना चाहिये और आमन्नीसे सर्व कम होना चाहिये।

(२) दूसरा नियम पालन करेंगे तो हम अति सुख पावेंगे। देखिये नरुद दाम देनेपर वस्तु भी अच्छी एवं सस्ती मिलती है, और उधार देनेपर चीज अच्छी नहीं मिलती और दुःखनदार भी मनमान दाम लगाता है। नरुद दामसे तो हम ३-४ दुकानोंपर वस्तुकी अच्छी प्रकार परीक्षा तथा मुख्य-

की अच्छी तरह जाच कर सक्ते हैं। उधार का तो स्वभाव ही नढालना चाहिये। पासमें पैसे न हों तो न सही वस्तु मत खरीदिये और आवश्यकताको दबानेका प्रयत्न करिये, वरना यदि आवश्यकता आपको दबा लेगी तो वह आपको बार बार दबाये ही जायगी, और तब आपको ऋणके बडे बोझ तले दब जाना पड़ेगा और फिर उसके चुकानेको चिन्तित रहना पड़ेगा। चिन्ता चिन्तासे भी बढका है।

(३) भावी आशापर व्यय मत करो। इसपर अधिक कहनेकी आवश्यकता नहीं। क्योंकि शायद आशा फलीभूत न हो तो कैसा मय-कर समय उपस्थित होगा और हमको नीचा देतना पड़ेगा। मेरा जो उमडा हुआ देवकर घडा फोडना बुद्धिमाना नहीं है, वैसे ही भावी आशापर व्यय करना मूर्खता है।

(४) आय और व्ययका लेखा रखो—आय व्ययका लेखा रखना आवश्यक है। हि साब रखे बिना हमें यह भी कैसे मालूम हो सकता है कि हम क्या बचा सके हैं। देखिये हम किसी दुःखनदारसे नरुद दामपर वस्तु खरीद लाये। दुकानदार फिर मूल्य मागने आया तो हमारे पास हिसाब होगा तो तब दिखता देंगे कि देखो फला मिनीमें इतने रुपये हमने तुमको दिये।

(५) कोई वस्तु व्यर्थ न जाने पावे—इसके साथमें हमें यह भी ध्यान रखना योग्य है कि कोई व्यर्थकी—बिना कामकी वस्तु मोल भी न लें। कभी हम विचारते हैं यह वस्तु अच्छी है चलो खरीद लें। पर अच्छी है, सुन्दर है तो



ઇસે હમેં કયા ?-યહ હમારે કયા લાભકી ?
 યહ વિચારના જાહિયે, કયોંકિ સમારમેં વસ્તુએ
 તો અધિક હેં હમ કયા કયા खरीद करेंगे ।
 કમી કમી કોઈ વસ્તુ કુઝ સસ્તી માલૂમ હોતી
 હે તો હમારા મન ઝટ खरीदनेको હો જાતા
 હૈ । પર વિના કામકી चीज़ यद्यपि सस्ती हो
 તોમી खरीद कर पैसेकी तंगी करना योग्य
 નહીં હૈ । કયા માલૂમ વહ અમીસે મી અધિક
 સસ્તી હો જાય, પર હમેં સસ્તીસે મી કયા મનલગ
 હમારે તો વહ કામકી હી નહીં હૈ । હમે કોઈ મી
 વસ્તુ પહિલે ઉસકી આવશ્યકતા અનાવશ્યકતાપર
 વિચાર કર खरीदनी योग्य હૈ । ઔર यह तो
 યાદ રાખની હી જાહિયે કિ કોઈ વસ્તુ હમારે
 પાસ રાખી હૈ, વહ અમી હમારે કુછ કામ
 નહીં આતી, પર એસા વિચાર કર ઉસે વ્યર્થ
 ન જાને દેના જાહિયે, ન માલૂમ ઉસસે કમી
 કયા કામ પડ જાય ઔર फिर हमें उसके
 लिये दाम खर्चने पड़ें ।

જૈનોમાં નવજીવન પ્રગટાવતું કેવું થય
 છે કે? હાહ.

આદર્શ જીવન (માસિક)

જૈનોમાં નવજીવન અને ઐશ્ય પ્રગટાવવા
 અને સમતુલ્યપણે જૈનના ત્રણે શીરકામાં ઉદાર
 વિચાર વાતાવરણ યેરવાના ઉચ્ચ આશયે જૈન
 યુવાનો દ્વારા પ્રગટ થાય છે. તેના નજીનો
 ભાગ ગરીબ જૈન વિદ્યાર્થીઓ માટે ખરચાય
 છે; નવા ચાર આઠક કરનારને ખીરસામાં રાખ-
 વાતું ધડીયાળ ધનામ મળે છે. લલાજમ શપિયો
 સવા અને નમુનાનો અંક અર્ધો આનાની ટીકટ
 ખીડવાથી મળશે. આઠક થવા આજેજ લખો-
 વાડીલાસ મુજલસાહ દેની

શ્રીમડી-શ્રીમીવાવા.

શરીર-રચના વર્ણન

ભાગ ૨ જો ।

(હે. હાથોચદ માણેકચંદ દલાલ)

ઇન્દ્રિયવિજ્ઞાન, યાને તેની ક્રિયા.

શરીરની અંદરની ઇન્દ્રિયો અથવા અવયવોના
 જીવનવ્યાપાર સંબંધી જ્ઞાનને ઇન્દ્રિયવિજ્ઞાન શાસ્ત્ર
 કહે છે. આગળ ભાગમાં શરીરરચના અને
 તેના મુખ્ય ભાગોનું વર્ણન કરવામાં આવ્યું છે.
 હવે આ ભાગમાં શરીરનો જીવન વ્યાપાર ચલ
 વનારાં કયાં કયાં યંત્રો છે અને તે યંત્રો અથવા
 ક્રિયાઓ શરીરમાં શું શું ક્રિયા કરે છે તેનું
 સંક્ષિપ્ત વર્ણન કરવામાં આવે છે. વૈદ્યકશાસ્ત્રના
 જ્ઞાનની જુદી જુદી શાખાઓમાં આ ઇન્દ્રિયવિ-
 જ્ઞાનશાસ્ત્ર સૌથી વધારે મહત્વ ધરાવે છે. આ
 જ્ઞાન વગરનું વૈદ્યકજ્ઞાન નકામું છે. શરીરમાં
 ચૈતન્યવાળી ક્રિયા થતી તેનું નામ જીવ છે,
 અને એ ક્રિયા બંધ પડતી તેનું નામ મૃત્યુ છે,
 એ વાત આપણે જાણીએ છીએ, પણ એ ચૈતન્ય-
 વાળી ક્રિયા શી રીતે ચાલે છે, અને તેને બંધ
 પાડનારાં (મૃત્યુ કરનારાં) કેવાં કેવાં કારણો
 શરીરમાં વનવા પામે છે તેનું જ્ઞાન આ ઇન્દ્રિય
 વિજ્ઞાનશાસ્ત્ર વગર છે.

શરીરમાં ચૈતન્ય વ્યાપાર ચલાવવાવાળા મુખ્ય
 અવયવો અથવા મર્મસ્થાનો ત્રણ છે—મગન, ફેફસાં
 અને રક્તાશય. વિદ્વાનો જીવંતીનો મુકાબલો
 ત્રણ પાયાવાળી ઘોડી સાથે કરે છે, તે મરાત
 છે. શરીરમાં આ ત્રણ મર્મસ્થાનો આ શરીરરૂપી
 તીરપાઈના ત્રણ પા છે. તીરપાઈનો એક પા



માં છે કે છોટકે છે તો, તીરપાઈ નક્કામી થાય છે. એવીજ રીતે આ ગ્રાણ મુદ્દય મર્મસ્થાનોમાંનું એક મર્મસ્થાન છોટકે કે અટકી પડે તો, શરીરનો જીવન વ્યાપાર તરત અટકીને મૃત્યુ નીપજે છે. શરીરને એક ચંપતી ડર્પમા આપી શકાય. કામ કરવાનાં કારસ્થાનાઓમા જેમ ચંત્રો અને સાંઘા કામો ગોઠવેલાં હોય છે, એવી રચના આપણા શરીરની છે. ચંત્રોમાં જેમ ચંત્રો ગોઠવેલાં હોય છે, તેમ શરીરમા પણ ક્રિયા કરવાવાળા ચંત્રો હોય છે.

શરીરમા જીવન વ્યાપાર ધગા પ્રકારના ચાલે છે.

આમાંના મુદ્દય મુદ્દય વ્યાપારો અથવા ક્રિયાઓનાં નીચે પ્રમાણે વર્ગ પાડી વર્ણન કરવામાં આવશે.

રુધિરાભિસરણ યંત્ર-Circulatory System.

શ્વાસોશ્વાસ યંત્ર-Respiratory System.

પચનાશય યંત્ર-Digestive System.

મૂત્રાશય યંત્ર-Urinary System.

જનનેન્દ્રિય યંત્ર-Generative System.

ચેતના યંત્ર-Nervous System.

જાતેન્દ્રિય ચંત્રો-Organs of Senses.

સત્તપ્રાણોત્તરી સ્ત્રિયા-Primary

Secretions.

ગ્રાણ દોષ-વાત પિત્ત કફ-Vat-Pit-Kat

સ્વાભાવિક વેગો-Natural Calls

રુધિરાભિસરણ યંત્ર-(લોહી Blood)

શરીરમા લોહી એન મુદ્દય જીવન છે. આવા

શરીરનું પોષણ લોહી વડે થાય છે. સૌરાકનો

પોષણ કરનારો સારમૂત ભાગ કેટલીક

રસાયણી ક્રિયાથી જુદો પડીને લોહીની

સાથે મળે છે. આ પોષણકારક ભાગ

ને લોહી પોતાની ગતિમા જુદા જુદા માપને,

નોંધ એટલા પ્રમાણમાં વહેંચી આપે છે. લોહી

આ પ્રમાણે શરીરના તમામ માગોનું પોષણ કરવાના કામમાં મદદગાર થાય છે, એટલુંજ નહીં પણ તે માગોની અંદર નક્કામા પદાર્થો અથવા મેલ કચરો હોય તેને પોતાના પ્રવાહમાં સેંચી લઈ, શરીર વહાર કાઢી નાંખવાની જગાઓમાં ફેંકી દે છે; અથવા શુદ્ધ કરવાની જગામાં પોતાની સાથે સેંચી જાય છે. લોહીનું વીંતું એક અગત્યનું કામ શરીરમાં ગરમી આપવાનું છે. લોહી ફરતું ન હોય તો જાતીના માગપર એવી ગરમી લાગે છે, એવી હાથ પ્રગાના હેઠાપર લાગતી નથી. બહુ મંદવાદમાં ડ્યારે લોહીનું ફરતું નરાવર નથી થતું, ત્યારે પ્રથમ હાથ પગ ઠંડા પડે છે, તેનું એન કારણ છે. લોહી મદપથી ફરે છે, અને તેની ગરમી એક સરસી હોવાથી તે શરીરના સગળા અવયવોને સમાન ઉષ્ણતામાં રાલે છે. લોહીની રચના-શરીરમાં જે લોહી ફરે છે તે બે જાતનું છે. હૃદયના ઢાના સંઢમાં, તથા ધમની એટલે ધોરી નવોમાં લાલ કીરમજી રંગનું લોહી હોય છે, અને હૃદયના નમણા સંઢમાં તથા કાઢી નસોમા તે મેઝા માંજુડા અથવા કાઢા રંગનું હોય છે. આ કાઢા રંગનું લોહી કેટલાક લોકો ધારે છે તેમ નિરુપયોગી નથી. ફેફસામા જઈ શુદ્ધ થયા પછી એન લોહી શરીરનું પોષણ કરે છે. લોહી જરા થાકું, ઘીકાસમાઝું, અને પાણી કરતાં સહેજ ખારે છે, તેમન સ્વાદમાં જરા તારું છે. લોહીમાં ઉષ્ણતા ૧૦૦ ડિગ્રીની છે. લોહીના બે ભાગ વરી શકાય છે. એક ભાગ રક્ત રંગળો, અને બીજો ભાગ રક્ત નજ. રક્ત રંગળો એટલે લોહીમાં



અસંખ્ય બારીક રાતાં રત્નકળો હોવાને લીધે તે રાતું દેખાય છે. લોહીનો પ્રવાહી ભાગ જે રક્ત જલ તેમાં રંગ હોતો નથી. આ રક્તજલ બે પદાર્થોનું બનેલું છે, જેમને અંગ્રેજીમાં ફિવ્રિન અને સીરમ કહેવામાં આવે છે. લોહીના એક હજાર ભાગમાં ૭૯૦ ભાગ પાણીના અને ત્રાકીના ૨૧૦ ભાગમાં ૧૨૦ ભાગ લોહીના ઢાળાના, ૬૭ ભાગ આલ્બ્યુમેનના, ૨ ભાગ ફિવ્રિનના, અને ૧૧ ભાગમાં ચુનો, મેગનીશિયા, સોડા, લોહ વગેરે પદાર્થો આવે છે, એવું રસાયણી પ્રયોગથી પ્રથક્કરણ કરી જોનારા વિદ્વાનોને માલુમ પડેલું છે.

લોહીનું ફરવું—મોટી ધમની, નસો, ફસો, કેશવાહિનીઓ એ લોહીને ફરવાની મ્હોટી ન્હાની નદીઓ છે. આપણા શરીરમાં લોહી ચક્રની પેઠે ફર્યા કરે છે. તેને ફેરવાનારું મુખ્ય હૃદયિયાર અથવા સાધન રક્તાશય છે. રક્તાશય એ લોહીનો એક હોજ છે, જેના બે ભાગ છે. ઢાલી વાજુના ભાગમાં રાતું અથવા શુદ્ધ લોહી મોરેલું છે અને જમણી વાજુના ભાગમાં કાઠું અથવા અશુદ્ધ લોહી મોરેલું છે. ચિત્ર આપીને બતાવવાથી લોહીના ફરવાની વધારે સારી સમજણ પડી શકે છે. ઢાલી વાજુના રક્તાશયમાંથી શુદ્ધ લોહીનો એક નલ જેને ધોરી નસ કહેવામાં આવે છે, તે નીકળે છે, જેની એક મોટી શાખા પેટ તથા બન્ને યૃગમાં જાય છે, અને બીજી શાખાઓ બન્ને હાથ તથા માથામાં જાય છે. આગળ જતાં વૃક્ષની માફક આ મોટી શાખાઓમાંથી બારીક નસો અને તેમાંથી છેવટ કેશવાહિની ઇટ્ટે વાલ જેવી સુક્ષ્મ નસીઓ

જાળની માફક, છેક ત્વચા સુધી પથરાઈ જાય છે. આ જાળમાં રાતું લોહી ફરી રહ્યું ઇટ્ટે તેમાંથી પાછી એવીજ બારીક ફસો નીકળે છે, અને જેમ ન્હાના ન્હાનાં વહેલાઓ મઝીને આગળ જતાં એક મોટી નદી થાય; અથવા વૃક્ષનો ઢાલો લઈએ તો જેમ ન્હાની ન્હાની ઢાલોઓ અને પછી ઢાલીઓ મઝીને એક થઈ થાય છે, તેવી રીતે આવી ન્હાની ન્હાની અનેક ફસો એકત્ર મઝીને, એક મોટી ફસ શરીરના નીચલા ભાગમાંથી, અને એક બીજી મોટી ફસ બન્ને હાથ તથા માથા તરફની શાખાઓમાંથી ઉપરના ભાગમાંથી, એમ બે મ્હોટી ફસો કાઠું લોહી લઈને રક્તાશયના જમણા સંદર્ભમાં ઉતરે છે; અને ત્યાં તે લોહીને રેટે છે. ત્યાંથી એ કાઠા લોહીના બે ફાંદા થઈ એક એક રંગ બન્ને ફેફસાંમાં જાય છે. ફેફસાંમાં ગયેલી આ રંગો પળ, શરીરની કેશવાહિનીઓની પેટે, જાળની માફક પથરાઈ જાય છે; અને ફેફસાંમાંના હવાનાં શાંકાઓની ડીળી નસની જાળ સાથે સંબંધમાં આવતાં એ કાઠું લોહી ત્યાં શુદ્ધ થઈ કેશવાહિનીઓ મારફતે સ્વચ્છ રાતું લોહી ત્યાંથી પાછું ફરે છે, અને એ જાળો આગળ જતાં એકત્ર મઝીને તેની એક એક ધમની થાય છે. તે શુદ્ધ લોહીને પાછું રક્તાશયની ઢાલી વાજુના સંદર્ભમાં ઢાલો કરે છે કે જ્યાં આગળથી પ્રથમ જળાબ્યા પ્રમાણે શુદ્ધ લોહી સૌથી મોટી ધમની વાટે નીકળ્યું હતું. આ પ્રમાણે શુદ્ધ લોહી રક્તાશયના ઢાલા સંદર્ભમાં મોટી ધમની વાટે નીકળીને શરીરના ભાગોમાં ફેલાય છે; અને ત્યાંથી કાઠું લોહી

શુદ્ધ થઈને પાછું રક્તાશયના નમણા સ્વંદમાં દાખલ થાય છે, અને ત્યાંથી ફરી શરીરના પોષણ માટે મોટી ધમની વાટે શરીરમાં ફેલાય છે. લોહીનો આવો એક ફેરો થતાં ૧૥ મિનિટ લાગે છે. હોનરી, આંતરડાં અને ચરોલની શિરાઓનું લોહી પરમારું રક્તાશયમાં નહિ જતાં, કઢેનામાં જાય છે, ત્યાં ફેફસાંની પેટન તેની ચારીક શાખાઓ પવરાઈને તે લોહીની શુદ્ધિ થાય છે; અને પછી રક્તાશય તરફ વહે છે. સ્ત્રીઓના ગર્ભાશયમાં આ લોહીની ગતિ વઢી જુદા પ્રકારની થાય છે. કહેવાય છે કે ગર્ભનાં ફેફસાં કામ કરતાં નથી અને ગર્ભને તાજું લોહી ઓરમાંથી મળે છે. ગર્ભની નામિમાં નાઠ્ઠ હોય છે, તે વાટે કેટલુંક લાલ લોહી ગર્ભના પેટમાં જાય છે, અને બાકીનું લોહી પરમારું, અને થોડો માગ કઢેનામાં થઈને રક્તાશય તથા ફેફસાંમાં ફરી વઢી ગર્ભ નાઠ્ઠની ધમની વાટે, ઓરમાં શુદ્ધ થવા જાય છે; એવું કેટલાક વિદ્વાનોનું માનવું છે.

લોહીને ગતિમાં કોણ મુકે છે—

લોહી શરીરમાં નિરંતર ફર્યા કરે છે, એ વાત તો સરી છે, પણ એવી રીતે ગતિમાં મૂકનાર શ્વેત શું છે, તે એક અગત્યનો સવાલ છે. પ્રથમ તો લોહી બહુ ઘટ્ટપથી અને ગુસ્સાથી ફરે છે તેનું કારણ એવું છે કે રક્તાશય માંસમય કોષ-ઢીનું બનેલું છે. તેની અંદરના માંસના સ્નાયુઓ તંગ પડેને, ઘટ્ટે સંકોચાઈ તેને નહાર વઢાડવાનો પ્રયત્ન કરે છે, અને છાલો થાય છે ત્યારે તેમ સ્નાયુઓ પાછા ઢીલા થઈ, કોષ-ઢીને પહોઢી કરી, બીજા લોહીને આવવાનો

સ્ત્રોત કરે છે. સ્નાયુઓનો આવો ધર્મ છે. હવે રક્તાશયમાં રક્તના જુદા જુદા સંદો છે, અને તેની વચમાં પઢ્ઢાવાઢા દરવાજા છે, તે એવા છે કે વારંવાર ઓઢે છે અને મીઢાય છે. રક્તાશયના એક સ્વંદમાં લોહી મરાય છે, ત્યારે સંકોચ પામે છે; અને તેમ વલતે સામેનો સ્વંદ પહોઢો થાય છે, જેથી લોહી બીજા સ્વંદમાં ઘકેલાય છે અને ત્યાંથી ધમનીઓમાં ઘકેલાય છે. રક્તાશયના આ સ્વંદો વારાફરતી તંગ ઢીલા થાય છે, અને તેથી રક્તને ઘકો મઢ્યા કરે છે. વઢી ધમનીઓમાં રક્તની નોઢા નોઢ પવન હોય છે તે પવન રક્તને ગતિ આપ્યા કરે છે. આ શિવાય રક્તને ઘકેલનારાં બીજાં ન્હાનાં કારણો પણ ઘણાં છે. ધમનીઓ સ્થિતિ-સ્થાપક હોવાથી લોહીને ગતિ મળે છે. શરીરના સ્નાયુની નિરંતર ગતિથી પાસેની રક્ત શિરાઓ ઉપર દબાવ થવા કરે છે; અને તેથી પણ રક્ત આગઢ ઘકેલાય છે. શ્વાસોશ્વાસની ક્રિયાથી પણ રક્તની ગતિને કાંઈક ઉત્તેજન મળે છે. આમ ઘણા પ્રકારની શરીરની ક્રિયાઓ લોહીને ઘટ્ટપથી ફરતું રાખે છે. આ ક્રિયાઓ એજ શરીરનું ચૈતન્ય છે.

નાઢી—લોહીના ફરવાને અને નાઢીને શું સંબંધ છે તે પણ જાણવા જેવી વાત છે. ઢાબા રક્તાશયમાંથી રક્ત મોટી ધમનીમાં જાય છે, તેથી ધમની પહોઢી થાય છે, અને તેનો ઘકો ધમનીના છેઢાઓ સુધી પહોંચે છે. એવા દેરેક ઘકાને ‘નાઢી’ અથવા નાઢીનો ઘચકારો કહેવામાં આવે છે. રક્તાશયના દેરેક વલતના સંકોચવાથી દેરેક નાઢી ઉત્પન્ન થાય છે. આવી



સંકોચનની, ઘક્કાની અને ઘવકારાની ક્રિયા અથવા નાહી; જીવાન આદમીના શરીરમાં દર એક મીનિટમાં આશરે ૭૫ વસ્ત્ર થાય છે.

શ્વાસોશ્વાસ યંત્ર—એ શરીર માંહેની એક ઘણીજ અગત્યની ક્રિયા છે. લોહી એ શરીરનું જીવન છે, પણ એ લોહીને જીવનવાહું બનાવનાર શ્વાસોશ્વાસની ક્રિયા છે. લોહી શરીરમાં ફરે છે અને ફેફસાંમાં શુદ્ધ થાય છે. ત્યાં તેને શુદ્ધ કોળ કરે છે ? એક પ્રાણ આપનાર વાયુને દાલલ કરનાર, અને (બાહરથી આવીને પ્રાણને હેર) એવા એકે બીજા ફેરી વાયુને ફેફસાંમાંથી બહાર કાઢી નાંખનાર શ્વાસોશ્વાસની ક્રિયા. આપણે શ્વાસ હાંપે છીએ ત્યારે બહારની હવા અંદર જાય છે; અને શ્વાસ મૂકીએ છીએ ત્યારે, શરીરની અંદરની હવા બહાર જાય છે. આ વાત આપણે જાણીએ છીએ, અને દર પહે પ્રત્યક્ષ અનુભવીએ છીએ, પણ તે હવા અંદર વ્યાપી જાય છે અને શું કરે છે, તે વાત થોડા જાણે છે; અને જ્યાં મુખી એ વાતનું જ્ઞાન હોતું નથી ત્યાં મુખી એ વાતને સાક્ષી અગત્યતા પણ આપવામાં આવતી નથી.

શ્વાસ નઠી—શરીરની અંદરની સૂક્ષ્મ રચનાનો એ ઘડી વિચાર કરતાં આપણે જોઈએ આંતરિન થઈએ છીએ ।

શરીરની અંદર જ્ઞાન અને મતિ તંતુઓની, અપાર મુઠીઓ, ધમનીઓ, તથા રગોની વાલ્લ કરતાં પણ વધારે મારીક જાણે સર્વત્ર પથરાયેલી છે. આવીજ એ મ્હોટી જાણે એ ફેફસાંમાં, વાયુ નઠીની ફેટાયેલી જોડામાં આવે છે. નાકના નસકોરાંથી ફેફસાં મુખીના માર્ગને

વાયુ માર્ગ; અથવા શ્વાસ નઠી કહેવામાં આવે છે. હવા નાક થાટે ગળાના પાછલા ભાગમાંથી સ્વર નઠીમાં થઈ શ્વાસ નઠીમાંથી ફેફસાંમાં જાય છે. સ્વર નઠી અને શ્વાસ નઠી એ બન્ને એકજ માર્ગ છે, પણ તેની જુદી જુદી ક્રિયા સમજવાને માટે તેના એ ભાગ કલ્પવામાં આવે છે. ઉપરનો ભાગ જે જીમનો થઈ આગળથી ગળાના નઠ ગોટા મુખી આવેલો છે, તેને શ્વાસ નઠી નામ આપવામાં આવેલું છે. અને નીચેના ભાગને, શ્વાસ નઠી નામ આપવામાં આવેલું છે. શ્વાસ નઠીનો ઉપરનો ભાગ પહોળો અને મ્હોટો છે ગળાના ઉપરના ભાગમાં બહારથી જે ટેકરો માર્ગ પડે છે, તે એ સ્વર નઠીવાળો ભાગ છે; અને તે આપણે નઠ ગોટો એવા નામથી ઓળખીએ છીએ. એ નઠ ગોટો અથવા સ્વર નઠીનું કાંઈ અવાજ પેદા કરવાનું છે. એના મધ્ય માર્ગને વધે વાજુએ, બન્ને તાર છે. તે તાર તંતુરતન તારનું કામ કરે છે, એટલે જુદા જુદા સ્વા ઉત્પન્ન કરે છે.

એ તારની વચ્ચેનો રસ્તો ઢાંબો, સાંકડો અને ત્રિકોણાકાર છે, તેમાંથી હવા જાય આવે છે. તે કંઠદ્વાર કહેવાય છે. આ તાર સ્નાયુના સંવેષથી હાલે છે, અને તેથી તે રસ્તો સાંકડો પહોળો કે બંધ કરી શકાય છે. આ સ્ત્રો હવા સિવાય બીજો કોઈ પદાર્થ જઈ શકતો નથી, અને કદાચ કોઈ પદાર્થ અકસ્માત મવાનું કરે છે કે તુરતન આ રસ્તો બંધ પડી જાય છે. પાણી પીતાં કે છાતાં હાસનું આવવાથી, ગળામાં મયેલો પદાર્થ પોતાનો માર્ગ મૂકીને, સ્વર નઠી તરફ જાય છે; તેને કંઠદ્વાર બંધ પાડી અટકાવે છે.



काची दे'छे. 'आची गरवड थाय'छे तेने, 'ओ-
नाळ गयुं' कहिए छीए, तेन कारणथी जैन
शास्त्रोमां नमतां बोलवानी मुनाई करी हजे,
आ नळगेठाथी नीचेना मार्गने श्वासनळी क-
हेवामां आवे छे.

(अपूर्ण)

श्राविकाश्रम, कन्याश्रम ।

जिन मगिनियोंको अपनी जातिकी अवनत
दशापर दुःख होता है और जातिकी दशाको
सुधारनेके लिये अध्यापिका, उपदेशिका तथा
सुयोग्य गृहिणी बनना चाहती हैं वे श्राविकाश्रम
बन्धनमें आकर शिक्षा प्राप्त करें। यह आश्रम
आठ वर्षसे यहां स्थापित है। इतने ही समयमें
इस आश्रमके द्वारा अनेक स्त्रियां तैयार होकर
अध्यापिका, तथा उपदेशिकाका कार्य करके जा-
नितेवा कर रही हैं। आश्रममें जैनधर्मानुयायिनी
जैन कन्याएं, सधवा तथा विधवा स्त्रियां भरती
को जाती हैं। असमर्थ स्त्रियोंको छात्रवृत्ति भी
दी जाती है। यदि कोई अजैन स्त्री आश्रममें
प्रवेश होना चाहे तो वह भी आश्रमके नियमा-
नुसार चलनेपर प्रविष्ट हो सकती है।

यह आश्रम एक बहुत रमणीक, एकान्त
और सुरक्षित स्थानमें है। इसमें कई बाइयां आ-
नरेरी रीतिसे कार्य सम्पादन करती हैं। भरती
होने वाली बाइयोंको निम्न लिखित धनपर फार्म
और नियमावली गंगाधर भेजना चाहिये।

निवेदिका-मगनवाई माणिकचन्द्र—

सचायिका 'श्राविकाश्रम'

सुबिलीबाग, तारिदव-बम्बई ।

दिगंबर कोमे शुं करवुं जोईए ?

धम्मज्जेना आ देशमां आगमन पञ्जी
मद्रासीओ, अंगालीओ, मडाराध्मीय आल्लुओ,
अने पारसीओओ छिन्धीय डेजवण्णी देवा मांडी.
तेमांथी उत्पन्न थयेकां उत्तम क्खो आसेथी
अजरातीओओ पणु तेनी शस्त्रांत करी. अ-
जरातना दिगंबर जैनो सिन्नाय अन्य समस्त
डोमोओ तेमां धण्णोअ वधारे क्यो. पोतानी
नगरं साभा अन्य डोमोना अतीराय आगण
वधवानां दृष्टो. मोण्डुद छतां अजरातना दिगं-
पर जैनो दता त्थाने त्थान् अंधाराभां रहेवा
बाग्वा. तेमनी आची अधम रिमतीने समये
स्वर्गस्थ श्रेष्ठ भाण्डुअद ह्रीराअद जे.
थी. अ अजरातना पाटनगरं अमहावाढमां
अक भोडिग रथापी छय डेजवण्णीने प्रमश
प्रमशववातुं भडान भान प्रथम सपादन क्युं
अने तेमण्णु डेजवण्णीनां पीअ भोडिग उपी
होअभा पाव्वां, जानेना दीप सगगाव्वा भो-
डिगने रथापन थयाने आने धण्णु वण्णी वीती
गया. न्यारे भोडिग रथापन थयत्यारे आपण्णी
डोमभा डेजवण्णीनी शस्त्रांत हती. ते ममये
अक भोडिग अजरातना दिगंबराने भाटे पुरती
हती. ते भोडिगभां सवणाने सभावेश थतो
हतो. डोमने नीराश थध न्युं पडणुं न होणुं.
डोम पणु दिगंबर जैनने मद्ध भाटे पीअ
न्युं शरम भरेणुं बागणुं हणुं. श्रेष्ठो विद्या-
धर्मो प्रत्ये अष्टोओ अधो प्रेम हतो के नि-
द्याधर्मो तेमने पिता पृथ्व गण्णी डोम पणु
जलती मद्ध अने श्रेष्ठ साहेमनी भीकत पणु
पोतानीअ होय तेम पोतानो छक समजता
हता. न्यारे आपण्णी डोमना पीअ ताअरे
पोतानी भीकत वधारेवाना निचार वमणभा
तथावी हता. न्यारे आपण्णी पडितो अने
भट्टारको धर्मनी नक्रापी तक्रारेभां या तो
पोतानी भोजभण्णमा पोतानो वण्णनं व्यतीत
हता हता; त्तारे श्रेष्ठ भूडोओ डोमने आगण
वधारेवाने अतर, डोमना हीनने आतन, इन



પરમાર્થને માટે પોતાની મીલકતનો એક મહાન ભાગ કાઢને માટે ખર્ચા નાંખ્યો. આપણી કામે કેળવણીના ફળનું આસ્વાદન ક્યાંને ધણો સમય થયો. કેળવણીનાં મીઠાં ફળ આપ્યા પછી કામના યુવાનોને તે વધારે ખાવાની તીવ્ર ઇચ્છા ઉપેન્ન થયેલી નજરે પડે છે. ઇંગ્લીશ કેળવણીનો પવન પુર જોશમાં સમસ્ત દિગંબર કામપર ફુંકાતો જાય છે. અને દર વર્ષે ધણા વિદ્યાર્થીઓ કેળવણી લેવાને બહાર આવતા જાય છે. વિદ્યાપિપાસુ વિદ્યાર્થીઓની વધતી જતી સંખ્યાને પહોંચી વળવાને અમદાવાદ બોર્ડિંગ તથા મુખ્ય બોર્ડિંગનું કંઈ પુરતું નથી. બોર્ડિંગનાં ખર્ચ આવક કરતા વિશેષ થાય છે. ધણાઓને મદદ સિવાય અભ્યાસ અટકાવવો પડે છે. મદદ નહિ મળવાથી ધણા નિરાશ થઈ અન્યસ્થળે મદદને માટે પ્રયત્ન કરે છે, અથવાતો ટ્યુશને કરી પોતાનો અમૂલ્ય સમય બગાડી અભ્યાસને હાનિ પહોંચાડે છે. જે દિગંબર કામમાં કરોડપતી શેઠીઓ છે, જે દિગંબર કામમાં ચાંદી તથા રૂના બજારને કબજે રાખે એવા શેઠીઓ છે, જે દિગંબર કામ ધર્મપરાયણ હોઈ, સાસ્ત્રને આધારે ચાલી, વિદ્યાદાનને સાથી મહાન દાન ગણે છે, તેજ દિગંબર કામની ઉછરતા આશાવંત યુવાન વિદ્યાર્થીઓને વિદ્યા સંપાદન કરવામાં આટલી બધી વિટંબણાઓ નડે, તેજ દિગંબર કામના વિદ્યાર્થીઓને પોતાની કામમાંથી મદદ નહિ મળવાથી બીજી કામે પાસેથી મદદની યાચના કરવી પડે, છતાં પણ દિગંબર જૈન શેઠીઓ તેને માટે કંઈ ન કરે તે કેટલું શરમાવા જેવું છે ? માણિક્યદ શેઠે આપણી કામની સાંચી રાખેલી આજે તેમના સ્વર્ગમાં સીધાયા પછી આપણા આગેવાને ગુમાવવા બેઠા છે. ઉપર મેં જે લખ્યું છે તે આગેવાનોની નજર બહાર નથી. તેઓ સ્વપ્ન જાણે છે, પણ આગસમાં પોતાનો વખત ગુમાવી ન્યાતને માટે કંઈપણ કરવા તેઓ

પ્રયત્ન કરતા નથી. ન્યાસુધી શેઠસાહેબ જીવતા હતા ત્યાં સુધી એકપણ દિગંબર વિદ્યાર્થીને બીજી કામના માણસ પાસે મદદ માટે જવું પડતું નહોતું. મુખ્યની જૈન બોર્ડિંગ ન્યારે સ્વેતાંબર અને સ્થાનકવાસી વિદ્યાર્થીઓથી બરપુર રહેતી ત્યારે સ્વેતાંબર બોર્ડિંગમાં એક પણ દિગંબર વિદ્યાર્થી નહોતો. ન્યારે અને સ્વેતાંબર વિદ્યાર્થીઓ આપણી બોર્ડિંગમાંથી મદદ મેળવતા હતા ત્યારે એકપણ દિગંબર વિદ્યાર્થી સ્વેતાંબર શેઠ પાસેથી પાઠ પણ મેળવતો નહોતો. આ ઉપરથી આપણી દિગંબર કામને કેટલું મંગાર થવા જેવું હતું. આ ઉપરથી હું એમ નથી કહેતો કે દિગંબરોએ સ્વેતાંબરો પાસેથી મદદ ન મેળવવી, અથવા દિગંબરોએ સ્વેતાંબરોની બોર્ડિંગમાં ના રહેવું. ત્રણે કોરકાના વિદ્યાર્થીઓ જે બેગાં રહે તો ઉત્તમ વાત છે. પણ મારે એટલું જ કહેવાતું છે ન્યાં સુધી અને ત્યાં સુધી એક કામે પોતાના વિદ્યાર્થીઓને જોડતી મદદ આપવી જોઈએ. બીજી કામે નવી નવી બોર્ડિંગો ચા રોકાસરશીપ ફડા કાઢી જેમ જેમ તેમ કેળવણી અને તેટલી વધારવા પ્રયત્ન કરી રહી છે, ત્યારે આપણી કામમાં વિદ્યાર્થીઓની વધતી જતી સંખ્યાને મદદ કરવાનો કાષ્ઠપણ પ્રયાસ જોવામાં આવતો નથી. ખરેખર આ બીના શોચનીય છે અને કામને શરમોંવાતારી છે. જે ઇંગ્લીશ કેળવણીથી આપણા દેશમાં જાગૃતી આવી છે, અને જે કેળવણીથી દિલ્લસ્તાનની બુદ્ધી બુદ્ધી કામે એક થતી જાય છે, ત્યારે આપણી કામવાળાઓ તેને આગળ વધારવામાં, અથવા આગળ વધતાં અટકાવનાર અડચણોને દૂર કરવામાં જરાપણ મદદ નથી કરતા, જે આપણી કામને ઉત્તર દશમાં આવેલી, સારી રિપતીએ પહોંચેલી, અથવા મુશ્કેલી જેવા સહાતા હો, તે આપણા યુવાનોને જરૂર કેળવણી આપો. દુનીઆના ઇતિહાસપર નજર ફેરવશો તો માલમ પડશે કે જે જે રોશ અને જે જે કામે બેપાદ, સખા, અને સંપાદના



શીખરપર પહોંચેલી હતી, તે દેશો તથા કોમો ખીજા દેશો અથવા કોમો કરતાં કેળવણીમાં અગ્રસ્થાન ભોગવતી હતી. અમેરિકા, જર્મની અને ઇંગ્લેંડની પ્રજામાં કોઈ પણ કેળવણી વિનાનો મનુષ્ય નહોતો પડતો નથી. સ્પેન, પોર્ટુગલ, ઇટલી, ગ્રીસ વગેરે રાજ્યો કેળવણીના અભાવે કરીને આગળ વધતા દેશો સાથે રહી શક્યાં નહિ અને પડતીમાં આવી પડ્યાં. ફક્ત એક જર્મનીનો દાખલો લેશો તો માલમ પડશે કે જર્મની કેવી રીતે આગળ વધ્યું અને જર્મનીની સત્તા આટલી કેમ વધી. આજથી પચાસ વર્ષ પહેલાં જર્મનીની મથુના નાનાં રાજ્યોમાં થતી હતી. ત્યાંની સરકારે એકદમ કેળવણી વધારવા માંડી, અને ત્યાંના લોકો દુનીઆના કોઈપણ દેશ કરતાં કેળવણીમાં આગળ વધ્યા, કેળવણી વધ્યા પછી નવી નવી શોધખોળો ત્યાં થવા લાગી. આ શોધખોળોને લઈ ત્યાંનો માવ સોધો થવા લાગ્યો, અને દુનીઆના અન્યેશમાં જર્મનીનો સોધો માલ વધારે ખપવા લાગ્યો. જમ જમ માલ વધારે ખપતો ગયો તેમ તેમ તેમનો બેપાર વધતો ગયો, અને ખીજા દેશોના હાથમાંથી ધણો ખરો બેપાર જર્મનીએ કાઢ્યો. બેપાર વધવાથી ત્યાં પૈસો પણ વધ્યો અને દેશ એકદમ આઝાદ થયો, અને પોતાનો બહોળો બેપાર ચાલુ રહે, તેને માટે દુનીઆના દરેક ભાગમાં પોતાના બેપારી મથકો લુચ્યાઈ થી અથવા લડાઈ જાહેર કરવાની ધમકી આપી મેળવ્યાં. ગ્રીસને ધમકી આપી પામીશીક મહા-માગર પર કીઆઉચીઆઉ લીધું, ફ્રાન્સ અને ઇંગ્લેંડ સાથે ખટપટ કરી પૂર્વ આફ્રિકા અને પશ્ચિમ આફ્રિકામાં કેટલોક સુલક મેળવ્યો. ત્યાં પછી પોતાના દરોઆપારના બેપારને માટે અનેક આગળોટા બાધી અને તે બધાની મવા-મતી માટે, બેપારમાંથી પ્રાપ્ત કરેલા પુષ્કળ પૈસામાંથી કરોડો રૂપીઆ ખર્ચી એક મહાન લડાયક ફાલ્સો તૈયાર કર્યો. દેશમાં પુષ્કળ પૈસા આવત. હોવાથી દર વર્ષે મદમરી ત્રીજેરી

પણ ટેકસના પૈસાથી બરચક રહેવા લાગી. આ પૈસાનો ઉપયોગ જર્મનીએ નવી નવી મહાન તોપો તૈયાર કરવામાં, જંગી અ-બેધ પોલાદી કિલ્લાઓ બનાવવામાં, નવી નવી જાતનાં લડાઈનાં યંત્રો પોતાના લશ્કરમાં દાખલ કરવામાં અને પોતાનું લશ્કર વધારવામાં ખર્ચ્યાં. પોતાનો તૈયાર ફરિયાઈ કાફલો તથા લાખો લવચયાઓ જેમ જર્મનીની મહાત્વા-કાંક્ષા એકદમ આગળ વધી. જર્મનીની આગાહી તથા સત્તાનું મૂળ કારણ કેળવણી છે. દુની-આમાં એક પણ દેશ જર્મનીની સાથે કેળવણી-માં દરીદ્રાઈ કરી શકે તેવો નથી. આપણા એશિયામાં વમતા જપાનનો દાખલો પણ તેવોજ છે. આજથી ચાળીસ વર્ષ ઉપર જા-પાનની નિયતી આપણા કરતાં પણ વધારે ખરાબ હતી, લશ્કરમાં દમ નહોતો, પરદેશોને કે બેપારજ ન હતો, લોકો અંદર અંદર લડતા હતા, અને દેશ ધણો ગરીબ હતો.

પરદેશીઓને જપાનીઓ પોતાના દેશમાં પેમવા દેતા નહોતા, તેથી બેપાર નહોતો અને બેપાર નહોતો એટલે પૈસા નહોતા. આ સ્થિતિ હતી તે સમયે અમેરિકાના કેટલાક લોકો ત્યાં ગયા. તે લોકોને જપાનીઓએ દેગ-મા આપવા દીધા નહિ, નેથી અમેરિકાએ જપાન ઉપર ચાર પાંચ લડાયક વહાણોની ચડાઈ મોકલી. જપાનીઓ આથી બંદી ગયા, અને અચુક સંદેરે પરદેશીઓ માટે ખુલ્લાં મુક્યાં. આ બનાવથી ત્યાંના લોકોને ઘણુંજ શરમ બરેકું લાગ્યું. તે વખતથીજ જપાનની ચડનીનો આરંભ થયો, તે સ્વિસથીજ જપા-નનાં નવા જમાનાનો ઉદય થયો. ત્યાંની સર-કારે એકદમ હજારો વિદ્યાર્થીઓને યુરોપ, અમેરિકા આદી પરદેશોમાં ઉચ્ચ કેળવણી લેવા મોકલી આપ્યા. ત્યાં તેઓ નવા ઉદ્યોગ દુમરો શીખ્યા, અને પોતાના દેશમાં આવી તેવા ઉદ્યોગો ચલાવવા મડ્યા. આવી રીતે દર વર્ષે હજારો જપાની યુવાનો પરદેશોમાં નવા લાગ્યા,



જપાનમાં નવી નવી અનેક જાતની ધણી કાલેજને ઉઘાડવામાં આવી અને કેળવણીનો પ્રચાર એટલો બધો કર્યો કે અત્યારે જપાનમાં એક પણ માણસ કેળવણી વગરનો છે નહિ. જપાનીઓએ જોયું કે દેશની ચઢતી યા પડતીની આધાર દેશના કેળવણીના યુક્તિ ઉપર છે. આપણા અધમ સ્થિતિમાં આવી પડેલા દેશની અને તેની સાથે આપણી સૌથી પછાત પડેલી કામની ચઢતી કરવી હોય તો આપણા યુવાનોને અને તેટલી કેળવણી આપો. કેળવણીને માટે જોઈતા સાધનો પુરા પાડો. ગરીબ વિદ્યાર્થીઓની મદદને માટે નવી નવી યોજના યા સ્કોલરશીપ ફંડ કાઢો. કેળવણી ચઢતીની ખરી ચાવી છે, કેળવણી સુધારા યા આપાદીનું પહેલું પગથીયું છે, કામને આગળ વધારવાનું યંત્ર છે. હુંકામાં સઘળી જાતનાં મુખોને ઉત્પન્ન કરનાર કષ્ટપટક છે. આપણાથી અને તેટલી પૈસાની મદદ આપી કેળવણીને ઉત્તેજન આપો, મદદ વિનાના વિદ્યાર્થીઓને મદદ આપો, કેળવણીનો બહોળો ફેલાવો કરો અને જુઓ કે પૈસા, તદ્દરસ્તી, આગાહી, ચઢતી વીગેરે સર્વ યોગ્યે આપોઆપ આપણી કામને મળી રહેશે, આથી બીજી કામો આપણી કામને માન આપતાં શીખશે. ગામડામાં વસતા આપણા કામના માણસોને બીજી કામોથી દબાવું પડે છે તે બંધ થશે, ગામડાના હલકા પગારદારોથી જે આપણે બીજું પડે છે તે નહિ થાય. પારસી, દક્ષીણી વીગેરે કામોના કેટલા પુરોગા સરકારી નોકરીમાં છે, કેટલા આપણા દેશની કાઉન્સિલોમાં છે, કેટલા ડાક્ટરો છે, કેટલા મહોટા વહેપારીઓ છે. આપણી કામમાં કેટલા છે તેનો વિચાર કરો. રેલ્વેમાં જતાં તમને કેટલી હાડમારીઓ વેઠવી પડે છે, તેનો વિચાર કરો. ત્યાં જોશો ત્યાં પારસી વીગેરે જોવામાં આવે છે, તે લોકોને બીલકુલ વેઠવું પડતું નથી. આ બધું ફક્ત આપણી કામમાં બહેલાઓની સંખ્યા ઓછી છે તેથીજ છે, કલ્પ કેટલાકોને

ખ્યાલ આવે છે કે મહોટા વહેપારીઓ કંઈ બહેલા નથી હોતાં; પણ યાદ રાખજો કે તે વિચાર ભૂલ ખવડાવનાર છે. આપણી કામ પહેલેથી વહેપારી કામ છે, બાપદાદાનો ધંધો ચાલતો આવેલો હોય કેટલાક વહેપારીઓ તમારામાં છે, પણ જગતનો જેમ જેમ બદલાતો જાય છે, તેમ તેમ અન્ય કામો વહેપારમાં પ્રવેશ કરવા લાગી છે. વહેપારી હરીફાઈ વધતી જાય છે. પરદેશ સાથે આપણો સંબંધ ઘણો ઓછો હતો, હવે તે સંબંધ ઘણો વધી ગયો છે, અને હુનીઆના વહેપારનાં સાધનો પણ બહુ બહેળાં થયાં છે.

યુરોપીય વહેપારીઓ આપણા દેશમાં આવી આપણો વહેપાર પોતાના હાથમાં લેવા લાગ્યા છે, આજકાલ જપાનીઓ પણ રતું બજાર હાથ કરતા જાય છે આવી સ્થિતિમાં, જે આપણા વહેપારીઓ અગાં રહેશે તો જરૂર જે કંઈ યાકી રહેશે, તે વહેપાર પણ યુમા માવશે. જ્યારે હિંદુસ્તાનમાં ચારે બાજુએ કેળવણીની આટલી બધી જરૂર લોકોને જણાવા લાગી છે, જ્યારે તે વધારવાને અનેક પ્રયત્નો ચાલુ છે, ત્યારે અમદાવાદ યોડિંગમાંથી વિદ્યાર્થીઓની સંખ્યા કમી કરી અથવા કલ્પ સીસ્ટમ દાખલ કરી વિદ્યાર્થીઓને મળતી મદદ કમી કરી આવક જનક સંપાદન કરવાની વાતો સંભળાય છે. અમદાવાદ યોડિંગની વ્યવસ્થામાં જે ફેરફાર કરવામાં ન આવે, અને હાલમાં ચાલે છે તેમ, જે ચાલના દેવામાં આવે તો આવકના કરતાં જનક વધારે હોવાથી ચોડા વર્ષોમાં યોડિંગનું કાયમ ફંડ ખર્ચાઈ જાય, અને તેને સ્થાપન કરી દાખલો બેસાડનાર નરવીર સ્વર્ગસ્થ થઈ જાય નામ નાશ થઈ જાય, માટે એ યોડિંગ કાયમ ચાલવા માટે એવું ખર્ચ આવકની પ્રમાણમાંજ રાખવું જોઈએ. આવા સંજોગમાં આપણા વિદ્યાર્થીઓને પુરતી મદદ મળે તે માટે ફંડ એકત્રી કરવાને દરેક માનિતા આવેવાનું હિસાબી યંત્ર

સ્થાની એક કમીટી બોર્ડિંગના આવતા મેળાવડા વખતે નીમાલી જોઈએ તે કમીટીએ પોતાના સમયનો અમુક ભોગ આપી કંઈ એક હું કરવાને બનતો પ્રયાસ કરવો જોઈએ. જે આવી કમીટી નીમવામાં આવે તો હું નથી ધારતો કે જે જેનો હજારો રૂપિયા દેહેરા મંધાવવા પાછળ, સંઘ દાદરા પાછળ, સોડાને જમાડનાને આતો પાછળ ખર્ચ છે, તે જેનો વિદ્યાદાનને માટે પોતાનાથી બનતી મદદ નહિ કરે ? યાદ રાખવું જોઈએ કે પ્રત્યેક જમાનામાં પૈસા ખર્ચવાની રીતો બદલાતી જાય છે. એક વખત એવો પશુ હતો કે જ્યારે દેહેરા વીગેરે બધાંબા સિવાય પૈસા અરચવાનો રસ્તો નહોતો. તે સમયે કેળવણી દાસના જેટલી મોઢી નહોતી. અને દાસમા જેવી કેળવણી આપનામા આવે છે તેની કેળવણી પશુ નહોતી. દાસમા કોલેજનું ખર્ચ વર્ષે ૪૦૦) રૂપિયા આવે છે. ગુજરાતના દિગંવરો ધણાખરા સાધારણ મિથિતાના માણસો છે. દરેકની સરેરાશ વાર્ષિક આવક ૨૦૦) થી ૭૦૦) રૂપિયાની હોય છે. આવી થોડી આવકમાંથી જેને કુટુંબનું પોષણ કરવાનું હોય છે, જેને કુટુંબમાં થતા મરણ યા લગ્ન પાછળ ખર્ચ કરવું પડે છે તે ૪૦૦) રૂપિયા રોકડા કેવી રીતે આપી શકે તેનો મુબ્બમા વસતા તનુ ગરો કે જેને ત્યાં ૫૦૦) થી હજાર રૂપિયાનું માસિક ખર્ચ થાય છે તેમને ખ્યાલ પશુ ક્યાથી આવે ? સ્વર્ગસ્થ શેઠ ગુજરાતના દિગંવરોની સ્થિતી સમજતા હતા તેથી તેઓ સંપૂર્ણ હિદાયતિ થા જોઈએ તેટલો મદદ આપવાને હમેશાં તેમને દતા. તેમનાથી બન્યું તેટલું તેઓ કરી ગયા છે. પોતાના કુટુંબના ભણા કરતા ક્રેમનું બનું તેમણે વધારે ગણ્યું છે મરતા મરતા પશુ તેઓ અડીલાખ રૂપિયાની બાદશાહી સંભાલત કરતા ગયા છે તે કુટુંબ પામેથી હવે એક યાદ પશુ મેવી સમસ્ત દિગંવર કામને હીનપન લખાડે તેની છે. સ્વર્ગસ્થ શેઠ સાહેબ જેટલી જ મીત્રતાવાળા બધા શેઠીઆઓ મુબ્બમા વસે છે

તેમને ગરીબ સોડાની વીટબજારનું બાન નથી. ગરીબો પોતાનું ગુજરાન વર્ષે દિવસે ૨૦૦) રૂપિયામાં કેવી રીતે કરતા હશે તેની કલ્પના પશુ તેઓ કરી શકે તેમ નથી તમના કાન હાલવાની આપણા આગેવાનોની ફરજ છે. તેમની પાસે જ્યાં તેમને બધું અસરકારક રીતે સમજાવવાની જરૂર છે અને હું ખાતરી કરું છું કે જે એક લાગવગવાળા, વજનદાર શૂદ્ધ સ્થાની એકકમીટી તેમની પાસે જ્યાં કંઈની માગણી કરે તો જરૂર એક સારી રકમ તેઓ મેળવવાને શક્તિમાન થશે. આપણી કામમાં મદદ મેળવનાર વિદ્યાર્થીઓની સંખ્યા બહુ મોટી નથી. ૫૦ હજાર રૂપિયાનું કંઈ થોડા વર્ષો માટે પુરતું થશે. પ્રેક્ષક.

અદિપુરાણ પ્રત્યક્ષ

પુરાણ છપાવવા

જો ભગવજ્ઞાનમેનાચાર્યકૃત વહા ભારી ગ્રંથ મૂલ સહિત સરલ હિંદી ભાષામાં વહુત દિનસે છપ રહ્યા થા વહ પૂરા હો ગયા । મોટે ઔર મજબૂત કાગજપર વહે ટાઇપ મેં છુલે પત્રોંપર છપા હૈ । ન્યોછાવર અમી ૧૬) સોલહ રૂપયે હી રક્ષી હૈ । ટાકવર્ચ અલગ લગેગા । જિન્હેંં ચાહિયે વે શીઘ્રતાસે મંગા લેવેં ।

લાલારામ જૈન

મલ્હારગંજ-ઈંદોર.

ગુજરાતી કુટુંબોમાં માનીતું થઇ પડેલું

માસિક પત્ર

વિવેચક

જેમા દરેક પ્રકારના અને દરેકને ઉપયોગી થઇ પડે તેવા લેખો, માંગ્યો વાર્તાઓ વગેરે પ્રગટ થાય છે. દર વર્સે આડકોને, બેટલુક મદદ ને છે. વાપક લવાજમ રૂ. ૨-૨-૦ નમુના માટે ૩ આતાની ટીકીટ ખીડવી. લખો- વિવેચક ઓરિસ-લાહરસ (નાદોહ)

देशी, पवित्र, स्वादिष्ट पाचक दवाइयोंका अपूर्व संग्रह

दिलबहार चूर्ण

(खाना शीघ्र हजम करने व भूख बढ़ानेवाला)

किसी भी उत्तम चूर्ण में तीन गुण होना आवश्यक हैं (१) स्वादिष्ट यानी जायकेदार (२) पाचन करनेवाला (३) भूख बढ़ाने वाला । हर्ष है कि इस चूर्ण में तीनों गुण हैं । बहुत से लोगों को रोज़ चूर्ण खाने की आदत होती है उन के लिये भी यह बड़े कामकी चीज है, इसकी खुराक १॥ माशे की है परन्तु जायकेदार होने से अगर थोड़ा ज्यादा भी खा लिया जावे तो गर्मी वगैरह कोई हानि नहीं करता है क्योंकि चूर्ण होने पर भी हमने इसमें किसी तीक्ष्ण चीजका प्रयोग नहीं किया है सब दवाइयां माहिल गुणवाली हैं इसलिये बीमार आदमी भी खुशी से खा सकते हैं । पवित्र औषधियों के सम्मेलनके कारण सभी सम्प्रदायवाले बेखटके खा सकते हैं । हम बहुत बढ़कर बात नहीं कहना चाहते हैं । इस में स्वादिष्ट, खाना जल्द हजम करना, भूख बढ़ाना तीन विशेष गुण हैं उनके लिये हम दावे के साथ कहते हैं कि इन बातों में आप को कभी धोखा नहीं होगा तिस पर भी—

आप के विश्वास के लिये—

हमने इसके एक २ तोले के नमूने के पैकेट बनाकर रखे हैं यदि आप इस चूर्णकी परीक्षा करना और इससे लाभ उठाना चाहते हैं तो एक कार्ड भेजकर बिना डांक खर्च के एक पैकेट मंगाकर परीक्षा कर लीजिये फिर आपका मन भरे तो पूरी शीशी मंगाकर लाभ उठाइये । बस इससे अधिक हम और कुछ भी नहीं कह सकते हैं । फी शीशी चार औंस (करीब आध पाव) वाली की कीमत १) डांक खर्च १) तीन शीशी २॥> डांक खर्च १=) आना । मिलनेका पता—

चन्द्रसेन जैन वैद्य,

चन्द्राश्रम—इटावा ।

विषयानुक्रम ।

नं०	विषय.	पृष्ठ.
१-२	नवीन वर्ष, नूतन वर्षारम्भ अभिवन्दन ...	१
३	महावीरगठन स्तोत्र (सतीशचन्द्र गुप्त, सूरत) ...	४
४-५	सम्पादनीय वक्तव्य, स्वीकार-समालोचना ...	५-६
६-७	लेटो नवलचन्द्र हीराचन्द्र स्मारक पत्र, जैन समाचार... ..	१६
८	एक लुप्तप्राय तीर्थरे उद्धारनी आवश्यकता	२३
९	द्वाद्धानुप्रेक्षा रचिता (प० उमरावसिंह न्यायतीर्थ, काशी) ...	२३
१०	Analysis of Tattvartha Sutra (Justice J. L. Jaini M. A., Bar-at-Law, Indore) ...	25
११	Optimism of Jc. (Herbert Warren, London) ..	31
१२	To Friends of the Jain Community. (Babu Chaitan Das B. A. Laphampur) ..	37
१३	मनुष्य व्यवहार (श्रीमती चन्द्राबाई, आगरा) ...	४२
१४	जैन पारिभाषिक शब्द कोष (प० परमपूज्य बालजीबाल, मलमत्ता	४४
१५	दिवाली और दो मित्रोंका संस्कार (यादू दीपचन्द्र पवार, नरसिंहपुर) ...	४५
१६	वीर्य रक्षा (हीराचन्द्रमल्लुचन्द्र दोशी काका, सोलापुर) ...	५६
१७	व्याख्यान, (जैनधर्मभूषण त्र० श्रीलक्ष्मणदासी) ...	५८
१८	अन उद्धार कैसे हो-रचिता ('प्रेमी' हजारीलाल जैन, आगरा) ..	७३
१९	भद्रा उन्नतिशील जन्म है (जैनधर्मभूषण त्र० श्रीलक्ष्मणदासी) ..	७३
२०	उपयोगी हितवचन (रामलाल मोदी, देवरी) ...	७९
२१	मम वीर प्रभो !!! (लोचमणि जैन मोडेगाँव C. P) ..	८१
२२	ध्यान देने योग्य सूचनाएँ (हीराचन्द्र मल्लुचन्द्र दोशी काका, सोलापुर)...	८५
२३	" सत्ता दीजिये स्वामिन् " (मुलामचन्द्र परमानन्द जैन मोडेगाँव) ...	८९
२४	आयोग्यताका प्रश्न पत्र, (हीराचन्द्र मल्लुचन्द्र दोशी काका, सोलापुर) ..	८७
२५	जीवनके उद्देश्य, (मंगीलाल जैन, आगरा), हास्य और व्यंग्यचित्र ..	८९-९०
२७	श्यामल दीपदायकोने विनती (C. G. Kamliha) ...	९२
२८	महावीरचरित्रम्, (सतीशचन्द्र गुप्त सूर्यपुरम्) ...	९३
२९	मन्वा धर्मानि स्वहा, (बाबूचन्द्र मोतीचन्द्र पठकर, मलमत्ता) ..	९८
३०-३१	गल्पवृक्ष, भद्रविजय (ललितार्याद आदिवाधम, वधई) ...	१०३-१०५
३२	अनुवादक-मजल (श्री० प्रभासीलाल वर्मा, सूरत)	१०७
३३-३४	नकाचय (D. B), साग्रहने पत्र प्रश्न (लोचमणि) ...	१०८-११०
३५	जोईशाला जेनेने दिव्य सदसो, (मन्नी, कापीगा मित्रमन्त्री, कापीगा) ..	१११
३६	सांसारिक व्यवहार अने तेनी मुत्र परजो (हिमती... ..	११२
३७-३८	पुस्तकालय, सोमिधानी दिगम्बर जैन परने सूचना (श्री कापीगा मित्रमन्त्री, कापीगा) ११९-१२०	११९-१२०



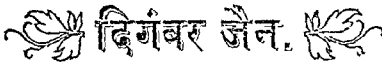
बड़ी सूची मुफ्त मंगा देखिये
रोग, सारदी, बवासी, मुंहके छाले, दमेह, रक्त-शुद्धि, जलना, ताप (बुखार)
नहारुआ, हिचकी, दुर्गन्धी खटपल आदि प्रायः सर्व रोगोंका पुरा २ इलाज
है । गृहस्थोंको एक शीशी अवश्य पास रखना चाहिये । कीमत अमीर गरीब
सबके लिये थोड़ी रखी है खाने लगानेकी तरकीब दवाके साथ मिलती है ।
की० फी शीशी ॥१॥ तीन शीशी २) रु० डा० खर्च अलग ।

दवा मंगानेका स्थल:—

चन्द्रसेन जैन वैद्य, चन्द्राश्रम-इटावाह. U. P.

आजकल करते २ अरसा २०
सालसे, मैं एक ऐसी दवाकी खोजमें
था जो जगतको आशीर्वाद रूप हो जाय,
एक ही छोटी शीशी अपने जेबमें रख-
नेसे सारा दवाग्याना निवारा हो जाय
यानी अपनी जाकिटकी जेबमें एक
छोटीसी गीशीके अंदर सारा दवाग्या-
ना आजाय । परदेशमें, रेलमें, जहाजमें,
अंगलमें, छोटे मोटे गांवमें जहां जिस
वक्त कोई बिमारी उमड़ आई उसी
दम-उसका इलाज अपने जेबमेंसे
निकल पड़े । कई आशा निराशाके
झोके खाते आज २० वर्षके बड़े
परिश्रमके बाद मेने यह "चन्द्रामृत"
पाया है ।

इससे चादी, बदहजमी, दस्त,
कै, खांसी, दमा, शिरदर्द, जुखाम,
आंखका दर्द, दांत व डाढ़का दर्द,
वर्ण रोग, दाद, खुजली, खान,
हैजा, सूक्ष्म गठिया, वात, लकवा,
कमजोरी, अशक्ति, नामदी, जहरी
डंक, प्लीहा, अण्डवृद्धि, प्रंघ,

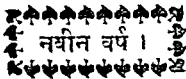


THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिरिविधैश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभि ।

सबोधयत्वनमिदं प्रवर्तताम्, दैगम्बर जैन समाज मानम् ॥

वर्ष ११ बाँ. || वीर संवत् २४४४. कार्तिक-मार्गशर्ष तिथि स १९७८ || अंक १-२.



(१)

नवीन वर्ष, नवीन हर्ष
नवीन दर्श, लोभने ।

(२)

वीती रात, प्रभु प्रताप,
दिय प्रभात, देशमें ।

(३)

कनक सूर्य, नवीन नूर;
भारत अपूर्व, देशमें ।

(४)

नवीन भाष, अह प्रभाव,
नवीन चान, देशमें ।

(५)

भरीन नेज, अह तरङ्ग,
नवीन रंग, देशमें ।

(६)

'प्रतिशताज,' धार आज,
दे 'सराज' देशमें ।

(७)

फलित चप, पुनित भाष,
"नवीन" आर्य देशमें ।

गुनगामीने अनुपद-
सर्वादाचन्द्र एम, मृत ।

नूतन वर्षारंभे अभिवादन.

मोटर उद ।

शुभ वर्ष नव महावीर तणु,
नीरडो जशन्त रादाय घणु,
सदु आग कलो नचला वरने,
परिचार मंदर हो हरे. १.
गुन केळवणी लंडन हरे,
पर हुजर हाथ धरे चहने;
वन भान्य अने गुग सशक्तिवी,
नवरी ररो हस्ता मनथी. २.
हिंद व्योम विषे गुग रश्मीवधो,
परिताप चया दरिसे चुनजो,
यजी आगु सीमावध लन घणी,
जीति प्रगणे सदु विध विरे. ३.
भगपुर ररो जन महलने,
मोतीमट रडे प्रभु महावीरने,
वर सप अने सु सादहरी,
जन महल हो सुख शांति धरी. ४.

कड वर्ष खरे सुख ह्य वन्या,
नदु वषेज नेम राजो गुनमा,
टजी कलेस वेली रंग दहने,
कर रवेन ए प्रभु लक्ष भगे. १
जय प्रिडि सगर तपोजभजो,
दुख क्षेत्र विरे जर लो करजो,
गुन शांति वगे अग्नि हगेने,
कर जेज ए प्रभु लक्ष भगे. २.

मोतीलाल प्रिन्समदाम महाश्री वाकने



दिगम्बर जैनका जन्म दश वर्ष हुए गुजरात

प्रान्तके भाइयोंकी हि-

हिन्दी भाषाका आदर। तार्थ गुजराती भाषामें ही हुआ था परंतु शैः

२ इसका क्षेत्र बढ़ता

गया इस लिये हमें भी हिन्दी भाषा और देवनागरी लिपिको स्थान देना पड़ा, वह यहां तक कि अब विशेष करके हिन्दी भाषाके लेख ही प्रकट करने पड़ते हैं। कई वर्षोंसे हिन्दमें एक ही राष्ट्रभाषा होनेके लिये चर्चा चल रही है जिसको अब तो विशेष अनुमोदन मिल रहा है और उसमें सारे हिन्दमें हिन्दी भाषाको ही राष्ट्रभाषाका मान देना सभीको स्वीकृत है क्योंकि हिन्दी भाषा एक ऐसी भाषा है कि जिसको हिन्दके सभी प्रान्तोंके लोग तो क्या परन्तु विदेशी भी समझ सकते हैं। हमारे लोकनायक लो० तिलकने भी इसीको स्वीकार किया है और आप भी हिन्दीमें बोलने और लिखने लगे हैं, जब आप मराठी भाषा भाषी हैं। दूसरी ओर महात्मा गांधीजी गुजराती भाषाभाषी होनेपर भी हिन्दीका ही आदर कर रहे हैं तो क्या हम सबका कर्तव्य नहीं है कि हम भी जहांतक होसके हिन्दी भाषाको ही राष्ट्रभाषा बनानेका उद्योग न करें? आशा है कि हमारे सभी पाठकगण भी इसी कार्य प्रणालीसे संतुष्ट होवेंगे और हिन्दीको राष्ट्रभाषा बनानेका पूर्ण उद्योग करते रहेंगे।

गत वर्षमें उपहारके कई ग्रन्थ देने रह गये

है परन्तु इस वर्षमें

इस वर्षके तो श्री महावीरचरित्र,

उपहार। धर्मचर्चासंग्रह, आदि

५-६ ग्रन्थ अवश्य

उपहारमें दिये जावेंगे। अनेक कार्यवशात् इस बार यह विशेषांक प्रकट करनेमें विलम्ब हुआ और फिर वार्षिक मूल्य वसूल करनेके लिये बी० पी० से विशेषांक भेजे जायें तो फिर और भी विलम्ब हो जाय इसलिये इसवार तो सभी पुराने और नये ग्राहकोंको विशेषांक सामान्यरूपसे ही भेजा जाता है इसलिये सभी पुराने और नवीन ग्राहकोंको आप्रह पूर्वक निवेदन करते हैं कि वे वार्षिक मूल्य १-१२-० शीघ्र ही मनिओर्डर द्वारा भेज दें। यदि किसीको इस वर्षमें ग्राहक रहना अस्वीकार हो तो वे इस विशेषांकको पढ़कर वापिस भेजे या रख करके ही संतुष्ट हो जावें और एक कार्ड द्वारा हमें सूचित कर दें ताकि उनको आगामी अंकसे भेजना बंद किया जाय परंतु सभीको हम चिताये देते हैं कि कामगनकी अतीव महँगीके समयमें भी भगवान् महावीरस्वामीका वृहत् जीवनचरित्र (अगले भवों महिन) आदि करीब द्वाद्वी या तीन रुपयेके ग्रन्थ उपहारमें मिलेंगे जिससे आपको मासिक जैसे मुफ्तमें ही पढ़ जायगा।





जैसे दान और परोपकारके लिये स्वर्गीय दानवीर जैन-कुलभूषण पं० अर्जुनलाल सेठ माणिकचन्दजी-सेठीजी । से हिन्दुस्थानके जैन परिचित हो गये थे उमी तरह जैन समाजकी सेवाके लिये अपना जीवन अर्पण करनेवाले पं० अर्जुनलाल सेठी जी० ए० जैसे बहुमुख्य व्यक्तिको जयपुर राज्य और फिर ब्रिटिश राज्यने बिना न्याय नजरबंद कर रखा है जिससे हिन्दुके सारे जैनोंमें तो क्या परन्तु समस्त हिंदुस्तान भरमे सेठीजीका नाम परिचित हो गया है । करीब साढ़े तीन वर्ष तक तो जयपुर राज्यने सेठीजीको जयपुरमे नजरबंद रक्खा तब उनकी ओढ़नेके लिये या तो उनका न्याय करनेके लिये हजारों तार भिजे गये जिसकी कुछ भी सुनाई नहीं हुई तब हमारे बाईमराय महोदयको कई तार और चिट्ठियाँ भेजे गईं तो बहुत फरके उत्तरही नहीं मिला और कही मिला तो सिर्फ इतना ही कि हम जयपुर राज्यके कार्यमें हस्तक्षेप नहीं करते आदि । ठीक, यह भी सही, अब आगे हाठ पुनिये । जयपुरमे नजरबंद करनेसे यह तो साफ २ मालूम होता था कि सेठीजी जयपुर स्टेटके कैदी हैं परन्तु गत २० नवम्बरको एक आश्चर्यकारक घटना यह हुई कि सेठीजीको जयपुर जेलसे भोजपुरे भेजा और जयपुरके ग्लेन स्पेशलपर लिये गये और वहासे वहाँ भेजे गये जिसका पता कुछ दिनों बाद मालूम हुआ कि सेठीजी तो ब्रिटिश राज्यमें और

दक्षिणमें बेल्लोर (मद्रास) जेलमें भेजे गये हैं । अब जैपुर जेलमें सेठीजीके दर्शन-पूजनके लिये जिनके प्रतिमाजीका प्रबंध था परन्तु बेल्लोरमें ऐसा प्रबंध न होनेसे जैपुर छोड़नेके बाद ही सेठीजीने आहारपान लेना त्याग कर दिया और ८ दिन तक बराबर उपवास किया परन्तु फिर शरीरस्थिति पर विचार करके सिर्फ दूध लेना स्वीकार किया परन्तु बिना अन्नान्तर किये दिन व्यतीत करने लगे । इस समाचारसे जैन समाजमें बड़ी भारी खलबल और अशांति उत्पन्न होगई और सेठीजीकी पत्नी और बच्चे जैपुरमे ही चिल्लाते रहे !!! ऐसे विकट समयमें सरकारसे पत्रव्यवहार करना और बेल्लोर जाकर सेठीजीके आहारका प्रबंध कराना कुछ सहज बात नहीं थी । उधर समय बीतने लगा और सेठीजी भूखे ही अपने दिन काटने लगे और शरीर भी कृप होता चला । ऐसी गोर विपत्तिमें अविश्रात परिश्रम करनेवाले दो वीर नर बाबू अजितप्रसादजी (लगनऊ) और बाबू भगवानदिनजी निक्कल आये और आपने खूब आन्दोलन किया यहां तक कि सरकार द्वारा कुछ संतोषजनक उत्तर न मिला तब इस मामलेको कोंग्रेसमें आ उपस्थित किया तो इस बारकी कोंग्रेसमें प्रमुखता श्रीमती एनी बिसेन्टने इस मामलेको स्वीकार किया और इस मामलेका प्रस्ताव खुद अपनी तरफसे कोंग्रेसमें उपस्थित किया और संशुभमतिमें पास कराया । इसके बाद श्रीमतीची बाईमरायसे मित्री और बेल्लोर जेलमें प्रतिमाजी रखने और सेठीजीकी पत्नी



और बच्चेको मिलने देनेकी स्वीकारता छी तब बाबू भगवानदीनजी जयपुर गये और वहाँसे प्रतिमाजी, पत्नी गुलाबबाई, पुत्र प्रकाशचन्द्र और तीन पुत्रियोंको लेकर बेलोर खाना हुए और सोलापुर होते हुए बेलोर पहुँचे और वहाँ दोएक दिन कोशिश करनी पड़ी तब सेठीजीका मिलाप सभीको हुआ, प्रतिमाजीकी स्थापना जेलमें की गई, सेठीजीने ११ दिन बाद १६ वें दिनको (ता० १५ जनवरीको) प्रतिमाजीका दर्शन-पूजन करके अन्नाहार ग्रहण किया और अपने बच्चोंको जेलमें पढ़ानेकी आज्ञा मिली । अभी श्रीनती गुलाबबाई आदि वहाँ ही हैं । अब सेठीजीको आहार मिलनेका प्रबंध हो गया इससे अपनेको संतोष कर चुप बैठ रहना ठीक नहीं है । हमें तो अब विशेष आन्दोलन करना चाहिये तब ही सेठीजीका छुटकारा करा सकेंगे । इसलिये दो बातोंकी आवश्यकता है । एक तो यह कि इसके लिये धर्मप्रेमी बाबू अजितप्रसादजीने अजिताश्रम, लखनऊमें खास ऑफिस खोल रखी है और रात दिन तार चिट्ठी आदिका कार्य होता है जिसमें तथा भ्रमण और गुलाबबाईके निभावके लिये सर्वकी आवश्यकता है इसलिये हर एक स्थानसे कुछ न कुछ चन्दा करके वह मनिओर्डर द्वारा लखनऊ भेजते रहना चाहिये । तथा बार २ समा करके उसमें सेठीजीके छोड़ देनेका प्रस्ताव करके वाइमरायको भेजते रहना चाहिये । विना घोर आन्दोलन

किये हमारी सुनाई कभी भी नहीं होगी । और हमारे न्यायी ब्रिटिश सरकारको हम एकवार और अप्रहपूर्वक निवेदन करते हैं कि आप चाहे सेठीजीका न्याय करके यदि वे दोषी रहें तो उचित दंड दीजिए या तो छोड़ दीजिए । जैन एक शांत प्रजा है और उसमें राजद्रोहकी गंध तक नहीं है इसलिये सेठीजीको छोड़कर जैनसमाजमें फैली हुई अशांतिको मिटाइए । सेठीजीका चित्र हमने इस अंकमें मुखपृष्ठपर इसीलिये प्रकट किया है कि हमारे पाठक सेठीजीको भूल न जायें और इनको छुड़ानेके लिये हर एक प्रयत्न जारी रखें ।

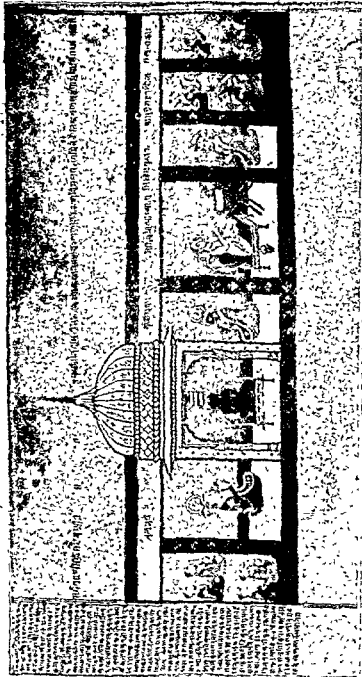
हमारे स्व० दानवीर सेठ माणिकचन्दजीके तीन भ्राताओंमें सिर्फ सेठ नवलचंदजी । श्रीमान् सेठ नवलचंदजी

मौजूद थे जिनसे भी हमारे पाठक अच्छी तरहसे परिचित है क्योंकि गत दाहोदवाले अधिवेशनमें आप ही सभापति हुए थे और आपका चित्र गत वर्षमें प्रकट किया गया था परंतु अतीव दुःखके साथ प्रकट करना पड़ता है कि आपका स्वर्गवास मगध सुद १० ता० २४ दिम्बरको बम्बईमें ६२ वर्षकी आयुमें हो गया जिससे सेठ हीराचंद गुमानजीके चारों पुत्रोंमें अब एक भी मौजूद नहीं रहा है । सेठ नवलचंदजीकी मृत्युसे हमको एक धर्मात्मा महा पुण्यकी कमी हुई है क्योंकि आपकी श्री रामदेवशिरनी, मन्नीजी, अंतरीक्षजी, मांगीतुंगीजी आदि

“ द्विगुणं तेन ।”

विशेषांक.

वीर, सं० २४४४.



श्रीमद् नेमीचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती चामुंडरायको उपदेश दे रहे हैं ।
(एक हस्तलिखित, प्राचीन ग्रन्थके एक पृष्ठसे उद्धृत)

जनविजय प्रेम-मूर्त, ५९५५



तीर्थोंकी आकी भक्ति सुप्रसिद्ध है और स्वर्गीय सेठ भाणिकचन्दजी सभासेवाके ओकों कार्य कर गये हैं वे सब आपके संयुक्तपन और सहायभूतिसे ही हुए हैं । आप दो पुत्र सेठ ताराचंद और रतनचंद तथा एक पुत्री विद्यमान हैं । हमारी यही भावना है कि आपकी आत्माको शान्ति, और कुटुम्बको धैर्य प्राप्त हो तथा दोनों पुत्र अपने वाकानी और पिताजीके दानका और सभासेवाका अनुसरण करें तथा आपकी विधवा श्रीमती परसुनबाई भी अपना शेष समय दान धर्ममें निगमन कर मनुष्यपर्यायको सकल करें । सेठ नखलचन्दजीके शोक प्रशान्त्यार्थ बम्बईमें सेठ मुखानन्दजीके सभापतित्वमें दो सभा हुई थीं जिसमें एक स्मारक फंड भी स्थापित होकर ८००) भरे गये हैं जिसमें खास करके हमारे गुजरातके भाइयोंको कुछ न कुछ सहायता भेजना चाहिए जिससे इन सेठजीका भी कुछ स्मारकचिन्ह कायम हो सके । हर्ष है कि आप मृत्यु समय २५०००) तीर्थोंके जीर्णोद्धारके लिये निकाल गये हैं जिसकी व्यवस्थाका हाठ मिलनेपर प्रकट किया जायगा ।



हमारी स्मरणमेंसे तैयार हुए अनेक युव-
कोंका वियोग हो रहा
बाबू भाणिकचन्दजी है जिसमें सेठवा नि-
बकील-खंडवा । बाती बाबू भाणिकने
दनी बकील बी०ए०
२५७० बी०का कलकत्तामें जन ता. १७को

अचानक स्वर्गवास अतीव खटरना है । आप अंग्रेजी पढेलिखे, धर्मप्रेमी, उत्साही नेता और लेखक भी थे । आपने अंग्रेजीमें महावीर-चरित्र, स्त्री शिक्षा आदि पुस्तकें प्रकट की हैं, भारत जैन महामंडलके मंत्रीका काम भी आपने कई वर्षों तक किया था, और भारत जैन महामंडलके लखनऊ वाले अधिवेशनके सभापति आप ही बनाये गये थे । आप जैसे विद्वान् और उत्साही पुरुषकी क्षति पुरी होना मुश्किल है । आपकी आत्माको हम शान्ति चारते हैं ।

गुजरात प्रान्तमें जागृति फैलानेवाली नाम कोई संस्था है तो वह प्रान्तिक सभा । बम्बई दिगंबर जैन प्रान्तिक सभा ही है । बम्बई प्रान्तिक सभाने आज तक ठीक काम कर दिया है जिसका कारण प्रतिवर्ष भिल २ स्थानों पर आधिवेशन होनेका है । वर्षमें एकवार आधिवेशन होनेसे ही सभाके कार्यमें चैन ता रहती है । गत वर्ष तो दहो-दके भाइयोंने बम्बई और मालवा दोनों प्रांतिक सभाओंको आनाई थीं पंतु इस वर्ष अभी तक दोनोंमेंसे किसीको कहीं भी आमंत्रण नहीं भिला है । सुना है कि आमोद (मडोंच, गुजरात) में प्रतिष्ठा होनेवाली है जिसपर प्रांतिक सभाको आम-त्रण मिलनेके प्रयत्न चरु रहे हैं । आशा है कि आमोदमें संत जेठाभाई गोरबन्द स, सेठ



सबने समाप्ति तथा कुंवारीवाईका आभार माना।

लखनऊमें मान कुंदे को नंदी धूमधामसे रथयात्रा होगी।

औरंगाबादमें—कनैयालाल गालाके सुपुत्रका विवाह चतुर्गोत्रीकी पुत्रिसे हुआ जिसमें आतिशाजी, वैश्यानृत्य, कुंदेवादि का पूजन आदि न होकर राक्षसमुवनके मंदिरमें (१२१) और कचनेर पाठशालाको (१५) दान दिये तथा (१००) चन्द्राके वसुल हुए तथा पाठशाला के लिये (१५०) का चन्द्रा लिखा गया। यहां त्रैशाखमें वेदी प्रतिष्ठा होनेवाली है तथा कचनेरवाली पाठशाला यहां आकर ठीक चल है। ५० छात्र पढ़ते हैं।

इन्दौरकी हुकमचन्द जोड़िंगमें पौष शुद्ध ८, मीको सभा होकर बाबू बाणिकचन्दजी खंडवा तथा एकछात्र हीरालाल तन्त्र मृत्यु पर शोक प्रकट किया गया।

माचीन प्रतिमा—चिरगांव (आंसी) में वेन्ना नदीके किनारे पर एक मूर्ति नीकली है। प्रतिविंब पद्माप्पन मनोज्ञ और पापाणके है। आसनमें दो सिंह है, दोनों तरफ इन्द्र चक्र लिये खड़े हैं। चिन्हसे महावीर स्वामी मालूम होते हैं। इसके लेआनेका प्रबंध हो रहा है।

दक्षिण म० जैन कोन्फरेंसका २० वां अधिवेशन श्री स्तानिधि क्षेत्रमें सोलापुर निगामी सेठ हीमचंद नेमचंद दोशीके सभापतित्वमें ता० १०-११-१२ फरवरीको होगा

जिसमें जैन महिला परिषद् तथा राजकीय विषयक स्वतंत्र परिषद् भी ता० ११ को होगी।

अम्बालामें—महा म्भाका अधिवेशन ता० २३ से २८ फरवरी तक होगा जिनमें भारत दि० जैन महिला परिषद् का वार्षिक अधिवेशन श्रीमती सुशीलादेवी धर्मपत्नी रा० ब० लाला सुलतानसिंहजीके सभापतित्वमें होगा।

भडुवा (हाडीयावड) औरक्षेत्र भलानो २७ मे वापडालय मकरसंक्रांतिने दिने भारे हाथी थोपा हने जे प्रसंगे, सर्वे २००० गाथेने शत्रुगारी आप्पा शहरमां तेलुं सर्वम ईन्दी तमने आपनगर महाराज, दीवान वगैरे तरक्षी भलेनी रकमभाया लाडवा भव्यडवाभां आप्पा हता तथा भीछ ६००) नी भदर्थी सर्वे गाथाने भड अने क्षपाम भवाडाय हतुं वणी ऐक आपम सभा भइता भलेसे वनभाणा ना प्रमुअपण्णा नीये थक हती, जेभां गिरेई वगैरे वयास आ सरेयाना पुडापक आधवथ रामथ सरवेयाना गतिभोगतुं धिवेयन थधुं हतुं।

नृसिंहपुरा सावित्री आश्विन २० थी ३० ना वगैरगा, ऐक भइततु, प्रभाषिक अपने आवाक आहंभीनी जइर जे. रहेवा तथा भोजननी संगवड भणेशे, पगार वापिक पं० थी १००) भुंथी तरतज सभो-सवैया अधस जैनी-धुत।

शिगवरजी केस—पूनावाले मुकद्दमा न० २८८ की जो अपील हाईकोर्टमें दायर है उसमें अपनी तरफसे दरख्वास्त दी गई थी कि थै० लो० जैन मंदिरके आसपास परकोटा खोदकर हमारी रास्ता रोक रहे हैं तथा:



धर्मशालामें ठहरने और टोंकोंमें पूजा प्रसार करनेमें बाधा करते हैं अतः उन्हें रोक दिया जाय, तदनुसार हाईकोर्टसे श्वेतांबरी को इंजेक्शन जारी हो गया है । और पहाड़के पट्टे संबंधी मुकुदमा नं० २७५ की अपील पटना हाईकोर्टमें दायर हो चुकी है उसमें अपनी तफसे दरखास्त दी गई थी कि सरकार श्वेताम्बरियोंको पहाड़ वेंच देना चाहती है लेकिन जब तक पट्टेपाले मामलेका अंतिम निपटारा न होवे तब तक पहाड़का बंदोबस्त किसीके माथ न किया जाय । अपनी यह दरखास्त भी मंजूर होकर इसका हुक्म राजा पाल्गंज पर जारी हो गया है ।

मुफ्त-केवल ८) सर्व मात्र भेजनेवालेको " बलबर्द्धन वटी " जो कि वैद्यक शास्त्रानुसार उमदा वनन जड़ी चूटियोंसे बनाई है वीस दिवसकी खुराक मुफ्तमें मिलती है । पता-सत्येन्दु गुप्त, चंद्रावाडी-सुरत ।

मोरेनामें मुनिजी-मुनिश्री अनंतजी-तिर्तजी महाराज बम्बई, आगरा, शिखरजी आदि होकर आनकउ मोरेना (रवालिपर)में विराज रहे हैं और कई दिनों तक यहां ही ठहर कर विद्याध्ययन करेंगे ।

विपदेशना प्रसाव-भाभीसा मित्रभंडणी न्याय छे के नया वर्षने दिने अनेना भाष्यो सापभा दशन भाटे गया हता तां सभा करी विपदेश आषवाधी आभना पाडीदर तथा भारना भाष्योअे कथुं के तमे जेना जे भादरा सुं १४ ने दिने आषार धंधो अष करीने अक दिवसनी पेशय धर्माय करी तो

अभो आधु गम प्रनिता लामुं के ते दिवसे कोअये जणदनी भांधे छुंसी मुकरी नहि, ते दिवसे नम धंधो कुरा नहि, दार भांस दि पंदयेनुं से न कथुं नहि तथा दिसा करी नहि अ विपर यथा यतां आभरे जेनेअे विपक-रकम-दरेक इकान दीठ धर्माय हाहागुं स्तीअर्थ जेयी अथा लोको अे दिवसे पानांयी पथु पीठनां कामों छोडी देवा जंनया हता ।

लग्नभां दान-इष्टयभां मुंभ.धराणा स्व० भाष्येअंद लालयंद मेकसीना पुत्र दीरायदना लग्न भागशर शुद्ध हने दिने यथां हतां, जेनी भुयालीनां श्रीनती भाष्येअ.अये २५) अक्ष-यथाअम, २५) अउर-पाठशाणा, २०) मुंभाष आर्विअम, १५) कुंभवांगी आअम, १७) मुंभाष पाठशाणा, १०) मेरसद लापये १, ११) अहंरां मुगा रकुत्र, १०) सत्यायराअम अमदा-वाह तथा परसुरेल भंगी १५८) दान मेक-लामां आधुं हतुं ।

स्व० बाबू धन्वलाल अटर्नी के भतीजे स्व० बाबू प्यारेलाल स्मरणार्थ
मात्र ॥२॥ का मनीओर्डर अथवा टिस्ट भेजनेसे २) रुपया मूल्यके ग्रंथ भेंट स्वरूप भेज दिये जावेंगे । ५०० कार्पा वितरण करनेका निश्चय किया है, जल्दी मंगवाइये ।

- ग्रंथोंके नाम:-**
१. तीस चौबीसी पूजा मूल्य १॥॥२॥
 २. कैलाश यात्रा -)
 ३. बलमुगल कथा -)

मंगानेका पता:-
जिनवाणी प्रचारक कार्यालय,
८, मदनमोहन पटनौ लेन-कलकत्ता



‘मुनि’का विशेषांक श्री महावीर-मु-
निमण्डलके मुख मासिकपत्रका सचित्र खाम
अंक। वर्ष २. अंक १. प्रकाशक कालूराम
खिलानी शर्मा, बोदवड (पूर्व खानदेश)। उत्तम
वागन और उपाईवाले इस १७१ पृष्ठके खाम
अंकमें सैठ राजमलजी जामनर, स्व. दा. माणि-
वचन्दजी, पं. लालन, महात्मा गांधी, सेठोनी,
संसारवृक्ष, रूपनरसिचन, व डीलाल मो. शाह
अनक श्रावक और मिथ्यात्वीदेव, बाललग्न
वृद्ध विवाहके दुष्परिणामोंके हृदयद्रावक दृश्य,
सट्टेवानकी दुर्दशा आदि १८ चित्र हैं
और कुल ३७ लेख और कविताएँ हैं
जिनमें भेदभाव नहीं है, हमारी वर्तमान स्थिति,
पापका प्रकाश, हमारे समानकी उन्नति कैसे
हो। यही पदार्थोंका उपयोग, मुनि सुनरकी
आवश्यकता, आज्ञाफलकी उपदेशप्रवृत्ति, साधु
और मुनियोंका वर्तमान, ध्यानरुवासी मुनियोंको
खुल्ला पत्र, साधुग, साधु-मुनियोंका महत्व,
क्या कुछ और कसर है आदि लेख पढ़ने
योग्य हैं। कागजकी अतीव महँगीके समयमें
भी इतना सुंदर और बड़ा अंक निकालना
महावीर मुनिमण्डल ही साहस है। इसके
संचालक स्थानरुवासी बपु होनेपर भी
इसमें सभी लेख तीनों संप्रदायके पढ़ने योग्य
रहते हैं। यह तो विशेषांक है परन्तु सामान्य
अंक भी ३२ पृष्ठोंका निरमि। प्रकट होता

है। वार्षिक मूल्य २) और इस अंकका मूल्य
॥= मित्रनेका पना-मैनेनर, मुनि, बोदवड
(पूर्व खानदेश)

जैन संसार—संपादक प्रेम और उप
संपादक नेमिचंद्र कोठारी। वर्ष २. अंक १ २,
वार्षिक मूल्य २=) यह सयुक्त जैन ध्वनावर
बराड प्राणिक कान्तरन्तका मुखत्र है।
इस १६० पृष्ठोंके अंकमें साधुओं, श्रीमती
मगनबाई, सेठोनी आदिके १२ चित्र भी
हैं। मुखपृष्ठ का चित्र आकर्षणीय है जिसमें
जैनमपानरूपी नौकामें दि. धे. और स्थानक-
वासी तीनों संप्रदायके साधु और श्रावकों
बैठाये हैं और यह दिखाया है कि तीनों
सयुक्त होकर इस नौकाको चलाते रहेंगे तो
नौका सवाररूपी समुद्रसे पार हो जायगी और
यदि एक भी भिन्न होगा तो नौका डूब
जायगी। लेखोंमें मानव धर्म, रगे गीदड़ोंसे
बचो, प्रेमसे जाति उद्धार (कविता), विचार
और उ-की किलासकी, भ्रमशह आदि
पढ़ने योग्य हैं। वार्षिक मूल्य २=) और
इस अंकका ॥)

विश्वविद्या प्रचारक—रत्नउत्तम प्रभा
शित सचित्र मासिक पत्र। वर्ष १० अ २ और
वार्षिक मूल्य ११) लेख अच्छे रहते हैं। इस
अंकमें मालवीयजीका सचित्र जीवनचरित्र
पढ़ने योग्य है। मुखपृष्ठ पर हिन्दू देवीकी
आकर्षणीय चित्र रहता है।

चंद्रप्रभा-सनातन (नीमारे) से प्रकाशित
नवीन सचित्र मासिक पत्र। वर्ष १. अंक १. पृ.
३२. वार्षिक मूल्य २॥) इस अंकमें, भरतपुरके



प्रतापी राजा मुरजमल जाटका सचित्र परिचय पढ़ने योग्य है। साइजके प्रमाणमें मूल्य ज्यादा ही होता है।

जयाजीप्रताप—श्रीमान् ग्वालियर नरेशके जन्म दिनका यह विशेषांक बड़े ५० पृष्ठोंका और प्राचीन कारीगरीके २० चित्रों सहित है जिनमें चंदेरीके जैन मन्दिरका चित्र भी है। कुल ४४ लेखोंमें ६ इंग्लिश हैं। हिन्दी लेखोंमें कई लेख महत्वके और पढ़ने योग्य हैं। यह साप्ताहिक पत्र राज्यकी ओरसे ही प्रकाशित होता है और अपने अपनी और ग्वालियर राज्यकी प्रज्ञाकी बहुत उन्नति की है और कर रहा है। वार्षिक मूल्य ३) है। पता—मैनार, जयाजी प्रताप, लखर (ग्वा.)

सुभाषित रत्नसंदोह—श्रीमद् अमिताभगति आचार्य कृष्ण महान् ग्रन्थका हिन्दी अनुवाद पं. श्रीलाल जैन काव्यतीर्थने किया है और जैन साहित्योद्धारक पं. पन्नालालजी बाकलीवालने भारतीय जैन सिद्धांत प्रकाशिनी संस्था (विश्वकोशलेन, बाग बाजार, कलकत्ता) द्वारा अभी ही ग्रन्थकारमें प्रकाशित किया है। छपाई सफाई और कागज बहुत बढ़िया है। प्रथम पृष्ठपर संस्थाके खास सहायक सेठ हरिभाई देवकरण (सोलापुर) के तीन पृष्ठों सेठ बाटचंदभाई आदिके चित्र भी हैं। इस ग्रन्थ के २८२ पृष्ठोंमें ९२२ श्लोक अथ सहित हैं जिसकी विषय सूची पढ़नेसे ही ग्रन्थ कितने महत्वका है यह मालूम होता है। कुल ३३ विषयोंमें मुख्य २ निम्न लिखित हैं—संसारिक विषय निराकरण, कोप दूर करनेका उपाय, लोभ

दूर करनेका उपाय, स्त्रीके गुणदोषोंका विचार, सम्यग्दर्शन—ज्ञान—चारित्र्यका निरूपण, जन्म—मरण—मृत्यु निरूपण, अनित्यताका वर्णन, जीव संशोधन, दुर्जन—सज्जन निरूपण, दान निरूपण, मद्य—मांस—मद्य—वेश्यासंग—द्युत निषेध, गुरु विवेचन, धर्म निरूपण, शोक निराकरण निरूपण, शौच और श्रावक धर्म निरूपण, तप निरूपण आदि। इसकी भाषा भी इतनी सरल है कि सामान्य पढ़ा लिखा मनुष्य भी इस ग्रन्थका स्वाध्याय करके लाभ उठा सकता है। अनेक विषयोंपर व्याख्यान देनेके प्रमाणोंमें इसके बहुतसे श्लोक कंठाग्र करने योग्य हैं। मूल संस्कृतमें तो इस ग्रन्थको निर्गवसागर प्रेस (बम्बई) ने कई वर्षोंमें प्रकट किया है और इसका संस्कृत भाषियोंमें बहुत आदर है परंतु इसका हिन्दी अनुवाद प्रकट करके पं. पन्नालालजीने जैन समाजका बहुत ही उपकार किया है। इतने बड़े ग्रन्थका २॥) मूल्य अल्प ही है। हाएक जैनीका कर्तव्य है कि इस ग्रन्थको मंगाकर अवश्य २ स्वाध्याय करें।

मोहिनी—लेखक, भैरवागड जैन। प्रकाशक—प्रेमपुनारी (कुमार देवेन्द्रप्रसाद), प्रेम मंदिर, आरा। पृ. ८३. छपाई सफाई उत्तम और पृ. ॥) हमने चार वर्ष हुए 'रूपसुंदरी' नामक पुस्तक गुनराती भाषामें प्रकट करके पाठकोंको उधार स्वरूप दी थी उसका यह हिन्दी अनुवाद है। इसका मुख्य सिद्धान्त सियोंमें शीघ्र रक्षाका उपदेश है। शीलके प्रभावसे स्त्री अपनी आत्मिक शक्तिमें कितनी

उन्नति कर सकती है, संसारमें वह कितनी है। इसके पढ़नेसे बहुत कुछ शिक्षा मिल
उज्ज्वल हो सकती है आदि बातों का सकती है। अवश्य मंगाना चाहिये। पता-
चित्र इसमें भी मांति दर्शाया है। मापा भी हिन्दी साहित्य भंडार-लखनऊ।
सरल है। इस उपधासको मंगाकर अवश्य मोक्षमार्गकी सच्ची कहानियाँ-
लाभ उठाना चाहिये। प्रकाशक, बुद्ध गाल थ्रू क, पाठक, जन शाला

The Householder's Dharma.
(श्री रत्नकरंड श्रावकाचार) श्री समन्त
भद्राचार्य कृत सुप्रसिद्ध रत्नकरंड श्रावकाचार
का यह अंग्रेजी (English) अनुवाद बाबू
चम्पतराय जैन बेरिस्टर (हरदोई) ने किया है
और कुमार देवेन्द्र प्रसाद जैन ने ही
समन्त जैन पब्लिशिंग हाउस-आरा द्वारा
अंग्रेजी ही प्रकाशित किया है। छपाई सफाई
उत्तम, पृ. १२५ और मूल्य III। इसमें ४७
पृष्ठोंमें तो अनुवादक महोदय ने इस ग्रन्थपर स-
मालोचना लिखी है जो अतीव महत्वकी है।
इस शास्त्रीय ग्रन्थका अंग्रेजी अनुवाद करनेके
लिये जैन समाज, बेरिस्टर साहबकी आभारी
है। अंग्रेजी पढ़ लिखे माइकोंका कर्म है कि
इस पुस्तकको मंगाकर अवश्य पढ़ें।

सद्बचिचार पुस्तकमाला—बाबू
दयाचंद्र गोयलीय जैन बी. ए. एक हिन्दी
साहित्य भंडार स्थापन करके उसके द्वारा इस
पुस्तकमालाको प्रकट कर रहे हैं जिसके तीन
ग्रन्थ (१) जैन बाह्य वेस वन जाओ (पृ. ६०),
(२) सुख और सफलताके उपाय (पृ. ३०),
(३) सुखकी प्राप्तिका मार्ग (पृ. ७१) हमारे
सामने हैं। यह तीनों पुस्तक प्रसिद्ध अंग्रेजी
लेखक जेम्स एलनकी पुस्तकोंका हिन्दी अनु-
वाद है। मूल्य क्रमशः =11), =11), और =

प्रकाशक, बुद्धाष्ट श्रवक, पाठक, जन शाला
दमोह (पृ. ८० और मूल्य । ३०) इसमें
सम्प्रदाशके आठ अर्गोंकी आठ कथा, पांच
अणुव्रत और पांच पापोंकी १० कथाएँ, चार
दानकी चार कथा और पूजाके फलकी कथा
आदि २३ कहानियाँ (कथाओं) का संग्रह
सरल भाषामें संक्षेप रूपसे है। स्वाध्याय करने
और मनन करनेयोग्य है।

Love-Buds (प्रेम-कली, -प्रकाशक-
प्रेम पुजारी, प्रेम मंदिर-आरा। इसमें कुमार
द्वेन्द्रप्रसादजीने अनेक कविरत्नोंकी प्रेम विषय-
दर्शक कविताओंको और कई अंग्रेजी लेखकों-
की प्रेमदर्शक अंग्रेजी कविताओंको हिन्दी
अनुवाद सहित प्रकट की है। पुस्तककी
समावृत्त अवश्य देखने योग्य है। कई चित्र
भी हैं। सारी पुस्तक बढ़िया लाल स्पाहीसे
छपी हुई है। प्र. १५०० और मूल्य : १) हर-
एक हिन्दी साहित्यप्रेमीको ऐसी पुस्तकका
अवश्य संग्रह करना चाहिए।

हितैषी गायन—प्रकाशक, पं० मनीराम
मन्मथलाल जैन, घमपुरा, देहली। चालिक भवन
संग्रहका यह चौथा भाग जैनमित्रमंडल देहली
ने दृष्ट नं० ३६ में प्रकट किया है। मूल्य—)
वारहमासा तथा स्तवन संग्रह—
प्रकाशक आत्मानंद जैन सभा, अंबाला शहर।
पृ. ६३ और मूल्य—) सिकं.

देहली शास्त्रार्थ—देहली में गत जुलाई
सम ६ दिन तक जैनी और आर्यसमाजके बीचमें
प्र कर्तव्य और तीर्थंकर स्वतंत्रत्व खंडनमंडन
पदक शास्त्रार्थ हुआ था जिसमें जैनमित्र
डलीकी तरफसे न्यायालंकार वादीमकेशरी
० मखनलाडजी शास्त्री (प्र. अध्यापक श्री
द्वयम ब्रह्मचर्याश्रम) और आर्यसमाजकी तरफसे
वितार्किक पं. नरसिंहदेवजी शास्त्री थे। इस
न्यमें इस शास्त्रार्थका विवरण है जिसको
कट करके जैनमित्र मंडली, धरम-
रा, देहलीने जैन समाजका बहुत कुछ
प्रकाश कि॥ है। इसको पढ़नेसे साफ २
खुल होना है कि जैन समाजकी युक्तियां
कैनी प्रबल थीं और आर्यसमाजके पंडितकी
युक्तियां कितनी पोच थीं। इस शास्त्रार्थसे
हली मरमें क्या सारे पंजाब प्रान्तमें जैन
मैका अच्छा महत्व प्रकट हुआ है। पृ. ११२
और मूल्य लागत मात्र चार आना ही है।
इसको संग्रह लेना चाहिए।

श्रीधर्म-सार—प्रकाशक—बाबू पुरन-
कन्ट गोखलीय जैन-सिंगोडी (छिन्वाड़ा) पृ.
८२ और मू. ॥ यह तारनपंथी समाजकी
रुस्तक है और इसमें पं. शिरोमणिदास कृष्ण
कविताओंमें धर्मका उद्देश है। पापापुरानी है।

जैनशिक्षण पाठमाला—प्रकाशक—
कुमार मोतीलाल शंकर—गुवा (गानपूतान)
पृ. ६० और मू. २) और पाठशालाओंको ८)
सेकड़ा। इसमें २५ पाठोंमें विद्यार्थियोंको
पढ़ाने योग्य धर्म, जाति, और व्यवहारिक विष-

योंका उद्देश है। टाइप भी बड़े हैं। स्था०
जैन पाठशालाओंमें प्रवेश करने योग्य है।

वर्तमान जैन तीर्थंकर दर्पण चार्ट
नं. १-प्रकाशक मनोहरम नन्मूलनी, धर्मपुरा,
देहली, मूल्य २) इसमें वर्तमान २४ तीर्थंकर-
करोंके माता, पिता, वर्ण, चिन्ह, कामकी
ऊंचाई, आयु, गणधर, एक दूसरे तीर्थंकरका
अंतर समय, दिसा घृष, पूर्व भव, कल्याण-
कोंकी तिथि, और निर्वाण स्थानका कोष्टक है।
संग्रह करने योग्य है।

आत्मावबोध—प्रकाशक—भारतीय जैन
सिद्धांत प्रकाशिनी संस्थ, विधकोश लेन, बाग
बाजार-कलकत्ता। ग्रन्थाकार, छपाई सफाई सु-
न्दर पृ. १६० और मूल्य ॥)। तेरहवीं
शताब्दीमें श्रीकुमार नामक कवि होगये हैं
जिन्होंने इस ग्रन्थको १४९ श्लोकोंका बन-
वाया था जिसका अनुवाद पं. गंगाधरलाल
न्यायतीर्थसे कराकर पं. पन्नालाल बाकलीवालने
प्रकाशित किया है। साथमें अध्यात्म-
प्रेमी स्वर्गीय स्वस्ति श्री वीरसेन स्वामी मट्टा-
रका सुन्दर चित्र भी है। इसमें संक्षेपमें आत्मा-
का स्वरूप बताकर अनेक प्रकारका उद्देश
सरल भाषामें दिया गया है। इसका स्वाध्याय
करनेसे चित्त शांत होकर हृदय निर्मल होता
है और सुमार्गपर चलनेका उद्देश मिल
सकता है।

जैन समाज सेवक मंडलकी टेंकट-
इन्दौरमें इस नामका एक मंडल स्थापित हुआ
है जिसका उद्देश विशेष करके इन्दौरमें कई
दोसरे पड़ी हुई फूटकी मिश्रानेका प्रदान करना



है। इसमें तीन ट्रेक्ट प्रकट करके उनका मुफ्त प्रचार किया है जिनके नाम हैं—(१) जैनोका धर्म, (२) इन्दौरके जैनियों ! अबके पर्युषण पर्वमें क्या करना होगा, (३) इन्दौरका जैन समाज और फूटका राउप । इसमें खूब ही तेज भाषामें फूटको मिट नका उपदेश दिया है।

पदसंघ-सम्मेलन-प्रकाशक जीर्णोद्धारक जैन तार-मंडल-सिंगोडी (त्रिन्दवाडा) मूल्य -) यह भी तारनपथी समानका एक ट्रेक्ट है और इसमें तारनसमाजके ५ सरसा वर्णन और कुछ उपदेश भी है।

सप्तभंगी नय-यह आत्मानन्द जैन ट्रेक्ट सोसायटी अंबाला शहरकी २२ वीं ट्रेक्ट है। पृ. ३२ और मू. -) इसके लेखक हैं लाला कचो मल एम. ए. । इसमें सप्तभंगी नयका स्वरूप संक्षेपमें सरल रूपसे दिया गया है।

पंच परमेष्ठीके १४३ मूलगुण- (चार्ट नं० ५) यह भी एक वंशरूपी नकशा है जिसमें पाचो परमेष्ठीके १४३ मूल गुण वंशावलीके रूपमें दर्शाया है। समझ करने योग्य है। मूल्य -) मिलनेका पना-कुमार देवेन्द्रप्रसाद जैन-आरा।

कृपण-प्रकाशक-बी० एक० सी० डी जैन, शिक्षोदावाड गु० पी० । यह एक प्रहसन है। पृ. सलग्ना सिर्फ १३ होनेपर भी मूल्य -) अधिक है।

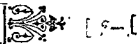
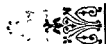
मन्त्रा विश्वास-प्रकाशक, कुमार देवेन्द्रप्रसाद जैन, प्रेस मन्दिर आरा। इसमें कुत्तल उपदेश अच्छा है। मुखपृष्ठ पर महात्मा गांधीका चित्र है। उगई सकाई सुन्दर, पृ.

४३ और मूल्य -)

वालिका विनय-सम्पादिका एक जैन महिला और प्रकाशक उपरोक्त महाशय ही। पृ. ४४, उत्तम छाई और मूल्य -) इसमें बालिकाओंके लिये अच्छा उपदेश है। कन्या पाठशालाओंमें प्रवेश करने और बॉटन योग्य है।

जैनसिद्धान्त विद्यालयकी रिपोर्ट- स्या. पं. गोपालदासजी बरेया द्वारा स्थापित मोरेनाकी संस्थाकी यह सार्वर्षी वार्षिक रिपोर्ट है। इसमें संस्कृत विभागमें २७ और हिन्दी विभागमें ४५ विद्यार्थी हैं। इसमेंसे आनतक कई पंडित तैयार हुए हैं। अंग्रेजी भी पढ़ाई जाती है। बोर्डिंगका भी प्रबंध है। आजकल प. घनालालजी अधिष्ठाता और मंत्री पं. खूब चद्रजी शास्त्री हैं। इसके लिये एक लाख रुपयेके फंडकी आवश्यकता है जिसमें करीब ६०-७० हजार भरे गये हैं; श्रीमानोंका फर्ज है कि शेष रुपयेकी शीघ्र पूर्ति कर दें और विद्यालयके साथ स्वर्गीय पं. गोपालदासजी बरेयाका नाम जोड़कर पंडितजीकी कीर्ति अमर करें। इस रिपोर्टवाले वर्षमें कुछ ७६४)। सर्व हुआ है। नडा स्थायी फंडन होनेसे श्रीमानोंको मासिक सहायता पहुंचाते रहना चाहिये और छोटे बड़े प्रसंगोंपर कुत्तल सहायता भी भेजनी चाहिए।

सप्तम हिन्दी साहित्य सम्मेलन कार्य विवरण दूसरा भाग-इसमें सम्मेलनमें आये हुए लेखोंका समग्र है। अनेक लेख पढ़ने योग्य है। माइज बड़ी पृ. २१५ और मूल्य



સિર્કે ॥૨) મિત્રનેકા પતા—હિ. સાં. સ્વામત
• કારિણી સમા કાર્ણલય—જેવલપુર ।

સૌનાગિર—સિદ્ધક્ષેત્રકી પ્રા. સંપાકા
પ્રથમ વાર્ષિક વિવરણ । પ્રકાશક—વાવૂ ગોપીલાલ
ગોવા—લડકર ।

દિ. જૈન પ્રાન્તિક સમા વચ્ચેકી
૧૬વી વાર્ષિક રિપોર્ટ । પ્રકાશક—વાવૂ માણિ-
કચન્દ બૈનાડા મહામંત્રી, હીરાવાગ—ચમ્બડ ।

ભારત દિ. જૈન તીર્થક્ષેત્ર કમેટી
કા ૧૨વાં વાર્ષિક વિવરણ—વીર સં. ૨૪૪૦ કા,
પ્રકાશક લાલા ભાગમલ પ્રમુદયાલ મહામંત્રી,
હીરાવાગ, ચમ્બડ । મહત્ શિક્ષાગત હોનેરેરે યહ
રિપોર્ટ મહત્ દેરસે પ્રકટ હુઈ હૈ । હસમેં સવ
તીર્થોંકા હિસાબ ઓર શિવરજી આદિકે મુક-
દમેકા હિસાબ મી હૈ । ૮૮ પૃષ્ઠકી યહ રિપોર્ટ
વિના મૂલ્ય મિલતી હૈ ।

દુધગાંવ શિક્ષણ પ્રચારક સંસ્થાકા
છઠા વા. રિપોર્ટ—પ્રકાશક નાના રાવજી ઘેઢ-
કર—દુધગાંવ (મતારા)

જૈન ઍંગલો વર્નાક્યુલર સ્કૂલ માંદાકી
૪થી રિપોર્ટ—પ્રકાશક નાયક રાનારામ મંત્રી-
માંદા ।

જૈન પાઠશાલા મેરઠકા—ચતુર્થ
રિપોર્ટ—પ્રકાશક રુનાયનસાદ ગોવત્, મેરઠ ।

દિગમ્બર જૈન આવિકાશ્રમ મુરા-
દામાંદકી ૧૯૧૬—૧૭કી રિપોર્ટ—પ્રકાશકા
સંત્રાલિકા મંગાદેવી મુરાદામાંદ । યહ આશ્રમ
મી ઠીક કાર્ય કર રહા હૈ । સવકો સહાયતા
દેતે રહનાં જાહિય ।

વ્યતરચ્યા આરાધને યાસુન તુકસાન-
લેખક અને પ્રકાશક—શેઠ હીરાચંદ નેમચંદ
દોશી—સોલાપુર. પૃ. ૨૪ અને કિ. મોત્રે ઓ
આનો. આ મરાઠી પુસ્તકમાં વ્યતરેની આરા-
ધના કરવાથી થતાં તુકસાનોનું વર્ણન દોખલા
દલીલો સાથે છે. મરાઠી આપા નાંચુનારે અવસ્ય
મંગાવી લેવું જોઈએ.

ભટ્ટારક ચર્યા—લેખક અને પ્રકાશક—શેઠ
હીરાચંદ નેમચંદ દોશી—સોલાપુર. પૃ. ૩૨ અને
કિ. બે આના. મરાઠી આપાનાં આ પુસ્તકમાં
ભટ્ટારક શબ્દની વ્યાખ્યા, અને ભટ્ટારક કોણ
હોઈ શકે અને ભટ્ટારકમાં કેટલી ચોગ્યતા હોવી
જોઈએ, વગેરે દોખલા દલીલો સાથે અંતેથી
હાલના નામના ભટ્ટારકોના શિથિલાચારનું વર્ણન
કરી હવે પછી ભટ્ટારક નામ જાહેરી મહસ્થાયાય
નામ સ્થાપન કરવા માટે સંમતિ દર્શાવેલી છે
જે સમયાનુસાર ચોગ્ય છે.

મસ્તવચનામૃત અને **સ્વાતુલય**
પ્રકાશ—પ્રકાશક—હરીદાસજી નંગલજીનંદાસ,
લીમડાપોળ. વડોદરા. આ અને પ્રકાશ તદન
મસ્તવ જોઈ છે.

નીતિની શિખામણી—પ્રકાશક સુનીલાલ
બાપુજી મોદી, અપારિયા ચકલા, સુરત. આ
પુસ્તક ગુજરાતી સ્કૂલોમાં ચલાવવાં લાયક છે
તથા એનો હિન્દી અનુવાદ પણ થયો લાયક
છે. વિષય તે નામથીજ પ્રકટ થાય છે. કિ.
એક આનો.

અનાથ વિદ્યાર્થી શુદ્ધ-પુનર્ના આદ્યો
રિપોર્ટ—આ અનાથાશ્રમ ઉત્તમ કાર્ય કરી રહેલું
છે. એની કાર્યપ્રણાલી અનુકરણ કરવાં ચોગ્ય છે.

ધી ઇલેક્ટ્રો-મેટલ રીફાઈનીંગ કંપની
લીમીટેડ—ના ઉદ્યોગ અને નિયમો—આ કંપનીની
સ્થાપના અમદાવાદમાં થઈ છે, જેણે પાંચ
લાખની થાપણ કરવા (૨૫) અને (૧૦)ના એમ બે
નવના શેરો કોટ્યા છે. એનો ઉદ્યોગ અમદાવાદ
કે ગુલાંતમાં તાંબા, પીતલ, લોખંડ, જર્મન
સીલ્વર, એલુમિનમ વગેરે ધાતુની ધરામની,



મુકાન કામી-ચીન્ને-તથા અનેક જ્વતના ખારો
વગેરે બનાવવ તથા વેચવાનો છે. આ ઉદ્દેશ
અત્યુત્તમ છે. અને એ જો મોટા પાંચાપર સ્થપાય
તો ધણોજ મોટો લાભ મેળવવા ઉપરાંત સરદારી
વસ્તુને ઉત્તેજન મળી દેશનો પૈસો વિદેશમાં નહીં
ધસાઈ જતાં દેશમાં રહે. ગમે તે રીતે
ભાંગીદારને સંકેતે સાંતે ટકાવું વ્યંગ આપવા
કંપની બંધાય છે. શેર શેવાની ધજા રાખનારે
વધુ માહિતી માટે નીચેને સ્થળે પત્ર લખી
નિયમો વગેરે અવશ્ય મંગાવવાં-થી હક્કેટ્ટો મેટલ
રીફાઈંગ કંપની-રીફાઈંગ-અમદાવાદ.

શેઠ હીરાચંદ જુમાનજીની સંસ્થા-
ઓના રીફાઈ-શ્રીમાન સ્વર્ગ્ય દાનવીર જૈન
હેલમ્પણુ શેઠ માણેકચંદ અનેક સંસ્થાઓ
સ્થાપી ગયા છે તે પૈકી જે જે સંસ્થાઓ
ખાસ પોતાની મર્યાદા ચાલી ગઈ છે અને
જેનો વંદીવટ કરવા માટે શેઠ હીરાચંદ જુમાનજી
બોર્ડિંગની રૂઠ કરાડિને તીમેથી છે જે બધો
વહીવટ કરે છે અને બધી સંસ્થાઓના ભોગ
રિપોર્ટ બહાર પાડે છે તેનોજ આ ૧૮૧૫-૧૬
નો રિપોર્ટ છે, જે જોતાં જણાય છે કે એમાં
(૧) હી. ગુ. જૈન બોર્ડિંગ મુખ્યાલ, (૨) હી.
ચ. મમ્લશાળા (હીરાચાળ) મુખ્યાલ, (૩) શેઠ
માણેકચંદ પાનાચંદ દિગંધર જૈન બોર્ડિંગ
રત્નલાલ, (૪) શેઠ માણેકચંદ હીરાચંદ જુમ્લી-
ખાત ટરેટ કંડ, અને (૫) શેઠ પ્રેમચંદ મોતીચંદ
દિગંધર જૈન બોર્ડિંગ, અમદાવાદના ગિરોટો છે.
આ પાંચ સંસ્થાઓ ઉપરાંત બીજી સંસ્થાઓ
પણ જે વહીવટ કરવાનું એણે તો તે પત્ર
ઉપથી રૂઠ કરાડી કરે છે, એટલે લગભગ ત્રણ
લાખ રૂપાની સંખ્યાવતોના વહીવટ આ કમીટી
કરે છે. સ્થાનાબ્ધવધી બોગો દરેક સંસ્થાની
અમાલોચના કરી શકતા નથી. જેથી એકદરે
જનમનીશ કે મુખ્યાલ, અમદાવાદ અને રત્નલાલ
બોર્ડિંગથી ગુજરાત અને માગવા પ્રાંતને અતી
લાભ પડેલો છે તેમજ મુખ્યાલમાં હીરાચાળ
ધોળેશાળાનો સાર્વજનિક લાભ તો જગજગેરજ

છે. વળી જુમ્લીલીયામાં રૂઠ ને લગભગ
અઢી લાખની મિલકતનું છે તેની ઉપજમાંથી
શેઠ માણેકચંદ જુમ્લી જુમ્લી આલેખોનો
નિભાવ કરવાની સ્થાપી જોડવાનું કરી ગયેલા
છે જે સંવેન ફયાનમાં લેવા યોગ્ય અને ખીમ
શ્રીમાનોએ અનુકરણ કરવા યોગ્ય છે જે જે કામ
કરોડાપતિઓ નથી કરી શક્યા તેનું કાર્ય શેઠ
માણેકચંદ જુમ્લી મીલકતમાં અને શ્રોડાસમ
યમાં સ્થાપી તરીકે કરી ગયા છે. લગભગ ૨૨૫
પાનાંનો આ રિપોર્ટ દરેક વાંચવા અને વિચારવા
લાયક છે. પોન્ટેન માટે માત્ર એક આનાની
રીફાઈ બીટવાથી સુપી-ટે-કટ, હી. ચ. જૈન
બોર્ડિંગ, તારદેવ, મુખ્યાલની લખવાથી મુદત
મળી શકશે.

મુખ્યાલ શહેરમાં સામાન્ય અને મધ્યમ
વર્ગના જેનો માટે સસ્તા બાડાના અને સુખાકારી
મકાનોની આવશ્યકતા સંબંધી પુનરુત્પાદન
પ્રકાશક-નરોત્તમદાસ બી. શાહ (મેમનવાડા
રોડ-મુખ્યાલ). મકાનોના બાડાં મુખ્યાલમાં એટલા
બધાં ચડી ગયાં છે કે જેથી ગરીબ જેનોને
ત્યાં રહેવાની અતીવ અગવડતા છે, જેનાં ભોગે
તેઓને ઘણા મંકડા સહેવા પડે છે, દેટલાંક તો
માંદા થઇ દેગ સ્ત્રીધાવે છે, કેટલાકનાં મૃત્યુ
થાય છે તેમજ વ્યાપાર માટે મુખ્યાલ નવા જનોરા
પાછી પાની કરે છે. આ અગવડતા દૂર કરવા
ત્યાં સસ્તા બાડાંની હયા ઉભાસવાલી ચાલીઓ
થવાની જરૂર છે, જે સંબંધી મી. શાહ, તથા
વર્ષ થયાં ધણોજ પરિશ્રમ અને અર્થવ્યય કરી
રહ્યા છે અને એ સંબંધી કરેલી હિલચાલોનો
રિપોર્ટ આ પુસ્તકમાં છે. મુખ્યાલ શહેરની વસ્તી
અને મરણ પ્રમાણના આંકડાઓ ધણુ રજુ
કરેલા છે. આ ૫૦ પાનાનો રિપોર્ટ પોસ્ટેજ
માટે એક આનાની રિફાઈ બીટવાથી મુદત મળે
છે. શ્રીમાનોએ આ બાબત ખાસ લક્ષમાં
લેવા યોગ્ય છે.

શ્રી કુમ્લીઆ પાંજરાણીના હિસાબ-
આ બાબતોનો સં. ૧૮૭૨નો આ રિપોર્ટ જોતાં

જણાય છે કે શહેરના અમુક લાગાઓથી એમાં ખોટાં ઘોરો પળાય છે. સાદું સુધાધની ગોઠવણુ આતિ ઉત્તમ જણાય છે.

શ્રી અજરામર- જૈન વિદ્યાશાળા- (લિંગદી) ને ૧૯૧૮ થી ૭૨ ને રિપોર્ટ- સ્થાનકવાસી બધુઓની આ પાઠશાળા આલુ મદદથી હીક ચાલે છે પણ સ્થાયી ફંડની જરૂર છે.

દશમી શ્વે. જૈન કોન્ફરન્સના રિપોર્ટ- મુંબાઈમાં શ્વેતાંબર જૈન કોન્ફરન્સ ૧૯૧૬ માં બરાબ હતી તેનો અધી બેઠકોનો આ સવિસ્તર હેવાલ છે. જે આપણા દિગંધરી બાધઓએ વાંચીને અનુરંજી કરવા યોગ્ય છે. આલો રિપોર્ટ આપણી મેઢાસબા અને સુખાધ પ્રાતિક સભા ક્યારે બહાર પડશે ?

જન શ્વે. કોન્ફરન્સના રિપોર્ટ- ૧૯૭૨.

શેઠ હીરાચંદ ગુમાનજી જૈન બોર્ડિંગ સ્કુલમાં ખેલવામાં આવેલું-

શેઠ નવલચંદ હીરાચંદ સમારક ફંડ દિગંધર જૈનના મુજ વાચક વર્ગ,

વિં. વિં. સાથે લખવાનું કે ઉપરોક્ત સંસ્થા તરફથી મરહુમ શેઠ નવલચંદ હીરાચંદની યાદગીરી કાયમ રાખવાને શેઠ નવલચંદ હીરાચંદ સમારક ફંડ આ સંસ્થાને અંગે ખેલવામાં આવ્યું છે.

આપ શ્રી અંબારી સંસ્થા પ્રત્યે સહાનુભૂતિ ધરાવતા હોવાથી, તેમજ આપ હંમેશા ગુણગ્રસ્તિ માટે સારી બાવના રાખતા હોવાથી આપને વિનંતિ કરવાની કે આપ મરહુર ફંડમાં એક સારી રકમ ખરી આ સંસ્થાના સુપરીન્ટેન્ડેન્ટના સરનામે મોકલી આપવા કૃપા કરશે.

બરાબલી રકમની પહેલિ મોકલવામાં આવશે, તેમજ તેઓ થીના સુધારક નામે દિગંધર જૈન પત્રમાં બહાર પાડવામાં આવશે.

લી. શેવડા.

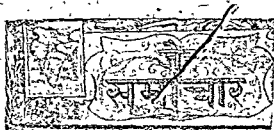
આસ્તર મંગનલાલ દામોદરદાસ.

સુપરીન્ટેન્ડેન્ટ.

શાહ દાલીદાસ શુલચંદ.

સેક્રટરી, લીટરી મેસાઈરી.

શેઠ હી. ગું. જૈન બોર્ડિંગ સ્કુલ, વાઘેવ-મુખર્ડ.

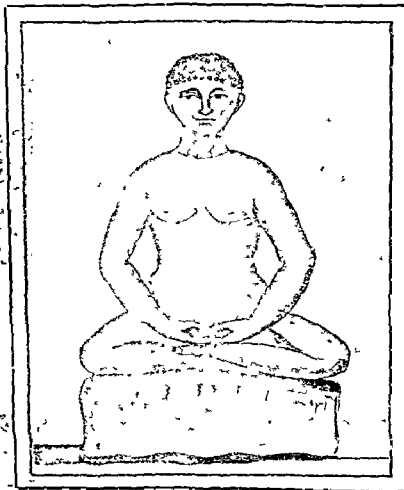


સૌં. ગુલાબવાઈકા આગમન-

પં. અર્જુનજીલ: સેઠીજીકી ધર્મવત્ની સૌં. ગુલાબવાઈ અપને ત્રીન વંચ્ચોંકો ઓર પ્રતિમા- જીકો લેમર વાંચુ મગવાનદીનજીકો સાયમે લેમર જવણુસે વેહોર ના રહીથી તવ સોલાપુર પધારી થી । વહાં આપકા અચ્છા સ્વાગત દુઆ થા । યહાંકી સ્ત્રી સમાન ગુલાબવાઈકો મિઝ નેકે લિર એકવિત દુઈ થી ઓર ત્રિયોને સેઠીજીકે સંકટ નિવારણાર્થ રં. રૂ. ૨૫૦) કા વેરા કર દિયા થા ।

મૈનાવાઈ આચિકાશ્રમ-પૂનાસે

પાંચ માઈલપર હિંગણે ગાંવમે પ્રો. ૦. ૧૦૦૦ અનાથ બાલિશાશ્રમ ઓર વન્યા મહાવિજાલય કઈ વર્ષાસે હે ઓર ૨૫૦ વન્યાઈ પદતી હે તથા કાલેનકે પટનકપ તક પદાઈ હોતી હે, વહાંપર જૈન વન્યાઓંકો મી શિક્ષા મિલે રસ- લિયે સોલાપુર નિવાસી સેઠ હરીમાઈ દેવકર- જવાલે સેઠ હીરાચંદ રામચંદને અપને માતાજી મૈનાવાઈકે નામકે વહાં જૈન વન્યાઓંકે લિયે ચોટિંગ ઓર બાધન સોલનકા મુદ્દત ગત તા. ૬ નવમરીકો શ્રીમતી કંકુરાઈકે સમા પતિતવમે કિયા થા । સેઠજીને વહાં ચોટિંગ હાડસ તોલ દિયા ઓર માસિક દમ રૂ. રાચેલી છ સ્નાતરશિવ જૈન વન્યાઓંકે લિયે અપની તરફતે રક્તી હે । રૂ. ૧૦૦૦) સૌં. મુજોવનાવાઈ તેમજ



श्रीमद् नेमोचंद्र सिद्धांतचक्रवर्ती ।

(श्री गोमटसार, लब्धिसार, क्षपणासार, त्रिलोकसार, द्रव्यसंग्रह आदिके कर्ता महदाचार्य.)

(एक हस्तलिखित प्राचीन चित्रमे उद्धृत)



लकर ५००) और अमृत तवनापा गरगड़ेने ५००) स्वीकार किया । सौ० गोदुवाई उपाध्ये और उनसे पातेने और री काम करना स्वीकार किया है । अभी तीन वन्याएँ प्रवेश हो चुकी है ।

अजैनोंको बिना मृत्यु—'जैनधर्मके विषयमें अजैन विद्वानोंकी सम्प्रतिष्ठा' नामक ट्रेन्ट निम्नलिखित पतेसे डाँट लिगनेपर मुफ्त मिलता है । डाँटनेके लिये ३) सेफडा है—उपमंत्री, जैनधर्म संरक्षणी सभा—अमरोहा (मुसादाबाद) ।

अध्यापकके स्मरणार्थ १००००) का दान—कुनामन (मारवाड़)की जैन पाठशालामें वृद्ध पं० जिनेश्वरदासजी कई वर्षोंसे उत्तमतासे पढ़ा रहे थे उनका करीब एक मास हुए स्वर्गवास हो गया है । आपकी योग्यताकी वजह यहाँ तक हुई है कि कच्छके आपके लिये शोकसभा होकर उसमें सेठ चैतन्य गंधीसलेने १००००) पंडितजीके स्मरणार्थ देना स्वीकार किया है । यह रकम इस पाठशालामें लगाकर इसका नाम 'जिनेश्वरदास जैन पाठशाला' रखा जायगा । उक्त पंडितजी एक कवि भी थे ।

नैनागिरिजीका मेला—मगसर सुद १५को इस क्षेत्रपर मेला हो गया व० पं० गणेशप्रसादजी न्यायानार्थ, व० मणीरयजी वर्मा, पं० सुनलालजी, मा. दीनचंदजी आदिके पयारनेसे लोकमूह भी अच्छा जवा भा और धर्मोद्देश भी खुब हुआ था । विशेष उल्लेखनीय बात यह हुई कि गोलापूष ज्ञातिमें

पंचवीसे और बीसवीसे भाइयोंमें रोटी व्यवहार था परंतु कई वर्षोंसे बेटी व्यवहार बंद था जिसके लिये पंचोंने मिलकर खाम प्रस्ताव कर लिया कि पंचवीसे भाइयोंके साथ बीस बीसे भाई सहर्ष रोटी व्यवहारके साथ बेटी व्यवहार करें—इस मौके पर पंच सौ ग्रामके पंच उपस्थित थे और सबके हस्ताक्षर हो गये यानी यह सामान्य प्रस्ताव नहीं परंतु अमली प्रमान हो गया है । और इस मेलेमें सागर जैन पाठशालाके २५ और अन्य २५ जैनोंने विधिपूर्वक यज्ञोपवीत धारण किया । वहाँ धर्मशाला बनानेके लिये भी १३५०) का चंडा हुआ था ।

२५०००) का दान—रम्बई निवासी सेठ नवलचंद हीराचंदजीने अपने मृत्यु समय तीर्थोंके जीर्णोद्धारके लिये २५०००) का दान किया है ।

श्वेताम्बर कॉन्फरंस और एक लाभ रूपके का फंड—गा माघमें कांग्रेसके समय कलकत्तेमें ग्यारहवीं थे । जैन कोन्फरंस रम्बई निवासी सेठ खेनशी खीरशीके सभापतित्वमें हुई थी जिमें महात्मा गांधी, लो० तिलक, मालवीयजी आदिने भी पयार कर व्याख्यान दिया था और बनारस हिंदू युनिवर्सिटीमें जैन तत्वकी शिक्षा प्रबंधके लिये और जैन विश्वविद्यालयके टहरने, खानेपीने, दर्शन पूज आदिके प्रबंधके लिये अपील होनी ही उसी वक़्त करीब १०००००) भरे गये है जिसमें १२५००) तो सभापतिजीने ही दिये हैं । अन्य है ऐसे दानरीसोंको ।



दक्षिण महाराष्ट्र जैन कान्फरेंस—
इस कान्फरेंसका वार्षिक अधिवेशन इसवार ता०
१०-११-१२ फरवरी (माघ वदी १४ से
माघ-सुदी १ तक) श्री स्तवानिधि क्षेत्र
पर होना निश्चिन्त हुआ है । समापतिका आसन
बहुत करके सोलापुर निवासी सेठ हीराचंद
नेमचंद दोशी ग्रहण करेंगे । अधिवेशनके लिये
सब प्रकारकी तैयारियां चल रही हैं ।

कान्ग्रेसमें सेठीजी—कलकत्तेमें गत
कान्ग्रेसमें पं० अर्जुनलालजी सेठीके कष्ट
निवारणार्थ खास प्रस्ताव प्रमुखा श्रीमती एनी-
विसेन्टने तीसरी बैठकमें अंग्रेजी भाषामें खुद
पेश किया था जो सर्वानुमतिसे स्वीकार हुआ
था । इस प्रस्तावका भावार्थइस प्रकार है—‘यह
कान्ग्रेस वेल्होर (मद्रास) जेलमें अब पड़े हुए
जैन पंडित अर्जुनलाल सेठीका मामला समा-
पति द्वारा बहुत जरूरी समझकर कि
अपने धार्मिक सिद्धांतोंके कारण उनका
जीवन आहार न लेनेसे बहुत संकटमें है,
भारत सरकारसे प्रार्थना करती है कि वे बीचमें
पकड़कर उनकी जान बचावें ।’

‘श्रीगंधर्वास्ति महाभाष्य’ का
पता—श्री समंतमद्राचार्य कृत इस महान्
ग्रन्थराजका कहीं पता नहीं था और इसका
दर्शन यदि कोई महाशय करा दे तो स्व० दा०
सेठ मणिकचंदजीने (१०००) इनाम देना प्रकट
किया था । हमारे सेठजी तो इस अभिधापामें
स्वर्गपुरीमें प्रयाण कर गये और अतीव हर्ष
है कि पं० बंशीधरजी न्यायतीर्थ (सोलापुर)
को पृनाकी टकन कोलेम लायब्रेरीमेंसे ‘अन-

गार धर्माग्रत’ का पता लगाते २० इस महान्
ग्रन्थराजका पता क्रांतिक वर्ष ८ को लगा
गया है कि आस्ट्रिया (यूरोप)के वियेना
शहरकी लायब्रेरीमें रखे हुए दिगम्बर जैन
ग्रन्थोंकी सूचीमें इसी महान् ग्रन्थराजका नाम
है । इसकी प्रतिलिपि करनेको पं० बंशीधरजी
आस्ट्रिया जानेके लिये तैयार हुए हैं जो महा
सुद्धके अन्तर जा सकते हैं परंतु वहां जाने
आने, ठहरने आदिके लिये एक फंडकी आव-
श्यकता है जिसमें (१०००) तो सोलापुर निवा-
सी सेठ हीराचंद अमीचंद शाहने देना स्वीकार
किया है । करीब दो वर्ष तक ठहरने पर ही
नकल तैयार हो सकेगी जिसमें वरीब (१५०००)
लगना संभव है । श्रीमानोंका फर्म है कि
इसका शीघ्र ही प्रबंध कर देंगे ।

भारत जैन महामंडल और जैन
पोलीटिकल कान्फरेंस—हमारे भारत
जैन महामंडलका वार्षिक अधिवेशन कान्ग्रेसके
समय कलकत्तेमें श्रीमान् जैनधर्मभूषण ब्र०
शीतलप्रसादजीके सभापतित्वमें समारोहके
साथ हुआ था । इसमें छ० मा० तिलक और
दादासाहेब सावरडेने भी पधार कर वक्तों
दी थी । सभापतिका विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान
अन्यत्र प्रकट किया है जिसको हमारे पाठक
अवश्य २ पढ़ें । कुल ११ प्रस्ताव हुए थे जिनमें
सबसे महत्त्वका प्रस्ताव सेठजीके चारमें था
जिसको यहां हम अक्षरशः प्रकट करते हैं—
‘यह मंडल अपनी गाढ़ ध्रुवा और दृढ़ विधा-
ससे प्रकट करता है कि पंडित अर्जुनलाल
सेठी मर्वनया निर्दोष, धर्मपरायण, शिक्षाप्रेमी,



जैन जाति के नेता पंडित हैं और आशा करता है कि इस सीमा राजभक्त और शांतचित्त चुपचुपाती जैन जातिके हृदयको शांत करनेके अर्थ भारत सरकार पं० अर्जुनलाल सेठीको नजरबन्दीसे शीघ्र ही मुक्त करके अपना कर्तव्य पालन करेगी और नजरबन्दी कि वह मुक्त न किये जावें उनको किसी ऐसे स्थानपर जहां दिगम्बर जैनियोंकी संख्या पर्याप्त हो, रखेगी जिसमें वह अपना धर्मपालन करते हुए शरीर-रक्षा कर सकें। भारतवर्षीय सम्पन्न जैन जातिको यह मानकर घोर सन्नाह हो रहा है कि २० नवम्बरसे पंडित अर्जुनलाल सेठीने भोजन नहीं किया है क्योंकि उनके मूर्तिपूजाका कोई प्रबन्ध वेल्डोरमें नहीं किया गया जहां कि वह आजरुल नजरबन्द हैं। सम्पन्न जैन जाति और यह कांग्रेस देशनेताओंसे निवेदन करती है कि वह शीघ्र ही उचित प्रबन्ध करके इस जैन जातिके नेता और पंडितको नजरबन्दीसे मुक्त करा कर उनके कुटुम्बियों और जैन माइयोंको शान्तहृदय और चिर अनुग्रहीत करें।

जैन राजकीय कांग्रेसका प्रथम अधिवेशन भी इसके साथदा० सा० खाण्डेके सभापतित्वमें हुआ था जिसमें सभापतिने जैनोको खास उपदेश दिया कि वे राजकीय कार्योंमें अवसर हस्तक्षेप करें, इसीसे ही वे उन्नति कर सकेंगे। इसमें सेठीजीका उपरोक्त प्रस्ताव और कांग्रेस तथा मुसलिम लीगकी स्वराज्य स्कीमको स्वीकार करनेका ऐसे दो प्रस्ताव खाम मास हुए थे।

बम्बईमें मुनिजी—मुनिश्री अनन्त-कीर्तिजी महाराज यादार्थ शिवराजी जा रहें थे तब ता० १४-१२-१७को तीन दिन बम्बई ठहरे थे। मुनिजीके दर्शनके लिये खूब भीड़ रहती थी। आपने एक दिन हीराबागमें श्राविकाश्रमकी बाइयोंसे आहार ग्रहण किया था और एक दिन सेठ सुखानंदजीके यहां आहार ग्रहण किया था। इनके निरंतराय आहार होनेपर हमारे धर्मप्रेमी और दाती सेठजी इतने आनन्दिता हो गये कि आपने उसी वक्त ३१००) धर्मचार्यके लिये अलग निकाले। ता० १४को हीराबागमें मुनिजीका धर्मादेश हुआ था। नगरावस्था होनेपर पुलिस कमिश्नरने राजकीय कानूनसे महाराजको बाहर आनेकी आज्ञा नहीं दी। इसके लिये पूरा ९ आन्दोलन होना चाहिए और जैनी साधुओंको आवागमनमें बाधा न हो इस प्रकारकी आज्ञा सरकारसे ली जावे।

खास उपदेशक—स्व० दानवीर सेठ माणिकचन्दजीके दृष्टिके अनुसार 'माणिकचन्द हीराचन्द उपदेशक संस्था' स्थापित होकर कार्य प्रारंभ हुआ है। अभी पं० दौबेलि शास्त्री महाराष्ट्र प्रान्तमें दौरा कर रहे हैं। इसके मंत्री सेठ रावजी सखाराम दोशी सोलापुर हैं।

सवालालख रु० का दान—बम्बईके श्रे० जैन सेठ खेनशी खीयशीने १०१००१) निराश्रितोंको अन्न तथा वस्त्रदानमें, ५००१) कच्छी जैन बेटिंग, ५००१) कच्छी जैन बालाश्रम और १००१) फरगुशन कालेजको मिलकर करीब सवालालख रुपयेका दान अर्पण ही किया है।



कान्ग्रस और जैनी-आगामी बान्घे-
स देहलीमें कर्नल आमेन्न देहलीके भाइ-
ओंकी ओरसे हमारे आ० रायबहादुर बाबू
सुलतानसिंहजी रईम व० आ० मजिस्ट्रेटने
किया है और अभी ही देहलीमें
देहली और अजमेर प्रांतके लिये प्रांतिक
कान्ग्रस कमिटी स्थापित हुई है जिसके सभा-
पति हमारे रायसाहब बाबू प्यारेलालजी वकील
और एक उपसभापति रा० बा० सुलतानसिंहजी
ही नियुक्त हुए हैं । यह मार्केकी खबर है ।

रायबहादुरका अपमान-कलकत्तेसे
देहली स्टेशनपर आते ही रा० बा० लाला
सुलतानसिंहजीका एक गोरे सैनिक अपसरने
अपमान किया था जिसके उपर रा० बा० ने
मुद्दमा चलाया तो देहलीके मजिस्ट्रेटने
उस गोरे अपसरको २५ जुर्माना किया है ।
इस मामलेमें रा० बहादुरकी ओरसे चार
वकील उपस्थित थे, लोगोंकी बहुत भीड़ थी
और सबको आशा थी कि मजिस्ट्रेट साहब
बहुत कड़ा दंड देवेगा क्योंकि उस अपसरने
बिना कारण रायबहादुरके मुंहपर धूँसा मारकर
सड़मे तकको चुर २ कर डाला था और मुंह-
पर इजा भी की थी ।

महासभा का अधिवेशन आगामी ता०
२७-२८ को अंबाला छावनीमें उत्तमके समय
होगा, जिस वख्त भारत० दि० जैन महिला
परिवटन अधिवेशन होना भी निश्चित हुआ
है जिसके लिये श्रीमती मगनबाईजी प्रयास
कर रही हैं ।

कचनेरजी मेला और खंडेलवाल

सभा-श्री कचनेरजीके गत मेले महा-
ष्ट्रीय खंडेलवाल दि० जैन पंच मसपका ७-
८ वाँ वा० अधिवेशन खंडेलवालकुलभूषण
पं० घनलालजीके सभापतित्वमें हुआ था-
जिसमें जाति सुधार संबंधी अनेक उपयोगी
प्रस्ताव हुए और कचनेर पाठशालाके लिये
५०००) का चंदा हुआ था और कचनेर पाठ-
शालाका स्थान बदलनेका निश्चित हुआ जो
अमलमें आ चुका है यानी अब यह पाठशाला
औरंगाबादमें लाई गई है जहां अच्छा सुभीता
है ।

श्री हस्तिनापुरजीमें कार्तिक शुद्ध
१५ पर मेलेके समय श्री ऋषभ ब्रह्मवर्षाश्र-
मका वार्षिक अधिवेशन हुआ था जिसमें
आश्रमके लिये १३००) का चंदा हुआ
और आश्रमका स्थान मवानेमें लेनानेका
निश्चय किया और वहीं मकान बनवानेके लिये
१००००) की सहायता सेठ हुकमचन्दजीसे
लेनेके लिये इन्दौर डेपुटेशन लेननेका ठराव
हुआ था । आश्रमके अधिष्ठाता ब्रजवारी शीत-
लप्रसादजी और उपअधिष्ठाता ब्र० गेंदलालजी
हुए हैं ।

बम्बई आचिकाश्रमको अजमेरनि-
वासी रा० बा० सेठ नेमिचन्दजीकी ओरसे
१००१)की सहायता प्राप्त हुई है ।

सेठ अर्जुनलालजीके संत निवार-
णार्थ पालीताणाके धर्मप्रेमी वृद्ध मुनीप घर-
मन्दजीने १००) दिये हैं । हमारे श्रीमानोंसे
तो हमारे मुनीपजी चढ़ गये । जाति प्रेम
इसीका नाम है ।



स्वरो ज्ञा चूर्ण—इम चूर्णसे सघ प्रका-
रका ज्वर नष्ट होता है । सिर्फ आध
आनेका टिबिट जनेर मुफ्त मिशनेका
पता—भाऊनाथ कनैयालाल पाठणी—कांशी
(अहमदनगर)

शेड—छद्मती पाठशाळाचा अध्यापक बाळ
नाथराव शोभागयद गत इतिहास १६ ८ ने
दिने ध्येयधी जागिता श्रुत्य पागवाधी जे
पाठशाळाने तथा छद्मना बाळाने जेक जैनधर्म-
प्रेमी छत्तादी जालुनी जोड पडी छे. आ बाळ
धर्मेना जन्मभार तथा शुक्रराती जैन साक्षिसना
इदार भारे ध्येय प्रयास करता छता. आदि
पुत्राश्रुत शुक्रराती जापोतर जेथे लणी गया
छे, जे प्रकट थवानी नरर छे. शु शेड छद्म-
नाथ जालु आ जन्मने इदार बाळ नाथावासाना
स्मरणार्थे क्री जेना भक्त झेवने नदी करे ?

**मेरठ पाठशालाके लिये शिका-
यत—**इम भुवनराल जैन चेंकर मेरठ शहरसे
'अच्छी लखी' शीर्षक चिट्ठीमें लिखने
हैं कि—यहांकी दि० जैन पाठशालाके कार्य-
कर्त्ताओंमें मुख्य भाग जैनैनोंका है, धार्मिक
शिक्षा बराबर नहीं होती है, श्रद्धाके लड़के
क्यों लिये जाते हैं? अब कार्यकर्त्ता जैन
समाजसे १०००) मांग रहे हैं और स्कूलको
सर्कारमें रिक्रनाइज्ड करानेवाले हैं। क्या
समान इमने करमें कुछ विचार न करेगी और
अपनी एक धार्मिक संस्थाको इम तरहसे
गोकर सदाके लिये पश्चानाप करना पसंद
करेगी? मैं तो मसझा हूं कि कभी नहीं।
समान बिना विचार चन्दा देनेके लिये तैयार
नहीं होगी किन्तु सुवचन करनेके लिये विचार
करेगी।

एक लुप्तप्रायः तीर्थके

→ **उद्धारकी आवश्यकता ।**
करोड़ों रूपयोंकी संपत्ति,

सरकारके पास जाती है ।

तारीख १० नवम्बरको तीर्थक्षेत्र कमेटीकी
एक चिट्ठीसे मालूम हुआ कि 'देवगढ़ तहसील
ललिनपुर जिला झांसीके जैन मंदिर संयुक्त
ग्रान्तकी गवर्नमेंट अपने अधिकारमें लेती है।
इस आज्ञाका विरोध झांसीकी जैन पंचायतसे
होना चाहिये । तदनुसार मैं उसीदिन देव-
गढ़को अपनी आंखोंसे प्रत्यक्ष देखकर पश्चात
उचित कार्रवाई करनेके लिये देवगढ़ रवाना
हो गया। देवगढ़के लिये जालखौन जी. आई.
पी. आर. के स्टेशन पर उतरना पड़ता है।
जालखौन गांव स्टेशनसे ११ माईल है वहांसे
देवगढ़ गाड़ीके मार्गसे ८ माईल और पैदलका
मार्ग ६ माईल है।

देवगढ़ गांवसे रावत लोग पहाड़पर मंदिर
बतलानेके लिये मित्र जाते हैं। पहाड़ बहुत
ऊंचा नहीं है, श्री सोनागिरजीके समान ऊंचा
समझना चाहिये।

देवगढ़का वर्णन ।

देवगढ़की ऊंचाई तय करने पर एक दर-
वाज्य मिळता है। यह कोटका द्वार है। कोट
और द्वार दोनों ही खंडित हो रहे हैं। द्वारसे
चक्कर आध माईलके फासले पर एक और
कोट मिळता है। यह कोट मंदिरोंको घेरे हुए
था पर अब यह भी धराशायी हो रहा है।
इस कोटके अंदर सैकड़ों जैन दिगम्बर मंदिर
हैं। लाखों जैन मूर्तियां हैं। मूर्तियां ऐसी
मनोहर हैं कि मैंने तो आज तक इम अवयव-
की नहीं देखी। आधीसे अधिक मूर्तियां
अखंडित हैं। एक पाषाणका सहस्ररुद्र कैव्या-
लय है। बड़ा मंदिर शान्तिनाथ भगवानका है।



शान्तिनाथ स्वामीकी १२ फीटकी ऊंची खड़-
गासन मूर्ति है। ६-७ फीटकी कई हैं।
एक १० फीटकी भी है। करीब आधी
मूर्तियाँ खड़गासन हैं। शान्तिनाथकी मूर्ति
अतिशयवान भी है। जाखलौनके बड़े बूट
जैनियोंका कहना है कि इस मूर्तिको शिरके
ऊपरका क्षेत्रका पत्थर एक अंगुलके फासलेपर
था पर अब वह २ हाथके फासले पर है,
अर्थात् मूर्ति छोटी होती जाती है। यह उन
लोगोंका कहना है कि जिन्होंने एक अंगुलका
फासला अपनी आंखसे देखा है, किन्तु समतल
भागमें कुछ अन्तर नहीं पड़ा है। मूर्ति एक
मोहरके अन्दर है इससे इस मंदिरका नाम
मुसमंदिर भी है।

बड़े मंदिरें सब समूचे मालूम होते हैं कुछ
मरम्मतकी जरूरत है। किवाड जोड़ी किसीमें
नहीं है। दो मंदिर दुमंजले भी हैं। मंदिरोंपर
पुरानी चित्रकारीके बड़े अपूर्व नमूने हैं। दो
पापणके मानस्थंभ भी हैं। इनपर ऊसरकी
ओर चारों ओर चार मूर्तिएं हैं। एक मंदिर
पर संवत् १२०५ निर्माणकाल लिखा मिला
है। दो और मंदिरोंपर भी सम्भव देखा है,
पर वे इससे पुराने नहीं हैं। आठसौ वर्षके
पुराने मंदिर अभी तक समूचे रहनेका कारण
यह है कि यह सब मंदिर पापणके बने हुए
हैं। कुछ शिखरालोंकी नकल पं. नवारलाल
शास्त्रीजी नकल करनेके लिये अपने साथ
ले गये हैं, अभी वापिस आया नहीं। शास्त्रीजी
जैनगर्जने अपना लेख प्रकाशित करावेंगे उसमें
कुछ शिखरालोंका विवरण पढ़नेको मित्र नायगा
छोट मंदिरोंको अधिकांश गिर पड़नेसे अच्छी
२ मनोज और अखंडित मूर्तियोंकी बहुत

दुर्दशा हो रही है। वे मैदानमें खर उधर
बिखरी पड़ी हैं। वरसातमें जड़ जमनेसे,
घाससे आच्छादित हो जानेसे, मूर्ति-
योंसे रूख रंगमें भी अन्तर पड़ता जाता है।
शापद इसीसे सरकार इनको अपने अधिकारमें
लेना चाहती है। यह इरादा सरकारने एक
दफा पहले भी किया था और ३५ मूर्तियाँ
लखनऊके अजायब घरमें लेनाना चाहती थी
पर यह जाखलौनके पंचोंके उज्र करनेसे बच
रहीं, किन्तु इन्होंने अपनी आर्थिक अवस्था
अच्छी न होनेके कारण उस वक्तसे अब तक
मंदिर और मूर्तियोंकी रक्षाका कोई प्रबंध नहीं
किया इससे सरकारको पुनः अपना हुक्म निका-
लना पड़ा है। यदि अब भी इनकी रक्षाका
प्रबंध न हुआ और उज्जदारीके घमंडमें बैठे रहे
तो कोई परिणाम नहीं निरलेगा। अंग्रेज सर-
कारके यहां मरहटी बिस-बिस नहीं चलती।
वह आपकी ढीलपपोल देखकर अपना
अधिकार जमा लेगी जैसा कि उसने अभी
साफ तौरपर लिख दिया है "सरकार
अपने अधिकारमें लेती है, कोई बिना
सरकारी आज्ञाके उनके रूप रंगको न बदले
और न उनके आसपास कोई नया मंदिर
बनावे" ऐसा हो जानेसे आपको पूना बंदना
करनेमें भी अनेक प्रकारकी बाधाएं उत्पन्न
होंगी। मूर्तियोंको लखनऊके अजायबघरमें
ले जानेसे भी आप नहीं रोक सकेंगे। जितना
रुखा अब उनकी मरम्मतमें लग सकता है
उतना रुखा पीछे उज्जदारीमें खर्च कर देनेसे
भी उनका मिलना कठिन हो जायगा। अतः
शीघ्र चेतिये, अपनी करोड़ों रुपयेकी सम्पत्ति
की रक्षा कीजिए। प्राचीन मंदिरका जीर्णोद्धार



करा देना नये मंदिरके बनवा दें जैसा फल होता है इसमें ध्यानमें रखकर मित्राई, सेठ और श्रीमंत सेठ, जो इस अतिशय क्षेत्रकी रक्षा करनी चाहिए ।

केवल २५-३० हजारमें सब मरम्मत हो जायगी, शिवाह जोड़िए भी लग जायगी । किन्तु मंडित मूर्तियोंके लिये एक वहीं अनायचर और कोटकी मरम्मतके लिये तथा एक नीचे धर्मशालाके लिए अलग रकम की जरूरत होगी ।

यह स्थान बड़ा रमणीय वेतना नदीके तट पर है । इस किनारेको पाटी कहते हैं । सुभा हे पाटीमें एक पत्थरमें ७ दि० जैन मूर्तियाँ खुदी हुई हैं । यहापर पांडवोंकी भी मूर्ति है तथा एक शिवालय है । किन्तु पहाडपर शिवाय जनके दूसरे मन्त्री कोई मूर्ति ही है । इससे यह स्थान गार्ग्यम देवगढ़ तो है ही पर जैन गढ़ भी कहा जा सकता है । परम्परा हो जानेसे आशा है सरकार बहूतक पत्नी सदा बनवा देगी और पहाडक जगत्पर कुछ असेंसे कायम किया हुआ आना अचिन्तार भी उठा लेगी । इससे पुन कहता हूँ कि एक अतिशय क्षत्रका उद्धार काजिए, करोडों रुपयोंकी प्राचीन कीर्तिकी रक्षा कीजिए और जैनसमाजपर अपन देव म्यानोंकी रक्षा नहीं करोंका भवा मन लगने दीजिए ।

जिनको अपने धर्मका और द्रव्यतत्त्व का योगका अनुष्ठान है उन्हें देवगढ़क मदिरोंकी रक्षा के लिये शीघ्र एक बन्नी रजम निकालनी तीर्थक्षेत्र कमेटीको सुचना करनी चाहिये ।

विश्वभरदाम गार्गीय, यासी आसी ।

द्वादशानुप्रेक्षा ।

(वसन्ततिलका)

तू देख खोठार अनार दृष्टि प्यारे ?
ये जो कभी पुन गये नहीं आन हं वे ।
दे ओठ मान मनका जग है अनित्य,
व्यर्थ कथ्यमसि किं नर-जन्म मित्र ॥१॥
है मौनका तु जन आ बनना नफारा,
कोई नहीं तब बना सकता किसीको ।
कलहाकारि जगमें कर कार्य नित्य,
व्यर्थ कथ्यमसि किं नर-जन्म मित्र ॥२॥
ये देव शरक पशू नर योनि भाई,
तून घरी बहुत हे अरु हे गैवार ।
तू मान ले, सफल लेख एकको तो,
व्यर्थ कथ्यमसि किं नर-जन्म मित्र ॥३॥
मा, बाप, बन्धु, पुत्र, धार, व दास, स्वामी,
सम्बन्ध कोई इनसे तेरा नहीं है ।
आपा मुलाय फल नित्य ममत्वमें तू,
व्यर्थ कथ्यमसि किं नर-जन्म मित्र ॥४॥
तू है निरन्तर जिने प्रतिपालतारे ?
होता शरीर वह भी तुझसे निराश ।
तू एक मान जिनको अरु देह को ने ?
व्यर्थ कथ्यमसि किं नर-जन्म मित्र ॥५॥
दुर्गन्ध पुच्छ निज हे यह देह तेरा,
या यों कहो कि मत्त-मूत्र भरा पड़ा है ।
हो बायना रम भग्न इसमें मड़ा तू,
व्यर्थ कथ्यमसि किं नर-जन्म मित्र ॥६॥
मिन्यत्व, अन्न, प्रसाद उपाय योग,
य हे महा दुर्गन्ध आन्ध्र रूप भाई ।
ते शीघ्र रोक इनको करके प्रयत्न,
व्यर्थ कथ्यमसि किं नर-जन्म मित्र ॥७॥



है कर्म संवरण ही सुखका निधान;
हो बादमें न जिससे परतन्त्र आत्म ।
हैं कर्म रोक बहुते भव खो गये तू—
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर—जन्म मित्र ॥८॥
ज्यों योगसे अनलके जल नष्ट होता,
त्यों कर्मके प्रचयको शुभ ध्यान खोता ।
सद्व्यागसे विमुक्त हो, कर पाप कृत्,
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर—जन्म मित्र ॥९॥
दोनों पसार पद और ऋटि धार हस्त,
ज्यों हो खड़ा मनुज त्यों यह लोक चित्र ।
तू भेष धार “इसमें कर नित्य नृत्य,
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर—जन्म मित्र ॥१०॥

सारे सुयोग यदि जीवनमें मिलें भी,
पाया विवेक नहीं तो फिर व्यर्थ हैं वे ।
तू आत्म बोध नहि पाकर भूवितासे,
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर—जन्म मित्र ॥११॥
जैनद्वारे कथित, सत्य—शरणा धर्म,
शान्ति, क्षमा, विनयमूल, प्रशस्त—तर्प ।
ले शीघ्र धार मनमें काके प्रयत्न,
व्यर्थ कदर्थयसि किं नर—जन्म मित्र ॥१२॥

मोह-नामको नकुल-सम, बारह भाषत सार ।
भाकर नर पा अमरपद, हो जाने भवपार ॥
नोट नं० १—प्रत्येक छंदके चतुर्थ चरणमें
यह पद भी बोला जा सकता है—“सोवो
निरर्थक नहीं नर—जन्म मित्र”

नोट नं० २—“व्यर्थ कदर्थयसि किं नर—जन्म
मित्र ?” इस समस्याको प्रायः संस्कृत
पुस्तकें वं. गोपालदासजी शैवः कभी २

बोला करते थे, और इसको बनाकर उन्होंने
अपने एक मित्रकी विकट समस्या को हल किया
था, उसी समस्याको लेकर मैं तारु माधु-
नाके रूपमें यह तुकबन्दी लाई है, पहले गुरुजीके
जमानेमें “जैनमित्र” में “समस्यापूति” की
भी कुछ चर्चा रहा करता थी, जिससे पाठ-
कोंके मनोरंजनके अतिरिक्त विद्यार्थियोंका भी
लिखने पढ़नेका उत्साह बढ़ता था, जिससे
महाशयोंसे निवेदन है कि इस प्रथाको फिर
चलानेका यत्न करें। इस उपर्युक्त समस्याकी
पूर्ति चौर, श्रृंगार, कदम्बा आदि कई रसोंकी
रचना द्वारा हो सकती है, इसलिये यदि कोई
महाशय इसपर लिखनेकी कृपा करेंगे तो बहुत
उत्तम होगा ।

निवेदक—उपरावसिंह गंगायतीर्थ ।

चौरगांवमंजु (अकोला)के एक मौरामें
प्राचीन मन्दिर हैं जिसकी दशा बड़ी शोच-
नीय है। इसमें ११ खड्गासन और १९
पद्मासन प्रतिमा अति प्राचीन हैं। ऊपरसे मन्दिर
गिरकर मैदान हो गया है। इससे इसके जीर्णो-
द्धारकी आवश्यकता है। यहाँ पहले परदेवाड़ा-
वाले खंटेब्राल महाशयने आकर (१८९०)
नेत्रा किया था जो मर पाव है जिसमें (२००)
मैंने भी दिया था। और विदेव महाशयकी
आवश्यकता है तब ही कार्य शुरू हो सकता
है। परदेवाड़ाके और उनके ससतामके गिटे-
खण्ड भाईयोंको इसकी पूर्ति करना चाहिये ।

गंगाधर अजमेरा,

चौरगांव मंजु (अकोला)



ANALYSIS OF TATTVARTHA SUTRA.

BY -

Justice J. L. Jaini M.A., M.R.A.S., Bar-at-Law,

Judge High Court, Indore.

The book is an exposition of the 7 Principles of Jainism, i.e., the 7 *Tattvas*.

The opening *sutra* serves the purposes of an Introduction, Justification and Recapitulation of the whole book. It was necessary to indicate the position of the Principles (*Tattva*) in the whole range of Jainia Knowledge. They are the subject-matter of right belief, and the relation of the two cannot be appreciated fully, unless we consider the position of right belief in the scheme of Jainia philosophy. This position is indicated by the first *Sutra*. This brings us to the Justification also. The first purpose of everything Living is Happiness. Happiness to be worth anything must be eternal, faultless and independent. Such happiness is identical with the Jainia conception of Liberation. Right belief in and right knowledge of the 7 Principles, along with a life led in the light of the knowledge, and firmly established on the basis of the belief is the sole threefold one path of final and everlasting deliverance. Thus the first *Sutra* is a justification of the book which deals with these basic principles of belief and action. It is also a Recapitulation, because the whole book can easily be seen to be merely an expansion of the various aspects, details and developments of this mighty and all comprehensive *Sutra* of Jainism.

The ground-plan of the book itself admits of analysis as follows.

The whole book consists of 357 *Sutras*, divided into 10 chapters with 33, 53, 39, 42, 42, 27, 39, 26, 47, and 9 *Sutras* respectively.

Chapter I.

Sutra 1 introduces the Subject.

„ 2 defines Right Belief.

„ 3 gives the two means of acquiring Right Belief.

„ 4 develops the definition of Right Belief, and gives the names of the 7 Principles.

„ 5 gives the 4 different senses in which these names may be employed.

„ 6-8 develop the modes of acquiring *Adhigama* (Right knowledge).

Sutra 6 gives the two means of acquiring it.

„ 7-8 give the *modes* of employing these two means.

„ 9-32 deal with *Pramana*, the first means of acquiring knowledge (*Adhigama*).

Sutra 9-12 classify and name the *pramanas* or 5 kinds of knowledge.

„ 13-19 deal with Sensitive Knowledge, (*Mati jnana*), the first kind of knowledge.



- Sutra 13 gives the *Nirdeśa*, definition or description of Sensitive Knowledge.
- „ 14 gives the *Sadhana*, or means of acquiring it.
- „ 15 gives the *Vidhana*, or divisions of it.
- „ 16 gives its sub-divisions and thus the *Saṅkhyā*, or number of it.
- „ 17 limits the Scope of these sub-divisions.
- „ 18-19 give the exceptions.
- „ 20 refers to Scriptural Knowledge (*Sruta jñāna*).
- „ 21-22 refer to Direct Visual knowledge (*Avādhi jñāna*).
- „ 23-25 refer to Direct Mental knowledge *Manah paryaya jñāna*.
- „ 26-29 deal with the subject-matter of the 5 kinds of knowledge.

Sutra 26 of Sensitive & Scriptural.

- „ 27 of Direct Visual.
- „ 28 of Direct Mental.
- „ 29 of Perfect (*Kevala*).
- „ 30 gives the extent (*Alpa Bihutva*, Less or more), combined with number (*Saṅkhyā*), and habitat (*Svāmītvā*) of the 5 kinds of knowledge.
- „ 31-32 deal with wrong knowledge.

Sutra 31 gives its three kinds.

„ 32 defines wrong knowledge.

„ 33 deals with *Naya*, the second means of acquiring *Adhigama*, or knowledge.

Chapters II-IV.

Chapters II, III & IV deal with the first Principle only, namely with *Jīva* (the Living Substance) or Soul.

Chapter II treats of Soul generally; of its nature, differentia, classifications, processes of incarnation, bodies, and sex. It treats of Life here and hereafter in the world.

Chapter III treats of the hellish, human, and sub-human beings, and of the regions occupied by them.

Chapter IV treats of the various orders of celestial beings, and of the regions in which they live.

Chapter II.

Sutras 1 to 7 deal with the thought-nature of *Jīva*.

Sutra 1. gives the classes of thought-natures.

Sutra 2 gives the number of sub-divisions.



Sutra 3 names the sub-divisions of 1st thought-nature.

Sutra 4	"	"	2nd	"
5	"	"	3rd	"
6	"	"	4th	"
7	"	"	5th	"

Sutras 8-9 give the differentia of *Jiva*.

Sutra 8 names it.

" 9 classifies it.

Sutra 10 classifies the *Jivas* into Mundane & Liberated.

Sutras 11-24 deal with the Mundane Souls.

Sutra 11 and 12 give their classes.

Sutra 11 According to whether they have mind or not.

Sutra 12 According to the number of their senses :-
Sthavara with 1 sense. *Trasa* with more.

Sutra 13-20 deal with this

Sutra 13 gives kinds of *Sthavara*

3-1 *asthavad*

Sutra 14 gives kinds of *Trasa*

Sutra 15-20 deal with the senses.

Sutra 15 gives their number.

" 16 gives their 2 classes.

" 17 subdivides the 1st class.

" 18 subdivides the 2nd class.

" 19 names the senses.

" 20 subdivides their functions.

Sutra 21 gives the function of mind.

Sutras 22 & 23 give the *Svāmītra* of the senses.

Sutra 22 of 1 sense.

" 23 " others

Sutra 24 gives the *Svāmītra* of mind.

Sutras 25-30 deal with the transition of the soul from one condition of existence to another.

Sutra 25 gives the concomitant of transmigration.

Sutra 26 gives the character of transmigration.

Sutra 27 gives the character of Liberated souls.

Sutra 28 gives the character of Mundane souls.

Sutras 29-30 give the time of transmigration.

Sutras 31-35 deal with the different kinds of birth.

Sutra 31 gives the kinds.

" 32 " " different embryos

" 33 " " *Svāmītra* of 2nd kind of birth.

" 34 " " " 3rd " "

" 35 " " " 1st " "



Sutras 36-49 deal with the various bodies.

Sutra 36 gives names of bodies

„ 37 „ their distinctions.

„ 38-39 „ „ constitution.

„ 40-41 „ the capacity of the last 2 bodies.

„ 42 „ „ *Samitva* „ „ „ „

„ 43 „ „ number of bodies with a Soul.

„ 44 „ a special quality of the "last body."

„ 45-49 „ the *Samitva* of the bodies.

„ 49 deals with the 3rd body.

Sutra 50-52 deal with the sexes of the different *Jivas*.

Sutra 53 names the *Jivas* whose mundane life cannot be cut short.

Chapter III

Sutras 1-6 describe the hells.

Sutra 1, names the 7 earths i.e., the 7 parallel planes of earth below ours.

„ 2, gives the number of hells in each earth.

„ 3-5, describe the hellish beings

„ 6, gives their ages.

Sutras 7-39 describe the *Madhya Loka* or middle regions, the abode of human & subhuman beings.

Sutra 7 names the Oceans & continents.

„ 8 gives their form & dimensions

„ 9-32 deal with *Jambudvīpa*, the central continent, which contains us.

Sutra 9 gives its dimensions.

„ 10 „ „ 7 divisions.

„ 11 „ „ 6 mountains, which make the 7 divisions.

„ 12-13 describe the mountains.

„ 14 names the 6 Lakes on them.

„ 15-16 give the dimensions of the 1st Lake.

„ 17 describes the island in it

„ 18 gives dimensions of other lakes & islands.

„ 19 describes the goddesses of the 6 islands.

„ 20 names the 14 rivers which rise from the 6 lakes & traverse the 7 divisions, 2 in each division.

„ 21-2 name the direction in which the rivers flow & fall into the Ocean.

- " 22 gives their thought-colours
- " 23 gives the limits of the 2 divisions.
- " 24-25 deal with the *Laukantikas*.
- " 26 deals with the 4 *Anuttaras*.
- " 27 defines the sub-human species.
- " 28-42 deal with the ages of celestial beings.
 - " 29 gives maximum age of Residentials.
 - " 29-32 give maximum age of Heavenly beings.
 - " 33-34 gives minimum age of Heavenly beings.
 - " 35-36 gives minimum " " hellish beings
 - " 37 gives minimum " " Residentials.
 - " 38 gives minimum " " Peripatetics.
 - " 39 gives maximum " " Peripatetics.
 - " 40 gives maximum " " Stellars.
 - " 41 gives minimum " " Stellars.
 - " 42 gives age of *Laukantikas*.

Chapter V.

It treats of the Ajiva (Non-Soul) Tattva.

- Sutras 1-3 give the 5 *Astikayas*, which are *Dravyas* also
- " 4-7 describe them, *Nirdesa*.
 - " 8-11 give the *Sankhya*, number of their *pradesas*.
 - " 12-16 give their *ksatra* & *sparsana*.
 - " 17-22 give their functions.
- Sutra 23 gives the definition (*Nirdesa*) of matter.
- " 24 gives the kinds of conditions of matter.
 - " 25 gives the 2 kinds (*vidhana*) of matter.
 - " 26-28 give the Cause (*sadhana*) of the 2 kinds.
 - " 29-30 give the definition of Substance.
 - " 31 gives the meaning of Permanence.
 - " 32 gives the mode of dealing with contradictory attributes in the same substance
 - " 33-37 give the rules of atomic combination to form molecules
 - " 38 gives another definition of Substance.
 - " 39-40 deals with Time as a Substance.
 - " 41 defines Attributes.
 - " 42 " Modifications.

Chapters VI & VII deal with *Acrava* or Inflow.



Chapter VI

It deals with Asrava generally.

- Sutras 1-2 define Inflow, in its 2 aspects of Subjective (*Bhūta*) & objective (*Lava*) Inflow
- " 3 classifies Inflow into (*Punya & Pap*) *asrava*) merit and Demerit Inflow.
- " 4 gives *saṃmitra* of Inflow & its *Vidhana*.
- " 5 gives *vidhana* of *Samprayika* (mundane) Inflow.
- " 6 gives *Sadhana* of *Samprayika*.
- " 7 gives *Vidhana* of a *Sadhana* or cause named *Adhikarana* (*Jiva & Ajivadhikarana*)
- " 8 gives *nirdesa* & *vidhana* of *Jivadhikarana*.
- " 9 gives *nirdesa* & *vidhana* of *Ajivadhikarana*.
- " 10-27 give cause of *Asravas* of the 8 *Karmas*.

Sutra 10 gives the *Sadhana* of knowledge & cognition-obscuring *karmas*.

- " 11 gives *Sadhana* of Pain-feeling *Karmas*.
- " 12 gives *Sadhana* of Pleasure-feeling *Karmas*.
- " 13 gives *Sadhana* of right-belief-deluding *Karma*.
- " 14 gives *Sadhana* of right-conduct-deluding *Karma*.
- " 15-21 gives *Sadhana* of age *Karmas*,

Sutra 15 of hellish beings.

- " 16 " sub-human "
- " 17-19 " human "
- " 20-21 " celestial "
- " 22-24 gives *Sadhana* of Body-making *Karmas*.
- Sutra 22 for (brd) *asubha* *Karmas*.
- " 23 " (good) *subha* "
- " 24 " *Tirthankara* "
- " 25-26 gives *Sadhana* of family-determining (Status)
- " 25 for low-family-determining (Status)
- " 26 for high-family-determining (Status)
- " 27 gives *Sadhana* of Obstructive *Karmas*.

Chapter VII.

Sutra 1 gives *Nirdesa* and 5 *vidhanas* of *Vrata*, vow.

- " 2 " 2 *Vidhanas* "
- " 3 " 5 *Sadhana* for each vow.
- " 4-8 " the kinds of 5 *Sadhana*s.

Sutra 4 " " " " " for 1st vow

" 5 " " " " " 2nd "



"	6	"	"	"	"	3rd	"
"	7	"	"	"	"	4th	"
"	8	"	"	"	"	5th	"

" 9-12 " more sadhanas:

" 13 " Nirdeśa of subject-master of 1st vow.

" 14 2nd ...

" 15 3rd ...

" 16 4th ...

" 17 5th ...

" 18 Nirdeśa of a man with vows, *Vrati*.

" 19 Vidhana

" 20-22 Nirdeśa of a man with partial vows.

" 23 Sadhana, of a *Vrati*.

" 24-37 gives 5 Sadhanas for each of the 5 Vidhana of vows and 7 of a *Vrati*. And 5 for Peaceful death.

" 38-39 Nirdeśa of Charity.

Chapter VIII.

It deals with Bondage.

Sutra 1 Sadhana of Bondage

" 2 Nirdeśa of "

" 3 Vidhana of " 4 kinds

" 4 Nirdeśa and 8 Vidhanas of 1st kind

" 5 gives number of these 8 Vidhanas

" 6-13 " names of classes of these 8 Vidhanas

" 14-20 " the Vidhana of the 2d kind

" 21-23 Nirdeśa of the 3rd kind

" 24 " " 4th "

" 25 Nirdeśa and vidhana of *Punya*

" 26 " " " of *Papa*

Chapter IX.

It deals with Stoppage and Shedding.

Sutra 1 Nirdeśa, of Stoppage.

2 6 Sadhanas of "

3 1 " " " and of Shedding.

4 Nirdeśa and Vidhana of 1st Sadhana.

5 2d ...

6 3d ...

7 4th ...

8-17 deal with the 5th Sadhana



Sutras 8 gives Nirdeśa

9 " Vidhāna.

10-12 " Svāmītya.

13-16 " Sādhanā.

18 " Sthiti and Adhikarāna.

18 Nirdeśa and Vidhānas of 6th Sādhanā.

19-44 deal with the 7th " (Tapa).

Sutra 19 Nirdeśa and 6 Vidhānas of External austerity (Tapa).

" 20 " " " Internal "

" 21-25 Vidhānas of 5 " " "

" 22-26 Nirdeśa and vidhānas of these 5 Vidhānas.

" 27 Nirdeśa and Svāmītya; and Sthiti of the 6th Internal tapa, i.e. Concentration.

28-44 Vidhānas of Concentration.

29 Nirdeśa of the 4 " " "

30-33 " and Vidhāna of the 1st or Arta concentration.

34 Svāmītya.

35 Nirdeśa, Svāmītya and Vidhāna of 2nd.

36 " " and Vidhāna of 3rd.

37-8 Nirdeśa, Svāmītya and Vidhāna of 4th.

39 Names of 4 Vidhānas of 4th.

40 Sādhanā and Adhikarāna of these 4 Vidhānas.

41-44 Nirdeśa of the first two of these 4 Vidhānas.

45 give Svāmītya and Sthiti of Shedding.

46 Nirdeśa and Vidhāna of Nirgrantha.

47 Sādhanā of Nirgrantha

Chapter X.

Sutra 1 Sādhanā of Perfect Knowledge.

2-4 " and Nirdeśa of Liberation.

5 Adhikarāna of Liberation.

6-8 Sādhanā of this Adhikarāna.

9-12 Sādhanā and Vidhānas of Liberated Souls.

The Scope of the Book.

As to the Scope of the contents of the different chapters, the following analysis may be useful.

I.

Sutras.

4,5,6,7,8, Categories and Predicables & Logic.

9-33 Pramana. Psychology, Induction, Deduction, Logic.

II.

1-10 Metaphysics.

11-12 Psychology. 13-22 Mineralogy, Physics, Zoology.

15-20 Physiology and Anatomy

21-24 Psychology.

23 Zoology. Psychology.

25-30 Transmigration. (Theology).

31-35 Embryology. (Theology-Hellish and Celestial beings.)

36-43 Physiology. Anatomy. Theology (Angels.) Physics (Electric body.)

50-53 Physiology " " "

III.

1 Mineralogy and Geology.

2-6 Theology (Hells)

7-35 Geography. 36-89. Anthropology.

IV.

1-12 Heavens. Theology; and Astronomy (12, 13, 14, 15)

V.

Metaphysics. Physics. Chemistry (25-28) Space 1,4,6,7,9,12,18 Matter 1,4,5,10,
11,14,19,20,23,28 33,37

Time 22,39,40. Heat 23

Motion { 1,4,5,7,8,13,17 Light 23,24.

Rest { Sound 24,19.

Soul 3,8,15,16,21.

Substance 29,30,31,38,41,42.

VI.

Psychology-Connection between mind and matter. (The mighty influence of
mind on matter).

VII.

Ethics in the light of Psychology.

VIII.

Physics and Psychology. Kinds and Character of Connection between mind
and matter.

IX.

Asceticism in the light of Psychology and Physics-Psychology.

X.

The GOAL



OPTIMISM OF LIFE.

(By Herbert Warren, 81 Shelgate road, Batter sea, London S. W.)

Some of our suffering is caused by ourselves. If I have a sore knee through carelessly getting off a moving omnibus, the suffering is due to my own action. Is all our suffering caused by ourselves? If not, we must assume the possibility of suffering without causing it: is such an assumption rational? It is very common, and is the cause of much pessimism; but upon reflection it will be seen that it is not reasonably tenable; for it would be against the law of justice, and there would be no guarantee against suffering, we should always be liable to be the victims of circumstances. If by being careful we can avoid suffering, then it is impossible to suffer if we are careful to avoid it; this means that it is not possible to suffer without having a hand in bringing it about. So we must conclude that all our suffering is caused by ourselves.

It is necessary to remember, however, that events have two causes, namely, the substantial

(upadana) and the instrumental (nimitta); and when we say that all our suffering is caused by ourselves it means that it has ourselves as its substantial cause; we cannot be the instrumental cause of our own suffering; in order that we may suffer there must be some not-self thing or being acting upon us. And when we suffer something which we cannot connect up with any action of our own as its substantial cause, we are apt to blame the instrumental cause, especially if it be a person or other living being. It would be absurd to blame the earth for hurting our knee, and it would not be proper to blame a cat if we tease it and it scratches us in return; the earth will not hurt us if we are careful, nor will the cat scratch us.

If we are to believe that all our suffering is caused by ourselves, we must believe in the extension of our life backwards into the past before our birth here; because there are many things we suffer in this life which cannot be accounted for by anything we have done in this life. This is especially the case in young life, such as where kittens die from starvation through being born to a cat without milk; it is



impossible to explain such a case by anything done by the kittens in this life. But this belief in previous existence is certainly preferable to the belief that we suffer without causing it. It is sometimes objected to on the ground that we do not remember it. But this fact is not proof; during sleep we do not remember the previous day's existence.

The search for an explanation of suffering is one of the main themes of philosophy; and if we believe our suffering to be caused by ourselves, then we have an explanation of it. When we know the cause we have the explanation,—that our sore knee, for instance, is due to falling down,—and we do not go on asking questions as to why were we born to suffer, why is God so unkind as to let us have a sore knee, and so forth. On the other hand, if we do not believe that our suffering is caused by ourselves, then we shall find it difficult to get a satisfactory explanation of the suffering. If we are the causes of our own suffering, then we need not repeat the causes, and consequently need not suffer. This is surely an optimistic view.

Is optimism possible while the world suffers? This is perhaps

a side issue, but it may very well be brought in at this point. Is it possible for one man to be happy while he knows that another is miserable? Is it possible for one soul to be enjoying the blissfulness of heaven while he knows others are suffering the torments of hell? While we are the cause of our own suffering, we are to a large extent the instrumental cause in the suffering of others; and anybody who sees to it that he does not inflict cause, or consent to the suffering of any other being will be able to be optimistic; he will know that he is not and will not be instrumental in the world's suffering. And he will relieve such suffering as he can. Also, pity, sympathy, etc., are not contradictory of optimism, a state of pity is not a miserable state.

If, then, we stop renewing the causes of our suffering, we shall not suffer, and life will be entirely enjoyable. In order to stop the causes, we must know what they are; and one of the chief ones is himsa or being instrumental in the suffering of others. Generally speaking, if we know that some particular kind of action causes us pain, we stop it. Others have found out what



activities do cause pain, and have stopped them; and have given us the benefit of their discoveries. These are embodied in the ordinary moral codes, that is to say, we stop the causes of much suffering by practising kindness, truthfulness, honesty, morality, and contentment with limited possessions.

Much of the suffering we endure is the result of something we have enjoyed doing; so to stop the causes means in some cases to stop doing something we enjoy doing. And here comes in difficulty.

After we have left off repeating those activities which cause suffering, we have to wait until the old effects have worn off, and here comes in the question of the possibility of getting rid of the effects more quickly than they would naturally take. This possibility is illustrated by the tale already elsewhere mentioned of a man who had just committed a murder and was walking through a wood carrying the head of the person whom he had just decapitated. He came across a meditating monk, and said to this monk, "Now tell me what my proper duty is. I have just committed this

murder, and if you do not tell me I will cut your head off too."

The monk did not wish to be killed; he uttered three words of duty, namely, concentration, self-control, and stopping the inflow of karma, and then, having the power of levitation, rose up and disappeared. The murderer had heard of these things in his youth; he stood still and began to think; his body was more or less smeared with blood, ants crawled up and eat into his body; he went on meditating, and in about half an hour all his karmas worked out and he was in the final condition of blissfulness called Moksha. This undoubtedly would be an exceptional case, but it would show the possibility. The theory upon which these things are based is that the soul is already in existence in each living being, complete; it does not have to be constructed; it is choked up with dross and as soon as this is removed, be it done a minute or a million years, the soul is clean and pure, with all his qualities liberated, no more ignorance, no more mistakes.

If all our suffering is due to something we do or have done, if we never suffer anything which we have not started,

then if we cease renewing the causes, our life will be entirely enjoyable as soon as the effects of past wrong actions have exhausted themselves. We none of us have any knowledge of a life which is entirely enjoyable; such a thing is necessarily for us a matter of inference, hope, belief, faith; but there are one or two facts which support the belief. First, life at present is not altogether painful, part of it is enjoyable; and so we can conclude to the possibility of a life entirely so. Secondly, pain is always resented, and looked upon as an intruder; we always try to avoid it, and there is in the mind the permanent though perhaps unrecognized conviction that life ought to be entirely free from pain and misery; we instinctly take it for granted that pain is wrong an something to be got rid of. And we do not, according to Jainism, have to cease to exist in order to avoid it.

It may perhaps be as well to mention here that our present actions are not the effects of past actions. It is our present sufferings which are the effects, the reaction upon us of the not-self universe; our present actions are free at every moment. If

our present life is the effect of our previous life or lives, and is therefore necessarily what it is; and in its turn becomes the cause of our future life, then there would be no hope; but the relation of cause and effect does not subsist between actions and subsequent actions; it subsists between actions and subsequent experience or reaction upon us. Action is free.

So it would seem that by believing that there is the relation of cause and effect between our doings and our experiences, and that by ceasing to renew the causes of suffering and so come into an entirely enjoyable life,—by so believing and acting accordingly it will be possible to be optimistic in spite of all the pain and misery that there are in life.

H. WARREN.

London.

NEW PUBLICATIONS.

Dravya Sangraha (Ill.-td.)	Rs. 5-0
Key of Knowledge	„ 10-0
Outlines of Jainism	„ 3-0
Jain Law	„ 0-12

Can be had from,

Manager,

Digambar Jain Poostakalaya,

Chandavadi-SURAT.



Lakhimpur
30-11-17.

To,

FRIENDS OF THE JAIN COMMUNITY.

My dear friends,

The day of activity has dawned in the world. People of other nations have not only shaken off their slumber and got up from their leeds, but are actually busy with their ploughs in making the soil of thoughts fertile. They have joined hands for the common weal and are helping their neighbours if they are short of ower or the plough. This co-operation is not a new thing in India. It has been in existence in all its villages from time immemorial. The dawn has, however, given a new life to it. They are all very busy for common good and are gradually banishing the idea of private property of dark ages. Some are engaged in weeding and some in irrigating the soil; some are making new plantations and some are working as partners of a common firm.

You also awake and arise and have your share of work in the common struggle against the evil spirits which take pleasure in ruining the fruits of all labour

towards making the field refreshing green-pleasant and useful. Your sleep too has not been undisturbed by them.

Now rub your eyes and see what is going in all around you. The *afimehi* (opium-eater) China is also on her legs and has shaken off narcotic influence. Democratic spirit has infused a new life into it. The battles of freedom and justice are being fought all over the world against tyranny and oppression of the Control Powers. Evil spirits are being quickly banished. Even in India the Moslems and Hindus have started a Limited Company for certain common objects. No religious animosities stand in their way. Its branches and off-shoots are spreading all around and making the growth of the mish-rooms and fungi impossible. Fortunately some of the shares are yet to be sold and unless you hasten to purchase them even with a premium, you lose your opportunity for ever. Your Capital (the potential energy) will remain buried under ground. It will bring no interest and is likely to be lost for all generations to come; as often this upheaval they will not be in a position to dig it out and spend it on useful purposes.



The Svetamber Jain Conference, the Digamber Jain Mahasabha, the Sthanakvasi Jain Conference, the Svetamber Graduates' Association, the Svetamber Jain Association of India, the Maharashtra Digamber Jain Sabha, the Madras Jain Association, the Arrah Central Jain Publishing House, and Jain periodicals and newspapers are different parts of your body and their movements show that your corporal body is still active. This indicates that you have got life and are not yet dead. There is still hope that you will recover from torpor sooner or later. This emboldens one to predict that re-birth will not be necessary for fresh activities. There is hope of renewed energies in this very life.

However, your spiritual and ethereal self are not working. You cannot be said to be awake when they are asleep. Drums in the form of public meeting and agitations are beating near you. It is wonder that you are even then unaware of the fact that the sun has risen up; and you still on your bed like the Delhi Mogul Emperors of the nineteenth century.

During your sleep the community has lost many jewels

which are now shining in other places and forming an ornament to them. It has lost its respect in the eyes of the Government, in the eyes of other communities, nay, in the eyes of even its own people. It has been censured, maligned, & severely criticised. It is considered to be a thing of no consequence in the comity of nations and in the arrangement of nature. It is regarded as a useless freak of nature on the surface of the earth. You are responsible for this state of things. God helps those who help themselves. Seeing that you do not care for them, they have also deserted you. Indra has reserved its shawess of blessings for others. Varuna does not fertilize your soil. Sarasvati is playing on the harp of your opponents. Eloquent speeches are not therefore your spare. Important office of state are too high for you. The cabinet and the Council do not find you worthy of their society. The Hindus are obliged to believe that your name on the list of members is only a vecenary vil in the court of the Hindu University. You cannot enlist yourself even among the followers, nothing to say of being a leader or a commander. The total annihilation is there



at the rate of about one percent a year. 200 much sleep naturally shortens life.

Arise and be awake, therefore, if you want to have your place in the world. Remember, you are Jains, the followers of Jinas—those who conquered those evil spirits that were a plague to the whole world, a curse to gods, and a trouble to *Allah*. Think for a while of the potent strength in you which is lying dormant. The world wide war which is making a havoc in the world might have been over long since by the melodious heating of your peaceful heart. Young hearts and old heads might have cooperated in putting an end of it. But, alas! you are asleep. The Jain papers are slow in publishing what is useful to peace & welcome news of hair splitting which add, fuel to fire. What a great fall! mutual admiration, co-operation & support in times of need are things of the past for the Jain Community. However, there is yet time. Other people have made the iron pot. It is your duty now to strike while it is hot. If it grows cold, no human labours will be able to mould it into the desired and useful shape.

Arise and be awake, Life may not become extinct. Work for the salvation of the world if you want to have your salvation.

Yours Cordially,
Chaitandas

(one devoted to the spirit of the world and the heavens.)

कुमार देवेन्द्रमसादजी द्वारा प्रकाशित—
अंग्रेजी और हिन्दी भाषाके सर्वांगसुंदर

नये २ ग्रन्थ ।

Rs. n.

The Key of Knowledge

(by Champat Ray Jain) 10-0

Out Lines of Jainism (J. L. Jaini) 3-0

Dravya Sangraha (S. C. Ghosal) 5-0

Paramatma-Prakash (B. Rikhabdas) 2-0

The Practical Path... .. 2-0

Warren's Jainism 1-0

Dictionary of Jain Biography ... 1-0

Naya-Karnika (Mohanlal D. Deshai) 0-8

The Jaina Law (J. L. Jaini) ... 1-4

Science of Thought (Champat Ray) 0-8

Nyayavahara (Satish Chandra V.) 0-8

Jaina Jem Dictionary 1-0

Pure Thoughts, (Samayik Path) 0-2

उपदेश-रत्नमाला ॥) शान्ति धर्म १=)

धार्मी-कर्म-प्रकाश १) प्रेम-गुणपञ्जलि ॥)

प्रेम-कली ?) बालिकाविनय =)

त्रिवेणी =) भावना लहरी =)

सच्चा विश्वास (महात्मा गांधीकृत) =)

सत्वा-धर्म १) ऐतिहासिक क्षियां ॥)

मिलनेवा पता—

मेनेज, दि० जैन पुस्तकालय-सुरत ।



मनुष्यके लिये प्रत्येक समाजमें अपना व्यवहार शुद्ध और हितानुकूल रखना बड़ा कठिन कार्य है, परन्तु विचार करके देखा जाय तो मनुष्य जीवनका सारा दारमदार इसीपर निर्भर है । जो लोग प्रति समय अपने आपको स्थिर नहीं रख सकते वे व्यवहारमें बड़ी-२ गलतियाँ कर डालते हैं । जो कि जन्मभर उनके लिये कष्टक स्वरूप खटकती रहती हैं । हमको हर समय इस बातका पूरा ध्यान रखना चाहिये कि कोई गलती कभी हमसे न होने पावे । यद्यपि ऐसा होना अत्यन्त कठिन एवम् असंध्य है कि मनुष्य सदैव एकसा योग्य आचरण करता रहे । कभी भोजनके समय एक प्रकारके भाव रहते हैं कभी अन्य प्रकारके भाव रहते हैं, कभी शयन करते समय वैराग्य रहता है, कभी रागांश रहता है, परन्तु तौ भी जो मनुष्य अपने अन्तरंगमें असावधानीसे बचनेका उपाय सोचता रहता है वह अनुचित गलती कभी नहीं कर सकता । यद्यपि कषायोंके उदय-से परिणामोंमें किञ्चिन् हेरफेर होता रहता है तथापि कषाय उसके इननी प्रवृत्त नहीं हो सकती जिससे कि वह कोई बड़ी गलती कर बैठे । अतएव हम लोगोंका प्रथम कर्त्तव्य है कि हम अपने अग्राहकोंको सुघोर । कभी अपने मन वचन कायसे कोई अर्थ वितण्डावाद न होने दें ।

बहुतसे मनुष्य यह सोचते हैं कि हम सम्य हैं । हम कभी गाली गुफ्तार नहीं करते तौ भी नौकरको कभी २ जाँच वे जाँच डाँटनेमें या जोरू (खी) को कभी २ दो चार धौल तमाचे मारनेमें क्या हर्न है, हमारा छे छमासेका क्रोध कुछ हानिकारक नहीं होगा इत्यादि २ परन्तु विचार करके देखा जाय तो प्रति समयका वर्त्ताव मनुष्य जीवनमें हेरफेर करता है ।

किसी मनुष्यको यदि हम एकदिन क्रोध या ईर्ष्यादिके वश कुछ मर्मभेदी वचन कह डालें तो हम तो क्षणभरके पश्चात् शान्ति सुखमें आकर सब भूल जायेंगे । परन्तु जिस मनुष्यसे मर्मभेदी वचन कहे गये हैं वह बहुत दिन तक नहीं भूलेगा । सम्भव है कि जन्मभर न भूले । इससे यह होगा कि वह अपने हृदयमें सदैव हमारी ओर घृणाकी दृष्टिसे देखेगा तथा समय-२ पर अन्यान्य लोगोंसे भी हमारी मन-मानी निन्दा करेगा । इस एक ही समयके क्रोधसे सैकड़ों मनुष्योंमें हमारा अपयश फैल जायगा । इसी प्रकार अनेक ऐसे व्यवहार हैं जिन्हें असावधानीसे मनुष्य क्षणिक समय तक करता है और बहुत समय तक फल भोगता है ।

हमारी बहुतसीं भोली बहिनें प्रथमावस्थामें अपने पति पुत्रादि मनुष्योंसे कोई परकी वस्तु छिया लेती हैं या झूठ बोल बैठती हैं बस फिर चाहे वे अपने इस अग्राहकोंको बार २ काममें न लायें या छोड़ ही दें परन्तु उनका जो गौरव चट्टा जाता है वह फिर वापिस नहीं आता ।



पृथ्वी पर जितना मान या जितनी इज्जत आग्रह है, वह सब व्यवहारके बल पर ही खड़ी है। अहा; वह मनुष्य किनना धन्य है जिसने अपना व्यवहार हर समय और हर मनुष्यके साथ समुचित रीतिसे सदा पालन किया हो।

मनुष्य उचित रीतिसे संसार यात्रा पूरी करे तो कर्मबन्ध भी बहुत कम होता है। सदैव क्रोध, मान, माया, लोभ, इन चार कषायों की तेजीसे बढि और मन्दतासे मन्द बन्ध होता रहता है। यदि मनुष्य एक बार १ क्षणके लिये भी तीव्रतर कषायोंमें मग्न हो जावे तो करोड़ों वर्षोंके लिये अशुभ कर्मोंका परदा आत्मा पर आ जमता है, नर्क निगोदके दुःख भी यही कर्मबन्ध सहन कराता है।

अपनी समाजमें मनुष्यके कर्त्तव्यका ज्ञान अत्यन्त कम है, यही कारण है कि घर २ में कलह फूट दीखती है, तथा अनेक घृणित कार्य नित्य प्रति सुने जाते हैं। जो लोग विद्याहीन हैं उनकी तो बात ही क्या परन्तु नाममात्रके स्वाध्याय करनेवाले और अपने आपको योग्य समझनेवाले नरनारी भी योग्यायोग्य मिश्रित व्यवहार करते हैं। शर शास्त्र भी सुन आए, मन्दिर भी हो आए, उबर घरमें आकर भोग, तमाखू, ताश, जुआ आदि सभी करने लगते हैं।

इस व्यवहारका यह फल होता है कि पढ़े लिखे मनुष्योंकी साख भी पृथ्वीसे उड़ी जाती है।

अतएव समस्त सुज्ञरक्षु ! एवं बहिनोंको चाहिये कि अपने प्रत्येक कार्यको शुद्धतासे

करें। यदि धर्मात्माओंमें गणना कराई है तो अपने बचनोंको सदैव मिष्ट हितकर बोलनेका प्रयत्न करना उचित है।

और हृदयको शुभ चिन्तनकी तरफ खींचना उचित है। तथा शरीरसे यदि बहुत परोपकार न हो सके तो न सही परन्तु दूसरोंके सतानमें व कुशीलादि घृणित कार्योंमें कभी नष्ट न करना चाहिये।

यदि किसीको शिक्षा भी देनी हो तो सरलतासे गंभीरतासे दो। अपने व्यवहारमें कालिमा मन लगाने दो।

व्यापारादि गृहस्थीके कार्यकरनेमें भी इह-लोक परलोकका विचार कर न्याय मार्गका अवलम्बन करके साफ २ व्यवहार करो। मनुष्य समस्त जीवनभर धनार्जनके लिये परिश्रम करते २ मृत्यु शय्यापर पड़े जाते हैं परन्तु अन्तमें सुखी वही होते हैं। जिसका व्यवहार ठीक रहा होगा, यश भी उसीका रहता है। जो मूर्ख लोग हैं वे धनको इस तरह अटका देते हैं कि न आप ही सुख पाते हैं न पीछेसे देश या जाति या सन्तानको ही कुछ लाभ होता है। यह पाप हमारी बहिनोंके शिरपर बहुत है। जो बहिनें लाखों करोड़ोंकी स्वाभिनी होती हैं जो कि अपने धनसे धर्मका, जातिका, देशका सैकड़ों अनाथ बच्चोंका भडा कर सकती हैं। वे बहिनें सब कामोंसे मुख मोड़ झूठा सचा एक लड़का गोद लेकर झूठी गृहस्थी बसा जाती हैं। बड़े पुण्य कर्मसे प्राप्त हुई लक्ष्मीको जबरदस्ती सुनार, दर्जी, आतशबाजी वालोंको दे डालती हैं। और व्यर्थही देशके धनको बरबाद करती हैं। अपने धनका व्यवहार



जैसी चाहिये वैसी विद्याकी उन्नति नहीं हुई। पाँच सात मोरेना जैनसिद्धांत विद्यालयके ही पंडित नजर आते हैं। इसका कारण क्या है? इसके कारण न होना हमारी समझमें तीन हैं।

१. पढ़ाईका क्रम ठीक न होना ।

२. समस्त पाठशालाओंकी पढ़ाई एक न होना ।

३. योग्य अध्यापकोंका न मिलना ।

क्रम ठीक न होनेका कारण पाठशालाओंमें पढ़ाने योग्य समस्त प्रकारके ग्रंथ बने हुए व छपे हुए तैयार नहीं हैं। और समस्त पाठशालाओंका एकसा क्रम न होना, पाठशालाओंके संचालकोंकी मान कपाय व अज्ञानताके प्रभावसे है और योग्य अध्यापक थोड़ा वेतन होनेसे आदर स्तकार न होनेसे जैनी तो तैयार ही नहीं होते। जो होना चाहते हैं उनके लिये अध्यापक तैयार करनेवाली पाठशालाओंमें स्कॉलरशिप व खर्चका अभाव है। लाचार थोड़े साधारण वेतनके अजैन (ब्राह्मण) पंडित रख कर ही विद्यार्थियोंके पढ़ानेका प्रबन्ध करते हैं सो ब्राह्मण पंडित जैनियोंकी परिभाषा व जैन ग्रंथोंसे अनभिज्ञ होनेसे कुछका कुछ पढ़ाते व जैन ग्रंथोंकी जगह लघु सिद्धान्त कौमदी, तर्क संग्रह आदि अजैन ग्रंथोंको पढ़ानेकी प्रक्रिया ही चलाते रहते हैं।

इन कारणोंमेंसे पढ़ाईका क्रम ठीक करनेके लिये तो जो प्राचीन पाठ्य ग्रंथ हैं वे ठीका टिप्पणी सहित छपने चाहिये और जो पाठ्य ग्रंथ प्राचीन ग्रंथोंमें दुष्प्राप्य हों वे विद्वानोंको द्रव्य सहायता देकर नये बनवाना चाहिये ।

और प्रकाशकोंको द्रव्य सहायता देकर छपवाना चाहिये । और समस्त पाठशालाओंकी पढ़ाई एकसी करनेके लिये महासभाके विद्यालय और परीक्षालयके संचालकोंको बम्बई जैन प्रांतिक सभाके परीक्षालयवालोंसे मिळकर महासभामें प्रस्ताव करके दोनों परीक्षालयोंको मिळकर एक ही परीक्षालय द्वारा समस्त जगहकी पाठशालाओंका क्रम ठीक करना चाहिये। इसके लिये कमसे कम ४ योग्य इन्स्पेक्टर तनखा देकर नियत करने चाहिये । जैन व अजैन विद्वानोंको योग्य अध्यापक तैयार करनेके लिये जैन परिभाषा शब्द कोष व पढ़ानेकी तरक्की व सिखानेवाली पुस्तकें तैयार कराकर उनको पढ़ाकर मोरेनाके जैन सिद्धांत विद्यालयमें एक अध्यापक क्लास खोलना चाहिये व परीक्षालयमें अध्यापकोंकी परीक्षा भी होना चाहिये। इन सब उपायोंका प्रबंध करनेके लिये महासभा व मालवा जैन प्रांतिक सभा व बम्बई जैन प्रांतिक सभा आदिको मिलकर काम बाँटकर केवल कागदी प्रस्ताव न करके काम करनेका शीघ्र ही प्रयत्न करना चाहिये ।

पाठक महाशय ! उपर्युक्त व्यवस्थामें एक जैन पारिभाषिक शब्दकोष बननेकी केवल अध्यापकोंके लिये बनाने व छपवानेकी जरूरत बताई है सो केवल अध्यापकोंके लिये ही नहीं किंतु जैन विद्या संबंधी समस्त कार्योंमें व अजैनी विद्वानोंमें जैन धर्मके प्रचार करने वा प्रभावना करने, स्वाध्याय प्रचार करने व इंगरेजी बाबूलोगोंको जैन सिद्धांत समझा कर जैन सिद्धांतोंके भक्त



वनाने वगैरह समस्त कार्योंमें इसकी बड़ी भारी आवश्यकता है इसकी कितनी आवश्यकता है सो पीछे बताई जायगी । पहिले आप यह समझ लीजिये कि यह पारिभाषिक शब्दकोष कैसा बनेगा ।

वर्तमान समयमें जितने कोष हैं और जितने बड़े २ कोष छपे हैं उनमें जैनियोंके ग्रंथोंमें जो जो शब्द आते हैं उनका अर्थ नहीं मिलता और जिनका साधारण अर्थ मिलता भी है तौ पारिभाषिक जो खास जैनाचार्योंने जो अर्थ माने हैं वे अर्थ नहीं आते । जैसे उन कोषमें सम्यग्दर्शन, स्पष्टक, अवग्रह, आत्मव, ईहा इत्यादि शब्दोंका अर्थ देखेंगे तौ सामान्य अर्थ मले प्रकार सम्यग्दर्शन शब्दको देवना, स्पष्टक शब्दका सद्धा करनेवाला, अवग्रह शब्दका ग्रहण करना, आत्मव शब्द ही नहीं मिलेगा । आश्रव शब्द मिलेगा तो उसका अर्थ सुनना आदि मिलेगा । ईहा शब्दका अर्थ इच्छा मिलेगा । तब बताइये कि अजैनी विद्वान् जैन ग्रंथ देखें और जिन शब्दोंका अर्थ न आवे तौ कोषकी सहायता ले परंतु कोषमें उक्त अर्थ ही मिलेंगे । सम्यग्दर्शनका निर्दोष श्रद्धान करना, स्पष्टक शब्दका अर्थ कर्मोंकी वर्णना विशेष इत्यादि अर्थ थोड़ा ही मिलेगा ? इसी लिये जैन पारिभाषिक शब्दकोषमें पहिले बड़े २ अक्षरोंमें वह शब्द रक्खा जायगा । वह शब्द संस्कृत है व प्राकृत वा अपभ्रंश (हिन्दी भाषा वगैरह) इसका निम्न लिखा जायगा । उसके बाद उस शब्दका क्या अर्थ है सो लिखा जायगा । यह अर्थको कौनसे ग्रंथोंमें किस

जगहपर माना गया है, उन सबके श्लोक व वाक्योंका प्रमाण लिखा जायगा । प्रमाण वाक्योंका हिंदीमें अर्थ लिखा जायगा तत्पश्चात् इस शब्दकी परिभाषा व लक्षण जैनियोंने क्या माना है वह अर्थ हिंदीमें लिखा जायगा और कौन २ से ग्रंथमें उसके लक्षण किस २ प्रकारसे माने हैं, सब ग्रंथोंके मूल वाक्यके श्लोक लिखे जायेंगे । उन लक्षण वाक्योंका शब्दार्थ लिखा जायगा । जब शब्दका एक मुख्य अर्थ व लक्षणोंका उक्त प्रकारसे उल्लेख हो जायगा तब उस शब्दके दूसरे क्या क्या अर्थ होते हैं और वे अर्थ कौन २ से कोष वा ग्रंथमें माने गये हैं उनके प्रमाण सहित लिखे जायेंगे । भावार्थ—जिस किसी भी पदार्थका स्वरूप जानना होगा उसे यह कोष कलवृक्षकी तरह बता देगा ।

इस प्रकार जैन मतके तत्त्वार्थसूत्र व इसकी समस्त टीकायें तथा चारों अनुयोगोंके प्रसिद्ध २ ग्रंथोंके समस्त शब्दोंको स्वतंत्रतासे संग्रह करके अकारादि क्रमसे लिखकर यह कोष तैयार करना पड़ेगा । और इस शब्दकी उत्पत्ति कौनसे धातुसे कौनसे प्रत्ययसे जैन व्याकरणा-नुसार हुई सो लिखी जायगी ।

इस कोषके छन जानेपर फायदे क्या क्या होंगे सो सुनिये ।

१. स्वाध्याय करनेवाले भाई जब स्वाध्याय करेंगे और उस समय कोई भी शब्द ऐसा आ जायगा कि उसका लक्षण व स्वरूप समझे बिना आगे समझमें हो नहीं आता है, उस समय यह कोष पास रखनेसे मंटे खोटर



उस शब्दका अर्थ - स्वरूप समझ लेंगे ज्ञान बढ़ी सकेगा ।

तौ स्वाध्याय तपका पूरा फल मिलेगा ।

२. जब कोई महाशय समाका शास्त्र बाँचेगा तौ उनके शब्दोंके अर्थ नहीं आनेसे संशय करके या गोलमाल करके श्रोताओंको समझा देने हैं, किसी शब्द व पदार्थ का स्वरूप श्रोता पढ़ने हैं तौ वक्ताको याद न रहनेसे कह देते हैं कि इसका स्वरूप कठिन है, विस्तारसे है, सो फिर कभी समझना । इसमें श्रोतावाँसी ज्ञानोन्नतिमें विघ्न पड़ना है । यदि कोपपातमें रक्ता होगा तौ चट निका-लकर बना देंगे वा समझा देंगे ।

३. छोटी २ जैन पाठशालाओंमें अल्पज्ञ जैनी अन्यायक तथा जैन धर्मसे निगे अज्ञान अजैनी ब्राह्मण अन्यायक ही जैन धर्म पढ़ाते हैं विद्यार्थिगण उनमें अनेक शब्दोंके अर्थ भावार्थ पढ़ते हैं तौ वे भी टाल देते हैं यदि कोप पाठशालामें रहेगा तौ प्रत्येक शब्द व पदार्थका स्वरूप अन्यायक समझा सकता है तथा चतुर विद्यार्थी स्वयं कोप देखकर मालूम करके अपना पाठ सार्थ याद कर लावेगा ।

४. अखबारोंके द्वारा उपदेश मिलनेसे हमारे दक्षिणी, वर्णाटकी व गुजराती भाई भी स्वाध्याय करने लगे हैं। ग्रंथ उनकी भाषामें हैं नहीं, शास्त्र प्रायः हुंदाड़ी व हिंदी भाषामें छपे हुए वा हस्त लिखित मिश्र हैं उनमें हुंदाड़ी वगैरह हिंदी शब्दोंका अर्थ मालूम न होनेसे स्वाध्याय नहीं करने सो इस कोपके पात रहनेसे हरएक देशका भाई प्रत्येक पदार्थका अर्थ हिंदीमें सविस्तर समझकर अपना

५. अंग्रेजी संस्कृत पढ़े हुए अनेक जैनी

अजैनी विद्वान् आजकल प्राचीन ग्रन्थोंका अंग्रेजीकरण करनेमें उत्सुक हुए हैं उनको अंग्रेजीमें ग्रंथ मिळ जाय तो कहना ही क्या? सो बौद्ध ग्रंथोंका प्रायः सर ही ग्रंथोंका अंग्रेजीमें अनुवाद मित्र जानेसे ये लोग सबसे श्रेष्ठ बौद्ध मतको ही शिरोमणि मानने लगे । बौद्ध धर्म-जैन धर्मकी नकल है सो अमल मतको देखनेके लिये अंग्रेजीमें ग्रंथ नहीं । यदि संस्कृत ग्रंथ भी हों तौ वे देख सकते हैं परन्तु जैनियोंके पारिभाषिक काव्योंका अर्थ व शैली मालूम न होनेसे ग्रंथ नहि देख सकते । यही कारण है कि आजकल जैन धर्मकी आलोचना न करके सर्वत्र बौद्ध धर्म व पाली भाषाका ही पठनपाठन व प्रचार हो रहा है, यहां तक कि प्राचीन प्राकृत भाषामें हजारों जैन ग्रंथ होनेपर भी कॉलेजोंमें पालीभाषाका कोर्स रक्ता जाता है । और बौद्ध ग्रंथोंके देखनेका (जो कि सिंहाय ग्रन्थ पाली भाषामें हैं) सुमीता कर दिया जाता है । इस प्रकारके ओ विद्वान् दर्शनोंकी आलोचना पठनपाठन करनेवाले हैं उनके लिये यह कोप बहुत ही लाभदायक होगा । सब विद्वान् जैन धर्मके कठिन २ ग्रंथ हिंदीमें देखनेमें समर्थ हो जायेंगे और जब यह कोप क्षणात्मक अर्थ चतानेवाला तैयार हो जायगा तो अंग्रेजी बंगाली वगैरहमें भी इसका अनुवाद होकर बुरत छप जायगा । तो जैन धर्म देखनेका प्रचार विद्वानोंमें बहुत जल्दी होनायगा



इत्यादि अनेक लाभ हैं ।

इस कोषके शब्द संग्रह करनेमें कमसे कम आठ दश हजार रुपये और कमसे कम दो पंडित निरंतर बैठकर काम करें तौ चार पांच वर्षमें तैयार कर सकते हैं। फिर उसकी प्रेस कापी लिखने वा छपानेमें पांच सात हजार रुपये व दो तीन वर्ष काळ चाहिये। ऐसा एक प्राकृत कोष श्वेतांबरी जैन साधु राजेंद्र-लालजीने बनवाया है जिसमें १ लाख रुपये तौ बनानेमें ही खर्च हो गये और अन्य १० वर्षसे छप रहा है। सो हाल आधा ही हो पाया है। इसी प्रकार काशीकी नागरी प्रचारणी समाने एकदम २५-३० पंडित रख कर हिन्दी शब्दोंके संग्रह करनेका काम कराया था जिसमें २५-३० हजार रुपये खर्च हो गये। अब वह भी छप रहा है सो दो तीन वर्षमें छप जायगा।

छपानेके लिये रुपया लगानेवाले तौ अनेक जैन अजैन बुक्सेटर मिळ जायंगे क्योंकि इसको छपाकर बेचनेमें हजारों प्रतियोंकी खपत होगी सो छपानेवाला हजारों रुपये पैदा कर सकेगा परन्तु बनानेमें पांच सात वर्ष तक रुपया लगा सके ऐसा कोई भी ग्रन्थ प्रकाशक बुक्सेटर वा धार्मिक संस्था नहीं है। धनपात्रोंमें कोई महाशय ऐसा समझदार नहीं है जो इस कोषकी जरूरत समझे व इसके बनानेमें रुपया लगाकर धनको सार्थक कर सके। ऐसे कोषके बनानेके लिये एक बार बाबू अर्जुनलालजी सेठी व दयाचन्दजी गोयलीयने प्रस्ताव करके एक लेख किसी जैन पत्रमें दिया

था परन्तु उसका कोई फल नहीं हुआ। किसीने किसी प्रकारकी सहायभूति तक न दिखाई। उसके बाद मारतीय जैन सिद्धान्त प्रकाशिनी संस्थाने भी एक बार साहस करके बनानेके लिये विचार किया था और शब्द संग्रह करनेके लिये १६००० कार्ड (कागजके टुकड़े) व ग्रंथोंकी नामावली छपाकर कई स्वाध्याय करनेवाले विद्वानोंके पास भेज भेजकर शब्द संग्रह करते जानेकी प्रार्थना की थी परन्तु किसीने भी कुछ जबाब नहीं दिया। कई धन पात्रोंसे प्रार्थना की थी कि एक पंडित रखकर यह काम चलाया जावे परन्तु उन्होंने कुछ भी इस कामको जरूरी न समझा। लाचार वे कार्ड और इस्तहार ज्योंके त्यों पड़े हैं।

अब हम समानके विद्वानों और जैन धर्मकी उन्नति चाहनेवाले समझदार धर्मात्मा धनपात्र दानी महाशयोंसे प्रार्थना करते हैं कि इस कोषके बनावे बिना हमारे सब कामोंमें पूरी र हानि है, उसे दूर करनेके लिये स्वाध्याय करनेवाले विद्वान् तो कुछ र समय खर्च करके शब्द संग्रह करना स्वीकार करें और दानवीर धनाढ्य महाशय अपने यहां घर पर वा किसी संस्थामें कमसे कम दो विद्वानोंको वेतनसे रखकर व ग्रंथोंकी प्राप्ति करके इस कोषके बनानेके लिये शब्द संग्रह करानेका पांच वर्षके लिये मार लें। यदि वे महाशय इतनी उदारता दानशीलता दिखानेके लिये धर्मार्थ रकम लगानेमें असमर्थ हों तौ बतौर कर्मके ही रकम लगावें। जिस दिन यह कोष तैयार हो जायगा उस



दिन जितनी रकम उममें लगी उतनी रकम व्याज सहित देकर अनेक बुक्सेलर लेनेके लिये तैयार हो जायेंगे । परन्तु यह कार्य सिवाय धनपत्रोंके कोई दूसरा रास्ता ही नहीं सकता । इसलिये बिद्वानोंको चाहिये कि—अपनी सत्संग-तिमें रहनेवाले धनपत्रोंको उपदेश देकर इस कार्यमें द्रव्य लगाने हो तैयार करें । और जिन प्रकार हो इस कोषको शीघ्र ही बनानेका प्रारम्भ करावें ।

समानका हितैषी, दास—

पन्नालाल वाकलीवाल ।

दिवाली और दो मित्रोंका वार्त्तालाप ।

(वीर) (२४) (अमावस)
तीर्थंकर मुक्ताहि गये, कार्तिक भी अधियार ।
गति पाती घाती नमो, गौतम प्रभु सुखवार ॥

कार्तिक कृष्ण १२की रात्रिको टेकचन्दजी जल्दी सोगये इसलिये नींद भी जल्दी ही खुल गई और फिर न आई । कर्बटे बदल रहे थे कि दीवालीकी याद आ गई चटसे अपनी पत्नीको पुकारा, वह चौंक उठी, परन्तु टेकचन्दजीने उसे सान्त्वना देकर दीवाली पर कहीं सिद्धक्षेत्रपर जानेकी बात छेड़ी, तब खी बोली अच्छा हो यदि यह सम्पत्ति हम-लोग लाला जयचन्दजीके पास चल कर करें । उस प्रातःकालका समय था सोचा चलो वायु सेवन भी होगा और सामायिक जयचन्दके चागमें ही करेंगे । पश्चात् सल्लाह करके नहा-

धोकर वहीं चैत्यालयमें पूजन करके चले आवेंगे । वस गाड़ी कसाई और चल दिये, वहां पहुंचकर सामायिक स्नान पूजन स्वाध्यायादि करके टेकचन्दजी बोले—क्यों भैया जयचन्द ! दिवाली देखने कहां चलोगे ? और दिवालीका क्या अभिप्राय है, क्यों और कबसे चली, सो कृपा करके कहिये आपकी भौजी इसके लिये बहुत लाञ्छित हो रही हैं ।

जयः—मुना है कि दिवालीकी अमावस्याको पंडित गणेशप्रसादजी वर्णी रेसंदीगिरि (नैगागिरि) जावेंगे, इससे मालूम होता है कि कदाचित् आसपासके ग्रामीण जन भी १००—१२९के लगभग पहुंचेंगे । यह वर्षका दिन है, श्रीमत् परम देवाधिदेव १००८ महावीर प्रभुके निर्वाणका दिन है, इस दिन कितने भाग्यवान भव्य जीव श्री पावापुरीजी (जो कि उक्त महावीर प्रभुकी निर्वाण भूमि है) को जाते हैं और वहांपर इस परमोत्सवका आनन्द भोगते हैं । परन्तु यदि अपनी शक्ति न होवे, तो यथाशक्ति अवकाशानुसार ऐसे ही अपने निःशुद्ध निर्वाण क्षेत्रपर जाकर पूजन वंदनादि कार्य किया करें तो भी बहुत कुछ लाभ हो सकता है ।

२. यदि मनुष्य अपनी शक्तिको न छिपाकर और शक्तिको उल्लंघन किये बिना असली पदार्थके अभावमें उसकी कल्पना भी कर लेवे तो भी उसे वही उत्कृष्ट फल मित्र सकता है । देखो न आज महावीर प्रभुको मोक्ष गये हुए २४४३ वर्ष हो चुके हैं, और वे समस्त वर्गोंसे रहित हुए आने लोकके



अंतमें निश्चल हुए स्वात्मानंदमें निपग्न हुए सदाके लिये अवस्थित हो रहे हैं। यद्यपि वे आज साक्षात् इस मृत्यु लोकमें किसी भी स्थानपर नहीं हैं, और जब ये तब भी किसी एक क्षेत्र व्यापी ही तो रहते थे, जिनसे एक ही क्षेत्रवाले जीवोंको उनके दर्शन स्तवन और उपदेश श्रवणका लाभ मिळता था। न कि सब क्षेत्र और सब कालोंमें सब ही प्राणियोंको ऐसी अवस्थामें बहु संख्यक जनोंको जिन्हें प्रत्यक्ष लाभ नहीं मिल सकता है, परोक्ष कल्पना करना ही कर्तव्य होता है। और इस परोक्ष कल्पनामें भी कभी कभी प्रत्यक्ष जैसा आनन्द आ जाता है। यह कल्पना वाली बात कोई नई नहीं है, प्रायः बहुत कालसे चली आती है और आगे भी चलेगी ही, क्योंकि यदि यह कल्पना बिस्तुल भी न की जाय तो संसारका व्यवहार ही नहीं चल सकता है। व्यवहार तो सब इच्छित ही है। हां! यदि अमली पदार्थके सद्भावमें भी हम कल्पना करें जैसे कि पुष्पोंको रंगीन चांचलोंमें, दीपको रंगी हुई गरीकी चिट्ठोंमें, नैवेद्यकी गरी व चिरौंजी आदिमें जैसी कि हमलोग कर लिया करते हैं, निःसन्देह निष्फल है। क्या अग्निमें खेनेके बदले धूपको द्रव्य बढ़ानेके घालमें ही बढ़ा देनेमें सुगंधी आजावेगी! और धूँझ दूशों दिशामें व्याप्त होजावेगा? क्या कभी असूत्र पदार्थकी भी उत्पत्ति होसकती है? क्या धूपके लिये अग्नि, दीपके लिये शुद्ध प्रसूत घी और कपासकी रत्ती या कर्पूर, नैवेद्यके लिये पूरी

पकौड़ी खाना आदि जैसा कि पूजाके पाठमें पढ़ते हैं, और पुष्पोंके लिये साक्षात् गुलाब, चंपा कमल, आदिके फूल नहीं मिल सकते हैं? जब कि हमारे भोगोपभोगोंके लिये प्रत्येक प्रकारके उत्तमोत्तम फल, फूल, दीप, धूप, नैवेद्य, आदि मिलसकते हैं तो क्या पूजाको नहीं मिल सकते हैं? यदि कहो कि शुद्ध प्रासुक नहीं मिलते हैं तो फिर खानेको कहाँसे आते हैं? और पूजामें कल्पनाहीसे फल होजाता है तो फिर भोजनमें केवल पानी आदिमें सब भोज्य पदार्थोंकी कल्पना करलेवे और रात्रिको घरोंमें दीपकके बदले रंगी हुई गरी रखदेने, पुष्पमालके बदले चांचलोंको रंग कर माला ही बनाकर पहिर लिया करें परन्तु क्या ऐसा करनेवाले लोग संसार में हंसीके पात्र न होंगे? क्या उनके घरका अंधेरा मिट जावेगा? नहीं नहीं कभी नहीं, ऐसी कल्पना कुछ भी फलदायक नहीं है किन्तु उत्पत्ति हास्यजनक है। कल्पना सदैव साक्षात् पदार्थके न होनेपर ही की जाती है, जैसे कि आज न तो इस क्षेत्रकाटमें महावीर प्रभु हैं और न गौतम गणधर। न उनकी दिव्य ध्वनि ही सुनाई दे रही है और न निवारणका महोत्सव ही परन्तु तोभी कल्पनामें हमें उसी काल और भावका अनुभवानंद आता है जो कि प्रत्यक्षमें आया होगा।

यह दूसरी बात है कि लोगोंका सच्चा उपदेश न मिथ्येसे और अधिकाके कारणसे सच्ची बातका लोप हो जाय और पदार्थका सार निकल जाकर ऊपरका ढांचा और फोहही रह जाय और काशान्तरमें उन ढांचेका भी रूपांतर हो जाय,



परंतु किसी कालमें वही ढांचा खोखल मात्र ही न था किन्तु समी । था; ठोस था । आनकल भारत-वर्षके प्रायः सभी नगरोंमें, ग्रामोंमें, शहरोंमें, और राजवाड़ोंमें ऐसा कोई भी व्यक्ति और क्षेत्र न मिलेगा, जो इस परम पवित्र दिवाली (दीपावलि) के त्योहारसे अपरिचित हो । यह पर्व भारतके सभी वर्ण और सभी क्षेत्रोंमें सभी धर्ममाले मानते हैं, यदि वास्तवमें देखा जाय तो इसके समान सर्व मान्य और उत्तम पर्व कदाचिन् ही दृष्टरा होता हो क्योंकि दिवालीके आनेके पहिलेही से लोगोंके घरोंमें सफाई होने लगती है । घर छाप (मरम्मत) किये जाते हैं, पोते जाते हैं, लीपे जाते हैं, धोये जाते हैं, घरके वासन वर्तन मांजकर साफ किये जाते हैं, कपड़े धोये व धुलाये जाते हैं, बर्षोंका कचरा साफ किया जाता है, हिसाब किताब आदि ठीक किया जाता है, दुकानका आंकड़ा बांधकर हानि लाभका लेखा निकाला जाता है, नवीन व्यापार आदिका विचार भी किया जाता है, इस दिन लोग अपने घरके किसी स्थानमें चौक पूर कर वहां दीपक जलाते हैं । प्रत्येक प्रकारके फलपूज मिठाई आदि पदार्थ जो उन्हें मिल सकते हैं लाकर रखते हैं कहीं कहीं एक मिट्टीकी पुतली जिसके मस्तकार और मुनावोंपर आठ दीपक रहने हैं रखी जाती है । चौकके भीतर सोलह दीपक और पांच दीपक घीके ऐसे २१ दीपक रखे जाते हैं, सभीमें चार बत्तियाँ जलाई जाती हैं, उस समय पासमें जिसके जो नरुद रुपया मुहरें आदि होते हैं

उसी चौकके पास रखे हैं और नवीन वही बनाकर नवीन कलम और रसाहीसे प्रथम ही ॐ लिखकर साथिया काढ़ते फिर पांच महात्माओंके नाम लिखकर मिनी संवत् आदि लिखते हैं और तब उसमें नरुद रोकड़ बाकी लिखकर नवीन (आगामी) वर्षका हिसाब प्रारंभ करते हैं । रुपया और वही दोनोंपर चन्दन, अक्षत, पुष्पादि क्षेपते हैं और रक्षाबीमें धानकी फूँची (खीले, या लाई) और मेवा, फल, मिठाई आदि रखकर दीपक लेकर आरती करते हैं, अर्चा करते हैं, धूप खेतें हैं, अगरबत्ती जलाने हैं, पैर पड़ते हैं, उस समय वहां उपस्थित मान्य व आश्रित जनोको प्रसाद (लाई लड्डू आदि) और कुछ नकद पैसा रुपया आदि भी देकर संतोषित करते हैं । रात्रिमें जागरण करते हैं, घरके चहुँ-ओर दीपक जलाते हैं (नगानोत लगाते हैं) फटाका फोड़ते बन्दूक छोड़ते हैं इत्यादि अनेकों प्रकारके उत्सव मनाते हैं । यह वर्ष दिवाली या दीपावलि इस नामसे प्रसिद्ध है । और इस दिन उक्त पूजन, अर्चन, आदि जो होनी है सो लक्ष्मी पूजन या वही-पूजनके नामसे प्रसिद्ध है । लोग इस रात्रिको जूभा भी खेलते हैं परन्तु यह जूभा (छा) कुछ क्षुद्र लोगोंके सिवाय उत्तम प्रकृति वाले सम्पन्न नही खेलते हैं । अतः इसमें यह विचारना है कि वह सब क्या है ? और कहाँसे कच्चे क्यों चया ? यद्यपि स्थानान्तरोंमें अवश्य उक्त क्रियाओंसे कुछ अंतर होगा तो भी बहुत ही बातें मत भेद रहिन भी होंगी, जो कुछ भी छे, हमें



इसका मूल भेद जानना चाहिये । हमारी बुद्धिके अनुसार तो हमें यही प्रतीत होता है कि यह पर्व जैनियोंके द्वारा ही चलाया गया है, क्योंकि इनके पुराणों और आचारोंसे बहुत कुछ ये बातें मिलती जुलती हैं, यद्यपि कहीं २ रूपान्तर भी होगया होगा तो भी अभी तक कई बातें सार रहित खोखेके समान अवश्य ही प्रचलित हैं । जैन पुराणों और श्रावकाचारोंके अनुसार महावीर (चौबीसवें) तीर्थंकरको मोक्ष हुए अभी २४४३ वर्ष हुए हैं जिसदिन उनका मोक्ष हुआ था । वह कार्तिक कृष्ण (गुगराती अश्विन कृष्ण) चतुर्दशीकी रात्रिको अंत और अमावस्याका प्रातःकालका समय था । इस दिन महावीर प्रभुको मोक्ष प्राप्ति और उनके मुख्य शिष्य (गणवर) गौतम स्वामीको केवलज्ञान (आत्मिक सम्पूर्ण ज्ञान) प्राप्त हुआ था । इसलिये महावीर प्रभुको निर्वाण प्राप्त होनेसे उनको जो स्वाधीन स्वसम्पत्तव स्वात्मानन्दका लाभ हुआ और उन्होंने संसार गर्तमें डूबते हुए मोही जीवोंको मोक्षका मार्ग बताया इसलिये उस परम स्वाधीन स्वसम्पत्ति (मोक्ष) के प्राप्तिके हेतु मोक्ष लक्ष्मीकी पूजा की जाती है । जिसका रूपान्तर होकर अवलम्बया पैशादि बाह्य लक्ष्मी (जड़पदार्थ) की पूजा होने लगी है । और गौतम गणवर (गणेश) को केवलज्ञान हुआ, इसीसे और स्वती (जिनवाणी) की पूजा की जाती है, जिसका रूपान्तर होकर बही (काभजों) की पूजा हो गई है । पुराणोंमें लिखा है कि जब किसी महात्माको

केवलज्ञान प्राप्त होता है, तब इन्द्रादिक देवगण समवशरणकी रचना करते हैं वहां वह महात्मा यद्यपि एक मुखधारी ही है तो भी चतुर्मुख दीखता है और वहां दिनरात्रिको कुछ भी भेद नहीं दिखाई देता है, तात्पर्य वहां अंधकार नहीं होता है । सो जब गौतम-प्रभुको केवलज्ञान हुआ तो देवोंने समवशरण (गंधकुटी) बनाई और बड़ा भारी उत्सव मनाया । सो लोगोंने भी उसीकी नकल की और रात्रिको दीपक जलाकर अंधकार दूर किया । एक स्त्रीके मुनाओंपर आठ दीपक और मस्तकपरका कलश यह द्योतन करता है कि अष्टकर्मको जलाकर प्रभु ज्योंही मुक्त हुए त्योंही वह (मोक्ष लक्ष्मी) सिरपर कलश रखकर आपके स्वागतके लिये आई है । सोलह मिट्टीके दीपोंका यह अभिप्राय प्रतीत होता है कि इन महावीर प्रभुने अपने पूर्वजन्मोंमें तीर्थंकर प्रकृति को कारणभूत दर्शनविशुद्धि आदि षोडशकारण भावनाएं माई थीं जिससे उनका आत्मा इतना विशाल हुआ कि उन्होंने संसारके बलघाणार्थ जन्म लिया सो उस महात्माके उत्पन्न होने (गर्भमें आने) के समयसे इन्द्रादि देवोंने पंच बलघाणक (गर्भ जन्म तपज्ञान और निर्वाण महोत्सव) किया जो कि पांच घृतके दीपकोंसे संकेत प्रकट होता है । दूसरा भाव पांच दीपोंसे यह भी है कि प्रभुने स्व परहितार्थ विषयभोगोंको त्यागकर सर्वप्रथम साधु पद ग्रहण किया और उन्हें जो जन्मान्तर्क सम्पन्धसे शुद्धज्ञान था उससे वे (ग्यारह अंग



और चौदह पूर्वके घारी) उपाध्याय भी कहाये, फिर उस समयमें उनसे विशेष ज्ञानी कोई न होनेसे वे ही दीक्षा शिक्षा देनेवाले हुए इससे आचार्य भी कहाये । और चार घातिकर्मोंको नाश करके सर्वज्ञपदको प्राप्त हुए इससे आस व अर्हन्त कहाये और आयुके अंतमें कार्तिक (गुजराती आश्विन) कृष्ण ३० को प्रातःकाल शेष अघाती कर्म नाशकर सिद्ध हुए । इस प्रकार प्रभु पांच परम इष्ट (उत्कृष्ट) पदोंको प्राप्त हुए इसीको बतातेवाले वे पांच घीके दीपक हैं । चौमुखे दीपक चार गतियोंको जलती हुई, जिनसे प्रभुने मुक्ति पाई है बताते हैं । पूजाकी द्रव्योंमें जल, गंध, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य, दीप, धूप, बफल ये अष्ट द्रव्य भी जैन ग्रन्थानुसार देखे जाते हैं । रात्रि जागरण करनेमें मगनादिके बदले मनोरंजन करनेके हेतु लोगोंने जुआ आदि खेल तमाशे प्रारंभ कर दिये हैं यह रूपान्तर होगया है । इससे प्रतीत होता है यह वर्ष जैनियों ही के द्वारा प्रचलित हुआ है इसे सबको श्रद्धा सह मानना चाहिये और भी देखो—वर्ष और मास भी अमावस्या ही को पूर्ण होता है, दूकानदार व्यापारियों आदिकी दूकानोंके खाते नये बदले जाते हैं और मासका अंश अमावस्याको समझना चाहिये कि अमावस्याको ३० का अंक लिखते हैं और पूनमको १५ का इसलिये पूनम मासके मध्यमें आती है, और गुजराती व दक्षिणी लोग अपना मास शुद्ध एकमसे प्रारंभ करते हैं । कृष्णपक्षकी प्रतिपदाको प्रतिपदा और शुद्ध प्रतिपदाको एकम कहते हैं गुजरात व दक्षिण

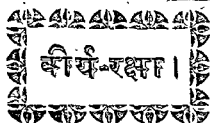
वालोंका कार्तिक मास हमारे कार्तिक शुद्ध एकमसे प्रारंभ होता है और हमारे कार्तिक कृष्णा अमावस्यको उनका आश्विन पूर्ण होता है । तब कि हमारा आधा मास वीच चुकता है । तात्पर्य उनका मास हमसे १५ दिन बाद शुद्ध पक्षसे प्रारंभ गिना जाता है और हमारा १५ दिन पहिले कृष्ण पक्षसे यथार्थमें यदि उक्त पाठों परसे विचारा जाय तो उनका हिसाब ठीक प्रतीत होता है । पहिले तेईस तीर्थकरोंका निर्वाण उत्सव लोकमें इतना प्रसिद्ध न होनेका कारण यही है कि महावीर प्रभु अंतिम हुए । यह वर्तमान शासन इन्हींका है और इस समय भी अधिक नहीं हुआ है । निर्वाण क्षेत्रका स्थान भी शास्त्रानुसार लक्षणोंसे लक्षित पाया जाता है । इन्होंने संसारके सभी प्राणियोंके हितार्थ उपदेश किया सबको समान भावसे देखा । इसी लिये सब ही ने इनके उत्सवको मनाया और मनाते हैं तथा मनावेंगे । धन्य है जिन्होंने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की नीतिको चरितार्थकर दिखाया । इस प्रकार आज जयचंदजीका व्याख्यान समाप्त हुआ, और टेकचंदजी भी चलने लगे इतनेमें टेकचंदजीकी स्त्री-बोली लालानी नैनागिरि न चलोगे ?

जय०—भाबोजी अवश्य चलंगा । क्यों मैना टेकचंद ?

टेक०—हां अवश्य । अच्छा समय बहुत हुआ जुहार । जुहार भैया—अब तो नैनागिरिमें खूब आनन्द आवेगा, उपदेशका भी बड़ा लाभ होगा, जुहार ।

दक्षिचंद परिवार

नरसिंहधर (O.P.)



वीर्य-रक्षा ।

(लेखक—हिराचन्द मलुकचन्द दोशी (काका)
ऑनरेरी अध्यापक, भारवाड़ी और
म्युनिसिपल कस्तरशाला शोलापुर)

वीर्यरक्षा कमसे कम बीस वर्षकी उम्र तक करनी चाहिये क्योंकि इससे मनुष्यका शरीर दृढ़, दीर्घायु, निरोगी, बन सकता है और मनुष्य सर्वदाके लिये निरोगी रह सकता है, तथा धर्म कार्य भी कर सकता है । क्योंकि किसी महात्माका वचन है “शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्” अर्थात् शरीर ही धर्म-साधनका आद्य कारण है, इसकी रक्षाके लिये बीस वर्ष तक चटकीला अन्न (भोजनादि) न खाना, स्त्रियोंको कुछदिने कदाचित् भी नहीं देखना, खराब काव्य, उपन्यासादि नहीं पढ़ना, नाटक, सिनेमा, शृङ्गारिक खेल तमाशे नहीं देखना, इन्द्रियको बिना कारण दुष्ट विचारसे हस्तस्पर्श नहीं करना, चाय नहीं पीना, बीड़ी, चुरट, पञ्जादि मादक चीजें नहीं पीना, पान सुपारी नहीं खाना, बीस वर्षतक विवाह नहीं करना, पौष्टिक पदार्थ खाना, और निम्न नियमित रूपसे सर्वाङ्गव्ययी प्रातःकाल व्यायाम करना, व्यायाम करनेसे वीर्य रक्तमें मिल कर बल बढ़ता है । कपट न होनेसे वीर्य पतन होता है । गरम और मादक चीजें नहीं खाना, मित्र कम खाना, और

रात्रिको ९ बजे सोजाना, और सुबह ५ बजे उठना चाहिये । उल्टे सोना अच्छा नहीं, क्योंकि उल्टे सो जानेसे मूत्राशयका दाब वीर्यपर पड़ता है और स्वप्नावस्था प्राप्त होती है । रात्रिको सोजानेके पहिले कमसे कम १ घंटे पूर्व पेय पदार्थ लेना चाहिये । सोनेके समय खाना पीना नहीं । हमेशा दाहिने व बाँहें करवट सेते रहना उचित है । नाँद खुलते ही विछौनेको त्याग देना, बीस वर्षके उपरान्त उम्रवालोंको नियमित रूपसे स्त्री प्रसङ्ग करना । यदि वीर्य विगड़ा हो तो वीर्य शुद्ध होने समय तक स्त्री प्रसङ्ग नहीं करना ।

शरीर यदि रोगी हो तो उसको औषधि आदिसे निरोग करना, फिर कसरत करके पौष्टिक पदार्थ खाकर पौष्टिक पदार्थ पचाना । वर्ष दो वर्ष तक सेवन करनेसे वे भलीभाँति पचने लगेगे और वीर्य अवश्य अच्छा हो जायगा । अतएव ऐसा न हो तबतक तो ऊपर लिखे नियम उनको अवश्य पालने होंगे । वीर्य स्तम्भक बटी आदि औषधि लेनेसे कुछ भी नहीं होता, खाली पैसे खर्च करनेका धंधा है । उसके जालमें पड़ना वही श्रीमन्तोंके लिये पिस्ता, बदाम, दूध, घी हैं । लेकिन गरीबोंके लिये यह बात मुश्किल है । अतएव उनके लिये पदार्थ-द्विदल घान्य और मृगकन्ठी आदि हैं । चने, मूंग, मटर, उड़द, आदिकी दाउ जोड़ेंसे पानीमें भीगोकर सारे कसरत करके खाना । दाउ जैसे हनम होती जाय, जैसे दाउका परिमाण बढ़ाना । इसके मनुष्य



चलनेसे वीर्यकी रक्षा ग़रूर होगी। वीर्य शरीरका राजा है यह खूब ध्यानमें रखना। प्रमोत्पत्तिके सिवाय इसका व्यर्थ कामान्ध होकर व्यय नहीं करना व्यर्थ व्यय करोगे तो अल्पायुषी बनोगे। इत्यलम्।

इस विषयमें जिनना लिवा जाय उतना ही थोड़ा है।

कसरतकी तरकीबें ।

कसरत नाम शरीरको यथायोग्य रीतिसे सर्वाङ्गावयवोंको हलन चलन मिलना है। शरीरको हलनचलन मिलनेसे सर्व अवयव सतेज रहते हैं। और पचनेन्द्रिय सर्वाङ्कुर रहती है पचनेन्द्रिय अच्छी होनेसे अन्न भी भलीभांति हजम होता है। अन्न हजम होनेसे शरीरमें रक्त बढ़ता है, रक्त बढ़नेसे वीर्य बढ़ता है और वीर्य बढ़नेसे शरीर सशक्त होता है।

शरीर नीरोगी होनेसे मनुष्य दीर्घायु होता है और आनन्दित रहता है। आनन्दित रहनेसे सर्व प्रकारके कार्य सुन्दरता पूर्वक होते हैं।

कसरत करनेकी तरकीबें वर्तमान समयमें दो प्रकारकी हैं एक इंग्रेजी तरकीब और दूसरी देशी तरकीब।

इंग्रेजी तरकीबसे शारीरिक फायदा थोड़ा और खर्च बहुत होता है। और समय भी बहुत लगता है।

देशी तरकीबसे शारीरिक और इतस्तत् फायदे बहुत होते हैं और खर्च (पैसा) कम लगता है। देशी तरकीबमें दण्ड, बैठक, पानीमें तैरना, मछलंमपर चढ़ना, लाठी

फिगाना, कुम्ती लड़ना, दौड़ना, नमस्कार करना, कबड्डी खेलना, खेा खेा, आटिया पाटिया, शूर करेज, मुद्रल आदिके खेल होते हैं।

इंग्रेजी तरकीबमें, क्रीकेट, हौकी, टेनिस, फुटबोल, पैरिल बौग, सिंगल बौर, डबल बौर, बौर बैक, टम्बलस, बोटिंग आदि खेल होते हैं।

कुछ इंग्रेजी खेलसे एकाङ्गावयवी कसरत होती है और यह कसरत परतन्त्र, परावलम्बी मूलवान, अनियमित होनी है। देखिये क्रीकेट खिलनेवालोंको ग्रामसे दूर जाना पड़ता है। कमसे कम ११-१२ आदमी इकट्ठे हुए बिना यह खेल नहीं होता, क्रीकेटके सामानके लिये पैसा बहुत खर्च करना पड़ता है और हमेशा टूटफूट भी होती रहनी है, धूपमें खेलना पड़ता है, जादा समय दोपहरकी धूपमें खेलना हानिकारक है। देशी कसरतमें पैसा कुछ नहीं पड़ेगा। कमजब स्वतंत्रतासे चाहे जित स्थानपर नियमित रूपसे होगी। कभी बट नहीं रहेगी, भगवान्के सामने नमस्कार करनेसे भाव शुद्ध रहेंगे। भाव शुद्ध रहनेसे शरीरको गिराड़ने वाले गुण अंगमें पैदा नहीं होंगे। नमस्कारमें एक ही समयमें कसरत भी होगी और ईश्वर भक्ति भी होनायगी। नमस्कारमें दंड बैठककी मिश्रान होती है, इससे शरीर खूबमुरत होता है। देशी कसरतसे शारीरिक लाभ होकर और जो कुछ अन्य लाभ होते हैं वे नीचे लिखे अनुमार हैं।

कुम्तीसे-शरीरमें चपलता आती है, बुद्धि मतेज होती है, और दुर्गन्धोंका पड़ाव करनेके गुण प्राप्त होते हैं।



दौड़-दुष्ट लोगोंके हाथमें वक्त पर पड़ते नहीं । तैरना—स्वयं पानीमें गिर जायें तो तैरनेसे बच जायेंगे । और दूसरा कोई मनुष्य बावड़ी आदिमें गिर जाय तो उसको बचावेंगे ।

मल्लखम्प चढ़ना—घरको अङ्गार लोगी तो खम्भेपरसे नीचे अट उतर आवेंगे, जंगलमें हिंसक जन्तुओंसे बचाव करनेके लिये शीघ्र वृक्षपर चढ़ जानेसे शीघ्र रक्षा होजायगी ।

लाठी फिराना—लाठी फिरानेसे सभीको पादाक्रांत करेंगे, शरीरमें चपलता रहेगी ।

शरीरको प्रातःकालीन धूप अच्छी होती है । वर्षा ऋतु आती है तब यह खेल बंध करना पड़ता है । हिसाबमें आदमी नहीं आवे तो खेल बंध करना पड़ता है । इससे आनियमितपन आजाना यह भी अच्छा नहीं है, कारण कि शरीरको कसरत नियमित रूपसे होना चाहिये, नहीं तो हानिकी संभावना है । यह खेल आनन्ददायी होनेसे कभी कभी ज्यादा कसरत करनी पड़ती है । यह भी शरीरको बड़ा भारी धक्का पहुँचाती है । इससे शरीरका रक्त भीगना जाता है, और क्षय रोग बढ़ता है और खानपान भी देखा जाय तो चैबड़ा, चाय, सोडा लिमनेड, बिस्कुट, आदि, गरीब होतो कमेंटीके नञ्का पानी, ऐसे निम्नत्व पदार्थ पेटमें नानेसे शरीरमें अशक्तता क्यों नहीं बढ़ेगी ! और शॉर्ट साईट क्यों न होगी ? और सब तरफ चम्मे वाले क्यों न दीवेंगे ? और रोती सूरत वाले क्यों न देते

जायेंगे । जरा विचार करनेकी बात है कि-एसा होनेका कारण ऐसे खेल खेलने वालोंका संसर्ग दूसरा कुछ नहीं । इस प्रकार इंग्रेजी खेलमें बहुतसे लुप्तान होते हैं । क्लबमें ब्रह्मचर्यका महत्व प्रधानतासे नहीं माना जाता ।

अब देशी कसरतमेंकी "नमस्कार" नामक तरीक़ा लीजिये—भगवान् के सामने प्रातःकाल शौच, मुख मार्जनादि करके पश्चात् सर्वदा नियमित नमस्कार शुद्ध हवामें करेंगे तो सर्व अवयवोंको कसरत होकर शरीर अच्छा रहेगा ।

इससे राजनिष्ठता रहती है और ब्रह्मचर्यव्रत पाळा जाता है । और उसके अनुसार अपना बर्ताव रखना तथा तदनुसार चलनेका अभ्यास करना चाहिये । अनीतिका कुछ भी प्रचार नहीं होने देना जबतक ऐसा अखाड़ा नहीं बने तबतक अपने गृहमें ही शुद्ध जगहपर नित्य नियमित रूपसे प्रातःकाल (शीत ऋतु) में दंड, बैठक, नमस्कार करना । १० से १५ वर्ष प्रमाण वालोंको ३० बैठक और पन्द्रह दंड प्रथम ७-८ आठ दिनतक निरालना अथवा नमस्कार २० करना, फिर आठ दिनके बाद प्रत्येक हफ्तामें ५ दंड और १० बैठक बढ़ाना चाहिये अथवा ५ नमस्कार बढ़ाना चाहिये ।

इस प्रकार बढ़ानेका कार्य १०० दंड और सौ बैठक तक बढ़ाना अथवा १०० नमस्कार बढ़ाना इससे ज्यादा नहीं करना । १५ से ३० की अवस्था वालोंको इससे दुगुनी कसरत करनी चाहिये । प्रारम्भमें १०-१५



वर्षवालोंको तथा १० से ५० तक उम्रवालों-
को १-१५ उम्रवालेकी तरह करना चाहिये
और ५० से ऊपर वर्ष वालोंको प्रकृति अनुसार
करनी चाहिये । नहीं तो प्रातःकाल शुद्ध
हवामें टहलने जाना संध्याको कभी भी टहलने
नहीं जाना क्योंकि इस समय वायु खरान रहती
है । तरुणोंको केवल टहलनेसे ही कमरतकी इति-
श्री नहीं करना चाहिये । यह रीति बृद्धोंके लिये है ।

कसरत करके पश्चात् आधा घण्टे विश्रान्ति
लेना, फिर स्नान करके पौष्टिक पदार्थ अच्छा
रुचिके साथ खाना । स्नान हुए बाद शीघ्र
कसरत करना अच्छा और लाभदायक है ।
किन्तु कमरतके पश्चात् शीघ्र स्नान नहीं
करना चाहिये ।

सर्वाङ्गावयवी सात मिनटमें कसरत होती है ।
आटिया, पाटिया, कवड्डी, खो खो इस खेलसे
शत्रुका बेड़ा तोड़ देना आदि गुण प्राप्त
होते हैं सर्वाङ्गावयवी और थोड़े समयमें
सशास्त्र शरीरको कमरत देनेवाली तरकीब
कुछ हैं तो कुस्ती, नमस्कार, मल्लखम्भ
चढ़ना, पानीमें तैरना, लाठी फिराना,
दंड बैठक यह है । दंड बैठक और
नमस्कार इन तरकीबों को कोई भी साधारण
कसरत करनेवाला बना सकता है ।

अब रही लाठी फिराना, मल्लखम्भ चढ़ना,
तैरना, कुस्ती खेलना, आदि तरकीबें जो म-
नुष्य कमरतमानमें उस्ताद होता है वह
जरूर पढ़ाता है । ऐसे उस्ताद बहुतसे शहर-
में थोड़े बहुत मिलते हैं, उनके पास आप सज्जन
मण्डलीका अखाड़ा बनवाकर उममें सीख लेना ।

अज्ञानी (दुरवर्त्ताशक) लोगोंके अखाड़ेमें
जाना नहीं कारण कि उसमें जानेसे दुर्गुण
लगते हैं । देशी कमरतकी तरकीबें बहुत करके
वर्त्तमानमें मूर्ख लोगोंके हाथ मौजूद हैं । वह
जो सुज्ञ मनुष्य अपने सद्गुण संभालकर बड़े
कष्टके साथ देशी कमरतकी तरकीबें प्राप्त कर
लेंगे । और दूसरेको बतावेंगे तो उनको बहुत
उपकार होगा । यह नहीं होगा तो प्रथम
चार पांचमौ रुपया खर्च करके एक अच्छा
अखाड़ा बनवाया जाय और उममें अच्छे
नियम रखकर और राजनिष्ठतासे सुव्यवस्थित
चलायेंगे और देशी कमरत जाननेवाले उस्ताद
को तनख्वा देके सौ-पचास मनुष्य तैयार हो
जायेंगे तो सर्वोत्तम बात होगी । पुनः उसका
सज्जन मनुष्योंमें प्रमिद्ध होनेकी देर न होगी ।
कसरतशालामें राजा लोगों और ब्रह्मचारि-
योंके चित्र लगाना चाहिये । धूपमें कमरत
नहीं करना, एकाङ्गावयवी कसरत नहीं करना,
वर्षमें कमसे कम एक दिन उपवास करना
“ जबतक जीमंत (भोजन लेंते) हैं तब तक
कसरत हर हाजतमें करना पड़ेगी । ”

कमरत करते समय मन आनन्दित रखना,
और वज्राङ्गदेही वनूंगा ऐसी भावना रखना,
व्यर्थ फिक्र न करना, “ फिक्र करनेसे
नुक्सानके सिवाय कुछ नहीं ” यह विश्वास
रखना । शरीर दुबला भी हो तो कुछ हर्ज
नहीं कमरतसे शरीर सशक्त होगा लेकिन कुछ
देरी लगेगी, हां ऊपर लिखे अनुसार कर्त्ताव
होगा तब, “ गुरु बिना विद्या नहीं ” यह
युक्ति कुछ झूठ नहीं है । इत्यत्र विस्तरेण ।



व्याख्यान

जैनधर्मभूषण ब्रह्मचारी

जीतलप्रसादजी,

मेधापति, भारत जैन महामंडल, अधिवेशन,
कलकत्ता ।

मंगलाचरण ।

गाथा—इदं सद वंदिषाणं तिहुअण हिद भधुर
विसद वक्काणं ।

अंतातीद गुणाणं णमो जिणाणं जिद भवाण ॥

श्लोक—भुवनांभोजमार्तदं धर्माभृतपयोधरम् ।

योगिकल्पतदं नौमि देवदेवं वृषध्वजम् ॥

भावार्थ—सौधर्म आदि १०० इन्द्रोसे
बंदनीक, तीन भुवनके जीवोंको हितकारी,
मिष्ट और निर्मल वाणीको प्रकट करनेवाले,
अनंत गुणोंके धारी, और संसारको जीतने-
वाले जिनोंको नमस्कार होहु । तीन भुवनके
प्राणी रूप कमलोंको विकसित करनेके लिये
सूर्य, धर्मरूपी अमृतको बर्षानिके लिये मेघ,
योगियोंके लिये कल्पवृक्ष और देवोंके देव
ऐसे धर्मकी ध्वजा रूप व वृषभके चिन्हको
रखनेवाले श्री ऋषभदेव इस अवसरपिणी
कालके प्रथम तीर्थंकरको नमस्कार करता हूं ।

प्रिय सज्जन महोदयगण और सत्तारी वर्ग !
कलकत्ते ऐसे भारतके बृहत् नगरमें इस “भारत
जैन महामंडल”का वार्षिकोत्सव होनेपर यह
बहुत उचित होता यदि इस सम्मेलनको सफ-
लता पूर्वक निर्वाह ले जानेका उत्तरदायित्व
अर्थात् मेधापतिका पद जैन समाजमें उपस्थित
अनेक विद्वान् और प्रतिष्ठित पुरुषोंमेंसे कि-
सीको दिया गया होता । मुझ अल्पश्रुत,

तुच्छबुद्धि और साधारण पुरुष पर ऐसे महान्
कार्यका भार सौंपना एक अल्पवयस्क बालकके
मस्तक पर कई मन भार लाद देना है । पर
अब जब आप महानुभावोंने मुझ अल्पज्ञसे
ही इस महान् कार्यके सम्पादनको लेना एक
मत हो प्रकट किया है तब यह अनुचित
जान पड़ता है कि मैं आपकी इच्छाका अप-
मान करूं । अतएव मैं इसे स्वीकार करता
हुआ आप सज्जनोंसे इस बातकी दृढ़ आशा
रखूंगा कि मेरे द्वारा यह कार्य निर्विघ्न पूर्ण
हो, इसमें मुझे हर प्रकारकी सहायता दे
और ऐसा प्रयत्न करें जिससे हम आप
सर्व परम मंगल सहित कुछ वास्तविक
कार्यका उपाय करके सहर्ष अपने २ स्थानको
विदा हों ।

प्रथम इसके कि मैं आसन ग्रहण करूं यह
उचित जान पड़ता है कि मैं अपने विचार
आपके सामने उपस्थित करूं और आप उन्हें
एक-चित्त हो श्रवण करें । आप यह अवश्य
ध्यानमें रखें कि जो कुछ मेरा वक्तव्य होगा
वह मेरा अपना ही विचार होगा । उसका
उत्तरदायित्व मेरे पर होगा । वह विचार इस
मंडलका है व जैनसमाजका है ऐसा उस समय
तक नहीं माना जासकता जब तक वह प्रस्ता-
वरूपमें स्वीकार न कर लिया जावे ।

जिनधर्म ।

जिस धर्मकी शक्तिने आज हम आप सबको
इस स्थान पर आकर्षित कर लिया है, वह
धर्म कैसा जगत्के जीवोंका कल्याणकारी है,
पहले मुझे इस पर थोड़ासा विचार करना है ।



किसी भी वस्तुके स्वरूपको विचारते हुए व उसका वर्णन करते हुए समयमें उसका सर्व स्वरूप विचारना व कहना खास कर उस व्यक्तिके लिये जो सर्वज्ञ न हो पिल्कुल असंभव है । एक समयमें सर्व पदार्थोंके सर्व स्वरूपको जाननेकी शक्ति केवलज्ञानमें होती है । यह ज्ञान आत्माका स्वभाव है । योगियोंके ईश्वर-इस अवसरपिणी कालमें होचुके श्री ऋषभ आदि श्री महावीर पर्यंत २४ तीर्थंकर व श्री भरत, सगर, विजय, अचल, बाहुवली, हनुमान, प्रद्युम्न, गौतम, सुधर्म, जंबूस्वामी आदि, अनगिनती केवली-इन्हींने केवलज्ञान प्राप्त कर वस्तुके सर्व स्वरूपको एक कालमें जान लिया था । हम इस समय अल्प-ज्ञानी हैं इससे एक वस्तुके स्वरूपको धीरे २ ही विचार सकते और कह सकते हैं ।

यद्यपि एक पदार्थमें अनंत गुण होते हैं पर किसी पदार्थको पहचाननेके लिये कि यह अमुक पदार्थ है व अमुक नहीं है कुछ थोड़ेसे गुण छोट लेने पड़ते हैं-इन्हीं गुणोंके द्वारा हम वस्तुओंकी भिन्न पहचान कर सकते हैं । ऐसा होने पर भी हम उस वस्तुके छोटे हुए गुण या स्वभावोंको भी अपने वचनोंके द्वारा एक साथ दूसरोंको नहीं समझा सकते । हमको अपने शब्दोंसे काम लेना पड़ेगा । वे शब्द अक्षरोंसे बने होते हैं इसलिये अक्षर या शब्द कहनेमें समय तो बहुत चला जायगा पर सुनने व समझने वालेको उसके एक स्वभावका ही ज्ञान होगा जब कि दूसरे स्वभावोंको बनानेके लिये दूसरा शब्द व्यवहार करना

पड़ेगा ।

एक शब्द द्वारा वस्तुका स्वरूप बताते हुए समझनेवालेको यह ज्ञात रहे कि इसमें और भी स्वभाव हैं । जैनाचार्योंने “ स्यात् ” शब्दका प्रयोग बनाया है । जिसके अर्थ हैं “ कथञ्चित् ” या किसी अपेक्षासे “ from some point of view ”.

वस्तुके स्वरूपको किसी अपेक्षा कहनेको ही “ स्याद्वाद ” कहते हैं, स्याद्वाद द्वारा पदार्थका स्वरूप अनेकांत या अनेक स्वभाव-वाला है ऐसा प्रतीत होता है । जिससे समझनेवालेको एक अंशरूप मिथ्याज्ञान नहीं होने पाता है । “ अग्नि दाहक है ” ऐसा कहना ईंधनको जलानेकी अपेक्षा ठीक है पर सर्वथा उसमें इतना ही गुण नहीं है किन्तु वह भोजन पकानेकी अपेक्षा “ पाचक ” और प्रकाश करनेकी अपेक्षा “ प्रकाशक भी है । इस स्यात्के लिये स्यात् दाहक, स्यात् पाचक, स्यात् प्रकाशक है । जिस समय हम स्यात् या कथञ्चित् या किसी अपेक्षासे दाहक है ऐसा कहेंगे तो सुननेवाले को यह अवश्य ध्यानमें आयगा कि इसमें और भी स्वभाव हैं । वह मात्र दाहक ही है, पाचक या प्रकाशक आदि रूप नहीं है ऐसा ऐकान्तिक मिथ्याज्ञान न होगा । अग्निमें दाहक, पाचक या प्रकाशक तीनों स्वभाव एक ही समयमें रहते हुए शब्दोंसे एक कालमें तीनोंका कहना असंभव है । पर जो अग्निको समझना चाहता है उसे अधिकता यथार्थ ज्ञान होना चाहिये अन्यथा वह अग्निसे अपना काम न निकाल सकेगा ।



इस दृष्टान्तसे यह सिद्ध है कि किसी पदार्थका ज्ञान करनेके लिये “ स्याद्वाद ” की अतीव आवश्यकता है, यह बात सत्य है—यथार्थ है—इसीलिये विक्रमकी २ री शताब्दीमें होनेवाले दिग्विजयी न्यायवेत्ता स्वामी समन्तभद्राचार्यने आसमीमांसामें कहा है—

तत्त्वज्ञानं प्रमाणं ते युगपत्सर्वभासनम् ।

क्रमभावि च यज्ज्ञानं स्याद्वादनयसंस्कृतम् ॥१०१॥

स्याद्वादकेवलज्ञाने सर्वतत्त्वप्रकाशने ।

भेदः साक्षादसाधार्यं ह्यवस्त्वन्यतमं भवेत् ॥१०२॥

भावार्थ—जैसे एक कालमें सर्व पदार्थोंको प्रकाशनेवाला केवलज्ञान प्रमाण अर्थात् सम्यग्ज्ञान है ऐसे ही क्रम २ से होनेवाला जो स्याद्वाद नयके द्वारा संस्कारित व प्रकाशित ज्ञान है सो भी प्रमाण ज्ञान है ।

सर्व तत्त्वोंके प्रकट करनेमें केवलज्ञान और स्याद्वाद दोनों ही समर्थ हैं भेद केवल प्रत्यक्ष और परोक्षका है । इन दोनोंके सिवाय जो वस्तुका स्वरूप है वह अवस्तु सदृश ही होता है । अर्थात् स्याद्वाद नयके बिना पदार्थोंका स्वरूप हम छद्मस्थों द्वारा ठीक २ नहीं जाना जा सकता ।

वस्तुके भीतर एक ही कालमें नित्य, अनित्य, एक, अनेक, अस्ति, नास्ति आदि विरोधी स्वभाव हैं इनका कथन स्याद्वाद नयके द्वारा अविरोध हो सकता है । जैसे वस्तु अपने गुणोंके ध्रौव्यपनेकी अपेक्षा नित्य है पर उन गुणोंमें जो समय २ पर परिणमन या पर्याय होती हैं उनकी अपेक्षा अनित्य है—क्योंकि हर एक वस्तु या द्रव्य ॥ यह सत्य है—

‘ सत् द्रव्यलक्षणम् ’ ‘ उत्पादव्ययध्रौव्ययुक्तं सत् ’ गुणपर्ययवत् द्रव्यम् (२९. ३०. ३८ अ० ५ तत्त्वार्थ सूत्र श्री उमास्वामीकृत वि० सं० ८१)

भावार्थ—जो सत् हो सो द्रव्य है, जिसमें एक ही काल उत्पत्ति, विनाश, और ध्रौव्य या अविनाशी या नित्यपना पाया जाय सो सत् है अथवा जिसमें गुण और पर्याय या अवस्थाएं एक कालमें रहें उसे द्रव्य कहते हैं । मतलब यह हुआ कि गुण सदा बने रहते हैं और उनमें जो समय २ स्वाभाविक या वैभाविक, सदृश या विसदृश अति सूक्ष्म समुद्रकी कड़ोलें व रत्नकी क्रांतिवत् परिणमन होता है वह अनित्य है अर्थात् समय २ नया २ परिणमन होनेसे पुराने परिणमनका व्यय अर्थात् नाश और नएका उत्पाद अर्थात् उपनना होता है । वृक्षमें आमके भीतर वर्ण गुण रहते हुए उस वर्णकी हरी अवस्थाका पीला होते जाना परिणमन है अर्थात् हरेपनका व्यय होकर पीलेपनका उत्पाद है ।

नित्य और अनित्य दोनों स्वभावोंको समझनेके लिये हमें कहना पड़ेगा कि ‘ स्यात् नित्यं ’, ‘ स्यात् अनित्यं ’, तथा दोनोंको एक साथ लगाकर कहनेकी अपेक्षा ‘ स्यात् नित्यानित्यम् ’, क्योंकि बचनोंमें एक समयमें इनके कहनेकी शक्ति नहीं है । जब कि दोनों स्वभाव एक समयमें ही हैं इस अपेक्षा ‘ स्यात् अवतत्त्वम् ’ अर्थात् इस अपेक्षासे स्वरूप कथन बचनगोचर नहीं है । परंतु ऐसा अवतत्त्व होने पर भी नित्य है, या अनित्य है या



नित्यानित्य है। इस तरह नित्य, अनित्य और अवक्तव्य तीन स्वभावोंके सात भेग बन जाते हैं। इसीसे स्याद्वादनयको सप्तभंगी भी कहते हैं। विक्रम सम्वत् ४९ में होनेवाले श्री कुंदकुंदाचार्य महाराजने श्री पंचास्तिकायमें इस सप्तभंगकी आवश्यकता बताई है—

गाथा-सिय अलि पत्थि उट्ठं अवक्तव्यं पुणोय तत्तिदय ।

द्वेयं खु सप्तभंग आदेसपणेण समवदि ॥१४॥

इस स्याद्वादके स्वरूपको शंकराचार्यने कुछका कुछ समझकर अपने भाष्यमें खंडन किया है। प्रयागके विद्वान् महामहोपाध्याय डा० गंगा-नाथ झा ने साफ तौरसे कहा है कि यदि शंकराचार्यजैनशास्त्रोंका मनन करते तो उनको ऐसा कहना न पड़ता। इस स्याद्वादकी यथार्थताको पूनाके डा० भण्डारकर और जर्मनीके प्रोफेसर जैकोबीने यथार्थ माना है।

वर्तमान जैन विद्वान् बाबू चम्भरराय बैरिष्टर हरदोईने अपने की ऑफ नॉलेज Key of Knowledge में सफा ७२९में इस सिद्धांतके महत्त्वको बताते हुए कहा है It gives us a many-sided, and therefore, necessarily true view of the truth which we are all seeking to discover " यह हमें सत्यका अनेक आपेक्षिक और इसलिये मिलकुल सत्य स्वरूप बता देता है जिस सत्यकी हम सब खोज कर रहे हैं। सप्तभङ्गीतरंगिणी और स्याद्वादमंजरीसे इस स्याद्वादका स्वरूप गिम्नासे प्राप्त हो सकता है।

इस अनादि जगत्में आत्माका हित करने-वाला जो वस्तुके स्वरूपका यथार्थ ज्ञान है वह "स्याद्वाद" के द्वारा होता है और यही जिन आगमका मूल बीज है। इसलिये इस तरफ आपका लक्ष्य दिलाना इसीलिये उचित समझा गया कि आप धार्मिक तत्वोंको यथार्थ जानकर अपना हित कर सकें। यही स्याद्वाद या अनेकांत नय परस्परके वादियोंके विरोधोंको दूर कर एकता और समताका लाने वाला है इसीलिये स्वामी अमृतचंद्र आचार्यने विक्रमकी १०वीं शताब्दीमें अपने पुरुषार्थसिन्धुपाय ग्रंथमें कहा है "विरोधमथनं नमाम्यनेकांतं" यह अनेकांत विरोधको मेटनेवाला है इसीलिये मैं नमस्कार करता हूं। यह जिनवर्म किसीका ऐसा सिद्धांत नहीं है कि जिसको हमें बलात्कार मनाया जाय—यह वास्तवमें आत्माकी उन्नतिका एक सत्य विज्ञान है इस कारण इसको 'Self Science' या 'Key to Self realisation' यानी आत्म विज्ञान या आत्मानुभवकी कुंजी कहें तो कोई अत्युक्ति नहीं है।

हम और आप या सर्व प्राणी सुख और शांति peace and happiness चाहते हैं पर उसके लिये बाहरी चीजोंके भोगनेमें जाते हैं। उसका फल यह होता है कि तृष्णा और आकुलता बढ़ती जाती है। सुख शान्तिके बदलेमें अशांति और दुःख हमें प्राप्त होता है।

जहांतक विचार गया है व आप विचार करेंगे तो प्रकट होगा कि सुख और शांति हमारे ही आत्माका स्वभाव है। हम जब



अपने और इस कागज़के मध्यमें जो हमारे हाथमें है क्या अंतर है इसपर लक्ष्य देंगे तो विदित होगा कि समझने, देखने, जाननेकी शक्ति हमारेमें है पर इस कागज़में नहीं है । इस शक्तिको **चेतनाशक्ति** कहते हैं । शक्ति गुण है । गुणका लक्षण है “द्रव्याश्रया निर्गुणागुणाः” (४० अ० ९ त० सूत्र) जो द्रव्यके आश्रय रहें व उनमें और गुण न हों सो गुण हैं । अतएव जिस द्रव्यमें चेतनागुण है उसीको जीव या आत्मा तथा जिसमें नहीं है उसीको अजीव या अनात्मा या जड़ कहते हैं । वस इस लक्षणसे यह प्रकट है कि जो वस्तु हमारे शरीरमें रहती है वह जीव या आत्मा है । उसके रहते हुए शरीरके अगोपांग काम करते व इन्द्रियोंके द्वारा ज्ञान होता पर उसके न रहते हुए कुछ नहीं होता है ।

आत्मामें जैसे चेतना गुण है ऐसे ही शांति या वीतरागता भी गुण है क्योंकि जब हम क्रोध, मान, माया, लोभकरते हमारा आत्मा हेसित होता-दुःखी होता । पर जब वे नहीं होते या मन्द होते हैं तो हमारा आत्मा शांत और सुखी रहता है तथा इसीसे यह भी सिद्ध है कि मुक्त भी आत्माका स्वभाव है । इसलिये आत्माके विशेष गुण चेतना, शांतता और आनन्द हैं—जो परमाणु या स्कंदरूप पदार्थ हैं उनको **पुद्गल** कहते हैं जिनमें इस आत्माके तो विशेष गुण नहीं हैं पर स्पर्श, रस, गंध और र्ण हैं जो प्रत्यक्ष प्रकट हैं ।

ये दो मुख्य द्रव्य हैं । इन्हीं दोनोंके सन्तुलनसे जगत्की नाना क्रियाएं हो रही

हैं । प्रकृतिमें मेघोंका पानी होना, पानीसे मेघ होना, नदी बहना, पृथ्वी तटकी मिट्टी-का बहना, नदीके मध्यमें उसका जमा हो पृथ्वी बन जाना, बर्फ गिरना, आतप व चंद्र प्रकाश होना आदि कृत्य पुद्गलके परस्पर सम्बन्ध और वियोगके कार्य प्रत्यक्ष प्रकट हैं । घर, बट, पट, वर्तन आदि वस्तुओंका बनाना इस शरीरी प्राणधारीका प्रकट है । ऐसी ही क्रिया अनादि कालसे चली आ रही है और चली जायगी । इसीसे यह जगत् सत् है अर्थात् जो २ पदार्थोंका यह समुदाय है वे सर्व सदासे हैं सदा रहेंगे । केवल उनमें अवस्था बदलती दीखती है इसीसे यह जगत् असत् है ।

प्रत्येक आत्मा अपने शरीरप्रमाण आकारको लिये हुए झलकता है सो सत्य है क्योंकि प्रदेशत्व, अस्तित्व, वस्तुत्व, द्रव्यत्व, अमुरल्लघुत्व, प्रमेयत्व साधारण गुण हैं जो सर्व आत्माओंमें, सर्व परमाणु व अन्य स्कंधोंमें तथा अन्य चार द्रव्योंमें पाए जाते हैं जिनकी भी सत्ता इस जगत्में है । स्थान धरनेके स्वभावको प्रदेशत्व गुण कहते हैं । इसलिये हरएक वस्तु आकारको रखने-वाली है, आत्मा और पुद्गल जगत्में ४ कार्य करते हैं—चलना, टहरना, स्थान पाना और निन्य परिणमन करते रहना । हरएक कार्यके लिये उपादान और निमित्त कारणकी आवश्यकता होती है । इन चारों कार्योंके उपादान कारण वे स्वयं हैं पर निमित्त कारण ये चार मूलद्रव्य हैं । धर्मास्तिवैतथ्य



और अधर्मास्तिकाय जो दोनों अखंड, अमूर्तिक लोकव्यापी अजीव द्रव्य हैं चलने और ठहरनेमें क्रमसे उदासीनपनेमें कारण हैं तथा आकाश द्रव्य सर्वको स्थान देता और काल द्रव्य पर्याय पलटनमें सहाई है। आकाश अखंड और अनंत है। कालके कालाणु लोकाकाशके असंख्यात प्रदेशोंके समान असंख्यात हैं।

सुख शांति जो हमारे ही आत्माके स्वभावमें है उसीको प्राप्त करना हमारे आत्माका परम हित है। इसलिये हमें अपने ही आत्माके असली स्वरूपको जान कर उसपर दृढ़ श्रद्धानुष्ठान लाकर उसका ध्यान, मनन, पूजन, भजन करना चाहिये। यही जिनधर्म है। आत्मामें जो मिथ्याभाव, अज्ञान और असंयम या रागद्वेषादि विकार हैं उनको मेट कर आत्माको सच्चा श्रद्धावान, ज्ञानी, और संयमी या वीतराग बनाना सुख शांतिका पूर्ण लाभ करना है। और इस उपायको जितने अंश किया जायगा सुख शांति प्राप्त होगी। आत्मा आप ही अपना विगाड़ या सुचार करने वाला है। यह आप ही कर्ता और भोक्ता है। सुखशांति और चेतना आत्माका स्वभाव होने पर भी हमारे और आपके आत्माओंको इसका ठीक और पूर्ण लाभ नहीं है। यह इस बातको प्रमाणित करता है कि हमारे आत्मामें कुछ अशुद्धता है। अशुद्धता दूसरी वस्तुके मेलसे होती है। जिस वस्तुका मेल है उसे कर्म या पाप पृष्ण कहते हैं। जैन सिद्धांत कर्मोंको

पुद्गलकी वर्गणाएं बतलाता है। जब २ हमारेमें शुभ या अशुभ कोई अशुद्ध भाव होता है इनका आकर्षण या आश्रय होता है—साथ ही रागद्वेषके निमित्तसे इनका आत्माके साथ कुछ कालके लिये बंध होजाता है—उन्हींका असर होते रहना दुःख या संसारिक सुखका भोगना है। आत्माको इनसे बचानेके लिये वे शुद्ध भाव करने होंगे जिनसे इनका आना स्के या संवर हो तथा जो पूर्व बद्ध हैं उनकी निर्जरा हो जावे जिममें आत्मा सर्व बंधनोंसे छूटकर मोक्ष हो जावे। और अपने परम सुख शांत मय चैतन्य स्वरूपको प्राप्त कर सदाके लिये पवित्रात्मा हो जावे।

आत्माका आत्माके सिनाय पर पदार्थोंमें मोह करना जब बंधका कारण है तब अपने ही शुद्ध स्वरूपका ध्यान करना मोक्षका कारण है। इसी उद्देश्यके लिये जो इन्द्रिय विनयी होते हैं वे सर्व परिग्रह त्याग निर्ग्रह हो निरंतर स्वाध्याय करते हुए इसी तरह साधुमार्ग धारण करते हैं जैसा श्री महावीरस्वामीने किया था। प्रसुने बलादि रहित परम हंसकी अवस्थामें केवलज्ञान प्राप्त किया था।

जो इस मार्गको धार नहीं सकत वे गृहस्थमें रहते हुए धर्म, अर्थ, काम, पुरुषार्थोंको पालते हैं। न्यायपूर्वक द्रव्य कमाना, जीवदयाके तत्त्वको ध्यानमें रखकर भोजनपान वस्त्राच्छादन आदि करना जिससे शरीर स्वास्थयुक्त रहे और पशुपक्षी आदिकोंको



कष्ट न पहुँचे । तथा आत्मोन्नतिके उद्देश्यको ध्यानमें रखते हुए जिन तीर्थकारोंने व अन्य आत्माओंने अपनेको शुद्ध कर लिया उनकी भक्ति उनके नाम लेकर, उनकी ध्यानाकार मूर्तिओंके द्वारा उनके ध्यान व मोक्ष स्थानों व उनके परमपदके कालका निमित्त मिलाकर व उनके गुणोंको स्मरण करके करते हैं, निर्गुण साधुओंकी सेवा करते हैं, पवित्र शास्त्रोंको पढ़ते हैं, मन और इन्द्रियोंको वशमें करनेके लिये संयम पालते हैं, प्रातः और संध्याको ध्यानका अभ्यास करते हैं और यथायोग्य पात्रोंको धर्मसे व कल्याणबुद्धिसे सर्वको आहार, औषधि, अभय और विद्यादान करते हैं । अहिंसाणुव्रत, सत्याणुव्रत, अचौर्याणुव्रत, स्वस्त्रीसन्तोष और परिग्रह प्रमाण इन पांच व्रतोंका अभ्यास करते हैं । यही जिनधर्म है जिसको अनादिकालसे तीर्थकरादिकोंने पाया था और इसीका उपदेश किया था ।

स्याद्वाद नयके द्वारा पदार्थोंको जानकर तथा समदृष्टी होकर रागद्वेष त्यागनेका अभ्यास करते हुए स्व और परकी उन्नति करना ही जिनधर्म है ।

ऐसा ही श्री कुंदकुंदाचार्य और उनके शिष्य उमास्वामी ने कहा है:—

इत्थं पाणवरित्ताणि सेवि दय्याणि गाहूणा निधं ।
तांनि पुत्र जाण तिज्जिनि भय्याणं चैव निच्छयदे ।

॥१॥ ग० गार

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्र्याणि मोक्षमांगः ॥ १

: अ० १ त० सूत्र ॥

अतः सम्यग्दर्शन । सद्दृष्टान्तो ह्येव सम्मतः ।

वक्त्राय असेत दोसो सयल्लुण्णया हवे अत्तो

॥५॥ नि० सा०

बुद्ध तराह भीरु रोसो रागो मोहो चिंता
जरा रुजा मिच्छू ।

स्वेद खेद मदो रद्धि विण्हिय निद्धा ज पुब्बेसो
॥६॥ नि० सा०

तस्स मुहम्मद वयणं पुब्बावरदोस विरहिय सुद्ध ।
आगममिदि परिकट्ठियं तेणदु कहिया ह्वंति तच्चत्था
॥८॥ नि० सा०

जीवा पुग्गलकाया धम्माधम्माय काल, अयासं ।
तच्चत्था इदि भणिदा णाणा गुण वज्जः एहि
सज्जुता ॥९॥ नि० सा०

जीवाजीवाश्रवचंधसंवरनिर्जरा मोक्षास्तत्त्वम् ॥ ४
अ० १ त० सूत्र

भावार्थ—सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान,

सम्यक् चारित्र आत्माकी शुद्धिका उपाय है निश्चयसे तीनों ही आत्माका गुण है—इसीसे उसीकी रुचि, ज्ञान व उसीमें तन्मय होना मोक्षका मार्ग या अपनी स्वतंत्रताका लाभ करना है । व्यवहारसे आप्त, आगम, तत्त्वार्थोंका श्रद्धान करना सम्यग्दर्शन, उनका ज्ञान सम्यग्ज्ञान, उनका सेवन सम्यक्चारित्र है । क्षुधा, तृषा, भय, द्वेष, राग, मोह, चिंता, जरा, रोग, मरण, स्वेद, खेद, मद, रति, विस्मय, निद्रा, जन्म, उद्वेग ऐसे १८ दोष रहित सर्व आत्मिक गुणोंसे पूर्ण आप्त या पूज्य देव हैं उसके द्वारा प्रकट पूर्वापर दोष रहित और शुद्ध आगम ह । जीव, अजीव, आश्रव, वंच, संसर, निर्जरा, और मोक्ष ये मान तत्त्व हैं । जीव अजीवमें जीव, पुद्गल, धर्म, अवर्म, काल और आकाश छः द्रव्य गर्भित हैं । जीव और अजीवके सम्बन्धसे ही आश्रवा आदि पांच तत्त्व हैं । यही जिनधर्म है । जगत्के अन्य



सिद्धांतोंसे मुकाबला किये जाने पर एक निष्पक्ष तत्त्वज्ञानीको इसीके द्वारा 'सन्तोष' होता है। उक्त चम्पतराय वैरिष्ठर १००० सफेकी पुस्तक "की ऑफ नोलेज" Key of Knowledge में वादाबुवाद और विचारके पीछे सफा ८४६ में कहते हैं—

"When we approach religion as humble seekers after Truth, and not in the spirit of bigotry or conceit, it will be seen that Jainism stands unrivalled among the systems which claim to impart the Truth."

भाव—जब हम धर्मको हठ या छलकी दृष्टिसे नहीं किंतु सत्यकी खोजसे देखेंगे तो हमें मालूम होगा कि सत्य बतानेका दावा करनेवाले सिद्धांतोंमें जैन सिद्धांत सर्वोच्च स्थान पाता है।

हम आप जब जैनी या जिनधर्मधारी या यों कहिये वीतराग विज्ञानी, भाव, कर्म, रागद्वेषादि, द्रव्यकर्म ज्ञानावरणादि तथा नोकर्म शरीरादि इन तीनों प्रकारके कर्मोंको जीतने वाले जिनके भक्त प्रसिद्ध हैं तब यह तो सबसे पहले हमारा कर्तव्य है कि हम इस जिन धर्मका पक्का श्रद्धान करके इसको अपने अग्र्यासमें लायें।

हम जानते हैं कि आपने बहुतोंका यह उत्साह है कि यह पवित्र धर्म निमती उत्पत्तिके पता इतिहासकी खोजके बाहर है जो आज २४४४ वर्ष हुए श्री महावीरस्वामीके समय भी विद्यमान था। श्री महावीरस्वामीने

इसे चलाया नहीं था क्योंकि बौद्धोंके त्रिपिटक आदि प्राचीन ग्रंथोंमें भी महावीरस्वामीको जिन धर्मका चलानेवाला न लिख कर उपदेश दाता लिखा है। उस धर्मका प्रचार करें अर्थात् और अनेक जनोंको इसकी सच्ची रोशनीमें लाकर उनकी आत्माका कल्याण करें। पर यह आपकी भावना तब ही सफल होसकेगी जब आप इसको धारण करोगे—स्वयं अपने चारित्र्यसे अपनेको श्री महावीरस्वामीका अनुयायी प्रकट करोगे। जैसा पहले भत्रियवीर चंद्रगुप्त चाण्डेरायादि जैनी राजाओंने जब ग्रहस्थ में रहे तब न्यायपूर्वक राज्य किया, शत्रुओंसे देशको बचाया और जब निर्वृत्तिमार्गी हुए तब कर्मोंको परास्त करनेका यत्न किया ऐसा ही वीरत्व जब आप धारण करोगे, आपकी छायामें अनेक आत्माएं आकर अपना कल्याण करेंगीं।

इस समय जो इस पवित्र धर्ममें दिगम्बर और श्वेतांबर भेद है सो न श्री ऋषभदेवके समयमें, न श्री पार्श्वनाथके वक्तमें और न महावीरस्वामीके समयमें थे। इस भेदका प्रारंभ यद्यपि राजा चंद्रगुप्त मौर्यके समयमें हुआ था पर इसकी पृथक् २ स्थिति विक्रमकी द्वितीय शताब्दीमें हुई हो ऐसा प्रकट होता है।

जो कुछ भी हो, इस समय हम सब जैन नामधारियोंका यह कर्तव्य है कि मूल सिद्धांतोंको जानकर उन पर चलें और अपना हिन करें। तथा जब हम सब जैनी कहलाते हैं तब हम अपनी एक श-



क्तिसे जो कुछ काम परस्पर मिलके कर सकते हैं उनको करें। परस्पर एक दूसरेके श्रद्धान, ज्ञान, चारित्र्यमें बाधा न पहुँचाकर परस्पर एकता रखकर हम जो कुछ काम कर सकते हैं उसे अच्छी तरह सफाईसे करें।

भारत जैन महामंडल।

वर्तमानमें इस मंडलका यही उद्देश्य मालूम होता है। यद्यपि यह मंडल सन् १८९९में जैन यंग मैनस एसोसियेशनके नामसे भारत-वर्षीय दिगम्बर जैन महासभाके कुछ सदस्यों द्वारा इसलिये खुला था कि इंग्रेजी पढ़े जैनी भाई अपने धर्मका ज्ञान प्राप्त करें व महासभाके कार्योंकी उन्नति करके जैन समाजको तरकीपर लावें। उस समय इसका क्षेत्र अप्रकट रूपसे दिगम्बर जैन समाज ही था पर पीछे इसका क्षेत्र कुल जैन समाजके अंदर एकता रखते हुए जैन समाजकी उन्नति और जैन धर्मकी प्रभावना करना होगया है। इस मंडलने १८ वर्षमें यद्यपि कोई बहुत बड़ा अमली काम करके नहीं बताया है पर अपने इंग्रेजी 'जैन-गज्ञ' मासिकपत्रको चलाकर अंग्रेजी पढ़ोंमें धर्मकी जागृतिको बनाए रखनेके सिवाय इसने पश्चिममें जैन धर्मका बीज बुवाया है व जैन ग्रंथको इंग्रेजीमें प्रकाशित करा इंग्रेजी पढ़ी दुनियाँको जैन धर्मका रस पिलानेका उपाय किया है। परमात्मा प्रकाशका उल्था पढ़के बहुतसे भारतके विद्वानोंन जैन धर्मकी प्रशंसामें पत्र भेजे हैं। Key of Knowledge, Practical Path, Draya Sangrah, Outlines of Jainism आदि ग्रंथोंका

इंग्रेजीमें प्रकट होना मंडलके उत्साही सदस्योंका ही काम है। यह मंडलकी ही प्रेरणाका फल है जिससे बाबू सरचंद्र घोषाल एम. ए. जैसे कई बंगाल देशके विद्वानोंको जैन ग्रंथोंके अवलोकन व उल्थाका शौक पड़ा है।

मंडलके मुखिया मि. जुगमन्दिरलाल जैनी जन हाईकोर्ट इन्दौर कई वर्षोंसे कई जैन ग्रंथोंके उल्था करनेमें लीन हैं। मंडलकी सोची हुई प्रणालीके अनुसार आपने जैन धर्मके मुख्य २ शब्दोंका एक छोटा कोष भी बना दिया है जो Central Jain Publishing House, Arrah के व्यवस्थापक बाबू देवेन्द्रकुमार द्वारा छप रहा है। परम विद्वान् श्री. नेमिचंद्र सिद्धांत चक्रवर्ती द्वारा रचित सूक्ष्म विद्याके भंडार श्री गोमटसार जीवकांडका सामान्य उल्था समाप्त करके अब उसके कर्मकांडका उल्था कर रहे हैं।

वर्तमान दशा।

यद्यपि मंडलने कुछ किया है ऐसा कहा गया है पर वर्तमानमें जो दशा जैनजातिकी हो रही है वह भी अतिशय शोचनीय है।

(१) पहली बात तो यह है कि हमारे धर्मग्रंथ बहुतसे अभी तक तालोंमें बन्द हैं, दीमकोंके भक्ष्य हो रहे हैं। उनमें अनेक रख हैं पर वे प्रकाशित नहीं होते। कर्णाटक देशमें घवळ, जयघवळ, महाघवळ व अन्य बहुतसे ऐसे ग्रंथ हैं जिनका प्रकाश करना अतिशय जरूरी है। धर्मकी उन्नतिके कोई योग्य साधन नहीं हैं। न हमारे अनेक



उपदेशदाता भ्रमण करते हैं और न हम अपने सिद्धांतोंको अनंक भाषाओंमें उल्था कराकर प्रकाशमें लाते, न उनका भाव बनानवाली लाखों पुस्तकें प्रकट कर मुफ्त वितरण करते हैं। धर्मप्रचारके ये दो जो बड़े साधन हैं जिनके बलसे बौद्धधर्म फैला व ईसाई धर्म फैल रहा है, हमने अपने हाथमें नहीं धारण किये हैं।

(२) दूसरी बात यह है कि हमारेमें एकता नहीं है। हम परस्पर ईर्ष्या रखने हुए एक दूसरेको हानि पहुंचानेका उपाय करते हैं।

(३) तीसरी बात यह है कि हमारेमें शिक्षाका बहुत कम प्रचार है। जिस शिक्षाको श्री ऋषभदेवने स्वयं अपने पुत्र व पुत्रियोंको बताया था वह शिक्षा हमारे सर्व बालक व बालिकाओंमें नहीं है—१००० में ५०५ बालक और ९६० बालिकाओंका अशिक्षित रहना क्या हमारी जातिकी पशु समान नहीं बनाए हुए है? जिस जातिकी माताएं मूर्ख हैं वहां शिक्षाका प्रचार कैसे हो?

(४) चौथी बात यह है कि हमारे यहां बालविवाह, वृद्धविवाह, कन्याविक्रय, व्यर्थ व्यय आदि कुरीतियां अभी तक फैली हुई हैं।

(५) पांचवी बात यह है कि हममें चारित्रिकी हीनता होती जा रही है; शुद्ध खानपान, व्यायाम और ब्रह्मचर्य जो स्वास्थ्य रक्षाके साधन हैं उनसे हम विगत हो रहे हैं। हमने अपने मृत्यु न्याययुक्त

व्यवहारको कलंकित कर दिया है। हमने न्याय व शांतिसे व्यवहार करना छोड़ दिया है। हम दुनियांके फेशन पर चलकर चमड़ेकी अधिक वस्तुएं व्यवहार कर दिन पर दिन हीन चारित्र होते जाते हैं।

(६) छठी बात यह है कि कुछ उच्च विद्याके अभाव व कुछ प्रमाद वश हम देशकी सेवामें भाग नहीं ले रहे हैं। हमारे जैनियोंका कोई मेम्बर वाइसरायकी लेजिस्लेटिव कौंसिलमें मेम्बर नहीं, कोई हाईकोर्ट जज नहीं, कोई देशका नेता नहीं।

हमारी सामाजिक गुराइयोंके कारण व परस्पर धर्म स्थिरताका उपाय न होनेसे स्वास्थ्यकी रक्षा अपनी व अपने बालिकाओंकी खासकर न करनेसे हमारी संख्या दिनपर दिन हीन होती जा रही है। इत्यादि जैसी कुछ हीन दशा इस हमारी जैन जातिकी है उसको देखकर सिवाय रोनेके और क्या कहा जा सकता है?

हमारा कर्तव्य ।

(१) एकता—दशा जैसी कुछ है वह प्रकट है। राग जैसा कुछ है वह विद्यमान है। अब आवश्यकता है कि रोगको दूर करनेका उपाय किया जावे। पहली ज़रूरी बात यह है कि हम सब जैन नामधारी भाइयोंको परस्पर एकताका भाव स्थापित करना चाहिये—अब समय एकताका है। जब शिया मुन्नी मुसलमान एरु हैं—अपनी २ श्रद्धालुमार धर्म पावते हुए मुसलमानानेके



नातेसे एक आवाज़से बोल रहे हैं, जब शैव, ब्राह्म, शाक्त आदि भेद होनेपर भी सर्व हिन्दू एक स्वरसे हिन्दूपनका शब्द निकाल रहे हैं, जब प्रोटेस्टेन्ट कैथलिक आदि भेदोंको रखते हुए भी सर्व ईसाई एक स्वरसे हो रहे हैं, जैन महायान और हिनयान भेदोंको रखते हुए सर्व बौद्ध एकतामें गूंज रहे हैं तब क्या यह असंभव है कि हम अपनी श्रद्धाके अनुकूल भेद रखते हुए भी परस्पर एकता न रख सकें ?

एकताका साधन न्याययुक्त नम्र व्यवहार और सहिष्णुता है। जिनके साथ हम एकता रखना चाहते हैं उनसे हम नीति और धर्म पूर्वक मान मत्सर छोड़कर नम्रतासे व्यवहार करें तथा कभी कोई तुच्छ दोषको भी सह कर उसको समतासे निवारण करनेका यत्न करें—तो एकता रह सकती है।

२५ वर्ष पहले दिगम्बर और शैताम्बरमें बहुत अंशोंमें एकता थी। अब इस एकताके हटनेका कारण यदि देखा जाय तो इन्हीं दोनों गुणोंका अभाव है।

उन तीर्थ स्थानोंपर जहां दोनों आश्रायवाले पूजन करते हैं जवसे एक दूसरे स्वामी होना चाहने लगे तथा एक दूसरेके धर्मसाधनमें विघ्न उपस्थित करने लगे तब ही से ऐसे झगड़े बढ़े कि जिनके कारण लाखों रुपये अदालतोंमें व्यय हुए व हो रहे हैं। हमें यहां यह विवेचनकी जरूरत नहीं है कि किसका दोष है व किसका नहीं है व किसका अधिक व किसका कम है।

निष्पक्ष महाशय स्वयं इस बातको जान सकते हैं।

वास्तवमें तीर्थ उन तीर्थकरोंके हैं जो वहांसे मुक्त पहुंचे हैं। उनके स्थानोंकी पूजा कोई भी जैनी करे उसको जैनत्वके नातेसे पूरा हक है। तथा एक जैनीको तो यही समझना चाहिये और यही भाव रखने चाहिये कि इन तीर्थोंकी भक्तिसे जितने अधिक जीव लाभ उठावें उतना ही श्रेष्ठ है।

श्री शिखरजी—हमारे सर्व तीर्थोंमें परम माननीय श्री शिखरजी या सम्मोदाचल पर्वत है जो इसी बंगालमें है व जहांसे अनंत तीर्थकर मोक्ष गए व जावेंगे। इस तीर्थके सम्बन्धमें जो अदालतें परस्पर हो रही हैं, क्या जैन धर्मके सिद्धांतपर लक्ष्य देनेसे एक दिनोंमें नहीं दूर हो सकती हैं ? दिगम्बरी भाइयोंका फर्ज है कि श्वेताम्बर भाइयोंके धर्मसाधनमें कोई विघ्न न करें। श्वेताम्बरी भाइयोंका फर्ज है कि दिगम्बरी भाइयोंके धर्मसाधनमें कोई विघ्न न करें। जो पूज्यनीय स्थान स्मारकके रूपमें सदासे चले आ रहे हैं उनको उसी प्राचीन रूपमें चिरस्थाई रखें। यदि कोई धर्मस्थान इतने बड़े पर्वतपर बनाना चाहे तो उसमें कोई एक दूसरेको विघ्नकारक न हो। तथा सब ही पर्वतकी ऐसी पवित्रता कायम है उसीको स्थिर रखनेका यत्न करें। उत्तर कोइ यस्ती न यत्नने दें। उचित तो यह है कि पर्वत पर कोई कार्य जैनियोंकी श्रद्धाके प्रतिकूल न हो ऐसी जित्ता पड़ी समीर व रागादरा



लेना चाहिये । यदि दोनोंकी एक सम्मतिसे उद्योग हो तो यह बात सिद्ध होसकती है । तब इसकी कोई आवश्यकता नहीं कि पर्वतको पट्टेकी लिया जाय या खरीदा जाय । आवश्यकता इस बातपर ही है कि पर्वतकी पवित्रतामें भविष्यमें कोई सन्देह न हो । पर परस्पर अनैक्य होनेसे जैन जातिकी सर्वथा हानि होगी व अन्योको लाभ पहुंचेगा । यह सर्वकाम परस्पर विश्वास और दिल खोल कर बात करने ही से हो सकता है । आप सर्व भाइयोंका कर्तव्य है कि इस तीर्थ संघी चिंताका समाधान कराके अनैक्यके बीनको मिटा दें । यदि मंडलके सदस्योंने इस कार्यमें सफलता पाई तो कहना होगा कि उन्होंने एक बड़ी भारी फूट राक्षसीका विजय करके अपने निर्मल यशको स्थापित किया है ।

(२) जैन कालेज—जैन जाति एकताके सूत्रमें बंध कर जैन समाजको उन्नतिको जो सर्वसे मुख्य उपाय जैन कालेजका स्थापन है उसको सुगमतासे कर सकनी है ।

जैन कालेजकी आवश्यकता जैन जातिमें मुद्दतोंसे होरही है । पर यह काम अभी तक नहीं हुआ है । यद्यपि स्वर्गवासी दानवीर सेठ माणिकचंदके उद्योगसे कालेजके स्थानों पर जैन बोर्डिंग खुल गए हैं और उनसे कुछ लाभ भी हुआ है पर जातीय कालेजके लाभसे फोट गुणा कम है ।

यदि निचार कर देता जाय तो कोई भी जाति ऐंसे विद्वानोंके बिना उन्नति नहीं पासकती जो उच्च शिक्षाके भंडार हों व जातीयताका

अभिमान रखने वाले परोपकारी हों । मुसलमानोंको अलीगढ़ कालेजने, हिन्दुओंको हिन्दू कालेज व हिन्दू विद्यालयने जीता जागता हुआ रक्खा पर जैनियोंमें जातीयताके पैदा करनेका साधन अबतक न हुआ । १२॥ लाख जैनी एक कालेजके लिये थोड़े नहीं हैं । यदि औसत दरजे एक २ रुपया भी दें तो कालेज स्थापित कर सकते हैं । यह काम जैन जातिके विद्वानोंका है । यदि दो चार भी विद्वान् परोपकारी गेजुएट अपना जीवन कालेज स्थापनके लिये अर्पण कर दें और आमकलकी आवश्यकतानुसार विज्ञान शिल्पादिकी शिक्षाको देनेवाला कालेजका मसौदा व नियम बनाकर जगह २ जाकर बिना किसी भेदभावके उद्योग करें तो कालेजके लायक रुपया क्या नहीं होसकता हैं ? अवश्य होसकता है । एक

आम्नाय कम दे या ज्यादा दे इस प्रश्नको बीचमें न लाकर सर्व जैनी मात्रसे उसकी शक्ति व भक्तिके अनुसार लेना चाहिये । जैन जातिमें रुपयोंकी कमी नहीं है पर सच्चे कार्य कर्ताओंकी कमी है । यदि सर्व आम्नायोंमेंसे तीन चार विद्वान् इस बातका बीड़ा उठावें तो यथाशक्ति मैं भी सहाय कर सकता हूं । सर्व जैनी लौकिक विषय साथ २ पढ़ सकते हैं । धार्मिक विषयोंमें अपनी २ आम्नायके भिन्न २ अध्यापकों द्वारा भिन्न २ पुस्तकें पढ़ सकते हैं अथवा तात्विक पुस्तकें ऐसी भी हैं जिनको सर्वा सम्प्रदायके छात्र एक साथ पढ़ सकते हैं । यह एक कार्य है जिसे हम सर्व जैनियोंको मिलके करना चाहिये । कोई २ इस कामको



भी असंभव खयाल करते हैं ? यह उनकी भूल है क्योंकि जब आर्यसमाजी मूर्ति अपूजक व मूर्तिपूजक हिन्दू जो प्रायः लड़ा करते हैं हिन्दू विश्वविद्यालयके काममें परस्पर मिल गए तो क्या हम इस विद्योन्नतिके काममें नहीं मिल सकते ? प्रश्न यह होगा कि इस कालेनको कहां स्थापित किया जाय । मेरी सम्मतिमें काशीसे बढ़ कर दूसरा स्थान नहीं है जहांपर हर प्रकारके विद्वानोंका सुभीता व हिन्दू विश्वविद्यालयका सम्पर्क है ।

(२) जीवदया प्रचार—यह एक ऐसा कार्य है जिसको हम परस्पर मिलके बहुत कुछ कर सकते हैं । हमें जगह २ सोसायटी खोलनी चाहिये, जीवदयाकी पुस्तकें व नोटिष बांटने चाहिये, उपदेश देना चाहिये व मांसाहार निषेधार्थ शाकाहारी भोजनालय खुलवाना चाहिये जिससे मांसाहारी स्वच्छता, स्वादिष्ट व स्वास्थ्ययुक्त भोजन पानेका अभ्यास करके मांसाहारसे बचें तथा स्थान २ पर जो बलि देवियोंके मठोंपर होती हैं उसे एक साथ उद्योग करके बंद करावें ।

(४) एक जैन सहायक बैंक (A Jain Co-operative Bank) खोलनेसे नव-युवक छात्रोंको कलाकौशलमें शिक्षित होनेको व उन्हें व अन्य जैनियोंको व्यापारदिमें लगानेको उवार रास्ता दिया जाय । इससे समग्र जैनजातिकी आर्थिक दशाका सुधार हो सकता है । इसी बैंकमें हम अपनी जातिके उग्र रूपको भी रग सकते हैं जिन्हें हम अन्य बैंकोंमें लान पर रखने स्थिते हैं ।

(५) अमली कार्रवाई—समजमेंसे जिन २ कुरीतियोंको निकालना है व धर्मसे अविरुद्ध सुरीतियोंका प्रचार करना है उसके लिये मंडलके सभासदोंको स्वयं अमली कार्रवाई दिखाना चाहिये व उसकी रिपोर्ट मंडलके वार्षिक जस्सेमें पेशकर अमली कार्रवाई करनेवाले सभासदोंको धन्यवाद देना चाहिये । बालविवाह, वृद्धविवाह, कन्याविक्रय कोई न करे, संतान जन्म व मरण होनेपर साधारण खर्चके सिवाय विरादरीके जीमन आदिमें द्रव्य न लगवें । विवाह शादी थोड़े खर्चमें निवटावें । अपने २ सन्तानोंको धार्मिक शिक्षा देवें व उन्हें धर्मरीतिसे चडावें । तथा हर एक सभासद गृहस्थके नित्य कर्म देवपूजा, दर्शन, स्वाध्याय, सामायाजिकदिकी करे, पानी छानकर बर्तें । अभक्ष्यसे बचें । न्याययुक्त व्यवहार करें, यही उपाय है । जनतामें धर्मज्ञान व धर्माचरण फैलाने व परस्पर धार्मिक विश्वास जमानेका है । मंडलको चाहिये कि एक २ फार्म प्रत्येक सभासदसे मासिक अमली कार्रवाईका मराहर मंगावें उसमें यह भी नोट हो कि असुक ग्रन्थका स्वाध्याय इतना किया व इसमें यह विषय उपयोगी निकला आदि ।

(६) जैन धर्मके ग्रंथ—जिनमें जीवन गुणस्थान मार्गणा व कर्मवच आदिका वर्णन हो व जो अव्यात्म सममें गर्भित हैं—जिनमें तत्त्वज्ञान विशेष हो उसको अनेक भाषाओंमें प्रकाशित करना । इस कामको इमीतगए एकतासे किया जासकता है जिस तरह नन्दोंका परमधुतप्रमाणिक मंडल रायचन्द



शास्त्रमाला द्वारा तात्त्विक ग्रंथोंको प्रकट करता है—परस्पर आमनाय सम्बन्धी पूजा पाठ व साधुओं श्रावकोंके बाहरी आवरण सम्बन्धी व कथा ग्रंथों प्रकट करनेकी बहुत आवश्यकता है—मंडलके पान इस ग्रंथ प्रकाशनके लिये कुछ व भंडार रहनेकी जरूरत है ।

(७) **स्त्री शिक्षाका प्रचार**—मंडलका यह भी फर्ज है कि वह एक बृहत् कन्या-महाविद्यालय उसी ढंगका स्थापित करे जिस ढंग पर एक जैन कालेज स्थापित करना है । जब तक योग्य माताएं न बनेंगी योग्य संतानका होना दुःसाध्य है ।

(८) **प्राथमिक शिक्षाका प्रचार**—प्रत्येक जैन बाळक व बालिका शिक्षा लेती है या नहीं इसकी देखभाल करके इसका प्रगल्भ प्रत्येक स्थानकी विरादरीसे कराना मंडलका सर्वसे बड़ा कर्तव्य है । जहां जुदी पाठशाला व कन्याशाळा स्थापित हो सकती है वहां स्थापित कराना व जहां नहीं हो सकती हैं वहांके लड़के लड़कियोंको सरकारी शालाओंमें भिजवाना तथा इसकी रिपोर्ट वार्षिक जलसमें प्रकट करना चाहिये ।

(९) **विधवाओंकी उपयोगिता**—मंडलका यह कर्तव्यभी है कि विधवाओंकी कमीके लिये उनके कारणोंके मेटनेके सिवाय हमें उनका जीवन पवित्र और उपयोगी बनानेकी प्रेरणा करनी चाहिये । आर्य समानती विदुषी कुमारी राजवंशी देवीन ता० २५ नवम्बरको लखनऊमें व्याख्यान देते हुए विधवाओंके लिये

कहा कि उनके लिये श्रेष्ठ मार्ग यही है कि उन्हें शिक्षा देकर परिचारिका, शिक्षिका, प्रचारिका, पाचिका आदि बनाया जाय—उन्हें स्वार्थ त्यागकी मूर्तियां बनाया जाय । देशका अधिकांश सुधार इन विधवाओंसे हो सकता है । उन्हें बताइये कि सारा देश ही तुम्हारा घर है व सारे देशके बच्चे ही तुम्हारे बच्चे हैं । इनसे जनतामें शिक्षाकी वृद्धि हो सकती है । धर्मका प्रचार भी इनसे खासा हो सकता है । बौद्ध कालमें सम्राट अशोककी कन्याने सीलोन जाकर धर्मप्रचार किया था । मंडलका कर्तव्य है कि विधवाओंकी शिक्षाका पूर्ण प्रयत्न करवे ।

(१०) **जैन सेवा समिति**—जैन उत्साही नवयुवकोंका कर्तव्य है कि अपने यहां जो जैन भेले होते हैं उनमें जाकर स्त्रीबच्चोंकी रक्षा कर व दुःखियोंकी सहायता करें, सर्वसाधारणके लाभार्थ उपदेश दें, दुःखोंका निवारण करें तथा जैन संस्थाओंमें काम करें, धर्मोपदेश दें व बोर्डिंगोंके सुप०का काम करके छात्रोंको सुपथगामी बनावें ।

(११) **श्रीमान् पंडित अर्जुनलाल जी सेठी**—अंतमें मैं आपका ध्यान जैन जातिके सेवक सेठीजी पर आकर्षण करता हूं । वह किम विपत्तिमें हैं यह बात आपसे छिपी नहीं है । अब वह जिलौर जिले मद्रासमें भेज दिये गए हैं । मा० दि० जैन महासभाके महायुक्त मंत्री मूलचंदजी वकीलने ता० १० दिसम्बरको रेजिस्ट्रार जैपुरको तार किया था—वह तार तथा उसका उत्तर जैन गजट ता०



१७ दिसम्बरमें मुद्रित है। वह यह है—

Kindly inform if provisions made by Government for Arjunlal Sethi's religious scruples in Villore. Jain Sabha shall be grateful to know his offence and period of internment—भावार्थ—अर्जुनलाल सेठी-के धार्मिक विचारोंकी रक्षामें क्या प्रवन्ध हुआ है तथा उनपर क्या जुर्म है व कबतक सुहृत्त नज़रबंद रहनेकी है। इसका उत्तर आया—Your telegram 10th. Arrangement being made but at present none of his family willing proceed Villore. Stop for latter portion telegram refer. Villore. भावार्थ—तार पाया। प्रवन्ध हो रहा है पर अभी तक उनके कुटुम्बका कोई आदमी बिलौर जानेको राजी नहीं है। दूसरी बातके लिये बिलौर पूछो—इन तारोंको सुनकर आपका यह कर्तव्य है कि सेठीजीका शरीर व धर्मकी रक्षाके लिये शीघ्र दो भाइयोंके भेजनेका प्रवन्ध करें। कुटुम्बकी अकेली स्त्री व बच्चे वहां कैसे जाकर नया कर सकते हैं?

यह इस समय बड़ी भारी सेवा आपके लिये उपस्थित है। यदि सेठीजीका शरीर न रहा तो जैन बौद्धको भी एक भारी कलंक लगेगा। सेठीजीको तीन वर्षसे अधिक नज़रबन्दीमें हो चुका। शासनकर्ता कोई सुनाई नहीं करते, परंतु इसमें मैं कहूंगा कि समग्र जैन जाति का पूर्ण उद्योग नहीं है। आन सेठीजी पर मंत्र है कल दूसरे पर आत्मरक्षा है इससे आप

सर्वहोका कर्तव्य है कि जिस तरह बने वाइसराय और भारत मंत्रीकी सेवामें जाकर अपना दुःख सुनाओ। यदि सुनाई न हो तो इंग्लैंडमें पार्लियामेंटमें जाकर पुकार करो—एक जाति बंधुके संकटको दूर करना आपकी जाति व धर्मकी रक्षाका उपाय है। श्वेताम्बरी भाइयोंको भी दिगम्बरियोंके साथ पूर्ण योग देकर इस परम कर्तव्यको निर्वाह करना चाहिये।

अंतमें मैं ब्रिटिश राज्यकी इस महा भारी युद्धमें विजय कामनाकी भावना करता हुआ इस हिंसामय युद्धकी शीघ्र शांति चाहता हूं। और अपने उपस्थित अनुपस्थित जैनी भाइयोंको प्रेरणा करता हूं कि वे अपनी सरकारकी युद्धमें विजय होने तक हर तरह तन मन धनसे मदद करते रहें।

मैं अपने जैनी भाइयोंसे यह भी कहूंगा कि वे अपने देशके सुधारके कार्योंमें भी पूरा योग दें। वे भी भारतके एक अंग हैं। भारतमें शिक्षा प्रचार हो, स्वास्थ्य स्थिर रहे, दुर्मितियोंका अंत हो; व अहिंसा धर्मका प्रचार हो, इस विषयमें पूर्ण योग दें। यहांके गरीब मजदूरोंके लाभार्थ यहांका बना कपड़ा आदि सामान यथासंभव व्यवहार कर देशको लाभ पहुंचाना।

प्रिय भाइयो। जो कुछ मैंने कहा है उसका मारांश यह है कि आप लोग अपने जीवनको जिनधर्ममय बनाओ और उस आनन्दका स्वाद लो जो अपने आमाता स्वभाव है। तथा इस निमित्त व जैनमानकी उन्नतिके लिये जो उपाय मैंने विनांग से



आपके सामने उपस्थित किये हैं। आशा है आप लोग हंसवत् इसमेंसे सार ग्रहण कर मुझे कृतार्थ करेंगे। और जैन जातिकी आवश्यकताओंको विचार कर इस कलकत्तेके अधिवेशनको स्मरणीय बना देंगे। आपलोग पारसी कौमसे १२ गुणे हैं—यदि आप प्रमादको हटाकर अपनी उन्नतिके लिये कमर कसके खड़े हो जावेंगे तो मुझे कुछ भी निराशा नहीं है कि आप उन्नतिपथ पर आरुढ़ होजायेंगे। आप कभी अपने चित्तमें निराशाको न आने दें। सदा सच्चे मनसे श्रद्धापूर्वक पुरुषार्थ करने चले जावें। वास्तवमें 'पुरुषार्थका फल अवश्य होता है।

मगल भगवान् वीरो । मगल गौतमो गणि ।

मगल सुदकुदायो जेनधर्मोस्तु मगलम् ॥

अब उद्धार कैसे हो ?

लगी दिन रैन है चिन्ता कि अब उद्धार कैसे हो ।
पड़ी मक्षधारमें भगवन् येनेया पार कैसे हो ॥१॥



चले आँधी निराशाकी न सुझे अपना वेगाना ।
खिवैया चोकड़ी, गूँचे प्रभो निस्तार कैसे हो ॥२॥



नदी जीवन समरकी है विजय उद्देश्य जिसरा तट ।
पहुँच उसतरु अनिघाकी यह हृत्का भार कैसे हो ॥३॥



भयानक भ्रम भँवरमें पड़ गई राप नान मयादा ।
हुए मदमत्त स्वारथमें सुमति सन्चार कैसे हो ॥४॥



गभी कर्तव्य विस्तारने न निथय आम शक्तीपर ।
भला फिर सत् विचारोना समय उद्गार कैसे हो ॥५॥

“मेमी” हजारीलाल जैन-आगरा ।

श्रद्धा उन्नतिकी जड़ है ।
(छे० जैन धर्मप्रण १० शीतलप्रसादजी)

यह उपरका शीर्षक एक ऐसा मूळ मंत्र है, जिसके आधार पर सारे जगन्की सर्व प्रकारकी उन्नति निर्भर है। जिसकी जिस बातमें पहले श्रद्धा होती है तब उसका प्रयत्न हार्दिक प्रेमसे होता है। जिसका उद्योग हृदयसे किया जाता है उसमें यदि बाधक कारण कोई उपस्थित न होकर साधक कारण मिल जाय तो वह कार्य अवश्य सफल हो जाता है। पहले हम लौकिक 'कार्यो' ही में देखने हैं—जिस किमीको यह श्रद्धान हो कि वह युद्धमें शत्रुका सामना कर सकेगा और वह युद्धमें जाए भी तो उसके भीतर अश्रद्धामात्र साहसके गुणको भंग कर देगा। वह या तो कायर हो भाग जायगा या शत्रुसे पराजित होगा। मे वीर हूँ—मारसी हूँ यही श्रद्धा उसे साहसी बनाएगी और 'मर' बहुत अशमें सञ्जता पालेगा। एक व्यापारी मनुष्य किसी मालको उभी समय खरीद करता है जब उसके चित्तमें यह श्रद्धा गाढ़ हो जाती है कि इनका व्यापार करनेसे मैं अवश्य लाभ उठाऊंगा। यदि अश्रद्धा मात्रसे करेगा तो घोसा खा जायगा।

श्रद्धाके बलमें ही पाश्चिमात्य देशोंने आश्चर्य-कारक जड़ पदार्थोंकी उन्नति कर डाली है। एक विद्यार्थी इस श्रद्धा से कि मैं इस विषयपर ध्यान दूंगा तो अवश्य सील पाऊंगा, उस



विषयका पारगामी हो जाता है । यदि संश-
कित व अध्रद्धालु हो तो उसका प्रयत्न उसी
थके हुए बैलके समान होता है जो जाना तो
न चाहे पर कोड़ोंकी मारसे चलाया जाय ।
श्रद्धाके बलसे एक विज्ञानवेत्ता किसी पदार्थके
गुणोंकी गरीबतामें एकचित्ता व धैर्यके साथ
काम कर सकता है और अपने चिर प्रयत्नसे
इच्छित खोजमें सफल हो जाता है । यह
श्रद्धा है जो उसको आगे उत्तेजित उसी तरह
करती रहती है जैसे एजिन गाड़ीके डबोंको
ढकेलता व खींचता रहता है । श्रद्धाके बलसे
ही वेतारका तार, टेलीफोन, हवाई जहाज़,
विजलीकी शक्तिकी खोज आदि संसारोप-
योगी आविष्कार निकल पड़े हैं । एक जानेवाला
तब ही किसी स्थानपर पहुँच सकता है जब
उसके चित्तमें यह श्रद्धा हो कि मैं चढ़ सकता
हूँ और वह हार्दिक भावसे उत्साहसे भरा
हुआ चढ़ने लग जावे-देखा जाता है कि
श्रद्धाके बलसे एक ८ या ९ वर्षका बालक
६ मीलकी चढ़ाई श्री सम्मेदशिखर
पर्वतकी कर लेता है । उसके दिलमें यह
विश्वास होता है कि मैं पहुँच जाऊँगा वस यह
विश्वास उसके चित्तको उत्साहित करता है ।
वह उत्साह उसे बेवड़क इच्छित स्थानपर
पहुँचा देता है ।

श्रद्धाके प्रभावसे ही एक शिल्पकार या एक
चित्रकार अपना उपयोग किसी शिल्प या
चित्रके यथोचित बनानेमें ठीक २० लगाकर
उपमें सफलता पावेता है । वास्तवमें श्रद्धा
कार्यकी जननी है । श्रद्धा चारित्र्यको सफलो-

भूत करती है । श्रद्धा ही ज्ञानको सार्थक
बनाती है । श्रद्धा विना ज्ञान अज्ञान है-त
होनेके समान है ।

जापान देशने जो लौकिक उन्नति इतनी
आश्चर्यजनक करवाली है उसका मूल कारण
उसके शासनकर्ता व प्रजामें इस बातका दृढ़
श्रद्धान होता है कि हम अन्य देशोंके समान
अवश्य हो सकते हैं । यदि अपनी शक्तिकी
अश्रद्धा होती तो उन्नति पथपर रुचिसे न
चलने हुए कभी भी सफलता न होती ।
भारतवर्षमें जो लौकिक उन्नतिकी गति
अति मंद हो गई है इसका कारण इस उन्नति
कर सकते हैं और करें इस गाढ़ श्रद्धाका
अभाव है । विना श्रद्धाके एक चींटी दीवार
व टेढ़े स्थान पर नहीं चढ़ सकती है । चाहे
उसे थाहमें व्यक्त न हो पर उसकी आत्मामें
यह श्रद्धा है कि वह चढ़ सकती है इसीसे
पुनः पुनः गिरने पर भी चढ़ती है और एक
दफे अपने कार्यमें सफल हो जाती है ।
यहा आठसी मनुष्यको भी श्रद्धा महापरिश्रमी
बना देती है । एक आलसी आदमी बेकार
बैठा हो पर हो वह लोमी । यदि उसे कोई
कहे कि अमुक स्थानपर जानेसे तुझे १०००
की प्राप्ति होगी पर तू जागगा तो होगी
अन्यथा नहीं होगी । जिस समय वह लोमसे
प्रेरित हो उस बातसे दृढ़ विश्वास कर लेगा
उपका मन पना ईश्वर बाँव लेगा कि चाहे
किस तरह वरों पहुँचना वम उस श्रद्धावश
अवश्य जायगा और जाना लाभ पायगा ।
लौकिक उन्नतिके जो २ साधन हैं उनको



इसप्रकार करनेसे सफलता होगी ऐसा उपदेश भारतवासियोंके दिलों तक पहुँचना चाहिये । उनके भीतर यह उपदेश जमना चाहिये । वास्तवमें, बचनमात्रका उपदेश चित्तमें अंकित नहीं होता जब तक कि उसके साथ उदाहरण भी न हो । दृष्टान्त सहित उपदेश सच्चा काम करता है और अन्वय उस उपदेशपर श्रद्धान जमा देता है ।

यदि भारतवासी शिल्पकर्मी लौकिक उन्नतिके साधनोंका श्रद्धान करके उस श्रद्धाके अनुकूल स्वयं परिश्रम करने लग जायें और तब उपदेश करें अवश्य उनका बचन अनपढ़े किसानोंको, अनपढ़े शिल्पकारोंको असर कर जायगा और वे इस बातमें श्रद्धा करलेंगे । बस श्रद्धाके होते ही उनको जो कुछ ज्ञान हुआ है उसको अमली काममें परिणमन करने लग जायेंगे ।

कहते हैं सब कोई कि भारतवासी अपने देशकी बनी चीजें ही काममें लावें । पर ऐसी चीजें जो सस्ती और सुंदर हों, विदेशी चीजोंके मुकाबलेमें ठहर सकें हम तैयार करके बनावें ऐसा उद्योग नहीं होनेसे कोई सफलता नहीं होती । इसका कारण यही है कि जो कहने हैं वे स्वयं श्रद्धालु नहीं । यदि सच्ची श्रद्धा होवे तो स्वयं उद्यम करें बस तब फिर उनका उपदेश व्यापक होके अपना अमर कर ढाले ।

और जो एक दो भारतवासी कुछ उद्यमी हैं और कुछ चमत्कारिक लौकिक उन्नति बना रहे हैं जैसे डा० बोस, डा० पी० सी० राय उनकी इस उन्नतिका क्या कारण है ।

पता लगेगा कि उनका दृढ़ श्रद्धान ही इसमें कारण है ।

दूर क्यों जाइये । जिस स्वराज्यके लिये आज सारा भारत छायायित हो रहा है—हिन्दू मुसलमान एकचित्त हो स्वराज्य स्थापनकी भावना भा रहे हैं—इस स्वराज्य भावके इतने व्यापक होनेका कारण क्या है ? यदि आप देखेंगे तो पता चलेगा कि यह लोकमान्य तिलक, व मिस एनी बेसेन्टकी दृढ़ श्रद्धा सहित होकर उसके अनुकूल वर्तन करना है । यदि लोकमान्य तिलक स्वयं दृढ़ श्रद्धालु न होते व अनेक आपत्ति आने पर भी अपने श्रद्धानके अत्यागी न होते—श्रद्धान बटलनेके बदलेमें प्राणत्याग ऐसे फलकी भी परवाह न करते होते तो आज उनका श्रद्धान इतना व्यापक न होता और उनकी जैसी गाढ़ मान्यता भारतवासियोंके दिलोंमें है वह हरगिज न होती । यदि मिस एनी बेसेन्ट जेलमें पड़नेके भयसे अपनी स्वराज्यकी श्रद्धा छोड़ बैउती तो कभी भी सफल न होती । श्रद्धा दृढ़ रखकर जो उन्होंने कष्ट भोगा उसहीका परिणाम उनकी श्रद्धाका भारतव्यापी होना और उनकी सम्मति भारतियोंके चित्तमें सहस्र-गुणा बढ़ जाना है ।

इसीसे यह कहना सर्वथा सत्य है कि “श्रद्धा उन्नतिनि जड है” ।

अब विचारना यह है कि मानवको क्या उन्नति करना है जिसके लिये उसे श्रद्धाकी आवश्यकता है ।

एक मानव केवल जड़ परमाणुओंसे बना



हुआ भौतिक शरीर नहीं है किन्तु एक आत्मा पदार्थके साथ जड़ वस्तुओंसे बना हुआ बाँचा है । वास्तवमें देखा जाय तो मानव तो वह आत्मा है—और यह शरीर उसके रहनेका झोंपड़ा है । जगतमें जो दो प्रकारकी उन्नति प्रसिद्ध है उसमें पारमार्थिक उन्नतिका सम्बन्ध आत्मासे और लौकिक उन्नतिका सम्बन्ध इस जड़के बने झोंपड़ेसे है । इस झोंपड़ेकी ही रक्षा, इसीको ही खिलाने पिलाने, नहाने, सुलाने, पहनाने, चलाने, फिराने आदिके कामोंके लिये अनेक लौकिक वस्तुओंकी आवश्यकता पड़ती है—उनको बिना किसी कष्टके रहना—उसमें कोई बाधक न होना यही लौकिक उन्नतिकी हह है । एक व्यक्ति लौकिक उन्नतिका फल अपने उस शरीरमें रहने तक ही भोग सकता है आज वह फल उसके लिये नहीं हो सकता—हां इसमें कोई इनकार नहीं हो सक्ता कि उसका फल उसकी सन्तान व अन्य जन भोगें । पर पारमार्थिक उन्नतिका फल इतना सुन्दर है कि जितनी उन्नति मानव करता जायगा उतना उ फल पाता जायगा । क्या वह फल भविष्य जीवनको भी उत्तम बनानेका मूल कारण पड़े जायगा । इतना ही नहीं उसका संस्कार, उसे और अधिक उन्नतरूप होनेके लिये बाध्य करेगा । यहां तक कि उन्नतिकी चमत्सीमा जो परमात्मसंद है उसको पहुँच जायगा ।

पर इन पारमार्थिक उन्नतिके लिये भी श्रद्धाकी आवश्यकता है । श्रद्धा बिना आत्माकी

कोई भी उन्नति नहीं होसकती ।

आत्मा, धर्म, उसका फल, यद्यपि ज्ञानीकी दृष्टिमें प्रत्यक्ष है पर अज्ञानीको परोक्ष माध्यम होते हैं—इसीलिये उसे इनका या तो विश्वास ही नहीं होता और यदि होता है तो यथार्थका नहीं होता चाहे जैसेका होता है पर इससे काम सिद्ध नहीं होता । जैसे कोई दिहलीसे कलकत्तेको जानेकी इच्छा करनेवाला यदि वह उल्टा श्रद्धान करले कि दिहलीसे पश्चिमकी ओर कलकत्ता है और इस श्रद्धावश उधर गमन भी करे तो भी वह कभी कलकत्ते नहीं पहुँच सकता । वह तो लाहौर व पेशावर आदिकी तरफ जाता हुआ कलकत्तेसे और अधिक परे हटता हुआ खेदविन्न और दुःखी ही होगा परंतु यदि उसे यह श्रद्धान होगा कि दिहलीसे पूर्वकी ओर कलकत्ता है और वह उसी तरफ गमन करेगा तो वह अवश्य पहुँचेगा । इसलिये पदार्थ या कारण-मई मार्गका श्रद्धान यथार्थ होना चाहिये । तब ही हमारे कार्यमें सफलता होगी ।

आत्मोन्नति जब वांछनीय है तब उसके अर्थ यही होसकते हैं कि आत्मा जहां तक शुद्ध होसकता है वहां तक यह शुद्ध और पूर्ण होनाय । इसमें कोई विकार या दोष न रहे—अतएव इस बातके दृढ़ विश्वासकी आवश्यक है कि आत्माका स्वरूप तो अमृत है तथा यह अपनी अमृतताको भेट सकता है । इन दो बातोंका दृढ़ श्रद्धान होना ही आत्मोन्नतिकी जड़को प्राप्त कर लेना है ।

आत्माके स्वरूपके विषयमें मगनके



बुद्धिमानोंके भित्र २ मत हैं उनमें किसीको ठीक मानना यह बड़ा दुष्पर कार्य है । अतएव यदि न्यायशास्त्रका ज्ञान हो तो उसके द्वारा परीक्षा करके निर्णय कर परंतु यदि ज्ञान न हो तो इस खटपटको छोड़कर अपने ही अनुभवसे विचार करें ।

न्यायशास्त्रके जोसे जिसने आत्माको सिद्ध कर लिया हो तौभी उसको अनुभव द्वारा समझनेकी जरूरत है ।

वास्तवमें जब तक अपने अनुभवमें कोई बात न खुलेगी तबतक उसपर श्रद्धा नहीं बैठ सकेगी । इसलिये स्वानुभवसे जाना हुआ पदार्थ ही प्रथम ज्ञेय होकर हेय उपादेयमेंसे किसीमें छांट लिया जाता है ।

एक स्थूल ज्ञानवाला भी थोड़े विचारसे समझ लेगा कि मेरेमें और मेरे कंठम या कागजमें क्या भेद है । मेरेको कोई थप थपावे में तुरत जानकर उसकी तरफ राग या द्वेषका कोई न कोई भाव कलंगा परंतु कलमको चाहे जैसा करने पर भी इसमें इसके साथ की हुई क्रियाका इसे ज्ञान नहीं होता । इसीसे इसमें राग द्वेष कोई पैदा नहीं होता । यही हाल किसी जंतुके मुँदे शरीरका है । एक मक्खी अभी २ खूब दौड़ती कूदती फिरती थी, मेरी थालीके चारोंओर आती थी—ब्रुतकी मुण्डे उसे भोजनकी तरफ खींचती थी—उसे हथाते थे वह फिर आती थी, पर जब कहीं वह घीमें गिर पड़ी और मर गई तब वह फिर क्रिया करनेसे रहित हो गई । इसकी जिन्दा और मुर्दा दशामें क्या अंतर रहा । इन्हीं

मोटी २ बातोंको विचारनेसे पता लग जायगा कि कोई शक्ति हमारेमें व जिन्दा मक्खीमें ऐसी है जिससे ज्ञान पूर्वक क्रिया होती है पर वह शक्ति कलममें या मुर्दा मक्खीमें नहीं है । इसीको चेतना शक्ति कहते हैं । यह शक्ति जिसमें होती है वही आत्मा या जीव है जिसमें नहीं होती वही अनात्मा या अजीव है । क्योंकि कोई भी शक्ति या गुण किसी शक्तिधारी या गुणी पदार्थमें ही रह सकती है । गुणीसे बाहर उसका कहीं भी दर्शन नहीं होता । सफेदी सफेद वस्तुमें, गुलबी गुलबमें, कालस कोयलेमें सुनहरावन सुवर्णमें ही नजर आते हैं । इनके सिवाय कहीं अलग पाए नहीं जाते । आत्मामें चेतना है, इसके सिवाय और भी क्या २ गुण हैं तो भी कुछ हमारे ध्यानमें अपने अनुभवसे ही आ जायगे । जब हमारे ही अंदर क्रोध, मान, माया—लोम चारकी तीव्र क्रिया होती है तब एक प्रकारका भारीपन संकेशपन व आकुलतापन हो जाता है और जब कम होते हैं तब हलकापन, सातापन व निराकुलतापन हो जाता है । बात यह है कि क्रोध, मान, माया, लोम आदि विकारी भाव हमारे असली स्वभाव नहीं हैं इसीसे इनके होनेमें केश होता है—आत्माका असल स्वभाव इनसे रहित शुद्ध वीतराग है । यह विकारी भाव शरीरादि निमित्तोंके संयोगसे ही होते हैं । और अधिक विचारोगे तो यह भी पता लगेगा कि आनन्द भी आत्माका गुण है । जब कभी हमारे भावोंमें शांति आती है व



मोह कम होता है—स्वयं सुख अलकता है यह सुख सच्चा सुख है और यह आत्माका एक गुण है ।

आगे विचार करते हैं तो मालुप होता है कि यह आत्मा हमारे शरीरके आकार है क्योंकि स्पर्श की हुई, वस्तुका ज्ञान पगसे मस्तक तकका होता है—उससे बाहरका नहीं होता है । जब प्रत्यक्ष रूप रस गंध स्पर्श गुणोंको रखनेवाले जड़, पृष्ठलमें कि जिससे यह कलम या कागज बना है चेतना नहीं है और हमारी आत्मामें है तब यह स्वयं सिद्ध है कि जब वह मूर्तिक है तब यह आत्मा मूर्तिक नहीं किंतु अमूर्ति है । यदि मूर्तिक हो तो यह भी जड़ पदार्थकी तरह अपनी इन्द्रियोंसे ग्रहणमें आने लगे । अमूर्तिक होने पर भी यह अपना आकार रखती है क्योंकि बिना आकारके तो कोई वस्तु जगत्में हो ही नहीं सकती । जिसमें गुण होंगे वह वस्तु होगी । अने वस्तु होगी वह आकाशमें रहेगी । अतएव कुछ न कुछ जगह घरेगी ।

इत्यादि बातोंसे विचार करनेपर मालुप हो जायगा कि यह आत्मा जो गैर ही शरीरमें है शरीरसे भिन्न है—शरीरके आकार है । चेतनामई अर्थात् ज्ञान दर्शन-मई है, क्रोधादिस रहित वीतराग है । तथा आनन्दमय है । और यह अविनाशी अर्थात् नित्य भी है क्योंकि कोई भी वस्तु जगत्में प्रत्यक्ष नहीं होती, केवल आत्मा अवश्य बदलती है । लकड़ीसे कोपड़ा होता है पर

जिन परमाणुओंसे लकड़ी बनी है वे सबके सब स्थिर रहते हैं । केवल उनकी दशा बदलती है—इसीतरह आत्मा कभी नाश नहीं होता पर अवस्थाको बदलता है । बालक से युवा, युवासे वृद्ध, पशुसे मनुष्य, मनुष्यसे पशु इत्यादि स्थूल अवस्थाको तथा भावोंकी अपेक्षा समय २ अपनी परिणतियोंको बदलता है इसीसे यह जिस समय नित्य है उसी समय अनित्य है । इसतरह द्रव्यकी अपेक्षा नित्य पर पर्याय बदलनेकी अपेक्षा अनित्य है ।

तथा अभ्यासके बलसे यह सिद्ध हो जायगा कि यह अपनी अशुद्धताको थोड़ा २ मेट सकता है । जो कोई एक क्षण मात्र भी अपने भावको सर्व पर द्रव्योंसे हटाकर अपने ही आत्माके अशुद्ध स्वरूपकी तरफ ले जावे और ठहरे उसी समय विदिन होगा कि एक विशुद्ध क्षण शान्तिका लाभ होता है । इसतरह निरग अपने आत्माका परद्रव्यसे भिन्न अनुभव करते २ व उसका गुण विचारते २ आत्माकी दशा उन्नतरूप होती है ।

ऐसा ही श्री अमृतचंद्र आचार्यने कहा है—
निष्मद्विमतानां भेदविज्ञानशक्त्या
भवति नियतमेवां शुद्धतत्त्वोपलम्भः ।
अचलितमखिलान्य द्रव्य दूरे स्थितानां ।
अवति गति न तस्मिन्नाशयः कर्म मोक्षः ॥१॥
भावार्थ—जो कोई मानव भेद विज्ञानकी शक्तिसे अपने आत्माकी महिमामें रत होता है उसको शुद्ध आत्मवत्त्वका लाभ अवश्य होता है । उसके लाभ होनेपर जो निश्चयसे अन्य द्रव्योंसे दूर रहने हैं उनको अवश्य उन

कर्मों में मोक्ष या छुटकारा हो जाता है जिनके कारण यह अशुद्ध हो रहा है।

वचन स्वातन्त्र्यसे मैं आत्मा की अशुद्धता को क्रमशः मेट सकता हूँ इसका पूरा २ श्रद्धान हो जायगा। यही श्रद्धाभाव आत्मोन्नतिकी जड़ है।

जो कोई मानव अपने जीवनके अपूल्य समयको जो कि मध्यकी अवस्था का है केवल मात्र शौकाशील रहनेमें व आत्मके व धर्मके जाननेकी वे पराही रखनेसे व जानकर भी श्रद्धाभाव लानेमें विना देते हैं उनका आत्मा रागद्वेषादि विकारोंसे निरंतर मैला रहता है। तर्क करते २ व झगडा करते २ उसका अमूल्य समय नष्ट हो जाता है। घुडावराथा आनेपर वे कुठ न कर सकते हुए एकामक मरण आने पर पश्चात्ते रह जाते हैं।

इसलिये उचित है कि एक ठफे श्रद्धा पत्री जमाकर अभ्यास पर लग जाना चाहिये।

प्रिय पाठको! धार्मिक और लौकिक हर प्रकारकी उन्नतिकी जड़ श्रद्धा है ऐसा जानकर श्रद्धा, रश्चि, प्रतीति, शौकके साथ हर एक काम करो अवश्य सफलता प्राप्त करोगे। जैन धर्मका तो यह मूल मंत्र है कि सम्यक्त्व विना ज्ञान अज्ञान और चारित्र कुचरित्र है। सम्यक् श्रद्धावान थोडा भी चरित्र पाले तौभी वह अच्छा है। समुमार्गी है क्योंकि वह श्रद्धा व रश्चि विशेष चरित्र पालनेकी रत्ना ह पर अधिक करनेकी अयोग्यता व हाचारी पर ही नहीं २२ सत्ता है।

इत्यादी वचनको समझ कर श्रद्धाको जमा

कर हर एक मानवको विचार पूर्वक पारमार्थिक और लौकिक उन्नतिमें दत्तचित्त रह कर आचरण करना चाहिये। प्रसाद, आलस्यमें समय न खोना चाहिये।

सुखशांति चाहनेवाले बन्धु

बहिनोके लिये

उपयोगी हित वचन । *

(१) समा ही वीरका मूण है। अपराधी जीव तकके लिये भला विचारना कि जिससे वह किसी समय सद्भाग्योदयसे प्राप्त शुभ अवसरका लाभ लेकर अपना भावी जीवन सुधार सके और स्वयं सुखी बनकर अन्यको सुखी कर सके।

(२) स्व-परहितके लिये प्राप्त शक्तियोंका सदुपयोग करना ही मानव जीवन पानेका उत्तम फल है।

(३) जिनके विचार, वचन और आचार शुद्ध-निर्दोष होंगे वे ही अचूक स्व-परहित कर सकते हैं।

(४) जिनके विचार, वचन और आचार पल्लवित नहीं वे स्व-परहित करनेको समर्थ नहीं।

(५) किसी भी शुभ या अशुभ कार्यका आदि कारण विचार ही कहा जा सकता है, इसीलिये विचार शुद्धिकी अधिक जरूरत है।

(६) जिनने ही शुभ विचार करके उठे पड जाते हैं। उत्पन्न हुए शुभ विचारोंको कार्य-रूपमें परिणत करनेमें ही वास्तविक लाभ है।



(७) कार्यरत पुरुष कोई भी उपयोगी हिन-कार्य नहीं कर सकते। मध्यम श्रेणी वाले शुभ कार्यको शुरू तो कर देते हैं, परन्तु तनिक भी विघ्न आने पर उस कामको अचूरा छोड़ देते हैं। सिर्फ उत्तम कोटिके मानव ही चाहे जिस तरह हो अपने हाथमें लिये हुए कार्यको पूरा करके स्वपुरुषार्थकी सिद्धि प्राप्त करते हैं।

(८) अविश्रान्त प्रयत्नसे, धैर्य और श्रद्धा रखकर जगत्का हित करने वाले विरले होते हैं ऐसे ही नररत्नोंकी बहुत जरूरत है।

(९) “जननी। जनिये मक्त जन, कै दाता कै शूर। नहीं तो रहिये बाँझ ही, मती गवाँवे नूर।” सच्चे मक्तों, सच्चे दाताओं और सच्चे शूरवीरोंकी ही कमी है। ऐसे ही नररत्नों की माताएं रत्न-कूँख वाली कहाती हैं।

(१०) जिनका लक्षविंदु सदा काळ एकसा रहता है वे ही समाजका हित कर सकते हैं। कहने मात्रसे कुछ नहीं होता यह निर्विवाद सत्य है।

(११) जो निःस्वार्थ भावसे समाज सेवा कर सकते हैं वे ही सच्चे समाज सेवकके गुणों की यथार्थ कदर कर सकते हैं।

(१२) बहुत कुछ कहा सुना और तत्त्वसार बात की शोष की, अब तो उसका अमल करना ही रहा है।

(१३) जिनमें हिताहित समझ करनेकी बुद्धि जाग्रत करनेवाला विवेक-दीपक प्रकट हुआ है उनके लिये इशारा काफी है।

(१४) परन्तु जिनमें यौन नड़ता, अज्ञानता

व्याप रही है उनके लिये चाहे जितना कहा जायतब भी “मैसके आगे भागवत पसारना है।

(१५) सुख-साचा सुख, सुख-दुःख रहित स्थायी सुख किसे प्रिय नहीं? और दुःख अशांति अन्याय अनीति किसे प्रिय होगी? परन्तु सच्ची भक्ति-स्वार्थत्याग रहित मुक्ति। आत्यंतिक सुख, कि जिससे अनंत दुःखमेंसे छुटकारा हो सके, कैसा?

(१६) बाह्य शत्रुओंकी अपेक्षा काम, क्रोध, मोह, मद, मत्सर आदिक अंतरंग शत्रु अधिक बलवान और दुःख देनेवाले हैं। इनका नाश करना सबसे पहले अत्यावश्यकिय है। अंतरंग शत्रुओंको जो अपनी शक्ति बलसे जीत लेगा उसके सामने सभी बाह्य शत्रु पानी भरेंगे।

(१७) दूसरेकी गलती देखना सहन है, पर अपनी अनंत भूलें जान लेना, लक्षमें आना बहुत कठिन है। जब अपनी खुदकी भूलें जो क्षम्य न हों—बराबर बातका उन्हें जीती जागती दुःख देनेवाली डायन जान ले तभी अनंत शक्तिवाला अपनेको गिनना ठीक है।

रामलाल, मोदी-देवरी (सागर)

पुत्रीको माताका उपदेश

(समुराल ज्ञाते समय)

लग्नादि प्रसंगोंपर बांटनेके लिये अवश्य मगाइये। पृ. ४०

मूल्य सिर्फ -1) और ६) सैंकड़ों मैनेजर दि. जैन पुस्तकालय-मुरत



मम 'कीर' प्रभो !!!

(लेखक-लोकमणि जैन-महावीर औपचारिक ।

गोटेयांव C. P.)

दयासमुद्र, गुणनिधि, दीनानाथ, अनन्त ज्ञानी, सर्वदर्शी, सर्वहितैषी, क्षमाभूषण, सत्य-सिन्धु, जितेन्द्रिय, शान्तिमूर्ति, सर्वबन्धु, और कर्मभेता महावीर, मम धीर प्रभो! आइये! आइये! मम हृदयमें विराजिये, ज्ञानज्योतिसे हृदयान्ध-कार नष्ट कीजिये । आइये! शान्तिसमुद्र सन्तप्त हृदयको शीतल कीजिये । हमें अपना रास्ता बनवाइये-स्वयन्त्र बनाइये, सरल परोपकारी एवं परम वीरताका पाठ सिखाइये । तब आइये! शीघ्र ही आइये, अब विलम्ब न कीजिये ।

प्रभो! हम पतित हैं, कर्तव्यभ्रष्ट हैं, लक्ष्य भ्रष्ट हैं, हृदयशून्य हैं, प्रेमरहित हैं, ऐश्वर्य बंधसे कर्मबंधकी तरह आपसे विरक्त हैं, तब हमारा पुण्य दूर है, शुभकर्म दूर हैं, अभीष्ट फलानु-भवन दूर है, सच्चा हृदय दूर है, वास्तव्य दूर है और हमारा आत्मिक स्वभाव भी दूर है । प्रभो! आइये हमें पावन कीजिये, प्रेमी बनाइये, कुछ कार्य सिखाइये! अब चैन नहीं, सुख नहीं, विश्राम नहीं और तनिक भी शान्ति नहीं है । कपारें बड़ रहीं हैं, अपमान कर रहे और हो रहे हैं । माया विन काम नहीं चलता, लोभ विन पद नहीं चलते, दरवाजेसे निकलते समय चोखट लग गई तो बिना लाठी प्रहार किये क्रोध शान्त नहीं होता । प्रभो! हमारी स्थिति बिगड़ती जा रही है, समान सच्चे सेवकोंसे खाली है । पुरानी लकीरें

मिटनी नहीं । समान गहरी नींद ले रही है, व्यसन छाया जैसे साथ छोड़ते नहीं । ज्ञान दीपक बुझ गया-तुम्हारे वाक्य शास्त्रोंसे बाहर हो गये, उनके बंदले हमें तुमसे बिछा रखनेके लिये बहुतसे असम्बद्ध वाक्य उनमें योजित कर दिये, पर प्रभो, छाया तुम्हारी ही है । आश्रय तुम्हारा ही और साक्षी तुम्हारी ही है । जैन नाटकशालामें यह तुम्हारा ही परदा आगे लग रहा है 'अहिंसा परमो धर्मः' प्रभो! परदा सुन्दर है, तुम्हारा नाटक बनाया भी श्रेयस्कर है, सामान सब सुन्दर है, पर प्रभो! परदेके अन्दर खेल जो आज हम खेल रहे हैं, वे सुन्दर नहीं हैं, 'इस नाटकशालामें हम छुपे २ तलवार चलाते हैं, लाठी मारते हैं । परछी सेवन करते हैं । चोरीसे चूकते नहीं । डाँके डालते हैं । शराब पीते हैं । मांसका भी कभी कभी स्वाद ले लिया करते हैं । झूठ बोलते हैं । मुकद्दमें लड़ते हैं । भाई भाईको शूली चढ़वा देते हैं । मान करते हैं । छलरूप विन दिन नहीं सोते । दो चारको मृतक चर्मावान किये सोते नहीं । गरीबोंका खून बिना चूसे पानी नहीं पीते । किसी बड़े आदमीको बिना कोसे कबल गृहण नहीं करते । अब हमारे यही व्रत हैं और येही मोक्षके अनन्त मार्ग हो रहे हैं । नाटकके पात्र 'पात्र माने वर्तन हो रहे हैं, चाहे तो आग रखलो । चाहे पानी भरलो । चाहे धान्य मरलो । चाहे भूमासे भरे रहो । चाहे उल्टे रखदो । चाहे सीधे रखे रहने दो । हो सके तो सुंहपर दहन भी रखदो उन्हें इतराज नहीं । प्रभो! इसीके



अन्दर उसी परदेकी आड़में बड़े २ रत्न, मोती, हीरा, पन्ना, चन्द्र अग्रे कृत्वा तकिया लगाये तोंद बढ़ाए शरद मेयके समान सुन्दर बैठे रहते हैं। नगरनारी निजनारी हो रहीं है। उनकी उर्वशी उनकी प्यारी, उनकी दुलारी अब वे ही 'स्याही सोख' जैसी हो रहीं हैं—शुभ अवसरों पर इन्हींको रंग रंगीले और चमकीले वस्त्रभूषणोंसे सुसज्जित कर समामंडपमें प्रातिहार्याकी उनमें स्थापना कर स्थापित कर देते हैं। ये सब खेल अब तुम्हारी परम पुनीत नाट्यभूमिमें हो रहे हैं—पात्रोंने बिदुषक भी बड़ा योग्य चुन लिया है—देखो वह सड़ा है—लाल पीली आखें किये। क्योंजी तुम्हारा नाम क्या है। हमारा नाम-विदूषकनाम्ना नाम, सास राशिका नाम है। पंचमकाल....। क्यों सुना। जी हा कहना नहीं होगा। आजकल कई पण्डितोंकी राशि भी पंचमकालसे मिलती जुलती है, न मानो तो किसी ज्योतिषीसे पूछ ले।

प्रमो ! आइये ! आनेका समय है। हम नहीं; पर समय तुम्हारा अवतरण चाहता है। प्रेमरन्ध्रन हमारा टूट गया। इसमें गांठ बांध जाइये। पैर शिथिल पड़ गये, बिना सहरे मुंहकी प्रतिस्रया नहीं उड़ती। स्वतन्त्रताका सबक पढ़ा जाइये। परतन्त्रताकी बेड़ी काट जाइये। एक घड़ीके लिये गिन मंदिर ही में आकर जैनियोंको उपदेश दे जाइये। वापाण-भूर्तिसे ही कहला दीजिये कि तुम सच्चे जैनी बनो। बाहर सफेदी और भीतर कालिमा मल रक्खो। बगलावृत्ति छोड़ हंसवृत्ति धारण

करो। तुम सब मिलजुलकर ऐक्यसुखसे सम्बद्ध हो जावो। आपसी फूट, कलह, तीर्थविषयक झगड़े और घृणादृष्टि इनको चकनाचूर कर स्वातन्त्रगिरिकी प्रचण्ड पवनसे उड़ा दो। प्रेमकी निर्मल धारामें बहादो। और अब समयानुकूल कार्य करो।

प्रमो ! लाखों गिन मंदिर बन गये। बनते जा रहे हैं। कई लक्ष मूर्तियोंमें आपकी स्थापना कर चुके। जन्मसे ही आज तक तुम्हारी निर्मल वाणी मंदिरोंमें तुम्हारे साम्हने सुनी। तुम्हारी पूजा, भक्ति जन्मसे ही की। अहर्निश तुम्हारे नामकी बड़ी २ एकसौ आठ गुरियावाली मालाएं फेरीं। आपकी पूजाके साथ साथ लाखों भाइयोंकी पेटपूजा भी करा चुके। अनेकवार आपके दर्शन शिखरजी, गिरनारजी, सोनागिरिजी जाकर कर आए। कई लक्ष रुपया तुम्हारे निर्वाणस्थानोंकी रक्षा हो एतदर्थ विद्वेषाग्निमें भस्म कर दिये। उनकी रक्षासे अनेकोंकी रक्षा होने लगी। पर प्रमो ! हमारी अवनति बढ़ती ही रही। हमारे अधःपतनने अपनी गतिको मंद न की। हमें स्थिर सुख और शान्ति न मिली। दश बीस कोड़ाकोड़ीके उपासकोंका फल नजर नहीं आया। शायद सुनते २ कान बहरे हो गये पर हमारी कपाएं तनिक भी कृश न हुईं। अज्ञान हमारा जरा भी न पिघला, मिथ्यात्व हमारा बना ही रहा। चंदी, मुंदी, भेरी, कालीकी उपासना तब भी करते ही रहे। जैनी शब्दका अर्थ समझ भी न सके। पर मैनी हम बने ही रहे। प्रमो !



हमारी रक्षा करो । जैनियोंको सद्बुद्धि दो कि वे समयका, द्रव्यका सदुपयोग करना सीखें ।

वीर प्रभो ! आइये, अब हमारी दशाको सुधारिये । हमारी संवशक्ति तेरह तीन हो गई । हम, सबकी दृष्टिमें बुरे नजर आने लगे हैं । हमें प्रेम विहीन देख सब ही धिक्कार देते हैं । हमारी जातिमें ये दीनमुख तो अनेक बच्चों सहित भूखों मर रहे हैं । भूखके मोरे उदर पीठसे मिड़ा जा रहा है । छातीकी हड्डियां घुघुप जैसी तन रहीं हैं । बच्चे मुंह फाड़ फाड़ कर रो रहे हैं, वख विन सच्चे दिगम्बर बन रहे हैं । उनकी बेटी व्याह योग्य हो गई है । पैसा उबार नहीं मिलना । पापी पेटको मरनेके लिये तरस रहे हैं । पर प्रभो ! हमें उसकी दीन दशापर जरा भी दुःख नहीं होता । कुनेरचन्दनी बड़ी २ सुवर्णमाला गलेमें पहिने गद्दीपर बैठे हैं । पीकदान लिए नौकर आगे खड़ा है । नये मकान बन रहे हैं । नई शादिगां दो दो तीन तीन हो रही हैं । कुत्सी टेबुलोंसे घर भर रहा है । बड़े २ प्रतिष्ठित अंग्रेजों, रईमों, बकीलों और बैरिष्ठोंके भोजन करा रहे हैं । सड़के गुलाबनलसे सिंन रही हैं । पर विचार दीनमुखकी ओर दृष्टि भी नहीं जाती । क्योंकि वह जातिका है । गरीब है । झोंपड़ीमें रहता है । कुल्ला है । मैला रहता है । मग फिर कुनेरचन्दकी निर्मल दृष्टि उसे स्पर्श क्योंकि कर सकती है ? उनकी पवित्र लक्ष्मी क्यों उसकी सड़ी झोंपड़ीमें रहना पसंद करेगी ? उनका पवित्र उष्मन भोजन क्योंकि उनके

पापी पेटमें जाना स्वीकार करेगा । उनकी निर्मल कीर्ति क्यों उसकी झोंपड़ीके चक्कर लगाना स्वीकार करेगी । उनके रसिक कान उसकी दुःखमरी कर्ण वदुक आवाज कैसे सुन सकते हैं । अनेक मंद सुगन्ध पवनके झकोरोंसे वेष्टित उनका शरीर, कैसे दीनमुखका मलिन शरीर स्पर्श कर अपनी इज्जतमें बड़ा लगावेगा ? कुनेरचन्दजी 'चार घोड़ोंकी टपटप पर चल रहे हैं और उन्हींके जातिभाई भूखे, वख रहित, उनके आगे २ दौड़ते जा रहे हैं । प्रभो ! कैसा भयानक दृश्य है । कैसी विषम समस्या है, एक ओर तो स्वर्गीय सुख दूसरी ओर नरकयातनाका भीषण दृश्य, प्रभो ! रक्षा करो, अवलम्ब दो—

प्रभो ! आइये जातिको बचाइये उन्हें बताइये । जैसी चलै, ब्यार पीठ पुन तैसी दीजै । जैनियोंके हृदयमें विराजकर उन्हें समझाइये । उन्हें कमसे कम यह ज्ञात करा दीजिये कि जाड़ेके दिनोंमें गरमियोंके उपचार न करे । सब समय एक ही गीत न गाया करे । आज जो कार्य हिनकर हट-पड़ते हैं जिनसे हमारा कल्याण होता है, कालान्तरमें वे हमें दुःतोत्पादक भी हो सकते हैं.... इसका दृष्टान्त यह हो सकता है कि गर्मियोंके दिन में, सूर्यके प्रखर प्रभावसे पृथ्वी क्रोधित हो रही थी । समस्त ठंडक मगरमच्छोंकी तरह जलशयोंकी ओर भागी जा रही थी । कोई पर्वतोंकी तलहटीमें भी जा छिपी थी । ऐसे महागर्मियोंके दिनोंमें पं. मोलानाथ तिवारीके यहां उनके परमपूज्य गुरु महाराज



शान्तिलालजी यनमान होकर पधारे । वे दुप-हरको आये थे इसलिये उनके आते ही तिवारीजी आतिथ्य करने लगे । ठंडा जल लाकर पैर धोए । बरफके जलसे स्नान कराये, ठंडे २ भोजन कराए । ऊपरसे ठंडाई पिलाई । रात्रिका समय हुआ तो बाहर चौकमें पलंग बिछवाया, नाम स्वच्छ गद्देपर गुरु महारानको लिटाया, एक महीन वस्त्र गुलाबनछमें भिगोकर गुरु महारानको उड़ाया और फिर सब कुटुम्बी जन लगे पंखा करने । गुरु महारान कुछ दिनोंके बाद घर चले गये । जब और कुछ दिन बीते तब तिवारीजी भी चल बसे सो भी सदाके लिये रहे घरमें उनके लड़के । गुरु महारान तिवारीजीकी खबरको फिर आए । अबकी बार नाड़ेका मौसम था ठंड बहुत जोरकी पड़ रही थी । घर पर अग्नि देवकी पूजा हो रही थी । अबका पहिलेसे बिल्कुल उठता समय था, वह था । ज्येष्ठका महीना और यह है पौषका महीना । गुरु महारानके आते ही तिवारीजीके पुत्रोंने आतिथ्यमें कुछ उठा न रखी, उनके स्वर्गीय पिताने जैसा आतिथ्य कियाथा वह था बारह आने तो पुत्रोंने चार आने और बढ़ा कर आतिथ्य किया था । वही जब संवत्सकाल आया तो गुरु महारानका बाहर चौकमें पलंग बिछवाया । उस पर गुरुमहारानको लिटा कर नही गुलाबी जलसे सींगा वस्त्र उड़ाकर सब ही लगे पंखा करने । (कारण कि) उन्होंने सोचा कि जिसमें गुरुमहारान यह न कहने पावें कि पिताके मरने पर वे लड़के हमारा कुछ आदर नहीं करते । गुरुमहारानको पड़ी प्राणोंकी,

क्या करें वेचारे आतिथ्यकी अवहेलना कैसे करें । थोड़ी देरमें लड़के हाथ जोड़ कर गुरु महारानसे बोले । पूज्यपाद गुरु महारान, हम बालक हैं, कृपा कर कहिये हमारे सत्कार करनेमें तो कुछ कमी नहीं है ? यदि हो तो हम पुर्ति करें । गुरु महारान बोले । पुत्रो !!! तुम्हारे आतिथ्यमें, सत्कारमें, खाने पिशनेमें कुछ भी कमी नहीं है । तुम खूब ही भक्तिमें भ्रम हो—पर ये मेरे पापी प्राण नहीं निकलते । तो इसके लिये तुम क्या करोगे !!!..... यही हाल हमारी जैन जातिका हो रहा है ।

प्रमो ! आइये, हम स्वागत करते हैं । नातिको रसातल जानेसे बचाइये । कूपमें गिरते बालकोंकी रक्षा कीजिये । दिन पर दिन बहुतसे अनर्थ बढ़ते जा रहे हैं । जैनियोंको आलसदेवने मोहित कर लिया है । अज्ञानने घेर लिया है । गरीबी तंग कर रही है । फूट बढ़ रही है । पढ़े लिखोंकी संख्या कुछ बढ़तीपर है पर जातिकी संख्या बहुत ही घट रही है । धर्मकी सत्ता समूल जाना चाहती है । जैनी दयासे डरनेलगे । हिंसामें रमने लगे नास्त्य से मुख मोड़ रहे हैं । तुम्हारे परम पवित्र धर्मको अब ये कलंक लगाने लगे । कायरोंमें इनकी गिनती होने लगी । संसारमें उपहास करवाने लगे । चारित्रहीन, श्रद्धा हीन, और ज्ञान हीन हो गये । अविचरनेके निम्न कारण हैं वे सब जैनियोंके घरमें पुजते जा रहे हैं । ऐसे समयमें तुम्हारा आना प्रमो, पथप्रदर्शक होगा, धर्मरक्षक होगा । स्वर्गागम्यरी और जैनियोंका पुनर्गन्म करानेवाला होगा । (११



समय आपके परमापदेशसे, ज्ञान वृद्धि, धर्म-वृद्धि, चारित्र्य शुद्धि जातिमें हो जायगी। आपसी बलह और द्वेष मिट जायंगे। घनवान मानगिरिसे उतर परोपकारमें लग जावेंगे। पंडित चारित्र्यशुद्धि कर जैन धर्मका वास्तविक स्वरूप जनताको सुनावेंगे। जातिमें कपटी नेताओंके बदले, सच्चे नेता और सच्चे सेवक तैयार हो जावेंगे। पण्डितोंमें जो इयानवृत्ति, और वैसे ही जो नीच भाव पड़ गये हैं वे समूल नष्ट हो जावेंगे इत्यादि। प्रभो! तुम्हारे अवतरणसे इस समय बहुतसे सुधार होंगे, अनेकोंकी जान बचेगी। अनेकों भ्रम दूर होवेंगे। तब हे प्रभो! अब आनेमें विलम्ब न कीजिये। क्योंकि जब भूखसे व्याकुल हो हा हा सासें ले रहे हैं। दुःखसे अश्रुचारा बहा रहे हैं। ऐसे समयमें तुमारा आना न होगा। तो फिर कब जैनियोंके हृदयमें, मलिन हृदयमें ही सही। एकवार, बिना आदरसत्कारके ही, बिना बुलाए ही आनेकी कृपा कीजिये। मम वीर प्रभो। यही हमारी विनय है।

दृष्टान्त देने की उपाय सूचनार्थ ।

१-शरीरका सुख सभी चाहते हैं। वह सुख सभी मिल सकता है जब कि शरीर बीरोग व प्रष्ट हो। इसके लिये दो उपाय हैं; (१) वीर्यकी रक्षा, व (२) कसरत।

२-जिन्हें चाहिये हमारे पाससे वीर्यरक्षा व कसरतकी तरफसे लिखकर मगाले।

३-एर हाइतमें और चाहें जिस उम्रमें कसरत व वीर्यकी रक्षा हो सकती है। जो लोग

वीर्य बिगड़नेपर व कमजोर होनेपर तथा उम्र ज्यादा हो जानेपर हताश हो जाते हैं, सुधारनेकी इच्छा छोड़ देते हैं उन्हें चाहिये कि हमसे एकवार सलाह तो पूछें। थोड़ा बहुत उपाय हरएकका हो सकता है।

४-धर्मके प्रेमियो, हमारा जो मोक्षमार्ग पंचम कालमें रुक रहा है वह ध्वजवृषभनाराच नामके सर्वोत्कृष्ट संहननके खो जानेसे रुक रहा है। आगसे उस शक्तिको संभालोगे तो तुम्हें फिर भी बहुतसे सुख मिलेंगे और पुण्यकी प्राप्ति भी होगी। स्वगादिमें जन्मने लायक पुण्य जो अभी भी मिल सकते हैं उनका लाभ भी बिना शरीर शक्ति बढ़ाये नहीं मिल सकता। तुल्लारी कोई न कोई संतान मोक्ष प्राप्त करने-वाली भी आगे होने लगेगी, अगर तुम अपनी शक्तिको अभीसे बढ़ाना शुरू करदोगे।

५-अगर बताए हुए उपाय करोगे तो सुखी व बलवान रहोगे; नहीं तो दुःख भी पीते हुए भी सुखी नहीं बनसकोगे।

६-दूध घीकी खुराक न मिलनेपर भी कसरत व वीर्यरक्षाके बताये हुए उपायोंपर चलनेसे शरीर बलवान व आनंदी बन सकता है, यह खूब विश्वास रखो।

७-देशी कसरतको पैसा कम लगता है, समय कम लगता है, स्वतंत्रतासे होती है, सर्व अवस्थाओंकी होती है, फायदा सशास्त्र होता है, चपलता धैर्य और स्वसंरक्षणकी तर्कीवें प्राप्त होती हैं, आयुष्य बढ़ता है, स्थेनी कसरतको पैसा बहुत लगता है, परतंत्र होती है, स्वसंरक्षणकी तर्कीवें प्राप्त होती नहीं, कभी कभी वह एकांगी कसरत होती है और अनियमित होती है, इससे यथायोग्य आरोग्य प्राप्त न



होकर उल्टा मनुष्य कुछ रोगी बनता है ।
 ८—सब कसरतोंमें कुस्ती, पानीमें तेरना, मलखंब चढ़ना, बनेटी, छाठी आदि खेलना, दंड बैठक, निकालना, नमस्कार करना—इससे थोड़े वक्तमें अल्प खर्चमें सर्वांग स्वतंत्रतासे चाहे उस ठिकानेपर नियमित कसरत होकर धैर्य, चपलता, स्वसंरक्षणके गुण प्राप्त होते हैं और शरीरस्वास्थ्य एकदम अच्छा रहकर ब्रह्मचर्यका महत्व समझनेसे (आवश्यकतासे) वीर्यकी रक्षा होती है । इससे आयु बढ़ता है; बुद्धि संतोज होकर उद्योगी सद्बिचारी परोपकारी नररत्न तैयार होते हैं । ऐसे नररत्न होनेसे राष्ट्रकी उन्नति होकर धर्मकी रक्षा होती है ।

९—जगह जगह औषधालयोंमें सुव्यवस्थासे कसरतकी शाखा स्थापित होगी और उनमें शरीरका महत्व, ब्रह्मचर्यका महत्व, दुर्गुणोंका त्याग, निःसत्त्व मादक पदार्थोंका त्याग और सर्वोपयोगी सर्वगुणी सदाशिव कसरतकी शिक्षा दी जायगी तो सारे जगत् आरोग्यका फैलाव होकर रोग नष्ट हो जायगा । रोग पैदा करके नष्ट होनेका उपाय करनेसे रोग नहीं होने देना ही ठीक है ।

१०—प्रत्येकको आरोग्य रहनेके लिये नियमित आहार, नियमित कसरत करना चाहिये और सात्विक अन्न ग्रहण करना चाहिये । वीर्यकी रक्षा पचोत्त वषीतक अच्छी रखना चाहिये और नाटक, कादम्बरी पढ़नेका, चुल्ट पीनेका, खराब चीजोंके देखनेका त्याग करना चाहिये और सद्बर्तनसे रहना चाहिये । इसीसे आरोग्य रहेगा ।

११—इस विषयपर मालवा व सुबईकी प्रांतिक जैन सभाओंके दोहदवाले संयुक्त अधिवेशनमें पास हुआ प्रस्ताव—जैनसमाजमें शारीरिक रक्षाके उपायोंमें दुर्लक्ष होता देखकर यह संयुक्त सभा प्रस्ताव करती है कि व्यायाम, ब्रह्मचर्य रक्षा और शुद्ध खानपानके नियमोंका अभ्यास अच्छी तरह किया जाय । प्रस्तावक—हिरानन्द मलुकचन्द (काका) । समर्थक—कुंवर दिग्विजयसिंहजी । निवेदक—

हिरानन्द मलुकचन्द दोशी (काका)
 व्यवस्थापक, गौ. ने. जे. व्या. शा. सोलापूर.

‘सहारा दीजिये स्वामिन्’।

प्रभो तुमसे विनय मेरी सहारा दीजिये स्वामिन् ।
 हमारा हाल दिगढ़ा है सहारा दीजिये स्वामिन् ॥
 कहाँ मैत्री धरम हमरा ओं ये आपसकी तकरारें ।
 मिले ये सो बिछुड़ते हैं सहारा दीजिये स्वामिन् ॥
 कहाँ परनारी माता सम गिनो उपदेश था तुम्हारा ।
 हुए व्यभिचारी खामे अब सहारा दीजिये स्वामिन् ॥
 नशते दूर तुम भागो पास उनको न आने दो ।
 शरानी अब बने जाते सहारा दीजिये स्वामिन् ॥
 पतिव्रत धर्मको पालो नीलपर प्राण भी चारो ॥
 पतिव्रत इदु जाता है सहारा दीजिये स्वामिन् ।
 दया धामे बनो प्रेमी लगाओ तुम गले सबको ।
 कपायी बनगये पढ़े सहारा दीजिये स्वामिन् ॥
 दयाका लक्ष्य विधवाओंको दुपसे ज्ञान देना है ।
 उन्हें शपथ बनाते हैं सहारा दीजिये स्वामिन् ॥
 हमारी झानरी बैसा गोटिया सब झगड़ करके ।
 बुझते शुभसागरमें सहारा दीजिये स्वामिन् ॥
 उपाते जैन जातिको हुदं बरपाद नय टगटे ।
 विनय हर वक्त है तुमसे सहारा दीजिये स्वामिन् ॥

मुद्राभचन्द परमानन्द जैन गोटिया,

श्री गौतम नेमचंद जैन व्यायामशाला-सोलापूर ।

व्यवस्थापक:-श्रीयुत हिराचंद मलुकचंद दोशी, (काका) सोलापूर ।

सप्रेम जुहार,

हमारा शरीर प्रकृतिको विवरण इस प्रकार है:-हम कसरत

नित्य देशी पद्धतिसे करते हैं । हमारा वजन हालमें रत्तल
कभी कभी इंग्रेजी सेर

है । दंड निकालनेकी गिनती.....बैठकोंकी गिनती..... ।

चाह पीते हैं । कुस्ती करते हैं । विवाहित हैं । शरीर वात
दूध दौड अविवाहित पित्त

वाला है । रातको सोनेका समय..... । आलस रोग
निरालस नीरोग

की अवस्था है । छातीकी लंबाई इंच । दंडोंकी गोलाई इंच ।

शरीरकी जंचाई फुट व इंच । जाति है । कसरत

करनेका समय..... है । अम्बाडे में कसरत करते हैं ।
घर

पढ़ने लिखनेकी तादाद..... ।

कसरत खुली हवा में करते हैं । पानीमें तिरना आता ।
बंद मकान नहीं आता

तंबाखू चिरुट पीते कसरत शुरू करते समयका वजन ।
नहीं पीते

कसरत शुरू करनेकी तारीख.....उम्रकी ताकाद

है । परस्त्रीका त्याग हैं ।
नहीं हैं (पीछे देखो)

नोट:—१. पीछेकी खानापूरी करके व्यवस्थापकके पास जरूर भेजना चाहिये और जो माई कसरत नहीं करते हों उन्हें जरूर करना चाहिये ।

२. जहां जहां बीचमें लकीर लगाकर ऊपर नीचे दो दो बातें लिखी हैं वहां जो कबूल हो उसे कायम रखना चाहिये और दूसरी बातको काट देना चाहिये ।

३. कसरत करनेवालोंके बीस बीस फार्मोंमेंसे हम अब्बलकी छांट करेंगे और अब्बलको इनाम व सर्टिफिकेट भी दिया करेंगे । यह कार्रवाई छह छह महीनेमें एक बार होती रहेगी ।

पूरा नाम _____

मुकाम _____

पोष्ट _____

जिल्हा _____

हस्ताक्षर _____

तारीख _____



जीवनके उद्देश्य ।

जैन-मार्गदर्शक जैन-आ. मन्त्री-जैन समाज-
पुस्तकालय आगरा ।

उद्देश्य वह होता है, जो किसी मनुष्यका लक्ष्य हो । मनुष्यके लक्ष्यके कई लक्ष्य दृष्टिमें हो सकते हैं । उन पर ही मनुष्यका जीवन सफल या निष्फल होना निर्भर है ।

१-निर्वाह योग्य जीविका-किसी न किसी सीमा तक यह उद्देश्य अच्छा है । मनुष्यको स्वयं और अपनी गृहस्थीका पालन करने पड़ानुसार करना चाहिए । स्वयं काम करने योग्य होने हुए भी दूसरोंके अधीन रहना निर्लज्जता है । गृहस्थीका सुख या दुःख उसकी आय-न कि उसकी पृथ्वीको अच्छे तरह धर्य करने पर निर्भर है ।

अपने चारित्र्यको उज्ज्वल करने और लाभदायक कार्योंमें सहायता देनेके लिए दान करना चाहिए ।

यह उद्देश्य मुख्य उद्देश्य न होना चाहिए, जिसके लिए और श्रेष्ठ कार्योंकी आहुति दी जाये ।

२-आत्मोन्नति-किसी मनुष्यको धन संचय करनेमें ऐसा लीन न होना चाहिए कि उपकारक अध्ययनको कुछ समय ही न दिया जाय ।

यूट रोडकी बात है कि बहुतसे युवक विद्यालय (College) छोड़ने पर अपनी पुस्तक-

कोको एक ओर फेंक देते हैं और सब प्रकारके पढ़नेको तिछाछरी देते हैं । यह बहुत बुरा कार्य है ।

एक प्रसिद्ध अंग्रेजी वकीलका कहना है 'मैं नहीं समझता कि मैंने कोई काम जिसमें मैं सर्वथा अनभिज्ञ था-विश्वविद्यालय (University) और पाठशाला (School) छोड़नेसे पहिले सीखना प्रारम्भ किया, तिम पर भी उसमें मैं पूर्ण विज्ञ हो गया ।

इस-अध्ययनके लिए समयकी इच्छा करना, उस ओर मुझका मानकी आवश्यकता है । जीवन भर एक समय क्रम रखनी । प्रातःकाल एक घण्टा अध्ययनके लिए अवश्य रखना चाहिए । यह समय विज्ञान, इतिहास, जीवन चरित्रात्मक विषयसे चरित्र उज्ज्वल और जीवन उन्नत हो-में लगाना चाहिए । दिन प्रतिदिन अधिक ज्ञानवाता और उत्तम होनेकी इच्छा हममें सदैव रहनी चाहिए । मनुष्य स्वयं जितना इस ओर बढ़ेगा उतना ही वह दूसरोंका उपकार कर सकता है । समाचारपत्रावलोकन आदि भोजनत्रय परात् तथा स या समय करना चाहिए ।

३-परोपकार-सर्वश्रेष्ठ अच्छी शिक्षा उदाहरणसे दी जासकती है । परन्तु और प्रकारसे भी भलाई की जासकती है ।

जिस नगरमें आप रहते हों उसका स्वास्थ्य बचानेका प्रयत्न करें । इसके लिए स्वच्छता बड़ी आवश्यक है । औषधालय, वैद्य, उपवासादि चिकित्सा और व्यायामको उत्तेजना दो । अच्छी सड़कें, रात्रिमें

प्रकाश, सांख्यिक-उद्यान आदि भी इष्टि-पात चाहते हैं।

भारतमें जो समान-सुधार करनेवाला देखे उसको हर स्तरहसे उत्तेजना देना आवश्यक है। इसके कर्त्तव्य-स्त्री-शिक्षा-प्रचार, विवाहोंमें सुधार तथा अन्य कुरीति निवारण हैं। आर्थिक और नैतिक सुधार और भी आवश्यक है। सच्चाई, सफाई, परमात्माके विषयमें सत्य ध्यान और धर्म जैसे बने उन्नत करने चाहिए।

स्वयं करके दिखानेके सिवाय हम बहुत सुधार अपने मित्रों और पड़ोसियोंसे कह कर कर सकते हैं। व्याख्यान (lecture) देना भी बढ़ना चाहिए। (बहुतसे धार्मिक ऐसे हैं जिन्हें धार्मिक आदि किसी बातका ज्ञान ही नहीं। उनको उपदेश देनेको उपदेशक भेजने चाहिए। विद्या प्रचार होनेसे साहित्यकी उन्नति बहुत अधिक हो रही है। वाचनालय स्थापित करने चाहिए। उनमें उपयोगी मासिक व अन्य शिक्षाप्रद समाचार पत्र मंगाना चाहिए।

अंग्रेजी आदि अन्य भाषाओंको अच्छी तरह जानने वाले मनुष्य मातृभाषा हिन्दीमें पुस्तकोंका अनुवाद कर सकते हैं। या इससे भी श्रेष्ठतर मौखिक पुस्तकोंकी रचना कर सकते हैं।

भारत-जिसमें संतारके पंचमांश जीवधारी रहते हैं। उनका करनेके लिए सर्वोत्तम स्थान है। वीरशक्ति शताब्दी में इन और युव उन्नति करनेका प्रयत्न करो। जोन वैज्ञानिक नियम

जो नीचे दिए जाते हैं सबको पालने चाहिए।

जितना भी उपकार तुम कर सको, जिस प्रकार भी तुम कर सको, जितनी तरह भी तुम कर सको, जिस स्थान पर भी तुम कर सको, जिस समय भी तुम कर सको, जितने भी लोगोंका तुम कर सको, जितने समय तक तुम कर सको, करो ॥

**हास और व्यभिचार-
वाल विवाह**

(१)
हो रहा जैन-जातिका हास, वृद्धि गत होता है व्यभिचार। नहीं है हमको कुछ अवकाश, धौ जो इसपर स्वीय विचार। धनी हो धन-प्रदसे उन्नत, करें छोटे बच्चोंका व्याह। न रहता फिर उनमें प्रत्यक्ष, निरी संधेवा भी भरती आह-॥ धीरे जो जीवनका है मूल, करते नष्ट उसे बेकार। स्व-सुत-जीवन समझें कुत्रिण, बो रहे पिता तुम्हें धिक्कार ॥ कई करते यों बाल-विवाह, शीघ्र पौत्रादिक सुख हो प्राप्त। पितानीकी तो भी यह चाह, हुई सुतकी भी आयु समाप्त ॥ अगर वे जीवें मृद-कुमार, उन्हांका जीवन ग्राम्य समान ॥

* एक भ्रमजो देखता भागवतकार ।



सदा रहते हैं वे। नीम, प्रमेहादिक रोगोंके स्थान ॥
अग्नि हो जाती है अतिमन्द,
न पचता थोड़ा भी जो खाया
न रहती उद्यमकी, तो पगन्ध,
सर्वतः होय शुष्क-सी काय ॥

(३)

दिन च दिन बढ़ते जाते रोग,
कई आते हैं वैद्य हकीम ।
न मिटते कृत कर्मोंके भोग,
उगे क्या आनन बुनो यदि नीम
अपत्योत्पादक शक्ति न रहे,
वीर्यमें क्यों कर हो सन्तान ।
इसीसे "वांछा" दोषको लहे-
नारि, नरके न दोषका ज्ञान ॥

देव वश होवे यदि सदान,
क्षीण-निर्बल, अरु रोगी देह ।
बड़े मुश्किलसे उसके प्राण,
रहे वह भय-आलसकी रोह ॥

(४)

शीघ्र जब हो जाता है व्याह,
न रहता शिक्षा पर तन ध्यान ।
ग्रहण करते कुपथोंकी राह,
न होता धर्म कर्मका ज्ञान ॥
बूढ़े प्रमद-मननके वक्त,
मैं पाकरके बड़े आश्चर्य ।
हेतु इसका यह ही है फल,
करे गुड़े गुड़ियोंसे व्याह ॥
अन गंधिनार—हासल भूल,
छोड़ दो प्यारो ! बाल विवाह ।

रखो स्वातन्त्र कभी मन भूल,
बालकोंको हो वे परवाह ॥
वृद्ध विवाह ।

(५)

हाथ धनके वश हो मा बापे,
आत्मना करे वृद्धके साथ ।
पौत्रिको सम कन्या हा पौत्र,
बने स्त्री पकड़े वृद्धका हाथ ॥
अरे ! पापियो ! न आर समान,
कपाईका भी हृदय कठोर ।
जरा दुखसे करता निष्प्राण,
न अन्नलाके दुखोंका छोर ॥
भीनती थी गीलेमें आप,
बालिकाकी न आँत्र हो देह ।
मात ! देती अब यो सनाप,
गया वह अब तेरा वह स्नेह ॥

(६)

पूर्ण हो गई वृद्धको चाह,
किन्तु कन्या न नाथके योग्य ।
युवतिको जब हो मन्मथ दाह,
न जर्जर रहना उसके योग्य ॥
वृद्ध खाते पारठ अरु बंग,
न तो भी मित्रता है एतत्त्व ।
रहे जब तेरु मुलमंश जंग,
ताज क्या पा सका मनमन्त्र ॥
बड़े ज्यों चन्द्र शुद्ध परीय,
सामिनीके त्यों जग रह ।
समीचीन गद्यद वैद्य रबीय,
शक्तिसे करता उपयुक्त अनंग ॥



(७)

स्वामी करते पानीको प्यार,
वित्त-व्ययका समझें साफल्य ।
सुन्दरीके हों कई विचार,
मिटानेको भनम भान्तर्य ॥
अंतमें पतिसे होय निराश,
न सहकर मनसित्त-बाण कटोर ।
देख सुत-यौवनका सु-विकाश,
चलाती चञ्चल नेत्र चकोर ॥
ज्ञान सुत भी अनुरोध अपनन्द,
मानिनीका न घटाता मान ।
अग्नि कापा काके संबध,
छोड़ देता घृत अपना स्थान ॥

(८)

बुढ़के समुख ही यह हाल,
हुआ करते सुत-मांके संग ।
उठा ले जब बुढ़को काल,
खुब-हों तब उस घरमें रंग ॥
कई युवकोंके संग आनन्द,
उड़ाती पतिका संचित वित्त ।
गर्म जब रह जाता दुखकंद,
जाति भयसे हो कलुषित चित्त ॥
सोचती गर्भ-पतनका यत्न,
कटुक औषधियां करती पान ।
होंव जब निष्कल निखिल प्रयत्न,
बरे फिर अन्य देश प्रस्थान ॥

(९)

इसतरह फैलाती व्यभिचार,
अणु-हस्ताणें बरनी चोर ।
ओरी पंनो ! कुछ नरो विचार,

बनाते क्यों नहीं नियम कठोर ॥
हाय ! उन बुढ़को धिक्कार,
न डरते करते जो यों पाप ।
डुबते जो खुद गहरी धार,
सुताको धिक् ! वे भी मानाप ॥
त होकर यों अयोग्य संबध,
युवति युवकोंका हो यदि व्याह ।
नहिं रहे यों फिर विनवा-वृन्द,
न करना होगा पुनर्विवाह ॥

Pt. G. C. G. Jaipur.

दयाणु दील दाऊकोने विनंति.

गजअ.

आजाने थछ अधा, आभारा लांछओ इरदा,
दयाणु दील दाऊको, तमे ते कथां नदि न्नेदा ?
थुरा हा आणखनेजे, थुआडी तेभनी थुदि,
दयाणु दील दाऊको, हनु कथां न आवे सुदि ?
हजरो आलुडी लुओ, वधु वैधव्य पावे छे,
दयाणु दील दाऊको, हवे ते कथां अन्नपथु छे ?
रगवगती अश्रुआली, धर जेध कोलुमां लुओ,
दयाणु दील दाऊको, भरे न जेध कथां आओ ?
हनु ओ कथां सुधीं छेओ, ओगरी वार निद्राओ,
दयाणु दील दाऊको, वषट्ठ वरली पडी आवे !
हमारां वधु रगवगतां, दुष्णीं द्रिजि दुष्णीं नावां,
दयाणु दील दाऊको, विनां हेम छे तरेनां ?
दयाणु दील दाऊको, अपां, अति रिदिं ओने सिदिं,
दयाणु दील दाऊको, परायें जय कथां क्षमी !
धनिदा सांजने विनंती, दगारी न्ने नदि न्ने,
दीनाना दुष्णीं आवे, हगारे कथां न छे इरदा !

(C. G. Gopalji)



महावीर-चरित्रम् ।

मन्त्रि प्रसिद्धाः श्री नम्बूद्रीपे लवणोदार-
षवोद्धोलकल्लोलशायसरसीरुहक्षिप्तमणिमुक्तानी-
लचन्द्रकान्तादिहारमालाविट्पुमशोभिततटप्रदेशा-
लङ्घने सति । अस्तित्वे विष्टपानां द्वीपान्तरे दत्तमा-
नेऽपि परमशोभातिशयेन प्रख्याते कलिकालनक
परिवर्त्तने निखिअमुवनानां पञ्चजनानां परमवीरः
श्री महावीरः, ब्रह्मचर्यमः, स्वपरोद्धारकः, परम
क्षत्रियः, भारतवर्षस्यार्कः, श्री महावीर-
तीर्थकरः ।

अद्याच्च श्रीमद्भिः यस्मिन् मार्गे असेधोत्,
तस्य हि हितोद्देशः स्वजीवनमुक्तावस्थायां-
अखिलान् जीवान् सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राण्ये-
तान्यपथमार्गं संवेधयित्वा च कृतं किञ्चरुह-
मिति ककुमाम्बरमतस्योपरि । अनादिनिघा-
विष्टे, कल्लमालस्य द्वितिथावसर्पिणः चतुर्थपादे,
जैनधर्मस्य प्रचारकः, लालकपालकश्चेति, अ-
स्माकं भारतवर्षीयजनानां चरित्राणां चरित्र-
नायकः, सुचारकश्च, श्री महावीर तीर्थकरः ।

श्री स्वामिना तस्मिन् धर्मक्षेत्रे कुण्डप्रवृ-
त्ताम्नि नगरे जन्म अकार्षन् । यत्र हि अस्तित्व-
नगरनिक्रमायमाणं, नारतागव्यपण्यप्रसारितरत्ना-
ल्लवारविट्पुमगुणमणिनिचयदि द्रव्यसमूहारूपात-
पारावारमहात्म्यं, विदेहदेशगेतरीभूतं, कुण्डप्रवृ-
त्तामिव, नगरमिति ।

यस्मिन्मनान् वत्तधर्मादिरानितमरणं कुर्वन्तः

जीवात्मानः सततं शरीररहितमनेऽमुल्लसंपत्ति-
शालिने मोक्षधामं प्राप्नुवन्ति । यत्र पदे पदे केव-
लिनां, तीर्थकराणां च निर्वाणभूमयः प्रत्यक्षी-
भूय विमान्ति येषां वन्दितुं भक्तिभरानतसग-
गद्गदहर्षितदशितरागभावाः पुरुषदेवदेवाङ्गनाः
विद्याधराध्यागमनं प्रकुर्वन्ति ।

यत्र च धर्मसेविनां, देवविमानानां, चानेरुवना-
ल्यानां, भारेण भरितमिव, महत्सुन्दरमुमनसमा-
नमानां पौराङ्गनानां समानगुणधारिणां देवानामिव
गमनतलचुम्बनेषु राजसदनेषु प्रवासाः प्रकुर्वन्ति
राज्यनतिता ।

यत्र किञ्च राजसदनेषु दंष्ट्रप्रमानागुरुधूमवर्तिः
मेघपट्टमिव विभाति, धूमाच्छन्नसुवर्णकलशानि
वर्षाक्षतुमेवपटले विद्युलता इव, विभाति, तेन-
परि संलग्नपताकाः विदेशादागताः ये मानवाः
तान् आतिथ्यसत्कारं प्रकुर्वन्ति ।

यत्र जिनमन्दिराणि स्वर्गशृङ्गास्पर्शं कुर्वन्ति ।
तेषां अनिर्वचनीया शोभा, शोभने । पौरजना-
ध्यागत्वानेरुपुण्यविशेषफलैः शालिना भवन्ति ।
अर्हत्पूजां कुर्वन्ति यस्मात् स्वर्गसम्पत्तिकलस्य
प्राप्तिर्जायते ।

नानारसोपेनगानवाद्यादिशृङ्गारिकजना-
दीपोत्सवं, जिनमहिमां च चमरसत्रमामण्डलपे-
तपुष्पाङ्कविम्बमिव श्री जिनप्रतिविम्बमण्डलं,
अर्चयन्ति धर्मोत्सुकाः साधुवन्त । यत्र
देवसमूहल्लङ्घनाः स्वर्गा इव मार्गाः विदेह-
क्षेत्रशृङ्गासयन्तो हारा इव विहाराः, यस्मिन्
सखु विविधचिन्हाः दृश्यन्तेऽन्तः प्रचुर-
प्रमादाः, बहिश्च गच्छन्ति, सुशोभिततरङ्गा-
शोभन्तेऽन्तः संगीतायशाला, बहिश्च कौडामु-



फुल्लकमलदीर्घिकाः, प्रचुरधान्यनिरुद्धाः कथम-
प्यभिनानन्ति, अन्तःपण्यत्रियो वहिश्च क्षेत्र-
भूमयः, नानाशुकविभूषणाः विराजन्तेऽन्तः-
समा, वहिश्च आम्नवनराजयः ससौगन्धिकप्र-
साराः शोभन्तेऽन्तर्विषणयो, वहिश्च सलिलाशयः ।
अक्षरसावधानाः कविसमयेषु कवयो दृश्यन्ते,
राजद्वारेषु ।

यस्मिन्नासति सिद्ध्यर्थं न कस्यापि,
कदाचिदपि, दुःखमभूत्, यदि चेत्तर्हि
केवलं, अज्ययमावो व्याकरणोपसर्गेषु; न धनि-
नां धनेषु, वृत्तिकलहो वैयाकरणछात्रेषु; न
स्वामियनेषु, स्थानभेदश्चित्रकेषु न सत्पुरुषेषु,
दानविच्छित्तिरुत्साद्यत्करिकपोलगण्डमण्ड-
पु; न त्यागिगृहेषु, भोगमग्नौ मुनक्षेपु न वि-
लासिप्रियलोकेषु, स्नेहक्षयो रजनिविरामविरम-
त्प्रदीपपत्रेषु, न व्ययहारेषु, एवं महत्सुखेन
वरी-वर्त्तन्ते सर्वे कुंडलपुरस्य नागरिकाः ।

तस्य कुंडलपुरस्य रत्नकः निखिल-पृथ्वीपति-
शिरः, स्वर्गाद्रिसिंह इव समर्थधितराज्येन्द्र-
इव परः चतुः रत्नाकर्मालोकमेढयासुवो स्वामी
कान्तिमयप्रतापासुरागो नद्रीभूत सम्पूर्णानवकः
चक्रवर्तिलक्षणोपेतः, चक्रधर इव कर्मणालदण्ड-
कमलोपलक्ष्य लक्ष्यमाणः, शङ्के चकलाच्छेदनकि-
णाङ्गिनः हरिश्च निर्दशरस्मरः गृहश्च प्रत्युतश-
क्तिनीलोत्पल्योनिरिव, तिरस्करराजमण्ड-
मुधाकर, रत्नाकर इव लक्ष्मीगितः मेकलक्ष्म्यक-
प्रवाह इव भागीरथवारप्रवृत्तोऽकाशमणिः इव
दिवसोपनाथमानोत्तुङ्गः स्वर्गाद्रि इव सम्पूर्ण-
जीवमानवादोच्छायः । दिग्दिग्गम इव तातस्य
रतदानाद्रितिरकः कर्त्ता महामयप्रतापहर्ता,

अतूतां गुरु इव सर्वशास्त्राणां त्रैलोक्यवाचस्पतिः
कलातामृतचित्कुञ्जविद्यगुणानामागमः, उदयार-
ताचलदिनकरमणः प्रहोतराहुहितजेतस्य प्र-
त्तमानाः गोष्ठीभूयानां रसिकानामाश्रयः,
प्रत्यदेशोकोदण्डकारिघनुभूतां साहसिकानां
धौरेयोगुणी विदग्धानां चापकोटिसमुत्सा-
रितां रातिकुञ्जचलो हरिवंश इव मेघमा-
लयाः सूर्य काश्यपाश्ववाग्ध्वारि मतिश्रुत्व-
वश्येत्त्रितयज्ञानानामधिरतिः नीतिमार्गपञ्चज-
श्रीजिनेन्द्रागमप्रज्ञानां भक्तो, परमोत्कृष्टमनो-
हरलक्षणास्योक्तः, कुल्लवंशोपवनः सिद्ध्यर्थ-
इति नामराजा कुंडलपुरस्यासीत् ।

अस्य राज्ञः कान्ताऽधिकान्ता, महिषी, महिता
विश्रुता मनमोहनविलोचनजितदसंज्ञातमजुल-
मालतीमञ्जरीलतानुकारिणी प्रियकारिणी विशाला-
नामाधेयकान्ता परमप्रिया, जितघर्ममत्कागुण-
वती, आसीत् विश्रुता मोहपी तस्य श्री
सिद्ध्यर्थस्येति । एवं सम्पत्त्यो गृहस्थवर्मयोग्या
हिंसासत्यवर्माचौर्यादिव्रतान्याचरन्तो राजनीरवा-
करहितमुखादिभिः सुखासुमन्तो परमशौर्य-
प्रभापात प्रेमायाः पालनं वक्तुः ।

अनघस्तं दुःखसंक्रान्तमानसां शुद्धहृदय-
परिश्रमेन च धर्मनीत्या स्वनीदनेन्द्र इव
यावयामास्तु ।

यस्माच्चैवावशश्चक्षुः जन्म लोको वहि किं
पुण्यविशेषवर्मात्मानः मोक्षगामिभिः आपान्ति
मातृगर्भं तर्हि पुण्यदयोत् शुभकर्मोदयमु-
क्तानि संवशान्त्यावाति ।

एकस्मिन्नहनि मोक्षमात्रं लोको रतिगतिजगता-
नस्य चन्द्रच्छायां शोभाति शेषमन्दमन्दममी सन्तो



लिताङ्ग तमिश्रायां रजनीमुखे प्रियकारिणी
पोडससवेशानि ददर्श ।

प्रातरुत्थाय प्रमोत्सर्गं सामायिकं च श्री
मगवन्तं नमस्कृत्य नित्यक्रियां कृत्वा सुख-
नाह्वयेन शुभप्रावरणानि कंकणनुप्राञ्जककेयूरा-
दिवर्णभूषणानि परिधाय कलशपुष्पसहिता सा-
राज्ञः समायां चचाल ।

श्रीमहीपतिः आगच्छन्ती, लावण्यवती
हृदयकमलप्रफुलितनयनद्वयोः कला उवाच मुदशीं
परममित्रां बोधय मृदुलवचनैः समाप्य तस्मै
मुदादीप्तं ददौ ।

अथादिश च प्रियकारिणा मुदितमनसा इमानि
शोडससवेशानि । प्रष्टुं च ?

महाराज ! एषां सवेशानां किं फलं भविष्य-
ति ? राज्ञः किञ्चित् काले स्थित्वा विज्ञानद्वारेण
सम्यक्प्रकारेण ज्ञात्वानवीत ।

प्रिये ! दृष्टः ममः तत्फलं तव तीर्थकर-
पुत्रस्य जन्म भविष्यति । इत्याकल्य च वृषभो
मृगेन्द्रादीनां समस्तानां सवेशानां भिन्न भिन्न
प्रकारेण कलान्यवादीत् ।

आगतं शुचिशुक्लपष्ठोत्तरावादनस्थे श्री-
वीरप्रभो आत्मा शोडसाच्युतनामत्रिदशाल-
पादमरुपधाय सम्पूर्णं कृत्वा प्रियकारिणेः गर्भे ।
यथाशुक्तिकाशाम्भन्तरं सलिलचिन्दुः सुखेन
प्रतिवसति तथैव सुतोऽमुदस्थितोऽपि । मना-
मययामपि नाभवत् ।

माता सलोहेन ब्रह्मनामं स्वज्ञानवलेन सरश-
सुत्तरं देवाङ्गनाम् अश्रुतं, यथा कलिमालि-
नक परिबद्धिज्जापट्टे किं ल्येयं ? पंचपरमेष्ठि-
नां ध्याने, त्रिनागर्भे, सत्तत्त्वविद्यादिदशोत्त-

राजपैः आनन्दनिमग्नवह्नीलताचञ्चरीभिः सर-
लागत एवं नवमासपर्याप्तिमापूर्णयत् । परमशोभित
प्रसुतिगृहे मधुशुक्लजत्रयोदशयत्ने श्री तीर्थकर-
स्य जन्म अभूत् खलु सुवनतिलकः श्रेष्ठज्ञाता
मतिश्रुतावधिज्ञानसहितहेममयपरमनाज्वल्यमानः
वज्रश्वास्थियेष्टनकीलकवज्रयुग्मनाराचसहेन-
नसंयुक्तशरीराङ्गोपाङ्गः तीर्थकरः ज्ञानिराजित-
युक्तशरीरं च सलीलपरिरक्षणं मधुशिक्षित-
सारसं मंजीरचारुवहन्ती च सेगयताललशयचं-
चुरप्रचुरचारनारीसंचारिणीकरणवन्धशोडपेपागे-
मुसज्जा उन्नालसरसीरुहललितकिसलय इव स्को-
मलबाहुवह्नी तह्नीवविद्वबाहुः याम्यदिश्यकोदय-
इव गर्भस्थानात् प्रकटी यभूव ।

अस्मिन्नेव काले परमपवित्रमिन्द्रासनविभूति-
सज्जितस्वानुरूपेणासनेन पाकशासनः देवसेना-
न्वितः मत्तवर्धमागमत् । श्री महावीररत्नामिने
इन्द्रवारणस्योपरि निधाय कनकानलस्योपर्य-
नयत् ।

अर्धचन्द्रकारपाण्डुकशालामध्ये रत्नालंकारशो-
भितपद्मने महावीरं स्थापयामास ।
शरीरार्णवशरीरादष्टोत्तंशतानि कलशानि ग्रहीत्वा
इन्द्रेण प्रभो जम्भाभिपेकोत्सवमकारीत् । तदन-
न्तरं दिग्भूमणरत्नालंकारेण अष्टनकारा तद्वैव
दर्शनपाठस्तुतिपूजां च विधाय पुनः ऐरावत-
स्योपरि विगतमानं हृदया पटहनिनादिकेनेसह
कुण्डपुरे आगतवान् । मातुः समीपे प्रभुं समर्पित्वा
तदा हर्षितमनसा जन्मोत्सवं व्यधात् । एवं विधाय
सर्वे विजुवा अमरालयमगच्छन् । श्रीमहावीरः
मतिश्रुत्स्वधिज्ञानानिदिध्येन वृषां, उत्कृष्टतां
प्राप । अतः विश्वपरिज्ञानकलादयः, धार्मिक-



विचाराश्चादिगुणाः स्वयं परणति प्राप ।

श्री वीरप्रभुः हरिन्मणिनिर्मिताङ्गणे क्रीडन्-
तथा दन्तछाविं प्रकाशयन् पूर्णसुधांशु इव
विराज । परिफुल्लकमलदलाकृते उत्तानशयने मुष्टि-
धारयन्, उदितसरसीरहस्य समानतां दधौ । अथ
कदाचित् पवनविहारिहारिगुलुच्छुगुलगोस्तनी-
शिरीषलतिकापरिवेष्टितवनराजिविहारखाटिकायां
अन्यैः बालकैः सह क्रीडां कुर्वन् श्री वीरः,
अस्मिन्नेव काले मदोन्मत्तगजेन्द्रः समुद्रतटस्थी-
तले, चिच्छेद च वनजातवृक्षाः घूर्लिषु चिक्री-
डुषु श्री वीरसमीपे समागतवान् । गजेन्द्रेण
मयमीताः सर्वे बालका इतस्ततः पलायंचके ।
किन्तु वीरप्रभुः तस्य मस्तिष्कोपरि स्थित्वा
स्वबलेन गजेन्द्रं कदर्थितं चकार ।

अस्यामवस्थायां खलु श्री महावीर तीर्थकरः
गमाधिरुद्धः, गजेनसह नानाप्रकारक्रीडां
कुर्वन्तु कदाचित्, दन्तगुलगलशमुत्तममुपवनम्,
कदाचित् मुण्डालदण्डेन सह समुजसाम्यमधार-
यन् तथा युद्धं च कुर्वन् कदाचित् मुण्डालदण्डे
पानीयं निक्षिपन् एवं विधेः विहारं कुर्वन्,
कर्मप्रमिते लघीयसि वयसि स्वात्मानं शुद्ध-
निश्चयनवातपरगानन्दगमयनुभवं कुर्वन्, गार्हस्थ्य-
योग्यान्ग्रहितासत्याचौर्यादिब्रह्मचर्यचकार ।
पित्रोरस्याग्रहेऽपि परिणयं च चकार । ब्रह्मचर्यस्वी-
ब्रह्मचारी, एवासीत् । यस्मात् श्री महावीरः
त्रिशस्तवस्तरे क्षायिकसम्यक्त्वं प्राप्तवान् ।
तस्मिन्नेवकाले यदा क्षायिकसम्यक्त्वस्य प्राप्ति-
अभूत् तदा मनसि वैराग्यं विनजृम्भे
तदा श्री महावीरस्वामिनिर्वेदमासाद्य द्वादशानु-
प्रेक्षामनुचर्यायन् तस्मिन्काले पंचम मलयगस्थाः

लौकान्तिकदेवा आत्तवस्त्रालंकारमणयः अक्षत-
पुष्पाटोऽंगधूपचमरछत्रादिवस्तुनि ग्रहीत्वा गाय-
वाद्यवेणुवीणादिकेन हर्षं प्रकर्षं तत्स्वन्तः समु-
पस्थिताः विबुधाः, श्रीमद् भगवन्तं मोक्षमार्ग-
प्रमितां प्रदक्षिणां विधाय नमश्चक्रुः । श्रीभगवतः
वैराग्यभावनां मुण्डलादिस्तुत्यारात्तिकां
कृत्वा प्रार्थयामासु । यत्किञ्च दीक्षायाः ग्रहणं
विचारितं स्वया तदतिप्रशंसनीयम् । इदं खलु
धर्मप्रवृत्तेः कार्यं कः कर्तुं शक्यः, धन्योऽसि
त्वम् । धन्यश्च भवतः परमाविश्ववैराग्यवृत्तिः,
इत्यादि स्तुतिपूजां च भगवतः वैराग्ये
मानसं दृढं विधाय सर्वे किल विबुधा अगच्छन्
तदनन्तरं चतुर्गिरिकायाः देवाः स्वीय स्वीय वाहनेषु
अधिरुद्धा कुण्डलपुरनगरम् समागच्छन् अष्टोत्तर-
सहस्रैः कलशैः प्रभुमभिपिच्य नूतनमेकविमाने
अपूर्वरचना रुचिरे केनाप्यवर्णनीय काचाभ्रपट-
लादिमण्डिते शुभ्रपताकाभिसेसृष्टे श्री विमाने
भगवन्तं संस्थाप्य दीक्षार्थमालोकशब्दं कुर्वन्तः
प्रसवानां कन्दुकं निर्मायान्योपरि निक्षिपन्तः
पूर्वदिशाप्रदेशे नन्दनवने अनैशियुः विबुधाः ।
श्री भगवन्तम् तत्र किल चन्दनवृक्षतलस्थस्तदिक-
शिखरतले विनिघारजादिकेन चूर्णेन साधियां
निर्माय पुष्पमालादिमुग्धवस्तुस्रग्द्रव्येन मण्डपं
रचनामास । श्री वीरप्रभुः विमानादुत्तरित्वा
तत्रत्यमण्डपमलंचकार ।
समुपस्थिताः सर्वे देवमनुष्यादयः धर्मप्राप्त्याने-
श्रुत्वाम्यनन्दन् । श्री वीरभगवान् इत्य-
त्योगसि वयसि दीक्षां गृह्णत्याकर्ष्य सर्वे
गार्हस्थ्यगताः द्रुतिताः वसूयुः । माना तु त-
स्यातिशययुग्ममार्गे निमग्ना वसूयुः, हा पुत्र ।



हा ग्रहस्तनप्रदीप ! हा हृदय ! एवं विडम्बन्ती
 दुःखस्तनकरे निमज्जयन्ती एवं कथयन्ती अयि
 प्रिय पुत्र ! तव मुकुमारशरीरं शिरीषकोमल-
 मद्यापि चत्वरस्यातपं सोढुमशक्यम् । अधुना
 किल दिगम्बरपि कथं बहिस्त्वमातपं सहस्यते
 इत्येवं हन्ती तां विलोक्य सौमन्येन्द्रः मातरं
 तोषयामास । तदन्तरं चतुर्विंशत्पकारकमन्त्रा-
 बहिरङ्गपरिग्रहं परित्यज्य सिद्धनमस्कृतिं च-
 कार ततः पंचगुष्टिना शिरचिबुकादीनां केशा-
 नां छेदनं विधाय महाघनमृत्गुणे च धारया-
 मास । एवं किञ्चिन् कालव्यत्यये मार्गशीर्षकृष्ण-
 पक्षदशम्यां हस्तनक्षत्रे त्रिंशत्संस्कारे महता म-
 गवता श्री जैनीदीक्षा ग्रहीता । पारुशासेनेन
 कचानादाय स्तननडितलचितकिलचित्रविचित्रे
 पेटके धृन्वाखिलदेवाः निनाददङ्कारमांकारमी-
 षरवाद्यतालमृदङ्गवेणुवीणादिभिरसह क्षीरपारा-
 शरं जम्बुः किलक्षेपे वृत्तम् । परन्तु मातुपोत्तर
 शैत्र्ये पुरुषपुरुषीयांशोर्गन्धमात्रात् तत्रैव तेषां
 ग्रहेण तस्मिन्नेव मणिविचित्रे पाठ्ये मन्दसुगन्धव-
 वनमनोहे श्री मातुपोत्तरशैले भगवन्तं श्री दिव्य-
 वन्तं महावीरस्वामिनं पूजास्तुत्यारतिं कां विनाय
 स्वरसदन्तमनमुगीचक्रुः । महोजम्बुः श्री महा-
 वीरः योगप्रारणं विधाय सातुरिय स्मितं बभूव ।
 यस्मात् द्रव्यप्रतिभासे गते सति तपप्रभावेन
 मनःपर्यवधानं जातम् । तत्पश्चात् अष्टश्रेय
 दशनपुर नाम्नि नगरे आजगाम । चरित्व जिन-
 मन्दिराणि राजमदनानि चान्तुरीक्षं चुम्ब्यनेन
 विमान्ति तस्मिन् कुठनामको राजा आसीत्
 तेन महन्तं श्री भगवन्तं दृष्ट्वा नमस्कृतिं गो-
 क्षमार्गप्रमितां प्रदक्षिणां विनाय स्वसदने पट-

रसाद्यशानशनं कर्तुमादिदेश ।

तदा किल स्वामिनं स्वसदने ममानय पादप्रशा-
 लनं च विधाय पायमादिभोज्यद्रव्यं समर्पितवान्
 येन देवैः तत्पुत्रोपरि पंचाश्र्ववृष्टिर्विहिता ततः
 किञ्चाशरणनीर्णारण्ये श्री महावीरो जगाम
 तत्र तपप्रभावेनाणिमाद्यष्टविधैर्ययः सिद्धयश्च
 संजातः पश्चात् श्री वीरप्रभुः ध्यायन् सन्
 एकस्मिन्नहनि उज्जयनी नाम नगर्यामभ्याशेस्म-
 शाने यथासनेन ध्यानं धृत्वा तिष्ठन् तदानीं
 भगवद्दर्शनसंज्ञातपूर्वपात्रिकशास्त्रवस्मृतिर्ज्ञातः
 किल स्याणुनाम्न एकादशरुद्रस्येति तदा-
 रभ्य तेनानेकविधान्युपसर्गाणि कर्तुं समार-
 ब्धानि परं च स्वस्त्यकस्त्रितयिकसंलालकाल इव
 विशालचमूरशुकरव्याघ्रढाकिनपिशाचपञ्चानना-
 दिभीषणवेषैः बहुविधं मयं नीतोऽपि श्री भगवान्
 स्वल्पमपि योगान्न विवर्तितवान् स्वेष्टसाधनायुक्तः
 समाप्तसप्तसप्तमुद्रवः चरिमो रुद्रः भगवन्तं महन्तं
 परिज्ञाय प्रणम्य गतवान् ।

एवं विषमनेकताश्ररणादिकादीन् कृत्वा सन्,
 तदा द्विचत्वारिंशामे सम्बत्सरे जृम्भितग्रामस्य
 सत्तिष्ठारण्ये शालवृक्षमूलभागे स्थितशिलायां
 ध्यानं अकरोत् । तत्र भगवतः तपःप्रभावेनार-
 ण्यस्यानि निखिलान्तुसम्पत्तानि तस्मिन्नेव समये
 प्रफुल्लगन्तवन् । सर्वे स्वापदाश्च स्वकीयवद्धवैरं
 परित्यज्य एकस्मिन्नेव स्थाने कृत्वा सौहार्दः
 परस्परमीतिं वर्धयन्तः सन्तः अभवन् स्वामिनः
 ध्यानप्रभावेन यातिकर्मणां त्रिषष्टिपकृतीनां नाशं
 विधाय पेशालशुक्रसुदशम्यामुत्तहस्तन-
 क्षत्रमध्ये केवलज्ञानं प्राप्तवान् ।



तस्मिन् काले भगवतो महावीरस्य केवल-
ज्ञानं नवलव्ययनन्तचतुष्टयादीनां प्राप्तिरभूत् ।
इति इन्द्रेण विज्ञाय तत्रैव स्थानादुत्थाय परोक्षं
नमश्चकार तदनन्तरं धर्मापदेशश्रवणार्थं संसार-
जीवोपकारार्थं समवशरणारूपं सभापण्डपं
विरचयामास तथा भगवत्पहस्रनाम्नां व्याख्या-
य व्याख्यानं पापनाशनकरणशीलधर्मपुष्टताः
बभूवुः । सज्जललट्पमेवध्वनिरिव धर्मतत्त्वव्या-
ख्यान् पटीयान् दिव्यध्वनि प्रचचार । प्राणिनां
हृदयपथेषु चामिततत्त्वव्याख्यानं भगवतो नार्णीं
गुणगणधरं गणधरं विनावधारयितुं शक्नु-
यात् । ततः श्री वायुभूतिरेवधर्मसुतिः गण-
धरत्वेन मण्डयामास । तदनु कर्मशत्रुमारणमहा-
वीरस्य श्रीमतो वीरस्य दिव्यध्वनौ सप्ततत्त्वा-
दिमज्जानां व्याख्यानमभूदिति एवमुपश्रुत-
प्रकारेण धर्मापदेशं कुर्वन् सन् द्विसप्ततितमे संव-
त्सरे विहारप्रान्ते पावापुरनामके नगरे विहारं-
कृतवान् । तत्र पावापुरस्थारण्ये वरीवर्त्तते किलैकं
सरोवरं तस्मिन्व्यन्तराले मृत्तिशण्डे स्थित्वा
श्री महावीरः शुक्रध्यानं प्रादव्यवान् । येन
शुक्रध्यानेनावशोपनाशीतिप्रकृतिनां मवर्तो
मायेन नाशं विनाय कातिककृष्णपक्षचतुर्दश्यां
गणरात्रत्यये अमावस्यायाः प्रभाते क्लृप्तत्वा-
तिनक्षत्रे श्री महावीरप्रभो मोक्षं जगाम ।

लेखेऽस्मिन् या काचिदनुद्भिद्येत्तर्हि क्षतव्या ।

ॐ शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः,

चन्दावाडी,
सूर्यपुरम् }

सतीशचन्द्रो गुप्तः

स्वच्छा धर्माच्च स्वरूपः

वाचक हो, धर्म म्हणजे काय व त्याचे
स्वरूप कसे काय आहे व तो कोणी उत्पन्न
केला वगैरे प्रश्न मनुष्यापुढे सहज उभे राहतात.
ह्या विषयीं वर्तमान पत्रातून वेळोवेळीं प्रसिद्ध
होता असलेले लेख आपण वाचलेच असतील
अशी माझी खात्री आहे व पुनः पुनः त्याच
विषयाचे जर चर्चितवर्षण होऊं लागलें तर
त्याविषयीं वाचणाराच्या मनांत एका प्रकारचा
तिटकाराहि उत्पन्न होतो. Too much
familiarity breeds contempt.
अशी इंग्रजीत म्हण हि आहे. ह्याचा अर्थ
असा की अति परिचया पासून तिरस्कार
उत्पन्न होतो. आपल्या येथे जर कां एकादा
पाहुणा आला तर आपण त्याचा पहिल्या
प्रथम मोठा आदरसत्कार करितों. परंतु तोच
जर दोन तीन दिवसा आड येऊं लागला तर
त्या विषयींची आपली पृथ्व बुद्धिनेष्ट होऊन
जाते. ही झाली मनुष्याची गोष्ट. परंतु लेखा
विषयीं तसें नहीं. विषय जरी तोच असला
तरी प्रत्येकाची विचारपद्धत व लेखनशैली
भिन्न भिन्न असल्या मुळे तो आपण नव्वर
वाचल्या पाहिजे. विषय जुना म्हणून सोडून
न देता त्यांत नवीन काय सांगितलें आहे व
ते यशस्वर आहे किंवा नहीं हे वाचणाराचे
पूर्ण लक्षांत घेालें पाहिजे.

या प्रमाणे प्रस्तारना देण्यानेंनर आपण आ-
पल्या प्रस्तुत विषयाबद्द वट्ट. पहिल्या प्रथम



धर्म या शब्दाची व्याख्या देऊन नंतर त्या खाली येणाऱ्या तत्वांचे वर्णन करूं 'सद्विज्ञान-वृत्तानि धर्म धर्मेधरा विदुः । यदीय प्रत्यनी-कानि भवन्ति भवपद्धतिः ॥ अशी रत्नकरंड ध्रावकाचारांत अमितगति आचार्यांनीं धर्म या शब्दाची व्याख्या सांगितली आहे. सम्यग्दर्शन,

सम्यग्ज्ञान, आणि सम्यक् चारित्र्य ह्यांस पंडित लोक धर्म म्हणतात. ह्या विरुद्ध जें असेल त्यास अधर्म असे म्हणतात. फिंल्ट साहेब म्हणतात 'Religion is man's belief in a being or beings mightier than himself and in accessible to his senses but not indifferent to his sentiments and actions, with the feelings and practices that follow from such belief,' अशी फिंल्ट साहेबाची धर्माची व्याख्या आहे. धर्म म्हणजे ईश्वराचे अस्तित्व कबूल करणे व त्या प्रमाणे त्याची भक्ति करून त्याने सांगितलेल्या नियमांचे आचरण करणे. या प्रमाणे फिंल्ट साहेबाने सांगितलेल्या धर्माच्या व्याख्येची व अमितगति आचार्यांनी दिलेल्या धर्माच्या व्याख्येची तुलना केली तर आपणास आढळून येईल की दोन्हीही व्याख्यान जवळ जवळ सारख्याच आहेत. व्याख्या जरी सारख्याच असल्या तरी आपण असे समजू नये की फिंल्ट साहेबाचा धर्म व आपला धर्म एकच आहे. जगांत निरनिराळे धर्म उत्पन्न होण्याचे कारण दूसरे काही नसून त्या त्या संस्थापकांची ईश्वरा विषयी निरनिराळी कल्पना हेच होय. याप्रमाणे ज्या ज्या लोकांना जी

जी कल्पना पसंत पडली त्या त्या प्रमाणे ते त्या संस्थापकांना मिळून त्या धर्माचे अनुयायी बनले. येणे प्रमाणे निरनिराळे धर्म अस्तित्वांत वसे आले हे आपण थोडक्यात पाहिले आतां धर्माचा उद्देश काय ह्याकडे आपण आपली दृष्टि फेकू.

ज्या मुखाची इच्छा नाही असा एकहि प्राणी ह्या जगांत सांपडणे वठीण. मनुष्यच नव्हे तर जगातील यच्चयावत् प्राणी सुख मिळविण्या करितां वाटेल त्या प्रकारचे प्रयत्न करीत असतात. तात्पर्य हेच कीं दुःखाचा परिहार करून सुख मिळवावे हेच सर्वांचे ध्येय आहे. Mill says, 'Happiness is desirable and the only thing desirable in the world, all other things are desirable as means to an end.' आतां साहजिकच असा प्रश्न उद्भवतो कीं सुख जर प्रत्येकाचे ध्येय आहे तर ते सुख कोसे काय आहे व ते मिळविण्याची साधने कोणतीं-वर वर विचार करणारास हे प्रश्न सोपे वाटतील, परंतु सूक्ष्म विचार केल्या असता असे आढळून येण्या सारखे आहे कीं दिसतात तितके सोपे हे प्रश्न नाहीत. मोठमोठ्या विद्वान लोकांनी ह्या प्रश्नाचा खोल विचार करून असे प्रतिपादन केले आहे कीं नेहमीं सुख देणारी अशी ह्या जगांत एक हि वस्तु नाही. ज्यास आपण सुख म्हणतो ते खरे सुख नसून केवळ सुखामास आहे. ऐहिक वस्तु पासून मिळणारे सुख भणिक आहे. ह्याचा अनुभव रोम घडून येणाऱ्या गोष्टींत, आत्म पाहवून आहोत. हे फिरून सांगजे अशी



कांहीं माझी इच्छा नाही; परंतु विषयानुरोधने त्याचा येथे उल्लेख करणे भाग पडते. मुख म्हणून जी अदृश्य वस्तु आहे ती आपणांस पंचेंद्रियांचे द्वारे मिळवितां. येते ही पंचेंद्रिये शिथिल झालीं म्हणजे अर्थातच मुखोपभोगाची साधने हि नष्ट होतात हें वरून अगदीं स्पष्ट दिसून येते. जी इंद्रियांची वाट तीच स्त्रीपुत्रादिकांची व इष्टमित्रादिकांची. जोपर्यंत आपल्या जवळ चमकाजी आहेत तो पर्यंतच सर्व कारभार ठीक चालतात. परंतु पैसा एकदाचा हांतून गेला म्हणजे तूं कोण आणि मी कोण अशी स्थिति होऊन जाते. म्हणून संत तुकाराम म्हणतात कीं 'मुख पाहतां जबा एवढें । दुःख पर्वता एवढें ॥ मुखदुःखाची तुलना वेळी असतां मुख जबा एवढें तर दुःख पर्वता एवढें असे आपणांस आश्चर्य येईल.

बरें, मुख मुख म्हणतां तर तें मुख आहे तरी कोठें याचा आपण पूर्ण विचार केला आहे काय ? आतां मुख कशांत आहे हें आपण पाहूं. अशी कल्पना करा कीं आपणा पुढें नाना प्रकारच्या पक्वान्नांनीं मारलेले एक ताट आणून ठेविलेले आहे, व त्यांतला त्यांत कांहीं कारणामुळे आपट्टी झुगहि कारच खळखळी आहे. अशा प्रसंगीं तें अन्न आपणांस किती नरें गोड वाटते ? ज्यांच्यावर असे प्रसंग ओडले आहेत त्यांना त्या आनंदाची कल्पना होणार; इतरांस होणें अशक्यच. परंतु मला ओं वाटते कीं अशा प्रसंगे प्रसंग प्रत्येकावर केव्हां केव्हां तरी आलेच असतील तर मग आपणच सांगा कीं अशा प्रसंगीं आ-

पणांस जें मुख होते तें कशापासून होते ? मुख त्या पक्वान्नांत आहे किंवा आपल्या जिह्वेत आहे ? मुख हा शब्द वापरण्यापेक्षा ह्या स्थळीं स्वादिष्टपणा हा शब्द वापरणे हेंच सोयीचें होईल. परंतु स्वादिष्टपणा असला म्हणजे त्या ठिकाणीं मुख हें असतेंच. म्हणून स्वादिष्टपणाच्या ऐवजीं मी मुख हाच शब्द येथे राहूं देतो. मुख कशांत आहे ? मुख पक्वान्नांत आहे असें आपल्या पैकीं कांहीं म्हणतील. पण थांबा. थोडा विचार करा आणि मग उत्तर द्या. आतां मी आपणांस असा प्रश्न विचारतो कीं मुख जर अन्नांत आहे तर ते अन्न केव्हांहि घेतले असतां त्यापासून मुख मिळालेंच पाहिजे परंतु खरी स्थिति अशी नाही. मुख अन्नांत नाही किंवा मुख जिह्वेत नाही तसें जर असतें तर मग माझे पोटा मरल्यावर किंवा अजीर्ण होई पर्यंत खाऊल्यावर मला त्या अन्नाचा कां बरें तिटकारा वाटतो ? ह्यावरून सिद्ध होतें कीं मुख पक्वान्नांत नाही किंवा मुख जिह्वेत हि नाही. मुखाची जागा ह्या बाह्य वस्तूंत नाही. बाह्य वस्तूंत जर मुख असतें तर जी वस्तु मला प्रिय वाटते तीच दुस्वभास अ-प्रिय वां वाटावी ? आपणां हिंदु लोकांना पान सुयारी फार आवडते. परंतु ती इंग्रज लोकांना गुल्लिच आवडत नाही. असे नां ? आपणां पैकीं बहुतेकांस त्या प्रभावे उत्तर कदाचित् माहित हि असेल परंतु मला पूर्ण खात्री आहे कीं फारच थोड्यांना ते माहित आहे परंतु सर्वांच्या ऐवजीं मीच त्या प्रभावे उत्तर देतो. मुख बाह्य वस्तूंत नाही किंवा मुग इंद्रियांमहि नाही.



मुख सर्वस्वी प्रत्येकाच्या मनात अवलंबून आहे. मनाचे परिणाम जसे अन्नात त्या त्या मानाने प्रत्येकाची मुखदुःखाची भरनाहि वटल असेल. 'मन एव मनुष्याणां कारणं बंधमोक्षयोः' अशी संस्कृतमध्ये म्हण आहे. मन हेच कर्माच्या बंधनाचे किंवा मोक्षाचे कारण आहे. Mind is the only cause either of the bondage of the soul with karmas or of its freedom from them. आख्या हातून ज्या ज्या काही वस्तू वाईट गोष्टी घडतात त्या सर्वांचे उत्पत्तिस्थान मन हेच होय. इतकेच नाही तर जे जे मी पाहतो आणि ऐकतो ते ते सर्व मनावर अवलंबून असते. शोषण असताना डोळे असून देखीक मला पाहतो येत नाही. कान असून देखील ऐकू येत नाही. कारण अशावेळी मनाची क्रिया दुसरी वडे कोठे तरी चाललेली असते. या वरून आपल्या लक्षात आलेच असेल की मन हेच मुख दुःखाचे किंवा मंत्र मोक्षाचे कारण आहे.

- आतां मुख आणि आनंद या दोहोंत कोणता भेद आहे ते पाहूंगा. मुख याच इंग्लिशमध्ये Pleasure म्हणतात, आणि आनंदात joy म्हणतात. मुख म्हणजे इंद्रियजन्य सुख हे क्षणिक व भोक्त्री दुःखदायक आहे. व समस्वरुपी लय लागण्यामुळे उत्पन्न होणारे मुख हे अमंड म्हणजे सदां पर्यंत टिकणारे आहे. या मुखाने म्हणजे मत्तानंदात दुःखाचा लवलेश देखील राहत नाही. मुख आणि आनंद याचा भेद उदाहरणे घेऊन मागितला असता खरेच समजावयायला आहे तो, पर्यंत प्रकृति

चागली आहे तो पर्यंतच आपणांस इंद्रियाकडून मुख मिळण्याची थोडी बहुत आशा असते. एकदां पंचेन्द्रिये आपापलीं कामे करव्यास असमर्थ झालीं म्हणजे मग सुखाची आशा बहुतेक संपलीच असे म्हणावयास कांहीं हरकत नाही. परंतु इंद्रिये असून देखील काम मागत नाही. त्यांच्या कडून मुख धावयाचे असेल तर आपणांस आणखी एका गोष्टीची अत्यावश्यकता आहे. ती गोष्ट म्हणजे पैसा. आपली इंद्रिये अगदी सुरक्षित आहेत परंतु पैसा नसेल तर ह्यांचा कांहीं उपयोग नाही. "दात है पन चने नही, चने है पर दांत नही" अशी आपली स्थिति होउन जाते. यश कदाचित् कर्मधर्म संयोगाने दोन्हीहि साधने अनुकूल असली तरी ती सदैव मुख देणारी नसतात. उदाहरणार्थ एकदां पोट भरल्यावर आपणांष्टे पक्षांशें ताटचे ताट जरी भरून ठेविलेले असले तरी त्यांचेकडे आरण फिरून देखील पाहत नाही. कारण आपली क्षुधा शांत झालेली असते. उलट तेंच पकान ज्यास्त साल्ल्यास विपासारखे होतात. सारांश इंद्रियजन्य सुख हे दुःखमिश्रित असून क्षणिक आहे.

आतां आनंदाचे स्वरूप कोस काय आहे ते पाहू अशी कल्पना करा की, एकदा वडीन प्रथ सोडविण्यान आठले मन अगदी मडून गेलेले आहे. अशा वेळी जर तो प्रथ आपल्या वडून सुटला नाही तर मनास वाईट वाटते. परंतु तो जर कां आपणा कडून सुटला तर त्यापासून आपणांम जें आनंद होतो तो कांहीं



निगळाच असतो. शालेंतीत एकाधा मुळाची गोष्ट ध्या. परीक्षा पास झाल्या बद्दल त्यास जितका आनंद वाटतो तितका एकादा गोड पदार्थ खाल्ल्यावर त्यास खास वाटत नाही. आपण ही परीक्षा पास झालो. ह्या परिक्षेन पुनः वसण्याची आख्याता आतां मुळीच जरूर उरली नाही असे तो म्हणतो. सांगण्याचें तात्पर्य एवढेंच कीं त्या परिक्षेच्या कटकटीतून जन्मभर मोक्कलें झाल्या बद्दल त्यास एका प्रकारची खात्री होऊन त्यापासून त्यास आनंद होतो. तशाच प्रकारचा आनंद आपल्या हांतून एकादें सत्कृत्य झाल्याच आपणांसहि होतो. तो आनंद शब्दांनी व्यक्त करतां येत नाही. ज्याचा त्याने स्वतः अनुभव घेऊन पाहिला. त्या आनंदापासून आपणांस एका प्रकारची शांति उत्पन्न होते व ती शांति केव्हांहि नष्ट होते नाही. ह्या मनाच्या शांतिच परमानंद म्हणतात. ती मुखकारी व चिरकाल टिकणारी असते.

येणें प्रमाणें सुख व आनंद किंवा आरमानंद अथवा परमानंद ह्यांच्या मधील भेद समजल्यावर आतां बंध व मोक्ष यांचें थोडे वर्णन करून मी हा लेख संपवितो। जगाकडे दृष्टि फेकिली असतां एकेंद्रियादि जीवा पासून तों. पंचेंद्रियादि जीवा पर्यंत आपणांस नाना प्रकारचे प्राणी आढळून येतात. परंतु अगदी एकाच नमुन्याचे असे दोन प्राणी आपणांस कबितन आढळले असतील. ह्यांचे वागणूक काय बरे असतें ? इतरांना तर टांच्यात फेरपड केला नसो ! पण हे जैशी कल्याणाच मुळीं करावयास नको.

कारण ईश्वर न्यायी आहे. एकास दुःखांत लोटणें व दुसऱ्यास सुखांत घाटणें हे न्यायी-पणाचें कर्तव्य नव्हे. म्हणून ईश्वर हा आपला कर्ता नाही. जो तो आपल्या स्वतःचा कर्ता आहे. Man is the architect of his own self. मी म्हणजे आत्मा व पुढील ह्यांचा संबंध होण्याचें कारण काय ? मनुष्य हा स्वभावतःच इच्छामय आहे. इच्छे शिवाय आपण कोणतेंहि कार्य करित नाही. नाही म्हटल्यास प्रायेक प्राण्यांत जन्मतःच कोणत्याना कोणत्या तरी प्रकारची उपजत बुद्धि असतेच. तिच्या योगानें केव्हां केव्हां त्याचाकडून फार महत्त्वाची कामे घडून येतात. परंतु ही उपजत बुद्धि कोणांत चांगल्या प्रकारची असते तर कोणांत वाईट प्रकारची असते. तद्वतच इच्छेचें हि आहे. परंतु दोहोपेक्षां इच्छा किंवा तृष्णाच बळवत्तर आहे. जो पर्यंत आपल्या पाठीमागे तृष्णा लागली आहे तो पर्यंत आपली ज्ञापासून कधींच मुक्तता व्हावयाची नाही. शिवाय जो पर्यंत तृष्णा आहे तो पर्यंत आपल्या हातून कर्म हें पडलेंच पाहिजे; आणि जोपर्यंत आपली कर्मापासून मुक्तता होणार नाही तो पर्यंत आपणांच मोक्षहि मिळणार नाही. कारण “कृत्स्नकर्म विमोक्षो मोक्षः” अशी तत्त्वार्थान्त मोक्ष शब्दाची व्याख्या सांगितली आहे. करितां मुमुक्षुर्मी आत्तासाश तोडून टाकून मुक्त होण्याची खटखट करावी. हा आत्तासाश सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, व सम्यक् चारित्र्य ह्या रत्नत्रयांनीं तोडतां येवया सरता आहे. हा पाश तोटल्यास रत्नत्रयांखेरीब नगांत कोणतेच शस्त्र मग्न नव्हीं.

સમ્યદર્શન, સમ્યગ્જ્ઞાનવ, સમ્યક્ ચારિત્ર હૈં તર
 ધર્માર્થે મુલ્ય માગ આહેત્ર. પરંતુ ત્યાંનલ્યા
 ત્યાં ચારિત્રાર્થે કારત્ર મહત્વ આહે. મનુષ્ય કિતી
 હી શહાણ અપલા પરંતુ ત્યાં અત્ર ન જર
 વાંગે નસેલ તર ત્યાંચ્યા ત્યા વિદ્વત્તેત્રી જગાંત
 વાંહીત્ર કિંમત રાહત નાહી. મો જ્ઞાનાર્ને
 પરિપૂર્ણ આહે વ ચારિત્રાંત્ર હી નિજગાત આહે
 તોત્ર લરા તરા મહાત્મા ઉપદેશ કરેણે કાર
 સોર્ણે આહે પરંતુ ત્યા પ્રમાર્ણે આપલે આત્રરણ
 ઠેવર્ણે હૈં ત્યાહી પેશાં શતપટીર્ને કઠીણ અહે.
 ઇર્નર્ન અશી મ્હણહી આહે કી " It is
 better said than done સર્વ શિલ્પણ ત્રા
 ઉદેશ શીલ મનવિષ્ણા વહે અસટા પાહિજે
 હૈં ઘ્યેય ઘરૂન જર આપણ આપલા માર્ગ નમું
 લાગલોં તરત્ર આપણ સુરસિત્ર ટિઠાળી જાડા
 પોહોંત્ર નાહીત્ર મધ્યે કોઠે તરી આહ
 રત્ત્યાર્ને જાડત્ર આપણાં સંમાર્ગર્ણવાંત્ર મટરટ
 ફિરાવેલાગેઠ. હા નર્મ રૂપી માર્ગ આત્રવણ કર-
 વ્ણાકરિત્રાં સમ્યદર્શન, જ્ઞાન, વ ચારિત્ર હૈં ત્રીન
 ત્યા માર્ગોંનલે પયદર્શક હોત ત્યાંચ્યા સત્ત્યાર્ને
 આપણ જર વાગું લાગર્ણોં તર આપણ યોગ્ય
 ટિઠાળી જાડત્ર પોર્ણેત્ર. હૈં લક્ષા ઠેવૂત્ર
 પ્રત્યેકર્ણે આપણી વ સાધન્યાત્ર દુસત્ર્ય ત્રીહી
 આત્રમોજ્જતિ કળ્પવાત્રા સતત્ર પત્રત્ર ચાલ
 ઠેવાવા. ઐ શાન્તિરમ્ભુ ।

ચાલચંદ મોતીસાવ પેઠકર-મહાપૂર.

પ્રતિષ્ઠાસારોહાર ।

(પ્રતિષ્ઠાપાઠ હિન્દી ટીમ મલિન)

૫મી નિલ્દ. મૂલન ૨)

મેનેનર, દિ. જૈન પ્રત્નકાલય-સૂરત.



લખનાર:—સંધર્થી વાઘીલાલ મુળજીભાઈ
 હાંપડી.

“ હંદી મિથ્યા છે ” “ આયુષ્ય અપ
 છે, ” “ સંસારમાં જો માલ છે. ” “ ઝાઝું
 જનવામાં શો માર છે, ” “ વહેતું મોઢું પથુ
 મરતું છે. ” આવા માલ વગરના અને નિરા-
 ધાના વિચારો અને સંકર્ષોએ હંદીના મન-
 ત્રને ઉતારી પાડવામાં તથા તેની અલ્પતામાં
 ઉમેશ કરેલો છે. હંદી દુઠી થવાનાં કારણોમા
 અયોગ્ય ખાનપાન, આહારવિહારાદિ નિયમોત્તું
 ઉલ્લંઘન, સાંસારિક હાનિકારક વ્યવહારો અને
 ઉપત્ર થતા રોગો ધર્માદિ અનેક કારણોની
 અત્યાર સુધી વિહાન ઠોકરો અને વેલો ગણના
 કરતા આવ્યા છે, પણ એ હંદી દુઠી થવાનું
 એક બીજું કારણ શ્રમપણે પોતાના નમરો
 મારો ચલાવે બાધ છે તે આપણા લક્ષમાં નથી.
 એ કારણ મનને મક્કલ છે સમજણા યજ્ઞે
 છીએ ત્યાંથીજ મૃત્યુના બચતી અને હંદી
 વ્યર્થતાની વાતોના સંકર્ષો આપણા મન સાથે
 બધાવા મોંડે છે. કણે કણે મૃત્યુના બાજુકાર
 આપણા બીકણ અને ગાયલા અનેલા મનને
 બડકાવે છે. “ કાલની જોને ખન છે, કાળનું
 ચક્ર માથે શ્યાં કરે છે, હંદી દુઠી અને અસાર
 છે. ” આની આવી બાપલી શીલ્પટ્ટી (નીતિ)
 અને શેઠ ડહાપણથી લોકો નિર્માત્ર્ય, બાંધલા અને
 પુરુષાર્થહીન થયા અને સમજણ આવ્યાની સાથેજ
 આપણામાં આવા હાનિકારક અને વિનાશકારક
 સંકર્ષો બધાવા ગયા. એ સંકર્ષો બધાવા
 ગયા અને કિતરોત્ર વારસામાં મગતા ગયા અને
 ક્રમેક્રમે નંકરપત્ર બળ વધતુ ચાલ્યું, તે એટલે
 સુધી કે હાલના હંદી નીકળતા બી કે પુરુષના
 અંતરકરુમાં પણ સામાન્યતઃ નિગ્રહાના બાપલા
 વિચારો સુધી નીકળે છે, અને તે એ કે મારે



લાંબુ છવવાતું નથી; ખાંડ તો પંઠુકે ૬૦. આજના વખતમાં પચાસ કે સાઠ વર્ષે જીવે તે તો ભાગ્યશાળી ! આવી રીતે તેઓ સંકલ્પ કરી બેઠા હોય છે અને મૃત્યુના બાસુસેને તે આ દુષ્ટ મર્મદામાં ઉભેલા દેખતાં હોય તેમ તેઓ મૃત્યુની વાટજ નોંધ રહેલાં હોય છે.

માણસના મન ઉપર સંકલ્પબળ મોટી અસર કરે છે અને ટાંચી વચના માણસોના મન ઉપર તેની જાગી અસર થાય છે. એક બાળકના મન ઉપર બચપણથી જેવા સંસ્કારો અને સંકલ્પો તેમનામાં પ્રત્યક્ષ દેખાશે તે સંસ્કારો અને સંકલ્પોનાજ તેઓ બાળીદાન અથવા બોક્ષતા થશે. એક બાળકને બચપણથીજ નિરંતર બચ બીકણપણાની વાતો કરે તો તેનું પરિણામ શું આવશે ? તે નાકી બીકણ અને બાચણ થવાનું. મોટપણે પણ બીવાના અથવા મય પામવાના પડેલા સંસ્કારો જતા નથી, એવીજ રીતે એક બાળક પાસે બચની કે બીકની વાતજ નહિ કરતાં, જે તેની પાસે નિરંતર બહાદુરીની, શરવીરપણાની અને પરાક્રમનીજ વાત કરે તો તેનું પરિણામ અવશ્ય એવું આવશે કે તે બાળક મોટું થતાં બહાદુર અને પરાક્રમી થશે. હથિયાર લઈ લડાઈના મેદાનમાં ઉતરી પડવાને માટે વણિકને ગમે એવી લાલચ, ધનનામ કે પગાર આપશે તોપણ તે જવાની હિમત કરશે નહિ, અરે હથિયાર કેળીનેજ બડકશે; પણ એક રત્નપુત્ર કેળી કે બીકને નાનો છોકરો પણ હથિયાર પકડવાને તૈયાર થઈ જશે, તેનું શું કારણ ? વણિકને તે જાતના સંસ્કાર નથી, અને રત્નપુત્ર વગેરેને તેવા સંસ્કારો અને સંકલ્પો વારસામાંજ મળેલા છે. કેટલાક માણસો અમુક કાર્યને માટે પોતે લાયક છતાં પોતે પોતાનાજ મનથી પોતાને નાલાયક માની બેસે છે, અને પોતામાં નાલાયકને દૃઢ સંકલ્પ કરે છે કે જેથી તે હમેશાં એ કાર્યને માટે નાલાયકજ રહે છે. મારામાં કંઈ ખાસ નથી એવું માનીનારાઓ હમેશાં ખાસ પગરનાજ રહે

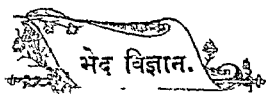
છે, અને જે એવો સંકલ્પ કરે છે કે અમુક કામ કાચ થીનેજ તે પાર પાડું છે અને તે કામ કરવાને હું સંપૂર્ણ લાયક છું તથા તેમ હું કરીશજ તે માણસ તે કાર્ય અવશ્ય સિદ્ધ કરે છે. આ સંકલ્પબળને સારાં કાર્યોમાં જોડે તો સારાં કાર્યો થશે, નહારાં કાર્યોમાં જોડે તો નહારાં કાર્યો પણ થશેજ. હું રોળી છું, મારામાં કંઈ શક્તિ નથી, અને મારે ઝાડું છવવું નથી, એવા સંકલ્પો કરનારો માણસ સદા રોગીજ રહે છે, સદા અશક્તજ હોય છે અને યોડું જીવે છે. એથી ઉલટું, જે દૃઢ સંકલ્પી માણસ પોતાના મનમાં એવો દૃઢ સંકલ્પ કરે છે કે, મને કંઈ રોગ હજ નહિ, હું સંપૂર્ણ સશક્ત અને મુખી છું અને મારે મરવુંજ નથી, તે માણસ સદા નિરોગીજ છે, જાગવાન રહે છે અને લાંબો કાળ જીવે છે. સંકલ્પબળનો મહિમા ઘણો મોટો છે અને મોગનિશાએ જાગની સિદ્ધિ થાય છે. અમુક નિયમ કે નિશ્ચય ઉપર મનનો નિગ્રહ તેવું નામ યોગ છે, અને એવું માનસિક જગ અથવા નિયંત્રણજ ગમે તે પ્રકારે પ્રાપ્ત કરે તે યોગી છે. આ જગ પ્રાપ્ત કરવા માટે ખાસ કરીને ભગવાં પહેરવોની જરૂર પડતી નથી, હંડા ભોંયરામાં જઈને સગામિ ગડાવનાની વરૂર નથી અથવા પ્રાણાયામ કરીને શ્વાસ ધુંટવાની પણ ખાસ કરીને વરૂર નથી. આગત તે જગા મનનો નિશ્ચય કરવાનાં સાધનો છે ખરાં, પણ એ સાધનો વિના પણ ધૈર્યુક અવધારી માણસો પોતાના સંકલ્પ જગ અને મનોબળથી યોગીના જેવું કાર્ય કરવાને સમર્થ થયા છે, એટલુંજ નહિ પણ સંકલ્પ જગથી અને એ સંકલ્પના પ્રતાપથી પ્રમા, દીર્ઘાયુ, મોગમવાને પણ બાગ્યશાળી થયા છે.

૫૦ અનુનંદાલ સેરી કૃત-

મહેન્દ્રકુમાર નાટક

ગરવ ૨ મંગલકર વરિયે । પૃ. ૧૭

મોગા, ૧૦ જૈન પુસ્તકાલય-મુદ્રા.



ભેદ વિજ્ઞાન.

(લિખક-લલિતાબાઈ, આવિકાશ્રમ, સુબાઈ)

લેદ વિજ્ઞાન=ભેદ એટલે પરસ્પર એક બીજામાં મળેલી ચીજોનું પૃથક્કરણ એટલે ભિન્ન ભિન્ન કરવું અને નિર્માન=એટલે વિશેષ ન ન, અર્થાત્ કોઈ પણ વસ્તુમાં અનેક વસ્તુ મળી હોય તેને નયની યુક્તિથી એક જાણવું તેને ભેદ કહે છે । જેવી રીતે તલમાં તેવ મળેલું છે તેને ધોળી જુદું કરી દે છે. વળી આપણે પણ એનો અનુભવ કરવાથી માયમ પડે છે, તેમજ લાકડામાં અગ્નિ ગુપ્ત રહેલી છે તેનું સઘર્ષણ કરવાથી સાક્ષાત્ અને અનુભવથી પ્રગટ અગ્નિ અને લાકડાનું પૃથક્કરણ આપણને માલમ પડે છે તથા દૂધમાં પોણી મળેલું છે તેપણ આપણે જુદું જાણી શકીએ છીએ તેમજ ઉંના પાણીમાં ગરમપણું અગ્નિના સંબંધથી છે અર્થાત્ ગરમ પાણીમાં ગરમ શુભ પાણીનો નથી પણ અગ્નિનો છે એ આપણે ભેદ વિજ્ઞાનથી જાણી શકીએ છીએ

આપણી વર્તમાન અવસ્થા એટલે મનુષ્યગતિ શરીરધારી જીવની અવસ્થા જીવ અજીવનું મિશ્રસુષ્પ મનુષ્યપણું છે. જીવનું સ્વરૂપ નિશ્ચયનયથી શુદ્ધ જ્ઞાન દર્શનમયી, આનંદરૂપ અવિનાશી, અમરતિક સ્વમંવેદનરૂપ છે. અજીવ દ્રવ્ય પાંચ પ્રકારનાં પુરુષ, ધર્મ, અધર્મ, આકાશ, અને કાળ, આદિ સ્વરૂપ, પથ રસ, બે મધ, અને પાંચ વર્ણ એ પુદ્ગલના શુભ છે, એ પુદ્ગલને છોડીને બીજા કોઈ દ્રવ્યમાં કદી પણ મેલેલો નથી. પુદ્ગલ સાથે એ શુભોને અવિનાશી સંબંધ છે. જીવ અને પુદ્ગલને ચાલવામાં ઉત્તરિપણે સહાયતા કરનાર તે મર્મદ્રવ્ય અને જીવ પુદ્ગલને ઉભા રહેવામાં અધાયતા કરે તે અધર્મ દ્રવ્ય, સર્વ દ્રવ્યને અવકાશ એટલે

જગ્યા આપનાર તે આકાશ દ્રવ્ય અને વસ્તુની નવજાણી અવસ્થા કરનાર કાળ દ્રવ્ય છે. આ પાંચે દ્રવ્ય જડ હોવાથી એમાં જ્ઞાન, દર્શન, અવિચલ સુખ કે આનંદ કાંઈ પણ નથી.

બહાલી બહેનો ! તથા બધુઓ, અનાર્ધ

કાળથી તમારે આત્મા કર્મોથી બંધાયેલો છે એ કર્મો ધડીમાં હસાવે છે અને ધડીમાં રહાવે છે, જ્યારે પુણ્યનો ઉદય થાય છે સારે આપણે ધટ વસ્તુ પ્રાપ્ત થાય છે અને તેથી આપણે સુખ માનીએ છીએ પરંતુ એ સુખ નિલ નથી કારણ પુણ્ય હમેશા એક મગ્નું રહેતું નથી. સસાગમાં મર્મે પરપદાર્થ ક્ષાયશુભમાં પર્યાય અપેક્ષા નાશ થાય છે એમ જાણીનેજ તીર્થક-ગેએ મહાન મદદિ છોડી અને ભેદ વિજ્ઞાન દ્વારા અવિચલ આત્મિક સુખની પ્રાપ્તિ કરી જ્યારે પાપોદયનું તોર આપણા પશિન આત્મા પર ચઢાઈ કરે છે ત્યારે આપણે મદ, બાપ, ભાઈ, વિગેરેની તથા અન્ય જનોની શરણની આશા રાખીએ છીએ પણ એ આશાથી કાંઈ પણ લાભ થતો નથી, પરંતુ ઉવદ્દ જ્યેનમોહની કર્મ મજબૂત થાય છે નેથી સુખકર શરણ નિશ્ચયથી આપણા આત્માનું મદલું કરવું જોઈએ. આ પંચ પરત્વેનરૂપ સંસારમાં જગણ કરતાં કરતાં જીવને કંઈ પણ શાંતિ મળી નથી તો સત્ય સુખશાંતિના દન્ધક બહેનોએ તથા બધુ-ઓએ આત્માનુભવથી શાંતિ મેળવવી જોઈએ ?

આ જીવ એકલો આલો છે અને એકલો જાગ્રો છે. એકલાને કર્મદળ મોગવવા પડે છે માટે આપણા મંબંધીઓને માટે આપણે અન્યાય કરવો નહિ કારણકે એનું જીવ આપણે એકલા-નેજ મોગવવું પડે છે હસ જેમ પેતાની ચાંચવડે દૂધ અને પાણી પૃથક કરી નાંખે છે તેમજ આપણે પણ આત્મરૂપી હંસની ભેદ વિજ્ઞાનરૂપી ચાંચ અંતરંગના કર્મરૂપી પડકામાં નાંખીને જીવ અને પુદ્ગલ પૃથક કરી દેવા જોઈએ. નિશ્ચાત્વ, અવિરત, કપાય, અને ચોગ દ્વારા કર્મનું આવનું થાય છે તે કુખ્યાથી છે



માટે એ આત્મવને શકવાનો ઉપાય શોધવો નોંધએ/ એનો સાચો ઉપાય આત્મ સ્થિરતા સિવાય બીજો કાંઈ નથી. બધાં સુધી કર્મોનો ઉદય વિદ્યમાન છે ત્યાં સુધી પૂર્ણ સુખ મળતું નથી માટે ધીરે ધીરે કર્મોના નાશ કરવો નોંધએ. કર્મ ત્રણ પ્રકારના છે. ભાવકર્મ, દ્રવ્યકર્મ અને નોકર્મ. ભાવકર્મ, રાગદ્વેષ, ક્રોધ, માયા, અને શોભરૂપ વિકારી ભાવને કહે છે એ આત્માનું સ્વરૂપ નથી, પણ મોહની કર્મના કારણથી થાય છે. દ્રવ્યકર્મ, જ્ઞાનાવરણ, દર્શનાવરણ, વેદની, મોહની, આયુ, નામ, ગોત્ર, અને અંતરાય આ આઠ છે.

જ્ઞાનાવરણ આત્માના જ્ઞાનશુભને પ્રગટ થવા દેતું નથી. દર્શનાવરણ આત્માના દર્શનશુભને પ્રગટ થવા દેતું નથી. વેદની ક્ષણિક સુખ દુઃખનો અનુભવ કરાવનાર છે, મોહની કર્મ સત્યાર્થ આત્મસ્વરૂપનો અનુભવ કરવા દેતું નથી અને પરપદાર્થનાં રાગદ્વેષ કરાવે છે. આયુ જીવને શરીરરૂપી જ્ઞેષમાં રાશી રાખે છે. નામ કર્મ નાના પ્રકારના શરીરના આકાર બનાવે છે. ગોત્ર નીચ કુલમાં જન્મ ધારણ કરાવે છે. અંતરાય કર્મ આત્મજલમાં વિદ્ય નાખે છે. નોકર્મ આહારિક, વૈક્રિયક, અને આહારક શરીરની રચના કરે છે. આ ત્રણે પ્રકારના કર્મોથી આત્મા બ્યવહારનયથી બંધાયેલો છે એમ કહેવાય છે, પણ ખરું જોવાં શુદ્ધ નિશ્ચયનયથી આત્મા બંધાયેલો નથી. જેની રીતે એક ગાગરમાં લાડવા બરેલા છે અને તેમાંથી આપણે આપણા હાથમાં લાડવા લઈને હાડવા જઈએ તો તે આપણા હાથમાં લાડ હોવાથી હાથ ગાગરમાંથી નીકળતા નથી તેને જો એમ માનવામાં આવે કે એ ગાગરે અમને બાંધી લીધેલાં છે તો તે જોડું છે તેમજ કર્મથી શુદ્ધ નિશ્ચયનયથી આપણે બંધાયેલા નથી, પણ આપણી માન્યતા એવી થઈ રહી છે કે બંધાયેલા છીએ, તેથીજ એ માન્યતા આપણને દુઃખ દે છે. આપણે આ માન્યતા આપણે લોક અર્થાત્ જોનાર છે. બીજો દેશ પર અર્થ લોક નથી કારણ કે તેમાં

દર્શનનો શુભ નથી. ખરેખર ! આ જીવે અનેક પર્યાય પ્રાપ્ત કરી, કોઈ વખત રાગનો ઓહો મળ્યો, સંસારમાં રસાવવાવાળું કુચાન પ્રણ અનેક વાર પ્રાપ્ત થયું, તેમાં આપણે હોશિયાર કહેવાયા તેમાં કાંઈ પણ હર્લેભવા નથી, પણ સમ્યક્ જ્ઞાનની પ્રાપ્તિ અર્થાત્ આત્માનું યથાર્થ જ્ઞાન થતું હર્લેભ છે, તે મેળવવાની કોશીલ કરવી નોંધએ.

બહાલી ખરેખર ! તથા બધુઓ ! અમે અને તમે પૂર્વે કલા પ્રમાણે ત્રણ પ્રકારનાં કર્મોથી બેગર થઈ રહ્યા છીએ; એ કર્મ બધાં સુધી રહે ત્યાં સુધી પૂર્ણ સુખની પ્રાપ્તિ થતી નથી. એ ત્રણ કર્મનું મૂલ કારણ દ્રવ્ય કર્મ છે માટે દ્રવ્ય કર્મને નાશ કરવાનાં સાચો ઉપાય સ્વરૂપ લાભ છે તેને પ્રાપ્ત કરવો નોંધએ કારણ કે સ્વસ્વરૂપની પ્રાપ્તિથીજ સુખ સંતિ મળે છે અને સ્વસ્વરૂપની પ્રાપ્તિ આત્માનુભવથી થાય છે આત્માનુભવ ભેદ વિજ્ઞાનથી થાય છે જેની રીતે અમૃતચંદ્રસુરીએ સમયસારમાં કહ્યું છે—

શ્લોક—

મંદજાનોન્નકલનકલનચ્યુદતત્વોપલમ્ભા-

દ્રાગપ્રાપ્તપ્રલયકરણાત્કર્મણાં સંવરેણ ।

વિશ્રોત્તોપપરમમલા લોકમમ્લાનમેકમ

જાનં જ્ઞાને નિયતમુદિતં શાશ્વતો ચોતમેતલ્લ ॥

અર્થાત્ ભેદ જ્ઞાનના ઉદ્દગવાના અબ્યાસથી શુદ્ધાત્મતત્ત્વની પ્રાપ્તિ થાય છે અને શુદ્ધાત્મ ભાવની પ્રાપ્તિથી રાગાદિ, આમનો પ્રલય થાય છે અને રાગાદિ આમના પ્રલયથી કર્મોનો સંવર થાય છે અને સંવરથી ઉત્કૃષ્ટ સંતોષને ધારણ કરનાર, નિર્ભય, પ્રકાશવાન, કલુષતા રહિત શાશ્વત ઉચિતમાન આ એક જ્ઞાન તે નિશ્ચયપણે જ્ઞાનમાં પ્રગટ થાય છે.

આતુ સર્વોત્કૃષ્ટ અને પૂર્ણ સુખનું મૂલ જે ભેદ વિજ્ઞાન તેને સર્વ આવક આવિકાએ એકાંતમાં સામાયક દ્વારાએ વિચાર કરવાથી અથવા ધ્યાનથી પ્રાપ્ત કરી લેવું નોંધએ, તેને માટે પહેલાં સર્વ ખરેખરે અધારજ્ઞાન દરીને અધ્યાત્મિક ગ્રંથ વાંચીને સમજ સદાય તેની

વૃદ્ધિનો વિકાસ કરવો જોઈએ. કેટલીક બહેનોનું એમ માનવું છે કે સ્ત્રીઓને ક્યાં કમાવા જવું છે એમ કહીને અમણ રહે છે, પણ બહેનો! જ્ઞાનની પ્રાપ્તિ કાંઈ શકત પસા કમાવાને માટેજ નથી, પણ આપણે સાચું સુખ મળે તેને માટે છે માટે કાંઈ પણ બહેનોએ અમણ રહેવું નહીં, પણ ભણી ગણી અધ્યાત્મિક થયોતો સ્વાધ્યાય કરવો અને તે દ્વારા એ સર્વેશુભનું મૂલ ભેદ વિજ્ઞાન તેને પ્રાપ્ત કરીશું. જોઈએ અથવા અધ્યાત્મિક પૂજન કરીને જન્મ સંકલ્પ કરવો જોઈએ.

કારણકે ભેદ વિજ્ઞાનથી વર્તમાનમાં સુખ-સાંતિ, અનુભવાય છે, આત્મવીર્યની વૃદ્ધિ થાય છે, મનુષ્યમાં હંચ અવસ્થા પ્રાપ્ત થાય છે તેમજ દુઃખનું મૂળ કારણ કર્મ તેનો ધીરે ધીરે નાશ થતો જાય છે. માટે સ્ત્રી અને પુરુષ બન્નેએ મનુષ્ય જન્મ સંકલ્પ કરવાને ભેદ વિજ્ઞાન કરવું જોઈએ. એનેજ માટે બાહ્યમાં શ્રાવિકાના બાર ત્રણ પાળવાં જોઈએ તથા બાર પ્રકારે તપ તપવા જોઈએ તથા શ્રુતજ્ઞાનનો અભ્યાસ કરવો જોઈએ, જેની રીતે નેમીચંદ્ર મુનિએ દ્રવ્ય-સંબંધમાં કહ્યું છે—

આધા.

તવસુદવદવ ચેદા જ્ઞાણરહ પુરધગો દ્વને જન્મ્હા ।
તમ્હે સત્તિવણિદા તલ્લીઈ સદા હોદ ॥

સાધાર્થ—તપ શ્રુત અને વ્રતનો ધારી આત્મા ધ્યાનરૂપી પુરુષને ધારણ કરી શકે છે તેથી તમે પણ ધ્યાનની પ્રાપ્તિને માટે તપ, શ્રુત અને વ્રતમાં રત રહો. ભારી કેટલીક વિધવા બહેનો ધૃષ્ટા સમય બરગાદ કરે છે, તેઓએ જાણવું જોઈએ કે અમને ભેદવિજ્ઞાન પ્રાપ્ત કરવાનો સુચવમર પ્રાપ્ત થયો છે, માટે એ સુચવસરમાં જોમ અને તેમ તપદ્વારા, જ્ઞાન દ્વારા, ધ્યાનદ્વારા, અથવા તો કોઈ પણ પ્રકારથી ભેદવિજ્ઞાનની પ્રાપ્તિ કરી લેવી, ભેદવિજ્ઞાન મેળવે કાંઈ આપણે આખો દહાડો નિર્ગમન યથ ક્ષતે નથી તો શેષ સમય પરોપકારમાં વિતાવે જોઈએ.

અંતમાં મારું કહેવાનું તાત્પર્ય એજ છે કે આપણે સર્વ બહેનોએ તથા બધુઓએ ભેદ-વિજ્ઞાનનું સ્વરૂપ સમજવું જોઈએ અને તે દ્વારા આપણા આત્મામાં કેટલે અંશે રાગ દ્વેષ ભળેલા છે તેનું નિરાકરણ કરવું જોઈએ અને રાગ દ્વેષને હેય જાણીને તેથી રહિત-થવાની કોશીલ કરવી જોઈએ અને એને માટે વ્રત પાળવાં જોઈએ. સ્વાધ્યાય કરવો જોઈએ, તપ તપવા જોઈએ, તથા બીજા નિયમને પાળવા જોઈએ શેષ સમય ખાસ કરીને વિધવાઓએ પરોપકારમાં નિર્ગમન કરવો જોઈએ, જેથી આલોકમાં સુખ સાંતિ વશ મળે અને પરલોકમાં શુભગતિ મળે તથા પરંપરાય મોક્ષ શુભની પ્રાપ્તિ થાય. અંતમાં મારી બહેનોનું તુલન વર્ષ સુખદાયી અને પરોપકાર કર્ય કરવામાં ઉત્સાહી નિવડો એવી જ્ઞાનના ભાવીને લખવું બંધ કરું છું.

અનુનયાયક ।

(ગજલ)

હમરી દશા હૈ કયા અવ, જિનવર । જરા નિહારો,
હમરે કલેશ અવ ચે, કપયા જરા હદા દો ॥૧॥
આવમમે માંદે ચન્યુ, વદુ હાહ કર રહે હૈ,
શુભ જ્ઞાન મન્ત્રલે અવ, શુભ દેવકો વદા દો ॥૨॥
વિન દેવકે ન હોગ, ઉચાર અવ હમારા,
હસ હી સે વહ વિનય હૈ, પ્રમુ । એકતા વદા દો ॥૩॥
અજાનની અવેરી, મન ચૂન છા રહી હૈ,
શુભ-જ્ઞાનકા દિવાકર, હૃદયમે અવ લગાદો ॥૪॥
અર કામ-પ્રોધને મી, હમને સત્તા રહા હૈ,
વરકે કૃપા હમોપ, ‘પદ-દ્યોપ’ કો મગાદો ॥૫॥
અધર્મકી અન્ધેરી, ચંદ્રે ઘોર છા રહી હૈ,
અધર્મ-તમમે જન્દી, અમૈન્દુ જગ-મગાદો ॥૬॥
‘આવમમે માંદે હમ સવ, શુભ-પ્રેમ કરના સીલે,’
પ્રમુ વીર । સવ હૃદયમે, હમ મન્ત્રકો જગાદો ॥૭॥
અસ્તિર જિન્ય ‘પ્રવાસી’ વગ્ગા પ્રમો ! વહી હૈ,
શુભ નામ ‘વોર જિનવર’ ગવેંદ હૃદય લગાદો ॥૮॥
પત્રાસીજીત વર્ગો-નરત ।



આરોગ્યમાં પ્રથમમાં પ્રથમ જરૂર બ્રહ્મચર્યની છે. આજકાલ આપણા સમાજમાં બાલ લગ્ન વધી પડવાથી નાની ઉંમરમાં બાલક અને બાલકીઓ અપકવ વીર્યને નિરર્થક ફેંકી દે છે, તેથી ૪૦ વર્ષની ઉંમરે પહેલેથી પહેલાં તેમના શરીર બોખા થઇ જાય છે અને મનની યાદશક્તિ અને વર્કશક્તિ કમી થઇ જાય છે.

બાલ લગ્નથી જો કે આપણા સમાજ સામાન્ય રીતે સારું બ્રહ્મચર્ય પાલી શક્યો નથી પરંતુ તેથી પણ વધારે માદી અસર દુષ્ટ સંસ્કારને લીધે ઉત્પન્ન થાય છે અને તેનું મુખ્ય કારણ આપણી અજ્ઞાનતા છે.

બાળક જ્યારથી જન્મે છે ત્યારથી મોતાના મગજ ઉપર દરેક પુરુષગતી અસર લેતું જાય છે અને માળાપોતું જે અસુખ્ય વર્તન, વાણીમાં અથવા ચાલિમાં જુએ છે અને સાંભળે છે તે વાત મનથી સહેલાઈથી લાંબા કાળ સુધી યાદ રાખી શકે છે અને તેના પ્રમાણે ધર્મી વર્ણવે તે છે. આપણને જો વપાસીને જોવાની ટેવ દશે તો જાણીએ કે, આપણે જેવા માદા અથવા સામા બોલ દરેક બોલતા હોય છતાં તેવાજ સારા અથવા માદા બોલ બોલવાની બાજકને ટેવ પડશે. હુંકમાં બાળક જો કે પહેલાં આઠ વર્ષમાં બોલી શકતું નથી, બહુ શકતું નથી તેમજ કાંઈ પણ કામ કરી શકતું નથી તે છતાં પણ ઘણું જ્ઞાન મેળવે છે માટે આ સ્થિતિમાં ઉચ્ચ જ્ઞાન આપવા માળાપોતે ખાસ કાળજી રાખવી જોઈએ. એટલે બાલકની સમગ્ર વિનયની વાત અથવા ઇમારત ઇલાદિ પણ થવા પામતા હેતુ જોઈએ નહીં. જો આપ ન અને

તો આપણે મોટી ઉંમરે તેના લક્ષ્ય કરીશું. તોપણ તેથી વિશેષ કાંઈ કામદો થવાનો નથી કારણ કે જેનું તે પંદર અથવા સોળ વર્ષની વયે સમજણ શક્તિ અને સામાન્ય કામ કરવાની અથવા વિચારવાની સ્વતંત્ર શક્તિ પામશે કે વરતજ તેના વિષયના સંસ્કાર જાગૃત થશે અને સમય આવે દુષ્ટ વાસનાનો ભોગ કરશે અને ક્રમાંગે ચકશે.

વીર્ય પાલી થવાના અનેક માર્ગ છે. સ્ત્રીનો શારીરિક સંબોગ; સ્ત્રીનો માનસિક સંબોગ; જાગૃત અથવા સ્વપ્નાવસ્થામાં હાથરસ, પુરુષ સંબોગ ઇલાદિ અનેક રીતે વીર્ય નષ્ટ પામે છે.

જ્યારે જ્યારે આપણા મનમાં આ વાસના ઉત્પન્ન થાય છે ત્યારે આપણી આજ્ઞા બાજુએ રુદ્ધ થાય છે તે બૂલી જાય છે છીએ, માન મર્યાદા બાજુ ઉપર મૂકીએ છીએ, શરીર ધુન્ને છે, રોમાંચ અનુભવીએ છીએ, હુંકમાં દારૂડીયા અને ગોંડા માણસ એ જો જાતના મનુષ્યો એક વ્યક્તિમાં રજુ થાય તોપણ કામાંષ માણસ જે સ્થિતિ અનુભવે છે તેના ખ્યાલ આવી શકે એમ નથી. હુંકમાં પુરુષ, મનુષ્યત્વ ગુમાવી દેશે, સ્ત્રી કરતાં પણ શારીરિક અને માનસિક બળમાં તે મમ્મે નખજો અને છે અને પછીની માદક નોરજીવમથી વાસના નષ્ટ કરવા મળે છે.

વાસના નષ્ટ થયા પછી ગાત્રો શિથિલ થઇ જાય છે, શક્તિ મંદ પડી જાય છે, પસ્તાવો થાય છે, ખુદિ અને બીજી બધી દેહીયો બદલે માદી જાય છે અને ઘણીવાર સુધી બેચેન રહે છે.

વિનયસેવનથી માણસને માનો કે એક અનદદ સુખ એક દાગુ માટે થાય છે પરંતુ અનદદ દુઃખ ત્રણ અથવા છ કલાક સુધી અનુભવવું પડે છે; જે મનુષ્ય વિચારશીલ દશે, જેને શારીરિક અને માનસિક બલની દિશા જાણી દશે, જેનાં બીજાં અંગિકાં સુખનો રવા માગ્યો દશે, જેને માદા થયા



કરતાં (rational) રહેવું વધારે પસંદ પડતું હશે તેને આ રતિ બર સુખના ભોગ માટે આટલો બધો મોટો બચ કરવો ઉચિત નહીં લાગે અને તેના સેવનથી દુર રહેશે.

શ્રી પુરુષના પ્રેમમાં પણ ધણો મોહ છે કારણકે પ્રેમનું સ્થૂળ સ્વરૂપ સેવા છે. અને જ્યાં જ્યાં આદર્શ પ્રેમ છે ત્યાં ત્યાં મોહ ઓછો હોયો જોઈએ અને સેવાના રૂપમાં બદલાઈ જવો જોઈએ. કારણકે જેને પારીકાઈથી જોવાની ટેવ પડી હશે તેને જણાશે કે બાહ્ય શરીર પણ આપણને ધણા જોરથી આકર્ષે છે અને તે પણ સ્વભાવિક છે. બાહ્ય શરીરથી આકર્ષાઈ જનાય તો તેના કાંઈ બાધ નથી પરંતુ પ્રેમનું કાર્ય સ્વરૂપ સેવા છે અને વિપયવાસના અથવા શારીરિક ભોગો નથી.

કોઈ પૂછે કે તો સંપ્તિમાં શ્રી પુરુષની જોડ કેમ હશે ? લગ્નના ગાંઠ કેમ સંસારમાં બંધાય છે, જે વિપયસેવન ન હોય તો પ્રત્યક્ષ કેમ થાય અને સંપ્તિ કેમ વધે ? આ બધા પ્રશ્નનું નિરાકરણ થઈ શકે એમ છે.

મનુષ્યનું આધ્યાત્મિક બંધારણ બે ભાગનું બનેલું છે-એક તો સ્થૂલ અને બીજું સૂક્ષ્મ સ્થૂલ ભાગ મનુષ્યમાં દેખાય છે અને કામગીરી ભાગ જાણ્ય રહે છે; જ્યારે શ્રીમાં ઉધું ધણું છે પરંતુ એના સંલગ્નથી એક આપ્તું કાર્ય પેદા થાય છે એટલે કે દુઃખના સંપ્તિની સંપૂર્ણતા બે ભાગની સંપ્તિથી અથવા શ્રી અને પુરુષની સંપ્તિની સંપૂર્ણ થાય છે. આ સામાન્ય સ્પષ્ટિકરણ છે, પરંતુ ઉત્પત્તિના પ્રશ્ન આપણાથી સંપૂર્ણ રીતે ચર્ચા શકાય નહીં.

લગ્નની ગાંઠથી બધાવાનાં કારણ અનેક છે. માણસ એકલો દરેક ભાતની પ્રવૃત્તિ આદરી શકે નહીં અને આદર તો ધણાજ યોગ્ય પ્રગતિમાં અને કેટલીક ભાતની વૃત્તિ તો જીવનનાં આધાર માટે દરેકને ખાસ અગત્યની હોય, તો ત્યાં પણ જ્ઞાનની વહેંચણી થાય તો ઠીક અને સેવીય દર્શી પુરુષ સૂચન કર્યા નેકામ છે.

લગ્નનું ઉદ્ધેશ સ્વરૂપ શ્રીને મિત્ર તરીકે સ્વીકારવાનું છે. મનુષ્ય એકલો હોય તો, તે ધણા વખત સુખ અને દુઃખનો ભોગને ઉઠાવી શકતો નથી જેમકે માંદગી ઇલાદિ, અથવા સુખના વખતમાં, અર્થસાધ વિગેરે અને તે વખતે અને ખાસ કરીને દુઃખના વખતમાં, મિત્ર તરીકેનું કામ શ્રી સાર છે. દુઃખમાં શ્રીમાં મિત્ર કરતાં વધારે હું કાંઈ પણ જોવા જેવું હોય તેમ માનતો નથી. મિત્રને જેટલા પ્રેમથી, જેટલી સેવાથી અને જેટલા માનથી બોલાવીએ છીએ તેટલું જ પત્નીને આપવું ઘટે છે.

એ વાત સત્ય છે કે કુદરતજ આપણને વિપયનો ભોગ શિખવે છે. પરંતુ વિપયનો ભોગ, ફક્ત સુખ ભોગવવા માટે નહીં-પરંતુ જેમ કોઈ કીર્તિ અથવા અમર નામ મેળવવા માટે તરવારથી યુદ્ધમાં લડતો હોય અને પરમાર્થિક જોરસાથી સ્વાર્થ ભોગ આપતો હોય તેમ વિપય સેવનમાં, પ્રત્યક્ષ કરી અમર નામ કરવાની ઉચ્ચ લાલસા હોવી જોઈએ અને તે માટે વીર્યશીળ અને વ્યક્તિએ ઉચ્ચ સ્વાર્થ ભોગ આપવો ઘટે છે. વિપય સેવન, રતિસુખ સ્વાદ માટે નથી પરંતુ Landable ambition તૃપ્ત કરવા માટે છે અને તે માટેજ વીર્યનો ભોગ આપવો ઘટે છે.

હવે જે બદ વીર્યવાન ત્રીશ વર્ષનો યુવક હોયતો તેને બદ વીર્યવતી વીશ વર્ષની પત્ની સાથે, ત્રણ વખત ભોગ કરવાથી સંતાન પ્રાપ્તિ થાય છે. કારણકે આ ઉમ્મરે બંનેના વીર્ય ધણું વાકાવતારનું અને ઉમદા વાતાવરણનાં સોહીમાંથી નિકળેલાં હોય છે અને તેથી સંતાન પણ એક દિવ્ય વીર બચ્ચું જન્મ ધારણ કરે છે. એનું દૃષ્ટાન્ત સિંહ છે. નેક ફક્ત સિંહણ માથે વર્ષમાં એકજ વખત ભોગ ભોગવે છે અને સંતાનને જન્મ આપે છે.

વારંવાર શ્રી સેવનથી અને તે પણ અપરિચક્ષ દશામાં સેવવાથી, ધણો ભોગ આપવો પડે છે. કારણ કે એ વખતે ભોગ ભોગવનારી



એક પશુ ખોરાક ખાવાથી જોડેલી તાકાત મળી હોય તે હોમાઇ જાય છે. અનેક વ્યાધિઓ જોડીકે, ચાંદી, ધરમીઓ છતાંદિ ઉત્પન્ન થાય છે; ચાદશક્તિ અને મગજ શક્તિ ઘટે છે અને આયુષ્ય ઠુંકું થાય છે.

અહ્યયર્થના સેવન માટે સાત્ત્વિક અને શુદ્ધ ખોરાકની જરૂર છે. ઉચ્ચ સંસ્કાર તથા ક્રોધવશી, સ્ત્રીનો અસંગ, એકાન્તનો અભાવ, એ ખાસ સાધવા માટે પ્રયત્ન કરવો જોઇએ. ઉપરાંત વિષય વાસના ઉશ્કેરે એવા વાંચન, તથા શ્રાવ્ય અથવા દૃશ્ય નાટક અથવા સીનેમાનું સેવન પણ અયોગ્ય છે. માનસિક સંયમની ટેવ એ અહ્યયર્થનું હૃદય છે. યોગી ઉંઘ અને શારીરિક વ્યાયામ અને ખોરાક એ સાધક ઉપાયો છે.

અહ્યયર્થ સ્વરૂપ વર્ણન.

ઠુંકમાં હવે આપણા શાસ્ત્રોમાં અહ્યયર્થનું સ્વરૂપ શું આપ્યું છે તે જણાવીશ.

સ્મરણં કીર્તનં કેલિઃ પ્રેક્ષણં ગુહ્યમાયનમ્ ।

સંકલ્પોડપ્યવસાયથ ક્રિયાભિવૃત્તિરેવ ॥

एतन्मैयુનमष्टाङ्गं प्रवदन्ति मनीषिणः ।

વિપરીતે બહ્વચર્યમેતરિવાષ્ટલક્ષણમ્ ॥ એટલે

પૂર્વે વિષય સ્મરણ, વિષય સ્મૃતિ, (શ્રાવ્ય, અને વાચ્ય) વિષયવિદાર, વિષય પ્રેક્ષણ (ચિત્રમાં, નાટકમાં સીનેમામાં, અને સંસ્કારમાં), વિષયવાદ, વિષય વિચારો, વિષય જોવાના નિશ્ચયો, વિષયમાં પ્રવૃત્તિઓ, એ અષ્ટ પ્રકારનું મૈયુન છે અને એનાથી એ આઠમાંથી વિરત જનનું જનનું નામ અહ્યયર્થ છે. એટલે અહ્યયર્થ કંઈ બાહ્ય વસ્તુ નથી કે જે આપણી પાસે નથી અને મેળવવા જવાની છે પરંતુ આપણી પાસે એ શક્તિ રહેલી છે અને તેથી અહ્યયર્થની વ્યાખ્યા નકારમાં રાખેલી છે. એમાં ઉપામનો પણ સમાવેશ થાય છે અથવા આપણા મોઢા શારીરમાં પણ અહ્યયર્થ પાળનારને પાંચ અનિચ્છાર નહોતે એમ બતાવ્યું છે.

શરીરગત અથવા જનનનો દરજ્જો નિરીક્ષણ પૂર્વે તાતુસ્મરણવૃત્તેષ્વરસસ્વશરીરસંસ્કારત્યાગાઃ પથ ।

અને એ પાંચ અવિચાર સ્ત્રીમાં મોઢ ઉત્પન્ન કરે એવી કથાઓનું શ્રવણ, તેના સુંદરાંગો પાંગરું નિરીક્ષણ, પૂર્વે જોવાવેલા રતિ સુખનું સ્મરણ, વિષયપોષક રમતું સેવન, અને શરીરને મોઢથી શણગારનું એ પાંચ જનનની દિવામાંથી વિરત થવાથી અહ્યયર્થની ભાવના સ્થિર થાય છે (તત્સ્થવાયે ભાવનાઃ પથ પથ)

ઉપરોક્તિથી જણાશે કે આપણા શાસ્ત્રોમાં પણ અહ્યયર્થને ઘણું જ અગત્યનું પદ આપેલું છે. એ શારીરિક, માનસિક અને અધ્યાત્મિક ત્રણે આંખોનોની મોટી સિદ્ધિ માટે ખાસ અગત્યનું છે. વિદ્યાર્થીઓમાં ખાસ એની આવશ્યકતા હોવી જોઈએ કારણકે અહ્યયર્થના પ્રભાવથીજ, સ્મરણ શક્તિ સતેજ અને ચિરકાલી રહે છે, શુદ્ધિ મળવા અને છે અને લાંબા કાળ સુધી વાંચન અને જનન કરવાં છતાં મગજને થાક લાગતો નથી તેમજ મહેરા ઉપર તેજ અને શરીરમાં કાન્તિ વધે છે.

D. 13.

માનુકને એક પ્રશ્ન !

પાંથી શરણી પ્રેમથી ગાફિલ થેલો હું બન્યો ! માથક ! તારી ચારીમાં-બદનામ બાકી શું રહ્યો ? જાહેરલાલી છેડીને-સુરલિસ ! મ્હેળત તો કરી ! તુજ પરલ છન્તેઝારીમાં-મુશિગત બાકી શું રહી ? પ્રભુય પથે પરવરી પરિપૂર્ણ પાગલ તો બન્યો ! માથક ! મ્હેળત ખન્તે-ગિરમોલ બાકી શું રહ્યો ? આરામ સપજો આવરી ! દીલ દર્દ તો વ્હેણું સહી ! માથક ! મશિ હા માનવી વિવેક બૂઝ્યો શું કરી ? વચગીર લીધી દસ્તમાં તુજ પેરમાં મસ્તક ધરી ; માથક ! મગત તુજને સહી સદાદતે બાકી રહી ? કમીપણું કે દાખતી જો રત્ન હડય મ્હેલું નથી ; પરાક્ષ નર પરખાવે છે પથ નત્થા યાયે કેમ નહિ !

નેનુદોગી.



જનોઈવાળા જૈનોને દિવ્ય સંદેશા ।

પ્રિય બ્રાતૃગણ,

આપણા પ્રાચીન શાસ્ત્રોમાં યજોપવિત (જનોઈ) રાખવાનું કહેલું છે શાખેલા તરીકે વિશિષ્ટોવ્યુપવિતસ્ય વન્કરોતિ ન તત્કલમ ॥ બ્રાતૃય=ચેટલી તથા જનોઈ વગરનો પુરૂષ જે કંઈ ધર્મ કાર્ય કરે છે તે કર્યું ના કર્યું બગાળ છે. જે ઉપરથી જનોઈ અવસ્ય જોઈએ, એમ માલમ પડે છે, તે છતાં આપણા બધુએ અજ્ઞાનને વશ થઈ જનોઈ પોતે રાખતા નથી, તેમજ તેમના બાળકને પણ પહેરાવતા નથી. જેથી ધર્મબચ્ન રહી અનેક પાપકાર્યો કરી અધોલોહને પ્રાપ્ત થાય છે, માટે તેવાએને ઉપદેશ આપી સુધારી તે પ્રથા ચાલુ કરવાનું હિંદી અને સુખ્યત્વે નીચેની બાબતોનો વિચાર કરવા આપણી જનોઈ સંસ્કારિત પુત્રોની એક મીટીંગ બરની બેઠાએ.

૧ આપણા બધુએએ વર્તમાન કાળના શા કારણથી જનેઈ પહેલી છોડી દીધી છે ?

૨ વર્તમાન કાળમાં જૈન પુરોહો તેમજ તેમનાં સત્તાનોતું મન જૈન ધર્મનાં સુત્રો પર શા કારણથી ચોંટતું નથી ?

૩ આપણી સમાજ શા કારણથી મિથ્યા-લી દેવોને પૂજવા લાગી છે ?

૪ બ્યવહારિક ક્રિયાઓ જેવી કે મોળ સંસ્કાર, લાસ ક્રિયા, ગૃહારંભથી વાસ્તુ સુધીની ક્રિયાઓ વિગેરે શા કારણથી જૈન વિધિથી થતાં નથી ?

- ઉપરોક્ત પ્રશ્નજનો વિચાર કરી તેનું ખાતર કારણ જોઈ કાઢી તેને સુધારવા માટેજ એકલા થનારું છે. કારણ કે-આપણે આજ સુધી વાટ જોઈ જોઈ રહ્યા કે-આપણી રીતિ, જૈન પત્રો જૈન કાન્દરમો, સમાજો, મંડ્રો, પાકસાગાઓ અને આપણી પાછળ નાણાંના લોભથી લગ્ન ને

પત્ન્યા રહેનારા ભટ્ટારકો, કંઈક કરશે, પણ લખ્યા સિવાય રહેવાતું નથી, કે તેમાંથી કોઈએ પણ આ બાબત માટે કંઈ કર્યું હોય એમ જણાતું નથી, માટે હવે આપ મુલા વિના સ્વયં જવાતું નથી, એ કહેવત અનુસાર સંસ્કારિત યુવાન વર્ગજ બહાર આવી માતિના સ્વયં-સેવકો બની એણે કાર્ય કરી બતાવવું કે જે દેખી દેરકના મુખમાંથી ધન્ય ધન્ય સખ્ત સાંભળવામાં આવે. આ કામમાં નાણાંની જરૂર નથી, પણ મીઠા વાડીલાલ (એક સ્થાનકવાસી ધર્મબધુ) જેવા દંડ લાગણીરાળા સ્વયંસેવકોનીજ જરૂર છે, અને તેમાં મુખ્યત્વે જેણે જનોઈ ધારણ કરી છે, તેમણે પોતાનાં પ્રતોનો અમલ કરવા જતી બહાર પડતું જોઈએ-કે જે પ્રતો જનોઈ પહેરતી વખતે લેવાય છે કે જૈન ધર્મનો ફેલાવો કરવો, પોતે શુદ્ધ જની બીજને પ્રાયશ્ચિત્ત આપી શુદ્ધ કરવા, ઉદ્ધૃત આચાર પાળવો, જૈન ધર્મનાં સુત્રોપર શ્રદ્ધાન કરવું, વિગેરે પ્રતો લેવાય છે, તો તે પ્રતો અમલ કરવાનો પ્રમંગ આવી લાગ્યો છે, તો જૈન જનોઈવળા પુરૂષને જવા દેશે નહિ અને પોતાનાં પ્રત દાખલ કરશે નહિ, એમ સંપૂર્ણ આગા છે. જાવા કામમાં જાતિ-બોગનીજ જરૂર હોય છે ને તે પણ જનોઈ ન આપાય તેને ખરો જૈન સમજવો નહિ, પણ કોઈ ડોળ ધાણજ નજીવો. છેવટે દરેક બધું મિટિંગમા બાગ લેશે એમ આશા છે, તો હવે મિટિંગ ક્યાં ને ક્યાં મીતિએ બરની તે વિરે દરેક સંસ્કારિત બધું પોતાના વિચારો નીચેને ટેકાણે જણાવશે તો ઉપકાર થશે. બધાના ઉત્તર આવી ગયા પછી ચોક્કસ રથજો અને મીતિ નક્કી કરી આ પત્ર દ્વારા દરેકને જણાવવામાં આવશે તો દરેક જૈન બધું આવા પારમાર્થિક કાર્ય માટે એક પૈસાનું પોસ્ટ કાર્ડ વાપરશે એમ આ મંડળી આશા મળે છે. કૃત્યલમ્

લી૦ મંત્રી, કાણીસા મિત્રમંડળી,

સુ૦ કાણીસા (ખંભાત)

‘સામાજિક વંધારણ અને તેની મુશ્કેલી ફરજો.’

Society is indeed a contract. It is a partnership in all science, a partnership in all arts; a partnership in every virtue and in all perfection. *Burke.*

‘Caste is the great power and secret of Hinduism.’

M. K. Gandhi.

રાજકીય બાબતોમાં રાજ્ય જેમ પ્રજા સંરક્ષાએ પૂરું ધ્યાન આપે છે તે પ્રમાણે હરેક પ્રકારની સામાજિક-સાતિમંડળને લગતી બાબતો (સમાજની હરેક વ્યક્તિની માનસિક અને આત્મિક ઉત્તિ) પર લક્ષ આપવું એ હરેક સમાજની ફરજ છે.

રાજકીય તંત્ર (Political Government) અને સામાજિક તંત્ર (Social construction) બંધારણ અને મૂલ્યમ લગભગ એક સરખાંજ છે, ફક્ત બન્નેના વલણુ યાતો પ્રવૃત્તિઓમાંજ વશવત છે. રાજ્યતંત્ર પ્રજાનું હરેક પ્રકારના જનમાલને લગતા બાલ ઉપદ્રવોથી સંરક્ષણ કરે છે, ત્યારે સામાજિક તંત્ર માનસિક અને આત્મિક ઉત્તિ કરવા વરદ વધુ લક્ષ આપે છે. સદ્ગતિનો ધણો ખરો બાધાર સમાજનાજ ઉપર રહે છે. જેવું સમાજનું બધારણ અને તેના દાર્પકર્તવ્યો, તેના વિચાર-શીલ અને વર્તનવાલ તે સમાજના સંબંધીઓ અને છે. સમાજથી વિરક્ત ધણાજ યોગ પુરૂષ રહે છે. હરેક વ્યક્તિ યોગેવળે અંશે પણ કોઈને કોઈ સમાજ (Society)ને અનુસરે છે. આથી સામાજિક બધારણ જેમ જેમ ઉચ્ચતર હોય તેમ તેમ તેના સંબંધીઓ પણ ઉચ્ચ વિચારવાન અને સદ્ગુણશીલ હોય એ સ્વાભાવિક છે. સામાજિક અને રાજ્યકીય બધારણોમાં સામાજિક બધારણ (Social constitution) રાજ્યકીય બધારણ કરતાં પ્રથમ બધાયવું છે એમ કેટલાક પાશ્ચિમીય વિદ્વાનોનું માનવું છે અને તે વ્યાજબી લાગે છે. તેઓનું માનવું છે કે પ્રત્યેક કોઈ પહેલાં વાન જંગલી અવ-

સ્થામાં હતાં અને વિચાર અને વર્તનમાં સરલ સ્વભાવી હતાં. પોતાનો હવન નિર્વાહ આમતેમ રખાડી ફલ ફલાદિ વનસ્પતિ ખાઈ કરતાં હતાં, પહેરવાને માટે ઝાંટી છાલો શરીર નિંટવા યાતો શરીર પર જુદા જુદા પ્રકારના રંગો ચોપકતા હતા. તેઓને રહેવાનાં સ્થળ સ્થાયિ ન હતાં. હાલ આપણે જેમ ભરવાડ જાતિને પોતાનાં ઘેરાં બકરાં સાથે આમતેમ ફરતી જોઈએ છીએ તેના જેવી સ્થિતિમાં કાંઈક તેઓ હતાં. પછી કાળે ફરી એક પછી એક એમ ધણા મનુષ્યો એક બીજાના ઘાડા સંબંધમાં જેમ જેમ આવતા ગયા તેમ તેમ તેઓએ પોતાની સાથેનાં ઠોર વિગેરે સાથે એકજ સ્થળે સ્થાયિ રહેવાનું પ્રસન્ન થયું. તેમાં જેને ને ફાવે તે સ્થળે તે રહ્યા અને તે જગ્યા તેની પોતાની માલકીની થઈ પડી. આ પછી એકબીજાના સહવાસમાં રહેવાથી માંડેલાં હોવાને બદલે માટે Mutual transaction તેમને ને યોગ્ય લાગ્યા તેના નિયમે ધડયા. આ પ્રમાણે બધા એકઠા મળી ને એકજ સમૂહ થયો તેને સમાજ Society નામથી ઓળખવા લાગ્યા. જેમ જેમ એક બીજાના સહવાસમાં તેઓ રહતા ગયા તેમ તેમ સ્પર્ધા-ચાસા ચડતી અને અદેખાઈનાં મૂળ ફટવા લાગ્યાં અને આથી ફરી ‘જાલીયાના બે લાગ’ (Might is Right) ના મારે તેની તરવાર જેવી સ્થિતિ ત્યારે આવળી પડી અને જોગવર કમ-તાકાવતારતે નાનકે દેરાન કરવા લાગ્યા ત્યારે તેમાંનાં કેટલાકે એકઠા થઈ કોઈને આતી રીતે બલવાન પુરુષથી દેશનગતિ ન પડે એ



દરરોજના ઓછવિકાના વેપાર ધંધાનું, ધાર્મિક ક્રિયાઓનું અને જનમાલનું સંરક્ષણ થાય તે માટે તેમાંના એક યોગ્ય માણસને પસંદ કરી તેમના પર રાજ્ય કરવા 'રાજા' નીમ્નો. રાજાને મદદ કરવા રાજ્ય સભા વિગેરે મંડળો સ્થપાયાં અને આમ ધીમે ધીમે સામાજિક તેમજ રાજ્ય-કીય તંત્રી દિવસે દિવસે પોતાની ઢાળતો અને સંયોગો અનુસાર સુધારો વધારો કરતાં ગયાં અને ઘડાતાં ઘડાતાં હાલની સ્થિતિએ પહોંચ્યાં છે. આતી સાથે એક બીજાના વિચારોની પણ આપ લે થઈ અને આ વિચારોમાં દિન પ્રતિ-દિન બીજા નવીન વિચારોનો ઉમેરો થતો જવાથી તે સઘળા વિચાર અને મિલ્લતમજ્જ હમાંથી સાહિત્ય (Literature) અને તત્ત્વજ્ઞાન (Philosophy) શાસ્ત્રો જન્મ પામ્યાં. પશ્ચિમના લોકો તત્ત્વજ્ઞાન અને ધર્મ એમ બે જુદા વિષયો માને છે જ્યારે આપણે ભારતવાસીઓ પ્રથમથીજ તે બન્નેને એક વિષય તરીકે ગણીએ છીએ.

પહેલાંના વખતમાં હિંદુસ્તાનમાં સામાજિક ગંધારણે હિંદુઓનું ઘણું ધ્યાન ખેંચ્યું હતું અને તેને માટે મનુસ્મૃતિ, યાજ્ઞવલ્કયસ્મૃતિ, ગાનવ-ધર્મ સૂત્રો વિગેરે મોટા મોટા ગ્રંથો રચાયા છે.

હિંદુ ધર્મની કર્મ કાંડ (ક્રિયા ભાગ) ની ગાજતો સ્મૃતિમાંથી મળી આવે છે અને તે બાજનામાં વર્ણશ્રમે જ્ઞાતિ ભેદ સુખ્ય ભાગ બન્યો છે. હિંદુ સંસ્કારના નામથી હાલ આપણે જોને જોળખીએ છીએ તે હિંદુ સંસ્કારના ચાર વર્ણના ભાગ પડ્યા. (૧) અહરણ (૨) ક્ષત્રિય (૩) વૈશ્ય (૪) શુદ્ર. આમાંના પહેલા ત્રણ દિગ્ધ (એ જન્મી) નામની જોળખના હતાં. આ ચારમાં બ્રાહ્મણ જાતિને અતિ ઉચ્ચ પદ આપવામાં આવ્યું અને તેની સાથે કેટલીક બાબતોમાં તેમને ખાસ હક્કો (Special privileges) પણ આપવામાં આવ્યા. વર્ણશ્રમમાં રખાવલા મિત્રમાવતું પરિણામ આપણે જો આવ્યું કે તે વર્ણશ્રમના મિત્ર બનેને નક્કી કરના છ. સ. પૂર્વે ૪ થી

સદીમાં મહાત્મા ઝોતમ બુદ્ધ આગળ પડ્યા અને તેમના ઉપદેશ વચનોમાં કસેસના મુજરૂપ આવા મિત્ર મિત્ર વાડાઓનો નાશ કરવા બોધ કર્યો, છતાંએ તે વર્ણશ્રમ ભેદો આજ-સુધી જળવાઈ રહ્યા છે. આ જુદા જુદા વર્ણોની એક એક મમાજ યા જ્ઞાતિ (Society) એમ સુખ્ય ચાર સમાન વિભાગ પડ્યા અને વર્ણ શંકરને લીધે અનુવેશન અને પ્રતિવેશન (intermarriages between higher and lower castes) પદ્ધતિ અનુસાર બીજા અનેક હલકા પ્રકારના જ્ઞાતિભેદ પડ્યા, પણ આ દરેક જ્ઞાતિને લગતા અસુક નિયમો હતા જે નિયમો કાજે કની ફરજિયાત અને રીવાજ રૂપે થઈ પડ્યા તેની ઉડી જડો હતી પણ હિંદુસ્તાનમાં સર્વે સ્થળે જોવામાં આવે છે, આ નિયમોમાં મહાભારત જેનાં શાસ્ત્ર પણ દેશ, કાલ, ભવાનુસાર સુધારો વધારો કરવા ઉપદેશો છે, પણ સ્વાર્થ મા અગાન તેમ કરતાં અટકાવે છે.

આ વર્ણશ્રમના નિયમો આપણે જોનો પણ પાળીએ છીએ. અને 'વટલાયું' 'અભણું' કહી અત્યંત કોપી બની ગાર ગાઉ દૂર ચાલ્યા જઈએ છીએ બ્રાહ્મણને (૧) તે ગમે તેટલો મદો, દાડડીનો કે માનપારો હો પણ તેને) આપણે પણ ઉચ્ચ ગણીએ છીએ અને ખુદશી રીતે તેનું ગંધેવું જાળીએ છીએ, અને તેના વામજાના તેનાજ માટલાનું પાણી પીવામાં મિત્રકૃત બાધ મચાના નથી. આના પ્રકારની ગાલક્રિયાઓએ હાલ આપણું એટલું બધું ધ્યાન ખેંચ્યું છે કે દિવાકાંડ (ગાંધીકાંડ) અંધ શ્રદ્ધાથી પણ પામવો તેજ મે સડા છે એમ મનાયું છે. આ બધું અગાનજ જણાયું છે, જેનાથી આભડકેટ રિગે બીજાનું છે તે જન્મ માત્રથી કૃત્ય નીચ હોય તેનાથી નથી, પણ તે માંઆહાની, ફરિયારી યા મલોન હોય કે જોને જોતાં કે જે મંબોધી વિચાર કરતે પણ આપુ-ણને હોય ફૂગેલા અને મલોન વિચાર થઈ આવે તે છે. બધે પછી તે સ્વર્ગતામી દેવ



હો કે ઉચ્ચમાં ઉચ્ચ સાક્ષ્ય હો. ખાલી અધિકારને ન માનતાં કાર્યનું કારણ જ્યાં શક્ય છે ત્યાં તે અવશ્ય જાણવું જ નોંધ્યું.

આજકાલ દિંદમાં આ મુખ્ય ચાર વર્ણોમાં પણ ખીજ અનેક વિશેષ બેદો પડ્યા છે અને પડેતા જાય છે તેનું મુખ્ય કારણ સ્વાયં અને કુસંપ છે અને સમાજ યા યાનિ એટલે શું તેના અર્થ સ્પષ્ટ સમજાયો નથી. દાખલા તરીકે જૈન જાતિને લઈએ તો તેના મુખ્ય ત્રણ બેદ-દિગંબર, સ્વેતાંબર અને સ્થાનકવાસી. તેમાં દિગંબરમાં હુમડ, મેવાડા, તસિંદપુરા, પંચમ, ચતુર્થ દેવ્યાદિ અનેક બેદો છે. ખીજ એ બેદોમાં પણ આવીજ શેષનીય સ્થિતિ છે. આ વિભાગો કેટલેક સ્થળે તો એટલા નાના બન્યા છે કે તે વિભાગની ચૂક સંખ્યા ગણીએ તો બાગ્યેજ વીસ પચીસ પણ થાય અને જો તેટલી થાય તો તે કક્ષા એ ત્રણ કુટુંબનીજ એટલે કે શાસ્ત્રોક્ત વચનોનું ઉલ્લંઘન કરી નજીકની સગાઈમાં લગ્ન કરવા વખત આવે તેવી છે. ધર્મ એકજ હોવા છતાં, યાત્રિ બહુઓની સંખ્યા નાની હોવા છતાં, ખાવા પીવાનો પણ જોવાર હોવા છતાં, એક સાથે રહેવા છતાં, આવો જિજ્ઞાસુ જેવામાં આવે એ અતિ શોચનીય છે. આખી દુનિયામાં દિંદજ એવા દેશ છે કે જ્યાં ધર્મના અનેક ફાંટાઓ અને મિત્ર મિત્ર યાત્રિઓ અસલમી આવી આવે છે.

આવાં યાત્રિ બંધારણો (Caste System) એક દષ્ટિએ જોતાં દિંદસ્તાનને પૂર્ણજ આસીર્વાદ રૂપ છે. જ્યાં તેવીશ કરોડ જોટલી બહોળી વસ્તી છે, તેવા વિશાલ પ્રદેશમાં તેના નાના નાના યોગ્ય વિભાગ પાડી તે દરેક વિભાગ પર દેખરેખ રાખવા એક ઉપરી નીચે દેખ તે કામ થઈ શકેલું થઈ પડે, એ દાલની ખીટીસ રાજ્યબંધારણની પદ્ધતિથી સત્વ જણાય છે.

આજ પ્રમાણે ધર્મના પાયા પર પડેલા યાત્રિ વિભાગો પણ દિંદસ્તાન જરા બહોળા પ્રદેશમાં નાનાં-નાનાં સંસ્થાનો સમાન હોઈ તે સાથે સંબંધ ધરાવતા વર્ગને તે આસીર્વાદ રૂપ હોય એ સ્વાભાવિક છે, પણ તે વિભાગો ત્યારેજ આસીર્વાદ રૂપ કહેવાય કે જ્યારે તે પક્ષાપક્ષીનું, એક ખીજ બાગ વચ્ચે રાગ દેખ કરવાનું જરાયે કારણ થઈ ન પડે, પણ પોતે પોતાના જગ્યાનું મધ્યસ્થપણે સત્તની ઉત્તિ કરવા ખાતરજ જિનસ્વાયંથી કાર્ય કરે. કુતરાં ઉરકરી માંહોમાંંહોની લડાઈમાં બન્ને પક્ષમાં કોણ વિજય મેળવે છે તે ટગર ટગર જોવા કરી આનંદ માનવો તે અધોગતિને પમાડનાર દલકા પ્રકારનો આનંદ છે. આવા પ્રકારનાં પક્ષાપક્ષી યાત્રિધર્મના ઉપદેશકો ન કરે અને પોતાના આત્મચીરને અને યાનને સન્માર્ગે દોરી પોતાના યાત્રિ બહુઓની મધ્યસ્થપણે આત્મોત્તિ કરવા પ્રયત્ન કરી આનંદ માને તો તે મહર્ષ આદરણીય છે અને આમ થાય તોજ રાજ્યદારી અને સામાજિક બાબતો એક ખીજને અડચણ કર્યા શિવાય પોતપોતાના રાહદારી માર્ગે ચાલ્યા જાય, દરેક બાગદાંચો સત્ત્રેમ સાંકડથી એક ખીજ સાથે જોડાય, સર્વાત્મબંધુભાવ સર્વેત્ર વર્તે અને રૂપ વધી આર્ચાવર્તની પુનઃ જોડાઈલાલી અસ્તિત્વમાં આવવાને કોઈ શંકા રહે નહિ.

આ દષ્ટિએ-આ તરફ-મધ્યસ્થ દષ્ટિએ-યાત્રિ વિભાગો દિંદને આસીર્વાદ રૂપ છે, પણ ધર્મના ઝગડા અને રાગદેપ કરવાનાં જો કાંઈનો થાય તો તે તિસ્સારને પાત્ર છે. આવી મધ્યસ્થ દષ્ટિએ વર્તવા છતાં કોઈ વાંધો ઉઠાવે કે 'યાત્રિ બંધનો રાજ્યદારી બાબતોમાં અડચણ રૂપ છે' તો તે વાંધો ઉઠાવનારને આપણે સ્પષ્ટ સમજાવી 'ચીજી' કે આખી પ્રકારના યાત્રિ સમાજો રાજ્યદારી ચલવચને કોઈ પણ પ્રકારે વિચારતાં નથી એટલુંજ નહિ પણ હજી



રીતે તે તેના હેતુઓ સત્વરે પાર પાડવા સા-
હાય કરે છે. રાજ્યદારી બાબતો સામાજિક
બાબતોના પ્રતિપક્ષી નથી. -તે બને બાબતો
એક બીજાથી તદ્દન ભિન્ન નથી. બને પક્ષે
એક બીજા સાથે હળી મળી હાથમાં હાથ મે-
ળવી કામ કરવાનું છે. બન્ને પક્ષે એક બીજા
સાથેના સંબંધ સમજવો જોઈએ કે જોયી
નવા સુધારક સમાજને અને ધર્મ સમાજને ફૂટતા
અટકે.

ગાતિ સમાજ પોતાના બંધુઓ પ્રતિ જે
વિશે દુરબો અદા કરવાની છે તે બાબતો તીવ્રે
પ્રમાણે છે. -

(૧) લગ્ન (૨) ધર્મ (૩) કેળવણી (૪)
આર્થિક સ્થિતિ.

(૧) લગ્ન-લગ્ન વિશે જે કરવાનું છે તે આ
પ્રમાણે છે.

(અ) બાલવિવાહ યતા અટકાવવા.

(બ) વર કન્યાની યોગ્ય ઉંમર પર
ધ્યાન આપી કન્યોડાં થતાં દૂર કરવા.

(ક) કન્યાવિક્રયને પ્રતિબંધ કરવો.

આમાંની પહેલી બે બાબતો પર જો
પૂરતું લક્ષ આપવામાં આવે તો બાલ-
વિધવા થવાનો સંભવ ઘણોજ યોડો
રહે એટલુંજ નહિ પણ વર અને કન્યા
બંને પ્રાપ્ત ઉંમરે પહોંચતા સુધીમાં કાંઈપણ
પ્રકારની અડચણ સિવાય વર દુનિયાદારીનું
વ્યવહારિક ગાન અને કન્યા ગૃહકાર્યનું
ગાન સંપાદન કરવા લાયક બને અને બંને
લગ્ન પછી સુખી બને. લગ્ન મોડું કરવું
(યોગ્ય ઉંમર) એટલુંજ નહિ પણ વિવાહ
પણ મોડોજ થવો જોઈએ કારણકે વિવાહ
થાય ત્યારથીજ બન્નેની દૃષ્ટિમાં રિકાર
થવા પામે છે, મન વિર્મલ રહે છે અને પોતાનું
ધારણું કાંઈ જોઈએ તેવું ફરજેકર્મ નીવડતું
નથી. શરીરને હાનિ પહોંચાવતો અને કાર્યમાં
ખર્ચે પહોંચાડતો વિવાહજ બસ છે. વિવાહ
મવાની આગળથીજ તેઓની જીવન વૃત્તિમાં

ફેરફાર થવા મોડે છે અને લગ્ન થયે (બાલ
વયે) તેની માઠી સ્થિતિની કીટીમાં વધારો
થાય છે. બાલવિવાહનું એક માડું પરિણામ
એ છે કે ઘણા અભ્યાસ કરતાં હોંશીયાર વિ-
દ્યાર્થીઓને પણ તેમના અભ્યાસ છોડી દેવો
પડે છે.

કન્યાવિક્રય સંબંધીની વાત હાલ ઘણાનું
ગાન ખેંચી રહી છે પણ તે વાત કન્યાવિક્રય
કરનારાના કાને પહેલી પહોંચે અને તેમના
હૃદયની છૂપી ભાવવૃત્તિની-સ્વાર્થની-ફૂંચોને
પહેલો નાશ કરવામાં આવે તોજ તે માટે
કરેલા મર્વ પ્રયત્નો સફળ છે.

કન્યા વિક્રયથી થતી હાનિ: -

(૧) કન્યોડાં-જેવાંકે; વૃદ્ધ અને બાલકુમા-
રિકા, આથી બાલ વિધવાઓની વૃદ્ધિ થાય છે.

(૨) યોગ્ય જામરવાળા સાથે લગ્ન થાય
તોપણ બન્ને વચ્ચે સત્રેમની લાગણી રહેવા
યોડો સંભવ છે.

(૩) કન્યાવિક્રયને લીધે કન્યાને ગમે તેવા
કૂલમાં, અપંગ સાથે કાંઈ ગાતિમાં અને દૂર
દેશમાં અયોગ્ય વર સાથે પરણાવવામાં આવે
છે. આથી કન્યાને દુઃખ પડે છે અને સત્રેમની
લાગણી રહેવા યોડો સંભવ છે.

(૪) ગમેતેવો લાયક વર હોય છતાં તે
કન્યાવિક્રયના લોભીની વૃત્તિને નહિ સતોષી
ચક્રવાથી પરણી ચક્રતો નથી, એટલે કે ગાતિના
મધ્યમ તેમજ ગરીબ સ્થિતિના લાયક વર પણ
કુવારા રહે છે. કન્યાવિક્રયની તેમજ વરની
પહેરામણોની (Dowry) હદ બહારની રીત
પણ નેટવીજ નિંદનીય છે. પહેરામણોને લીધે
ખેદકારક બનાવો હમણાં બે વર્ષપરજ બંગાળ-
માં બન્યા હતા.

(૨) ધર્મ-ગાતિ મગાજની બીજી અગત્યની
બાબત ધર્મની દેખરેખ રાખવાની છે. ધર્મ
એટલે વ્યક્તિએ કરવું જોઈએ તે સંકાર્ય-કરજ
(Duty) જે મતકાર્યથી મનુષ્ય જડ ચેતનને
સ્પષ્ટપણે તદ્દાવત સમજાવે સચિતા સમસ્ત પદાર્થો.



તું યથાર્થ-સ્વરૂપ સમગ્ર જન્મ મરણના દુઃખથી સદાને માટે મુક્ત થાય. સદ્ધર્મનો દેશાવે કરવા અને તેના ગુણ તરવોને યથાર્થ સમજાવવા સદ્ગુરુઓની ખાસ જરૂર છે. અને આથી કરી શાંતિ સમાજ સદુપદેશકોની સંખ્યા વધારવા અને સદ્ધર્મનાં બીજ ઉડા રોપવા બનતો પ્રયાસ કરવો જોઈએ.

પણ સદ્ગુરુ કોને કહેવો એ એક મોટા પ્રશ્ન છે. છતાં તેનાં કેટલાંક બાહ્ય ચિન્હોથી તેને ઓળખી શકીએ. જેવાંકે:—નીતિવાન, સ્વાર્થત્યાગી, આધ્યાત્મિક તરવોનું ઉચ્ચ જ્ઞાન ધરાવનાર, વિચારવાન, નમ્રસ્વભાવી કે જેનાં મીઠાં વચનો સાંભળવાથી હૃદયને શાંતિ મળે. જ્યાં સુધી સદ્ગુરુઓ મળતા નથી ત્યાં સુધી સન્માર્ગનું જ્ઞાન થતું નથી, સન્માર્ગ રૂપરૂપણે સમજાતો નથી અને સત્ય સંયુત જાય છે. જ્યાં સુધી રમણ ત્યાગી પુરુષો સાયને તારવાનેજ આવર (નહિ કે પોતાનું નામ જાહેર કરવા માટે પ્રકાશથી વધારવા) બહાર પડશે નહિ આ સુધી સદ્ધર્મનો દેશાવે થશે નહિ; અને

જન આપવા પ્રયત્ન કરવા જોઈએ. સદ્ધર્મની લાગણીઓ વંશપરંપરા ચાલી આવતી નથી માટે ધર્મ ગુરુઓ ખરું વંશપરંપરા ચાલ્યા આવવા ન જોઈએ, અને જો વંશપરંપરાનો શિવાજ કાયમ રાખવો હોય તો તે પદવીને યોગ્ય ગુણો તે પદવીએ આવનાર વ્યક્તિએ અવશ્ય ગ્રહણ કર્યા હોવા જોઈએ. આવી ઉચ્ચ પદવીએ આવનાર વ્યક્તિ તે પદવીને લાયક ગુણોથી સુઠત છે કે કેમ આવો વિચાર કરવામાં પણ જે દોષ ગણે છે તેવા બહીષ્ણ અણુસમજી જોને તેને સદ્ગુરુ તરીકે પૂજી ધર્મનો જ નાશ કરવા કમર કરે છે. બહેતર કે દુરાચરણી ગુરુઓ કરતાં પોતેજ પોતાના ગુરુ થઈ બેસવું જે તથો નથી તે વારવાનો શું છે? જેની વર્તણૂક વિશે શંકા જાય, જે અનીતિમાન હોય અને તે સાક્ષાત્ સાળીત થયું હોય, ધર્મજ્ઞાન માં અધુરો હોય તેવો સર્વથી વક્તા તરીકે ન પૂજાય તે માટે શાંતિ સમાજે બનતી કાશીશ કરવી. હાલમાં દિગંબર જૈન કોમમાં ધર્મોપદેશકોની સંખ્યા ઘણીજ ઓછી છે અને તેનું પરીણામ એ આવ્યું છે કે દક્ષિણ હિંદુસ્તાનમાં ઘણા જૈન ધર્મીઓ પરધર્મીઓ બની ગયા છે અને અન્ય મતાવલંબીઓ તરફથી ઘણી હેરાનગતિને પડેલા છે. તે શિવાય ગુજરાત તરફ જોઈએ તો ત્યાં પણ જોઈએ તેવો ધર્મનો ગુરુસો નથી એટલુંજ નહિ પણ ધર્મનાં મૂળ તરવોનું પણ ઘણાને જ્ઞાન પણ નથી; ફક્ત સમજે અણુસમજે ચોડી ઘણી બાલકિયાઓ કરવામાં આવે છે.

દી. વગી જુના વિચારવાળા ધરડીયાઓ અને ૧૫ જુના કેળવણી જુવાન વર્ગ વચ્ચે જે ધર્મ સમજાવી મનમેદ જોવામાં આવે છે, તેનું કારણ તે જ્ઞાન સંબોધિને યથાર્થ મેમજ સકયા હોય દક્ષિણ સદુપદેશકોની ખામી છે. હાલનાં જમાનો નીકિયાદનો છે. જે વાક્ય સાધારણ ભુદિ અને દૈનિક અનુભવ વિરહ ન થાય તેજ સત્ય જ્ઞાનવાર્ધો આવે છે. યાદિમાત્ર તરવેવાઓનાં ઓળખાં બહારી તરફકિતનોજ બદલા ઉપયોગ

કર્ષો હોય છે. આથી જાતિ સમાજે પૂર્વ અને પશ્ચિમના બન્ને દેશોના તત્ત્વજ્ઞાનનું સાચું જ્ઞાન શ્રાવતા હોય તેવા ઉપદેશકો મેળવવા અને તેમને ઉત્તેજન આપવા પ્રયત્ન કરવો, આને માટે સ્થાનિક પાઠશાળાઓનું સંતોષકારક કામ કરે શકે નથી.

ધર્મને પ્રચાર કરવા જ્યાં જ્યાં જુના વખતના પુસ્તકના બંડાર હોય તે ખોલી તેમાંના પુસ્તકોને ધણી સંભાળથી જળણી રાખી છપાવવા બાંધજી કેટલાક આવા બંડારને ઉઘાડવા હતા નથી અને તેમાંનાં પુસ્તકોને ઉઘાડીને ખવરાવી ધર્મના દીપ્તિ અથોના નાશ કરે છે. આ પુસ્તકોના પ્રસિદ્ધતાઓએ પ્રતાવનારા અંધની ઐતિહાસિક યોગજાણ આપવા વધુ લાજ આપવું. આ પ્રમાણે ધર્મ પુસ્તકો સંબંધની શોધઓળ કરવાની પણ સમાજની જ જવાબદારી છે.

(૩) કેળવણીનાતિની ઉન્નતિનો આધાર કેળવણી ઉપર છે. ગમે તે પ્રકારની (સર્વ) કેળવણી આપાય પણ હરેક સ્તરે તેનું દષ્ટિ બિંદુ તો એક જ હોય છે. તે દષ્ટિ બિંદુ માનસિક શક્તિની ખીલવણી છે. માનસિક ખીલવણી સાધાધોધી અતોપકારક રીતે થાય તો આધ્યાત્મિક ઉન્નતિ પણ આપોઆપ જ થાય, એ દેખીતું છે. કેળવણી આપવાના મુખ્ય હેતુઓ રૂઝ અને પર કલ્યાણ છે. અને પર કલ્યાણમાં મુખ્ય સ્વધર્મ શીવા અને દેશ સેવા છે. આ સેવાનો જુરમો રોગગ્રસ્ત પ્રસરાવવા જાતિ સમાજે બનતા પગલા લેવાં જોઈએ. પૈસા કમ મેળવવો એટલું જ નહીં પણ પોતાની આવજીઆનું ચતી હરેક પ્રકારની ચળવળથી બચુ વાકફ થવું જોઈએ. કેળવણી ઉપર સદ્વર્તનનો પણ આધાર રહે છે. વિદ્યુસ્તાનમાં કેળવણવા વર્ષનું પ્રમાણ બીજા દેશો સાથે સરખાતાં ધણું જોડું ગણવામાં આવે છે.

કેટલાકનું માનવું છે કે આધુનિક કેળવણી લેવાથી વિદ્યાર્થીઓ સ્વ-અંદી બને છે, ઉદ્ભવ અને છે અને નાના મોટાની માન મર્યાદા રાખતા નથી. ગમે આ વાત બ્યાજળી છે એમ કહી શકાય તો આમાં હોય કેનો કહાડી ચકાવ ? અસમન કષ્ટક અશે બીજા કેળવાય સામેનો. જો બધા કેળવાયલા હોય તો એક બીજાને પોતાના વિશે આગમન રાખવાનો કે ઉદ્ભવ થવાનો પ્રમંથ પણ આવે નહીં. આવા પ્રમંથ કરી ઉભો ન થવા પામે માટે સદ્વર્તન

નવાતા, માદા અને ઉચ્ચ વિચારવાલા નિશાળ અને કોલેજોમાં શિક્ષકો રોકવા જોઈએ.

વળી કેટલાકનું માનવું છે કે બધી બનતા માણસો કેળવણી લેશે તો હલકા પ્રકારનો ધર્મો પછી કાણુ કરશે, તેઓ પોતાનો ધર્મો છોડી દેશે અને તેઓ પોતે બીજાની તાબેદારી નહિ ઉઠાવે. આ પ્રકારનો ખુશાશો જો બધા કેળવાઈ જાય તો તરત જ થાય તેમ છે. કારણ કે જ્યારે બધાએ કેળવાયલા હશે ત્યારે કેળવણી સંબંધી પ્રશ્ન ન ઉઠતાં આર્થિક-પૈસા કમાવવા બાજતનો પ્રશ્ન ઉભો થશે અને જ્યારે પૈસા કમાવાનો સવાલ આગળ આવશે ત્યારે જો વસ્તુઓ પેદા કરવાને યોગ્ય માણસો કામે લાગ્યા હશે અને જો વસ્તુઓની ધણી મોટી માગણી હશે તે વસ્તુઓ પેદા કરવાને કેળવાયલા માણસો પણ કામે લાગશે એ સ્વાભાવિક છે કારણકે તે ધર્મો કરવાથી વધારે કમાવાશે. બધે પછી ગમે તે પ્રકારનો તે ધર્મો હોય. આટલું જ નહિ પણ આમ થતાં હરિશ્ચંદ્રનો જુરમો વધશે અને તેથી કરી અમુક ધર્મોના આસ પ્રવીણ (Spoonfed) થવાના પ્રયત્ન કરવામાં આવશે. આની રીતેધીમે ધીમે દેશની આબાદી થશે.

કેટલાક જે પશ્ચિમની વિદ્યાનો હોય કહાડે છે કે તે વિદ્યા ઉદ્ભવ અને ધર્મશ્રદ્ધા કરે છે તેઓએ તેનો દોષ કહાડીને જ અટકવાનું નથી કારણકે તેની અદર કેટલાક ગુણો પણ છે કે જે ગુણો લીધે તેઓ હાલ આપણા પર સામ્રાજ્ય બોગને છે; તે વિદ્યાર્થીઓ જે જે સારજીત હોય તે તે અદલ્ય કરી નેની સાથે સાથે આપણી પૂર્વની વિદ્યાનો પણ સંતોષકારક અભ્યાસ કરવો જોઈએ.

પણ આ વિદ્યા સંપાદન કરવા પૂરતાં સાધનો હોવા જોઈએ. જો કે આ સાધનોમાં બહુનંદર વિદ્યાર્થીની પોતાની બુદ્ધિ મુખ્ય સાધન છે છતાં એ તે સાધન બંધારનાં બીજાં સાધનો વિના પોતાનું કામ પાર પાડી શકતું નથી, માટે આ બાજ સાધનો પૂરા પાડી આપવા જાતિ અંદોજો બનતી મદદ કરવી. કારણકે વર વડોને પરજીવવા અને જમણવારોની બાજતોમાં જ બોજગડ કપથી તેમની ફરજો પૂરી થતી નથી.

ઉપર જણાવ્યું તેમ વિદ્યુસ્તાન બીજા દેશો કરતાં કેળવણીમાં જડુ પડતો છે અને તેનાં કારણો ટુંકમાં નીચે મુજબ છે.



૧. જન સમાજની કેળવણીની જરૂરીયાતના સંબંધમાં પૂરતી ખામી.

૨. જુના વિચારવાલા શોકોની માન્યતા કે:—પ્રાચીન સમયની પૂર્વની વિદ્યાજ્ઞ સર્વાત્મ છે અને હાલની કેળવણીથી વિદ્યાર્થીઓ રવ-ચંદી અને ધર્મમદ થાય છે પણ બંને વિદ્યા સંપાદન કરવાથી ફાયદો થાય છે તેવી સમજની ખામી.

૩. હાલની કેળવણી લઘુ શોકો ઘણે ભાગે સારા તાબેદાર સરકારી નોકરો અને છે બરા પણ તેથી નોંધએ તેવો આર્થિક લાભ થતો નથી.

૪. છેલ્લાં મસો ત્રણસો વર્ષે દુનિયાન પરદેશીય હુમલાઓથી હિંદમાં રહેલી અસાનિત.

હવે આવી મુશ્કેલીઓને દૂર કરી કેળવણીને ઉત્તેજન આપાય તો વધારે સાફ. અમુક પ્રકારની પદ્ધતિ ખોટી હોય તેણે તે વસ્તુ (કેળવણી) ની ખોટી છે એમ કહેવું એ ઘણું બૂઝભૂં છે. પદ્ધતિમાં ખામી નજીકથી હોય તો નવી યોગ્ય પદ્ધતિ અનુસાર કામ કરો. કેળવણીને ઉત્તેજન આપવા અને વિદ્યાર્થીઓને માંહે માંહે હરીફાઈના જુરસો ઉત્પન્ન કરવા માટે સમાજે એકત્ર પૈસાનો ભંડોળ કરી તેમાંથી યોગ્ય જણાય તેવા લાયક અને ગરીબ વિદ્યાર્થીઓને સ્કોલરશીપ (છાત્રવૃત્તિ) આપવી નોંધએ. હાલના વખતને લગતા કે.ઈ.પી.યુ જન સમાજે ઉપયોગી વિષય પર હરીફાઈના છતાં નિષેધ લખવા નોંધએ. કેળવણીને ઉત્તેજન આપવા ખોટાં જ હાલસોની પણ ઘણી જરૂર છે. તેવી ખોટાં જો રથને રથને રવાની રવ. દાનવીર શોક. મલ્લિકાર્જુન દોરાચંદ ને. પી. એ જેન કોમને અત્યંત આશ્રી કરી છે. જન કોમ, તેમાં વિશેષ કરી દિગંબર દેવન કોમ, કેળવણીના સંબંધમાં ધણીજ પગલ છે. અને આથીજ હાલની ચળવળમાં નોંધએ તેટલો ભાગ એ કોમ લઈ ચાલી નથી. જેમ છોકરાઓને કેળવવાની જરૂર છે તેમ છોકરીઓને પણ તેમને યોગ્ય કેળવણી આપી કેળવવાની જરૂર છે અને તેને માટે આવિકાગ્રમ જેવી સરેરાશને સ્થાપવાની તેમજ તેને ઉત્તેજન આપવાની ખામી જરૂર છે.

(૪) આર્થિક સ્થિતિ.—જ્યાં સુધી આર્થિક સ્થિતિ સારી ન હોય ત્યાં સુધી ઉપરોક્ત કંઈ પણ શક્ય રહે નહિ. માટે માતિની વર્તમાન આર્થિક સ્થિતિ કેવી છે અને બે તે

બરાબર ન હોય તો તેમ હોવાનું શું કારણ છે તે માતિ મંડળે વપાસવું નોંધએ. પોતાના માતિ અંધુઓ કંગાલ અવસ્થામાં હોય અને આપણે તવંગર હોઈ મોગમગમો ભોગવીએ અને તેમની મિશ્કલ દરકાર ન કરીએ તો આપણે તેમના તરફ દેહકુલ કંઈ રાખી નિર્દયતાથી વર્તીએ છીએ એમ કહેવાને કોઈ વાંધો નથી. તેમને કોઈ પણ રીતે સારા ધંધામાં ઠોકણે પાડવા એ માતિના પૈસાદાર વર્ગની ફરજ છે. તેમને કસાહુબર અને વહેપારી માન આપી આર્થિક સ્થિતિ સારી કરવા ધ્યાન આપવું.

માતિ મંડળ—ઉપર કહેલી બધી બાબતો માતિ સમાજે વિશેષ કરી ધ્યાનમાં લેવાની છે. આ બાબતો ધ્યાનમાં લેવાં અને કામ સુલભ થાય તે માટે સવળા માતિ અંધુઓમાંથી અમુક અનુભવી અને વિદ્વાન માણસો અમુક સ્વેચ્છા કામ કરવા ચૂંટી કહાડવા. આ ચૂંટી કહાડાયલાઓ સવળા માતિ અંધુઓના એકત્ર પ્રતિનિધિઓ છે. તે પ્રતિનિધિઓએ જેમ બને તેમ સ્વાર્થ ત્યાજ નિષ્કાપાતે માતિહિતાર્થે કાંઈ કરવા પ્રતિજ્ઞા લેવી નોંધએ. આ પ્રતિનિધિ મંડળે—યા માતિ મંડળે યા માતિ પંચે દર વર્ષે યા તો અમુકલ ન હોય તો દર ત્રીજે વર્ષે પણ એકત્ર થઈ તેમના આગળ રજુ કરોયલી બાબતોપર વિચાર કરવો. અને તે અમલમાં મૂકવા દરેક પ્રકારનાં હડાપણુઓ પગલાં લેવો કે જેથી સંપ કરતાં કુસંપ અને એકચંદા કરતાં અનેકમના ન થાય અને તડ ન પડે

આ પ્રકારે દરેક માતિ પોતપોતાની ફરજ વિસ્તૃત (ખડોલા) અર્થમાં સમજે અને પૂર જુરસામાં પોતાનું કાર્ય ઉપાડી લે તો બારવપંચના હેતુમાં ફરજો પૂરી ટુંક સમયમાં હિંદ ઉપર મધ્યાદ્ય કાલેના અગદગતો પ્રતાપી સૂર્ય પુનઃ પોતાનું સામાન્ય વર્તારી રહે. અગિનાથી અરિદવ તું, એક અખંડ અમાન, અજર અમર અજુન-મનું, બપ બંજન બગવાન, એવિ વ્યાધિ ઉપાધિને, દરેક તંત તોશન, કદાચુ કદાચુ કરો, બપ બંજન બગવાન, નીત પ્રીતિ, નશ્વના, બડી અનિનું બાન, અર્પ પ્રવન આપરો, બપ બંજન બગવાન, હર આગમ એટીપણું દર અપ ને અગાન, હર મપણા બારવ તણુ, બપ બંજન બગવાન, શ્રીમદ રાજચંદ ! જેમકે—હિંમત.



पुस्तकालय ।



यह बात जैनैः २ लोग मानते जाते हैं कि पुस्तकालय उन्नतिके एक प्रधान कारण है । पुस्तकालयोंके न होनेसे मानकी अधोगति बहुत कुछ हो चुकी है । आजकल भी बहुतमे उन पुस्तकालयोंके बन्द रहनेसे-जिनके मालिक मट्टारक आदि बन बैठे हैं-उन्नतिमें बहुत बाधा पड़ रही हैं । जैन समाजमें एक ऐसे पुस्तकालयकी अत्यंत आवश्यकता है, जहां जैनियोंके संपूर्ण ग्रन्थोंकी मुद्रित या लिखित प्रतियां प्राप्त हो सकें । यह पुस्तकालय किसी ऐसे नगरमें होना चाहिए जो हि भारतके मध्यमें हो और जहां जैनियोंकी अच्छी वस्ती हो । ऐसे पुस्तकालयकी कुछ अंशमें पूर्ति करनेका उद्योग आगरा जैनकुमार पुस्तकार्य कर रहा है । अत्यंत बन्हीनताके होनेसे जैसी उन्नति होनी चाहिए थी वैसी यह नहीं कर सका है । किंतु इसके बाद कार्यकर्त्ता और अन्य अनुविद्यार्थियोंको देखते हुए यही कहना होगा कि हमने आशाकीत उन्नति कर ली है । इसकी पूर्णता कोरी आलमारीको शोभा ही नहीं बढ़ाती किंतु वे प्रतिपाद ६०, ६५ पन्नी भी जाती हैं । अतएव जिन २ विद्वानोंने हमारा निरीक्षण किया है, वे सब ही इसे बेमर प्रमत्त हुए हैं । पुस्तकालयके साथ वाचनालय भी है । इस वर्ष हममें बहुत सुधार हो गया है । आजकल उसमें २०, २२

समाचारपत्र आते हैं, पढ़नेवालोंकी भी ओसत संख्या प्रति दिवाकी १५, २० है । सबसे बड़ी कमी जो माननीय निरीक्षकोंने इस पुस्तकालय व वाचनालयमें बताई है वह है स्थानकी । जिन कमरोंमें वर्तमानमें यह हैं उसमें बहुतसी अनुविद्यार्थी हैं अतः पुस्तकालयके योग्य सर्वथा नहीं हैं । बड़ी लागतकी धर्मशाला आदि बनानेवाले धर्मात्मा सज्जन क्या इस अत्यंत उपयोगी कार्यकी ओर लक्ष्य नहीं करेंगे ? नहीं, हमें यह आशा नहीं है । किंतु हमें यह विश्वास है कि शीघ्र ही कोई माईका लाल धनी धर्मात्मा माई इम शिक्षा-यतको दूर कर देगा । और हजार पांचसो रुपए लगाकर एक सुडौल बड़ासा कमरा बनवा देगा या कोई आगेका ही भाई मौकेका बना बनाथा कमरा पुस्तकके कामको दे देगा । उक्त प्रार्थनाके सिवाय हम उन विद्यार्थी सज्जनोंका भी निताकर्षण करते हैं जो अपनी बचत लक्ष्मीसे जैन ग्रन्थ मोल लेकर बांट्य करते हैं । हमारी उनसे सविनय प्रार्थना है कि वे ऐसे समयमें इसे न भूलें । पुस्तक प्रकाशकोंसे भी हमारा नम्र निवेदन है कि वे अपनी २ ट्पाई पुस्तकें भेजने रहा करें जिससे सहजमें ही पुस्तकोंकी संख्या बहुत बढ़ी हो जाय । तथा हमारी यह प्रार्थना धर्मात्माओंके कानोंमें पड़ेगी । तथास्तु ।

मोती बट्टरा,

आगरा ।

मंगीलाल जैन

आ० पंजी, जैनकुमार पुस्तकालय



સોજિત્રાની દિગંબર જૈન પંચને સૂચના.

સવિનય જણાવવાનું કે—આપણે ધર્મ-શાસ્ત્રમાં બહુજા પાછળ પડી ગયા છીએ ને તેનું કારણ કંઈ એજ નથીમ પડે છે કે—આપણી પાછળ લગ્યાપલગ્યા નેતાર ભદારકેએ આપણને (આપણા પુદ્ધ વર્ગને) ધર્મસાક્ષીને અભ્યાસ કરના દીધો નહિ, તેમ તેમણે આપણને ધર્મનો ઉપદેશ પણ આપ્યો નહિ, જેથી આપણી ધાર્મિક તેમજ વ્યવહારિક રિચિતિ શોકરપદ થઈ ગઈ છે. હવે જમાનો બદલાયો છે, તો તે આચર્યોને બાબુપર ચુકી આપણે આપણી જાત મહેનતે પુસ્તકો દાગ માન મેળવવું જોઈએ. તે જ્ઞાનમાં કેટલાક ઉપરચોટીયું જ્ઞાન તો આપણને 'દિગંબર જૈન' માસિકદારા પ્રાપ્ત થયું છે, પણ જૈન દર્શનનું પુરેપુરું વલર્ય જાણવા માટે આપણને પ્રાચીન આચર્યોનાં પુસ્તકોનો સ્વાધ્યાય કરવાની જરૂર છે. તેને માટે શુભરાતમાં કેટલાક ભદારો છે, જેમાંના કેટલાકનો લાભ તો ધણા જણ લે છે, તેમજ પુસ્તકોની રિચિતિ ઠીક છે, પરંતુ એક ભંડાર કે જે સોજિત્રા (આપણું મગ વતન) માં કાષ્ટમાંથી અર્ચાત જ્ઞાતિના મહિમામાં છે કે જેની ચોક્કસ અભ્યાસ સૂચી નાજીના લોહીથી ભદારકે કરતા કરતા, જેને વીધે તેનાં કાષ્ટ દર્શન પણ કરી શકું નહિ, જે ઉપરથી તે અધોની રચિતિ એવી કદાચી થઈ ગઈ છે કે જે લખતા પણ શરૂઆતે છે જેમકે જેને અનેક તરફથી ઉપાધિ નહતી હોય તેનું કાચ ફક્તીશ્રુત થતું નથી તેમજ તે અધોને જમાવતું પાખી, જમીનની અદર બીનાથ, ઉદરો, કિવંઈ પીગેરે તરફથી દર હમેશ આપા થતીજ જાય છે, જેનાથી કેટલાક અધો નંદ પણ થઈ ગયા છે, જે 'સોજિત્રાને' છે કે સંમય જ્ઞાતિનાં પુસ્તકોની જ્યારે આ દશા થઈ, તો પછી અરુપત મહિમા કેવી દશા થાય પુસ્તક વિશે પંચમાં

એવી અધ અદા. ખેસી ગઈ છે કે તેને કોઈને જોવા પણ દેતા નથી. દાખલા તરીકે—૧૯૬૪ ના લગ્ન પ્રસંગે ભારતર દીપચંદ્રજે લીધે કરવા પ્રયાસ કરેલો, પણ ૨૫-૩૦ અધો કાઢી બે ત્રણ બંધુની એત સ્ત્રીથી બીજા અધો કાઢ્યા નહોતા. કેવો વિચિત્ર પ્રસંગ કે—અંધનું દર્શન કરવાની પણ મનાઈ તો પછી આપણી ઉત્તરિ ક્યાંથી થાય ? અને આપણે યુવાન વર્ગ ધર્મની લાગણીવાળો ક્યાંથી થાય ? જેનું વૃક્ષ રોગવાળું છે તેનું ફળ ક્યાંથી માઈ થાય ? તેમજ વડીયો અધ અદાવાન તો બાળકો ધર્મવાળાં ક્યાંથી હોવા માટે બંધુઓ અને મુખ્યત્વે મહિમા વહીવટ કરનારાઓ ! નીચેની બાબતોને તરત અમલમાં લો કે—જેથી પુસ્તકોનો અવાવ થાય તે પ્રાચીન સાહિત્ય સચવાઈ રહે, તેની સાથે તમારે માથેથી કોઈક પાપનો જોગો જોઈએ થાય ને બાળકો તેમજ સાધારણ જૈનો પણ જૈન દર્શનના જ્ઞાનને લાભ મેળવી શકે.

અ. પુસ્તકોને ભંડારમાંથી બહાર કાઢી સાફ કરી લીધે તૈયાર કરવું.

બ. એક લીધે 'દિગંબર જૈન'માં છપાવવું ને એક મહિમામાં ચોટાડવું.

ક. પુસ્તકોને કંઈ પણ પાકારની બાધા ન થાય તેવી જગ્યાએ ગોઠાવવા (હકત ન હોય તો પાકાજાવાળાં કપાટોમાં મહિમા સામેના હોલમાં કે જ્યાં ગાદી (ભદારકની) ગ્રંથ છે ત્યાં ગોઠવવાં જેથી દર્શન-સ્વાધ્યાયનો લાભ મળે.)

દ. હજુ થયેલા અધોને શ્રીથી લખાવવા.

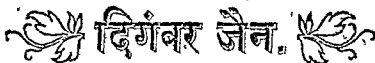
જ. હવેજોગી પુસ્તકોને છપાવી લુગ કિંમતે પ્રગટ કરવો.

ત. લાયજોગી સોજિત્રાથી પુસ્તકોને વાંચના આપવા.

ઉપરની બાબતો અમલ હાથ તાત્કાલિક થવો જોઈએ અને તોજ આપણી શોખા છે, ઉદય પણ તેનાથી થશે જે રત ખ્યાતમાં રાખી, ખામ કરીને આજોગોગો પુસ્તકને અનન્ય પ્રમાણે અગત્ય કોઠીશ કરી જોઈએ.

સી. જ્ઞાતિ દિનેગુ—

શ્રી કાળીસા મિત્ર મંડળી—કાળીમા



THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्विविधैश्च तत्तैः सत्योपदेशैस्सुगवेषणाभिः ।

संवोधयत्यत्रमिदं प्रवर्तताम्, दैगम्बरं जैन समाज-मात्रम् ॥

वर्ष ११ बाँ.

वीर संवत् २४४४. पौष-माघ. विक्रम सं० १९७४.

अंक ३-४.



इस अंकमें अन्यत्र दिये हुए ब्रह्मचारीजीके ले-
खसे पाठकोंको भली-
श्री शिखरजी भांति विदित होगा
और हम पर कि अपने महान् तीर्थ-
संकट। राज श्री सम्मोदशितर-

जीपर हमारे दर्शन-
पूजन होनेकी स्वतंत्रतामें बड़ा भारी संकट
उपस्थित हुआ है। हमारे श्वेताम्बरी भाई-
योंकी चालमानीसे हमें कई वर्षोंसे कई तीर्थों-
पर कष्ट सहन करने पड़ते हैं और वकील
वैरिस्टों द्वारा सर्च-भी बहुत हो रहा है।
आनकल पटनामें हमारे अगुण उपस्थित हैं
और श्वेताम्बरी अंकेलेको पहाड़ बेचा न जाय
इसकी कोशिश कर रहे हैं। आपसमें मेल
होनेके लिये हमारी तरफसे बहुत कुछ को-
शिश होनेपर भी उसका कुछ भी फल नहीं
हुआ और आखिर कोर्टद्वारा ही हजारों रुपये
खर्च हो रहे हैं और ऐसा खर्च करके हमारे
हकोंकी रक्षा करना हमारा फर्ज ही है। इस

समय इस कार्यके लिये रुपयोंकी बड़ी भारी
आवश्यकता आ उपस्थित हुई है जिसके
लिये हमारी तीर्थक्षेत्र कमेटीकी ओरसे बहुत-
से स्थानोंपर तारद्वारा सूचना दी गई है कि
“चंदा एकत्र करके भेजिये अन्यथा शि-
खरजीपर हमारे हकोंकी रक्षा नहीं हो सके-
गी” इसलिये हरएक स्थानके भाइयोंको हम
सूचित करते हैं कि इस हालको सब भाइयों-
को सुनाइये और जितना हो सके उतना
चंदा शिखरजीके लिये एकत्रित करके तीर्थक्षेत्र
कमेटी हीराबाग बम्बईको भिजवाइये। इस
कार्यमें धिलच नहीं करना चाहिये।



चार वर्ष हुए सारी जैन कोम तो क्या परंतु

कई महीनोंसे तो सारा

सेठीजीका हिंदुस्थान चिह्ना रहा

संकट। है कि बिना जांच

और न्याय हुए नगर-

बंद निये गये जैन समाजसे एक पं० अर्जु-
नलाल सेठीको बंधन मुक्त किजिये परंतु
हमारी कुछ भी सुनाई नहीं होती यह बड़ा
ही आश्चर्य है। हमारी गनपंथमाली प्रांतिक
समाने इस कार्यके लिये वाईसरोयके पास



डेपुटेशन भेजना निश्चित किया था और उसका मेमोरियल तैयार हुआ था तथा बाबू अजितप्रसादजी, सेठ हीराचंद, अमीचंद, मि. चवरे वकील आदि डेपुटेशनमें जानेके लिये तैयार भी हुए थे परंतु ना० वाइसरोयसे मिलनेकी स्वीकारता ही नहीं मिली इससे डेपुटेशन योंका यों ही रह गया था। अब अम्बालाकी महिला परिषदमें स्त्रियोंका डेपुटेशन वाइसरोयके पास भेजना निश्चित हुआ है। अब देखते हैं कि वाइसरोय महोदय स्त्रियोंका डेपुटेशन भी स्वीकार करते हैं या नहीं। कैसे भी हो जयपुर राज्य और ब्रिटिश सरकारका फर्ज है कि सेठीजीका न्याय करें या तो उन्हें बंधनमुक्त करके जैनसमाज तो क्या सारे भारतवर्षमें इसके लिये फैली हुई अशान्तिको दूर करें। सेठीजीके कष्ट निवारणार्थ बाबू अजितप्रसादजी (अजिताश्रम, लखनऊ) ने ऑफिस खोल रखी है जिसमें वर्षके लिये रुपयोंकी आवश्यकता रहती है तो भाईयोंका फर्ज है कि सेठीजी और उनके बालबच्चोंके कष्ट निवारणार्थ कुछ न कुछ सहायता लखनऊ भेजते रहें।

आगामी ता० २९-३०-३१ मार्चको इन्दौरमें महत्मा गांधीजीके सभापतित्वमें साहित्य सम्मेलन नमं प्रदर्शनी। अष्टम हिन्दी साहित्य सम्मेलन होनेवाला है जिसके स्वागत० कमेटीके अध्यक्ष हमारे दानवीर रा० बा० सेठ हुजूमचंदजी हैं। सम्मेलनके साथ २ एक हिन्दी

साहित्य प्रदर्शनी भी होगी जिसमें हिन्दीके पुराने पत्र, प्रसिद्ध साहित्य सेवियों के चित्र, हिन्दी हस्तलिखित और प्रकाशित प्राप्य पुस्तकें, हिन्दी ग्रन्थमालाएँ, शिलालेख, ताम्रपत्र इत्यादि प्रदर्शित किये जावेंगे। ऐसे मौकेपर हिन्दी भाषाके प्राचीन हस्तलिखित और मुद्रित जैन ग्रन्थ तथा चित्रों, शिलालेखादि भी रखने योग्य हैं। हमने भी ६१ पुस्तकें और चित्रादि प्रदर्शनीमें भेजे हैं और हमारे पाठकोंको भी आग्रह करते हैं कि अपने भंडारोंमें हिन्दी भाषाके प्राचीन ग्रन्थादि होवें तो इस प्रदर्शनीमें अवश्य भेज दें। प्रदर्शनीके पूर्ण होने पर सब पुस्तकादि वापिस मिल जायेंगी। पत्र व्यवहारका पता— डा० सरजूप्रसाद रायबहादुर, मंत्री, अष्टम हिन्दी साहित्य सम्मेलन, तुक्रोगंज, इन्दौर।

श्री सम्मेलन शिखरजी पर जानेके लिये खास करके ईसरी स्टेशनसे ईसरी स्टेशनपर जाया जाता है। अब आवश्यकता। इस स्टेशनपर रेल्वे गाड़ी सिर्फ दो मिनिट

टहरती हैं इससे अनेक यात्रियोंको बहुत कष्ट उठाना पड़ता है जिसको दूर करनेके लिये तीर्थक्षेत्र कमेटीके नाम पर अभी फिरोजपुरकी एक चिट्ठी 'जैनमित्र' में प्रकाशित हुई है जिसमें दर्शाया है कि (१) E. I. R. रेल्वेके एजन्टसे पत्रव्यवहार करके गाड़ीको दस या पांच मिनिट टहरानेका प्रबंध कराना चाहिये (२) ईसरीसे ४-५ माईल पर बैलगाड़ीके



रास्तेमें ही रेल्वे लाईन पड़ती है तो वहां ही मधुवनरोड नामक छोटासा स्टेशन होना चाहिये इसके लिये भी E. I. R. Ry. से लिखा पत्री करे और (२) मधुवन धर्मशालासे एक मील पर एक छोटासी नदी है जहां पुल होनेकी आवश्यकता है । आशा है कि तीर्थक्षेत्र कमेट्रीके कार्यकर्तागण इसके बारेमें शीघ्र ही रेल्वे कर्मचारियोंसे लिखा पत्री करेंगे, यदि प्रयास किया जायगा तो इसमें अवश्य सफलता होगी क्योंकि इसरी स्टेशन पर हमारे हजारों यात्रीगण आते जाते हैं ।

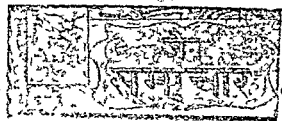


हमारे पाठक दिगंबर मुनि श्री अनंतकीर्तिजी

महाराजसे सुपरिचित हैं ।

मुनि अनंतकीर्ति- क्योंकि आपका चित्र जीका चित्रोप और परिचय भी हम दो बार प्रकट कर चुके

हैं । आपके मोरेनामें ठहरेका समाचार हम गतांक्रमें दे चुके थे और वहां आपका केशलौच उत्सव भी होनेवाला था इतनेमें अकस्मात् ही माघ सुदी ५की रात्रिको ध्यान स्तंभन करते २ अकस्मात् आपका समाधिमरण हो गया । आपकी आयु सिर्फ ३४ वर्षकी ही थी । आपके स्वर्गवासका हमें इसीलिये दुःख होता है कि आप विशेष आयु भोगते तो हमें आपका दर्शन और उपदेशका अपूर्व लाभ मित्रता । मुनिजीके शोक प्रदर्शनार्थ बम्बई, शोलापुर, मोरेना, आगरा, इन्दौर, करहल, बडवाहा आदि अनेक स्थानोंपर समाएँ हुई थीं और बाजार भी बंद रखकर मंदिरोंमें पूजन किया गया था ।



शिखरजी केस- ता० ११ के तार समाचारसे विदित हुआ है कि पालगंज और नवागंज स्टेट द्वारा शिखरजीका पहाड श्वेतांबरियोंको बेचा न जाय इसके लिये दिगम्बरियोंने इन्जंजसन (मनाईहुकम) मांगा था जिसको पटना हाईकोर्टने गत ता० ८ को खारिज कर दिया है । जिससे दिगम्बरियोंको विशेष कठिनाई-योंका सामना करना पड़ेगा ।

देहलीमें बोर्डिंग और आश्रम- लाला जगन्नाथ जैनी तार द्वारा सूचित करते हैं कि यहा ता० १ मार्चको दरीबाकलांमें जैन बोर्डिंग और ता० १० को पहाड़ी धीरजपर जैन महिलाश्रमकी स्थापना हुई है ।

अम्बालामें महिला परिषद् और सेठीजीका प्रस्ताव.—महासभाके साय२ अम्बालामें गत ता. २५-२६को भारत दि. जैन महिला परिषद्का आठवा अधिवेशन देहलीके ओ. रा. व. बाबू सुल्तानसिंहजीकी धर्मपत्नी श्री मुशीलादेवीके सभापतित्वमें हुआ था । निममें दो तीन हजार स्त्रियें उपस्थित हुई थीं । यह उत्सव अतीव सफलतापूर्वक हो गया । मंग्या बड जानेसे सभापतिजी व्याख्यान तीन स्थान पर सुनाया गया था । सभापति, श्रीः मगनबाई, पं. कंडुबाई, पं. रामदेवीबाई आदि के महत्पूर्ण व्याख्यान होकर कुछ छह प्रस्ताव



पास हुए जिसमें उल्लेख योग्य प्रस्ताव पं. अर्जुनलाल सेठीजीके बारेमें निम्नलिखित हुआ है । —“श्रीमान् पं. अर्जुनलाल सेठी वी. ए. जैन जातिके अद्वितीय, अनुभवी व स्वार्थ त्यागी विद्वान् हैं । सार्वजनिक विद्या प्रचार उनके जीवनका उद्देश्य था और है और उनकी यह उत्कट इच्छा है कि, जैन छी-समान विद्वान् बने, उसमें एक भी बालिका ऐसी न रहे जो अशिक्षित हो; और हमारेमें सम्यक्त्व के नाश करनेवाली कुप्रथाएँ हैं वे नष्ट होकर हम धर्मपरायण बनें । इस परिपदको अत्यंत खेद है कि उनको किसी संदेहवश जयपुर सरकारने ४ वर्षसे नजरबंद कर रक्खा है और बहुत कुछ प्रार्थनाएँ जैन समाजके करने पर भी उन्हें मुक्त नहीं किया । जैन समाज अपने एक स्वार्थ त्यागी पंडितके सद्गुणवशसे, व सत्कार्यसे वंचित होकर कष्टका अनुभव कर रहा है अतः यह परिपद प्रस्ताव करती है कि जैन समाज की महिलाओंका एक मंडल (डेपुटेशन) नामदार काईसरायकी सेवामें उपस्थित होकर सेठीजीको मुक्त करानेकी प्रार्थना करे । परिपद यह भी प्रस्ताव करती है कि परिपदकी ओरसे सेठीजीको मुक्त करनेके लिये एक तार भी दिया जाय ।” परिपदमें श्राविकाश्रम बन्धुके लिये २०००) का चंदा भी हुआ था ।

पंडितका वियोग—इसके पं० पुत्र-लालजीका गत ता. ५ को जैन समाजसे वियोग हो गया । आप अच्छे पंडित थे । ब्र० कुंवर दिग्विजयसिंहजीकी आर्यसमाजीसे

जैनी होनेका सौभाग्य आपके सहवाससे ही प्राप्त हुआ था ।

रावजी सत्साराम दोशी, मंत्री, सोलापुर ।
अम्बालामें महासभा—अपनी महासभाका अधिवेशन अवकीवार अम्बालामें प्र-तिष्ठोत्सवके समय हो गया । संभापति हुए थे न्यायदिवाकर ! पंडित पन्नालालजी, पन्तु मजेकी बात यह हुई की संभापतिजीका व्याख्यान न तो आदिमें हुआ न अन्तमें !!! न्यायदिवाकरजीका तो विचार नहीं था परंतु सबकी अनुमतिसे सेठीजीका ठहराव तो आपको रखना ही पड़ा और पास भी हो गया और देवगढ़के उद्धारका और जैन शास्त्रोंकी समीक्षाओंकी एक उत्तरदात्री कमेटीका नियुक्त होना यह दो प्रस्ताव भी महत्वके हुए हैं ।

कुशलगढ़में—सेठ धूलचंद धनराजजीके प्रयाससे सद्गुण-प्रसारक मंडल स्थापित हुआ है जिसके प्रयत्नसे यहां कन्याविक्रय फरज्यात बंद करना, बहारगामकी बरात आई हो और उसीके ग्राममें भी कन्याविक्रय होता हो तो उनसे २५१) मंडलमें लेना, लनोंके फड़ें रीतिरिवामें बंद या कम करना, व कन्यामें सोड़ आ जावे, नष्टक मालूम हो तो मुगाई छोड़नेका पंचको हक देना आदि १५ प्रस्ताव हुए हैं ।

भटारक श्री गुणचंद्रजी—सोजिवा मां लगभग ७० वर्षकी वृद्ध वयें स्वर्गवास यया छे. गुनरातना जैनोना उद्धार थाय व कोइपण कार्य भटारकनी कमी गया होय व नगातुं नही.



आगरा में ता० १५ से १९ फरवरी तक रथोत्सव हो गया । कई व्याख्यान समाप्त भी हुई थीं । जैसवाल समाज अधिवेशन भी हुआ था और 'जैसवाल जैन' नामक मासिक शीघ्र ही आगरा से निकालने का प्रबंध हुआ है ।

शास्त्रार्थका चेलेंज—आजकल देवचन्द के बाबू सूरजभानजी वकील अपने आदिपुराण आदि धर्मग्रन्थोंकी मनमानी और असत्य समालोचना कर रहे हैं जिससे उत्तेजित होकर न्यायालंकार यादीध केशरी पं. मन्मथलालजी शास्त्री (प्र० अध्यापक ऋ० ब्रह्मचर्याश्रम) ने वकील साहबको चेलेंज दिया है कि इसके शास्त्रार्थके लिये तैयार हो जाईए । शास्त्रार्थके लिये बम्बई, इन्दौर, गुरैना और देहली इनमेंसे कोई भी स्थान उपयुक्त होगा ।

देखें वकील साहब शास्त्रार्थके लिये तैयार होते हैं या नहीं या घर बैठे ही मनमानी कलम चलाया करना पसंद करते हैं ।

हार्डस्कूल—सोलापुरमें हरिभाई देवकरण-वालोंने २७०००) लगाकर सार्वजनिक हार्डस्कूल स्थापित करनेके लिये प्रबंध किया है । इसका प्रबंध जैनोके हस्तमें होना चाहिये और इसमें जैन धर्मका शिक्षण देनेका प्रबंध भी होना आवश्यक है ।

कुंयलगिरि—क्षेत्रका मंत्र पोप मुदी १५ को सेठ हीराचंद नेमचंद दोशीके मभा पतिव्रतमें सकलेंता पूर्वक हो गया । कुलभूषण जैन विद्यालयको करीब ७००)की सहायता हुई प्राप्त थी । विद्यालयके छात्रगण आजकल

अधिष्ठाता व. पार्थसारथीजी सहित शिक्षणजीकी यात्रार्थ निकले हैं । रास्तेमें पड़ते हुए बहुतसे शहरों और ग्रामोंमें विद्यालयका भ्रमण होगा ।

नामधारी भट्टारकका निषेध—लातूर (वहाड)की गादी पर बिना सबकी सम्मति लिये एक बालकको भट्टारक बना दिया है जिसके निषेध प्रदर्शनार्थ कुंयलगिरि के मेलेपर बड़ी भारी सभा रा. नेमीनाथ अनंतराज पांगलके सभापतित्वमें हुई थी जिसमें इस बालक भट्टारकको किसी तरहसे न माननेके लिये तात्या नेमीनाथ पांगल, मि० रणदिवे आदिके व्याख्यान होकर इस भट्टारकका खूब ही निषेध किया गया और उसपर वहां उपस्थित ६०-६५ गांवके मुखियाओंके हस्ताक्षर भी हो गये । गुजरातमें बिना सबकी संमति लिये इस तरह दो भट्टारक बैठ गये हैं जिसका प्रचल विरोध न होना गुजरातके भाईओंकी अंधश्रद्धा और कमजोरी नहीं तो और क्या है ?

कुतराओनी अपील—सुरतमां ता० १२मी फेब्रुआरीए श्री एनी क्रिमेंट पवारी हती तयारे सैर्या ब्रधर्स जैनी तरफथी विसेंदनी मोरर योभात्री एकर कुतरा पासे " सुरतना कुतराओनी अपील " नामे हेन्डवीलनो एक तख्तो भेट अपाव्यो हतो जेवां लखेलें हतुं के सुरतमां अमारो घोळे दिवसे गोली बहारथी कनरयाण करनामां आवेळे, माटे कायदानी हदमां रही अमारें रक्षण करो झुगेर.

चिवाड और दान—५० मूलबन्दगी



स्था० रावलपिन्डीके पुत्र दीवानचन्द्र फोटो-
ग्राफरका विवाह माहा वदी ५ को जैनविधिसे
होगया जिसके उपलक्षमें भारत जैन महामंडल,
स्था० जैन कान्फरेन्स, देहली अनायाश्रम,
ब्रह्मचर्याश्रम और कई पत्रोंको ४२॥
सहायतार्थ दिये गये जिसमें दिगंबर जैनको
भी २) प्राप्त हुए हैं ।

प्रतिष्ठा—श्री चम्पापुरी तीर्थमें फाल्गुन
शुक्ल ९ को पंचकल्याणक प्रतिष्ठोत्सव
सोलापुर निवासी सेठ हीराचंद अमीचंद
शाहकी ओरसे होगा ।

सूरतमें श्रीमती विसेंट और जैनोका स्वागत ।

भारतहितैषी माननीय श्रीमती एनी वि-
सेंट गत ता० १२ फरवरीको एक दिनके लिये
सूरत पधारी थीं तब आपका नगरवासियोंकी
तर्फसे बहुत ही अच्छा सत्कार हुआ था
और दुपहरको आपका एक जलूस सारे शहर-
में फिराया गया था तब बहुतसे स्थानोंपर
आपकी मोटर ठहराकर द्वारतोर अर्पण किये
गये थे जिसमें जैनोकी ओरसे तो चंदा-
वाड़ीमें ऐसा अपूर्व सत्कार किया गया था
कि कहीं भी ऐसा सत्कार नहीं हो सका
था । चंदावाड़ीके अंटको खूब रागाकर टेबल
कुर्सीकी बैठक बनाई गई थी और रातनेर
भी एक बोर्ड लगाया था जिसपर लिखा
था कि—

'वेलोएनी जेलमा ५६ दिवमना अयवामयुं
पागुं करावनार—माना एनी वीसेंट,

विना न्याये साडा व्रण वर्ष ययां जेलमां
पडेला जैन पं० अर्जुनलाल सेठी-
ने बंधन मुक्त करावो."

यहां जनसमूह भी ४००-५०० इकट्ठा
हो गया था । श्रीमतीजीकी मोटर शामको
करीब साढ़े पांच बजे आ पहुंची थी आते
ही करतल घ्यानियां गूंज उठीं और उनके
सहयोगियोंने तो कहा कि श्रीमतीजी नीचे
नहीं उतरेंगी यहां ही जो कुछ देना हो दे
दीजिये अन्यथा मोटर चला दी जायगी
आदि । यह बात जानकर श्रीमतीजी
तुर्त ही स्वयं उठ कर मोटरका दरवाजा
खोलने लगी और नीचे उतर कर चंदावाड़ीमें
पधारीं जिस समय लोगोंका उत्साह अव-
र्णनीय था । आपका स्वागत करके मूलचन्द्र
किसनदास का पड़ियाने समयके अभावसे
सन्मानपत्रमेसे सेठीजीवाला हाल १६ कर
सुनाया और आपको रेशमी रुमाल पर नरी
और रेशमकी कागिरीका छपा हुआ मानपत्र
सूरतकी अपूर्व बनावटके चंदनके वाकससे रख
कर अर्पण किया और द्वारतोरसे सन्मान
किया तब 'दिगम्बर जैन' का खास अंक भी
भेंट किया इतनेमें यहाँके वी० एन० म्हेता
फोटोग्राफरने एक फोटोग्रुप भी खींच लिया
जो अतीव आकर्षणीय और संपद करने योग्य
होनेसे हमने इसी अंकमें अन्यत्र प्रकट किया
है । मानपत्रकी अंग्रेजी नकल और उत्तर
अनुवाद निम्नलिखित है—

An address from the Jains of Surat
To,



MRS ANNIE BEASANT,

Mother of India; President,
Home Rule League for India;
President, Theosophical Society;
President, 32nd National Congress etc., etc.,

Most revered Madam,

1. You are the true builder of India's destiny in that you have awakened India from her age-worn lethargy at the great sacrifice of bodily health and peace of mind and that you only have paved the way to win Home Rule for India under the benign British flag by cultivating public opinion to the core of the people's heart. India shall ever remain grateful to you and your name which has been a homeward to the people's minds shall ever be cherished by them.

2. The well known Jain Pandit Arjunlalji Shethi B. A. who was incarcerated in prison by the Jaipur State without any trial or justice more than 3 long years ago was suddenly brought on 20th November last to Vellore, Madras under British jurisdiction. It was you who nobly raised her voice on the Congress Platform regarding the miserable imprisonment of Shethiji and consequently made all arrangements for Shethiji's wife and children to see their near and dear one

at Vellore by personal interview with the Viceroy and made the venerable Pandit give up his fast 56 days when convenience for an idol was made in his room at Vellore Jail. The Jains of India are ever obliged to you forever by this your life giving deed for they know fully well that nobody in them could have performed this difficult task.

3 You are well aware with Sethiji's case and so we need not say anything more about this. Suffice it to say that you will make all efforts to get him released soon, taking his question even to the Parliament if need be.

4 We cannot find words to express our feelings of love, respect and esteem for you. You are a light in the dark desert of modern India. India can never be more proud of you.

5. Finally we wish that you may live long to see India win Home Rule under British flag, may you ever be happy. May all your efforts ever be crowned with success. Victory to thee, Builder and Ruler of People's minds. May thy name ever rise in the sky from summits of the Himalaya. Hoping to be excused for the trouble and thanking you in anticipation.

Your most obedient servant,



bandawadi,
SURAT
12-2-1918

Moolchand Kas-
andas Kapadia.

(For the Jains of Surat.)

सुरत-जैन समाजकी ओरसे मानपत्र ।

भारतमाता विदुषी एनीबेसेन्ट-प्रमुखा, भा-
रतवर्षीय स्वराज्यसंघ, अध्यक्ष, थियोसोफिकल
सोसायटी, सभापति, ३३ वीं राष्ट्रीय कांग्रेस
इत्यादि की सेवामें ।

परमपूज्या—

(१) आपने पवित्र भारतवर्षकी चिरकालकी
गाढ़ निद्रामेंसे जागृत कर शारीरिक आरोग्य
और चित्तशान्तिके अथाह परिश्रमसे इस महान्
देशके भविष्य वांछनेमें महान् भाग लिया है ।
और अंग्रेज राज्यकी छत्र छायामें स्वराज्य
प्राप्तिके अर्थ जनसमूहकी नसों नसमें स्वरा-
ज्यकी भावना फैलाकर स्वराज्य प्राप्तिका मार्ग
खुल्ला किया है । इसलिये यह देश आपका
सदैव आभारी रहेगा, और आपका नाम जो
सर्वमान्य हो पड़ा है सदादित चिरस्मरणीय
रहेगा ।

(१) सुप्रसिद्ध पं. अर्जुनलालजी
सेठी बी० ए० जिन्हें लगभग ३ वर्षसे ज्यादा
हुए विना न्याय विना जांच किए नयपुरमें
नजरबंद किये गये और वे गत ता.
२० नवम्बरको भारत सरकारकी देखरेखमें
बेल्लोर (मद्रास भेजे गये । पंडितजीको बेल्लो-
रके कारागृहमें विविध प्रकारकी जो जो विप-
त्तियाँ झेलनी पड़ीं उसके लिये आपने भारतीय
कांग्रेसमें प्रमुखाकी हैसियतसे प्रहार उठाई,
इतना ही नहीं किन्तु माननीय वाइसरायसे

स्वतः मिलकर बेल्लोरके कारागृहमें प्रतिमाका
प्रबन्ध करके सेठीजीको ९६ दिनोंके उपवा-
ससे मुक्त करा जीवन दान दिया । सेठीजीसे
पत्नी और बालबच्चोंको मिलनेका अवसर
प्राप्त कराना भी आप ही की कृपाका फल
है । समस्त भारतवर्षके जैनी आपके इस पवित्र
कार्यके लिये चिर ऋणी रहेंगे ।

(३) सेठीजीके केससे आप भलीभांति परि-
चित हैं, अतएव इस विषयमें हमें विशेष
कहनेकी आवश्यकता नहीं । मात्र इतना ही
जता देना बस होगा कि आप आवश्यकता
पड़ने पर पार्लामेंट तक भी यह बात लेजाकर
सेठीजीको शीघ्र छुड़ावेंगी ऐसी हम आशा
रखते हैं ।

(४) आपके प्रति हमारी स्नेह, मान,
और पूज्य भक्ति प्रकट करनेको हमारे पास
पूरे शब्द नहीं । आधुनिक भारतवर्षकी अंध-
कारमय रात्रिमें आप दीपक समान हैं ।
आपके लिये यह देश जितना अभिमान करे
उतना छोड़ा है ।

(५) आखिरमें हमारी यह भावना है कि
ब्रिटिश छत्र तले भारतवर्षको स्वराज्य भोगते
हुए देखनेको आप दीर्घायु हों । आप सदा
सुखी रहें और अपने देशकार्यमें आपको
विजय प्राप्त हो, और अचल कीर्ति सुख
आपको सदैव मिलता रहे ।

मैं हूँ आपका वरण सेवक—

चंद्रानादी सुत. } मूलचंद किमनदास
ता. १२-२-१८ } कापडिया ।
(सुरतके जैनोंकी ओरसे)



सारे भारतमें सुविख्यात और भारतहितैषी-श्रीमती एनी बेसेंट
 ता० १२-२-१८ को 'सूरत' पधारी थीं तब जैनोकी ओरसे 'चंदावाडीके ओट पर'
 भानुपत्र दिया गया था उस समयका दृश्य ।
 (मूलचन्द्र किसनदासजी कापड़िया मानपत्र सुना रहे हैं और श्रीमतीजी एनाबेसन्ते सुन रही हैं)



जैन मत की प्राचीनता ।

— ❦ ❦ ❦ —

(लेखक—ज्योतिस्वरूप जैनी, नजफगढ़)

धम्मपद नामक पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि—

गौतम बुद्ध, बौद्ध धर्म का चलनेवाला सन् ईसवीसे ५५७ वर्ष पहिले क्षत्रिय राजा शुद्धोदनके यहाँ कपिल वस्तुमें पैदा हुआ था जो कि रोहिणी नदीके किनारे बनारससे १०० मील उत्तरकी ओर है । वह वचनसे ही दयालु और बुद्धिमान् था । एक दिन सांसारिक विषय भोगोंसे विरक्त हो मोह त्यागकर उसने वैराग्य धारण कर लिया, और देश देशान्तरोंमें भ्रमण कर अपने सत् उपदेश द्वारा सहस्रों मनुष्योंको सच्चे धर्मका रास्ता बतला कर यह शिक्षा दी कि “मोक्ष” न तो शरीरको कष्ट देनेसे मिलती है और न सांसारिक भोगोंमें फँसे रहनेसे । इस मोक्षसुखकी प्राप्ति होनेका हक ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चारों वर्णोंको है । प्राणी मात्र इस मोक्षपदवीको प्राप्त हो सकता है ।

वह समय ऐसा अंधकारका था कि लोग अपने सच्चे धर्मको छोड़ कर यज्ञादिक क्रिया, शारीरिक दुःख इत्यादि बातोंको सच्चा श्रद्धान कर धर्म मानने लगे थे । बुद्ध देवने बनारससे ४५ वर्ष तक लगातार सारे मुल्कोंमें भ्रमण कर दिया । धर्मका ऐसा डंका बजाया कि निसके उपदेशसे राजा महाराजाओंने दिलसे वह शिक्षा बचल की, और लाखों मनुष्य सच्चे धर्म पर चढ़ने लगे । इस प्रकार बुद्धदेवने तमाम

भारतवर्षमें यह बात प्रसिद्ध कर दी कि सर्वोत्कृष्ट “दया धर्म” ही प्राणी मात्रका उद्धार करनेवाला है । अब हम अपने पाठकोंको यह बतलावेंगे कि बौद्ध धर्म और जैन धर्मके सिद्धान्तोंमें क्या अंतर है ? कितने ही विद्वानोंने इस प्राचीन जैनमतको बौद्धमतकी एक शाखा लिखा है यह बात काहँ तक सत्य है । जो लोग भारतवर्षके प्राचीन इतिहाससे अभिज्ञ हैं उनको उपर्युक्त कथन, अर्थात् जैनमत बौद्धमतकी शाखा है यह लिखना मिथ्या प्रतीत होगा । ? अब हम बौद्ध ग्रन्थोंका अवलोकन करते हैं तो यही प्रतीत होता है कि इस मतका मूल सिद्धान्त ‘दया’ है और कितने ही विषय जैनमतसे निकट संबन्ध रखते हैं । यथा—गुक्ति, पुनर्जन्म, प्रतिमा-पूजन, ईश्वर, कर्म किलासफी, गुरु इत्यादि । उपरोक्त विषयोंमें कुछ २ अंतर है । गुरुके लक्षण जो कि जैनाचार्योंने वर्णन किये हैं उनमेंसे कुछ गुणोंको छोड़ कर कितने ही गुण उनके साथ पालन करने हैं, उन साधुओंको श्रमण कह कर पुकारते हैं । २—अब बौद्धके समयका निर्माण जैन शास्त्रोंसे इस प्रकार मिलता है । धर्म परीक्षा श्री स्वामी अमितग-त्याचार्य कृष्ण जो कि संवत् १०७० में बनाई गई है उसमें लिखा है कि पार्श्वनाथके चले मौडिलायनने महावीरस्वामीके साथ बैर रखनेके कारण बौद्धमत चलाया । उसने शुद्धोदन पुत्र, बुद्धको परमात्मा समझा यह सब काल-दोषके कारण हुआ । यथा—
रुधः श्री वीरनाथस्य, तपस्वीमौडिलायनः ।
शिष्यः श्री पार्श्वनाथस्य, विश्वे बुद्धदीनम् ॥ २ ॥



शुद्धोदनसुतं बुद्धं, परमात्मानमवब्रवीत् ।
 प्राणिनः कुर्वते किं न, कोपवैरिपराजिताः ॥२॥
 अर्थात्—पार्श्वनाथ भगवान्का शिष्य एक मौडि-
 लायन नाम तपस्वी था । उसने महावीरस्वामीसे
 विगड़ कर बौद्धमतको प्रकट किया उसने शुद्धोदन
 राजाके पुत्रको बुद्ध परमात्म मान लिया सो ठीक
 है । कोउरूप बैरीसे पराजित होकर संसारी
 जीव क्या क्या नहीं कर सकते ? अर्थात्
 सब कुछ कर डालते हैं । उपरोक्त भूमिकामें
 भी गौतमबुद्ध सन् ईसासे ५५७ वर्ष पहले
 लिखा है । और अब संवत् ईसा १९१८
 वर्त्तमान है इस हिसाबसे २४७५ वर्ष व्यतीत
 हुये उस समय बौद्धका जन्म हुआ था, और
 महावीरस्वामीको निर्वाण गये २४४४ वर्ष
 हुये । इससे प्रत्यक्ष यह सिद्ध होता है कि
 बौद्धका जन्म महावीरस्वामीके समयमें हुआ
 था इसमें कुछ विशेष अंतर नहीं प्रतीत होता ।
 हंटर (Hunter) साहब तथा और भी कि-
 तने ही विद्वान् बुद्धको महावीर स्वामीका
 चेला बतलाते हैं उन्होंने इन दोनों (गौतम-
 बुद्ध और गौतम इन्द्रभूति) को एक समझ
 लिया, चूंकि गौतम इन्द्रभूति महावीर स्वा-
 मीका शिष्य था इस कारण उन्होंने गौतम-
 बुद्धको भी महावीरका चेला समझ लिया ।
 हंटर साहिबका यह कहना कि बुद्ध महावीर
 स्वामीका शिष्य था, धर्मपरीक्षा ग्रंथसे मिलाया
 जाय तो सत्य प्रतीत होता है । यही बात
 ग्रंथोंसे भी मिलती है कि बुद्ध और महा-
 वीर एक ही समयमें हुये परन्तु बुद्धका जन्म
 महावीर स्वामीसे ४२ वर्ष पीछे हुआ । धर्म-

परीक्षाके सिवाय अब हम और जैन शास्त्रों-
 को देखते हैं तो यही समय बौद्धका मिलता
 है । दर्शनसार ग्रंथ जो कि ९९०में देवनाग्नि
 आचार्यने उज्जैनमें रचा था—लिखा है कि
 पार्श्वनाथके तीर्थमें बुद्धकीर्त्ति नामक साधु शास्त्र-
 वेत्ता और पिहिताश्रवका शिष्य था । पार्श्व-
 नाथके समयमें सरयू नदीके तटपर पिहिताश्रव
 नामा मुनिका शिष्य बुद्धकीर्त्ति जिसका
 नाम था, तपस्या कर रहा था । उस
 नदीके प्रवाहमें बहुतसे मरे हुये मच्छ
 बहते २ कठि ऊपर आ लगे । उनको देख
 कर बुद्धकीर्त्तिने अपने मनमें ऐसा निश्चय
 किया कि मरी हुई मछलियोंके खानेमें कुछ
 दोष नहीं है । ऐसा विचार करके अंगीकार
 की हुई प्रव्रजान्वत छोड़ धर्मसे भ्रष्ट होकर
 मांस भक्षण किया । और लोगोंको यह उप-
 देश दिया कि मांसमें जीव नहीं हैं । इस-
 कारण इसके खानेमें भी पाप नहीं है ।
 इस प्रकारकी प्रवृत्तिका करके उसने बौद्ध मत
 चलाया और यह भी कथन किया कि सर्व
 पदार्थ क्षणिक हैं, इस कारण पुण्य पापका
 कर्ता और भोक्ता और है, ऐसा कथन किया ।
 इस प्रमाणको अनेक पंडित स्वीकार करते हैं
 और कहते हैं कि बुद्ध वास्तवमें जैन साधु था,
 जिसने ज्ञान भ्रष्ट होकर मांसकी प्रमंशा की और
 रत्नांबर (लाल वस्त्र) पहनकर अपना मत चलाया ।
 स्वामी आत्माराम "अज्ञानतिमिरभास्वर"
 नामकी पुस्तकमें उपरोक्त कथाका निम्न
 श्लोक द्वारा प्रमाण देने हैं ।
 सिरिपासणाहतिरंधं, सरउत्तीर पलासणदरंथं ।



पिहिआसवस्ससीहे, महालुद्धोबुद्धकीर्त्तिमुणी । १ । प्राचीन जैन मतको बौद्ध मतसे मिलता जुलता
 तिमिपूरणासणेया, अहिगयपञ्चजावओपरमभे । देखकर जैनमतको बौद्धमतकी शाखा तथा
 रत्तं वरं धरित्तं, पवट्ठियं तेण एयत्तं ॥ २ ॥ अन्य मतसे निकला हुआ निरूपण किया है
 मंसस्सणत्थिजीवो, जहा फलेदहियदुद्धसकराये । यह कहना कहाँ तक सत्य है । कितने ही
 तत्त्वांतहि मुणित्ता, भस्संतोणत्थिपाविट्ठो ॥ ३ ॥ विद्वान् तो चार्वाक मतके साथ मिला हुआ
 इत्यादि श्लोकोंसे बुद्धकीर्त्ति पिहिताश्रवका चेला सिद्ध होता है, और पिहिताश्रव पार्श्व-
 नाथके तीर्थमें हुआ । स्वामी आत्मारामजी कदलागच्छकी पट्टावलीका पता स्वामी
 पार्श्वनाथसे लेकर निम्न लिखित बतलाते हैं । श्री पार्श्वनाथ, श्री शुभदत्त गणधर; श्री
 हरिदत्तजी, श्री आर्यसमुद्र; श्रीस्वामी प्रभसूर्य, श्रीकेशी स्वामी; फिर यह भी बतलाते हैं
 कि पिहिताश्रव स्वामी प्रभसूर्यके साधुओंमें-
 से एक था । उत्तराध्ययन सूत्र, और दूसरे
 श्वेताम्बरीय जैन ग्रन्थोंसे मालूम होता है कि
 केशी पार्श्वनाथकी मंडलीमेंसे था । और
 महावीरस्वामीके समयमें विद्यमान था; चूंकि
 बुद्धकीर्त्ति पिहिताश्रवका चेला था ! और
 पिहिताश्रव प्रभस्वामीका शिष्य था । इसकारण
 बुद्धकीर्त्ति महावीर स्वामीके समयमें हुआ
 होगा । इन दोनों जैन ग्रन्थोंसे तथा बौद्ध
 ग्रन्थोंसे भी यही प्रकट होता है कि बौद्ध
 महावीर ही के समयमें हुआ । अब मैं अपने
 जातिके विद्वज्जनोंसे प्रार्थना करता हूँ कि
 नैरेन्द्रियग्रन्थोंसे इसका समय निर्णय करें ताकि
 नई अंग्रेज विद्वान् यथा बुहलर (Buhler),
 जैकोबी (Janobi) और विल्सन (Wilson),
 बार्थ (Barth), मैक्स मूलर (Prof
 Maxmuller) इत्यादि जिन्होंने कि इस

प्राचीन जैन मतको बौद्ध मतसे मिलता जुलता
 देखकर जैनमतको बौद्धमतकी शाखा तथा
 अन्य मतसे निकला हुआ निरूपण किया है
 यह कहना कहाँ तक सत्य है । कितने ही
 विद्वान् तो चार्वाक मतके साथ मिला हुआ
 और कई महावीरस्वामीके समयसे ही प्रचलित
 हुआ कहते हैं । यथार्थमें उपरोक्त विद्वान्
 जैनमतसे अनभिज्ञ थे । उनको यथार्थ निर्णय
 करनेके लिये जैन ग्रन्थ नहीं प्राप्त हुये । इसी
 कारण उन्होंने जैन धर्मको अन्य मतसे निकला
 हुआ लिखा है । भानुगण ! इस जैन धर्मके
 विषयमें प्रसिद्ध विद्वान् प्रोफेसर मैक्स मूलर
 (Prof. Maxmuller) ने, “ जैन धर्मपर
 व्याख्यान ” शीर्षक पुस्तकमें जो अपनी राय
 प्रकाशित है उसको मैं यहांपर पाठकोंके अ-
 वलोकनार्थ उद्धृत करता हूँ । सन् १८९९ ई. में
 जब कि उनकी अवस्था ७६ वर्षकी थी, लिखते
 हैं कि मेरी अवस्था इस समय ७६ वर्षकी है ।
 मुझे अफसोस है कि मेरे लिये इस समय
 इतना वक्त नहीं है जो कि मैं इस विषयमें
 सविस्तर वर्णन कर सकूँ परन्तु कुछ थोड़ासा
 मैं आपके सामने वर्णन करता हूँ उससे सहजमें
 ही यह जान सकते हैं कि लोगोंको पुराने
 भारतवर्षका कैसा मिथ्याहाल मालूम हुआ
 है । प्राचीन भारतवर्षमें एक ही मन फिलो-
 सफी (Philosophy) नहीं थी, बल्कि अनेक मत
 और अनेक प्रकारकी फिलोसफी थी । जिनकी
 संख्या ३६३ या इससे भी अधिक थी । ठीक
 २ संख्या तो कौन बनला सकता है ? ऐसी
 दशमें कौन कह सकता है कि जैनमत



बौद्धमतकी शाखा, तथा ब्राह्मण मतसे निकला हुआ है। और यह भी किस तरह कह सकते हैं कि जैनियोंने कपिल, कणाद, पतंजली, गौतम, व अन्य महात्माओंकी नकल की है। यह कथन उक्त महाशयने ७६ वर्षकी अवस्थामें किया था। शोक है कि यह महा विद्वान् जैन मतको नहीं जान सके, उनकी सारी, उम्र वैदिक और बौद्ध मतके प्रकट करनेमें व्यतीत हुई। इस जैन मतके पढ़नेके लिये समय न मिल सका। इस महा-विद्वान्ने एक स्थान पर यह भी लिखा है कि जितना २ अधिक मैंने दर्शनोंका अध्ययन किया उतना ही अधिक विज्ञानवेत्ता विद्वानोंकी सचाईका मुझे विश्वास हुआ कि पट्टदर्शनोंमें पारस्परिक भेद होनेके पूर्वकालमें जातीय वा प्रिय तत्त्वज्ञानकी फिलासफी (Philosophy) सामान्य पूंजी थी अर्थात् तत्त्वज्ञान संबंधी विचार तथा भाषाका भूतकालमें एक मानसरोवर था जिसमें प्रत्येक ज्ञानवान पुरुष अपने मनोरथ सफल कर सकता था। इनके सिवाय बुहलर (Buhler) और जैकोबी (Jacobi) इन दो विद्वानोंने बौद्धमतके ग्रंथोंको देखकर पीछे यह सिद्ध कर दिखाया है कि जैन मत बौद्ध मतकी शाखा नहीं है। उन ग्रंथोंमें यह लिखा है कि यह निर्ग्रन्थोंका मत है जो कि बुद्धसे भी पहले मौजूद था। बौद्धग्रंथोंमें महावीर स्वामीको केवल निर्ग्रन्थोंकी सुनिया लिखा है। यह नहीं लिखा कि महावीर निर्ग्रन्थ मतके चलने वाले थे। इस प्रकार बौद्ध ग्रन्थोंसे तथा पाश्चिमीय

विद्वानोंकी खोजसे यह निर्विवाद सिद्ध हो चुका है कि जैन मत, महावीर स्वामीसे भी पहलेका था। और इस मतके चलानेवाले ऋषभदेव थे। इस बातके अनेक प्रमाण वैदिक ग्रन्थोंमें भी मौजूद हैं। इस समीचीनताको सिद्ध करनेवाले प्रमाण, वैदिक ग्रंथोंसे किसी समय फिर मैं पाठकोंकी सेवामें अर्पण करूंगा। जिन महाशयोंका यह श्रद्धान है कि बौद्धमत, जैनमतसे पूर्वका है या जैनमत इस बौद्धमतकी एक शाखा है वे महाशय इस भ्रम कल्पनाके उपरोक्त प्रमाणोंसे अपना भ्रम निवृत्ति कर सकते हैं। यह अल्प लेख मैंने पुस्तकोंसे सर्व साधारण जनताके लाभार्थ लिखा है। मैं आशा करता हूं कि विद्वज्जन इसे पढ़कर विचार करेंगे और इस प्राचीनताको अन्य दर्शनोंसे स्वयं अनुभव करके स्वतः विचारोंको जैन समाचारपत्रोंद्वारा प्रसार करेंगे। उन्नतिपथप्रदर्शक अनुभवी महानुभावोंको इस ओर ध्यान देना परमावश्यक है। इत्यलम्।

बोध !

अरे ! शिर भार, धर्मो अवतार;
 युवानीना भदा भदभां (२) अरे !
 'पडे उन्ही', सभयवर्ता;
 नीडाणी ने—युवानीभां (२) अरे !
 जेसे जेथुं पापपथुं, युवानी भदभां नय-
 नरा नेदाभां आपथे, धर्म नदि सभयव-
 द्यु नगी, पिय नगी, अरी देई आयुने;
 अरे पियार, सारासार, दिनारे येथरो तो नाय. अरे
 स्नेहदागी.



सेठीजीका कष्ट ।

जयपुर जेलसे छुटकर सेठीजी वेडोर फेंक दिये गये और उनका परिवार उनके साथ रखा गया, परन्तु नीम मीठा नहीं हुआ । अधिकारियोंकी चोटोंसे सेठीजीका छुटकारा नहीं हो सका । बलबलाते तेलसे निकलकर यदि सेठीजी अग्निमें गिरे तो लाभ ही क्या हुआ । धर्मसेवीका अपराध किसीने आज तक सुंह खोलकर न बताया । धृष्टता यहां तक बढ़ी कि, एक अहिंसार्धम पालकके कोमल हाथोंमें लोहेकी बेड़ीयां तक पहनायी गयीं । विद्वान्को चोर डाकूकी तरह अपना जीवन विताना पड़ा । जिसने अपने जीवनमें कभी किसीका अहित नहीं किया, आज वह भी जेलमें धांसा गया । क्या कहा जाय ? बढ़ी विचित्र अवस्था है । निर्धन और निस्सहायकी सुनायी न तो शासकोंमें और न प्रजामें ही है । जैनजातिपर उदासीनताका पर्दा पड़ा हुआ है । वह कभी चेतगी भी नहीं क्योंकि, वह चाहती नहीं कि, धनके सिवा जातिको और कोई उत्तम वस्तु मिले । अभाग सेठीजीके साथ उनकी अबला पत्नी और चार भासुं बच्चोंको भी पिस जाना पड़ा । बेचारोंके दिन कैसे बितते होंगे यह वही विचार, जिसने कालकोठरीकी हवा खायी हो । अपरिचित स्थानमें मन्त्रोंकी शिक्ता बनने हुए, खांसी बुखारका सामना करते हुए, एक बन्द मकानमें जीवन बिताना एक परोपकारी सज्जनकी धर्म-पत्नी और बच्चोंके माग्यमें बड़ा है । जातिका

हृदय यदि इन बातोंको सुनकर भी नहीं पसी-जता तो अहिंसा धर्मकी ढेर मचानेवाली जाति अब जिन्दा नहीं ।

जातिका रत्न बिना किसी कारण क्यों दुःख पा रहा है । इस बातको लेकर जैनसंसार क्यों नहीं आवाज उठाता ? क्या कुत्तेकी तरह पेटभर लेना ही जीवनका उद्देश्य है । डा दिये जायें वे महल और जड़से उखाड़ दिये जायें वे वागवगीचे जिनमें मजा लूटनेवाले अपने जाति भाईके दुःख नहीं सुन सकते । सेठीजीके विचार धर्मके अंशोंसे भरपूर हैं । जैनसंसार क्यों नहीं स्वतन्त्र जांच करानेका उद्योग करता । सेठीजी और उनका परिवार क्यों राम सीताकी तरह कठिन वनवास सेवन कर रहा है । यदि जैनी अपने उद्योगसे सेठीजीको न छुड़ा सके अथवा उनकी जांच करानेमें असमर्थ रहे तो यह कलंक कभी न धुलेगा । सेठीजीके कष्ट और उनके परिवारकी वेदनासे हिन्दू हृदय विच जाना चाहिये । ठंडी आहके तीर छाती फाड़कर निकल जाने चाहिये । सेठीजीके हाथोंमें जिसने बेड़ी पहिनायीं वह भी बिना कारण बताये कड़ेसे कड़े दंडका भागी है ; जब सेठीजी पर फोनदारीका कोई मामला नहीं फिर कैसे दुस्साहस किया जाता है कि, वे बेड़ियोंसे जकड़े जायें । जैनियोंको कर्तव्यशील होकर सेठीजी और उनके परिवारको व्यर्थके कष्टसे मुक्त कराना चाहिये इसी जातीय हिन है । सरकारको भी असन्तोषक आग नहीं भभकानी चाहिये । विश्वस्त मनुष्योंसे



वचन लेकर सेठीजीको स्वतंत्रता प्रदान करदी
जाय । यदि जयपुर दरबारकी यह कारतूत है
तो उसे प्रजाके मतका आदर करना सीखना
चाहिये । हठ बुरी होती है ।

‘ विश्वामित्र ’ (कलकत्ता) से उद्धृत ।



(ले० पं० उमरावसिंह न्यायतीर्थे ।)

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरणको,
मुक्तिमार्ग सचा जानो ॥
तत्त्वार्थकी दृढ़ श्रद्धाको,
सम्यग्दर्शन पहिचानो ॥१॥
अथवा देव, शास्त्र, गुरु श्रद्धा,
सम्यग्दर्शन कहलाती ॥
तीन मूढ़ता अष्ट मान विन,
अंगाष्टक—युत जव भाती ॥२॥
वीतराग सर्वज्ञ हितैषी,
होकर जो उपदेश करे ॥
वही हमारा सचा स्वामी,
भव—सागरसे पार करे ॥३॥
पूर्वापर विरोधसे वर्जित,
जो जग—हित उपदेश करे ॥
आप्त रचित अरु कुमत विदारक,
शास्त्र मोक्ष—मार्ग उचरे ॥४॥
विषयोंकी आशा नहिं भिनके,
अरु आरंभ परिग्रह हीन ॥
इस गुरु हैं वंश जगत्में,
ज्ञान-ध्यान, तपमें लालीन ॥५॥

देव मूढ़ता, लोक मूढ़ता,
गुरु प्रमूढ़ताको त्यागो ॥
देव राग विन, गुरु कपाय विन,
जो हो उसमें चित्त पागो ॥६॥
पूजा, ज्ञान, जाति, तप, कुल, बल,
वष्टु कद्वीका मद त्यागो ॥
मार्दव भाव हृदयमें धरकर,
स्वात्म गुणोंमें चित्त पागो ॥७॥
शंका, कांक्षा, विचिकित्सा अरु,
मूढ़ दृष्टिका त्याग करो ॥
उपगूह स्थितिकरण प्रभावन,
वत्सलता शुभ भाव धरो ॥८॥
जीव अजीव बंध अरु आखव,
संकर निर्जर शिव भावो ॥
सप्त तत्वका ज्ञान प्राप्त कर,
सम्यग्ज्ञानी बन जावो ॥९॥
विभ्रम संशय और विपर्यय,
रहित ज्ञान सचा मानो ॥
न्यूनाधिकता रहित वस्तु जो,
जैसी हो तैसी जानो ॥१०॥
हिंसा, चोरी, झूठ, परिग्रह,
अरु मैथुनका त्याग करो ॥
एक देश धावक घत पालो,
सकल रूप मुनि—धर्म धरो ॥११॥
पंच अणुव्रत, तीन गुणव्रत,
अरु शिखाव्रत चार धरो ॥
पंच पंच अतिचार टालकर,
तीन शक्यका त्याग करो ॥१२॥
दर्शन व्रत सामायिक प्रौढ,
सचिन रात्रि—मुक्ती त्यागी ॥
ब्रजचारि, आरंभ—परिग्रह,
अनुमति अरु उद्विष्ट त्यागी ॥१३॥

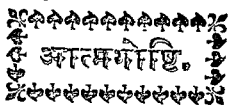


पूर्व पूर्व युत अग्रिम अग्रिम,
 एकादश प्रतिमा धारी ॥
 श्रावक अन्त समाधि मरण कर,
 करता जीवन सुखकारी ॥१४॥
 पंच महाव्रत, तीन समिति अरु,
 तीन गुप्ति पालन करके ॥
 दशवा धर्म पाल, सुनिव्रत धर,
 द्वाविंशति परिपह सहेके ॥१५॥
 सामायिक छेद्रोपस्थापन,
 अरु परिहार छुद्धि धरके ॥
 सूक्ष्म कपाय तथा यथाख्यात,
 संयमको पालन करके ॥१६॥
 अनन्त चतुष्टय तेरहमें धर,
 चौदहमें त्रियोग हरके ॥
 अनादि कर्मबन्धनको काटो,
 “अमर” सुरलव्य धरके ॥१७॥

वाल विवाहका फल ।

माता पिताने मुझको, दुलहन बनाके मारा ।
 दो दिन बहार गुलशन, मुझको दिखाके मारा ॥
 अंगमें मेरे था बटना, मातमका वस लगाया ।
 बाली उमरमें खूनी, महदी लगाके मारा ॥
 मैं तोड़ देती कंगना, होना जो होश मुझको ।
 वस मेरे हाथ कोरा, कंगना बंधाके मारा ॥
 हाथ हाथ शुहागरा सुख, मैं देख भी न पाई ।
 प्रीतम मेरे सिधारे, मुझको सुनाके मारा ॥
 शहरके फूल ताजा, मुरझाने भी न पाये ।
 जब तक शोहाग मेरा, थोड़ी चढ़ाके मारा ॥
 फेंकी चोर मैं हूँ, अय ! धर्म वीर-वेशक ।
 नहीं और सुख मैं देखा, दुखने हलाके मारा ॥

सूरजभान जैन-अहूस् (आगरा)



प्रातःकालमां एकांत जगह अने शुद्ध चित्ते
 माला गणी, ए साधनथी मनने एकाग्र करी
 पढी बार भावनारूप आ आत्मगोष्ठि करखी.
 (१) हे जीव ! त्हारी आसपास नजर कर.
 जे जे पदार्थो तूं जुए छे ते अने त्हारा पो
 तामां कोई तक्रावत त्हने जणाय छे ? त्हारी
 आसपासनो दरेक पदार्थ-त्हारी लक्ष्मी-त्हारो
 वैभव, अरे ! त्हारं पोतानुं शरीर ण विजळीना
 परपोटा जेवुं विनाशी छे-अनित्य छे. तूं गमे
 तेउली रखेनाल करीश तोपण ते दरेक पदार्थ
 विनाशी ते विनाशीज छे.

अनित्य छे, नाश पामवानो एनो धर्मज छे.
 ए सर्व विनाशी-अनित्य वस्तुओना वचमां तूं
 एरु आविनाशी-नित्य भूलो पडवाथी आवी
 च्छेड्यो हूं माटे ए नाशवंत वस्तुओमां मोह
 न पामतां तूं आविनाशी एवा त्हने पीछान.
 आ क्षणना प्रसंगमां न राच.

(२) हे जीव ! जो तूं अविनाशी-नित्य
 एवा त्हने पीछानवा श्रम नहि ले तो नकी
 मानजे के नाश माटेन निर्मायली ए वस्तुओना
 नाश के वियोगथी त्हने यतां दुःखोमां दिलासो
 कोई रीते नहीं मळे. अने ज्यारे तूं ए वची
 चीजोने छेली सत्ताम बरी हमेशेने माटे चाली
 नीरुळीश त्यारे तने शरण देखा कोई नहीं
 नीरुळी आने. अविनाशी एवा 'पदार्थ'ने अथवा
 आत्माने जाणना रूप जे 'धर्म' एन त्हारो संगो
 यगे माटे शरण सगुं के संबंधी जो त्हारे



जोईतुं होय तो अविनाशी एवा त्हारा आत्मा-
नेज शोधी एना शरणे जा.

(३) हे जीव ! हमणा तुं जे जे वस्तुओमां
आनंद मानी रह्यो छे ते वस्तुओ-अने तेथी-
पण वधारे खंचाण करनारी वस्तुओ तुं अनेक-
वार पाम्यो छे. दरेक चीजना भोक्ता तरीके
अने दरेक प्राणीना सगा तरीके सर्व प्राणी
पदार्थ साथे त्हें अनेकवार संबंध जोड्यो छे.
पण कोई संबंध टकी शक्यो नहोतो. माटे
कोई प्राणी के पदार्थना मोहमां दीवानो थई
अविनाशी एवा निजरूपने भूलीश नहीं. एवी
भूलथीज तुं अपार एवा संसार-समुद्रमां आदि
वगरना काळथी भम्या करे छे. अने भ्रमणथी
उद्भवतां दुःखो परवश पणे सहन करे छे.
माटे ए दुःखोमांथी मुक्त थवुं होय तो संसार-
मां आवी पड्या छतां विरक्त पुरुष माफक
वर्त. जळ कमळवत् बनी जा.

(४) हे जीव ! तुं एकलो छे. एकलो आब्यो
हतो अने एकलो न जईश. एक वर छोड़ी बीजे
घेर जती वखत पहेला घरवाळुं कोई पण
सगुं त्हारी साथे आब्युं नथी अने आवश
पण नहि. ए सगाने मदद करवा माटे तें करेला
पापोनुं फळ भोगववा वखते पण कोई आड़ो
हाथ देवा नहीं आवे; तो एवो राग-एवो
संबंध-एवी मैत्री त्हाळुं शुं छीलुं करनार छे ?
तुं त्हारा पोतामांज मित्र मेळव. निजरूपथीज
सगाई कर.

(५) हे जीव ! जुए त्हारा शिवाय तुं जे
काई छे, न बंधु त्हाराथी अलग्न ममजने.
क्षण एना समनतो के ग्री त्हारी छे के

पुत्र त्हारो छे. लक्ष्मी त्हारी छे के देह त्हारी
छे. जो एमज होत तो ए लक्ष्मी त्हारा घरमां
आब्या पछी त्हारी हयातिमां बीजुं घर करत ?
ए स्त्री परलोक तो दूर रह्युं पण काष्ठ सुधी
पण त्हारी सोवत करवामांथी जात ? आ
प्रत्यक्ष जोवाता खेल शुं एम नथी स्पष्ट
समजावता के त्हारे आ इंद्रजाळथी निजरूपने
अलग्न मानवुं अने एमां लिप्त न थतां निज
रूपमां दृढ़ रहेवुं ?

(६) हे जीव ! तुं कोने माटे दगा फटका
करे छे ? आ रुपाळा हाडकांना पुतळाने
पोषवा माटे ? जो तो खरो के आ पुतळुं
गंधातुं छे-मळमूत्रथी भरेलुं छे-क्षण क्षणमां
बगड़ी जाय छे-रोग जरातुं निवास धाम छे.
हवे एने साचवी साचवीने केटलुं साचवीश ?
'खातर ऊपर दीवेल' करतां जरा तो विचार
कर, तुं त्हेने साचववा, सुंदर करवा, हृष्टपुष्ट
करवा हजारो प्रपंच करे छे, हजारो प्रकारनी
हिंसा करे छे; पण ते छतां ते तो त्हेने दगो-
न दे छे. त्हाण खरा खप वखते तें त्हारी
मरजी विरुद्ध लथड़ी पटे छे अने त्हेने फसावे
छे. हवे जो त्हारामां बुद्धि होय तो जेठली
काळजी ए गुणचोर हाडपिनर माटे धरावे
छे, तेठलीज त्हारा पोता माटे-आत्मा माटे
राखे तो अखुट गुप्त खनाना त्हारे माटे खुला
थाय ए निःशंक वाक्ता छे.

(७) हे जीव ! राग-द्वेष-अज्ञान-मिथ्या-
त्व इत्यादि "आश्रव" अथवा त्हारा
आत्मस्वरूपने मळीन करनारां "बलपाट"
छे. प्रतिज्ञा त्हेने ए नवां कर्मोनी लपेटो



નાંજતાં જાય છે. એનાથીજ તું ઝાકડાની માફક વર્તે છે. એનાથીજ ભવ શ્રમણ કરવા છતાં તું પોતાને સુખી માનવાની મુર્ખાઈ કરે છે. માટે એ ચીકણા વઢાળાને ઓઢાવ, — પ્રયમ ઓઢાવ. એમના સ્વભાવથી વાતેફ થા અને પછી એ લાગેલા વઢાળાને દૂર કરવાના તથા હવે પછી ન લાગે તેવા ઉપાય, — ઉપ-મોગ-પરિમોગ આદિની તૃષ્ણા કરી. ઇચ્છાઓને મર્યાદાથી બાંધ; જે કાંઈ ત્હારી પાસે છે ત્હેનો મોહ ઓછો કરી પરમાર્થ એજ ત્હારું સર્વસ્વ માન કે જેથી ‘આશ્રવ’ નો મેલો વઢાળા ઘણે દરજ્જે મોલો પડે.

(૮) હે જીવ ! જો ત્હને સ્વચીત્ત એવી શ્રદ્ધા વેઠી હોય કે રાગદ્વેષથી નવા કર્મોની આવક હમેશાં ત્હારામાં ચાલીજ આવે છે તો તે આવકને રોકવા જ્ઞાન-ધ્યાનમાં આરૂઢ થા । જ્ઞાન-ધ્યાનમાં આરૂઢ થયેલો આત્મા સિંહ સમાન દેખાવ ધારણ કરે છે, જેથી ત્રિચારાં કર્મ તેની આગળ આવી શક્તાં નથી. આગી રીતે જ્ઞાન-ધ્યાનમાં આરૂઢ થવું એનું નામજ ‘સંસાર’ કહેવાય છે.

(૯) હે જીવ ! આત્માને આવતી રાગ-દ્વે-પાદિ કર્મોની આવક વંધ તો કરી પણ પૂર્વે થઈ ચૂકેલાં કર્મોનો સમૂહ ક્ષય કર્યા વગર કાંઈ ત્હારો મોક્ષ છે ? એ કર્મોને કાપવા-નિર્જરવા તપ-સંયમ રૂપ ‘નિર્જરા’ તું શરણું ત્હારે લેવું જોઈએ છે. નિર્જરા પ્રાપ્ત થઈ તપ કરનારો માણસ માન માગતો નથી, કીર્તિ કે ધન ઇચ્છતો નથી, લોકહજાને ગણકારતો નથી, માત્ર આત્માર્થેન જિજ્ઞાસુ કરે છે અને તે ક્રિયા જ્ઞાન માધ્યમ કરે છે. જ્ઞાન સહિત ક્રિયાનુંજ નામ “નિર્જરા છે.”

(૧૦) હે જીવ ! આ પ્રમાણે આવતાં કર્મોને રોકી, થયેલાં કર્મોને નિર્જરી, હવે તું ચૌદ રાજલોકનું સ્વરૂપ વિચાર. અસંખ્યાત દ્વીપસમુદ્રનો સ્વાલ દષ્ટિ સમક્ષ લાવ; અને પછી જો કે આટલા વિશાળ અવકાશમાં ત્હારું ઘર કે તું શા હિસાબમાં છે ? અસંખ્યાત દ્વીપ સમુદ્રની કુદરતની વળી વિચિત્રતા વિચાર અને એમાં તલ્લીન થઈ તું દેહાધ્યાસ અને હુંપડ છોડ.

(૧૧) હે જીવ ! વૈરાગ્ય પ્રાપ્ત કરાવનારી ઉપલી ૧૦ ભાવના ભાવ્યા પછી તું વિચાર કે હવે શાંત પડેલા ત્હારા જીવે શું કરવા જેવું છે અને શું છોડવા જેવું છે ? આ નિર્ણય ત્હને “સમ્યક્ત્વ” વગર થઈ શકવાનો નથી. સમ્યક્ ઉટલે સાચા જ્ઞાન વિના ત્હારો આત્મા દોરા વગરની મુઠ્ઠી માફક પાપ પૂંજમાં-અજ્ઞાનમાં ધોવાઈ જાય છે અને જશે, માટે સમ્યક્ત્વ પ્રાપ્ત કર. એજ સમ્યક્ત્વ ભાવનાથી મરતે મોક્ષ પ્રાપ્ત કર્યું છે.

(૧૨) હે જીવ ! જ્ઞાન પામ્યો પણ તે સાર્થક તો ત્યારે કહેવાય કે જ્યારે જ્ઞાનને વ્યવહારમાં મૂકે અર્થાત્ ધર્મ આચરે. સર્વ પ્રાણીને પોતા સમાન ગણવા જેટલી પાયરીચે આવવું અને સર્વને સાતા પમાડતાં શીખવું એજ ધર્મની સાફલ્યતા છે. માટે એવો ઉત્તમ ધર્મ ધારણ કર કે જેથી બીજાને સાતા ઉપજાવનાર એવા ત્હને અલંકાર-નિરામાય-અમિશ્ર સાતા ઉપજે. એકેક માનના જ્યારે વેલો પાર કરવા સમર્થ છે તો ચારે ભાવના મુલુવાલાના મોક્ષમાં શું સંશય ?

સુનીમ ધરમચંદ હરજીવનનાસ
પાલીતાના ।



जिस प्रकार मनुष्योंको सांसारिक कार्योंमें भाग लेनेकी आवश्यकता है, उससे अधिक शारीरिक स्वास्थ्यपर ध्यान देनेकी आवश्यकता है । संसारके प्रत्येक कार्यको वही मनुष्य योग्य रीतिसे संपादन कर सकता है जो कि शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्यसे संयुक्त हो । जो मनुष्य सरोग हैं उनको अपना जीवन भार स्वरूप मालूम होता है । और भी संसारके जितने सुखकार्य हैं वे भी प्रायः बुरे ही लगते हैं । वास्तवमें मनुष्य-रूपी वृक्षको ठहरनेके लिये निरोगतारूपी जड़की अत्यावश्यकता है । हम जो कि शास्त्रोंमें सुनते हैं कि अमुक मनुष्य इतना बलिष्ठ था, अथवा कान्तिमान था, इसका कारण यही है कि वे उन नियमोंकी तरफ भी नहीं जाते थे जो कि मनुष्यके स्वास्थ्यको हानिप्रद हैं किन्तु इसके विपरीत अर्थात् (१) प्रकृत्यानुसार भोजन करना, (२) शास्त्र विहित नियमोंका पालन करना, तथा (३) स्वास्थ्योपयोगी शास्त्रका अध्ययन करना इत्यादि । इन नियमोंको पालनेसे मनुष्य ऐहिक लौकिक सुखको भोगने हुए पारलौकिक सुखको भी क्रमशः प्राप्त कर लेते हैं । यही तो कारण था कि भारतवर्ष पुरावित्यामें सब

देशोंसे शिक्षा, कलादिमें बड़ा बढ़ा था । अपनी धनसंपत्तिसे अपने ही को नहीं बल्कि विदेशियोंको भी पोषण करता था । परंतु शोक ! और महाशोक ! वही भारत आज उन शारीरिक स्वास्थ्योपयोगी नियमोंको न जानकर कितना अवःपतनको प्राप्त हुआ है कि जिसका पारावार नहीं । इसके अतिरिक्त हमारा धन, बल, शरीर भी क्षीण (निसत्त्व) होता जा रहा है । शास्त्रोंमें लिखा है कि 'धर्मार्थकाममोक्षानामारोग्यं मूलमुत्तमम् ।'

अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार पुरुषार्थोंमेंसे निरोगता ही श्रेष्ठ है क्योंकि उसके होनेपर ही चार पुरुषार्थोंको कर सकते हैं । मनुष्यका भोजन ही जीवनावार है । सबसे पहले यह भोजन जब कि सुखके अन्दर जाता है तब उसकी चर्चण करनेकी आवश्यकता पड़ती है । योग्य रीतिसे चर्चण किया हुआ भोजन आमाशय (नाभिस्तनाऽन्तरं जन्तोरामाशयः) में जाकर बहुत जल्दी पच जाता है और वह क्रमशः (रसाष्टङ्मांसमेदोऽस्ति मज्जाशुक्राणि घातवः) सप्त घातुओंमें परिणत हो जाता है । यदि वह भोजन योग्य एवं प्रकृत्यानुसार हुआ तो शारीरिक संघियोंको दृढ़ एवं बलिष्ठकारी होता है । और यदि मिथ्या हो तो उसके द्वारा ज्वरादि हो जाते हैं । इसीके विषयमें भाषव निदानम् लिखा है कि—मिथ्याहारविहाराम्यां, दोषाद्यामाशयाध्रया; वहिर्निरस्य कोष्ठाग्निं ज्वरदाः स्युरस्तज्जुगाः ! अकाले चानिवाप्रघ्न, असात्म्यं यच्च भोजनम्, विप्रमाशनञ्च यद्भक्षं,



मिथ्याहारः स कथ्यते (२) अशक्तः कुरुते कर्म शक्तिमात्र करोति च । मिथ्याविहार-मित्युक्तं, सदा चैव विवर्जयेत् ॥ २ ॥

अर्थात् मिथ्या आहार और विहार इन दो कारणोंसे कुपित हुए वात, पित्त, कफ, आमाशयमें प्राप्त होकर रसादि घातुओंको विगाड़ते हैं और कोठके अग्निकी गरमीको बाहर निकाल कर ज्वरादि बीमारियोंको पैदा करते हैं ।

ज्वर, कोई साधारण बीमारी नहीं है यह बीर २ बड़ता हुआ अन्तिम समय असाध्य अथवा कष्ट साध्य हो जाता है । जिस आत्माके ऊपर इसका अधिकार नम जाता है तो यह दुष्ट उस मनुष्यको अपना भोग्य बनालेता है । इसलिये हमारा कर्तव्य है कि हम उसके पास ही न जावें । मैं इस बातको जोरसे कहूंगा कि जो मनुष्य पथ्य भोजन करनेवाले हैं और उसके साथ २ व्यायाम भी करते हैं तथा जितेन्द्रिय हैं वे कभी किसी कालमें भी बीमार नहीं हो सकते । किसी ग्रामीण मनुष्य या स्त्रीको वैद्य या डाक्टरकी आवश्यकता नहीं पड़ती क्योंकि उन्हींके योग्य परिश्रमकेद्वारा प्रतिदिनका भोजन योग्यरीतिसे परिपक्व हो जाता है और रस घातुओं रूप परिणत होकर उन मनुष्योंके शरीरको दृढपुष्ट बना-
ता है । जिन्होंने गृहमें भी दुग्धादिकी कमी नहीं है और जिन्होंने शारीरिक परिश्रम भी नहीं करना पड़ता है ऐसे मनुष्योंको हम सरोज और दुःखित जीवनसे परिपूर्ण देखने हैं इसका प्रधान कारण यदि वास्तवमें देखा

जाय तो सिर्फ मिथ्याहार ही है । वास्तवमें जो मनुष्य निरोग होकर जीते हैं उन ही का जीवन कहा जा सकता है । और वे ही मनुष्य वास्तवमें जीते हैं और वे अन्य भवमें जानेंके लिये कलेवा भी लेजाते हैं । अल-मिति । वारि हंम इव क्षीरं, सारं गृह्णाति सज्जनाः, वादीभसिंहः ।

हरप्रसाद वैद्य, स्या० म० काशी ।

नये २ ग्रन्थ ।

रत्नकरंडश्रावकाचार (तीसरीवार)	९)
पुण्याश्रव कथाकोष (दूसरीवार)	३)
आदिपुराण (भाषा टीका सहित)	१६)
प्रतिष्ठासारोद्धार (प्रतिष्ठापाठ)	२)
महावीर पुराण १॥॥ हरिवंश पुराण ६)	
अर्थप्रकाशिका (सूत्रजीकी सरल टीका) ३॥॥	
तीस चौबीसी पूजा (वृंदावनकृत) १॥॥	
मोक्षमार्गकी सच्ची कहानियाँ १॥॥	
जैनार्णव १) श्रीपालचरित्र १॥॥	
बुधजन सतसई १॥॥, भक्तामर कथा १॥	
गोमटसार टीका कर्मकांड और जीवकांड ४॥॥	
श्री श्रेणिक चरित्र १॥॥	
नेमिनाथ पुराण २), चंद्रप्रभ चरित्र १)	
प्राचीन जैन इतिहास (प्रथम भाग) १॥॥	
सुभाषितरत्नसंदोह २॥॥	
तत्त्वज्ञानतरंगिणी १॥॥	

इनके सिवाय सब जगहके छोटे बड़े जैन ग्रन्थ मिल सकते हैं । कमसे कम पाँच-छह के ग्रन्थ मगानेसे फी रुपया एक आना कमीशु भी दिया जाता है ।

मिठनेका पता-

भैनेर, दि० जैन पुस्तकालय, खैरत।



सेठी अर्जुनलालसे

मेरी भेंट ।

सेठीजीको नज़रबंद हुए तीन वर्षसे ऊपर हो चुके, परंतु जनताको अभी तक यह भी पता नहीं कि वे नज़रबंद हुए किसके द्वारा। जब भारत सरकारसे पूछा जाता है तब यही उत्तर मिलता है कि इस काममें हमारा कुछ भी हाथ नहीं है, किंतु जैपुर सरकार ही इस बातकी उत्तरदाता है। जब जैपुर सरकारसे पूछा जाता है तो वहांसे कोई उत्तर नहीं मिलता। अबतक जितने नज़रबंद हुए हैं उनमेंसे सेठीजीका मामिला अपने ढंगका बिल्कुल नया है। कुछ भी हो इस मामिलेसे अंग्रेजी सरकार सम्बंधित नहीं ऐसी कल्पना नहीं की जा सकती। यदि यह मामिला बिल्कुल स्टेटसे ही सम्बन्ध रखता है तब भी अंग्रेजी सरकारको इसमें हस्तक्षेप करना चाहिए। कानूनके अनुसार अन्यायको न रोकना भी अन्याय है। इसी नीतिके अनुसार यदि इस मामिलेमें जैपुर सरकार ही बिल्कुल उत्तरदाता है, तब भी अंग्रेजी सरकारको सेठीजीके प्रति जो अन्याय हुआ उसको व्यक्तिगत न समझकर समानगत होनेसे ख्याल करना ही था, परंतु ऐसा नहीं हुआ।

सेठीजी नवम्बर माससे वेल्होर सेंट्रल जेलमें नज़रबंद हैं। इससे जनता यह अनुमान करती होगी कि इस मामिलेका सम्बन्ध अंग्रेजी सरकारसे ही है, परंतु जैसा हमको वेल्होरके सरकारी अफ़सरोंसे मालूम हुआ, अब भी

यह मामिला जैपुर सरकारसे ही सम्बन्ध रखता है। सेठीजीसे मिलने आदिकी आज्ञा जैपुर दरबार द्वारा ही प्राप्त होती है। सेठीजीका वेल्होर जाना भी उन नियमोंके आधारपर है जो अंग्रेजी सरकार और रियासतके बीचमें मुद्दत हुए, तय हो चुके हैं।

जनता इस बातके जाननेको बड़ी उत्सुक होगी कि सेठीजीको जैपुरसे वेल्होर क्यों भेजा गया और जानबूझकर उनको इस कष्टमें कि वे ५६ दिनतक निराहार रहें क्यों डाला गया? इसका कारण सेठीजीको स्वयं कुछ नहीं मालूम और न किसी रीतिसे मालूम ही किया जा सकता है।

हम नीचे वह सब मामिला ज्योंका त्यों लिख देना उचित समझते हैं जो १ जनवरीसे २५ जनवरी तक सेठीजी अथवा उनके कुटुम्ब और जैपुर दरबारके बीचमें हुआ।

१ जनवरीकी शामको हम जैपुर पहुँचे। उसी गাড়िसे सेठीजीकी स्त्री और बाल बन्धव वेल्होर जानेके लिए तैयार थे। जैपुर स्टेटकी ओरसे कुछ सज्जन फ़ैरफार्म पर उपस्थित थे। सेठीजीके कुटुम्बके जानेके लिए चार सैकंड-क्लास टिकिट खरीद कर स्टेटकी ओरसे उनको दे दिए गए। ये टिकिट सेठीजीकी स्त्री और उनके चार बालकोंके लिए थे। स्टेटने इतना कुछ प्रबंध नहीं किया था कि उनके साथ किसीको जाना चाहिये या नहीं। इसी कारण उनको वे सब कष्ट उठाने पड़े जिनका परे निकर हो चुका है। हम उनको दोहरा कर केवल इतना कह देना उचित



मते हैं कि थर्ड क्लासमें भी विशेष कष्ट सहते हुए १० जनवरीके दुपहरको हम काठपादी स्टेशन पहुँचे, वहाँ मजिस्ट्रेटकी ओरसे एक सज्जन स्टेशन पर उपस्थित थे और बटकों (इकों) का तुरंत प्रबंध हो गया। घंटे भरके बाद हम लोग वेलोर पहुँच गए।

ठहरनेका मकान।

यह मकान वेलोर बस्तीसे दो मील जेलसे एक फर्लांग इस ओर सड़कके किनारे पर है। यह स्थान थोरापड़ी नामसे प्रसिद्ध है। वास्तवमें यह एक छोटासा गांव है। यहाँ एक ब्रांच पोस्ट आक्रिस भी है। उस मकानमें जिसमें सेठीजीका कुटुम्ब ठहराया गया है, चार कमरे हैं। दो कमरे हवादार और दो बिल्कुल बंद हैं। इससे मालूम होता है कि वे बंद कमरे सामान आदिके लिए हैं। इस मकानसे दक्षिणकी ओर एक थोड़ासा स्थान घेरके रूपमें इस मकानसे लगा हुआ है। जब हम पहुँचे थे, तब यह मकान साफ किया जा रहा था। इस मकानके पास इधर उधर गलीके छोटे छोटे कुंड हैं जिसकी बजहसे मच्छर बहुत पैदा होते रहते हैं। मकानमें कोई ज़रूरी सामान मौजूद नहीं था। सेठीजीका कुटुम्ब इतनी दूर जानेंके कारण वरका ज़रूरी सामान भी नहीं लेजा सका। इसलिए उनको बड़ी दिक्कतमें पड़ना पड़ा और २५ जनवरी तक जब तक हम वहाँ रहे, वे अपनी दिक्कतोंकी फ़ीमी प्रणार दूर न कर सके। सेठीजीने स्वयं इन घरेलू कष्टोंको दूर करनेके लिए वहाँके मजिस्ट्रेटको लिख रक्खा

है और आशा है कि वे शीघ्र प्रबंध कर देंगे। यहाँ पर खाने पीनेकी सभी चीज़ें बहुत महंगी मिलती हैं। वी ९ छांटक और आटा ३ सेर मिलता है। इधरके लोग आटा बिल्कुल इस्तेमाल नहीं करते, इसलिए वह बड़ी मुश्किलसे और कभी कभी बिल्कुल नहीं मिलता। उचित खाना न मिलनेसे और मकान योग्य न होनेसे वहाँके स्वास्थ्य-पर बुरा प्रभाव पड़ना प्रारंभ हो गया है। खांसी लगभग सब बालकोंको हो चली है। डाक्टरका अभी तक कोई प्रबंध नहीं हो सका। संक्षेपमें अब सेठीजी नहीं किंतु उनका कुटुम्ब आपत्तिमें पड़ गया और जैपुरकी जनताके हिसाबसे उनका कुटुम्ब भी नजरबंद हो गया।

मिलना जुलना।

सेठीजीकी स्त्री उनसे मिल सकती है। बचे सबेरे ८ बजेसे १० बजे तक उन्हींके पास पढ़ते हैं। १२ बजेके पश्चात् कोई उनसे नहीं मिल सकता। उनके कुटुम्बके सिवाय और किसीको मिलनेकी आज्ञा नहीं है। हमको सरकारसे आज्ञा प्राप्त करनी पड़ी थी तब उनसे मिल सके थे। ऐसी आज्ञा वे किन नियमोंके आधारपर देते हैं या किसको देते हैं, इसका कुछ पता नहीं, क्योंकि श्रीशुत धनदेव नयनार आर्नी निवासी ९ जनवरीको सेठीजीसे मिलनेके लिए आये थे, परन्तु उनको आज्ञा न मिल सका। उक्त सज्जन आर्नीके एक प्रतिष्ठित जैन हैं। आर्नी वेलोर-से २२ मील है। जब हम इधरको वापिस



लौट रहे थे, तब यह भी मालूम हुआ कि मिस हैनकाक एक मिसनरी लेडी भी उनसे मिली थी। हमको नहीं मालूम कि उनको ऐसी आज्ञा कहाँसे और किस प्रकार प्राप्त हुई थी। इसलिए यह नहीं कहा जा सकता कि सरकार किनको उनसे मिलने देना चाहती और किनको रोकना चाहती है।

हमारी भेंट।

जिस दिन सेठीजीके बालकों इत्यादिकी भेंट सेठीजीसे हुई उस दिन हम साथ नहीं थे। हम दूसरे दिन उनसे मिलनेके लिए पहुँचे। मिलनेके पहले हमारे मनमें भांतिके विचार आते और जाते थे। जैसे ही हम जेलके अंदर पहुँचे, फाटकके पास ही एक कमरेमें जानेके लिए सुपरि० जेलमें इशारा किया। हम उसके अंदर पहुँचे ही थे कि सेठीजी दूसरी ओरसे आते हुए मिले। हम शीघ्रतामें कुछ बोलने तक न पाए थे कि सेठीजीने तुरंत हमको गलेसे लगा लिया और आंखोंमें आंसू भर लाए। हमारी आंखोंमें भी पानी भर आया और कोई एक मिनटके लगभग वे हमको और हम उनको देखते रहे। प्रेमसे कहिए या अच. रजसे हम यार्तालाप न कर सके। अंतमें सेठीजीने सुपरि० जेलसे हमारे परिचयके शब्द कहकर उस मौनको तोड़ा और तत्पश्चात् हमसे सेठीजी समाजकी अवस्था और खास खास सज्जनों/कुशलक्षेत्र पृष्ठते रहे। उनको पंडित गोपालदासजीकी ग्युलू भी कुछ पता नहीं था। इस प्रकार हाट सुनकर

उनको बड़ा दुःख हुआ और बहुत देर तक रोते रहे। इसी प्रकार बहुत देर तक बातें होती रहीं और उनको कई स्थलोंपर बार बार रोना पड़ा। हम नहीं समझते कि हमने उनसे भेंट करके उनको सिवाय दुःख पहुंचानेके और क्या किया ?

सेठीजीके विचार।

पहिले दिन तो हम केवल उनके प्रश्नोंका उत्तर देते रहे परंतु उनसे कोई बात न पूछ सके, परंतु चलते समय एकदिन हमको थोड़ासा अवकाश और मिला और हमने उनसे निम्न-बातें पूछी थीं:—

प्रश्न १. जैपुरसे यहां आनेमें आपको किसी प्रकारका कष्ट तो नहीं हुआ।

उत्तर—मैं कष्ट सहते सहते कष्टको समझना ही भूल गया हूं। हां! यह मैं जानता हूं कि मुझको जैपुर कारागारसे रात्रिको १२ बजे बाहर मोटरमें बिठलाया गया। मेरे हथकड़ियां, डाल दी गईं और उसी रूपसे मैं स्टेशन सांगानेर (जैपुरसे दूसरा स्टेशन) ले जाया गया। वहां मैं सैंकंडक्लासमें बिठलाया गया। और सरकारी अफसरोंके सुपर्द हुआ। अवनक रात्रिके अफसर मेरे साथ थे। रेलमें जब मैं एक स्टेशन चढ़ चुका, तब मैंने सरकारी अफसरोंसे पूछा कि मैंने ऐसा कौनसा अपराध किया है जो मेरे हथकड़ियां डाल दी गईं हैं। बहुत कुछ समझानेके बाद उन्होंने मेरी हथकड़ियां तोल दीं और फिर मैं उसी रूपसे बेहोर लाया गया। जब मैं यहां आया तब मेरी तयियन कुछ खराब थी



इसलिये मैं कुछ देर जेलके बाहर ही लेटा रहा। थोड़ी देरके बाद मैं जेलके अंदर दाखिल हुआ और जवसे अतक जेलकी परिधि ही मेरी दुनियां है।

प्रश्न २—यदि सरकार आपको इस समय छोड़ दे तो आप आगामी किस कार्य-क्षेत्रमें प्रवेश करेंगे ?

उत्तर—अब मेरा विचार शिक्षाक्षेत्रमें प्रवेश करनेका नहीं है। मैं आगामी जीवन धर्मप्रचार-में किताना चाहता हूँ। मेरी बड़ी अभिलाषा यह है कि मैं अहिंसाधर्मका प्रचार प्रथमतः अपने मुसलमान भाइयों और तत्पश्चात् ईसाई भाइयोंमें करूँ। कुरान मजीदमें ऐसी बहुतसी आयतें हैं जिनसे मुझे अपने कार्यमें बड़ी सहायता मिलेगी। आप जहां तक हो सके शीघ्र अर्बोंकी स्वयं शिक्षक पुस्तकें भिजवानेका प्रयत्न कीजिए।

प्रश्न ३—क्या आपने कोई पुस्तक लिखी है या लिखनेका विचार है ?

उत्तर—मैंने नोट अलबत्ता किए हैं। पुस्तक कोई नहीं लिखी, परन्तु लिखनेका विचार है। इस विचारकी पूर्ति तत्काल नहीं हो सकती जब तक कि मुझको एक गोमटसारका पाठी पंडित मेरे साथ रहनेके लिए मुझे न मिल जाय। यदि ऐसी आज्ञा मुझको मिल गई तो मैं यह सेवा करनेके लिए बिल्कुल तैयार हूँ।

प्रश्न ४—क्या आप पद्योंमें धार्मिक लेखन के लिए तैयार हैं ?

उत्तर—हां, इसके लिए मैं बिल्कुल तैयार हूँ।

प्रश्न ५—इस समयकी अवस्थाके अनुसार जैनसमाजका सबसे पहला कर्तव्य क्या होना चाहिए ?

उत्तर—जैनसमाजको इस समय सब कामोंको छोड़कर रेडक्रास सोसायटीका हाथ बटाना चाहिए। इस कार्यके लिए उनको स्वयं अपनी सेवा समिति तैयार करनी चाहिए। उसके मन बल, और धनबलका बिल्कुल स्वयं प्रबंध करना चाहिए।

इन प्रश्नोंके अतिरिक्त हम उनसे अनेक धार्मिक शंकाएँ पूछते रहे और उचित उत्तर पाते रहे।

सेठीजीका समय विभाग ।

सेठीजी प्रातःकाल उठकर साढ़े सात बजे तक नित्यकर्म और पूजा इत्यादिसे लुट्टी पालेते हैं। साढ़े सात बजेसे दस बजे तक वे बालकोंको शिक्षा देते हैं। १० बजेसे १२ बजे तक वे फिर पूजा करते हैं और तत्पश्चात् भोजन करते हैं। १२ बजेसे शाम तक वे लिखने पढ़नेमें लगे रहते हैं। कविता करनेका उन्हें खास शौक है। वे खड़े खड़े पूजाके समय नवीन पद्य बोला करते हैं। परमात्माकी स्तुति उनके पद्योंका मुख्य विषय रहता है। कभी कभी देशभक्ति पर भी कविता करने लगते हैं परन्तु वे उन सब पद्योंको लिखते नहीं जाते हैं और न ऐसा कर ही सकते हैं। रातको वे बहुत ही कम सोते हैं। विचारों, श्रृंखलाके कारण उनको नींद ही नहीं आती। इससे उनको अवश्य सुस्तिमान पहुँचेगा। समाजको



चाहिए कि वह इसका उचित प्रबंध करानेके लिए योजना करे ।

कार्यका ढंग (तरीका) ।

(लेखक नाथूराम सिंघई लखनऊ ।)

सेटीजीके बच्चोंकी शिक्षा ।

समानको यह जानकर प्रसन्नता हुई होगी कि सेटीजीके बालकोंकी शिक्षाका कार्य सेटीजीके हाथमें आगया है; परंतु हमारे लिए यह प्रसन्नताकी बात नहीं है। हम नहीं समझते कि सेटीजी स्वयं इस प्रकार विचारोंमें निमग्न रहते हुए कैसे अपने बालकोंको शिक्षा दे सकेंगे। थोड़ी देरके लिए यह मान लिया जाय कि वे ऐसा कर सकेंगे तब यह तो किसी प्रकार समझमें नहीं आता कि वे उन सब विषयोंको जिनकी आजकलके समय बालकको आवश्यकता होती है, समुचित शिक्षा दे सकेंगे। हमने सेटीजीसे स्वयं इस विषय पर प्रश्न किया था तो हमें उत्तर मिला कि वे बहुत जल्दी अपने बालकोंके लिए किसी अध्यापकका प्रबंध हो जानेंके लिए प्रयत्न करेंगे।

उपर्युक्त नोटसे समानको यह भली भांति विदित होजाना चाहिए कि सेटीजीके बालकोंकी शिक्षाका अभी तक उचित प्रबंध नहीं हो पाया। सेटीजी पर हुआ अन्याय उनके बालकोंको भी सहना पड़ रहा है। इसलिए समानको सेटीजीको मुक्त करानेके लिए और भी जोरके साथ प्रयत्न करनेकी आवश्यकता है।

भगवानदीन—अजिताश्रम, लखनऊ ।

कार्यका ढंग उसे कहते हैं जिससे सर्व प्रकारकी असुविधा दूर होजाय। प्रकृतिमें प्रत्येक वस्तु यथास्थान पाई जाती है अतः उसको अपने कार्यमें किसी प्रकारकी बाधा नहीं आती। यदि प्रकृतिमें अनियम कार्य होने लगे तो फिर संसारके नाश होनेमें कुछ भी संदेह नहीं है। इसी प्रकार जिस मनुष्यके कार्य नियम पूर्वक नहीं होते हैं वे नाश हो जाते हैं और ऐसे मनुष्यको कभी सुख वा शांति नहीं मिलती है।

संसारके सम्पूर्ण कार्य केवल एक नियम पर ही अवलम्बित हैं। अनियम कार्य करनेसे किसी व्यापार या सभामें उन्नति नहीं हो सकती। जो उन्नतिका अभिलाषी है और जिसका अंतिम ध्येय उन्नति करना है उसे कभी नियम विरुद्ध कोई कार्य नहीं करना चाहिए।

बहुतसे विभाग ऐसे भी हैं जिनमें नियम विरुद्ध कार्य करने पर भी सफलता होती है परंतु पूर्ण सफलता उसी समय होगी जब कि नियम पर ध्यान दिया जायगा। यदि कोई अनियमित कार्य करने वाला मनुष्य व्यापारमें सफलता चाहता है तो उसको चाहिए कि वह अपने कार्यको किसी योग्य प्रबंधको सौंपदे जो उसकी श्रुतियोंको दूर करदे और सफलता लवदे।

मंगलके बड़े बड़े व्यापार नियमसे ही चरने



हैं यदि उनमें तनिक भी अनियम पाया जायगा तो उनकी उन्नति में बाधा पहुँचेगी । जिस प्रकार प्रकृतिके बहुतसे कार्य नियमपूर्वक एक साथ होते रहते हैं उसी प्रकार मनुष्यके भी बहुतसे कार्य एक साथ और एक समय हो सकते हैं, यदि वे नियमपूर्वक किये जायें । नियम विरुद्ध कार्य करनेवालेका यह विचार रहता है कि यदि कार्य पहिले अनियमपूर्वक किया जाय तो उसमें कोई भी हानि नहीं है; परन्तु उसका अंत ठीक होना चाहिए उसका यह निवार-मूर्खताको लिए हुए है क्योंकि जिस वस्तुका आदि ही ठीक नहीं है उसका अंत किस प्रकार ठीक हो सकता है ।

जो लोग नियम पूर्वक कार्य करना पसंद नहीं करते वे अपना बहुतसा समय और मानसिक शक्ति नष्ट करदेते हैं । उनका बहुतसा समय वस्तुके ढूँढनेमें ही चला जाता है । यदि नियमपूर्वक कार्य किया जाय तो बहुतसा समय बच सकता है और उस बचे हुए समयमें अन्य कोई कार्य किया जा सकता है । नीच और गंदे मनुष्यके यहां किसी वस्तुका निश्चिन स्थान नहीं होता है इसलिए उस वस्तुके तलाश करनेमें ही उनका बहुतसा समय चला जाता है । जब किसी मनुष्यको कोई वस्तु ढूँढने पर भी नहीं मिलती है तो उस समय उसको अत्यंत क्रोध आता है, दांत पीसता है और लाल पीली आँखें करता है ऐसा करनेसे उसकी बहुतसी मानसिक शक्ति नष्ट होजाती है जो यदि किसी कार्यमें खर्च की जाती तो बड़ा ही लाभ होना ।

जो मनुष्य नियमपूर्वक कार्य करना जानते हैं उनके समय और शक्ति दोनोंकी बचत होती है । वे कभी किसी वस्तुको नहीं खोते हैं अतः उनको किसी वस्तुके तलाश करनेकी भी आवश्यकता नहीं होती । प्रत्येक वस्तु यथा-स्थान पाई जाती है और अंधेरे या उजले किसी भी समय उसको ढूँढो तो फौरन मिल जाती है । इस तरह नियमपूर्वक कार्य करनेवाले शांति-चिंत और विचारशील होजाते हैं और वे अपनी मानसिक शक्तिके द्वारा बहुत कुछ लाभ उठाते हैं ।

नियममें एक प्रकारकी शक्ति विद्यमान रहती है जिसके द्वारा बड़े बड़े कार्य सुगमतापूर्वक होजाते हैं । नियमानुसार कार्य करनेसे थोड़े समयमें बहुत कुछ किया जा सकता है और उससे उसको तनिक भी परिश्रम नहीं मालूम हो सकता । वह हर समय चैतन्य ही मालूम देगा । ऐसा मनुष्य सफलताकी शिखरपर बहुत जल्दी पहुँच जाता है; परन्तु उसका प्रतिपक्षी जो अनियम कार्य करता है, बड़ी गड़बड़ीमें पड़ जाता है । जो मनुष्य प्रत्येक कार्यमें नियमका बड़ा ध्यान रखता है वह अपने अभीष्टको बहुत जल्दी प्राप्त कर लेता है ।

जितना एक साधु महात्माको अपने पवित्र प्रतीकों का पालन करना आवश्यक है उतना ही आवश्यक व्यावहारिक संसारके कार्योंमें नियमका पालन करना है । यदि मनुष्यको नियम पालन करनेसे उसकी धन सम्पत्ति बाधा पहुँचे तो उस समय वह नियम भंग करने लगता है अन्य किसी भी समयमें नहीं । द्रव्य सम्बंधी



मांमिलोंमें भी नियम पालन करना अत्यंत आवश्यक है और जो मनुष्य नियमको पूर्ण-रूपसे पालते हैं वे अपने समय, शक्ति और सम्पत्तिको नाश होनेसे बचा लेते हैं ।

मानव समाजकी उन्नति नियमके बिना कदा-पि नहीं हो सकती । थोड़ी देरके लिए साहित्यको ही ले लीजिए, देखिये इसमें कैसे कैसे उत्तम ग्रंथ पाए जाते हैं, कैसे कैसे छन्द बन्ध मिलते हैं और कैसे कैसे व्याख्यान सुनने-में आते हैं जिनके सुननेसे एक बार हृदय भी दहल उठता है और लीजिए एक मनुष्य अपने अन्तस्थ विचारोंको दूसरों पर प्रकट कर देता है यह सब काहेसे होता है । इन सबका कारण एक नियम ही है । यदि व्यक्तियोंको नियम-पूर्वक न जोड़ा जाय तो एक मनुष्य दूसरेसे अपने विचार भी प्रकट नहीं कर सकता है ।

दश अंकोंको सिलसिलेसे जोड़नेके कारण ही गणितमें बड़ी सफलता प्राप्त हुई है । कारखानोंमें मशीनोंको चलाते हुए और उनसे बड़े बड़े काम होने हुए सबने देखा है । उनके द्वारा कठिनसे कठिन कार्य भी आसानीसे हो जाता है । इसका कारण यही है कि उनके कल प्रभु ऐसी तरतीबसे रखे हुए हैं कि जो न तो आपसमें टकराते हैं और न उनसे किसी प्रकारका शब्द ही होता है ।

कठिनसे कठिन भी कार्य यदि नियम पूर्वक क्रिया जाय तो आसानीसे हो जाता है । नियम कठिन कार्यको आसान कर देता है छोट छोट कार्य भी यदि नियमपूर्वक क्रिये जायें तो अंतमें उनका बड़ा परिणाम

निकलता है ।

कार्यमें सफलता प्राप्त करनेका मूल सिद्धांत नियम ही है । इसीके द्वारा संसारके मनुष्य आपसमें मिलकर कार्य करते हैं जब कि उनके सिद्धांत और मन्तव्य विपरीत होते हैं । व्यापार, धर्म, विज्ञान और नीतिमें मनुष्यको नियमकी बड़ी भारी जरूरत पड़ती है क्योंकि इसके बिना कार्य ठीक नहीं होता । दो मनुष्योंकी बातचीतको ही ले लीजिए यदि वे वार्तालापके ढंगको नहीं जानते हैं तो उन्हें एक दूसरेके समझनेमें बड़ी दिक्कत उठानी पड़ेगी ।

वह मनुष्य बहुत ही थोड़े समय तक जीवित रहता है जो नियम विरुद्ध कार्य करता है । उसी समय ज्ञानकी वृद्धि होती है और तब ही उन्नति होती है जब कि कार्य नियम पूर्वक किया जाता है । नियम पूर्वक कार्यमें किसी प्रकारकी कोई बाधा नहीं आती । जो मनुष्य नियम पूर्वक कार्य करता है अथवा ज्ञान उपार्जन करता है उसका वह कार्य ब ज्ञान बहुत बढ़ता है और अरसेमें उसकी संज्ञान तकको लाम पहुंचता है ।

प्रत्येक बड़े कार्यका कोई न कोई ढंग अवश्य होता है जिनसे वह मशीनको मांति बराबर चला रहता है । एक बार एक मरे प्रतिष्ठित मित्रने मुझसे कहा था कि यदि मैं अपने कार्यको साठमर तक न करूँ तब भी यह बराबर होता रहेगा । उसने समय समयपर कई महीनोंके लिए काम छोड़ भी दिया था; परंतु वह बराबर होता रहा ।



यदि कार्य नियमानुसार न किया जाय तो मनुष्य कभी सफलभूत नहीं हो सकता । नियमानुसार कार्य करनेसे मनुष्यको सुख व शांति मिलती है । जो मनुष्य नियमानुसूल नहीं है, जिनका मस्तिष्क इस प्रकार शिक्षित नहीं है और जो विचार करनेमें ढीले और लापरवाह हैं उनकी आदतें और कार्य प्रणाली कभी अच्छी नहीं हो सकती और न वे सुखी रह सकते हैं । वे अपने जीवनको कंठू-मय बनाने हैं । यदि वे अपने जीवनको नियमानुसूल बना लें तो जीवनके सारे क्लेश और चिन्ताएँ दूर हो सकती हैं ।

उस मस्तिष्कको अशिक्षित ही समझना चाहिए जो नियमानुसार कार्य करना नहीं जानता । यद्यपि अशिक्षित खिलाड़ी शिक्षित खिलाड़ीकी बराबरी कर सकता है; परन्तु अनियम कार्य करनेवाला जीवनकी दौड़में नियमपूर्वक काम करनेवालेसे बाजी नहीं मार सकता । अनियम कार्य करनेवाले समझते हैं कि प्रत्येक वस्तुसे काम निकल जायगा परन्तु काम बननेके बजाय बिगड़ जाता है और उनको फिरसे प्रारम्भ करना पड़ता है । नियमानुसार कार्य करने वालेका यह विचार है कि अच्छी वस्तुसे ही काम चल सकता है बुरीसे नहीं । इसीलिये जीवनकी बड़ी बड़ी दौड़में ये लोग बहुत लाम उठाते हैं चाहे वे शारीरिक, मानसिक या नैतिक ही क्यों न हों । जिस मनुष्यको कार्यके समय औजार नहीं मिलने हैं, न सड़ककी कुंजी मिलती है और न विचारोंकी ही कुंजी मिलती है ऐसे मनु-

ष्यको खुदवखुद पैदा की हुई आवश्यकता सामना करना पड़ता है जब कि उसका व्यवस्थित पड़ोसी प्रसन्नताके साथ अपने कार्यमें सफलता प्राप्त करता है । जो मनुष्य कार्य करनेका ढंग नहीं जानता, यदि उसको अपने कार्यमें असफलता हो तो वह अपने भाग्यको दोष देगा ।

कार्यका ढंग एक नियम है । इसीके द्वारा चारित्र्य, जाति और राज्य बना हुआ है । जो मनुष्य अपने कार्यके ढंगोंमें उन्नति कर रहा है तो समझना चाहिए कि वह कार्य सम्पादनकी शक्ति प्राप्त कर रहा है । अतः प्रत्येक व्यापारीको यह आवश्यक है कि कार्यके ढंगमें तरक्की करे । नियम पूर्वक कार्य करने वाला ही कार्यको बनाता और संभालता है, परन्तु अनियम कार्य करनेवाला उसको खराब कर देता है । यदि अनियम कार्य करनेवाला कार्यको ढंगसे किया जाय तो उसकी कार्य करनेकी शक्ति बहुत बढ़ जाय, उत्तम चारित्र्य हो जाय और कारोबार भी बढ़ जाय ।

कार्यमें चुस्ती ही जिन्दादिली कहलाती है । यह एक प्रकारका जोश है जिसमें कार्य शीघ्रतासे हो जाता है । यदि नियमपूर्वक कार्य किया जाय तो इसकी बहुत ही वृद्धि होती है । प्रत्येक सेनाध्यक्षमें इस गुणका होना जरूरी है; क्योंकि यदि कोई अचानक देवी पटना हो गई या कोई शत्रु सेना सहित चढ़ आया तो वह सेनानायक अपने पुराने नहीं कर सकता जिसमें तेजी और चुस्ती नहीं है । वह कभी कार्यमें सफलता प्राप्त नहीं कर सकता ।



प्रत्येक व्यापारीको भी इस गुणके प्राप्त करनेकी आवश्यकता है। विचारवान मनुष्यका कर्तव्य है कि जो उत्तम विचार उसके मनमें उठे उसके अनुसार कार्य करनेके लिए तैयार हो जाय ! काम करनेमें आलस न करे; क्योंकि आलसके समान संसारमें कोई महा शत्रु नहीं है। इसके कारण किसी प्रकारकी भी उन्नति नहीं हो सकती बल्कि अयोग्यता और मूर्खता ही बढ़ जाती है। जो मनुष्य कार्य करनेके लिए तैयार रहते हैं, जिनका मन और मस्तिष्क कार्य करनेमें फौरन लग जाता है और जो कार्यको बड़ी योग्यताके साथ करते हैं, वे ही अंतमें सुखानुभव करते हैं। यद्यपि कार्यकुशल मनुष्य सुखको रंजमात्र भी नहीं चाहते; परंतु सुख उनको अवश्य चाहता है और उनका पीछा नहीं छोड़ता है। ऐसे ही मनुष्योंको सफलता और सुख मिलता है अन्यको नहीं।

व्यापारिक कार्योंमें सफाईकी भी बहुत जरूरत है। यदि नियम पूर्वक कार्य किया जाय तो सफाई अवश्य रह सकती है; परंतु अनियम कार्य करनेसे न तो सफाई ही रह सकती है और न कार्य ही ठीक तौरसे हो सकता है। अनियम कार्यमें भूल भी अधिक होती है जिनके कारण महा हानि उठानी पड़ती है।

यह मान जितनीसे भी अग्रगण्य नहीं है कि मनुष्योंकी जातनीतमं वर्णाना बहुत ही कम पाई जाती है। यह सबसे बड़ा दुर्गुण है और इससे बहुत बुरा असर पड़ता है। बहुत

ही मनुष्य ऐसे मिलेंगे जो साफ साफ कहते हैं और जब कभी उनसे किसी बातमें कोई भूल हो जाती है तो उसके माननेके लिए सहसा तैयार हो जाते हैं।

बहुतसे मनुष्य कामको तो ठीक ठीक करनेका पूरा पूरा ध्यान रखते हैं परंतु ठीक ठीक बात चीतका कुछ भी ध्यान नहीं रखते। इसीसे मनुष्यमें पूर्ण योग्यता नहीं आती और न वह बड़े बड़े महत्वके कार्योंको ही कर सकता है। जो मनुष्य अपनी भूलोंको सुधारनेके लिये अपना या अपने मालिकका समय नष्ट करता है वह संसारमें कभी भी उच्चदको नहीं पा सकता और न वह कभी सुख व शांतिका अनुभव कर सकता है।

संसारमें ऐसा कोई भी मनुष्य दृष्टिगोचर नहीं आता जिसने सफलता प्राप्त करनेमें भूलें न की हों; परंतु उसी मनुष्यको योग्य और विज्ञ समझना चाहिए जो अपनी भूलोंको समझता है और उनके निराकरणके लिये उपाय करता है। ऐसा मनुष्य दूसरेके द्वारा बताए हुए दोषको खुशीसे स्वीकार करता है और उसका बुरा नहीं मानता। जो मनुष्य निरंमूल और अज्ञानी होते हैं वे न तो अपने दोषोंको आप जान सकते हैं न दूसरोंके बतलाने पर उनको स्वीकार करते हैं किंतु बतलाने पर बुरा ही मानते हैं।

जो मनुष्य उन्नतिशील है वह अपनी ही भूलसे नहीं; किंतु दूसरोंकी भूलसे भी लाभ उठाता है। वह सदा व्यवहारके द्वारा नेक संतादकी परीक्षा कर लेता है और नियमों



ठीक ठीक तौरसे करनेकी बड़ी कोशिश करता है । कार्यमें यथार्थतासे ही पूर्णता प्राप्त होती है । जिस मनुष्यको ठीक ठीक तौरसे काम करना आ गया, उस समझो कि उसने योग्यता प्राप्त कर ली है ।

मनुष्यके कार्यमें लाभका होना ही इस बातका प्रमाण है कि उसने अपने कार्यको कायदेके अनुसार किया है । यदि परिश्रम ठीक तौरपर किया जाय तो उसका प्रतिफल अवश्य मिलता है । यदि बागवा माली अपने बागसे अच्छी पैदावार चाहता है तो उसको चाहिए कि वह बीजको ठीक समयपर बोवे और ठीक समयपर काटे यदि वह सबसे अच्छी उपज चाहता है तो ठीक समयको कमी हाथसे न जाने दे । इसी प्रकार जो मनुष्य किसी कार्यमें सफलता प्राप्त करना चाहता है उसे चाहिए कि वह कार्य ठीक ठीक और उचित समय पर करे ।

यदि मनुष्य अपने कार्यका अंतिम परिणाम अच्छा देखना चाहता है तो उसको भरसक प्रयत्न करना चाहिए । जिन मनुष्योंको व्यावहारिक ज्ञान नहीं होता वे प्रायः ऐसे ऐसे विचार रखते हैं कि जिनका व्यवहारसे कुछ भी सम्बन्ध नहीं होता । जिस मनुष्यको कार्यके द्वारा अपनी शक्तियोंका ज्ञान हो गया है वह अपनेको व्यर्थके वित्तजबादसे मुक्त करता है और अच्छे कार्यमें लग जाता है ।

जो बात व्यवहारमें नहीं आ सकती उसका कभी भी विचार न करो । जिस मनुष्यको व्यावहारिक ज्ञान नहीं है यदि उसको किसी

कार्यमें असफलता हो तो इसमें आश्चर्य ही क्या है ।

जब मनुष्यके विचार कार्यरूपमें परिणत हो जाते हैं तो उस समय उसकी कला, शक्ति ज्ञान और शान्तिकी वृद्धि होती है । जितना ही मनुष्य समानसेवा करता है उतना ही उसे सुख मिलता है । मनुष्य जितना ही अधिक करता है उतनी ही अधिक उसकी योग्यता जाहिर होती है, किन्तु बातोंके प्रभावसे कुछ भी नहीं होता ।

यदि कोई व्यक्ति अपने उत्तम विचारोंके अनुसार काममें लग जाय और उसको तन मनसे करना प्रारम्भ कर दे तो उसे अवश्य सफलता होगी और स्थायी सुख मिलेगा और वही जीवनके युद्धमें उठर सकेगा ।

नियम पूर्वक कार्य करना जानने हैं जो पुरुष, सफलता होती उन्हींको कहते हैं यह सत्पुरुष ॥ नियम ही के सबसे अंग्रेज इतने बढ़ गए, नियम बिन ही भारती कर्त्तव्यपथसे गिर गए ॥ उन्नति यदि तुम चाहते हो देशवासी माइयो, तो नियमपर दृढ़ रहो तब नाथको अपनाइयो ॥

‘नाथ’

पवित्र धूप और अगरवत्ती २) की रत्नल ।

मगानेका पता—

मैनेजर, दिगम्बरजैन पुस्तकालय—सुरत ।

स्वदेशी, काश्मीरी और नई

पवित्र केसर ।

१॥) फी पोला १

मैनेजर, दि० जैन पुस्तकालय—सुरत ।



समस्त सुखोंका केन्द्र है—

प्रेम ।

(लेखक—पं० लोकमानि जैन, गोटेगांव)

प्रेमकी शक्ति अकथनीय है । जिन्हें उच्च-तम, पूर्ण सुखी बननेकी तीव्र अभिलाषा लगी रहती है उनके लिये 'प्रेम' करना समन्ततः अवलम्बनीय है । बड़े २ पर्वत, नदी, तालाब, समुद्र एक प्रेम शक्तिसे ही पार किये जा सकते हैं । संसारकी अमूल्य, दुष्प्राप्य, सर्व-श्रेय वस्तुएँ प्रेमसे खरीदी जा सकती हैं । सबको अपना बनानेमें प्रेमसे बढ़कर संसारमें दूसरी चमत्कारी वृत्ति नहीं है ।

प्रेमान्वित हृदय सम्पूर्ण रत्नोंका भंडार है । समस्त गुणोंका सुरमित संस्थान है । अनेक विषयोंका मर्दन करनेवाला सबको शान्तिपथ प्रदर्शक तथा चन्द्रकी तरह जगत्का जाताप-हारी है । प्रेम विहीन हृदय शुष्क काष्ठकी तरह है, जो शीघ्र ही जलाया जा सकता है । प्रेम रहित जीवन मरुभूमि है, जहां पशु-गणोंको शान्ति पहुंचानेवाले समीरुह नहीं पैदा हो सकते, जहां पशुपक्षी गण अपनी तृष्णाको नहीं बुझा सकते, जहां शान्तिमय मेघोंकी धारा नहीं गिरती, जहां सुरमित पुष्पा-वली जगत्को सर्वानन्दमयी सुरभि नहीं वितरण कर सकती । प्रेमविहीन हृदय सर्वापत्तियोंका निश्च स्थान है, समस्त दुर्गुणोंका निवासस्थान है । समस्त शत्रुओंका उत्पादक है, सर्व सुख-रहित है, स्वयं दुःखी और संसारको दुःखी बनानेवाला है ।

प्रेमसम्पन्न व्यक्तिको क्रोध, मान, माया, लोभादि शत्रु बाधा नहीं डाल सकते । सिंहादि का जीव क्रूरता करनेमें हिचकते हैं । संकट कभी पास नहीं फटकता, संसार उसे अपना लेता है । देवाङ्गना उसे अपना सर्वस्व बनानेकी तर-सती हैं । लक्ष्मी उसके गलेमें वरमाला डाल देती है । स्वर्गीय सुख उसे अपना स्वामी बना लेते हैं । प्रेमसम्पन्न व्यक्ति समन्ततः स्वर्णमयी, आनन्दमयी, दयामयी, करुणामयी ही दृष्टि डालता है । उसकी दृष्टिसे पापाण सुवर्ण हो जाता है । उसका हृदय ब्रह्माकी तरह समस्त लोकको स्थान देनेमें सपर्य होजाता है । बड़े २ समुद्र, वन, दुर्ग सब उसके हृदयमें एक कौनेमें पड़े रहते हैं । सब कल्याणमयी चीजें उसके हृदयमें लीला करनेको दौड़ती फिरती हैं । समस्त शान्ति, क्षमा, धैर्यादि गुण उसमें निभन्न होना चाहते हैं, यहां तककि स्वयं परमात्मन ऐसे हृदयमें अपना मंदिर बनाकर ध्यानस्थ रहनेमें विश्वव्यापीपना सार्थक समजते हैं, कारण कि विश्व तो उसीके हृदयमें भरा हुआ है । तब सब जगत्में व्याप्त होनेकी अपेक्षा तो उसीके हृदयमें व्याप्त होना अच्छा है । पल्लवोंको हारा मारा रखनेके लिये वृक्षकी जड़ोंको सरस बनाए रहनेमें ही बुद्धिमत्ता है ।

प्रेम क्या है ? प्रेम जीवनका श्रृंगार है । प्रेम गलेका हार है । प्रेम रत्नोंका भंडार है, प्रेम जीवनका सार है, प्रेम निर्मल जलकी धार है, प्रेमका न पारावार है । प्रेम महा वीर है । प्रेम बहुत ही धीर है । प्रेम सुरमित समीर है, प्रेम हृदयका कीर है । समस्त बलक



घोनेको प्रेम उज्ज्वल नीर है । परमात्माके अमिषेकके लिये प्रेम सुस्वादु क्षीर है । द्वैत-भाव नष्ट करनेके लिए प्रेम तीक्ष्ण तीर है । प्रेम निरञ्जन है । प्रेम अज्ञानीके नेत्रोंको अंजन है । मलिन भावनाओंको जर्जरित करनेको मंजन है । प्राणियोंको शांति देनेको कुञ्जन है । पति भक्ता पूज्य देवियोंके रमनेको स्वर्गीय नन्दन बन है । दुःख दरिद्रताका भञ्जन है । अनेक आपत्तियोंसे खेदखिन्न हृदयको मनोरञ्जन है ।

प्रेम सुख है, प्रेम शान्ति है, प्रेम पिता है, प्रेम जगत् जननी है । प्रेम भ्राता प्रेम ही साता तब प्रेमसे ही मम नाता है ।

प्रेममें जाति भेद नहीं, प्रेममें किसीसे घृणा नहीं, प्रेममें कायरता नहीं, प्रेम, ईर्ष्या, कलह, दुष्मता, नीचता, दुष्टता, आदि सबसे रहित है । प्रेम ही हमारा शरीर, प्रेम ही चीर, प्रेम सानेको क्षीर है । प्रेमज्ञान नेत्रोंमें आंजनेमें संसार प्रेममय नजर आता है । उस स्मय भेदभाव नजर नहीं आते, उच्च नीचका भेद नहीं रहता, जाति पांति मर पीछे दृष्ट जाती हैं । मान रहता नहीं, किसीका अपमान होना नहीं । जठ थल सब प्रेमसे स्थावित दृष्टिगत होता है । बेकार चीज कोई दिखती नहीं, तुच्छता किसीमें भासती नहीं । उदण्डता पास दिखती नहीं । दूर कोई नजर आता नहीं, 'असष्ट कोई दीखता नहीं । जहां देखो वहाँ प्रेमके फुवारे छूटते दिखाई पड़ते हैं ।

प्रेम किमसे सीखें ? प्रेम प्रकृतिसे सीखो, प्रकृतिके जीवोंसे सीखो, प्रकृतिकी प्रत्येक

रचनासे सीखो । प्रेम कमल और सूर्यसे सीखो । प्रेम कमल और भौंरेसे सीखो । प्रेम चकवा चकवीसे सीखो । प्रेम चन्द्ररुमलिनीसे सीखो । प्रेम उदधि चन्द्रसे सीखो । प्रेम उलूक रजनीसे सीखो । प्रेम पतंग दीपकसे सीखो । प्रेम चुम्बक लोहेसे सीखो प्रेम मयूर मेघोंसे सीखो । प्रेम जठ मीनसे सीखो । प्रेम चातक जलबिंदुसे सीखो । प्रेम चकोर चन्द्रसे सीखो । सिखानेके लिये प्रकृतिके समस्त पदार्थ तैयार हैं पर तुम सीखनेको भी तैयार होनेमें शिथिलता न करो । प्रेमका पाठ सीखो और अवश्य सीखो । सीखने योग्य ही है ।

प्रेम किसपर करें ?—प्रेम दुःखियोंसे करो । प्रेम सुखियोंसे करो । प्रेम राजासे करो । प्रेम रंकसे करो । प्रेम दुष्टसे करो । प्रेम सज्जनसे करो । प्रेम गाथा करो । प्रेम शेर पर करो । प्रेम तुच्छसे तुच्छपर करो । प्रेम बड़ेसे बड़े पर करो । प्रेम कीड़ी पर करो । प्रेम हाथी पर करो । प्रेम मिट्टीसे, पत्थरसे, जलसे, अग्निसे, रात्रिसे, दिनसे, उजलेसे, अंधेरेसे, उच्चसे, नीचसे, सबसे प्रेम करो । घरवालोंसे प्रेम करो, बाहरवालोंसे प्रेम करो, देश वालोंसे प्रेम करो, विदेशवालोंसे प्रेम करो, अच्छेसे प्रेम करो, बुरेसे प्रेम करो । चन्द्र सूर्य इस प्रेम करनेके विषयमें अशुभा हैं । स्मशानमें प्रकाश करते, रानमहलमें प्रकाश करते, जंगलोंमें प्रकाश करते, मंगी, चमार, बमोर, ब्राह्मण, भुविग, वैश्य, शूद्र सबके यहां प्रकाश करते आने तक प्रेममय प्रकाश करते आए और करते रहेंगे । इसी लिये जाना जाता है कि प्रेमका अन्त नहीं,



प्रेमको विश्राम स्थान नहीं, प्रेमका समय नहीं, जितना प्रेम बढ़ता जायगा प्रेमकी सामग्री उससे चौगुनी बढ़ती जायगी। हृदय तुम्हारा उससे भी विशाल और घीर वीर बनता चला जावेगा, प्रेमकी सीमा नहीं है। प्रेम अनन्त है। लोक शान्त, मर्यादित होनेसे ही हम कथंचित् प्रेमको शान्त कह सकते हैं।

प्रेममें कायरता करना बुरा है। आलस, करना खराब है। विपत्तियोंसे डरना अच्छा नहीं, क्योंकि प्रेम उन्नतशील, और औदार्य-गुण विशिष्ट व्यक्तिको ही चाहता है।

प्रेमका ध्येय (लक्ष्य) छोटा नहीं है। प्रेमका ध्येय विश्वको अपनानेका है। शान्ति प्राप्त करनेका, संतप्त हृदयोंको शीतल करनेका, स्वतन्त्रता प्राप्त करनेका, दुस्त्रियोंका दुःख हर-नेका, कर्म प्रबन्धसे विलग होनेका, आत्मस्वरूप प्राप्त करनेका, सदाचारी, साहसी, वीर बनने-का, विद्वज्वापी बननेका, दर्पणवत् निर्मल होनेका, जन्मभूमि पवित्र करनेका, विश्वभूमि श्रेष्ठ बनानेका, समस्त दुःख जलोंसे छूट आ-त्मीय सम्पत्ति प्राप्त करनेका, मोक्ष कन्यासे भाषण करनेका, उसका साथ अनन्तकाल रमण करनेका जो ध्येय है वह प्रेमसे प्राप्य है। यह नहीं कि प्रेमसे किसी ध्येयकी प्राप्ति न हो सके, मरकी प्राप्ति हो सकती है। ध्येय प्रा-प्तिमें संदेह नहीं है, संदेह है हमें अपने सच्चे विद्वज्वापी प्रेम होनामें। इसकी पूर्तिमें ध्येयकी पूर्ति है। इसलिये प्रेमी बनिये, प्रेम काना सोखिये, प्रेम करिये, प्रेम कराइये और प्रेममें ही लीन हो जाइये। आइये जल्दी आइये।

हृदयसे हृदय लगाइये, वैरभाव मिटाइये, संतप्त हृदयोंको प्रेम कटोरमें ऐक्य रस पिलाइये, तब सच्चे वीर कहलाइये.....

प्रिय प्रेमी गण ! धर्मोंमें भेद है तो रहने दो, विचारोंमें भेद है तो रहने दो, जातियोंमें भेद है तो रहने दो, शरीरोंमें भेद है तो रहने दो, आचरणोंमें भेद भी रहने दो और जिन जिन बातोंमें भेद है, रहने दो; पर प्रेममें भेद कभी न रहने दो। ये उपरोक्त भेद भी प्रेम भेदसे ही हो गये हैं प्रेम भेद नष्ट होते ही समस्त भेद नष्ट हो जावेंगे। प्राणियोंकी सामग्री प्रेमसे ही सरा बन सकती है।

अन्तमें मेरी प्रेम प्रार्थना है कि प्राणीमात्र प्रेममें निमग्न हो सुखानुभव करें। विश्वको प्रेम ही प्रेमसे परिपूरित कर दें और अपना जन्म कृतार्थ करें। प्रेम ही प्रेम संसारमें दिखाई पड़े, बस यही लेखककी भावना है।



तमारी यादगारीमां ! *

हरी कुर्यान छ-दगानी, तमारी यादगारीमां !
भगर भाइछ ! भने आन-द ! तमारी यादगारीमां !
शुभाबु आन छगर-भनी, लडु पदवी दीवानानी !
छतां भाइछ ! भने लांछी ! तमारी यादगारीमां !
हमाथो ना भन्नुं पोछुं ! नदामां दई तो ब्हेछुं !
“अरे ! छे तो आती प्याई !” तमारी यादगारीमां !
तछ आलम तथी परवा, अथो भाइछ ! तने भगवा !
छुछु छे छे छे छे छे, तमारी यादगारीमां !
हदावे. ने कं छ सदेस-निशानो तन्नु अइस !
रडु पियारमां हम्मेछ, तमारी यादगारीमां !
तमारा नामनी तसथीर, धीराबुं छ गरिब परवर !
हई छे सरी शदादतपर ! तमारी यादगारीमां !
स्नेहयोगी.

* टी. पी. कंचारीयानी शय्याविदु अतुलक

વડોદરા રાજ્યનો

જ્ઞાતિ સુધારણાનો કાંચદો.

મેવાડા, હુમડ, નૃસિંહપુરા અને
રાયકવાલ ભાઈઓને સૂચના.

(લેખક. શા. માતીલાલ ત્રી. માલવી-બાકેશ)

હિંદુ સમાજનું પ્રજા સત્તાક તંત્ર એટલું
અધુરું હિન્નભિન્ન અને અવ્યવસ્થિત થઈ પડ્યું
છે કે હાલના પ્રગતિ કાળમાં ધર્મીએક સુશિ-
ક્ષિત વ્યક્તિએને જ્ઞાતિએના નામથી થતા
જેર ઇન્સાફ, પક્ષપાત, મમત અને જુલમનો
ધણી વખત વિના કામચુ ભોગ થવું પડે છે.
એ ક્યોઈ સર્વમાન્ય હોય તેને પુરવાર
કરવાને વધુ દૃષ્ટાંતોની જરૂર રહેતી નથી.
આ ઉપરથી આવી સ્થિતિ સુધારવા
અને જ્ઞાતિએને નામે થતા જુલમમાંથી
નિર્દોષ વ્યક્તિએને સરક્ષણ આપવાના
શુભ હેતુથી શ્રીમંત સરકાર મહારાજ સયાજી-
રાવ ગાયકવાડની આજ્ઞા અને ઇચ્છાનુસાર
ગઈ વા. ૨૨ માર્ચ સને ૧૯૧૭ની આજ્ઞા
પત્રિકામાં “વડોદરા રાજ્ય જ્ઞાતિ રિવાજ
સંબંધી નિયમનો સુસંદો” પ્રજાની જાણ
અને સૂચના માટે બહાર પાડવામાં આવ્યો
હતો. એ પછી ખીમજી અઠવાડીઆમાં તે કા-
પદાના સંબંધમાં પ્રજા તરફથી કેટલીક અરજો
વધા કેટલાક વર્તમાન (મુખાબ સમાચાર, સાંજ
વર્તમાન, હિંદુસ્તાન, ગુજરાતી, સયાજી વિજય,
પ્રજા બધું આદિ રાજદાં અને અઠવાડીક)
પત્રો દ્વારા તે કાપદાની વિરૂદ્ધ અને તરફેણમાં
કેટલીક સૂચનાઓ સાથે પુષ્કળ વિવેચન કર-
વામાં આવ્યું હતું, જે ઉપરથી શ્રીમંત મર-
કારે તેના કેટલાક શુભ હેતુઓ અને હુકમો
ધ્યાનમાં લઈ તેની કેટલીક આવશ્યકતાનો
સ્વીકાર કરી સદર કાપદાને ફોજદારી કાપદાના
સ્વરૂપમાંથી ફરી તેમાં કેટલોક સુધારો વધારો
કરી ખાસ તેને માટે જુદો કાપદો નહિ કરતાં

વડોદરા રાજ્ય (સંવત ૧૯૫૨નો ૨ જો) દિવાની
નિયમ સુધારોને ઇષ્ટ જાણવાથી તેમાં કેટલોક
સુધારો કરી સંવત ૧૯૭૩ના દિવાની નિયમ ૧૪
ની અંદર ૧ લી હુસ્તી કરી દિવાની કામ
ચલાવવાના નિયમની અન્વયે પ્રકરણ દશનો
વધારો કરી દિવાની નિયમની કલમ ૩૪૯
પછી નવીન બાબ ૨૦ તથા કલમો ૩૬૦
અને ૩૬૧ મુજબ શ્રીમંતના હજુર હુકમથી
તા ૬ સપ્ટેમ્બર ૧૯૧૭ ની આજ્ઞા પત્રિકા
માં ન્યાયમંત્રી તરફથી-ગદાર પાડવામાં
આવ્યો છે તે નીચે મુજબ-

બાબ ૨૦ મો. જ્ઞાતિ સંબંધી ફરિયાદો
ત્રિષે-જ્ઞાતિ સંબંધી કયા રીતરિવાજ વધનકારક
નથી તે નીચે પ્રમાણે-

૩૬૦ નિયમની કલમ ૫ માં જણાવ્યા
પ્રમાણે જ્ઞાતિ રિવાજ સંબંધી પ્રશ્ન જેમાં
સમાવેશો છે એવી કોઈ ફરિયાદના કામમાં તે
રીત અથવા રિવાજ

ક અનીતિ બરેલો કે રાજનીતિ વિરૂદ્ધ
હોય અથવા,

સ જ્ઞાતિના લોકો પીઠાતિક અને અગ્રિદ્વિદ્વિ
અથવા પ્રગતિને અડચણ-કારક હોય, જેમકે-

(૧) તેજ પેટા જ્ઞાતિમાં અગર અમુક
સ્થળ સીમામાંજ લઈ થઈ શકે એવો મિત
જરૂરીઆત પ્રતિબંધ નાંખનારો હોય અથવા-

(૨) પાપભાલી થાય એવો ખર્ચાળ હોય,
અથવા-

(૩) દેશપર્યટન કરવાની સ્વતંત્રતા ઉપર
મિત જરૂરીઆત અંકુશ મુકનારો હોય.

તો તે રીત કિંવા રિવાજ બંધનકારક
ગણાય નહિ.

અપવાદ-પરંતુ કોઈ જ્ઞાતિ કે જ્ઞાતિના જ્ઞાતિ
રિવાજ સંબંધી નિયમ સરકાર તરફથી મંજૂર
કરાવી લે તે પ્રમંજ તે નિયમોને અનુસરીને
ને ઠરાવ થઈ શકશે.



નિબંધની કલ્પ ૨ (૨) મુજબનો
અલ્પવાર કોને છે.

૩૬૧ નિબંધની કલ્પ ૯ ની પેટા કલ્પ
(૨) મુજબ ફરિયાદ લેવાનો અને તેનું કામ
ચલાવવાનો અખત્યાર હકુમતનાળી હરકોઈ પ્રાંત
ન્યાયાધિશીને આપવામાં આવે છે.

૭ બી. આંબેગાંવકર.
ન્યાયમંત્રી.

ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે જાતિ સુધારણા
નિબંધનો સમાવેશ-દિવાની કાયદામાં કરવામાં
આવ્યો છે, પરંતુ અપવાદ માં જણાવ્યા પ્ર-
માણે દરેક જાતિએ પોતાની જાતિના રીત
રિવાજો સરકાર તરફથી પહેલેથી મંજૂર કરાવી
લેવા જોઈએ, તે તે નિયમોને અનુસરી કરાવ
યક શકશે દરમ્યાન હાલ જાતિઓ ઉપર પો-
તાના સવાસોના નિદાલ પદ્ધતિસર અને કાયદે-
સર કેમ કરવા તે જણાવવારી આવી પડેલી
હોવાથી જાતિઓએ તેને અનુસરીને તે નિયમો
કરવાના કામે મદદ થાય તથા તે હેતુઓને
અવલંબીને જાતિઓને ઇન્સાફ કેમ આપવે
તે જાણતની સુચના માર્ગદર્શક જાહેરનામા
રૂપે ના. દિવાન સાહેબની સહીથી તા. ૭ સ-
પ્ટેમ્બર ૧૯૧૭ને રોજ પસિદ્ધ થયેલી તેનો
કેટલોક સાર નીચે મુજબ પ્રગટ કરવામાં
આવે છે.—

૧. કાયદો ગુન્દો માને તે કૃત્યને માટે
જાતિએ શિક્ષા કરવી નહિ. (કોઈ કૃત્ય ને તે
વખતે અમલમાં હોય તે કાયદે પ્રમાણે ગુન્દો
ગણાવું હોય તો તે જાણતમાં જાતિ તરફથી
શિક્ષા નહિ થતાં કાયદા પ્રમાણે શિક્ષા કરા-
વવી જોઈએ.

૨. શિક્ષા મુજબના પ્રમાણમાં કરવી (જે
કૃત્ય બદલ શિક્ષા કરવાની તે તે કૃત્યના પ્રમા-
ણમાં કરવી જોઈએ.)

૩. ફરિયાદી કૃત્ય માટે દરમુજર કરવી.
(મિત મદદલગુ અગર મુદ્દતક કૃત્ય હોય તો,

તે સંબંધમાં શિક્ષા નહિ કરતાં દરમુજર
કરવી જોઈએ.)

૪. ગંભીર સ્વરૂપનાં કૃત્યો માટે જાતિ નહિ-
જ્ઞાતની શિક્ષા કરવી. (જાતિ બહિષ્કૃત કરવાની
શિક્ષા વિશેષ ગંભીર પ્રકારની હોઈ જાતિ
બહિષ્કૃત થયેલા સંખસના વારસા વિગેરે કુદરતી
હકોને હાનીકારક હોય છે. તેથી તેવી શિક્ષા
ને કૃત્યોને માટે કરવામાં આવે તે કૃત્યો પણ
ગંભીર સ્વરૂપનાં હોવાં જોઈએ.)

૫. ધર્મશાસ્ત્રના અલુશાસન. વહારની જ્ઞાન-
તોમાં શિક્ષા કરવી નહિ. (ધર્મશાસ્ત્રના અનુ-
શાસન બહારની જાણનેમાં જાતિએ શિક્ષા
કરવી નહિ.)

૬. ટુંક સમયમાં ચોકશી કરવી.

(કોઈ કામની જાતિની રૂઢીએ ચોકશી
કરવાની હોય તે ચોકશી કરવાને કારણે ઉત્પન્ન થયું
હોય ત્યાર પછી જોગ્ય ટુંક સમયમાં કરવી)

૭. ચોકશી વિષે રાજવાની સાચવેલી (કોઈ
ચોકશી કેવળ દેવ બાવધી અગર જાતિના કોઈ
સંખસને નુકશાન કરવાના હેતુથી કરવામાં
આવતી નથી. એ વિષે ખાસ સાચવેલી રાખવી.)

૮. ચોકશી ન્યાયની પદ્ધતિ પ્રમાણે કરવી.
(જે સંખસ સંબંધે ચોકશી કરવાની હોય તે
સ્વીકારેલી ન્યાતની પદ્ધતિ પ્રમાણે કરવી એટલે-
ક. તેના વિરુદ્ધ ને હકીકત હોય તેની તેને
લેખી સુચના આપવી. જ. તે હકીકતનો તેના
તરફથી જોગ્ય ખુલાશો કરવા માટે તેને જરૂર
મુદત આપવી. ઘ જાતિના લોકોને કરાવેલી
રીતે એકત્ર બેસાવો તેમના સમક્ષ તે ને
ખુલાશો કરે અગર પુરાવો આપે તે લેવો
અને (ઘ) એકંદર હકીકતનો પૂર્ણ વિચાર
કરી લેખી કરાવ કરવો.

૯. પંચ પ્રતિષ્ઠિત લગા વાકિફગાર હોય
જોઈએ. (કોઈ કસબે જાતિ વિષયક તકરારોનો
નિર્ણય કરવાનું કામ પંચને સોંપવામાં આવે
ત્યારે પંચ તરીકે નિમેલા સંખસો પ્રતિષ્ઠિત
તથા વાકિફગાર હોવા જોઈએ.)



૧૦. કૃત્યમાં વર્જનનો પળ સમાવેશ કરવો.
(ઉપર દર્શાવેલી કલ્પનામાં કૃત્યનો ખોધ કરનાર
સંખ્યામાં વર્જનનો પણ સમાવેશ કરવો.)

૧૧. ઉપરની સુચના કરવાનો હેતુ-તા. ૬
માહે સપ્ટેમ્બર સન ૧૯૧૭ની આગા પત્રિકા
ભાગ ૨ના પૃષ્ઠ ૪૮ ઉપર પ્રસિદ્ધ કરેલી દિ-
વાની નિયમ કલમ ૩૬૦ નીચે આપેલા
અપવાદમાં ગાતિઓએ પોતાની ગાતિના નિયમો
સરકારથી મંજૂર કરાવી સેવા કરાવેલું છે તેથી
તેના નિયમો કમવાના કામે ગાતિઓને મદદ
થાય તથા ગાતિના ઠરાવ વિરૂદ્ધ દિવાની ન્યાયા-
ધિશીમાં દાદ માગવાના પ્રસંગ ઓછા આવે
અને દદાય તેવો પ્રસંગ આવે તો ન્યાયાધિ-
શીને તકરારનો નિકાલ કરવા સુગમ થાય તે
માટે ઉપરની સુચનાઓ કરવામાં આવે છે.
તા. ૭ માહે સપ્ટેમ્બર સન ૧૯૧૭.

મનુભાઈ એન. દિવાન.

આ કામદાને આધારે હવે નીચે લખેલી
વર્તના કોઈ પણ ગાતિના કામદા કોઈ પણ
માણુસને બંધનકારક ગણાશે નહિ.

૧. અનીતિ ભરેલા, ૨. પાપમાલી થાય એવા
ખર્ચાળ, ૩. દરિયાપારની (પરદેશગમન) મુસા-
ફરી અટકાવનારા, ૪. રાજનીતિ વિરૂદ્ધ, ૫. શારીરિક
ખીલવણી તથા સાંસારિક ચઢતી અટકાવનારા,
૬. આગળ વધવામાં આડખીલા ૩૫ બીજા
કેષ્ટને અને ૭. પેટા ગાતિમાંજ અગર અમુક
હદમાંજ લગન કરવાની ફરજ પાડનારા. વળી
એમ પણ કરાવેલું છે કે ગાતિ સંબંધી પ્રશ્ન
જેમાં સમાયેલો હોય તેવી દરિયાદોની તપાસ
કોર્ટો પણ કરી શકશે; વળી બંધનકારક નહિ
એવા કામદા તોડનારને જો ગાતિ દંડ લે તો
પ્રાંત ન્યાયાધિશી હુકમનામું કરી આપી હુકમ-
નામાની બળવણીમાં તે દંડ ખર્ચ અને નુકશાની
સાથે દરિયાદોને પાછો અપાવી શકશે.

નોટ-ઉપર પ્રમાણે હજુર હુકમથી કરેલું-
હોય ગાતિઓ સંબંધી તકરારો સરકારી અદા-
લતોમાં ચાલી શકશે. ૬ અપવાદમાં જણાવ્યા

પ્રમાણે દરેક ગાતિએ સદર કામદાને માન આપી
તથા તેને અનુસરી પોતાની ગાતિના રીત
રિવાજો તથા નિયમો સરકાર તરફથી મંજૂર
કરાવી લીધા હશે તો તેને અનુસરીને ગાતિને
પોતાની તકરારો સાંભળવા અને તેનો નિકાલ
કરવાનો અધિકાર સરકારે સ્વીકારેલો છે, જેથી
એક રીતે આપણું ગાતિ બંધારણ હાલની
કોલાહલ અવ્યવસ્થાને ખેંચતાણુના જમાનામાં
નષ્ટપ્રાયઃ થઈ જવાનાં બિન્હો દરેક સ્થળે
નજરે પડે છે, તે બંધારણને સજ્જન ને સુદ્ધ
કરવાની તક દરેક સમાજને પ્રાપ્ત થઈ છે,
જેનો લાભ લેવો તે દરેક ગાતિના હાથમાં
છે, તો તે નિયમાનુસાર ગાતિ બંધારણ ને
નિયમોને માન આપી ઇન્સાફ આપવાનું શરૂ
કરશે તો કોર્ટ અને અધીક્ષ કોર્ટને ગાતિ સુ-
ધારાના કામદા સંખ્યા સત્તા આપવામાં આવી
છે ત્યાં જવાનો પ્રસંગ ઓછો આવશે.

આ કામદો ગાયકવાડી રાજ્યમાં વસતી
તથા તે હદમાં લગન તેમજ ગાતિમેળા વગેરે
પ્રસંગે આવી ન્યાતિ સંબંધે પંચ મારશ્વે ઠરાવ
કરતી હરકોઈ ગાતિ તથા સોજના સંજ્ઞાની આ-
પણી વીસા મેવાડા શાતિ; કલોલ, ડગડાઆદિ
મંજાના નૃસીંહપુરા; જોરણ પ્રાંતિજ વિભાગ
પૈકી ખેરાળુ દેહગામ, આદિના દશા-વીસા
હુંમર; બ્યારા મહુવાના રાયકવાળ વગેરે
આપણી વધુિક જૈન કોમને લાગુ છે.

નીચે લખ્યા પ્રમાણેના હાનિકારક રિવાજો
પૈકી કેટલાક ગુન્હાને પ્રાપ્ત થઈ શકે છે.

વાલ્લભ, કજોડાં, કન્યાવિક્રય, વૃદ્ધ લગ્ન-આ ચારે
હાનિકારક રીવાજો માણુસાઇ અને નીતિ વિરૂદ્ધ
છે. એટલુંજ નહિ પણ અનિતિને ઉત્તેજન
આપનાર અને ગાતિના માણુમોની શારીરિક
ખીલવણી તથા ચઢતી થવામાં વિદ્ય ૩૫ છે.
સરકારે એટલા માટેજ પ્રતિબંધ કર્યો છે તે
આપણા કિતને માટેજ છે.

૨. વાલ્લભ-કન્યાની ઉમર જોડામાં એટલી
૧૨ ને વરની ઉમર ૧૬થી ૧૮. તેથી ઓછી



ઊમરે લગ્ન કરનારનો નિર્બંધની કલમ ૫-પ્રમાણે ગુન્હો ગણી શકાય.

૩. વાઙ્ મેવીશાળ વંધ થવાની જહર-આ રિવાજને ટકાવી રાખનાર મિથ્યા કુળાભિમાની-ઓજ છે. તેઓની માન્યતા એવી છે કે અમારાં બાળકો વખતે મોટા થઈ જતાં કુદરતી ખોડ આવવાથી બદશીકલ કે લુલાં લંગડાં થઈ જાય તો કુંવારા રહી જાય, એવા વિચારથી ઘોડીઓ (પારણી)માંથી પ્રજાય તો અમેા કૃતાર્થ થયા. આવી રીતનાં નાનપણમાં કરેલાં વેવીશાળ કુદરતી ખોડ આવવાં છતાં પણ છુટી શકતાં નથી. આવી રીતે વર વધૂના પ્રેમી જોડાંની છંછળીને આરંભ તેમનાં માઆપોના હાથથી થાય છે એટલે વર ન જાણે કન્યા તે શું ? અને કન્યા ન જાણે વર તે શું ? એવી રિચાતમાં તેમનાં વેવીશાળ થતાં હોવાથી, તેમજ તેમાં વખતે કન્યાથી વરની ઊમર નાની જેવામાં આવે છે, જેથી આવાં બાળ વેવીશાળ (બાળ વિવાહ) બંધ કરી વેવીશાળ વખતે કન્યાની ઊમર ઓછામાં ઓછી ૬થી ૮ અને વરની ૯-૧૧ નો તફાવત રાખવો. આથી ઓછી ઊમરનાં બાળ વેવીશાળ લગ્ન થતા પહેલાં અટકાવવા તથા તેમાં ફેરફાર કરી યોગ્ય જોડાં સાથે લગ્ન કરવા છુટ આપવી, અને આવાં બાળ વેવીશાળ પણ નિર્બંધની કલમ ૫ પ્રમાણે ગુન્હેગાર ગણી શકાય.

કજોઠાંવાઝાં વાઙ્લગ્ન-એટલે કન્યાની ઊમર ૮ થી ૧૦ વર્ષ અને વરની ઊમર ૩૦થી ૪૦. વળી કોઈ વખતે કન્યાની ઊમર ૧૩થી ૧૫ અને વરની ઊમર ૧૦થી ૧૧ સુધી. આવાં લગ્ન કનેડાં વાળાં લગ્ન ગણાય છે. આવાં લગ્ન કરનારે ફાજદારી ગુન્હો કર્યો ગણાય છે. વધત્રી જતી અનીતિ તથા તેનાં બનાગ પરિણામને દાખો દેવાને માટે દૂધાણુ સરકારે જે કાયદો કર્યો છે તેને વધારી લઈ તથા તેને અનુસરીને તેવાં લગ્ન વેવીશાળ (વિવાહ) થતાંની સાથે લગ્ન ધના પહેલાં

અટકાવવાની જરૂર છે. તેથી ફાંપદોજ છે. આવાં કનેડાંવાળાં લગ્ન, વિવાહ તથા પછીથી એટલે લગ્ન થતા પહેલાં અટકાવવાની જરૂર છે. આવા કનેડાંવાળાં લગ્ન વિવાહ તથા પછીથી એટલે લગ્ન થતાં પહેલાં બદલી ન શકે તો, તેને નિર્બંધની કલમ ૫ પ્રમાણે જ-વાખદાર ગણવા. આવાં લગ્ન વેળાસર અટકાવવાથી ગાતિમાં પડતી મુશ્કેલીઓ ઓછી થઈ હિંદુશાસ્ત્ર પ્રમાણે બાળ વિધવાને વિધવાપણાનું જે દુઃખ સહેવું પડે છે તે તેનાથી દુર થઈ શકશે.

૫. કન્યા વિક્રય-દુનિયામાં જન સંખ્યાને ઉપયોગી દરેક વસ્તુ જેની કે ખોરાકી, પોસાકી, પશુ તેમજ બીજી કેટલીક ચીજો પૈસા લઈ વેચવામાં આવે છે તેવીજ રીતે કેટલીક ગા-તિઓમાં સ્વાર્થો મનુષ્યો પોતાની બાળાઓને તેના ભવિષ્યના સુખનો વિચાર નહિ કરતાં કોઈ વધુ પૈસા આપે તેવા અયોગ્ય વૃદ્ધ વર સાથે એક પશુની માફક ધાતકીપણે લીલામ કરતા જેવામાં આવે છે. ના. બ્રિટીશ સરકારે આફ્રિકામાંથી ગુલામી ધધો બંધ કર્યો ત્યારે આપણી દયાળુ કામમાં છાની યા ઊંઘાડી રીતે બાળાઓનો વિક્રમ થાય છે. ધણા આફ્રિકાની વાત છે કે-તે વિક્રમ બીજા કંઈને હાથે નહિ પણ તેમના માઆપોના હાથથીજ થતો જેવામાં આવે છે. આ દૃષ્ય માણુમાઇ ને રાજનીતિ વિરૂદ્ધ છે. માટે તેવું દૃષ્ય કરનારને નિર્બંધની કલમ ૫ ની પેઠા કલમ ૬ પ્રમાણે ગુન્હેગાર ગણવો.

૬. જુદલગ્ન-પુરૂષની ઊમર લગભગ ૪૯ થી ૫૦ થતા છતાં પહેલી વારની સ્ત્રીને પુત્ર અને પુત્રીની સંતતિ (પ્રજા) હોવા છતાં મિથ્યા કુળાભિમાને કરી શરીરો લગ્ન કરવાની ખાએસ ધરાવતો હોય તેવા મનુષ્યને નિર્બંધની કલમ ૫ પ્રમાણે ગુન્હેગાર ગણવો. ઉપર ન્મનુષ્યા પ્રમાણે કન્યાવિક્રમ જેવા આશ્ચર્ય રિવાજને ટકાવી રાખનાર તથા તેને ઉત્તેજન

આપનાર વૃદ્ધ લક્ષ્મી દિમાયની મનુષ્યજ છે માટે તે સત્વરે બંધ થવાની જરૂર છે. તેવું કૃત્ય કરનારને કાયદા મુજબ યોગ્ય શાસન મળવું જોઈએ.

૭. એક સ્ત્રીની હયાતિ દરમ્યાન વીજી-એક સ્ત્રીની હયાતિ દરમ્યાન તેને ત્રીસ વર્ષ પુરાં થયા પહેલાં અગર પુત્ર અને પુત્રીના છતાં ફરજદે ખરા કારણ સિવાય તેમજ હયાત સ્ત્રીની મંજૂરી મેળવ્યા સિવાય તેમ તેને માટે પુરતો ખંડાખસ્ત કર્યા સિવાય બીજી સ્ત્રી કરનારને ગુન્હો ગણવો.

૮. ફરજ્યાત જમણવાં-જેવી કે લગ્ન પ્રસંગે, સીમંત (અધરણી) તેમજ મરણ પછી વાડેના ફરજ્યાત ખરેજો જેવા કે-જમણવાર પ્રસંગે આખી ન્યાત જમાડવી, અમુક પગવાડે લઢાણું કરવું, અમુક પ્રસંગે અમુક ખર્ચ કરવો જોઈએ આના ફરજ પાડીને કરાવવામાં આવતા ખર્ચો કોષપણ સખસની રિથતિના પ્રમાણમાં પાચગણી થાય તેવા ખર્ચાળ હોય તો નિબંધની પેટા કલમ ૨ પ્રમાણે ગુન્હાને પાત્ર થઈ શકે.

ફટાણાં વિમસ્ત ગીત-આ ખરાબ અને અનીતિ ભરેલા તેમજ ભવિષ્યની પ્રજા ઉપર ધણી માઠી અસર નીપજાવનારો રિવાજ સત્વરે બંધ થવાની જરૂર છે. એ પણ નિબંધની કલમ ૫ પ્રમાણે ગુન્હો ગણી શકાય.

૧૦. પેટા જાતિમાં અગર પેટા સમુદ્ધ અગર અમુક હદમાં લગ્ન કરવાની ફરજ પાડનારો જાતિનો કાયદો-હવેથી સરકારના કાયદા પ્રમાણે જાતિના કોષપણ માણસને બંધનકારક ગણાયો નહિ.

૧૧. સાસ સારી માણે ઘણી અને એક જ બંધની કન્યા એટલે દરેક જાતિની-કોન્ફરન્સ અને સમાજે સ્વીકારેલા નિયમાનુસાર તેવી તેવી જાતિની કન્યા લાવનારને ને આપનારને માટે જાતિ દંડ યા કોષ બીજી સજા કરી શકવી હોય તો તે આ કાયદા પ્રમાણે કરી

શકે નહિ, અને કદાપિ કરે તો નિબંધની કલમ ૧ પ્રમાણે તેવી રીતનો દંડ યા સજા કરનાર ગુન્હાને પાત્ર થઈ શકશે-આવી રીતે અન્યાય મળવાથી ફરિયાદી હકુમતવાળી પ્રાંત ન્યાયાધિશીમાં અપીલ કરશે તેથી તે ન્યાયાધિશી ફરિયાદીને હકુમનામું કરી આપી-હકુમનામાની બજાવણીમાં તે દંડ ખર્ચ અને નુકશાની સાથે ફરિયાદીને તે પાછો આપાવી શકશે.

૧૨. મળ પ્રસંગે અયોગ્ય અને મર્યાદા રહિત કોક ક્રિયા-જેવી કે અમુક વિધવાએ ધણીના મરણ પછીથી જરૂર બનતી કે જાહેર રસ્તા ઉપર જાણી છાતીએ કુટવું, મોટે સાંદેથી હાથપીટની છુમો પાડી રડવું, અથવા અમુક દિવસ સુધી અમુક રીતે રડવું યા શોક પાળવો યા બીલકુલ ઘરમાંથી બહાર નીકળવું નહિ, આવી ફરજ પાડનારા જાતિના રિવાજો શારીરિક શક્તિ તથા તન્દુરસ્તીની હાનિ કરનારા હોવાથી તેમનો કેટલોક યોગ્ય સુધારો કરી તે રિવાજ જેમ બને તેમ ઓછો કરવો.

૧૩. દરિયાપારની મુલાકાતી (પરદેશ ગમન અટકાવનારા-સાર્વભૌમ બિદેશ સંસ્તનતની શીતળ છાયા ભારતવર્ષમાં પ્રસર્યા પછીથી આખી દુનીયાના દરના મુલકો એટલે યુરોપ, અમેરિકા એશિયા; આફ્રિકા, અને આસ્ટ્રેલિયા વગેરે ખંડોના મુલકો સાથે ભારતવર્ષ વ્યાપાર અને રાજકિય સંબંધથી જોડાયેલા જોવામાં આવે છે. ઉપર જણાવેલા સુધારામાં આગળ વધેલા મુલકોની પ્રજા દિન પ્રતિદિન વ્યાપાર ઉદ્યોગાદિમાં ઉન્નત દશાએ પહોંચતી જાય છે, વેપાર ઉદ્યોગાદિમાં વંધારે છુટાપણુના નિચાર ધરાવવાવાળા પરદેશીઓની સામે હરીફાઈમાં ઉતરવાને માટે પરદેશગમનની ખાસ જરૂર છે. દિંદના કેટલાક કેળવણી ૧૦મી જાતની રાષ્ટ્રિય કેળવણી તેમજ આપાર ઉદ્યોગાદિને માટે ઇંગ્લેંડ, ફ્રાન્સ, અમેરિકા, ચીન, જાપાન આદિ, દરિયાપારના ને દરના મુલકોમાં જન્મ્યા-આવ્યા છે તેઓ જાતિથી બ્રાહ્મણ થાય છે એવી આ



દેશના જુના વિચારના લોકોની માન્યતા હોય તેને લીધે તેવા પરદેશગમન કરી આવેલા કેટલાક સુશિક્ષિત કેળવણેલા સાહસિકોને જ્ઞાતિ બહિષ્કાર વગેરેની શિક્ષા ખમવી પડી છે, અને કેટલાકને તેવી શિક્ષા ખમવી પડેલી, જેથી કોઈ મારફતે તેમણે વ્યાજબી ન્યાય મેળવેલો છે, એવા અનેક દૃષ્ટાંતો શાસ્ત્રને આધારે સિદ્ધ થઈ ચુક્યા છે, જેથી પરદેશગમન કરવાને હવે કોઈ બંધનતા પાઘ નથી. કદાચ તેવી ખામતમાં કોઈ વાંધો હો, અગર જ્ઞાતિ બહિષ્કારની શિક્ષા કરે તો તે નિર્જનની કલમ પ ની પેટા કલમ ૩ પ્રમાણે ગુન્હાને પાત્ર થઈ શકશે.

૧૪. આગળ વ્યવહારમાં આદલ્લીલા રૂપ—

ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે કેટલાક જ્ઞાતિ દિવાળી સાંસારિક ઉત્તરિને બદલે અધાગતિએ પહોંચાડનાર ને જન સમાજની ચક્તી થવામાં વિશ્વ તેમજ આડખીલા રૂપ છે. તેને માટે મારો અભિપ્રાય એવો છે કે—

પ્રથમ તો આપણી કેટલીક કોમ સમુદ્ધ અને પેટા સમુદ્ધમાં એવી રીતથી વહેંચાઈ ગયેલી છે કે—એક એક જ્ઞાતિની અંદર સો, પચાસ અને પચીસ પચીસ ધરના દિલગીરી બરેલી હદ સુધીના સમુદ્ધો અને તડ પડી ગયેલાં છે, જે એક ખીળ સાથે મિથ્યાભિમાને કરી લગ્ન સંબંધથી જોડાઈ ચકતા નથી. આવી સંકુચિત મર્પદાનું જ્યાં સુધી શેષ વિચાર્ય કરી એક ખીળ સાથે લગ્ન સંબંધથી જોડાઈ શકશે નહિ ત્યાં સુધી આગ-લગ્ન, કન્નેડાં, દન્યાવિક્રય, ઉદ્ધ લગ્ન આદિ હાનિકારક દિવાળી-આટલી શકશે નહિ. તેને માટે ના. દયાળુ ગાયકવાડ સરકારે જે ગાલત સુધારણાને કાયદો પસાર કર્યો છે તેને માન આપી આવાદમાં જણાવ્યા પ્રમાણે જ્ઞાતિ ઉત્તરિને માટે સમુદ્ધ અને પેટા સમુદ્ધે જોડાઈ લઈ ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે કેટલાક હાનિકારક દિવાળી આપણી જ્ઞાતિમાં છે તેમાં

યોગ્ય સુધારો કરી આપણી જ્ઞાતિના રીત રિવાજો સરકાર તરફથી મંજૂર કરાવી લેવા જોઈએ કે જેથી તે નિયમને અનુસરીને જ્ઞાતિ તરફથી તકરારો સાંભળા નિકાલ કરવાનું આપણને સુગમ ચાય, તેમજ જ્ઞાતિ તરફની તકરારો કોર્ટમાં જવા પામે નહિ.

હવે આ જ્ઞાતિ સુધારાના કાયદાને અનુસરી દરેક જ્ઞાતિના પંચે ન્યાય કેમ આપવો, તેના સંબંધમાં ના. દિવાળ સાહેબની સદી સાથે જે માર્ગદર્શક બહેરનામું પ્રસિદ્ધ થયેલું છે તેને અનુસરીને ઇન્સાફ આપવાની જરૂર છે.

હવે પંચે ઇન્સાફ કેવી રીતે આપવો તે સંબંધમાં જ્ઞાતિ તરફથી એક કમીટી નીમી તે મારફતે ગુન્હાની તપાસ તથા નિકાલ કેમ કરવો તે નીચે પ્રમાણે—

૧. પંચ પ્રતિષ્ઠિત ને વાકેફગાર હોવો જોઈએ.

૨. દરેક જ્ઞાતિના, દરેક વિભાગના અને ગામના વધુ મતે—સુઘ, પ્રતિષ્ઠિત પ્રમાણિક ને વાકેફગાર માણસને પોતાના તરફથી જ્ઞાતિ પંચ (કમીટી) માં નીમવો. આ પ્રમાણે ગામનાર નિમાયેલા મેંબરો નિર્ણિત સ્થળે એકઠા મળ્યા પછી વધુ મતે તે મેંબરો વૈષ્ટી જેને વધુ મત મળે તેને સરપંચ નીમવો.

૩. સરપંચે કમીટીના હાજર મેંબર રૂબરૂ જે સાક્ષીઓની જુબાની લેવાની હોય તે દરેકને એકજ બાતના સોગળ આપી ગુન્હાની ચોક્કસી કરવી.

૪. આરોપીને સોગળ ખવરાવવા નહિ.

૫. કમીટીના મેંબરો ચાલતા ગુન્હાની ચોક્કસી કરવામાં મદદગાર થઈ પડે એવા સવાલો સરપંચની મંજૂરી મેળવી પૂછી શકશે.

૬. તેના તેજ સવાલો કરીથી વખત ગુમાવનારા અગર નકામા દેશન કરી કંડાળો આપનારા, તેમજ કોઈની દન્યાતને લાગી કરવાગ સવાલો પૂછવા સરપંચ ના પાડશે.

૭. તપાસ પૂરી થયે સરપંચે સરખા હાજર રહેલા મેંબરોના મન લઈ કે કરનાં વધુ, મંદ

મળે તો ગુન્હો સાબીત થયો, એમ કંઈમાં લખી સરપંચ તરીકે તારીખ નાંખી પોતાની સહી કરી અને ગુન્હા માટે ઠરાવેલી સભા જણાવવી, એમ કંઈમાં લખવું.

૮. કમીટીના મેમ્બરોએ તપાસ ચાલતી હોય તે દરમ્યાન નકામી ગરબા કરવી નહિ, કોઈની મરકરી યા તિરસ્કાર કરી હલકા પાડવા નહિ પણ એક ગૃહસ્થને છાજે તેવી ગંભીરગત ન્યાય અને ત્રવેક બુદ્ધિની પક્ષપાત યા અન્યાય ન થવા પામે તેવી રીતે ચોખ્ખા અને પ્રમાણિકપણાથી નિસ્વર્થપણે ઉમદા સ્વભાવથી જેમ અને તેમ જલહી કામનો પાર આવે તે કોઈપણ ન્યાય ટીકાને પાત્ર ન થાય તેવી રીતે વર્તવું.

૯. સદર કમીટી યા પંચનો કોઈ મનુષ્ય પક્ષપાત રીતે વર્તન કરતો માલુમ પડે તો તેને કમીટીમાંથી દુર કરી બીજા લાયક માણસની નીમણૂક કરવી.

૧૦. ફેટલીક ગાંતિઓમાં ગુન્હેગારના ખર્ચે પંચો ભરવાનો રિવાજ છે તે રૂઢિ કાઠી નાંખી પંચ બેઠું મળે ત્યારે તેને ખર્ચ પંચના ખર્ચથીજ કરવો. ગુન્હાને માટે કૃત્યના પ્રમાણમાં દંડ લેવો પણ તે ધન્નાકે તો ગાંતિના ખર્ચેજ કરવો. તેમજ ગાંતિ પંચે સંધાને સરખો ન્યાય મળે તેવી સંભાળ રાખવી. ના. દિવાન સાહેબની સહીથી ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે જે માર્ગદર્શક જાહેરનામું પ્રગટ થયેલું છે, તે મુજબ ગુન્હાના પ્રમાણે યોગ્ય ધન્નાકે થઈ સભા થવી જોઈએ.

૧. બિન મહત્વનો ગુન્હો માફ કરવો.

૨. દેવપ્રાપ્તિ અગર કોઈને નુકસાન કરવાના ધરાણથી ચોક્કસ કરવામાં આવતી નંધો એ વિશે ખાસ સાવચેતી રાખવી.

૩. આરોપી (ગુન્હેગાર) વિરૂદ્ધ જે હકીકત હોય તેની તેને લેખી ખબર આપવી.

૪. હકીકતનો તેની તરફથી યોગ્ય ખુલાશો થવા સુધી આપવી.

૫. ગાંતિના લોકોને ઠરાવેલી રીતે એકંત્ર બોલાવી તેમના સમક્ષ જે તે ખુલાશો કરે અગર પુરાવો આપે તે લખવો, અને એકંદર હકીકતનો પૂર્ણ વિચાર કરી લેખી ઠરાવ આપવો.

૧૧. જે જે વખતે પંચની નજરમાં આવે તે વખતે તેટલી રકમનો દંડ પંચવાળાઓ કરી શકે, તેવી રૂઢી બંધ કરી ગુન્હાના પ્રમાણમાં ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણે અન્યાય તેમજ પક્ષપાત થવા પામે નહિ તેવી રીતે ન્યાય આપવો.

૧૨. નહિ વહેંચણુ થયેલા પુરવંતી વિધવા માટે હાલની મોંઘવારી સ્થાનમાં લઈ યોગ્ય રકમનું પશુ કાયમ રાખી પછીથી ખોરાકી પોશાકીની રકમ નક્કી કરી આપવી. તેમ નહિ કરનારને ગાંતિએ યોગ્ય સજા કરવી.

૧૩. ઉપર પ્રમાણે ગાંતિના ગુન્હેગારો પાસેથી આવેલી દંડની રકમ અમુક સદર ઠેકાણે જમે રાખી તેનો ઉપજ ખર્ચનો ચોખ્ખો હિસાબ વાર્ષિક રિપોર્ટમાં પ્રગટ કરવો.

૧૪. ઉપર મુજબ દંડની આવેલી રકમમાંથી ૧ ભાગ ગાંતિ પંચના ખર્ચને માટે કાયમ રાખી બીજા નાણાં-ગાંતિના ગરીબ વિદ્યાર્થીને સ્કોલરશીપ, નીતિ પથે ચાલનાર ગાંતિની ગરીબ વિધવાને ગુપ્ત દાન વગેરે બીજાં ઇતિહાસના કામમાં વાપરવા.

નોટ-આ સૂચના કરવાનો હેતુ એ છે કે-ના. ગાયકવાડ સરકાર તરફથી ગાંતિ સુધારાને માટે જે કાયદો બહાર પડેલો છે તેના અપવાદમાં જણાવ્યા પ્રમાણે ઉપર જણાવ્યા પ્રમાણેના યોગ્ય સુધારો કરી આપણી ગાંતિના રીત રિવાજો, કાયદેસર રીતે સરકાર તરફથી મંજૂર કરાવી લેવાની જરૂર છે કે જેથી તે પદ્ધતિ પ્રમાણે દરેક ગાંતિ પોતાના પંચ મારફતે ન્યાય આપી શકે. તેને માટે આ સૂચના અપવાદમાં આવી છે. જે સર્વના હિત માટે છે તો તેનું સર્વે ગાંતિ અનુકરણ કરશે એવી આશા રાખું છું. આ સંબંધી વધુ વિગત માર્ગદર્શક અક્ટોબર ૧૯૧૭ની આદાપત્રિકામાં જોવું.



શ્રાવકનાં વારં વ્રતો ।

પ્રિય ધર્મ બંધુઓ,

આપણે જે શ્રાવકનાં નામ ધરાવતા હોઈ તે આપણે આપણાં વ્રતો એટલે પાળવાના કાયદાઓ શું શું છે તે ખાસ જાણવું જ નોંધ્યે. શ્રાવક કુલમાં આપણો જન્મ થયો એટલે એમ માનવું ન નોંધ્યે કે આપણે શ્રાવક છીએ. શ્રાવક કોણ ? જે બાર વ્રતોનું પૂર્ણ રીતે માન રાખીને પોતાનું વર્તન કર્યો જાય તેજ શ્રાવક છે. એ પાળનાર પછી બધે વાણીઓ, બ્રાહ્મણ, ક્ષત્રિય વા શૂદ્ર હોય, અરે શૂદ્ર તો શું પણ તે જે કદિ ને બંગી અગર દેડ પણ હોય તો તે વ્રતો ન પાળનાર શ્રાવક કરતાં એક છે. આ વ્રતો ખાસ શ્રાવકોજ પાળે એવો કાંઈ ઇનકારો અપાયો નથી. એ તો જે પાળે તેનાં છે. દરિયાના પાણીનો માલિક કોણ ? ઉપયોગ કરનાર. તેવીજ રીતે આ વ્રતોને અનુસરી જે કર્યા કરે છે તેજ ખરો શ્રાવક છે. અહા ! પણ જેની બાઇઓમાં પણ કેટલાક એવા પડ્યા છે કે અંગ્રેજો કે જે વ્રતોનું આચારણ કરે છે, આચારણ નહિ તો કાંઈ પોતે છે તેના કરતાં ધર્માનુસાર રિયતિમાં રહે છે તેવાં પોતાની નાતમાં પણ હોતા નથી. આ ક્યાંનો ન્યાય ? હે બંધુઓ ! જે શ્રાવક ધર્મ પાળવાને માંગતા હોય તેને તમે ક્યાં અગ્રગણ કરો છો ? શું બુઝી ગયા કે પુરાતન કાલમાં જેન ધર્મ સર્વે વ્યાપક હતો. સર્વે જેની હતો તે વખતે શું કાંઈ નીચ ઉચ ધર્મો નહિ કરતા હતા ? હે બંધુઓ ! આપણા આવા અજ્ઞાનને સહને આપણે આપણી કામની ચક્રની થતાં અટકાવીએ છીએ. હા ! અગ્રગણની વાત છે કે આપણા જેની જેની સંખ્યા કાલાનુક્રમે ઘટતો જાય છે અને બધે રહે છે જે જે આવાજ વિચાર રાખી જાય એમી રહે તો આપણી કામનો નાશ થતાં

વાર ન લાગે. જે તમે વૃદ્ધિ કરવા માંગતા હો તો શું તમને આ વિચારો અયોગ્ય લાગે છે ? યોગ્ય લાગતા હોય તો શા માટે અમલમાં મુકતા નથી ? બાર વ્રતો ક્યાં ક્યાં છે તેનો હવે વિચાર કરીશું.

વ્રતો બાર છે અને તેનાં ત્રણ ભાગ પાક-વામાં આવ્યા છે. તે અણુવ્રત, ગુણુવ્રત અને શિક્ષાવ્રત છે. આ ભાગોનાં પણ પેટા ભાગો છે. હવે આપણે પહેલાં વિચાર કરીશું કે અણુ-વ્રત એટલે શું ? હિંસા, જૂઠું, ચોરી, મૈથુન અને પરિગ્રહ એ પાંચ પાપોનો રચૂલપણે લાગ કરવો એને અણુવ્રત કહે છે,

હવે આપણે ગુણુવ્રત પર વિચાર કરીશું. મૂલ્યગુણને વધારવા માટે દિગ્વ્રત, અનર્થદંડ, અને ભોગોપભોગ પરિભાણ એ ત્રણ “ગુણુવ્રત” છે. મધ, માંસ, અને મધનો લાગ કરવો અને પાંચ અણુવ્રત ધારણ કરવાં એ આઠ શ્રાવકના મૂલ્યગુણ છે.

શિક્ષાવ્રત ચાર છે.—૧ દેશાવકાશિક, (૨) સામાયિક (૩) પ્રાપ્તોપવાસ, અને (૪) વૈયાજત.

આપણે વ્રતો કેટલાં અને કયાકયા એ વિષે નોંધ ગયા છીએ. હવે દરેકને બાંધીથી તપાસીએ

અહિંસા અણુવ્રતનું લક્ષણ.

(૧) અહિંસા અણુવ્રત કોને કહે છે ? જે મન, વચન, અને કાયા વડે કરેલો, કરાવેલો અનુભોદના રૂપ વડે ચર પ્રાણી એટલે જે ઉદ્વિપાદિક તત્ત્વ પ્રાણીનો ઘાત ન કરવો તેને અહિંસા અણુવ્રત કહે છે. આના પાંચ અભિચાર છે—શરીર છેલ્લું, બંધનમાં રાખવું, લાકડી વિગેરેથી મારવું, દડયા વધારે માર બરવો, અને ખાવા પીવામાં દરેક વસ્તુ એ પાંચ રચૂલ હિંસા લાગના અભિચાર છે.

બંધુઓ ! આપણો ધર્મ ‘અહિંસા’ પર-એ ધર્મનોજ છે. અને તેનાજ અહિંસા એ ધર્મની સીકીટ પડેલું પગાળું છે. અજ



ધીએ ચઢતાંજ આપણે વિચારીને પગ મુકવો કારણકે કદાચ અયોગ્ય પગલું મુકાય તો પડી જવાનો સંભવ રહે.

વિચારો કે આપણા (કહેવાતા) શ્રાવક ભાઈઓ કેવી રીતે આત્મન પાળે છે ?

શુભરાતી નવલકથા વનરાજ આય-
ગમાં તેના કર્તાએ જૈનોપર સખ્ત ટીકા કરી છે. કર્તા જણાવે છે કે “શ્રાવકો નાના છત્રને પાળે છે અને મોટા છત્રને મારે છે.” આ વાત મત્ત્ય કે અમત્ત્ય તે તો દરેક જૈન ભાઈએ પોતાના આચરણ પરજ વિચાર કરી માની લેવું, પણ એટલું તો ખરું કે કેવી નજીવી ચીજને મોટી કરી દે છે. પોતાના લખાણને સુંદર બનાવવા અસત્યનું બાન રાખ્યા વિના કંઈ કંઈ લખી જાય છે.

હાખસો:-બધ્ય મહેલનું વર્ણન કરવા બેસશે તો લખશે કે તે પ્રાસાદના ઉપગના ભાગો ગગન સાથે ગોટી કરતા હતા. શુ ખૂબી ? અવાચકને વાચક બનાવવો એ તો જાણે કંઈ છેજ નહિ. આખરે એટલું તો ખરું હોય કે એ મહેલ ઉંચો હતો. આવીજ રીતે કદાચ કવિએ તે વખતના જૈનોનું એ પ્રમાણે કંઈક અંશે વર્તન દર્શો તે ઉપરથી ખાસી એક પા-
નાની દેડકા તથા ઘરડા માણસની વાત લખી મારી. ‘મીઠું મરચું’ સરવું એટલે લખ્યું, ‘મિણ કોણ સત્યાસત્ય’ જોવા ગયું ? દાલમાં એમાંતો કંઈક અંશે આપણામાં ઉતર્યો છે કે નહિ ? સાખીતી માટે જુવો આપણી રિત્રિત.

પાંજરાપોળ-કલાણા શેડે આજે પાંજરા-
પોલ ખોલી. પાંજરાપોળ એટલે શું ? જતાવરોને રાખવાનું સ્થાન. ના, ના; તેમ નહિ અપંગ જનવરો અથવા પોષક વગર ભૂખે મરતા દેરોને પાલન કરનારી સંસ્થા. એક અમેરીકને એક પાંજરાપોળ તપાસી અને પોતાનો મત જણાવ્યો કે-દર્દી રીમાતા દુકે મમય માટે જીંદગી નીમાવનારા હમ્મેશને માટે ખોડ પામે-
લા દેરોને જીવતા રાખી તેમને દુઃખ દેવા

કરતાં દુકે સમયમાં મરી જઇ પોતાનાં દર્દીથી મુક્ત થાય એવા ઉપાયો લેવા જોઈએ. અપંગ ગાય કે જે ચાલી શકતી નથી તેને શા માટે રાખવી. આ ક્ષણમંથુર દુનિયાનો ત્યાગ એવા દેરોને પડેલો કરાવવો. વાહ ! શું ઉમદા વિચાર ! ભાઈઓ, કાંઈ એમને સમજવી શકારો ? કેમ નહિ. એ સાહેબને કહેવું કે તમે તો એમજ માનો છો કે આ દુનિયા છોડી કે થયું. પછી ખીજ દુનિયા. અર્કિં પાણું આવવું છે કેને ? પણ અમારા ધર્માનુસાર વેદની કર્મ ભોગવ્યા વગર છુટકો નથી. જ્યાં સુધી દુઃખ વેઠવાનું છે ત્યાં સુધી તો વેઠવુંજ પડે. અસાતા વેદનીય કર્મનો નાશ થયો કે બસ થયું. જો એ કર્મ પૂર્ણ રીતે ન ભોગવાય તો ખીજ જન્મમાં પણ એ ભોગવવાનું પડે, તો પછી દુઃખીની દયા લાવી સારવાર કરવામા વાધો શો ? આ-
પણે પણ માદા પડીએ છીએ તમારે દુઃખ થાય છે. શું તે વખતે તમે ઝેર અગર ઝેરી ચીજ ખવરાવવા તૈયાર થશો ખરા કે ? આવો જવાબ કદાચ તે સાહેબને ન રહે કારણ કે ક્યા વેરાગી અને ક્યા રાગી ? એમના વિચારો જુદા અને આપણા જુદા. હે ભાઈઓ ! તમે પણ તમારા વિચાર પ્રમાણે પાંજરાપોળ સારી કેનહારી એવિયે વિચાર કરજો.

પશુ છોડાવવા-પશુને કસાઇના હાથ-
માથી બચાવ્યું એટલે જૈનો તો એમજ માને છે કે એને જમથી બચાવ્યું. આપણામાં પર્યુ-
પણના શુભ દિવસોમાં કસાઇ પાસેથી દેરો છોડાવા જાય છે. કસાઇઓ પણ ચેવી જાય છે, પણ પર્યુપણ પહેલાંજ અપંગ મરવાની તૈયારીમા રહેલા વિગેરે દેરો ખરીદી લાવે છે અને વચ કરવાની જગ્યાએ એવી રીતે ગોઠવે છે કે જાગે હમણાજ કપાવાના. ત્યાં જૈનોનું જતું થાય, એટલે કસાઇ તો બસ એમજ કહે-
વાના કે “હમકો તો ખેચના હી નહી હે.” શેઠજ એસા તૈસા કરીને પાંચ પચ્ચીસ દેરો છોડાવે અને કસાઇને મકોં માગ્યા પૈસા આપે,



આથી તે બાઇ તવંગર થાય અને એજ મું-
ડીમાંથી વધારે જનવારો લાવી પોતાનો ઉદર
નિર્વાહ ચલાવે. વાહ ! કેવી દયા ? બાઇઓ !
ને તમારામાં શક્તિ હોય તો કસાઇના બધાં
દોરો ખરીદી લો અને તેનાં છરા અને ધાતકી
લથીઆરો લઈ લો અને તેને બીજાં ધધે લા-
ગવા ઉપદેશ આપો અથવા તમે પોતેજ તેને
ધધે લગાડવાનો પ્રયત્ન કરો નહિ તો પછી
કસાઇઓને આવી રીતે ઉત્તેજનજ આપ્યાજવાથી
લાંબને બદલે નુકશાનજ નુકશાન થયા કરવાનું.

પક્ષિ-કેટલાક મુસલમાનો યા વાઘરીઓ
પક્ષિઓને પગથી બંધે છે અને દયાળુ જૈનોને
દહે છે કે અમુક રકમ આપો નહિ તો હમણા
એને મારી નાંખીશ. શેઠજી ગમરાય છે, મહી-
ડાય છે અને આખરે પૈસા આપી છોડાવે છે.
આપણાં આવાં પક્ષિ ક્યાં લગી જમ જેવાની
પાસે રહી એવાં તો બચથી કંપી જાય છે
કે ઉડી જતાં ઉડી જતાં પડી જાય છે અને
પાછા દુખેના લાઘમાં સપડાય છે. ને ને આ
જૈનોની દયા !

મનુષ્યો પ્રત્યે દયા-એ તો સિદ્ધજ થશે
કે જ્યારે અવાચક પરશુપક્ષિ પ્રત્યે જૈનો પોતાની
આટલી બધી દયા ખતાવે છે તો મનુષ્ય જ-
તિ પર કેટલી બતાવતા હશે. હિંસા કરવી
એટલે જીવથી દૂર કરવો એટલુંજ નહિ પણ
લાગણી પણ ન દુઃખાવી જોઈએ. આ રીતે
તો એવુંજ હોવું જોઈએ કે સર્વે સર્વેની દયા
કરે, પણ ક્યાં છે આવી દયા ? જુવો કેટલી
વિધવાઓ દુઃખથી પીડાય છે ? ક્યાં ખતા-
વાય છે દયા ? દયા ને ખતાવાની હોત તો
વિધવાન અને તેવા પ્રથમ પગલાં લેવાય, પણ આપ-
ણામાં તો કેટલાક કન્યાવિક્રય કરે છે. જેશેક પગ
પડીને છોડાવવા જાય છે તેજ શેઠ ને કે પેને
વ્યોત્ક હોય નોપણ દુનિયાના ભોગો ભોગવવાની
લાલસાથી નવી પત્નીને જવાની નહાધરાવે કે
દંડાલો પણ ક્યાં એણે હોય છે ? શેઠ દલા-
લને વાત કરી કે દલાલ આમ તેમ સમજાવી

ગિચારી નિર્દોષ અજાન બાળાને પરણાવી દે
છે. અજાણ્યા આવા પતિપત્નીને વરવહુ
નહિ પણ આપખેડીજ જાણે. જ્યારે સ્ત્રી
યુવાન થાય ત્યારે શેઠજી મરણ શય્યા
પર પડે. ગિચારી બાળા દુનિયાના મુખને
સંધવા છતાં ભોગવી શક્તી નથી અને જ્યારે
શેઠજી ગયા કે રંડાય છે. આવા બારીક-સમ-
યમાં ને તેઓને કાંઈ ધર્મનો અંશ હોય યા
પોતાના મનોબળ પર પૂર્ણ કાયુ હોય તોજ
તે નિષ્કલંકિત જીંદગી પસાર કરી શકે છે.
આવી તો માગેજ હોય છે. વળી કેટલીક
વિધવા પોતાનાં દુષ્ટ કર્તવ્યોથી ઉત્પન્ન થયેલાં
બાળકોને પાંચખાનામાં ફેંકી દે છે. બચાવો
બચાવો, દયાળુ જૈનો ! આવી હિંસા થતી અટ-
કાવો. જ્યારે નાના જીવને ઉગારો છે ત્યારે
આવા જીવને ઉગારવા કેમ આગળ વધતાં
નથી. શું કાંઈ વમે કરી શકતા નથી ? આનો
રક્ત એજ ઉપાય છે કે આવાં કર્મોડાં થતાં
અટકાવો. અને પછી કાંઈ પાપોદ્યને લઈને
રંડાય તો તે માટે કાંઈ પ્રયત્ન કરો. આવી
વિધવાઓ કે જોએને તેના સાસરીયાં કાંઈપણ
તેમની દરકાર રાખતાં નથી અને સખત કામ
કરાવે છે, પૂરું ખાવાનું આપતા નથી તેમની
શું વમે દયા નહિ કરો ? અહિંસા પરમો ધર્મ
ક્યાં ગયો ? તેઓને માટે શ્રાવિકાશ્રમોમાં
ગોઠવણ કરો. દુરાચારી થતાં સદાચારી
બનાવો. જૈનો ! આ પણ તમારોજ ધર્મ છે.

અહિંસા અણુવ્રતના પાંચ અતિચાર-

આપણે અહિંસા અણુવ્રતના અતિચાર આગળ
જોઈ ગયા છીએ. તેમાં આવી ગયું કે છેદવું
ખાંધવું વગેરે એમ પાંચ અતિચાર છે

છેદવું એટલે કાપવું. કોઈપણ પ્રાણીને
કાપવું નહિ. બાઇઓ, જરા કુતરના શીખીન
લો-તો આપણે વિચાર કરીશું ! તેઓ કુતર-
ઓનાં કાન પછડી છત્તાદિ કાપી નાંખે છે. શું
એ અતિચાર નહિ ? કુદરત વિદુદ પગલું નહિ ?
શું કુદરતમાં અકલ ન હતી કે ? કુદરતે કાન



તથા પૂછી હોવાથી શું ખેડાણ દેખાય છે? ના ના. તેનામાં અક્ષલ હશે. પણ હાલની સુધરેલી પ્રજાને ખાંડા ગમે છે. બધા મનુષ્યોના સ્થેજ સ્થેજ કાન કાપ્યા હોય તો કેમ ખરાબ દેખાય? પૂછી જોજો શોખીનોને? પણ મનુષ્યો કયા કાપ્યા છે કે કાન કાપવા દે. એ તો કુતરા કેમ અક્ષલ કે કાપવા દે છે, પણ નિર્દય રાક્ષસો આગળ ગરીબનું શું જોર?

આજકાલ જ્યાં ત્યાં હોમશ્લ અને સ્વતંત્રતા મંગાવ છે તો તેઓ બીજાને કેમ સ્વતંત્રતા નથી આપતા. પોપટ વિગેરે પક્ષિઓ જે વિશ્વના લોકોને મધુર ગાન સમજાવવા વત્સલ રહે છે તેઓને આપસ્વાર્થ પોતેજ એકલા તેનો લાભ લે એવી આશાથી ખેંચ રાખ્યાં પૂરે છે. આ કેટલા વખતની કેદ? જન્મ પર્વતની. આ પણ એક અતીચાર.

બોલગાડી રાખીને કેટલાક શેડીઆ આનાં અતીચાર કરે છે. શું પૈસાનો આવોજ ઉપયોગ! હે શેડીઆઓ! પહેલાં તમે તમારા ઘરમાં તમે જે અતીચાર કરો છો તે બંધ કરી બીજાં કરતાં હોય તે બંધ કરી બીજાં ન કરે તેનો ઉપદેશ દો.

વીજું સત્યાણુવત.

અહિંસાણુવત વિષે જોઈ ગયા છીએ. હવે આપણું બીજું વ્રત શું છે તે વિષે ચિચાર કરીશું. બીજું વ્રત સત્યાણુવત છે. સત્ય આણુવત એટલે સ્થૂલ અસત્ય પાપ બોલે નહિ તથા બીજાની પાસે બોલાવે નહિ અથવા જે સત્ય બાપણથી બીજાને દુઃખ ઉપજે એવું સત્ય બાપણ પણ બોલે નહિ તથા બીજાને બોલવાને પ્રેરે પણ નહિ. એના પણ પાંચ અતીચાર છે. ૧. ખોટા ઉપદેશ આપવો. ૨. કોઈની ડાની વાત પ્રકટ કરી દેવી. ૩. ખોટા દસ્તાવેજ પોરે લખવા. ૪. સોંપેલી વસ્તુ બૂલી જવાથી બોલો આપવી. ૫. મંત્ર બેદ પ્રકટ કરવો.

૨૬૮ આ વ્રતનું આચારણુ કરવાથી સત્યવાદી હુશિયારને અમર પ્રમાણિ મળે અને

તેનું નામ અમર થયું. હે બધુઓ! જો આપણે ખારે વ્રતોનું આચારણુ કરીએ તો આપણી પ્રમાણિ કેવી થાય? જ્યારે એક વ્રત પાળવાથી દેવતાઓ પણ પ્રસન્ન થયા ત્યારે ખારે વ્રતો ધારણુ કરવાથી કોણ પ્રસન્ન ન થાય? પણ અહિંસાની વાત છે કે જે વ્રત પાળાનું નથી. ઉલટું વિપરીત રીતેજ વપરાય છે.

કોઈ ચીજ આપણે જાણતા હોઈએ અને હકાર પા નકાર કરીએ તો જુદું બોલ્યા એમ શું ન કહેવાય? ધારે કે એક વિદ્યાર્થીએ ચોરી કરી અને જ્યારે તેનો શિક્ષક આવી વર્ગ મંથે એમ પૂછે કે આ ચોરી કોણે કરી અને જ્યારે કોઈ બોલે નહિ ત્યારે એમ ન કહેવાય કે તે છોકરો જુદું બોલ્યો નથી? અસત્યવતે હકકકકું જુદું બોલ્યો એમજ કહેવાય.

જુઓ કે ગરીબો તથા વગવગરના આદમી કેટલા રહેંસાય છે. ખોટી સાક્ષી પુરવી, ખોટા દસ્તાવેજો કરવા એ શું?

કાણેને કાણે કહેવો એ પણ અસત્યાણુવત છે. કોઈ આદમી બહેરા હોય અને તેને બહેરા બહેરા કહી ખીજવો એ પણ અસત્યાણુવત.

હિંદુસ્થાનની વ્યાપારિક સ્થિતિ જુઓ. કોઈને કોઈનો વિશ્વાસજ નહિ. જો આપણે નજીવી વસ્તુ ખરીદવાની હોય છે તો આપણે કેટલી સુધીજ પડે છે. દુકાનદારને ત્યાં જઈએ અને ભાવ પૂછીએ તો જો એ આનાની કીમત હોય તો કહેશે કે ચાર આના. આપણે પણ ખાત્રી હોય કે એવડા ભાવ ઠોકે છે. આપણે ત્યારે કંડીયું કે દોઢ આનો. આખરે પચ દશ મીનીટ એક બે દુકાને ધક્કા ખાંધા બાદ આપણે એ આવેજ મેળવી શકીશું. આથી ઉભયપક્ષને ગેરફાયદો થાય છે. વ્યાપારીનો તેમજ ખરીદનારનો અમુક વખત જાય છે અને જે વ્યાપાર એક ભાવથી ૧ મીનીટમાં થાય તેજ વેપાર અસત્યથી ૧૦ મીનીટમાં થાય છે. મહેને લોકો ખૂસો પારે કે વખત અમુક છે. ગયો વખત પાટો આવતો નથી. દરેક વસ્તુમાં પણ દગો, શા માલ



વિલામતી છે. ખાસ લાંડનમાં જન્યો છે. રાખે તો વ્યાપારીને તેમજ ખેરીદનારને સુખ-
મત્યાદિ પ્રશંસનીય વચનો બોલી ખોટા મતા પડે અને લાભ પણ વિશેષ મળે.
ધર્મના, જાપના તથા દાદાના સમ ખાધ ઇંગ્લીશ દુકાનો બુલે. એકજ ભાવ. લેવું
નકલી માંસ ધરાકને પોરવે છે. તોલ ખોટા, હોય તો લો, નહિ તો ચાલ્યા જાવું. ખસ એકજ
વચન ખોટા, માલ ખોટો, ત્યારે ખરું શું? ભાવ. આથીજ તેઓ ફાલી ગયા છે, માટે
પૈસા. ખસ પૈસા ખરા છે કે ખોટા તેનોજ આશયો, હવે તમારાં વંત પાળવાનો વિચાર
વિચાર કરે. આવી પદ્ધતિ સુધારવાની ખાસ કરે અને હવે તમારી કોમને ઉદયમાં લાવે.
મરે છે. એકજ ભાવ અને ચોખ્ખો માલ અપૂર્ણ.

મૃતમિષ્ટાન્ન નિષેધ ।

સુળજો મિત્રો મારા આજ, મારે કરવું મોટું કાજ. દેક.

આજ કાલમાં ક્રિયા સર્વ તો, થાણ છે વધુ મારી;

કાઠું તેને કમ્મર બાંધી, જે છે ચાલ નડારી. સુળજો ૦ ૧.

રાત દિવસ જે સાથે રહીને, મદદ કરતો માર્દ;

મુઠા પછી તમે લાવા વેઠા, ક્યાં ગઈ સગાઈ. સુળજો ૦ ૨.

સ્વાર્થી સ્નેહી ઘણા દીસે છે, અલીલે આ જગમાં;

વાઝ રડિ કે વૃદ્ધ રાંઠે તે, ઘરે નહિ મનમાય. સુળજો ૦ ૩.

નર હોવે કે નારી હોવે, હોવે પછી તે વાઝ;

પોતે તો વસ લાડુ લાવા, મળે ગયો તે કૌઝ. સુળજો ૦ ૪.

મનુષ્યનું જન્મ મર્ણ થાય છે, રહે પોકારી જેહ;

તેહ પછી તો લાવા વેઠા, શોક ગયો નિજ ગૈહ. સુળજો ૦ ૫.

રાક્ષસ પેટી ઘણા ધયા છે, જમવામાં મશગૂલ;

ધર્મ ન જાણે મેદ ન જાણે, મવ સાગરમાં ઢૂલે. સુળજો ૦ ૬.

સર્વ ત્રિયાનો જન્મ દિન આવે, કરો પૂનન ધુમધામ;

રોનારાને શાસ્ત્ર બાંધીને, સમજાવો મુલ્ય કામ. સુળજો ૦ ૭.

આજ સર્વો કમી કરીને, દાન કરો તે ઠામ;

મુલ્યાંન સાથે આવે, કર્યાં હોય જે કામ. સુળજો ૦ ૮.

તોમ તમરો ઉદય થાશે, પાપ ધરો વધુ દુર;

મોહન જૈનો હેતે કહે છે, બંધ કરો રૈદી દૂર. સુળજો ૦ ૯.

કાળીસા મિત્ર મંડલી-કાળીસા.



આ તે લગ્ન કે મનુષ્ય ચલ !

(૧)

અસંખ્યાત દીપ સમુદ્રથી સંગઠન થયેલી આ પૃથ્વી ઉપર મધ્યના જાણીપમાં ભરતનામે એક ક્ષેત્ર છે, કે જેની અંદર હિંદુ લોકો પવિત્રપણે જીવન ગાળી રહેલા છે, તે ક્ષેત્રની અંદર પવિત્ર ભૂમિથી જન્યો અને અનેક શહેરોથી શોભી રહેલો એવો ચુર્ચર નામે દેશ છે, તે દેશમાં એક સાજનપુર નામે શહેર આવી રહેલું છે, જેમાં નેના નામ પ્રમાણે સાજન અર્થાત્ સજ્જન મણુસો વસી રહેલા છે. વળી જેની અંદર અનેક સુવર્ણમય કલશોથી સુશોભિત એવાં જિન મંદિરો શોભી રહ્યા છે, કે જેની અનેક યાત્રીઓ યાત્રા કરે છે અને પુણ્યનો લાભ પ્રાપ્ત કરે છે. પ્રકૃતિ દેવીના સૌંદર્યની તો શહેરમાં મણુજ નથી. વળી એ શહેરમાં નર નારીઓ ધર્મપૂર્વક જીવન ગાળી રહેલા છે. તેઓમાં ઘણા જાન ધર્મપૂર્વક પાલન કરનારા છે. તેઓમાં ધર્મ વરીકે બે પંથ પડેલા છે. જેમકે દિગંધર (દીશા રૂપી વસ્ત્રને ધારણ કરનાર, અર્થાત્ પરીબ્રહ્મ સિવાયના નિર્ઘંથ), મેતાધર (સેત અર્થાત્ સદૈવ વસ્ત્ર ધારણ કરનાર). તેમાંના દિગંધરોમાં પણ દ્રવ્યલોભુષિ ભટ્ટારકેના પ્રતાપથી બે ગ્રંથ થયેલા છે. જેમકે મૂળસાધ અને કાષ્ટાસાધ. એવા મંને તરહના દિગંધર જૈનો તે શહેરમાં વસી રહ્યા છે, જેમની જ્ઞાતિ ભરેવરો અર્થાત્ મેવાડાની છે. અત્રે જે બીના વર્ણવવાતી છે, તેમાં આવનાર પત્રો ઉપરનીજ જ્ઞાતિના છે. તેમાં તેમનું મૂળ વતન ઉપરતુજ શહેર છે, કે જ્યાં લગનાં કિંક્રિયા કરાવવા તેમને આવવું પડે છે. જે પખવની ઘટના જન્યેલી છે, તે વખતે વૈશાખ માસનો દિવસ હતો. તાપ રાજ્યે સંપૂર્ણ અધિકાર ફેલાયો હતો. ખપોરના પવનના સપાટા ચાલી રહ્યા હતા. નગર જૈનો જાગ

ખગીયાનો આશ્રય લઈ ખપોર ગળતા હતા, જેમાંના કોઇ હાસ્ય રિતોદ કરી રહ્યા હતા, તો કોઇ ભાંગ દેવીને આવકાર આપતા હતા, તો કોઇ નિંદ્રા દેવીનું સેવન કરતા હતા તો કોઇ નીચ પુરુષો પરનિંદા આદિ કરી પાપનો બોજો લાવતા હતા, તો કોઇ ધર્મપ્રેમી મિત્રાધાર કરી કાળ નિર્ગમન કરતા હતા. એવા સમયમાં ઉપરની જ્ઞાતિનો લક્ષગાળો આવી પહોંચ્યો, જેથી બહાર ગામથી લોકો આવી એકઠા થવા લાગ્યા ને છેવટે તમામ જૈનો એક માસની કુરસદ મેળવી ઘેર વાળાં વાસી મનને આલ્હાદ આપતા પાટનગરમાં એકઠા થયા. તે વખતે શહેરની શોભા કંઈ જુદાજ પ્રકારની થઇ રહી હતી, એટલે કે વાટે કે ઘાટે, ચોરે કે ચોરે, હૂશીરી કે બજારે, પુર કે પાદર, ગામ કે વન, ઘર કે બહાર, જ્યાં ત્યાં જસ પીળા ચાલેલીયા અર્થાત્ લગનીયા જૈનોન નજરે પડતા હતા, જેમાંના ઘણા જાણુ પોતાના ગામમાં જૈન મંદિર નહીં હોવાના કારણથી અગર હોય તોપણ અદાન નહીં હોવાના કારણથી પોતાને કોઇ દોષ ન આવે જેથી મોટા મોટા કેસરીયા આંદલા કરી ફરતા હતા. બાકી નહોતા જતા તે મંદિરે કે નહોતી તેમની અદા, પણ લોકોને જાણાવવાના ખોટા આડંબરથી ચાલ્યા કરતા હતા અને સુખમાં કાળ વીતાડતા હતા. તે વખતે અનેક જમણો થતાં હોવાથી ગામની મજૂરીયા વર્ણને દળવા ખાડવાની રાજી કીક ચાલતી હતી અને જંગલનાં પંખીઓ જેવાં કે ગીધ, કાગડા, સમરી, વિગેરેને ખાવાનો ભક્ષ પણ કીક મળતો, જેથી તેઓ સતોષ પામી તેમની બાધામાં ચુપ્ત આસીર્વાદ આપતાં, જેથી જૈનોને બીજાં કોઇ ધર્મકાર્ય કરવાની નજર રહેતી નહિ અને દુઃકામાં તે કરતા પણ નહિ, પણ રાત્રે મંદિરના કંપાકંડમાં અગર એવી બીજી જગ્યાએ એકત્ર થઇ સહેજ વાતો મસાવી વિખેરાઇ જતા હતા, પણ નરેશ કરતા



કોઈ સમા કે નહોતું આપતું કોઈ ભાવણ, જેથી એ સાતિ પછાત પડેલી હતી, કારણ કે -“તે સાતિ મૂળથી વહેમી ને વળી જૂને કર-ડ્યા” એમ કોઈ ધર્મના ઉંડા જ્ઞાનવાળો નહિ, તેમજ ને ઇંગ્લીશ ભણેલા છે તેઓ તે ધર્મશિક્ષણના અભાવે વદન નાસ્તિક થયેલા. કદાચ કોઈ ધાર્મિક લાગણીવાળા હશે તે તે તે બહાર પડનાર નહિ, જેથી તેનું નામ કંઈ નહ. એ સત પ્રમાણે તેઓ ઉત્તરિને રસ્તે ચઢી શકતા નહિ. તે મન એવી સાતસો ધરની સાતિના પાટનગરમાં જ્યાં જન્મે મચ્છના ભદ્રારકો પડ્યા પાથર્યા રહે છે, તેમ તેમના પંડિતો પણ હોય છે, તે છતાં ત્યાં નથી જૈન શાસ્ત્ર શીખવવાની શાળા કે નથી રાત્રિ પાઠશાળા. એ બાજવમાં મુસલમાનોને ધન્યવાદ ધરે છે કે તેમનાં જે ગામના પંદરેક ઘર હોય ત્યાં ઉડુંશાળા હોયજ, તો તે પ્રમાણે આપણી સાતસો અરે જાણનાં બસો ઘર વચ્ચે એક પણ પાઠશાળા નહિ, તે શું શરમાવવાની વાત નથી? ખંડુઓ, ઉકે, તૈયાર થાઓ; પાઠશાળા ખોલો અને તેમાં સમાના દરેકને પોતાના બાળકને બહાવવાની દરજ પાડો. તેમ ભદ્રારકોને શિક્ષણ આપવાની દરજ પાડો કે જેનાથી શિક્ષકનો પગાર ખચશે તેની સચિજ આચાર્ય દ્વારા શિક્ષણ અપાશે તેથી બાળકો પણ હોશિયાર થશે, માટે તેને માટે અત્યારે જ દરાર કરો અને પાઠશાળા સ્થાપન કરી બાળકોને જૈન દર્શનનું ઉડું સ્વરૂપ સમજાવો, તેજ વધારો ઉદય જલદી થશે,

(૨)

હવે મૂળ વાત પર જઈએ. ઉપરની ધમાસ જે વખતે ચાલી રહી છે, તે અરસામાં એક ભેદભર્યું લગન થવાનું હતું, જેનો મૂળ પ્રતિદાસ નીચે મુજબ છે:—

એક મહાસંગમ નામના ગામમાં રહેનો એક જો પુત્ર કે જેનું નામ ભીમાશા કરીને તેને એક કન્યા મોદ પંદર વર્ષની

ઉમરની હતી. તેનું સગપણ કરવાનું હતું ને લાયક વર મળે નહીં, જેથી ભીમાશા તેમજ તેમનાં પત્ની શીત્રકોર ઉદાસ રહેતાં હતાં, તેજ અરસામાં (અર્થાત્ ઉપરના લગન અવસરની પહેલાં ચાર માસ પર) એક શાહપુર નામના ગામડામાં રહેતા શેઠ જ્યોત્સનદાસના પુત્ર ત્રિલોકચંદ કે જેની ઉમર ૪૮ વર્ષ લગ-બગની હતી, તેની સ્ત્રી મરણ પામી. તે મરનારની બીજવારની હતી તેમ તેને ઘેર પુત્ર પુત્રીની સંવતિ પણ ફીટ હતી.

તે શેઠી (ત્રીજવર) ને ત્યાં ઉપરના ભીમાશાએ પોતાની કન્યાનું સગપણ કરવા એક માણસને મોકલ્યો, તેને કહેલું કે બરોબર તપાસ કરી ચોખ્ખા વર હોય તેજ સગપણ કરજો, નહિતો પાછા આવજો, પણ આવનાર માણસે ત્રિલોક-ચંદના બાપે કંઈક કહ્યો તે છતાં પરાણે પરાણે સગપણ નહીં કર્યું. અરે! દીવો સાથે રાખી કુવામાં પડ્યો અથવા કહો કે પોતાના પગપર પોતેજ કહાડો ભાગ્યો. આવી રીતે કામ કરી તે માણસ પોતાને ગામ ગયો. પછી જ્યારે કન્યાના બાપને ખબર પડી કે વેડીયાળ કરેલો પુત્ર ૪૮ વર્ષની વૃદ્ધ ઉમરનો છે, તથા તેને બે ત્રણ સંતાન પણ છે, ત્યારે તેઓ ઘણા દિલગીર થયાં, પણ તે સાતિમાં બદોહસ્ત હતો કે વેડીયાળ કરેલું જોડું મરે ત્યારે ખુદ પડે, જેથી લાચાર થયાં. સાતિના બાપા કંઈગા રીવાજોને પણ ધિ-દકાર છે કે જેનામાં ઉપરના જેવો અયોગ્ય લગ્નો થવા વખત આવે તે છતાં તે તોડવાનો ધારોજ નથી. તેમજ નાનપણમાં લગન સં-બંધમાં જોડી દે છે, જેથી કરી ઘણાં કુતોમાં જાને છે, જેનાથી સંસાર ધણીજ દુઃખમય બની જાય છે, અને અતે વંશવૃદ્ધિ પણ અટકે છે. માટે જોનો, ! વિચાર કરો અને આવાં સગ-પણ બંધ કરો તેની સાથે અયોગ્ય થયેલાં સગપણોને બીજા જગ્યાએ સગપણ કરવાની છટ આપો.

હવે સગપણ થયા પછી બંધી વાત જલ્દી વામાં આવવાથી કન્યાનાં માખાપ દિલગીર થયા



તેની સાથે એમ પણ ધારીનેજ એકાં કે ક્યારે એમાંથી એકતું મૃત્યુ થાય કે-આપણને જ'પ વજે, પણ 'કરણી તેવી પાર ઉવરણી,' એ અતુસાર તેમ અનુ' નહિ, પણ જોડું કાયમ રયું. હવે લગ્નગાળો નજીકમાં આવવા લાગ્યો, તેમ તેમ કન્યાનાં માળાપ વધુ વધુ દિલ્લગીર થવા લાગ્યાં અને એ ચિંતાને લીધે એમનું શરીર ધણું શોષાવા લાગ્યું, પણ ઇલાજ હતો નહિ. એટલે કરે શું ?

ધીમે ધીમે વૈશાખ માસ આવી પડેઝ્યો અને કન્યા મોટી ઉમરની થયેલી, તેમજ ભર-વધાર બાંધાની હોવાથી લગ્ન લીધા સિવાય છુટકો નહિ. કારણ કહ્યું છે કે-જે પુરુષ રૂઝ વંતી કન્યાને પોતાને ઘેર રાખે છે, તે પોતાના પુત્ર સહિત બાલકત્વા નામના પાપમાં પડે છે. એ દૃષ્ટાંતને યાદ આણી કન્યાના આપે લગ્ન જોવરાવવા જ્યોતિષીને આમંત્રણ કર્યું. જોશીએ આવી લગ્ન નક્કી કર્યું, પણ કન્યાના કર્મને દોષે કડો કે પત્રી જોશીની જીભે લીધે લગ્નમાં ખામી હતી, તે જોશીના જાણનાં આવી નહિ અને ધીન મહુને લગ્ન દિ વસ મુકરર કર્યો, તે વરવજ પત્રિકામાં લખી કન્યાના સાસરે રવાના કરી આ તરફ કન્યા શિક્ષિત હોવાથી ને તેનો પતિ તદ્દ જ, અમ તેના જાણવામાં આવનાંથી છાત્રદ્વાર કંઈપાંન કરવા લાગી. તેમજ તેનાં માતા પિતા પણ ચુપ્ત રીતે રડતા હતાં, પણ ઇલાજ હતો નહિ.

લગ્ન દિવસ મુકરર થયા પછી કન્યાના જાપને એવા બે માણસોની ખોટ પડી કે જેના સિવાય તેને ચાહે નહિ તેમજ લગ્ન વખતે પણ તેઓની જરૂર પડત, પણ કર્મ બળવાન છે, એ વાત ધ્યાનમાં રાખી લગ્ન કાર્યને માટે અને પક્ષના માણસો પાટનગરમાં પોતાના ગૃહ સંમાર સહિત આવી પડેઝ્યા અને ત્યાં કેવી રીતે રહેવા લાગ્યા તે વાત પાછળ આવી ગઇ છે.

હવે લગ્ન.જે (લગ્ન અવસરે) પાપડ વંદા પડી અને ઘેર થવા લાગ્યાં, પણ એકે વર-

હના માણસો પ્રથમ હતો નહિ, પંછી શુભ મુરતે અનેને ઘેર માંડવા મુહૂર્ત અર્થાત્ સંમારેપણ કર્યું, પણ બીજાં લગ્નની માફક વાગ્મનો ધ્વનિ તથા મંગલ ગીતો તો એકે વરંડ હતાંજ નહિ, જેથી પ્રેક્ષકના મનમાં એમ થયા મિના રહેતું નહિ કે આ નીચ વર્ણના નાતરા કરનાં પણ ભૂડો બનાવ છે. લગ્નને દિવસે સવારથી કન્યાના રૂઢનનો પાર હતો નહિ. અનેએ પીડી યોળી અને મિથ્યાત્વી ચાલ, ગોત્રધો, શાંતક, કન્યાનું વરના ઘર પર એવો જમવા આવવું, કન્યાને ત્યાં વરતું જમવા જવું, યિગેરે કાર્ય થયા.

લગ્ન સમયે આપણા યુદ્ધા વરરાજા એક નાચુક ઘોડા પર સ્વાર થઇ પાંચ માણસના સરઘમ સહિત અપ્રસન્નતાથી કન્યાના માડરે આવી ઉપરથત થયા. કલાક ઉશા રહ્યા પણ કન્યાની માતા પોંકવા આવે નહિ, કારણ કે પોતાની કન્યાને આવા રાક્ષસ જેવા પતિ સાથે પરજાવવા તેની હિંમત ચાલતી નહિ અને તે એટલી ધ્રુજતી હતી કે તેનાથી ઉશું પણ રહી શકતું નહિ તથા તે વખતે કન્યાનો ખાપ તો એવો જણાતો હતો કે કોઇ સ્પશ્તાની માણસ હોય.

ધણું ધણું સમજાવ્યા પછી કન્યાની માતાએ ધુજને હડયે વરરાજાને પોંખીને મંડપમાં લીધા અને બાજઠ પર બેસાડ્યા. પ્રણે વખત થયો, પણ ગોર આંખો નહિ કારણ કે આખી જ્ઞાતિમાં ગોર બે કે ત્રણ હતા. તેમજ તેને તે રાત્રે ત્રણ લગ્ન કરાવવાનાં હતાં, જેથી બીજી જગ્યાએ લગ્ન કરાવવા ગયો હતો. અહુઓ ! વિચાર કરો કે-તમારાં સંતાનોના લગ્ન યોગ્ય મુરતે થતાં નથી, તો પડીથી સુખી ક્યાંથી થાય, કારણકે કેટલોક કાળ (ખપડ) એવો હોય છે કે જેમાં સાફ કાર્ય કરીએ તો તેનો વિનાશજ થાય છે, તો લગ્નનું ક્રેય ક્યાંથી થાય ? મટે વિચાર કરો અને ગુરુઓ ગોરની તદ્દિ કરો, તેની સાથે ગોરને યોગ્ય વખતે આવવા કરજ પાડો, તેજ વખતે



સુખી શ્રેણી ને સંસાર પણ સુખમય નિવડશે, માટે ગોરને તો મુક્તિજ આપવા ફરજ પાડે. હવે હમ વખત નીકળી ગયાં પછી (કારણકે કન્યાનું ભાગ્યજ વાંકું હતું) ગોર આવી પહોંચ્યો. તેણે આવી એકાદ કવિતા બોલી (કારણકે તેને સંસ્કૃત જ્ઞાન હતું) નહિ, તેમ જીમ પણ લથડાવી હતી) કન્યાને પધરાવરાવી તે વખતે કન્યા છાતીફાટ રૂદન કરતી હતી. પછી હાથનોડ (હાથણોમાં પૂજા વખતે કરવાની વિધિ) કરાવી વર કન્યાને હસ્ત મેલાપ કરાવ્યો અને અગ્નિના ફેરા વરકન્યાને ફેરવ્યા, તે વખતે ગોર બે ત્રણ શાદુલવિકિડીત છંદ ગુજરાતીમાં અશુદ્ધ ભાષામાં બોલતો બોલતો હતો. જે વખતે વરરાજાએ કન્યાના હસ્તનું અહણ કર્યું, તે વખતે કન્યા કંપારી ખાઇ પડતી પડતી રહી ગઇ, તોપણ કહણ હૃદયના માણસો પર તેમની કંઈ અસર થઈ નહિ. રંગ દીક જાગ્યો હતો કે હમ વખતે પણ ગીત નહિ તેમ મંગલ ઘોષ નહિ. અહા ! શું દમ દેવતાનું તાત્પર્ય છે કે તેને લીધે માણસો આ દુનિયા રૂપી રંગ ભૂમિ પર કેવા કેવા ખેલ કરી રહે છે. હમ પૂરું થયું અને વરરાજા પોતાને ઘેર કન્યા સાહિત પધાર્યા. ધરની પુત્રીઓ નવી માતે દેખી આનંદ પાળી, પણ નવી માતા પેટમાં તેજ રેડાતું હતું. કન્યાને તેના આપ પોતાને ઘેર તેડી ગયા.

(૩)

દિવાળી આવી. વધુ-પ્રવેશ કરાવવા અર્થાત્ વહુને તેડવા વરનો ખાઇ મહીપુર ગયો ને ત્યાંથી રડતી કઠણવી તે કન્યાને તેડી લાવ્યો. રાત્રે ગૃહસ્થ ધર્મની સાધનાને માટે કન્યા પતિના અમન સુત્રનમાં ગઇ, પણ પવિત્ર વીર્ય વૃદ્ધાવરધાને લીધે નિસ્તેજ થયેલું હોવાથી કંઈ લાભ મેળવી શકી નહિ. આ પડેલાજ દિવસના સકલાસ પછી કન્યાને પોતાપર ગુજરાતના કુખ વધે પૂરું પાડી યઇ, પણ આ વખતે મામમાં અજાણ હોવાથી તેમજ ધરમાં બીજાં માણસો

હોવાથી કંઈ થઈ શક્યું નહિ, પણ ફરીથી પીયેર જઇ આવ્યા પછી તો તે ઘનંતી ને મામની પૂર્ણ માહીતગાર. થઇ, જેથી તેથી શેરીમાંની સ્ત્રીઓની સોખત કરવા લાગી, અને એમ કરતાં કરતાં તે સ્ત્રીઓએ તેને નીચ કૃત્ય કે જેને આપણે વ્યભિચાર કહીએ છીએ તે કરવા શીખવ્યું, અને તેણે પણ તે કૃત્ય કરવા કોશીલ કરવા માંડી, કારણકે તેને વૃદ્ધ પતિથી પૂર્ણ સંતોષ મળતો નહિ, તેમ નીચ સ્ત્રીઓની શીખવણીથી તે તે કૃત્ય તરફ વળી. ધિક્કાર છે તેમને કે જે પોતે નીચ કૃત્ય કરી બીજાને પણ તેવાં કામ કરવા શિખવે છે. આ દુનિયા પરથી તેના માથુસો ક્યારે નાથ પામશે કે, જેથી લોકો આવાં કૃત્ય કરતાં બચશે.

ધીરે ધીરે તે સ્ત્રીએ લાયક જાતની તપાસ કરવા માંડી. ને તે તેને મળી પણ ગયો કે જે પણ એક જૈનજ હતો. અરે ! તેને કંઈ કહેવો દીક પડશે કારણ કે જે પોતાની જ જાતની સ્ત્રીનું શીલ તોડવા ઉભો થયો છે. પછી તે સ્ત્રી તે તરણ સાથે દિવસો ગુજરવા લાગી. આ વાતની જ્ઞે કે તેના પતિને ખબર થઇ હતી, પણ પોતાનામાં શક્તિ હતી નહિ જેથી તે સમજીને કંઈ બોલતોજ નહિ.

પુત્રીના નીચ કર્મની વ્યારે તેની માતાને ખબર પડી, તોરે તે કલ્પાન કરવા લાગી કે મેં બુદ્ધથી મારી પુત્રીને વૃદ્ધ પુરુષ સાથે પરણાવી, જેથી તે પોતાના ધર્મ પર પાણી ફેરવવા લાગી. હાય ! અને ધિક્કાર છે, કે મેં આવી નીચ બુદ્ધિની પુત્રીને જન્મ આપ્યો, જે જન્મીને જન્મ્યા આપે તો સમાજ ભલું એવી રીતે રાત્રિ દિનના કલ્પાવને અંતે તે જન્મ સંદનમાં પડેથી મર્ત્ય અર્થાત્ મરણને શરણ ધર્મ.

આ તરત પેલા તરણ પૂરણની સાથે તે સ્ત્રી દિવસો વીનાડતી હતી. પછી એક દિવસ ખજે પ્રેની હાસ્ય ચિત્તે દેહી રૂપાં લગાં, તે હાસ્યને જડાને તરણે પ્રજા કર્યાં કે વડાકા ! આમ આપણે ગુપ્તપણે ત્યાં સુધી રહીશું.

ને હું આ ખોખલાને ડેકાણે કરી દઉં, તો આપણે મનમગતો ભોગ ભોગવીએ. અંધે કહ્યું કે વહાલા, એ વાત ખરી પણ તેમનો નાશ કેવી રીતે કરવો તે જાણવો તો પછી કામ રહેલ થઈ જાય. તરણે કહ્યું કે તું આજે તેને આ પડીકું બોજનનું સાથે આપજે (તે પુરો સોમવતું પડીકું તે દિવસે આવ્યું હતું) જેથી ચાત દિવસમાં ધીમે ધીમે પક્ષગીને તે ડાંસે નાશ પામશે અને આપણા આ કૃત્યની કોઈને ખબર થશે નહિ. સાચી કે—ચાર દિવસના મંદ વાડ પછીજ ડાંસાનું મરણ થશે, ખોટું તું વારે આ કામ કરજે. હું દવે ભડકું છું કારણ ડાંસાને આવશેનો વખત થઈ ગયો છે. પછી તરણ પોતાને ઘેર ગયો. અને તે સ્ત્રીના પતિ ઘેર આવ્યો. એટલે જોજનમા વિપત્તિ પ્રયોગ અજમાયો. અરે ! પોતે પોતાની મેળે વિધવા થવા તૈયાર થઈ ! અરે ! નીચ વિષય સુખ ! વને ધિકાર છે કે તું વારો અધિકાર જમાવી માણસ પાસે ન કરાવવાનાં કૃત્ય કરાવી એસે છે ચાર દિવસે એર દ્વારા ડાંસો મરણ પામ્યો અને તરણ તેમજ તે દુષ્ટ સ્ત્રી પ્રસન્ન થયાં, પણ બહારના જોડા આડંબરથી તે સ્ત્રીએ છાતીકાઠ કરવામાં કરવા માંડ્યું અને પોતાના માતાપિતાને ગાળો દેવા માંડી કે એ દુષ્ટ મા-બાપ ! તમને બીજો મારો વર મળ્યો નહીં કે આવા હુંક આયુષ્યવાળા સાથે મારું લગ્ન કર્યું ? ને તમને વર ન મળ્યો તો મને મારી નાંખવી હતી, પણ આવી વિધવા બનાવવી નહોતી.

(૪)

શેકની આખરે ગામમાં ઠીક હતી, જેથી શેકો ઘણા દિવસોથી થયા અને સગાંવહાલાં કાણે આવવા લાગ્યાં, જેમાંનાં જે ખરી લાગણીવાળાં હતાં તે તો અવકરણથી રહતાં હતાં, પણ જે દેખાદેખી આવતાં હતાં તે તો ઉલટી તે સ્ત્રીના કૃત્યની વાતો કરતાં ને બાર-માનું ક્યારે થશે તે પૂછતાં. સ્ત્રીએ ચક્રે

ચક્રે છાતી ખુલ્લી કરી ફૂટતી હતી ને રાજ્યાં ગાતી હતી. અહા ! કેવો નીચ સમય કે જે નેનોતની સ્ત્રી પડે રહી કોઈ પુરુષને પોતાનું સુખ પણ ખતાવતી નહિ, તેજ નેનોતની સ્ત્રીએ ચક્રે ને વળી પુરુષની હક વચ્ચે ઉઘાડી છાતી એ ફૂટે છે. અહા ! કળીકાળ ! વને ધિકાર છે, કે, તું જળને ડેકાણે સ્થળ ને સ્થળને ડેકાણે જળ ખતાવવા એકો છે.

ચાર દિવસ મુધી શેકો કાણે આવવા લાગ્યાં, પણ પછી તો ધીમે ધીમે બંધ થયા, ને સ્ત્રીને ગામના નેનોએ બારમાની સામગ્રી કરવા સમગ્રવર માંડી. અને સામગ્રી થઈને બારમાનો દિવસ નક્કી થયો, ને તે સુવાન સ્ત્રીના પતિનું બારમું ખાવા મામેમામથી સગાં-વહાલા એકઠાં થયાં, ને જમી જમી પોતાને ઘેર ગયાં ને સ્ત્રીએ પણ ધીમે ધીમે શોકને વિલાંજલી આપવા માંડી.

તે સ્ત્રીને બાપ તો પોતાની કન્યા રંડવાથી ઘણો ખેદખિન્ન થયો ને તેજ ચિંતામાં તે પણ મૃત્યુ પામ્યો. અરે ! એકજ કન્યાના પદ સાથે લગ્ન થવાથી ચાર માણસો નાશ પામ્યાં ને હજુ કોણ જાણે શુંએ થશે ? જેમ જેમ દિવસો વીનવા ગયા તેમ તેમ સ્ત્રીએ શોક સમાપ્ત કરવા માંડ્યો ને આખરે પહેલાંની માફક પોતાના જ્વરની સાથે છુટથી વ્યભિચાર કરવા લાગી. આનાં આ કૃત્યથી તેની જોજનમાની કન્યાઓ પણ ખેદખિન્ન થઈ બાપને ઘેર આવતી બંધ થઈ. આ વાત ધીમે ધીમે આખી માતિમાં ફેલાઈ ગઈ ને તેને ઘણા જાણુ શિખામણુ દેવા આવ્યા, પણ યુવાની વિકાર સમાવી ન શકવાથી કોઈની વાત ધ્યાનમાં લીધી નહિ ને ઇચ્છાનુસાર નીચ કૃત્ય કરવા લાગી. પુરુષ તે સ્ત્રીને તે ગામમાંથી નાશી જવાનું સ્વપ્નનો હતો, પણ થવા કાળના મોટા આગળ કોઈ કાણું નથી, જેથી તેણે માન્યું નહિ કે તેને તે જ્વરથી મર્ત્યુ રહ્યો, તે તેણે અધરે આવ કરવાં ઘણી મહેનત લીધી, પણ



कार्य करनेमें कायर व डरपोक न हों—यदि शांतिसे धर्म पाळते हुए मरण भी होजाय या कोई मार भी डाले तौ भी कोई हर्ज नहीं है क्योंकि धर्मार्थ प्राण विर्ज्येन शुभ गति का कारण है। ऐ दिगम्बर जैनियों! अपने पैरों खड़े हो—पर्वतराजकी भक्तिमें दृढ़ रहो कोई रोके रको नहीं किंतु महान कष्ट सह कर धर्म पाळो। जिन टोंकोंसे तीर्थंकरोंने मुक्ति पाई है वे हर एक जैनको माननीय हैं—उनकी भक्ति करना अपना धर्म है—यदि कोई धर्म साधन न करने दे तो प्राणत्यागना मला है पर धर्मकी रूकावटका असमान अच्छा नहीं।

यदि कोई श्वेताम्बरी इसी रूकावट डालनेमें ही धर्म समझते हों तो सपने पर जो जैन धर्मसे कुछ भी विज्ञ है वह ऐसी रूकावट डाल कर अपने लिये महान अंतरायकर्मका बंध नहीं कर सकता। यदि महात्मा गांधीके समान सत्य पर कायम रहोगे व स्वयं दुःख सहोगे, दूसरोंको कष्ट न दोगे अवश्य तुम्हारे धार्मिक हकोंकी रक्षा होगी।

ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी ।

क्या 'अर्जुन' नहीं छूटेंगे ?

क्या पण्डित अर्जुनलालजी सेठी काराग्रहकी घोर यातनाएँ सहते ही रहेंगे ? हमारे तन्त्र मन्त्र सन रहते ही रहेंगे, उनसे कुछ सकलता न होगी ? क्या साकारको उचित है कि वह निरपराध, धर्मश्रद्धालु व्यक्ति को काराग्रहमें डालकर उसकी धार्मिक क्रियाओं और विचारोंमें विघ्न डाले ? जिन व्यक्ति ने आनन्द अपने जीवनमें किसीका दुःख नहीं

विचारा, जिसने समाजके हितके लिये सभा, समितियाँ खोलकर समाजका उपकार किया, आज वे ही पंच अर्जुनलाल सेठी काराग्रहकी यातनायें भोग रहे हैं।

प्यारे जैन जातिके वीरो ! यदि तुम अकलंककी सन्तान कहलाते हो, यदि तुम जातिका उद्धार करना चाहते हो, तो तुम ऐसी घोर निद्राकी त्यागो, उठो, जागो। सब जातियाँ अपनीर उन्नतिके लिये आगे पैर बढ़ा रही हैं, तुम भी कुछ कर डालोगे तो अच्छा है। तुम्हारी जातिका नेता, शिक्षाप्रेमी, धर्मश्रद्धालु, जैन समाजको जीवन अर्पण करनेवालेको क्यों नहीं अन्यायसे बचाते, अपनी न्यायरूपी कृपाणसे क्यों रक्षा नहीं करते, अब तन, मन, धनसे प्रण और ऐक्यतासे यदि काम करोगे तो मैं दावेके साथ कह सकता हूँ कि आप अपने कार्यमें सकलता प्राप्त कर सकोगे। शिक्षा प्रेमीको तो क्या यदि आप चाहेंगे तो मुझको भी हिलाकर उखाड़कर फेंक सकते हैं—एक महात्माका वचन है कि—

चारिमें नारि हूँ दिशतैं चारि कोन गहि,
मेरुको हिलायके उलारैं तो उलरि नाय ॥

इसलिये प्यारे भिन्नो ! आप अपने हृदयमें प्रण और ऐक्यताको रखकर काम करो। यही उन्नतिकी जड़ और सब सुखोंका भण्डार है। प्रण व ऐक्यता करनेवालोंसे क्या क्या मिट्ट नहीं होना ! अर्थात् सब कार्य निष्पन्न होनाते हैं। अतः निःशलिखन कविताको हृदयस्थ कर घोर आन्दोलन करो, यही मेरी मान्यता है—



प्रण ।

बैर प्रीति करिवेकी मनमें राखै शक,
राज राव देखिके न छाती घात घाफरी ।
अपनी उमगकी निवादिवे की चाह जिह्मे,
एकसो दिग्मात तिन्हें वाघ और बाकरी ॥१॥
ठाकुर कहत मै विचार कईबार देख्यो,
यहै मरदाननकी एक वात आहरी ।
गही जौन गही जौन छाड़ी तौन डाड़ी दर्र,
करी तौन करी वात ना करो घो ना करो ॥१॥

प्रेम्यता ।

शामिलमे पीरमें शरीरमें न राखै मेद,
दिम्मतये कपट उधारै तो उपरि जाय ।
येषो टान टानै तो बिना हू जन मन कीन्हें,
सापके जहरको उतारै तो उतरि जाय ॥
ठाकुर कहत कुछ कठिन न जानौ यह,
दिम्मत किये ते कहो कहा न सुपरि जाय ।
चारि जनें चारि दू दिसाते चार कोन गदि,
मेघको हिलायके उत्तारै ता उत्तारि जाय ॥२॥

सतीशचन्द्र गुप्त, सूरत ।

“सेठ नवलचंद हीराचंद—

स्मारक फंड.”

जैन धर्मने अधिकांशार्थी उत्पत्तिने मार्गे
द्वारनार मुआम निदासी शैव नवनयद हीरायद
अवेरीनी चाहगीरी कायम गण्यने मटे रोड
हीरायद शुभानल जैन जोर्डि गने अगे जो
सवाभा आवेया ‘शैव नवनयद हीरायद
स्मारक फंड’मा निम्न विधित सद्गुरुस्थो
तदर्थी नीचे प्रमाणे रकम बरनामा आवी
छे, जे धन्या आभासद रवीक गीजे छीजे
२५१) श्रीमान शैव शुभप्रणय शुभानल
१०१) श्री शैव शुभप्रणय लक्ष्मण अवेरी
१०१) ,, शैव नाथारगल
१२५) ,, शैव तुलसीदास तीर्थावनदास

१०१) श्री शैव नारददास अजनमल
५१) ,, ,, आधु शुभगमदिरलासल जैनी
११) ,, ,, जैनी विष्णु भीक्षाराम
५१) ,, ,, मोहनदास सुनीलाल
५) ,, ,, गोरधनदास गगनवनदास
५१) ,, ,, भाधनस अमरसी
५१) ,, ,, सुरगमल बोधुभोय सोलीसीठ
५१) ,, ,, सुनीलाल हेमचंद जरीवाणा
४१) ,, ,, डांडारदास अगवानदास अवेरी
४१) ,, ,, नयचंद मानचंद
३१) ,, ,, लक्ष्मणभाध भीयांचंदभाध
४१) ,, ,, लक्ष्मणभाध लक्ष्मीचंद मोहसी
२५) ,, ,, भयुदास लायल
२१) ,, ,, छानलल तीर्थावनदास
१३) ,, ,, नानचंद हस्तुरचंद मोदी
११) ,, ,, अमरतनाथ चिंतुलदास धाभी
१५) ,, ,, भगनलाल दामोदरदास
१५) ,, ,, मछेकचंद लालचंद मोहसी
५) ,, ,, अरमलुआ अमला चंद
७) ,, ,, अनोदग्यालल पंडित
५) ,, ,, शंकर काशीनाथ सोनी
११) ,, ,, कस्तुरचंद जेयरदास
२१) ,, ,, जेसीगमल भलायद
१५) ,, ,, मापडीया जे. सी जे-३ जे
१७) ,, ,, भनसुप्रयाल तथा मोहनयाल
२) ,, ,, मोभयद आनरदास
२१) ,, ,, नाथदास पद्मोतमदास
११) ,, ,, नाथुभाध हरीदास
७) ,, ,, हीरायद उगरचंद
१५) ,, ,, अमथालाल जेभयद
१५) ,, ,, सी० आग० देशाध
१०) ,, ,, मोहनदास मोतीचंद
१५) ,, ,, प्रेमचंद धनभयद
१०) ,, ,, निहायचंद गीधरदासल
७) ,, ,, भाजोचंद जेनाडा
७) ,, ,, बिहारीयालल
५) ,, ,, भालचंद अमदेव



- ૧૧) શ્રી શેઠ રાધુભાઈ દેવચંદ દોભાડા
૭) " " જૈન યંચ રનાકર કાર્યાલય
૧૧) " " રામચંદ મોતીચંદ
૫) " " નારણદાસ રણુહોદાસ
૩૧) " " મયુરદાસ મનજી
૧૧) " " જવેરલાલ શંકરલાલ
૫૧) " " પ્રેમચંદ મોતીચંદ
૫૧) " " રતનચંદ ખીમચંદ સંઘવી
૫) " " રતીલાલ મગનલાલ દેશાઈ
૩) " " મોતીલાલ ધરમચંદ કોહારી
૩) " " કાલીદાસ કુલચંદ શાહ
૪) " " કેશવલાલ હાલાભાઈ શાહ
૧) " " એચ. જી. પાટીલ
૨) " " દીપચંદ ભાઈચંદ શાહ
૨૧) " " મનોહરલાલ મુકંદીલાલ
૧૦૨) " " પ્રેમાનંદ નારણદાસ
૧૫) " " જોશલાલ ત્રીકમદાસ
૫) " " માણેકલાલ શામજી ઝંટકીઆ
૧૧) " " મણુપત હિમચંદ મોદી
૧૦) " " કેવળદાસ કોલાભાઈ
૨૫) " " એમ. એલ. વર્ધમાનૈયા
૫) " " ચીમનલાલ નેમચંદ
૫) " " હરજીવનદાસ રાવચંદ શાહ
૨) " " સી. એસ. મહેતા
૨) " " ચંડુલાલ શકરચંદ
૨) " " એક જોડર
૫) " " એફ. જી. મહેતા
૩) " " ડી. પી. શાહ
૫) " " મોહનલાલ દલીચંદ દેશાઈ
૭) " " મકનજી જુહાભાઈ મહેતા
૨) " " ખીમચંદ અમરચંદ દીવાન
૧) " " ચંડુલાલ અમરતલાલ
૨) " " મોહનલાલ પ્રેમચંદ શાહ
કિ. ૧) " " એન. કે. શાહ
કારા. ૧) " " સુનીલાલ શીવલાલ શાહ
૧૦૧. ૧) " " ડાલાભાઈ મગનલાલ પરીખ
ત્યાગતર્ક ૧) " " ભાઈલાલ કાળીદાસ શાહ
૪) શ્રી શેઠ દામોદરદાસ જગલાલ
૨) " " સી. એસ. સંઘવી
૨) " " વી. એમ. લાકઠાવાળા
૧) " " આર. જી. ગુજર
૩) " " સી. એલ. મહેતા
૧૦) " " સાયભા મેવાડા પંચ
૩) " " મગનલાલ વલમજી
૨) " " હીમતલાલ વરજીવનદાસ
૨૦) " " એ. પી. લઠ્ઠો એમ. એ.
૨૫) " " માનાજીરાવ અને ખેરાજી જોશી
૨) " " શા. તલકચંદ નરોત્તમદાસ
૩) " " ચીમનલાલ નરસિંહદાસ
૫) " " હી. વા. આલકર
૨૫) " " સુવેમાનજી ડોસાભાઈ
૫૧) " " અનુપચંદ માણેકચંદ
૨૧) " " કુંદનજી કપુરચંદ ધિયાવાળા
૫૧) " " મદાદોવ લક્ષ્મણ
૧૧) " " જગનલાલ બેદેચરદાસ
૧૧) " " સુનીલાલ વેણીદાસ
૨) " " નેમચંદ હિમચંદ
૧) " " એલ. એ. શાહ
૧૧) " " વલકચંદ સખારામ
૧) " " ડી. કે. શાહ
૧૧) " " મોતીચંદ ગીરધરલાલ સોલીસીટર
૧૫) " " રીખવદાસ મન્નાલાલ
૨૫) " " શીવજીભાઈ દેવશીભાઈ
૧૫) " " સુનીલાલ કાળીદાસ
૧) " " હોટાલાલ બેદેચરદાસ
૧) " " એ. સી. શાહ
૨૦) " " હોટાલાલ ઘેલાભાઈ ગાંધી
૨૫) " " મગનનાદાસ જગન દેવજી
૨) " " એસ. પી. બ્રહ્મસુરીઆ
૧) " " જે. એમ. ગુજર
૨) " " એલ. એ. ફલકાણી
૨) " " બી. એ. જોગાર
૨) " " મુલચંદ બેદેચરદાસ
૩) " " ગુજલ પી. એમ.

दिगंबर जैन

THE DIGAMBAR JAIN.

माना कलाभिनिविष्टैः तस्मैः सत्प्रोपदेमैस्तुगवेषणामि ।

सद्योव्यपश्रितं प्रपतताम्, दिगम्बर नैव समान माधव ॥

वर्ष १० वीं.

वीर संवत् २४८४. पाल्गुण विंशति १९७४

अंक ४.

कीर फार्थना ।



ने शुभ दश,
जो मम हर्ष,
दर्शन देकर मुझे क्षाति दो,
प्रेम सुभाकी विमल क्षाति दो ॥१॥

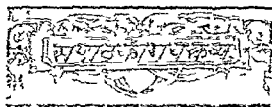
जाति उद्धार,
हृदय उद्गार
जाति उद्धारना मार्ग यथाशे,
हृदय-कमलको शीघ्र मिलादो ॥२॥

कृति सन्तान,
कृति विज्ञान,
कृति कृति सन्तान बनादो,
कृति-जगता पाठ पढ़ादो, ॥३॥

स्वर्ग-य तन,
नेने मेन,
हमे रस-रसो शीघ्र दिलादो,
पदी हमारा मन बनादो ॥४॥

सुयोग दृष्टि,
सुयोग दृष्टि,
योग क्षाति पाठ बनादो,
सुयोगका हृद मेह बनादो ॥५॥

सतीशचन्द्र मल्ल-मृत ।



करीब पान, उह वर्ष हुए जेनोंमें महावीर
जयतिना उत्सव

महावीर जय- नेकी प्रथाका प्रादुर्भाव
तिका कर्तव्य । हुआ है और वह
उत्तरोत्तर बढ़ता जात

है, यह योग्य ही है । इस वर्ष भी यह शुभो
दिन आगामी चर सुदी १३ के दिन आ पड़ना
है । यह वही परम पवित्र दिन है जो आजसे
२५१६ वर्ष ऊपर कुड्डपुर नगरमें अपने
चौबीसवें (अंतिम) तीर्थंकर श्री महावीर या
वर्द्धमान प्रभुने सिद्धार्थ राजाके गृहपर मा
प्रिशलाके उत्पत्ति जन्म लिया था और
स्थानपर जाग्रत हो गया था । हमारे
और अपने माना, पिता, प्रजापिता जन्म
मनाते ही है तो हमारे महावीर प्रभुने
जन्म दिनको क्या भूत न ना नादिये ? अभी भी
नहीं । नारायणोंके गुणोंका हमारे जन्मके
दिने उनकी गरिमा मनाता था । वह ही है
और ऐसी यह जयति जो हमें हमारे